



भारत सरकार

# वार्षिक रिपोर्ट

2010-2011

## संस्कृति मंत्रालय

**भारत**  
विश्व विरासत स्थल  
2011



कालका शिमला  
पर्वतीय रेल



शिमला

नन्दा देवी  
तथा कुली की  
घाटी राष्ट्रीय  
उद्यान



चमोली



लालकिला  
परिसर

कुतुब मीनार  
परिसर



दिल्ली



हुमायूँ का  
मकबरा

भरतपुर

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान



जयपुर

फतेहपुर सीकरी

आगरा

जन्तर  
मन्तर



प्राकृतिक स्थल  
सांस्कृतिक स्थल



दार्जिलिंग  
पर्वतीय रेल

मानस वन्य  
जीव अभयारण्य



काजीरंगा  
राष्ट्रीय उद्यान



ताजमहल

खजुराहो



मन्दिर समूह

बोधगया



महाबोधि मन्दिर



सूर्य मन्दिर  
कोणार्क

सुन्दरवन  
राष्ट्रीय उद्यान



बंगाल  
की  
खाड़ी

अरब सागर

एलिफेंटा गुफाएं



एलोरा गुफाएं



अजन्ता गुफाएं



मुम्बई

छत्रपति शिवाजी रेल स्टेशन  
(पूर्व विक्टोरिया टर्मिनस)



मन्दिर समूह  
पट्टडकल



गोवा

चचे तथा  
कान्वेरे  
नीलगिरि पर्वतीय  
रेल



ऊटी

गंगईकोंडा

तंज

महान जीवन्त बोल



लक्षद्वीप  
(भारत)

100 50 0 100 200 300 400 500  
कि० मी०

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नई दिल्ली

अन्तर्मान एवं निकोबार द्वीप समूह  
(भारत)



# वार्षिक रिपोर्ट

## 2010-2011



भारत सरकार  
संस्कृति मंत्रालय

## विषय—सूची

|       |                                                                      |         |
|-------|----------------------------------------------------------------------|---------|
| 1     | संस्कृति मंत्रालय—सिंहावलोकन                                         | 1—3     |
| 2     | मूर्त सांस्कृतिक विरासत                                              | 4—5     |
| 2.1   | भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण                                            | 6—22    |
| 2.2   | संग्रहालय                                                            | 23—24   |
| 2.2.1 | राष्ट्रीय संग्रहालय                                                  | 25—28   |
| 2.2.2 | राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय                                       | 29—31   |
| 2.2.3 | भारतीय संग्रहालय                                                     | 32—35   |
| 2.2.4 | विक्टोरिया मेमोरियल हॉल                                              | 36—42   |
| 2.2.5 | सालारजंग संग्रहालय                                                   | 43—46   |
| 2.2.6 | इलाहाबाद संग्रहालय                                                   | 47—50   |
| 2.2.7 | राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्                                   | 51—57   |
| 2.3   | संग्रहालय से संबंधित कार्यकलापों में क्षमता निर्माण                  | 58      |
| 2.3.1 | राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण, संग्रहालय विज्ञान | 59—61   |
| 2.3.2 | राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला              | 62—64   |
| 2.4   | राष्ट्रीय संस्कृति निधि                                              | 65—67   |
| 2.5   | अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध                                     | 68—70   |
| 2.6   | यूनेस्को संबंधी मामले                                                | 71—73   |
| 2.7   | राष्ट्रीय मिशन                                                       | 74—75   |
| 2.7.1 | राष्ट्रीय स्मारक और पुरावस्तु मिशन                                   | 76—77   |
| 2.7.2 | राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन                                             | 78—79   |
| 3     | अमूर्त सांस्कृतिक विरासत                                             | 80—81   |
| 3.1   | राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय                                             | 82—84   |
| 3.2   | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र                                    | 85—92   |
| 3.3   | अकादमियां                                                            | 93—94   |
| 3.3.1 | साहित्य अकादेमी                                                      | 95—105  |
| 3.3.2 | ललित कला अकादेमी                                                     | 106—113 |
| 3.3.3 | संगीत नाटक अकादेमी                                                   | 114—123 |
| 3.4   | सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र                                | 124—127 |
| 3.5   | कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान                                                | 128—132 |
| 3.6   | क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र                                          | 133—134 |
| 3.6.1 | पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                     | 135—140 |
| 3.6.2 | उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                      | 141—148 |
| 3.6.3 | दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                     | 149—151 |
| 3.6.4 | पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                      | 152—157 |
| 3.6.5 | उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                | 158—167 |
| 3.6.6 | दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                | 168—172 |
| 3.6.7 | उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र                                 | 173—180 |



|                                                                                        |                |
|----------------------------------------------------------------------------------------|----------------|
| <b>4. ज्ञान स्रोत विरासत</b>                                                           | <b>181—182</b> |
| <b>4.1 संस्थाएं</b>                                                                    | <b>183</b>     |
| 4.1.1 भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार                                                      | 184—191        |
| 4.1.2 भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण                                                    | 192—195        |
| 4.1.3 गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति                                                     | 196—202        |
| 4.1.4 नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय                                             | 203—215        |
| 4.1.5 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय                                            | 216—222        |
| 4.1.6 एशियाटिक सोसायटी                                                                 | 223—225        |
| 4.1.7 मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान                                      | 226—228        |
| 4.1.8 केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान                                                    | 229—331        |
| 4.1.9 केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान                                             | 232—236        |
| 4.1.10 नव नालंदा महाविहार                                                              | 237—239        |
| <b>4.2 पुस्तकालय</b>                                                                   | <b>240—241</b> |
| 4.2.1 राष्ट्रीय पुस्तकालय                                                              | 242—249        |
| 4.2.2 राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान                                            | 250—252        |
| 4.2.3 दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी                                                          | 253—255        |
| 4.2.4 रामपुर रजा पुस्तकालय                                                             | 256—259        |
| 4.2.5 केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय                                                        | 260—262        |
| 4.2.6 खुदाबक्श ओरिएण्टल पब्लिक लाइब्रेरी                                               | 263—264        |
| 4.2.7 केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार                                                       | 265—267        |
| <b>5. अन्य</b>                                                                         | <b>268—269</b> |
| 5.1 शताब्दियाँ एवं वर्षगांठ                                                            | 270—275        |
| 5.2 मंत्रालय से अनुदान                                                                 | 276—287        |
| 5.2.1 मंच कला                                                                          | 288—289        |
| 5.2.2 छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति                                                    | 290—293        |
| <b>5.3 विविध</b>                                                                       | <b>294</b>     |
| 5.3.1 पूर्वोत्तर क्षेत्रों में पहल                                                     | 295—301        |
| 5.3.2 सूचना का अधिकार अधिनियम                                                          | 302            |
| 5.3.3 सतर्कता                                                                          | 303—304        |
| 5.3.4 हिंदी का प्रगामी प्रयोग                                                          | 305—307        |
| 5.3.5 कर्मचारी कल्याण                                                                  | 308            |
| 5.3.6 शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति                                                     | 309—311        |
| 5.3.7 नागरिक चार्टर                                                                    | 312—327        |
| 5.3.8 वेतन एवं लेखा कार्यालय                                                           | 328—331        |
| 5.3.9 अधिकारियों की सूची                                                               | 332—333        |
| 5.3.10 लंबित लेखा परीक्षा पैरा                                                         | 334            |
| <b>6. अनुलग्नक : केंद्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारियों तथा अपीलीय अधिकारियों की सूची</b> | <b>335—336</b> |

खजूराव मंदिर



# 1

## संस्कृति मंत्रालय सिंहावलोकन

---



## संस्कृति मंत्रालय सिंहावलोकन

संस्कृति हमारी सम्मिलित प्रवृत्तियों, मूल्यों, लक्ष्यों और प्रथाओं का एक समुच्चय हैं। भारत जैसी विविधता वाला देश अपनी सांस्कृतिक विविधता के द्वारा जाना जाता है।

संस्कृति मंत्रालय का अनिवार्य दायित्व कला और संस्कृति के सभी रूपों का परिरक्षण और संवर्धन करना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मंत्रालय, बुनियादी स्तर पर सांस्कृतिक प्रयासों की सुरक्षा और प्रोत्साहन से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के संवर्धन तक; भारत की प्राचीन विरासत के परिरक्षण कार्यक्रम से लेकर समकालीन संरचनात्मक कलाओं के प्रदर्शन तक जैसे विभिन्न कार्यक्रमों में कार्यरत है। मंत्रालय का कार्य, कार्य करने के तरीकों और साधनों का विकास करना और उनको सतत बनाए रखना है, जिसके माध्यम से लोगों को सृजनात्मक और सौंदर्यपरक संवेदनशीलता को निरंतर बल मिलता रहे।

यद्यपि अनेक बहुआयामी कार्य मंत्रालय द्वारा सीधे ही शुरू किए जाते हैं तथापि यहां 41 संगठनों के एक नेटवर्क की सहायता से कार्य करता है। इस नेटवर्क में दो संबद्ध कार्यालय, छह अधीनस्थ कार्यालय और तैंतीस स्वायत्तशासी संगठन शामिल हैं। अपने कार्यक्रमों और अपनी संस्थाओं के माध्यम से मंत्रालय का उद्देश्य मूर्त विरासत, अमूर्त विरासत और ज्ञान विरासत की सुरक्षा, विकास और संवर्धन करना है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के माध्यम से मंत्रालय, राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों की सुरक्षा और साथ ही महत्वपूर्ण पुरातत्वीय अवशेषों के उत्खनन कार्य में भी कार्यरत है। मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन, देश के कुछ उत्कृष्ट संग्रहालय हैं, जिसमें राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय शामिल हैं, जिसमें बहुमूल्य संग्रह हैं, जो कला और संस्कृति की समृद्ध विरासत वाले देश के बराबर हैं। मंत्रालय वित्तीय समर्थन के प्रावधान के द्वारा क्षेत्रीय संग्रहालयों का संवर्धन करता है।

अमूर्त विरासत के क्षेत्र में मंत्रालय अनेक स्कीमों और कार्यक्रम चलाता है, जिनका उद्देश्य मंच, दृश्य और साहित्यिक कलाओं में कार्यरत व्यक्तियों, व्यक्तियों के समूहों और सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस प्रयास में इसे 3 राष्ट्रीय अकादेमियों—साहित्य अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय



की सहायता मिलती है, जो साहित्य, मंच और दृश्य कलाओं में उत्कृष्ट रचनात्मक विचारों के सम्मिलन का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतिष्ठित पुरस्कारों के माध्यम से जैसे जो साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी और संगीत नाटक अकादेमी द्वारा प्रदान किए गए हैं, मंत्रालय का उद्देश्य, इन क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने वालों की पहचान करना है। मंत्रालय के अधीन सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, देश की लोक और पारंपरिक कलाओं पर आधारित कार्यकलापों में लगे हुए हैं।

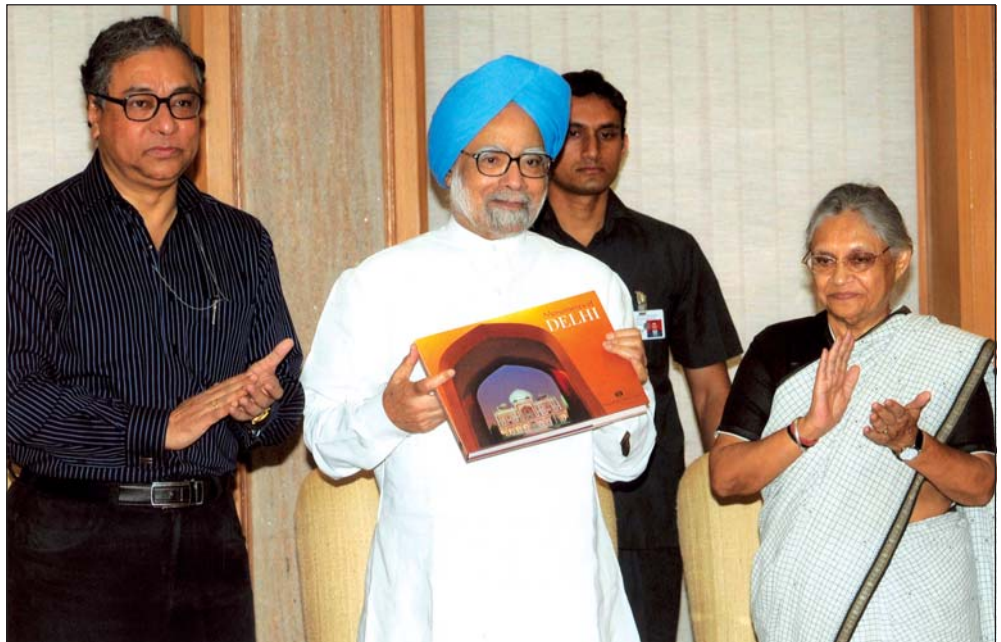
मंत्रालय का प्रमुख दायित्व ज्ञान की अभिवृद्धि और उसे परिरक्षित करना है। यह देश के प्रमुख पुस्तकालयों का अभिरक्षक है। राष्ट्रीय पुस्तकालय, राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान और मंत्रालय का एक अधीनस्थ कार्यालय, जिसका एक मुख्य कार्य, देश की सभी महत्वपूर्ण पुस्तकों का अर्जन और संरक्षण तथा प्रकाशित करना है। मंत्रालय पुस्तकालयों के विकास के लिए सहायता अनुदान प्रदान करता है तथा इस क्षेत्र में नीतियों के विकास के लिए भी उत्तरदायी है। भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के माध्यम से मंत्रालय, देश के अभिलेखीय दस्तावेजों के अनुरक्षण के लिए उत्तरदायी है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, मंत्रालय के अधीन एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान, भारत जन मानस के सामाजिक – सांस्कृतिक तथा जैविक पहलुओं में शोध कार्य करता है।

मंत्रालय द्वारा बौद्ध और तिब्बती संस्कृति का संवर्धन, सारनाथ, वाराणसी और लेह स्थित इसके संस्थानों के माध्यम से किया

जाता है। मंत्रालय, गांधी स्मृति और दर्शन समिति के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, मिशन और विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यकलापों का नेतृत्व करता है तथा यह महान भारतीय विभूतियों की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और शताब्दियों के स्मरणोत्सव का भी प्रभारी है।

भारतीय और एशियाई कला और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने वालों के लिए मंत्रालय के पास एक सुव्यवस्थित क्षमता निर्माण कार्यक्रम है। पुरातत्व विद्यालय, अभिलेखीय विद्यालय, राष्ट्रीय इतिहास और कला संग्रहालय संस्थान, मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रम और पाठ्यक्रम तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और कला क्षेत्र प्रतिष्ठान द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रम, मंत्रालय के क्षमता निर्माण कार्यक्रम के कुछ उदाहरण हैं।

मंत्रालय, विभिन्न देशों के साथ किए गए द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, जिनके माध्यम से भारतीय संस्कृति प्रस्तुत करने वाले भारत महोत्सवों व प्रदर्शनियों को विदेशों में आयोजित किया गया है। संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति के क्षेत्र में विभिन्न यूनेस्को अभिसमयों के कार्यान्वयन के लिए भी जिम्मेदार है। इस वार्षिक रिपोर्ट में मंत्रालय के उद्देश्यों को पूरा करने में इसके कार्यकलापों तथा उपलब्धियों का विस्तार से विशेष उल्लेख करने का प्रयास किया गया है।



माननीय प्रधानमंत्री 'दिल्ली के स्मारक' पुस्तक का विमोचन करते हुए







# 2

## मूर्त सांस्कृतिक विरासत

---

## भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की स्थापना 1861 में की गई थी। यह संस्कृति विभाग के संबद्ध कार्यालय के रूप में कार्य करता है। इस संगठन के प्रमुख, महानिदेशक हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रमुख कार्यकलाप इस प्रकार हैं :

- (i) पुरातात्विक अवशेषों और उत्खननों का सर्वेक्षण;
- (ii) केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों, स्थलों और अवशेषों का रखरखाव तथा संरक्षण;
- (iii) स्मारकों और पुरातात्विक अवशेषों का रासायनिक परिरक्षण;
- (iv) स्मारकों का वास्तुशिल्पीय सर्वेक्षण;
- (v) पुरालेखीय अनुसंधान का विकास और मुद्राशास्त्र अध्ययन;
- (vi) स्थल संग्रहालयों की स्थापना और उनका पुनर्गठन;
- (vii) विदेशों में खोज अभियान;
- (viii) पुरातत्व विज्ञान में प्रशिक्षण;
- (ix) तकनीकी रिपोर्टों तथा अनुसंधान कार्यों का प्रकाशन।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने 24 मंडलों के माध्यम से अपने संरक्षणाधीन स्मारकों के संरक्षण और परिरक्षण का कार्य करता है। प्रशासनिक सुविधा के लिए हाल ही में एक छोटा मंडल स्थापित किया गया है जिसका मुख्यालय लेह में है। इसके अलावा, एएसआई में 6 उत्खनन शाखाएं, 2 मंदिर सर्वेक्षण परियोजनाएं, 1 भवन सर्वेक्षण परियोजना, 1 प्रागैतिहासिक शाखा, 1 विज्ञान शाखा, 2 पुरालेख शाखाएं (एक अरबी और फारसी के लिए तथा अन्य संस्कृत और द्रविण भाषाओं के लिए) तथा 1 बागवानी शाखा है जिनके माध्यम से अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न अनुसंधान तथा अन्य कार्य किए जाते हैं।

प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 के तहत ए.एस.आई. ने देश के 3676 स्मारकों/स्थलों को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक/स्थल घोषित किया है जिनमें 19 स्थल ऐसे हैं जो यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में अंकित हैं।

### स्मारकों का संरक्षण और परिरक्षण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने 3676 स्मारकों का संरक्षण किया है जिनमें प्रागैतिहासिक प्रस्तरकालीन स्थल, आदि-ऐतिहासिक निवास स्थल,

2.1



महापाषाणकालीन कब्र, पाषाणकालीन गुफाएं, स्तूप, मन्दिर, मस्जिद, चर्च, किलों की जल व्यवस्था, स्तंभ शिला लेख, बेस रिलीफ, अखण्ड मूर्तियां, मूर्ति शिल्प इत्यादि शामिल हैं। ये स्मारक पत्थर, ईंट, लकड़ी, चूने, मिट्टी इत्यादि से बनाए गए हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का प्राथमिक कार्य, केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों तथा स्थलों के आस-पास के क्षेत्र का संरक्षण, परिरक्षण, अनुरक्षण और विकास करना है। इस प्रकार के संरक्षण का उद्देश्य सांस्कृतिक सम्पदा को दीर्घ अवधि तक उसी रूप में बनाए रखना है और यदि संभव हो इनकी सम्पूर्णता को बनाए रखते हुए अधिप्रामाणिक रूप से इनके कलात्मक और ऐतिहासिक संदेश को प्रस्तुत करना है। पुरातत्व मूल्यों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि यथा-संभव इनके मूल स्वरूप को बनाए रखते हुए इनका परिरक्षण किया जाए। सांस्कृतिक पर्यटन को स्मारकों के साथ एकीकृत करके इसके विकास पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है। इस उद्देश्यार्थ पर्यटकों के लिए सूचना केन्द्र, जन-सुविधाएं, आधुनिक टिकट काउंटर, बेहतर साइन बोर्ड और पेयजल सुविधा इत्यादि के साथ विश्व विरासत सूची में शामिल स्मारकों और अन्य महत्वपूर्ण तथा ऐसे स्मारकों जिनको पर्यटक बार-बार देखने आते हैं, में सांस्कृतिक हब स्थापित किए जा रहे हैं।

स्मारकों का संरक्षण एक सतत् प्रक्रिया है और सभी मंडल, रासायनिक और बागवानी शाखाएं इस संबंध में वार्षिक कार्यक्रम बनाती हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस वर्ष प्राथमिकताओं, प्रतिबद्धता, उपलब्ध जनशक्ति और वित्तीय संसाधनों के आधार पर अवसंरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण और बागवानी अभियान के लिए लगभग 1700 स्कीमें (कार्य) शुरू की हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की मंडल, रासायनिक और बागवानी शाखाएं उपर्युक्त कारकों को ध्यान में रखते हुए वार्षिक कार्यक्रम तैयार करके उन्हें कार्यान्वित करती हैं। राष्ट्रमंडल खेल, 2010 को ध्यान में रखते हुए दिल्ली के 46 स्मारकों का विशेष अवसंरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण और परिसर विकास संबंधी कार्य किया गया था।

इसके अतिरिक्त भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, विदेश मंत्रालय के आईटीईसी कार्यक्रम के तहत कम्बोडिया में ता प्रोहम मंदिर के संरक्षण और जीर्णोद्धार कार्य में योगदान कर रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस मंदिर के अवसंरचनात्मक, भू-तकनीकी, पानी जमा होने और वृक्ष संरक्षण पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन और जांच की है और आईसीसी-यूनेस्को को इस संबंध में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है। अंतर्राष्ट्रीय समन्वय समिति और

एएसपीएसएआरए राष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा यथा-अनुमोदित परियोजना कार्यान्वयन कार्यक्रम के अनुसार तीन स्थानों पर संरक्षण कार्य प्रगति पर है। मार्च, 2010 तक 1200.00 लाख रु. व्यय किए गए हैं तथा वर्ष 2010-11 में इस परियोजना के लिए 3.5 करोड़ रु. का प्रावधान किया गया है।

जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बैंक (जेबीआईसी) के ऋण से अजंता-एलोरा संरक्षण और पर्यटन विकास परियोजना के प्रथम चरण को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद चरण-।। शुरू कर दिया गया है और यह प्रगति पर है। अजंता, एलोरा, पितलखोड़ा और औरंगाबाद गुफाओं, दौलताबाद किला, बीवी का मकबरा, पल्लवदेवी मंदिर तथा लोनार मंदिर समूह के विस्तृत संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण और समग्र परिसर विकास का एकीकृत कार्यक्रम 37.68 करोड़ रु. के परिव्यय से इस परियोजना के चरण-।। को शुरू किया गया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस परियोजना पर जून, 2010 तक 26.14 करोड़ रु. व्यय किए हैं और वर्ष 2010-11 के लिए 8 करोड़ रु. का प्रावधान किया गया है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण के तहत राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों में से 19 स्मारक विश्व विरासत हैं। इन स्मारकों से संबंधित प्रस्तावित कार्य में संरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण, परिसर विकास, पर्यटक सुविधाएं, प्रबंधन योजनाएं इत्यादि बनाना शामिल है।

## पुरातात्विक उत्खनन

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने फील्ड मौसम 2010-11 के दौरान अपने मंडल, उत्खनन शाखाओं के माध्यम से अनेक उत्खनन कार्य किए। इन उत्खनन के विशिष्ट परिणाम नीचे दिए गए हैं:

### 1. मल्हार, जिला बिलासपुर, छत्तीसगढ़ :

मल्हार के उत्खनन से पांच-स्तरीय सांस्कृतिक काल खण्डों के कारकों का पता चला है, नामतः-

|          |                   |
|----------|-------------------|
| अवधि I   | मौर्य-पूर्व       |
| अवधि II  | मौर्य-सुंगा कालीन |
| अवधि III | सातवाहन           |
| अवधि IV  | गुप्त-वाकतक       |
| अवधि V   | उत्तर गुप्त-वाकतक |

इस उत्खनन से उस समय के समाज की शहरी व्यवस्था और दैनिक आवश्यकता की चीजों के बारे में अभूतपूर्व और



महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। विभिन्न स्तरों पर प्राप्त कुछ मिट्टी के मृदभाण्ड, लाल मिट्टी के मृदभाण्ड, मलिन लाल मिट्टी के मृदभाण्ड, लाल चिकनी मिट्टी के घोल के मृदभाण्ड, काली चिकनी मिट्टी के मृदभाण्ड, लाल चिकनी मिट्टी के मृदभाण्ड, काली और लाल मिट्टी के मृदभाण्ड तथा भूरे रंग की मिट्टी के मृदभाण्ड शामिल हैं।

पुरातत्व-विषयक निष्कर्षों में कान के गहने, लौह वस्तुएं, डाइस, काजल रोड, सुरमा डालने की सलाई, उत्कीर्ण मुहरे शामिल हैं। इसके साथ-साथ एक विशेष मुहर का उल्लेख करना आवश्यक है जिस पर “युवराजस्य वाशिष्ठिपुरत्रासय” का उल्लेख करते हुए महान ब्राह्मी अक्षर दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्षों में मानव और पशुओं के टेराकोट्टा चित्र, विभिन्न आकार के मनके, पैंडिल इत्यादि शामिल हैं। इसी प्रकार के अन्य बहुमूल्य नग, शीशे और टेराकोट्टा, लौह वस्तुएं और दो मुहरे भी प्राप्त हुई हैं।

## 2. नेत्र खीरसारा में, जिला कच्छ, गुजरात :

यह उत्खनन — (1) निवास करने तथा जीवन निर्वाह पद्धति की जानकारी प्राप्त करने और (2) कच्छ में पहले से ही ज्ञात हड़प्पा स्थल के उत्खनन के साथ इसके संबंध का पता लगाने के लिए किया गया था। यह स्थल अमूमन आयताकार है और यह दोहरी मजबूत दीवार से घिरा हुआ है, इसके कोनों पर बुर्ज तथा आवासीय परिसर हैं तथा एक बेहतर संरचना है जो शायद माल गोदाम है तथा इसकी अलग-अलग मोटाई की समानांतर दीवार है जिनके मध्य में थोड़ा अंतर है। इसके दक्षिण-पूर्व कोने बंद हैं तथा इन पर सीढ़ियां बनाई गई हैं और इसके दोनों ओर गार्ड का कमरा है, जो माल गोदाम के महत्व को और अधिक सिद्ध करता है।

अवसंरचनात्मक पुरावशेषों के अतिरिक्त इस उत्खनन कार्य के दौरान विशिष्ट रूप से पूर्ण विकसित हड़प्पा कालीन सिरामिक्स और कला वस्तुएं प्राप्त की गईं जिनमें मुहर, स्वर्णमाला, सेलखड़ी की माला, बहुमूल्य रत्नों की माला, ड्रिल बिट, वजन, खिलाड़ी, ब्लेड, टेराकोट्टा पशु और पक्षियों की आकृति, तांबे, पत्थर तथा सीप से बनी वस्तुएं शामिल हैं।

## 3. कोंडापुर, जिला मेड़क, आंध्र प्रदेश :

कोंडापुर में किए गए उत्खनन कार्य से ब्राह्मण धर्म के प्रारंभिक ऐतिहासिक काल विशेषकर सातवाहन अवधि की विभिन्न चरणों की गोलाकार, अर्द्ध गोलाकार संरचनाएं प्राप्त हुई हैं जिनको अग्नि वेदी, लज्जा गौरी की क्योलिन लघु मूर्ति, लोहे के उपकरणों — ‘वज्र’, त्रिशूल, प्रून कुंभ इत्यादि जैसे मांगलिक प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है, आरपीडब्ल्यू के अनेक स्प्रिंकलर्स बनाए गए हैं, पुशवधशाला में पशुओं की हड्डी और धार्मिक अनुष्ठान करने के बर्तन इत्यादि भी प्राप्त हुए हैं।

इस उत्खनन में प्राप्त पुरातत्व वस्तुओं में प्रारंभिक ब्राह्मी लिपि वाली सात टेराकोट्टा मुहरे, धातु के सिक्के तांबे, पोटिन और चांदी के विभिन्न मूल्यों के सिक्के जिनके एक तरफ विवरण के साथ अथवा विवरण के बिना हाथी, घोड़े, शेर, स्वास्तिक, बैल के चित्र बनाए गए हैं और दूसरी ओर उज्जैन प्रतीक बनाया गया है तथा किसी सिक्के पर इस ओर कुछ नहीं बनाया गया है; अनेक मालाएं विभिन्न आकृति की तथा विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे टेराकोट्टा, शीशे, सीप, फेइनिन्स, पेस्ट और बहुमूल्य नगों से बनाई गई हैं।

इस स्थान से प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण पुरातत्व वस्तु क्योलिन लघु मूर्ति है। इन्हें दोहरी कोल्लिंग तकनीक से बनाया गया है। ये मूर्तियां साधारण और हर्ष की मुद्रा में हैं। मानव मूर्तियों में केश सज्जा के विभिन्न प्रकारों को दर्शाया गया है। इसके साथ-साथ इस उत्खनन के दौरान महिला लघु मूर्तियों के सामान्य प्रकार भी मिले हैं। अभी तक प्राप्त हुई पशुओं की लघु मूर्तियों में साज-सज्जा युक्त घोड़े, बैटे हुए बैल, हाथी, शेर इत्यादि की मूर्तियां शामिल हैं। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि क्योलिन लघु मूर्तियों में, बैटे हुए पुरुष, माता और बच्चे की लघु मूर्ति तथा बैठी हुई महिला लघु मूर्ति में प्रेमी जोड़ा और लज्जा गौरी फलक शामिल हैं।

हड्डी से बनी वस्तुओं में शलाका, कंधा, चूड़ियां इत्यादि शामिल हैं। विभिन्न पशुओं की परिष्कृत हड्डियों के विभिन्न प्रकार प्रचुर मात्रा में मिलना यह दर्शाता है कि इस स्थान पर हड्डी उद्योग भी प्रचलन में था।

**4. बानगढ़, गंगारामपुर, जिला दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल:**

बानगढ़ पर उत्खनन कार्य इस स्थल के पूरे सांस्कृतिक क्रम को सुनिश्चित करने के लिए किया गया था। इस उत्खनन से पूर्व-मौर्य काल से लेकर सल्तनत/मुगल काल तक के उत्तरोत्तर सांस्कृतिक क्रम की जानकारी प्राप्त हुई है। पूर्व-मौर्य काल से संबंधित काले चिकने बर्तन तथा एक केलसेडोनी बीड और नाव की आकृति की मिट्टी की एक वस्तु भी इससे मिली है। मौर्य काल को मौर्यकालीन विशिष्ट ईंटों सहित मौर्यकालीन काले चिकने बर्तन, विशिष्ट कटोरी और थालियों से वर्गीकृत किया गया है। यहां से प्राप्त पुरातत्व वस्तुओं में खिलाड़ी की मिट्टी की मूर्ति, मिट्टी की घनाकृति, लोहे का हथ्था और चिन्हित सिक्के शामिल हैं। सुंग कुषाण काल की पहचान सुंग काली मिट्टी की सुंग शलाका चिन्हित और ढले हुए तांबे के सिक्कों, मुद्रांकित डिजाइन के एक पदक, चिन्हित मिट्टी के बर्तनों, लाल और सलेटी बर्तनों से होती है।

**5. जमनिया के पास लाथिया, जिला गाजीपुर, उत्तर प्रदेश :**

लाथिया में किए गए उत्खनन कार्य से इस स्थल से प्राप्त सिरामिक उद्योग, पुरातत्व वस्तुओं और अन्य सांस्कृतिक सामग्री से इसके द्विस्तरीय सांस्कृतिक क्रम का पता चला है:

काल I: सुंग और कुषाण काल

काल II: गुप्त काल

सुंग-कुषाण काल से प्राप्त सिरामिक उद्योग काली मिट्टी से बने मृदभाण्ड, काले और लाल मृदभाण्ड, स्लेटी मृदभाण्ड तथा लाल मृदभाण्ड का प्रतिनिधित्व करता है। गुप्त काल के ईंटों से बने चार मंदिरों के अवशेष भी मिले हैं। इनकी संरचनाएं पूरी तरह ध्वस्त हो गई हैं और केवल इनकी दीवारों के अवशेष ही बचे हैं। इन सभी मंदिरों के द्वार पूरब की ओर हैं तथा इनकी आयोजना भी एक ही तरह की है। इनमें दो प्रकार की वास्तु शिल्प यूनिटें अर्थात् सैंकटम (गर्भ गृह) और मंडप शामिल की गई हैं। इन मंदिर समूह के पश्चिम में पत्थर के स्तंभ स्थित हैं। मंदिर संख्या 1 और 2 तथा इनकी दीवारें चरण-। के काल-।। में बनाए गए थे और मंदिर संख्या 3 और 4 इसी अवधि के चरण-।। में बनाए गए थे।

इस उत्खनन से प्राप्त पुरातत्व वस्तुओं में टेराकोट्टा उत्कीर्ण मुहरे और विशेष रूप से गुप्त ब्राह्मी अक्षर में उत्कीर्ण तांबे की अंगूठी-व-मुहर शामिल हैं। इसके साथ-साथ अन्य पुरातत्व वस्तुएं टेराकोट्टा, शीशे और पत्थर की मालाएं, टेराकोट्टा की मानव, पशु, पक्षी और सर्प की लघु मूर्ति, तांबे के पंच मार्क वाले तथा कास्ट सिक्के, सोने की परत चढ़े, कछुए की आकृति के टेराकोट्टा पेण्डल, लोहे की हसिया और खुर्पी तथा पत्थर की चक्की, मूसली, खण्डित मूर्तियां इत्यादि हैं।

**पुरातत्व स्मारक**

**एएमएसआर अधिनियम, 1958 को संशोधित करना :**

प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1958 को हाल ही में संशोधित किया गया है और इसमें संरक्षित स्मारक की मरम्मत, जीर्णोद्धार तथा इसके पास पुनर्निर्माण की अनुमति प्रदान करने सहित विभिन्न प्रकार के कार्यों को निष्पादित करने के लिए सक्षम प्राधिकारी नियुक्त करने के प्रावधान किए गए हैं।

इस संशोधित अधिनियम में अध्यक्ष, पूर्णकालिक सदस्यों और अंशकालिक सदस्यों वाले राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण को स्थापित करने की व्यवस्था की गई है। जहां तक सक्षम प्राधिकारियों का संबंध है अभी तक 26 सक्षम प्राधिकारियों को इस अधिनियम के तहत कार्य निष्पादित करने के लिए पहले ही अधिसूचित कर दिया गया है। राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण गठित करने की कार्यवाही की जा रही है।

**प्रकाश और ध्वनि शो :**

यद्यपि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण स्वयं संरक्षित स्मारकों में प्रकाश और ध्वनि शो आयोजित और प्रदर्शित नहीं करता, तथापि, राज्य पर्यटन विभाग अथवा आईटीडीसी, जैसा भी मामला हो, को संरक्षित स्मारकों के परिसर में इस प्रकार शो आयोजित करने और प्रदर्शित करने की सिद्धांत रूप से अनुमति प्रदान की जा रही है। हाल ही में कुम्भलगढ़ किले, राजस्थान में प्रकाश और ध्वनि शो शुरू किया गया है।

**पर्यटक सुविधाएं :**

बड़ी संख्या में घरेलू और विदेशी पर्यटक विभिन्न संरक्षित स्मारकों का दौरा करते हैं। इस प्रकार के संरक्षित स्मारकों, जहां पर्यटक बार-बार आते हैं, में पेयजल, प्रसाधन कक्ष, अमानती कक्ष,

निःशुल्क प्रकाशन, आडियो गाइड सुविधा, चिह्न, आगंतुक पीठ इत्यादि जैसी पर्यटक सुविधाएं प्रदान करने के लिए नियमित प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ऐसे स्मारकों, जहां ऐसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, में इन सुविधाओं को प्रदान करने के प्रयास किए जा रहे हैं तथा पर्यटकों के समक्ष स्मारक को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने के लिए मौजूदा सुविधाओं का स्तरोन्नत करने के प्रयास किए जाते हैं।

### पुरातत्व संग्रहालय

स्थल संग्रहालयों को निर्मित करने का कार्य सर जॉन मार्शल, जिन्होंने स्थानीय संग्रहालयों जैसे सारनाथ (1904), आगरा (1906), अजमेर (1908), दिल्ली किला (1909), बीजापुर (1912), नालंदा (1917) और सांची (1919) का पता लगाने की पहल की थी, के अधीन किया गया था। स्थल संग्रहालय की अवधारणा 'प्राचीन स्थलों से प्राप्त की गई छोटी और सचल पुरातत्व वस्तुओं को उन पुरावशेषों के साथ प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध रखने पर आधारित है जिनसे वे प्राप्त की गई हैं ताकि उनकी प्राकृतिक परिधि में ही उनका अध्ययन किया जा सके और इन्हें वाहन से लाने पर इनसे ध्यान न हटने पाए।

इस समय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन 44 स्थल स्मारक हैं और इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है जो निदेशक (संग्रहालय) के अधीन है जिनकी सहायता करने के लिए एक अधीक्षक पुरातत्व (संग्रहालय) की व्यवस्था की गई है। ये अपने दायित्वों को दिल्ली (उत्तरी क्षेत्र), सारनाथ (पूर्वी क्षेत्र), वेल्हा गोवा (पश्चिमी क्षेत्र) और चेन्नई (दक्षिणी क्षेत्र) के चार क्षेत्रीय उप-पुरातत्व अधीक्षकों के माध्यम से पूरा करते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन पुरातत्व स्थल संग्रहालयों की स्थापना सामान्यतः सहायक पुरातत्व अधीक्षक अथवा सहायक पुरातत्वविदों द्वारा की जाती है।

वर्ष 2010 के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की संग्रहालय शाखा के तहत किए गए कार्य इस प्रकार हैं :—

**क. संग्रहालय खुलने का समय :** आम जनता को और अधिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए पुरातत्व स्थल संग्रहालय को खोलने के समय में संशोधन किया गया है। संग्रहालय को साप्ताहिक अवकाश अर्थात् स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार शुक्रवार अथवा सोमवार को छोड़कर आम जनता के लिए पूरे सप्ताह पूर्वाह्न 09.00 बजे से अपराह्न 5.00 बजे तक खुला रखा जाता है।

**ख. वार्षिक दिवस समारोह :** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत पुरातत्व स्थल संग्रहालयों ने विरासत परिरक्षण, संरक्षण, संग्रहालयों के नीति शास्त्रीय और ऐतिहासिक मूल्य से संबंधित अनेक जागरूकता आधारित कार्यक्रमों का आयोजन करके निम्नलिखित समारोह मनाए :

- 18 अप्रैल — विश्व विरासत दिवस
- 18 मई — विश्व संग्रहालय दिवस
- 15 अगस्त — स्वतंत्रता दिवस
- 2 अक्टूबर — गांधी जयंती
- 14 नवम्बर — बाल दिवस
- 19 से 25 नवम्बर — विश्व विरासत सप्ताह
- 26 जनवरी — गणतंत्र दिवस

विश्व संग्रहालय दिवस और विश्व विरासत दिवस के अवसर पर संग्रहालय में निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। विभिन्न विद्यालय और कॉलेज विद्यार्थियों की सहायता से पेंटिंग प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता और स्मारकों तथा संग्रहालयों के परिसरों की साफ-सफाई संबंधी कार्यकलाप आयोजित किए जाते हैं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त, क्षेत्रीय महत्व के अनुसार संबंधित स्थल संग्रहालय द्वारा कुछ विशेष दिवस/उत्सव भी जैसे डींग संग्रहालय में ब्रज महोत्सव आयोजित किए जाते हैं।

**ग. संग्रहालयों में आधुनिक सुरक्षा तकनीक :** पुरातत्व वस्तुओं, संग्रहालय सम्पदा और आगंतुकों की रक्षा और सुरक्षा के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन पुरातत्व स्थल संग्रहालयों ने सुरक्षा प्रणाली का स्तरोन्नत किया है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

- i. सुव्यवस्थित रूप से प्रशिक्षित संग्रहालय वैज्ञानिकों/पुरातत्वविदों को स्थल संग्रहालयों का अध्यक्ष बनाया गया है जो पुरातत्व वस्तुओं का रिकार्ड रखते हैं तथा निगरानी करते हैं और प्रदर्शित की गई पुरातत्व वस्तुओं की प्रतिदिन दो बार (खुलने और बंद होने के समय) स्वयं स्थिति की जांच सुनिश्चित करते हैं।



- ii. संग्रहालय कर्मचारियों को आवधिक प्रशिक्षण/परामर्श प्रदान किया जाता है।
- iii. इसके साथ-साथ (पुरातत्व संग्रहालय, बादामी, पुरातत्व संग्रहालय, बीजापुर, कूच बिहार पैलेस संग्रहालय, हजारदुराई पैलेस संग्रहालय इत्यादि) में डिजिटल वीडियो रिकार्डर संस्थापित करके मौजूदा क्लोज सर्किट टेलीविजन प्रणाली (सीसी टीवी) का स्तरोन्नत किया गया है। उपर्युक्त के अतिरिक्त आवश्यकता के अनुसार मेटल डिटेक्टर्स, हैंड-हेल्ड डिटेक्टर्स संस्थापित किए गए हैं। वेल्हा गोवा संग्रहालय में अग्नि शमन यंत्र/धुंए का पता लगाने वाले यंत्र/डिजिटल अलार्म इत्यादि संस्थापित कर दिए गए हैं। हजारदुराई पैलेस संग्रहालय में मेटल डिटेक्टर्स लगा दिए गए हैं।

**घ. शिक्षाविदों, पुरातत्व वैज्ञानिकों और कलाकारों के साथ बातचीत :** सभी स्थल संग्रहालयों में पुरातत्व, विरासत और इतिहास से संबंधित विषयों पर व्याख्यान देने के लिए स्थानीय विशेषज्ञों को नियमित रूप से आमंत्रित किया जाता है।

- (i) पुरातत्व संग्रहालय, सारनाथ में इस क्षेत्र के विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित करके "सारनाथ संग्रहालय के अतीत, वर्तमान और भविष्य" पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। किला संग्रहालय, वेल्हा और नालंदा संग्रहालय ने समय-समय पर प्रदर्शनी सहित संग्रहालय कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं पर कार्यशालाएं आयोजित की हैं।
- (ii) हम्पी संग्रहालय के अधिकारियों को आईसीओएम-सीसी द्वारा "विरासत संरक्षण में विविधता, परम्परा और सहभागिता" विषय पर आयोजित किए गए सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।
- (iii) संग्रहालय अधिकारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है और पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में बुलाया जाता है। बादामी संग्रहालय ने अपने सेवारत कर्मचारियों को राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली में "संग्रहालय और विरासत प्रबंधन" पर आयोजित कार्यशाला-व-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रतिनियुक्त किया।

**ड. कला वस्तुओं का वैज्ञानिक रूप से प्रदर्शन :**

- (i) कुछ स्थल संग्रहालयों में बिजली की बचत करने वाली प्रकाश व्यवस्था शुरू की गई है। इसके साथ-साथ पुरातत्व संग्रहालय, बादामी; पुरातत्व स्थल संग्रहालय, सूर्य पहर; पुरातत्व स्थल संग्रहालय, अमरावती; पुरातत्व स्थल संग्रहालय चन्द्रगिरी; किला संग्रहालय, चैन्नई; मट्टनचेरी पैलेस संग्रहालय; टीपू सुल्तान संग्रहालय, श्रीरंगापट्टनम इत्यादि में प्रकाश/ऊष्मा प्रदान करने के लिए गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का उपयोग किया गया है।
- (ii) बादामी संग्रहालय, हजारदुराई पैलेस संग्रहालय, सारनाथ संग्रहालय, नालंदा संग्रहालय, नागार्जुनिकोंडा संग्रहालय इत्यादि जैसे पुरातत्व स्थल संग्रहालयों में विभिन्न भाषाओं में टच स्क्रीन कियोस्क प्रदान किए गए हैं।
- (iii) एनएमएमए के तहत तैयार की गई कलावस्तु प्रलेखन शीटों के अनुसार एक समान प्रणाली के आधार पर पुरातत्व स्थल संग्रहालयों में संग्रह का डिजिटलीकरण प्रक्रियाधीन है।

**च. स्थल संग्रहालयों में विकलांग व्यक्तियों के लिए व्यवस्था:** कुछ पुरातत्व स्थल संग्रहालयों में विकलांग व्यक्तियों की सुविधा के लिए विशेष व्यवस्था की गई है:

- (i) हजारदुराई पैलेस संग्रहालय जैसे कुछ पुरातत्व स्थल संग्रहालयों में शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं जिनमें ब्रैल प्लेक, व्हील चेयर प्रदान करना शामिल है।
- (ii) पुरातत्व स्थल संग्रहालय, दिल्ली में संग्रहालय कला वस्तुओं के संबंध में पाठ ब्यौरे को पहले ही अंतिम रूप दे दिया गया है और शीघ्र ही ब्रैल और ब्रैल प्लेक में विधियां उपलब्ध करायी जाएंगी।

**छ. अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी :** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, एसएसीएच, चीन के साथ मिलकर फरवरी से नवम्बर, 2011 के दौरान भारत में चार स्थानों पर "प्राचीन चीन के भण्डार" विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन कर रहा है। इसके साथ-साथ चीली में जुलाई से अक्टूबर, 2011 के

दौरान “सुंदरम – प्राचीन भारत की कला और संस्कृति” विषय पर एक प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी।

**ज. संग्रहालय शाखा की भावी योजनाएं :** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की संग्रहालय शाखा वर्ष 2011 में विशेष कार्यक्रम, व्याख्यान, सेमिनार इत्यादि के अतिरिक्त सचल प्रदर्शनी आयोजित करके भारत के 150 वर्ष समारोह मनाएगी। सभी पुरातत्व स्थल संग्रहालयों की विवरणिका को संशोधित करके प्रकाशित किया जाएगा।

## पुरा वस्तुएं

पूरे भारत में वर्ष 2009–2010 के दौरान एएटी अधिनियम, 1972 की धारा 24 के तहत 15 (पन्द्रह) पुरा वस्तुओं की जांच की गई। वर्ष 2009 के दौरान विदेश में प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए 15 (पन्द्रह) अस्थाई निर्यात परमिट जारी किए गए। मौजूदा प्रावधानों को और अधिक कठोर बनाने के लिए पुरावस्तु और कला भण्डार अधिनियम, 1972 के प्रस्तावित संशोधनों के संबंध में अंतिम राय निर्धारित करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति गठित कर दी गई है।

## सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रम

एएसआई, देश भर में अपने विभिन्न मण्डलों और शाखाओं के जरिए विख्यात विद्वानों द्वारा स्लाइड शो/वृत्तचित्रों/व्याख्यानों सहित स्थलों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के अलावा जनता विशेषकर युवाओं में हमारी गौरवशाली विरासत जागरूकता का प्रचार-प्रसार करने के लिए कार्यशालाओं, फोटो प्रदर्शनियों, निबंध/चित्रकला/प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं, स्मारकों/स्थलों के दौरों का आयोजन करके विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है।

## सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और विदेश प्रशिक्षण

- श्री नियाज हुसैन, सहायक पुरातत्व रसायन वैज्ञानिक, विज्ञान शाखा, आगरा को दक्षिणी कोरिया में 02 अगस्त से 29 अक्टूबर, 2010 तक “संरक्षण विज्ञान में एशिया सहयोग

कार्यक्रम” में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए भेजा गया।

- श्री जान्हविज शर्मा, निदेशक (संरक्षण) और श्री तपन भट्टाचार्य, सहायक अधीक्षण पुरातत्व अभियंता, कोलकाता मंडल ने दिनांक 08 से 12 नवंबर, 2010 तक भारत-वियतनाम सीईपी (2007–2010) के तहत यथा-सहमत चाम स्मारकों के जीर्णोद्धार के संबंध में वियतनाम का दौरा किया था।
- डा० पी.के. मिश्रा, अधीक्षण पुरातत्व वैज्ञानिक, डा० वी.के. सक्सेना, अधीक्षण पुरातत्व रसायन वैज्ञानिक, विज्ञान शाखा और श्री तपन भट्टाचार्य, सहायक अधीक्षण पुरातत्व अभियंता, कोलकाता मंडल ने दिनांक 29 नवंबर से 3 दिसंबर, 2010 तक आनंद मंदिर, बागन का संरक्षण तथा जीर्णोद्धार कार्य करने के लिए प्रारंभिक अध्ययन के लिए म्यांमार का दौरा किया।

## पुरालेख शाखा

पुरालेख शाखा, मैसूर ने वर्ष के दौरान व्यापक पुरालेख सर्वेक्षण करने, संस्कृत और द्रविड़ भाषाओं में प्रकाशन, शिलालेखों की प्रतियां बनाने और उनके गूढ़ अर्थों का पता लगाने के कार्य को जारी रखा। पुरालेख शाखा, मैसूर के तकनीकी स्टाफ ने आंध्र प्रदेश में चित्तूर और अनंतपुर जिलों; कर्नाटक में हासन, माण्ड्या और बंगलौर जिलों; राजस्थान में टोंक जिला; तमिलनाडु में वेल्लोर, नागापट्टनम, तंजावर और तिरुविरामेश्वरम जिलों; उत्तर प्रदेश में गोरखपुर, बस्ती तथा फैजाबाद जिलों का दौरा किया और 13 शिलालेखों की खोज करके उनकी प्रतियां बनाईं। इनके गूढ़ अर्थ का पता लगाया जा रहा है ताकि इन्हें वर्ष 2010–11 के लिए भारतीय पुरालेख की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल किया जा सके।

पुरालेख शाखा (अरबी और फारसी शिलालेख), नागपुर ने वर्ष के दौरान अरबी और फारसी भाषाओं में अपना व्यापक सर्वेक्षण करने, प्रतिलिपि बनाने, गूढ़ अर्थ का पता लगाने और शिलालेखों के विवरण का प्रकाशन करने के कार्य को जारी रखा। इस अवधि के दौरान उत्तर प्रदेश के बस्ती, फैजाबाद और गोरखपुर जिलों के लगभग 45 ग्रामों में व्यापक रूप से सर्वेक्षण किया गया और 10 अरबी तथा फारसी पुरालेखों की प्रतियां बनाई गईं/फोटोग्राफ तैयार किए गए।

## बागवानी शाखा

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की बागवानी शाखा केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों में तथा उनके आसपास के भूदृश्य का विकास करने और पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए जिम्मेदार है। यह संबंधित स्मारक की शैली, आयु और प्रकृति के अनुसार उद्यान का संरक्षण करने में प्रमुख भूमिका निभाता है तथा स्थल की मूल विशेषता को बनाए रखने के लिए समय के अनुकूल विशिष्ट फूल लगाता है। इसने सभी 28 राज्यों और 7 संघ शासित क्षेत्रों में अपने कार्यकलापों का विस्तार किया है। स्मारकों (विश्व विरासत स्मारक सहित) के आसपास 364 उद्यान हैं जिनमें 2015 एकड़ भूमि शामिल है।

बागवानी शाखा के अलग-अलग प्रभागों द्वारा वर्ष 2009-10 के दौरान शुरू किए गए उद्यान/भूदृश्य कार्यों का ब्यौरा इस प्रकार है:

### उद्यान प्रभाग, आगरा

इसने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल तथा महाराष्ट्र के राज्यों के केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों व स्थलों के आसपास की 552.93 एकड़ भूमि में फैले 85 उद्यानों के विकास एवं रखरखाव का कार्य किया। इसने मध्य प्रदेश में चंदेरी में सिंचाई सुविधाओं, महाराष्ट्र में बीवी का मकबरा, औरंगाबाद के लान के चरण-।। के पुनः अभिमुखीकरण और सौंदर्यकरण सहित उद्यान और फलोद्यान के विकास, जिला मुरैना के पदवाली में भूदृश्य कार्य, माण्डू जिला-धार में बाज बहादुर महल में उद्यान तथा रूपवती पैविलियन में उद्यान के विकास, होशंग शाह मकबरे के पश्चिम में उद्यान के विस्तार, उत्तर प्रदेश के फतेहपुर सीकरी, आगरा में सिंचाई सुविधाओं सहित डाक बंगले के पीछे उद्यान तथा फतेहपुर सीकरी उद्यान के रिकार्ड कार्यालय क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं सहित उद्यान के विकास, जयसिंह पुरा टीला में उद्यान विकास से संबंधित कार्य पूरा किया।

### उद्यान प्रभाग, नई दिल्ली

इसने दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, जम्मू एवं कश्मीर तथा दमन राज्यों के केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों व स्थलों के आसपास की 619 एकड़ भूमि में फैले 125 उद्यानों में विकास एवं रखरखाव का कार्य किया। इसने शीतला माता मंदिर, पिलुदार, मेहसाना और पावागढ़, चम्पानेर की दक्षिणी-पूर्वी ओर की दुर्ग दीवार, गुजरात प्राचीन स्थल, राजा

कर्ण का टीला, मिर्जापुर और कुरुक्षेत्र, हरियाणा, महल बादशाही, पुष्कर, अजमेर और राधेश्याम मंदिर, कृष्णाविला, जिला बारा, राजस्थान, मूर्तियों के साथ प्रस्तर उत्कीर्ण मंदिर, मसरूर, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश एशियाड टावर के पास सिरीफोर्ट के आंतरिक भवन में स्थित मोहम्मदी वाली मस्जिद, शाहपुर जाट, गीतांजलि इन्क्लेव के पूरब की ओर प्रेस इन्क्लेव रोड पर किला राय पिथौरा, एम.बी. रोड़, सैदुल्ला जाब मार्ग से सटे 10 किला राय पिथौरा दीवार तथा अदिलाबाद किले, नई दिल्ली में उद्यान विकास से संबंधित कार्य पूरा किया।

### उद्यान प्रभाग, भुवनेश्वर

इसने अनेक राज्यों अर्थात् उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, असम और सिक्किम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों और स्थलों में तथा इनके आस-पास 345 एकड़ जमीन में फैले 116 उद्यानों के विकास तथा रख-रखाव से संबंधित कार्य पूरा किया। इसने सूर्य मंदिर, कोणार्क, उड़ीसा में संग्रहालय परिसर के पिछले हिस्से में, कूच विहार पैलेस पश्चिम बंगाल, चंकीगढ़ और नन्दनगढ़, पश्चिम चम्पारण, बिहार, शिव मंदिर संख्या 4 और राम मंदिर, सिरपुर, महासमुंद, रतनपुर किले, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ और निघरिटिंग, गोलाघाट, असम के उद्यानों का विकास कार्य पूरा किया।

### पुरातत्व संस्थान

पुरातत्व संस्थान की स्थापना 1959 में की गई थी तथा उस समय से यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्वावधान में कार्य कर रहा है। इस संस्थान के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :-

- पुरातत्व विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान करना तथा पुरातत्व विज्ञान में पीजीडीए डिप्लोमा प्रदान करना।
- संग्रहालय विज्ञान, संरक्षण, कला इतिहास, पुरालेखविज्ञान, मुद्रा शास्त्र, विरासत प्रबंधन, स्मारक परिरक्षण व अन्य संबंधित विषयों के लिए लघु अवधि के पाठ्यक्रम आयोजित करना।
- समुचित ढंग से पुरातत्व विज्ञान पर सेमिनार/कार्यशालाओं, सम्मेलनों व विशेष व्याख्यानों का आयोजन करना ताकि उन क्षेत्रों से नए क्षेत्र उभर कर सामने आ सकें।

## शैक्षिक गतिविधियां

विभिन्न विषयों यथा—पुरातत्व के सिद्धांत व उसकी पद्धति, पुरातत्व विज्ञान में विज्ञान का अनुप्रयोग, प्रागैतिहासिक, प्रोटो हिस्ट्री, ऐतिहासिक पुरातत्व विज्ञान, कला एवं मूर्तिकला, स्थापत्यकला, पुरालेख विज्ञान, मुद्रा शास्त्र, संग्रहालय विज्ञान और स्मारकों का ढांचागत संरक्षण, स्मारकों एवं पुरावस्तुओं का रासायनिक संरक्षण, पुरावस्तु विधि पर विशेष व्याख्यानों एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के अलावा नियमित कक्षाएं आयोजित की गई।

## क्षेत्र प्रशिक्षण

संस्थान अपने पाठ्यक्रम के भाग के रूप में पीजीडीए विद्यार्थियों को खोज और उत्खनन में प्रति वर्ष क्षेत्र आधारित प्रशिक्षण देता है। 2010-11 के सत्र के दौरान प्रथम सत्र (2010-12 बैच) के सभी विद्यार्थियों को डा० एस.बी. ओटा, क्षेत्रीय निदेशक (मध्य), भोपाल के मार्गदर्शन में दिनांक 15 दिसम्बर, 2010 से 15 जनवरी, 2011 तक ग्राम खेन्द्रा, जिला रायसेन, मध्य प्रदेश में प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान में उच्च प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान विभिन्न संस्थाओं के प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान के विद्वानों/विशेषज्ञों ने संसाधन व्यक्ति के रूप में इसका दौरा किया और प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान के सिद्धांत और प्रयोगात्मक पहलुओं के संबंध में विद्यार्थियों को पढ़ाया। विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण के भाग के रूप में मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण प्रागैतिहासिक स्थलों/गुफाओं का दौरा किया।

खोज संबंधी प्रशिक्षण के अतिरिक्त प्रथम सत्र (2010-12 बैच) के विद्यार्थियों को दिनांक 23 जनवरी, 2011 से किरसोला, जिला जींद, हरियाणा में उत्खनन संबंधी प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। इस स्थल को शु/आती हड़प्पा काल से मध्य काल तक सांस्कृतिक क्रम के लिए अभिनिर्धारित किया गया है और उत्खनन कार्य 15 मार्च, 2011 तक जारी रह सकता है। यह उत्खनन प्राथमिक रूप से पुरातत्व संस्थान और पुरातत्व विभाग, डेक्कन कॉलेज, पुणे का संयुक्त कार्य है।

## अखिल भारतीय अध्ययन दौरा कार्यक्रम

पीजीडीए पाठ्यक्रम प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को देश के विभिन्न बड़े और मुख्य स्मारकों, पुरातत्व और ऐतिहासिक स्थलों

तथा संग्रहालयों का दौरा करने के लिए भेजा जाता है ताकि वे देश की प्राचीन विरासत की कला और स्थापत्य का अध्ययन कर सकें तथा उनके बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त कर सकें। सत्र 2009-10 के दौरान तृतीय सत्र (2009-12 बैच) के विद्यार्थियों ने दिसम्बर, 2010 से फरवरी, 2011 माह के दौरान अपना अखिल भारतीय अध्ययन दौरा पूरा कर लिया है।

## व्यावहारिक प्रशिक्षण

चौथे सत्र (2008-10 का उत्तीर्ण बैच) के विद्यार्थियों ने जुलाई माह, 2010 में 30 दिन की अवधि का अवसंरचना संरक्षण संबंधी व्यावहारिक प्रशिक्षण औरंगाबाद मंडल के क्षेत्राधिकार के तहत औरंगाबाद में प्राप्त किया।

चौथे सत्र (2008-10 का उत्तीर्ण बैच) के विद्यार्थियों को रासायनिक उपचार, स्मारकों के संरक्षण, आस-पास की वायु की गुणवत्ता की निगरानी और पाषाण संरक्षण प्रयोगशालाओं के बारे में जून, 2010 में एक सप्ताह की अवधि का प्रशिक्षण दिया गया।

इसके अतिरिक्त, अगस्त, 2010 के दौरान देहरादून में 15 दिनों के लिए चौथे सत्र के विद्यार्थियों (2008-10 का उत्तीर्ण बैच) को कलावस्तुओं के रासायनिक उपचार का प्रशिक्षण दिया गया।

## विशेष व्याख्यान

वर्ष 2010-11 के दौरान निम्नलिखित विशेष व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किए गए :

- दिनांक 18 अगस्त, 2010 को “द प्लेस ऑफ पास्ट इन इंडियन माइंड” पर प्रो० के. पड्डया (पूर्व-निदेशक, डेक्कन कॉलेज, पुणे) का व्याख्यान
- दिनांक 25 अगस्त, 2010 को “प्रिहिस्ट्री ऑफ द ईस्टर्न घाट्स : एन इथनो-इकोलॉजिकल प्रेस्पेक्टिव” पर प्रो० एम.एल.के. मूर्ति (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हैदराबाद विश्वविद्यालय) का व्याख्यान
- दिनांक 7 अक्टूबर, 2010 को “अंडरस्टैंडिंग इंडियन-चाइनीज रिलेशन थ्रू चाइनीज पोर्सिलेन” पर प्रो० जॉन कार्सवेल, (प्राच्य और अफ्रीकी अध्ययन स्कूल, लंदन विश्वविद्यालय) का व्याख्यान



- दिनांक 2 दिसम्बर, 2010 को “लोस्ट ट्रेजर ऑफ नालंदा” पर प्रो० गौरीशंकर भट्टाचार्य, (विख्यात कला इतिहासकार और पुरालेख शास्त्री) का व्याख्यान
- दिनांक 6 दिसम्बर, 2010 को “द अर्ली वासुदेव-विष्णु इमेजिज फ्रॉम वेस्ट बंगाल” इसके साथ-साथ डा० मोनिका स्मिथ (मानव विज्ञान विभाग, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय) ने अनुसंधान पद्धतियों पर शिशुपालगढ़ में व्याख्यान दिया।

### पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं :

वर्ष 2010-11 के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :-

- मई, 2010 (15 दिन के लिए) में मैसूर में संस्कृत और द्रविड पुरालेख शास्त्र पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम-व-प्रशिक्षण कार्यशाला।
- अक्टूबर, 2010 में (1 सप्ताह तक) नागपुर में अरबी, फारसी पुरालेख शास्त्र और मुद्रा शास्त्र पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम-व-प्रशिक्षण कार्यशाला।

### प्रकाशन

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने ऐसे अधिकारियों जिन्होंने खोज, उत्खनन, स्थापत्य सर्वेक्षण, संरक्षण, पुरालेख शास्त्र, मुद्रा शास्त्र, कला जैसे पुरातत्व क्षेत्र और सम्बद्ध पहलू, जो इसके अधिकार क्षेत्र में आते हैं, के किसी क्षेत्र में क्षेत्र आधारित कार्य अथवा अनुसंधान किया है, द्वारा तैयार की गई तकनीकी रिपोर्टों को प्राथमिक रूप से प्रकाशित करता है।

इस अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए हैं अथवा इनके मुद्रण के लिए कार्यवाही की जा रही है :

- भारतीय पुरातत्व – एक समीक्षा** : वर्ष 2003-04 का अंक प्रकाशित कर दिया गया है और वर्ष 2004-05 तथा 2005-06 के अंक प्रेस में हैं।
- संस्मरण** : इस श्रृंखला के तहत एंटीचक में किए गए उत्खनन कार्य को प्रकाशित कर दिया गया है और

कालीबंगन में उत्खनन कार्य – हड़प्पा (1960-1961) – भाग-I; और उदयगिरी प्रकाशन के लिए प्रेस में है।

- विश्व विरासत श्रृंखला के तहत दिग्दर्शिका** – ताजमहल: प्रकाशन के अंतिम चरण में है।
- दिग्दर्शिका पुस्तक (जीलक्स संस्करण)** – सारनाथ : हिन्दी भाषा में प्रकाशित कर दी गई है।
- विशेष प्रकाशन** : अजंता गुफाओं के संरक्षण के लिए भू-वैज्ञानिक अध्ययन प्रकाशित कर दिया गया है।
- कॉफी टेबल प्रकाशन – दिल्ली के स्मारक** : अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित कर दी गई है और इस पुस्तक का हिन्दी रूपांतर प्रेस में है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के मंडल और शाखा कार्यालयों** ने हाल ही में की गई पुरातत्व खोज, अन्वेषण, उत्खनन, संरक्षण और केन्द्रीय रूप से संरक्षित तथा, जिन्हें देखने के लिए टिकट लगता है, ऐसे स्मारकों के संबंध में निःशुल्क वितरण के लिए विवरणिकाएं/फोल्डर प्रकाशित किए हैं।

### विज्ञान शाखा

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की विज्ञान शाखा, जिसकी स्थापना वर्ष 1917 में की गई थी, मुख्यतः देश में केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों, पुरातत्व स्थलों, उत्खनन कला वस्तुओं और संग्रहालय संग्रह के वैज्ञानिक संरक्षण तथा उपचार के लिए उत्तरदायी है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान विज्ञान शाखा की प्रयोगशालाओं और क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा किए गए संरक्षण और वैज्ञानिक कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

#### 1. संरक्षण क्षेत्र के कार्यकलाप

- स्मारकों का संरक्षण (साफ-सफाई, सुदृढ़ीकरण और परिरक्षण) उपचार**। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान एएसआई द्वारा संरक्षित ऐसे स्मारकों, जिनका संरक्षण उपचार किया गया है, के नामों की राज्यवार सूची नीचे दी गई है :

| क्र. सं. | राज्य का नाम  | स्मारकों की संख्या |
|----------|---------------|--------------------|
| 1.       | आंध्र प्रदेश  | 9                  |
| 2.       | असम           | 7                  |
| 3.       | बिहार         | 3                  |
| 4.       | दिल्ली        | 14                 |
| 5.       | दमन एवं दीव   | 1                  |
| 6.       | गोवा          | 1                  |
| 7.       | गुजरात        | 12                 |
| 8.       | हिमालय प्रदेश | 5                  |
| 9.       | हरियाणा       | 2                  |
| 10.      | कर्नाटक       | 6                  |
| 11.      | मध्य प्रदेश   | 10                 |
| 12.      | महाराष्ट्र    | 16                 |
| 13.      | उड़ीसा        | 8                  |
| 14.      | पंजाब         | 4                  |
| 15.      | पुडुचेरी      | 1                  |
| 16.      | राजस्थान      | 11                 |
| 17.      | तमिलनाडु      | 12                 |
| 18.      | त्रिपुरा      | 1                  |
| 19.      | उत्तर प्रदेश  | 24                 |
| 20.      | उत्तराखंड     | 1                  |

**ख. सिविल डिपॉजिट कार्य :** ऐसे विभिन्न स्मारकों, जिनका सिविल डिपॉजिट कार्य के रूप में रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान संरक्षण उपचार किया गया है, की सूची नीचे दी गई है : मसनद हाल और रंग महल, किला मुबारक, पटियाला पंजाब; मैक-मुरीदो भवन की चित्रकला, अंजर, जिला भुज, गुजरात; शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल के भित्ति चित्र।

क. संग्रहालय संग्रह, उत्खनन से प्राप्त वस्तुओं तथा अभिलेखीय सामग्री का संरक्षण उपचार और परिरक्षण

- दिल्ली क्षेत्र की प्रयोगशाला में लालकोट से मिले केन्द्रीय पुरावस्तु अनुभाग, पुराना किला, दिल्ली से प्राप्त 75 सिक्कों का संरक्षण उपचार किया गया।
- निदेशक (विज्ञान), देहरादून की प्रयोगशाला में केन्द्रीय पुरावस्तु अनुभाग, पुराना किला से प्राप्त निम्नलिखित अभिलेख सामग्री का जीर्णोद्धार और परिरक्षण कार्य किया गया :

क) थंका पेंटिंग, आकार 135.00 ग 69.0 से.मी. (एसीसी संख्या 858)।

ख) उर्दू/अंग्रेजी में मुद्रित पुस्तक, आकार 26.0 ग 17.0 से.मी. (एसीसी संख्या 282), कुल पृष्ठ 960 ।

ग) मिनियेचर पेंटिंग सहित भागवत गीता, आकार 10.5 ग 16.6 से.मी.।

घ) अरबी/फारसी पाण्डुलिपि, आकार 28.0 ग 18.5 से.मी. (एसीसी संख्या 283) कुल पृष्ठ 758 ।

iii) प्रयोगशाला शाखा, देहरादून में दिल्ली मंडल, दिल्ली से प्राप्त अडसठ कला वस्तुओं (17 फोलियो, 117 ड्राइंग और 24 फोटोग्राफ) का जीर्णोद्धार और परिरक्षण कार्य किया गया।

iv) प्रयोगशाला शाखा, देहरादून में ताज संग्रहालय, आगरा से प्राप्त ताजमहल के आगे के भाग की ऊंचाई को दर्शाते हुए ताजमहल की बड़े आकार की स्थल आयोजना और इस परिधि में परिसर के अन्य भवन (आकार : 354 ग 132 से.मी., एसीसी संख्या 22, अवधि : 19वीं शताब्दी ए. डी.) का जीर्णोद्धार और परिरक्षण कार्य किया गया।

## 2. वैज्ञानिक/प्रयोगशाला कार्यकलाप

**क. निदेशक (विज्ञान) के कार्यालय की प्रयोगशाला, देहरादून :**

- परम्परागत और आधुनिक पद्धतियों का उपयोग करके निम्नलिखित धातु, प्रस्तर, प्लास्टर और मोर्टार नमूनों की रासायनिक जांच का कार्य किया गया/शुरू किया गया।

क) उत्खनन स्थल, भारद्वाज आश्रम, इलाहाबाद से प्राप्त दो लौह नमूने और एक तांबे का नमूना।

ख) पटना क्षेत्र से प्राप्त बलुआ पत्थर के दो नमूने।

ग) चेन्नई मंडल के सालुवमकुप्पम (तमिलनाडु) से प्राप्त ईटों के 6 नमूने।

घ) जागेश्वर मंदिर समूह, जिला अल्मोड़ा से प्राप्त प्रस्तर के 8 नमूने और खरल के 2 नमूने।

ड.) चेन्नई मंडल, चेन्नई से प्राप्त चूने की खरल के 5 नमूने।

च) वडोदरा क्षेत्र से पत्थर के 11 नमूने।

2. कोलकाता मंडल, कोलकाता से प्राप्त 14 बहुमूल्य शीशा निगेटिव की जीर्णोद्धार और परिरक्षण तकनीक से जांच की गई तथा विकास किया गया।

3. औरंगाबाद क्षेत्र से प्राप्त धातु के नमूनों का माइक्रोस्कोप से धातु रचना और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

4. महाबलीपुरम (तमिलनाडु) के ग्रेनाइट पत्थर के सुदृढ़ीकरण की कारगरता का मूल्यांकन करने के लिए अध्ययन शुरू कर दिया गया है।

**ख. वायु प्रदूषण निगरानी केन्द्र, ताज महल, आगरा:** वायु प्रदूषण निगरानी प्रयोगशाला, आगरा ने इस स्मारक पर वायु प्रदूषण के संभावित प्रभाव का अध्ययन करने के लिए और तदनुसार संरक्षण उपाय करने के लिए ताज महल में और इसके आस-पास की वायु की गुणवत्ता की निगरानी करने का कार्य जारी रखा।

इस संबंध में निम्नलिखित उपाय किए गए :-

(i) एसओ<sub>2</sub> और एनओ<sub>2</sub> सांद्रता की माप।

(ii) निलंबित कणीय पदार्थों की माप।

(iii) धूल कणों के नीचे गिरने की माप।

(iv) गंधक कणों की मात्रा की माप।

(v) तापमान और सापेक्ष आर्द्रता की माप।

(vi) वायु की गति और दिशा की माप।

**ग. प्रस्तर संरक्षण प्रयोगशाला, आगरा किला, आगरा :**

1) इत्माद-उद-दौलाह के मकबरे के संरचना संरक्षण कार्य में जड़ित प्रस्तर नमूनों (अपक्षीण और नए दोनों प्रकार के) के शैल विज्ञान अध्ययनों का उपयोग किया जा रहा है।

2) विभिन्न प्रस्तर नमूनों के शैल विज्ञान विश्लेषण के अतिरिक्त इस प्रयोगशाला ने आगरा किले के लाल बलुआ पत्थर के सुदृढ़ीकरण से पहले और बाद में और नए लाल बलुआ पत्थर की सम्पीडक क्षमता का अध्ययन भी शुरू कर दिया है।

**घ. क्षेत्रीय प्रयोगशाला, अजंता :** गुफाओं की सतहों पर बनाए गए चित्रों पर उपर्युक्त पैरामीटरों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अजंता की क्षेत्रीय प्रयोगशाला में तापमान और सापेक्ष आर्द्रता की दैनिक रिकार्डिंग की जा रही है। इससे अन्ततः भित्ति-चित्रों के संरक्षण और परिरक्षण के उपायों की आयोजना बनाने में सहायता मिलती है। भित्ति-चित्रों के कमजोर प्लास्टर को सुदृढ़ करने/समेकित करने जैसे उपायों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

**ड. वायु गुणवत्ता निगरानी केन्द्र, बीबी का मकबरा, औरंगाबाद :** बीबी के मकबरे, औरंगाबाद में वायु गुणवत्ता निगरानी का कार्य प्रगति पर रहा है। उच्च वोल्यूम वाले सैम्पलर उपकरण को प्रयोग करके इस स्मारक में और इसके आस-पास की वायु में विभिन्न निलंबित कणीय पदार्थों की निगरानी करने के लिए अध्ययन किए जा रहे हैं। संग्रह किए गए आंकड़े इस संरक्षित स्मारक के परिरक्षण और स्थिरता पर प्रदूषण के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए उपयोगी रहे हैं।

### 3. सहयोगी अध्ययन :

1. अजंता के भित्ति-चित्रों के परिरक्षण के संबंध में एनआरआईसीपीटी, जापान और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के मध्य भारत-जापान संयुक्त परियोजना गुफा सं.2 और 9 में प्रगति पर है। यह संयुक्त परियोजना दिनांक 12 फरवरी से 15 मार्च, 2009 तक अजंता में जापानी प्रतिनिधिमंडल के प्रथम मिशन से शुरू की गई थी। अभी तक पांच मिशन पूरे किए गए हैं और इस परियोजना के तहत गुफा सं. 2 और 9 में पहले ही यथा-सूचीबद्ध निम्नलिखित विभिन्न कार्यकलाप किए गए हैं :-

- 1) उच्च सुदृढीकृत फोटोग्राफी के साथ भित्ति-चित्रों का फोटो प्रलेखन।
- 2) भित्ति-चित्रों की स्थिति का मूल्यांकन।
- 3) गुफा सं. 2 और 9 में साफ-सफाई उपचार जांच।

2. विज्ञान शाखा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और एनआरएलसी, लखनऊ के मध्य निम्नलिखित क्षेत्रों में संयुक्त अध्ययन परियोजनाएं प्रगति पर हैं :-

- (i) विश्व विरासत स्मारकों की जैव-विकृति पर अध्ययन।
- (ii) परत चढ़ी सामग्रियों से संबंधित अध्ययन।
- (iii) डारिया दौलत पैलेस, श्रीरंगपटन और बंगलौर पैलेस, बंगलौर, कर्नाटक में पेंटिंग की सामग्री और तकनीकों के संबंध में वैज्ञानिक जांच।

### 4. अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप :

1. अजंता गुफाओं, अजंता; सी-कैथरल चर्च, वेल्हा, गोवा; एलोरा गुफाएं, एलोरा; एलीफेंटा गुफाएं, मुम्बई; फतेहपुर सीकरी, आगरा; श्री बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर; लाल किला, नई दिल्ली और केवडा मस्जिद, पावगढ जैसे विश्व विरासत स्थलों में इसरो, बंगलौर की तकनीकी सहायता से पर्यावरण पैरामीटरों की

निगरानी करने के लिए उपग्रह सम्पर्क वाले स्वचालित मौसम केन्द्रों की स्थापना की गई है।

2. भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति मौहम्मद हामिद अंसारी ने सूर्य मंदिर, कोणार्क का दौरा किया। इनके साथ अधीक्षण पुरातत्व रसायन वैज्ञानिक, भुवनेश्वर थे जिन्होंने इस स्मारक पर किए जा रहे वैज्ञानिक परिरक्षण के संबंध में उन्हें संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

3. डा० गौतम सेनगुप्ता, महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और श्री प्रवीण श्रीवास्तव, अपर महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने विज्ञान शाखा, देहरादून की प्रयोगशालाओं का दौरा किया और विभिन्न प्रयोगशालाओं में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने विज्ञान शाखा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के कार्यकरण के संबंध में तकनीकी और प्रशासनिक मामलों तथा विज्ञान प्ज्ञान-2020 से संबंधित विभिन्न प्रस्तावों पर भी विचार-विमर्श किया।

4. विज्ञान शाखा, देहरादून ने "पुरातत्व विज्ञान" पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला नई दिल्ली में आयोजित की। इस कार्यशाला का उद्घाटन डा० के. कस्तूरीरंगन, सदस्य, योजना आयोग ने किया। डा० एस. चौधरी, सदस्य, योजना आयोग इसके सम्मानित अतिथि थे और इसकी अध्यक्षता श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने की। डा० जी. सेनगुप्ता, महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस कार्यशाला में स्वागत भाषण दिया। देश के सर्वाधिक विख्यात संस्थानों में पुरातत्व विज्ञान के प्रासंगिक क्षेत्रों में कार्य कर रहे लगभग 25 विख्यात विद्वानों और शिक्षाविदों ने इस कार्यशाला में विचार-विमर्श किया। महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अध्यक्षता में विशेषज्ञों ने विज्ञान शाखा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के कार्यकरण में सुधार करने तथा इसे सुदृढ़ करने के संबंध में महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं।

5. श्री सीताराम येचूरी, सांसद की अध्यक्षता में संसद सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने लाल किला परिसर, दिल्ली के स्मारकों का दौरा किया। इस अवसर पर



राष्ट्रमंडल खेल परियोजना के तहत स्मारकों के वैज्ञानिक संरक्षण के संबंध में एक फोटो प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

6. स्मारकों और पुरावस्तुओं के वैज्ञानिक संरक्षण के संबंध में पुरातत्व संस्थान, नई दिल्ली के पीजीडीए विद्यार्थियों के लिए दिनांक 3 से 16 अगस्त, 2010 तक लघु अवधि का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में पन्द्रह पीजीडीए विद्यार्थियों और 6 सहायक पुरातत्व रसायन वैज्ञानिकों ने भाग लिया। विभागीय अधिकारियों और विख्यात संस्थाओं के विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों के लिए क्लासरूम व्याख्यान और प्रयोगशाला प्रदर्शन किया।
7. निदेशक (विज्ञान), भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, देहरादून के कार्यालय में 19 से 25 नवम्बर, 2010 तक विश्व विरासत सप्ताह मनाया गया। इसके उद्घाटन दिवस पर स्कूली बच्चों के लिए “हमारा गौरवशाली अतीत और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत” विषय पर एक चित्रकला प्रदर्शनी आयोजित की गई। एक सप्ताह तक चलने वाले इस समारोह के दौरान देहरादून के पांच विभिन्न विद्यालयों में “सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में विज्ञान की भूमिका” विषय पर फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का लगभग 4000 स्कूली बच्चों ने दौरा किया जिन्हें सांस्कृतिक विरासत के वैज्ञानिक संरक्षण की जानकारी प्रदान की गई। इस समारोह के दौरान विद्यार्थियों को संरक्षण कार्य में योगदान करने की जनता से अपील करने संबंधी लगभग 4000 मुद्रित पम्फलेट भी वितरित किए गए।

## विश्व विरासत विंग

भारत सरकार की ओर से विश्व विरासत संबंधी मामलों के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एक नोड एजेंसी है। विश्व विरासत अनुभाग समय-समय पर तकनीकी सलाह प्रदान करने के अतिरिक्त विभिन्न मंत्रालयों (केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों), यूनेस्को कार्यालय (पेरिस और नई दिल्ली), विश्व विरासत केंद्र और यूनेस्को के पीआरआई के साथ समन्वय करता है। विश्व विरासत अनुभाग, विभिन्न राज्य सरकारों और अभिकरणों को विश्व विरासत

केन्द्र को अग्रेषित करने के लिए नामांकन डोजियर और अनंतिम प्रस्ताव सूची तैयार करने के संबंध में सहायता प्रदान करता है तथा विश्व विरासत केन्द्र से विभिन्न मिशन आयोजित करने का समन्वय और सहायता प्रदान करता है। अब तक भारत से 28 स्थलों (23 सांस्कृतिक और 5 प्राकृतिक) को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में उत्कीर्ण किया गया है।

- जंतर-मंतर, जयपुर को विश्व विरासत समिति के ब्रेसिलिया (ब्राजील) में दिनांक 25 जुलाई से 3 अगस्त, 2010 तक आयोजित किए गए 34वें सत्र के दौरान जुलाई, 2010 में विश्व विरासत सूची में सांस्कृतिक श्रेणी के तहत हाल ही में शामिल किया गया है।
- महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के नेतृत्व में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, राजस्थान सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय के आठ सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने दिनांक 25 से 3 अगस्त, 2010 तक ब्रेसिलिया (ब्राजील) में आयोजित किए गए विश्व विरासत समिति के 34वें सत्र में भाग लिया।
- नेपाल से श्री काई विसे, आईसीओएमओएस विशेषज्ञ, वर्ष 2011 में सांस्कृतिक श्रेणी के तहत विश्व विरासत सूची में शांतिनिकेतन को शामिल करने के लिए स्थल पर जाकर इसका मूल्यांकन करने के लिए दौरा किया।
- प्राकृतिक श्रेणी के तहत विश्व विरासत सूची में शामिल करने के लिए मूल्यांकन करने के उद्देश्य से आईयूसीएन दल ने वर्ष 2011 में पश्चिमी घाटों का दौरा किया।
- भारतीय वन्य जीव विकास संस्थान में दिनांक 1 से 5 जून, 2010 तक पश्चिमी, मध्य और दक्षिणी एशियाई देशों के लिए उप-क्षेत्रीय आवधिक रिपोर्टिंग कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 14 देशों के दलों, विश्व विरासत केन्द्र और इसके सलाहकार निकायों, यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालयों, भारतीय विश्व विरासत के स्थल प्रबंधकों और प्राकृतिक स्थलों के प्रबंधकों ने भाग लिया।
- विश्व विरासत केन्द्र को सांस्कृतिक श्रेणी के तहत “कुतुब शाही स्मारक, हैदराबाद” और “राजस्थान के पहाड़ी किलों” के संबंध में और प्राकृतिक श्रेणी के तहत “ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क” के संबंध में नामांकन डोजियर प्रस्तुत कर दिए गए हैं।

- कश्मीर के गार्डन और कुतुब शाही स्मारक, हैदराबाद को अनंतिम सूची में शामिल कर लिया गया है तथा राजस्थान के पहाड़ी किलों और ऐतिहासिक शहर अहमदाबाद को शामिल करने पर विचार किया जा रहा है।
- विश्व विरासत केन्द्र को लाल किले और जंतर-मंतर को छोड़कर 26 विश्व विरासत सम्पदा के उत्कृष्ट शाश्वत मूल्य के संबंध में पूर्वव्यापी विवरण और हमी, ताज महल, आगरा किला, फतेहपुर सीकरी, चम्पानेर-पावगढ़ पुरातत्व पार्क (गुजरात) जैसे विश्व विरासत स्थलों के संबंध में “संरक्षण की स्थिति” से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी गई है।
- भारत में यूनेस्को श्रेणी-॥ की स्थापना के संबंध में दिनांक 16 और 17 मार्च, 2011 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय परामर्श कार्यशाला आयोजित किए जाने का प्रस्ताव है।

### अंतर्राष्ट्रीय पुरातत्व विंग

अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत (2001) के संरक्षण के संबंध में कन्वेंशन के वैज्ञानिक और तकनीकी सलाहकार निकाय की प्रथम बैठक आयोजित की गई। एसए (प्रभारी), अंतर्राष्ट्रीय पुरातत्व विंग को दिनांक 13 से 15 जून, 2010 तक अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत (2001) के संरक्षण के संबंध में कन्वेंशन के वैज्ञानिक और तकनीकी सलाहकार निकाय की प्रथम बैठक में भाग लेने के लिए कार्टाजेना, स्पेन में प्रतिनियुक्त किया गया था।

### पूमपुहर, तमिलनाडु में पुरातत्व जांच

मत्स्य पालन आयुक्त, टेयनापेट, चेन्नई में पूमपुहर में मत्स्य हार्बर के निर्माण के संबंध में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से अनापत्ति प्रमाण-पत्र मांगा था। इस संबंध में राज्य पुरातत्व विभाग और राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा ने पुरातत्व सर्वेक्षण किया था और इन दोनों ही संस्थाओं को इसकी अनुमति प्रदान की गई थी।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक से अनुमोदन प्राप्त करने के बाद डा0 बी.आर. मणि, संयुक्त महानिदेशक की अध्यक्षता में सुश्री सत्यभामा बट्टीनाथ राव, अधीक्षण पुरातत्व विज्ञानी, चेन्नई मंडल, श्री वसन्त कुमार स्वर्णकार एस.ए. (प्रभारी), यू.ए.डब्ल्यू, श्री पी.पी. प्रधान, सहायक पुरातत्व विज्ञानी, यू.ए.डब्ल्यू श्री मनोज कुमार सक्सेना, सहायक पुरातत्व विज्ञानी, देहरादून मंडल को

शामिल करके गठित किए गए दल ने दिनांक 6 से 8 सितम्बर, 2010 तक पुरातत्व जांच/आंकड़े एकत्र करने के लिए प्रस्तावित निर्माण के स्थल का दौरा किया था।

### क्षेत्रीय सर्वेक्षण

अन्वेषण कार्य को सुविधाजनक रूप से करने के लिए इस स्थल को दो भागों में विभाजित किया गया है। यह पता चला है कि इस हार्बर स्थल के एक-चौथाई भाग में आबादी है जबकि शेष खुला है। खुले क्षेत्र का नाम उत्तरी छोर और आबादी वाले क्षेत्र का नाम दक्षिणी छोर है।

### उत्तरी छोर

प्रस्तावित स्थल के उत्तर में लगभग 2 किलोमीटर तक और इसके बाद 1.5 किलोमीटर तक अत्यधिक सावधानीपूर्वक अन्वेषण कार्य किया गया।

इस अन्वेषण कार्य के दौरान प्रस्तावित हार्बर के बाहर की ओर उत्तरी-दक्षिणी छोर में तट के साथ-साथ नहर का पता चला है। इस नहर के दक्षिणी छोर के पुश्ते में लाल मिट्टी, लाल चिकनी मिट्टी के बर्तन, चमकदार बर्तन और उत्कीर्ण किए गए मिट्टी के बर्तन के कुछ टुकड़े मिले हैं जिनकी बनावट विभिन्न प्रकार के जार और कटोरों जैसी है।

इसके तट के पश्चिम की ओर झींगा पालन फार्म का भी पता चला है। इसके साथ-साथ झींगा पालन के अनेक टैंक भी यहां देखे जा सकते हैं। यही नहर जो दक्षिणी छोर से शुरू होती है झींगा पालन क्षेत्र से गुजरती है और नालों का पानी पुलिया के माध्यम से तालाब जैसी संरचना में जाता है जिसका उत्खनन जेसीबी ने किया है तथा इसके बाद यह नहर में मिलता है। उत्खनन करने के बाद प्राप्त मिट्टी से होप्सकोच और पक्की मिट्टी की माला प्राप्त हुई और इनके अतिरिक्त लाल मिट्टी, लाल चिकनी मिट्टी के बर्तन के अनेक टुकड़े और पक्की ईंटों के रोड़े/पक्की मिट्टी मिली हैं। इस प्रकार के साक्ष्यों से यह संकेत मिला है कि इस क्षेत्र की पुरातत्व महत्ता है।

अन्वेषण कार्य के दौरान दो पानी बहने वाली संरचना (नालों) का पता चला है जिन्हें शायद विगत में इस नहर के पश्चिमी क्षेत्र की खेती की जमीन से छोड़े गए बरसाती पानी के लिए बनाया गया होगा। इस समय इनका उपयोग नहीं किया जाता।

## दक्षिणी छोर

दक्षिणी क्षेत्र में तट के बिल्कुल पास बस्ती का पता चला है और यह प्रस्तावित हार्बर स्थल के कुल 100 मीटर क्षेत्र तक फैली हुई है। तमिलनाडु सरकार के लोक निर्माण विभाग ने मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए बड़े-बड़े पत्थरों से तटबंध बनाया है। यहां यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक है कि वर्ष 1973 में उच्च ज्वार लाइन से लगभग 200 मीटर दूर पूमपुहर तल पर कन्नागी मूर्ति संस्थापित की गई थी और क्योंकि समुद्र ने इसकी संरचना को ध्वस्त कर दिया था इसलिए 1994 में इसे लगभग 150 मीटर और भीतर की ओर अंतरित किया गया था। इसी प्रकार पूमपुहर के अन्य स्मारकों को भी समुद्र ने ध्वस्त कर दिया था (अंडरवाटर एक्सप्लोरेशन आफ पूमपुहर एण्ड पासिबल क्लाज आफ इट्स सबमर्जेन्स), अनिरुद्ध सिंह गौड़ और सुंदरेश (पृष्ठ 87, पुरातत्व 28))। यह क्षेत्र किसी पुरातत्व कलावस्तु से पूर्णतः अलग है, नारियल के पत्तों से केवल घर बनाए गए हैं और सीमेंट से बने कुछ भवनों का भी पता चला है। इनके अतिरिक्त वहां नाव और कैटामारन (लकड़ी की किशती) भी रखी गई है।

इस दल के मुखिया ने यह निर्णय भी लिया था कि इस क्षेत्र के पुरातत्व महत्व को सुनिश्चित करने के लिए कुछ परीक्षण खाई खोदी जानी चाहिए। इसलिए तीन परीक्षण खाई खोदी गई थी जिनमें से दो प्रस्तावित हार्बर स्थल के भीतर और एक हार्बर स्थल से काफी दूर झींगा पालन क्षेत्र के पास थी।

## स्थल पर परीक्षण खाई की खुदाई करना

इस स्थल के मध्य क्षेत्र में उत्खनन के लिए 2 मीटर X 2 मीटर आकार की खाई संख्या 1 (110 09' 92" एन 790 57' 406" पू.) को अभिनिर्धारित किया गया था। इस खाई के आधे पश्चिमी हिस्से में 2 मीटर X 1 मीटर के क्षेत्र में उत्खनन कार्य किया गया था। इसका 1.10 मीटर गहराई तक उत्खनन किया गया था। इस भाग में रेतीली मिट्टी की चार परत महसूस की गई, इन सभी चार परत की संरचना लगभग एक-समान है किंतु इनके रंग और सघनता, जो तेल तत्वों के कारण है, के आधार पर इनमें विभेद किया जा सकता है। पुरातत्व महत्व की कोई पुरावस्तु नहीं मिली है। इस गहराई पर पानी निकलना शुरू हो जाता है अतः इससे ज्यादा खुदाई करना संभव नहीं है।

तटीय किनारे के पास प्रस्तावित निर्माण स्थल के उत्तर-पूर्व छोर में खाई संख्या 2 (110 09' 135" उ. 790 51' 421" पू.) अभिनिर्धारित की गई थी। यहां पर 2 मीटर X 2 मीटर आकार की खाई खोदी गई। इस खाई के आधे पूर्वी हिस्से में पानी निकलना शुरू होने तक अर्थात् 1.10 मीटर गहराई तक उत्खनन कार्य किया गया। इस खाई में रेतीली मिट्टी की दो परत महसूस की गई। इन दोनों परत की संरचना लगभग एक-समान है किंतु केवल इनकी सघनता से इन्हें अभिनिर्धारित किया जा सकता है।

तीसरी खाई (110 096' 30" उ. और 790 51' 49" पू.) प्रस्तावित हार्बर स्थल से काफी दूर झींगा पालन क्षेत्र के पास अभिनिर्धारित की गई। इस खाई का आकार 2 मीटर X 2 मीटर है। यह क्षेत्र मृदा और रेतीली मिट्टी का मिश्रण है। उत्खनन कार्य के दौरान दो परत का पता चला है। इस दौरान 50 से.मी. की गहराई तक कोई पुरावस्तु प्राप्त नहीं हुई। यहां पर पानी निकलना शुरू होना तक अर्थात् 1.25 मीटर की गहराई तक उत्खनन कार्य किया गया। परत 2 में लाल मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े प्राप्त हुए। ऊपरी परत लगभग 60 सेंटीमीटर मोटी है और इसकी संरचना रेतीली है जबकि द्वितीय परत सघन है और इसकी संरचना रेतीली मिट्टी मिश्रित है तथा इसमें मिट्टी के बर्तन के टुकड़े मिले हैं। इसका रंग काले गारे जैसा है।

## निष्कर्ष

हार्बर स्थल पर निर्धारित की गई इन दोनों खाई में पुरातत्व महत्व की किसी पुरावस्तु/कलावस्तु का पता नहीं चला है। तथापि, रेत की तीन/चार विभिन्न परत का पता चला है जिनमें रंग और संरचना के आधार पर विभेद किया जा सकता है। इस तट पर विभिन्न प्रकार के मोलस्क और शैल भी प्राप्त हुए हैं।

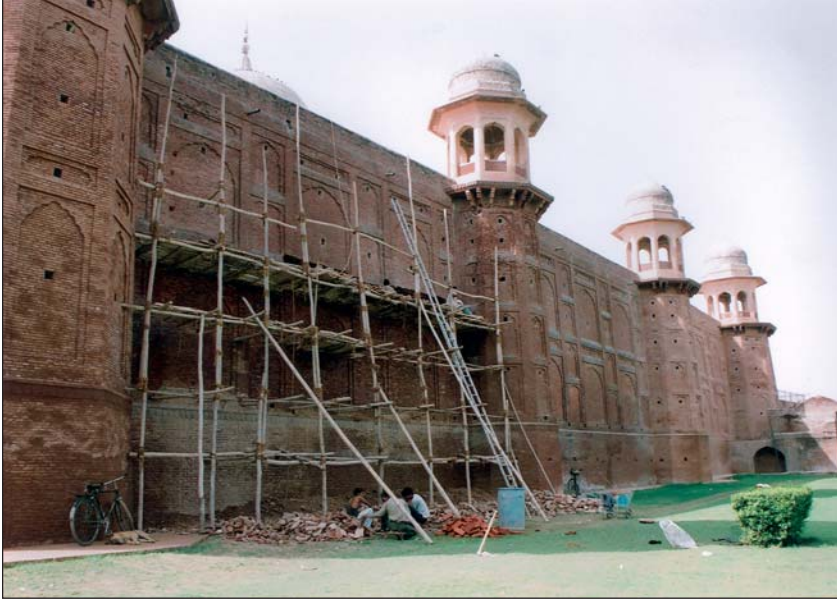
## अवलोकन

यह देखा गया है कि इस समय प्रस्तावित स्थल में न तो किसी मुहाने का पता चला है और न ही उसका कोई अवशेष मिला है, इसलिए यह प्राचीन काल में कोई बंदरगाह क्षेत्र नहीं हो सकता। सुरक्षित लंगर डालने और नावों को चलाने के लिए मुहाना अत्यधिक सहायक होता है। इस तट से लगभग 150 मीटर की दूरी पर अब जलधारा समाप्त हो रही है तथा इस क्षेत्र को पार करना आसान नहीं है।

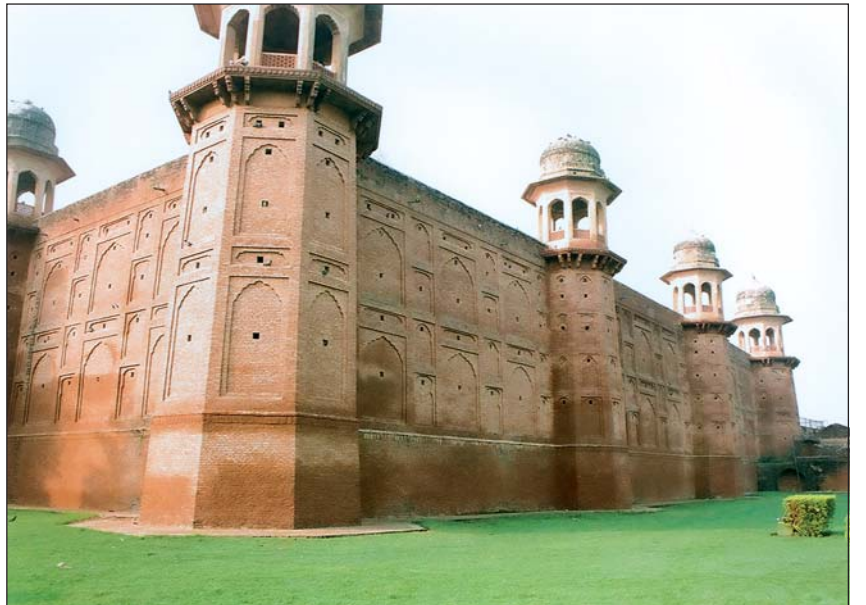
### उपसंहार

राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान ने पूमपुहर में अंतर्जलीय अन्वेषण के संबंध में अपनी रिपोर्ट में यह उल्लेख किया है कि “हार्बर विकास के लिए अभिनिर्धारित किए गए विनिर्दिष्ट क्षेत्र में अंतर्जलीय अन्वेषण के दौरान पुरातत्व संरचना की मौजूदगी का पता नहीं चला है। पूमपुहर में प्रस्तावित हार्बर स्थल पर की गई अंतर्जलीय जांच के आधार पर निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में कोई पुरातत्व संरचना/पुरावस्तु नहीं है।

इस स्थल पर किए गए सर्वेक्षण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस स्थल पर पुरातत्व महत्व की किसी पुरावस्तु का पता नहीं चला है और परीक्षण खाई की खुदाई करने से पुनः इस बात की पुष्टि हुई है। इसके साथ-साथ यह प्रस्तावित क्षेत्र इस क्षेत्र के केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों/स्थलों के निषिद्ध क्षेत्र/विनियमित क्षेत्र के तहत भी नहीं आता है। तथापि, पूमपुहर पुरातत्व महत्व का स्थल है जिसकी पुष्टि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दक्षिणी मंडल द्वारा किए गए पूर्ववर्ती उत्खनन कार्यों से हुई है। चूंकि इस स्थल पर कोई प्राचीन जलमार्ग नहीं मिला है इसलिए प्रस्तावित हार्बर स्थल संगम साहित्य में उल्लिखित प्राचीन बंदरगाह स्थल के तहत नहीं आता।



शेख चिली का मकबरा, संरक्षण से पहले, थानेसर (हरियाणा)



शेख चिली का मकबरा, संरक्षण के बाद, थानेसर (हरियाणा)



## 2.2

### संग्रहालय







## राष्ट्रीय संग्रहालय

2.2.1

वर्ष 1949 में स्थापित राष्ट्रीय संग्रहालय 1960 से संस्कृति मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। इस समय इसके संकलन में मानव अस्तित्व के प्रागैतिहासिक काल से अब तक की 2.06 लाख से अधिक उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं।

संग्रहालय ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। राष्ट्रीय संग्रहालय, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान और राष्ट्रीय वीथी, कनाडा ने दिनांक 27.09.2010 को, सनोगवुत – इनुइट आर्ट फ्रॉम कैनेडियन आर्कटिका नामक प्रदर्शनी आयोजित की जिसका उद्घाटन सचिव (संस्कृति), भारत सरकार ने किया।

सनोगवुत – इनुइट आर्ट फ्रॉम कैनेडियन आर्कटिक नामक प्रदर्शनी के साथ-साथ अजंता हाल में भारत में नृजातीय कला नामक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

राष्ट्रमंडल खेल, 2010 के अवसर पर दिनांक 4 अक्टूबर, 2010 को प्रशासक राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली ने भारतीय कला में खेल और खेलकूद नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह प्रदर्शनी दिनांक 14.12.2010 तक आयोजित की गई।

विक्टोरिया एण्ड एल्बर्ट संग्रहालय, लंदन में दिनांक 10.10.2009 से 17.01.2010 तक महाराजा : द स्प्लेण्डर ऑफ इंडियाज रॉयल कोर्ट, नामक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसके बाद इस प्रदर्शनी को दिनांक 12.02.2010 को कुंस्थाले डेर हाइपो-कुल्टरस्टिफ्टंग, म्यूनिच, जर्मनी में अंतरित किया गया तथा दिनांक 24 मई, 2010 तक जारी रखा गया।

एशिया और यूरोप के मध्य 'ए पैसेज एशिया : 25 सेंचूरीज ऑफ एक्सचेंज' नामक प्रदर्शनी बोजार, ब्रूसेल्स, बेल्जियम भेजा गया और इसमें 46 कलावस्तुओं को शामिल किया गया तथा इसे 25 जून, 2010 से 10 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित किया गया।

उस्ताद अमजद अली खान, विख्यात सरोद वादक ने दिनांक 18.12.2010 को जीर्णोद्धार की गई वाद्य-यंत्र वीथी का उद्घाटन किया।

राष्ट्रीय संग्रहालय के संग्रह से वेलु थम्पी दलावा की तलवार दिनांक 20 जून, 2010 को प्रधान सचिव ने प्रधानमंत्री तथा सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत



सरकार को तथा उन्होंने मुख्य सचिव, केरल सरकार और सचिव (संस्कृति), केरल सरकार को भेंट की। इस तलवार को नेपियर, संग्रहालय, तिरुवनंतपुरम में प्रदर्शित किया गया है।

सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने तमिलनाडु से 18वीं-19वीं शताब्दी के मंदिर के लकड़ी के रथ के ओएनजीसी, राष्ट्रीय सांस्कृतिक निधि और संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से नए डिजाइन किए गए शोकेस को सुदृढ़ शीशे से बनाने के कार्य का दिनांक 27.09.2010 को उद्घाटन किया।

भारतीय जैव-विविधता कांग्रेस, 2010 के अवसर पर दिनांक 27 से 31 दिसम्बर, 2010 तक तिरुवनंतपुरम में 'सोंग्स ऑफ वूड्स' नामक विशेष फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई।

#### माह की वीथी

#### माह की कलावस्तु

- सिक्के वीथी अगस्त, 2010 पंचमार्क सिक्के
- हड़प्पा वीथी सितम्बर, 2010 देवी माताएं
- पेंटिंग वीथी नवम्बर, 2010 राधा और कृष्ण दिवाली, उनियारा मनाते हुए
- मौर्य-सुंगा वीथी दिसम्बर, 2010 मेल हैड, मौर्य

#### शैक्षिक कार्यकलाप और आऊटरीच कार्यकलाप

राष्ट्रीय संग्रहालय के सभागार फिल्म शो, वीथी में निःशुल्क मार्गदर्शन दौरे और विद्यालयों तथा कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षिक दौरे आयोजित किए गए। इस अवसर पर दिल्ली नगर निगम/नई दिल्ली नगरपालिका परिषद के विद्यार्थियों और झुग्गी-झोपड़ी बस्तियों में रहने वाले लाभार्थित समूहों के लिए निःशुल्क बस सुविधा भी प्रदान की गई थी।

आम जनता के लिए भारतीय कला के संबंध में **वीथी वार्ता** आयोजित की गई।

**विश्व विरासत सप्ताह** के दौरान 19 से 25 नवम्बर, 2010 तक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए क्ले मिट्टी से मॉडल बनाने के संबंध में दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान और राष्ट्रीय संग्रहालय ने संयुक्त रूप से दिनांक 9 अगस्त, 2010 को 'देशज कला, समकालीन महत्व' के संबंध में दो दिवसीय भारत-कनाडाई संगोष्ठी आयोजित की।

राष्ट्रीय संग्रहालय जवाहर नवोदय विद्यालयों में संग्रहालय कार्नर स्थापित करने के लिए उनकी सहायता कर रहा है।

स्कूली बच्चों के लिए 18 जून से 28 जून, 2010 तक 'कला और शिल्प' के संबंध में कार्यशाला आयोजित की गई। बाल दिवस मनाने के लिए एक 'ऑन द स्पॉट पेंटिंग प्रतियोगिता' आयोजित की गई जिसका उद्घाटन माननीय मंत्री प्रोफेसर के.वी. थामस, कृषि, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण ने दिनांक 14.11.2010 को किया। मंत्रिमंडल सचिव की पत्नी श्रीमती जया चन्द्रशेखर ने इस पेंटिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को दिनांक 18.12.2010 को पुरस्कार प्रदान किए।

इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय संग्रहालय ने क्रमशः दिनांक 18 मई और 18 दिसम्बर, 2010 को अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाया।

#### जन सम्पर्क

आगन्तुकों को निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान की गईं :

- प्रायोजित समूहों, भारतीय और विदेशी प्रतिनिधिमंडल और अतिविशिष्ट व्यक्तियों के लिए वीथियों के दौरे आयोजित किए गए; फोटोग्राफों की आपूर्ति और पारदर्शिता; विक्रय/स्वागत केन्द्र के माध्यम से संग्रहालय की कला-वस्तुओं की प्लास्टिक से तैयार की गई प्रतिकृति का विक्रय और प्रकाशन; कला-वस्तुओं की फोटोग्राफी तथा इनकी फिल्म तैयार करने, पुस्तकालय सुविधा, राष्ट्रीय संग्रहालय की कला-वस्तुओं को प्रकाशन के लिए पुनः तैयार करने, कलैण्डर और डायरियां तथा सभागार को बुक करने जैसे कार्यकलाप किए गए।
- दिनांक 31 दिसम्बर, 2010 तक 1,82,959 आगन्तुकों ने राष्ट्रीय संग्रहालय का दौरा किया जिनमें से 51,760 भारतीय, 25,323 गैर-भारतीय और 1,05,876 विद्यार्थी थे।



रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान अन्य देशों और भारत के विशिष्ट व्यक्तियों सहित अन्य देशों के निम्नलिखित अतिविशिष्ट व्यक्तियों ने राष्ट्रीय संग्रहालय का दौरा किया :

- श्री हुई लियांगयू, उप-प्रधानमंत्री और चीन के साम्यवादी दल के पोलित ब्यूरो के सदस्य; महामहिम (डा० सुश्री) इने इरग्मा, इस्टोनियन संसद की अध्यक्षा; महामहिम मिगनेल कैरीजोसा ग्लाइनो, परगुयान की संसद की सीनेट के अध्यक्ष; पोलैंड से पोलैंड के माननीय प्रधानमंत्री की पत्नी मी मलगोरजटा टस्क; कनाडा से महामहिम श्री ग्रे लुन, खेलमंत्री; साइप्रस से महामहिम श्री एंटोनीस पश्लीडेस, वाणिज्य, उद्योग और पर्यटन मंत्री; थाइलैंड से महामहिम सुवित खुनकिट्टी, प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण मंत्री; पाकिस्तान से महामहिम मखदूम शहाबुद्दीन, स्वास्थ्य मंत्री; काबुल-अफगानिस्तान से महामहिम एहसानुल्लाह खोरम, विदेश मंत्री; मंगोलिया से संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रीय संग्रहालय का दौरा किया।

### फोटो यूनिट

- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 235 श्याम-श्वेत निगेटिव, 3500 डिजीटल फोटोग्राफ, सी.डी. डिजीटल/इमेज की 73 प्रति, 46 कांटेक्ट शीट और 164 पासपोर्ट साइज फोटो सहित 1,837 श्याम-श्वेत प्रिंट, 1,476 रंगीन निगेटिव और 3,206 रंगीन प्रिंट तैयार किए गए।

### मॉडल बनाने वाली यूनिट

- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्लास्टर-आफ-पेरिस से 653 रॉ कास्ट प्रतिकृति तैयार की गई। 247 प्रतिकृति रॉ फिनिश और 480 प्रतिकृति रंगीन थी।

### पुस्तकालय

- संग्रहालय के पुस्तकालय में 58,728 पुस्तकें हैं और रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 780 पुस्तकें शामिल की गईं। क्रमशः 743, 713 और 223 पुस्तकें प्राप्त की गईं, वर्गीकृत की गईं और पुस्तक-सूची तैयार की गई। संग्रहालय और संस्थान के कार्डधारकों को 1,653 पुस्तकें जारी की गईं।

संग्रहालय में 3,631 पाठक आए और इसकी अनुसंधान तथा संदर्भ सुविधाओं का लाभ उठाया।

### हिन्दी एकक

- हिन्दी एकक ने 14 से 20 सितम्बर, 2010 तक हिन्दी निबंध, श्रुतलेखन, टिप्पण और प्रारूप लेखन तथा हिन्दी टंकण में प्रतियोगिताएं आयोजित करके हिन्दी सप्ताह मनाया।
- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान आयोजित की गई प्रदर्शनियों से संबंधित लेबल, निमंत्रण कार्ड, विज्ञापन आदि जैसी सभी सामग्री का हिन्दी में अनुवाद किया गया।

### प्रकाशन

प्रदर्शनियों के लिए निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :

- राष्ट्रीय संग्रहालय विवरणिका का मुद्रण (हिन्दी और अंग्रेजी)।
- राष्ट्रीय संग्रहालय न्यूज लैटर का मुद्रण।

### संरक्षण प्रयोगशाला

- राष्ट्रीय संग्रहालय की प्रयोगशाला, वीथियों, संग्रह, संग्रहालय गार्डन और गोल भवन में 560 कलाकृतियों का शोधन और परिरक्षण किया गया।
- संग्रहालय भण्डार और संग्रह की 237 कलाकृतियों का निवारणात्मक परिरक्षण किया गया।
- 115 वाद्य-यंत्रों की साफ-सफाई और परिरक्षण किया गया।
- डा० जाकिर हुसैन स्मारक संग्रहालय की 80 कलावस्तुओं की साफ-सफाई और परिरक्षण किया गया।
- राष्ट्रीय बाल भवन में एम.एफ. हुसैन की ऑयल पेंटिंग का शोधन और परिरक्षण किया गया।

- ईसाई संग्रहालय, गोवा की 3 कलावस्तुओं का संरक्षण किया गया।
- संसद भवन, नई दिल्ली की 58 पैनल पेंटिंग के शोधन और परिरक्षण का कार्य किया गया।

### प्रदर्शनियां आयोजित करने के लिए सहायता

विभिन्न कालों में बौद्ध कला, चीन पर 17 प्रदर्शनियों, पैसेज टू एशिया, बोजर, ब्रूसेल्स, बेल्जियम की 46 प्रदर्शनियों, स्थितिमूलक रिपोर्टों की जांच को विभिन्न प्रदर्शनियों में प्रदर्शित करने के लिए विदेश भेजा गया :

विदेश में आयोजित की गई विभिन्न प्रदर्शनियों में भेजी गई 71 कला-वस्तुओं को वापस प्राप्त करने के बाद महाराजा: द स्पेलैण्डर ऑफ इंडियाज रॉयल कोर्ट, विक्टोरिया एण्ड एल्बर्ट म्यूजियम, लंदन और कुंस्थाले डेर हाइपो-कुल्टरस्टिफतंग, म्युनिच, जर्मनी जैसी प्रदर्शनियों की कला-वस्तुओं की स्थिति रिपोर्ट के अनुसार वास्तविक स्थिति की जांच की गई।

### प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

- पेंटिंग और उद्धृत पेंटिंग के संबंध में दिनांक 15 नवम्बर, 2010 से 14 फरवरी, 2011 तक तीन माह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

### शिक्षण

- मांग के आधार पर एनएमआई के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण और अभ्यास निदर्शन तथा एम.ए. के विद्यार्थियों का, संरक्षण के संबंध में अपना शोध निबंध तैयार करने के संबंध में मार्गदर्शन किया गया।

### फोटो प्रलेखन

- परिरक्षण शोधन से पहले, इसके दौरान और इसके बाद संग्रहालय की कला-वस्तुओं के फोटो प्रलेख तैयार किए गए। इस दौरान कुल 1125 निगेटिव और प्रिंट तैयार किए गए तथा श्याम-श्वेत प्रिंट तैयार किए गए।



कोणार्क

## राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय

2.2.2

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (एनजीएमए) 1954 में स्थापित एक विशिष्ट संस्था है, जो भारत में पिछली शताब्दी की ललित कलाओं के विकास-क्रम और उनमें हुए परिवर्तन को दर्शाती है। एनजीएमए का मुख्य उद्देश्य भारतीय लोगों में सामान्य रूप से दृश्य एवं मूर्तिकला के प्रति समझ एवं संवेदना उत्पन्न करना तथा विशेष रूप से समकालीन भारतीय कला के विकास को प्रोत्साहन देना है। एनजीएमए ने 19 जनवरी, 2009 को अपने नए खंडों का उद्घाटन किया जिससे इसका प्रदर्शनी स्थल छः गुना बढ़ गया है। नई दिल्ली के प्रदर्शनी स्थलों के अतिरिक्त, एनजीएमए मुम्बई में सर कोवासजी जहांगीर पब्लिक हॉल की कार्यकारी शाखा का रख-रखाव भी करता है।

एनजीएमए के कला संग्रह में मुख्यतः खरीदी गई और उपहार स्वरूप प्राप्त हुई 17,815 पेंटिंग, मूर्तियां, ग्राफिक्स, और छायाचित्र रखे गए हैं। इस कला संग्रह में सन् 1857 ईस्वी से पहले और बाद की कलाकृतियां तथा संपूर्ण भारत और कुछ विदेशी कलाकारों की 1742 कलाकृतियां हैं।

एनजीएमए की जीर्णोद्धार प्रयोगशाला ने इस वर्ष राष्ट्रीय खजाना सहित, प्रयोगशाला में 40 कलाकृतियों का अपेक्षित जीर्णोद्धार किया। प्रदर्शनी तथा तस्वीरें खींचने के लिए 310 कलाकृतियों की साफ-सफाई की गई। स्थिति रिपोर्ट तैयार की गई और घरेलू तथा बाहर की प्रदर्शनियों की 549 कलाकृतियों की पुनः जांच की गई।

कला संदर्भ पुस्तकालय में चित्रकारी, मूर्तिकला, रेखाचित्र, वास्तुकला तथा अन्य कलाओं से संबंधित 20,000 पुस्तकों का संग्रह है। यह पुस्तकालय भारतीय तथा विदेशी 32 महत्वपूर्ण कला संबंधी पत्र-पत्रिकाएं मंगवाता है। बड़ी संख्या में ललित कला के अध्येतागण तथा छात्रगण अकादमिक प्रयोजनों हेतु पुस्तकालय का दौरा करते हैं। एनजीएमए पुस्तकालय को वैन (वाइड एरिया नेटवर्किंग) के तहत अन्य पुस्तकालयों के साथ जोड़ने की प्रक्रिया चल रही है।

एनजीएमए के मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य लोगों को समकालीन कलाकृतियों को समझबूझ एवं संवेदनशीलता के साथ देखने में सक्षम बनाना है। कलाकृतियों की सराहना करने के लिए लोगों को जागरूक बनाने के प्रयोजनार्थ प्रतिदिन दो बार एनजीएमए प्रेक्षागृह में फिल्में दिखाई जाती हैं। वर्ष के दौरान आम जनता और दिल्ली तथा आस-पास के लगभग 60 स्कूलों के छात्रों तथा शिक्षकों के लिए 570 फिल्में दिखाई गईं।



संग्रहालय में प्रत्येक रविवार को विद्यार्थियों के लिए **आर्ट स्केच क्लब** का आयोजन किया गया। जून 2010 में एनजीएमए में छात्रों के लिए **ग्रीष्मकालीन चित्रकला कार्यशाला** का आयोजन किया गया जिन्हें 3 आयु वर्गों में बांटा गया था। इसमें 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया और उन्हें प्रमाण-पत्र दिए गए। स्कूली बच्चों के समूहों के लिए 210 **दौरे आयोजित किए गए** और वर्ष के दौरान विभिन्न आयु वर्ग के 7673 विद्यार्थियों ने इस संग्रहालय का दौरा किया। संग्रहालय में नियमित अंतराल पर कला तथा कला अभ्यासों पर **व्याख्यानों तथा सेमिनारों** का भी आयोजन किया गया जिनमें विदेशी शिष्टमंडलों, फ्रेंड्स ऑफ म्यूजियम सोसाइटी के सदस्यों, विदेशी मंत्रियों तथा भारतीय समकालीन कला में रुचि लेने वाले संगठनों के दौरे शामिल हैं।

### प्रदर्शनियां

1. निकोलस रोरिक की कृतियों से संबंधित **“निकोलस रोरिक: एन इटर्नल क्वेस्ट”** नामक एक प्रदर्शनी 13 मार्च, 2010 से 11 अप्रैल, 2010 तक आयोजित की गई। यह प्रदर्शनी रूसी संग्रहालय के सहयोग से लगाई गई थी।
2. वी एंड ए, लंदन की कलाकृतियों पर एनजीएमए, बंगलौर में 9 अप्रैल से 23 मई, 2010 तक **“इंडियन लाइफ एंड लैंडस्केप बाय वेस्टर्न आर्टिस्ट्स : पेंटिंग्स एंड ड्रॉइंग्स फॉम द वी एंड ए 1790–1927”** नामक एक प्रदर्शनी लगाई गई।
3. रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर **“द मास्टर्स स्ट्रोकस : आर्ट ऑफ रविन्द्रनाथ टैगोर”** नामक एक प्रदर्शनी 9 मई से 11 जुलाई, 2010 तक आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने किया।
4. भारत की प्रथम महिला प्रेस फोटोग्राफर होमाई व्यारावाला के छायाचित्रों की एक अनुदर्शी प्रदर्शनी— **“होमाई व्यारावाला : ए रेट्रोस्पेक्टिव”** का आयोजन 27 अगस्त से 31 अक्टूबर, 2010 तक किया गया।
5. अलकाजी कला प्रतिष्ठान के सहयोग से 1 अक्टूबर से 7 नवम्बर, 2010 तक **“हिस्टोरिक दिल्ली : अर्ली एक्सप्लोरेशंस ऑफ द कैमरा सी 1860–1950”** नामक प्रदर्शनी लगाई गई।

6. एनजीएमए, दिल्ली में ब्रिटिश काउंसिल तथा लिस्सन गैलरी के सहयोग से 27 नवम्बर से 27 फरवरी, 2010 तक **“अनीश कपूर दिल्ली मुम्बई”** नामक एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती सोनिया गांधी, अध्यक्ष, एनएसी द्वारा किया गया।

### जन-सम्पर्क

दर्शकों के लाभार्थ निम्नलिखित सुविधाएं भी प्रदान की गईं :

1. प्रायोजित समूहों, भारतीय तथा विदेशी शिष्टमंडलों और अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए संग्रहालय का दौरा।
2. स्कूली बच्चों के लिए दौरा कार्यक्रम।
3. अकादमिक प्रयोजनों के लिए छायाचित्र और ट्रांसपेरेंसी।
4. पेंटिंग, ग्रीटिंग कार्ड, पोर्टफोलियो तथा अन्य स्मृति वस्तुओं जैसे मग आदि की बिक्री।
5. दीर्घाओं में आयोजित विभिन्न प्रदर्शनियों/कार्यक्रमों से संबंधित प्रेस सम्मेलन तथा प्रेस प्रिव्यू।

### प्रदर्शनियां में एनजीएमए की भागीदारी

1. राष्ट्रीय समकालीन कला संग्रहालय, सिओल, दक्षिण कोरिया द्वारा 27 जुलाई से 10 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित **“रियलिज्म इन एशियन आर्ट”** नामक प्रदर्शनी के दौरान कृतियों को दर्शाने हेतु एनजीएमए के संग्रह से 8 कलाकृतियां उधार दी गईं।
2. चीन में सिचुआन संग्रहालय, चेंगडू में 26 सितम्बर, 2010 से 31 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित **“मॉडर्न आर्ट ऑफ इंडिया : द इथॉस ऑफ मॉडर्निटी”** नामक प्रदर्शनी में भारत महोत्सव के तत्वावधान में चीन भेजे जाने के लिए एनजीएमए के संग्रह से ‘आधुनिक तथा समकालीन भारतीय कला’ से संबंधित एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। संग्रह में से कुल 90 कलाकृतियां भेजी गईं।



## अन्य घटनाक्रम और कार्यक्रम

ब्रिटेन सांस्कृतिक शिष्टमंडल के दिनांक 29 जुलाई, 2010 के दौरे की एनजीएमए ने मेजबानी की।

महामहिम श्रीमती मालगोरजाटा टस्क (पोलैंड के राष्ट्रपति की पत्नी) द्वारा राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में “फ्रेडरिक चॉपिन” की मूर्ति के लोकार्पण के अवसर पर 7 सितम्बर, 2010 को एक औपचारिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पियानो वादन भी शामिल था।

एनजीएमए, राष्ट्रमंडल खेल, नई दिल्ली 2010 के दौरान 3 से 12 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल रहा। नए स्कंध तथा जयपुर हाउस दीर्घाओं में चार प्रदर्शनियों के अलावा, एक 10 दिवसीय चलचित्र कार्यक्रम भी संचालित किया गया, जिसमें प्रतिदिन 3 विशेष शो के जरिए भारतीय आधुनिक तथा समकालीन कला पर 30 विशेष फिल्में दिखाई गईं। दिन में तीन बार दौरे करवाए गए और संग्रहालय दस दिन तक रात नौ बजे तक खुला रहा।

राष्ट्रमंडल समिति द्वारा सामने के लॉन में विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें एनजीएमए के कर्मचारियों एवं दर्शकों ने सहयोग दिया।

भारतीय कला शीर्ष सम्मेलन के वीआईपी पासधारकों और एनजीएमए के विशेष आमंत्रितियों के लिए तृतीय कला शीर्ष सम्मेलन के दौरान 21 जनवरी, 2011 को “ब्रेकफास्ट एट द एनजीएमए” आयोजित किया गया।

## प्रकाशन

वर्ष के दौरान निकोलस रोरिक तथा होमाई व्यारावाला के कार्यों का कैटलॉग तैयार किया गया और एनजीएमए में आयोजित प्रदर्शनियों से संबंधित 9 प्रदर्शनी पोस्टर प्रकाशित किए गए। कला संग्रह को बढ़ावा देने के लिए सामान्य दरों पर बिक्री हेतु मदों में निम्नलिखित शामिल हैं :-

1. निकोलस रोरिक तथा रविन्द्रनाथ टैगोर प्रदर्शनी से संबंधित 4 अलग-अलग प्रकार के स्मारिका प्याले जिन पर विशेष रूप से पेंटिंग का ब्यौरा छापा गया है।
2. अमृता शेरगिल तथा राजा रवि वर्मा के पोर्टफोलियो (6 कृतियों का सेट)।
3. 10 विभिन्न प्रकार की बड़ी कलाकृतियां।
4. 6 विभिन्न प्रकार की छोटी कलाकृतियां।
5. निकोलस रोरिक प्रदर्शनी से संबंधित 6 ग्रीटिंग-कार्ड का सेट।
6. अनीश कपूर प्रदर्शनी से संबंधित 5 ग्रीटिंग-कार्ड का सेट।
7. विभिन्न कलाकारों के 5 ग्रीटिंग-कार्ड।
8. 10 प्रकार के पेपर वेट, 6 प्रकार के फ्रिज मैग्नेट।

5 विभिन्न प्रकार की थैलियां जिन पर चित्रकारी की गई थी, विशेषतः इन पर ये उकेरी गई थीं।



अनीश कपूर की प्रदर्शनी का उद्घाटन

## भारतीय संग्रहालय

वर्ष 1814 में स्थापित भारतीय संग्रहालय, कोलकाता सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञान तथा मानविकी से संबंधित भारतीय और गैर-भारतीय दोनों ही प्रकार के दुर्लभ अद्वितीय नमूनों का संग्रह है। इसके छह अनुभाग हैं, जिनके अंतर्गत सांस्कृतिक और वैज्ञानिक कलावस्तुओं की पैंतीस वीथियां नामतः – कला, पुरातत्व, मानव-विज्ञान, भू-विज्ञान, प्राणि विज्ञान एवं आर्थिक वनस्पति विज्ञान हैं। बहुविषयक कार्यकलापों से युक्त इस बहुद्देशीय संस्था का नाम भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची में एक राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में शामिल होने के कारण यह राष्ट्र का गौरव है। जबकि पुरातत्व, कला और मानव विज्ञान अनुभाग, न्यासी बोर्ड के अधीन संग्रहालय निदेशालय के नियंत्रणाधीन है, तथापि, वैज्ञानिक खण्डों नामतः भू-विज्ञान, प्राणि विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान के कार्यों की देखभाल भारतीय सर्वेक्षण के संबंधित कार्यालयों द्वारा की जाती है।

2.2.3

### कार्यक्रम

#### प्रशासनिक पहल

- (i) लगभग 30 वर्ष बाद भर्ती नियमों को संशोधित किया जा रहा है और ये अंतिम चरण में हैं।
- (ii) जांच समिति ने संशोधित सुनिश्चित कैरियर प्रोन्नति स्कीम (एमएसीपी) की समीक्षा की है।
- (iii) रिक्त पड़े 12 पदों को भरने की कार्यवाही पहले ही शुरू कर दी गई है और इनमें से 2 पद के लिए अभ्यर्थियों के साक्षात्कार लिए गए हैं।

#### प्रदर्शनियाँ

भारतीय संग्रहालय में निम्नलिखित अस्थाई प्रदर्शनी आयोजित की गई हैं :

- i) “आमरा शिल्पी – स्ट्रोक ऑफ लिटल वन्डर” शीर्षक से दृश्य कला प्रदर्शनी;
- ii) भारत की वस्त्र परम्पराएं;
- iii) नागालैंड और पश्चिम बंगाल के विभिन्न प्रकार के पंखों का प्रदर्शन;



- iv) बुद्ध – विभिन्न क्षेत्रों की बौद्ध संस्कृतियों को शामिल करते हुए करुणा-सार;
- v) 'कृष्ण' पर प्रदर्शनी;
- vi) वन्य जीवों पर फोटो प्रदर्शनी;
- vii) विश्व विरासत समारोह सप्ताह के अवसर पर एसडब्ल्यूएजी और स्टडी क्राफ्ट ने एक प्रदर्शनी-व-कार्यशाला आयोजित की।

### हिन्दी से संबंधित कार्यक्रम

**हिन्दी पखवाड़ा :** भारतीय संग्रहालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2010 को हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसे दिनांक 28 सितम्बर, 2010 तक जारी रखा गया। इस अवसर पर भारतीय संग्रहालय के कर्मचारियों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता और बच्चों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

### सहयोगी कार्यक्रम

- i) महानिदेशक, प्रोफेसर मार्टिन रथ की अध्यक्षता में भारतीय संग्रहालय, कोलकाता और ड्रिस्टेन संग्रहालय, जर्मनी के मध्य संभावित सहयोगी क्षेत्रों की संभावना का पता लगाने के लिए निदेशक, भारतीय संग्रहालय के कार्यालय में बैठक आयोजित की गई।
- ii) संग्रहालय भवन और अन्य क्षेत्रों को बेहतर रूप प्रदान करने के संबंध में सहयोग के संभावित क्षेत्रों का पता लगाने के लिए ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन के निदेशक की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय संग्रहालय का दौरा किया।
- iii) रबीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाने के लिए एक बैठक आयोजित की गई। राजकीय कला कॉलेज और कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहयोग से फरवरी, 2011 में एक सहयोगी कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई गई है।

### सेमिनार, व्याख्यान और कार्यशालाएं

- i) प्रोफेसर बी.डी. चट्टोपाध्याय और पैनल में शामिल माननीय व्यक्तियों के साथ 'सामाजिक एकता के लिए संग्रहालय' पर अन्तः क्रियात्मक सत्र आयोजित किया गया।

- ii) डा0 गौतम सेनगुप्ता, महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली ने 'बंगाली इतिहासकार दक्षिण-पूरब एशिया आविष्कार : निहर रंजन रॉय' पर 16वां अधिर चक्रवर्ती स्मारक व्याख्यान दिया।
- iii) संग्रहालय विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए 'सचल संरक्षण प्रयोगशाला के कार्यक्रम' पर व्याख्यान और व्यावहारिक निदर्शन आयोजित किया गया।
- iv) राष्ट्रीय कला संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आंध्र प्रदेश के विद्यार्थियों और आगंतुकों के लिए सेवाएं प्रदान की गईं और निदर्शन की व्यवस्था की गई।
- v) संग्रहालय विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए 'संग्रहालय पद्धति के व्यावहारिक पहलू' पर व्याख्यान आयोजित किया गया।
- vi) पुरातत्व अध्ययन और प्रशिक्षण केन्द्र तथा भारतीय संग्रहालय ने संयुक्त रूप से संगोष्ठी आयोजित की।
- vii) प्रवृत्ति विकास और तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- viii) संग्रहालय और कला वीथी, बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल में 'मूर्ति शिल्प संरक्षण' पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- ix) लाभवंचित बेसहारा बच्चों के लिए जन शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

### समारोह

- i) अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस;
- ii) विश्व पर्यावरण दिवस;
- iii) स्वतंत्रता दिवस;
- iv) महालय;
- v) बाल दिवस।

*कलावस्तुओं का भौतिक सत्यापन*

श्रीमती कस्तूरी गुप्ता मेनन, पूर्व-महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली की अध्यक्षता में कलावस्तुओं का भौतिक सत्यापन प्रगति पर है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सत्यापित की गई कलावस्तुओं की कुल संख्या इस प्रकार हैं :-

|      |                                 |   |      |
|------|---------------------------------|---|------|
| i)   | कला अनुभाग                      | : | 283  |
| ii)  | पुरातत्व अनुभाग                 | : | 1333 |
| iii) | मानव विज्ञान                    | : | 534  |
| iv)  | मुद्राशास्त्र और पुरालेख अनुभाग | : | 1168 |

**अन्य कार्यक्रम**

- बधिर विद्यार्थियों के लिए एक शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- विश्व पर्यावरण दिवस पर 'अद्वितीय' नामक एल्डेब्रा टोरटोइज प्रदर्शनी आयोजित की गई।
- संग्रहालय विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को संग्रहालय विज्ञान के व्यावहारिक पहलुओं पर इंटरनशिप पाठ्यक्रम प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।
- ब्रिटिश परिषद की सहायता से राष्ट्रीय संग्रहालय, स्कॉटलैंड का दौरा किया गया।
- मुम्बई में आयोजित कार्यशाला में भागीदारी की।
- महामहिम राज्यपाल, पश्चिम बंगाल और माननीय अध्यक्ष, न्यासी बोर्ड श्री एम.के. नारायणन ने 26 जून, 2010 को दौरा किया।
- ब्रूसेल्स, बेल्जियम और लास एंजिल्स, यूएसए प्रदर्शनी के लिए कलाकृतियों की स्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।
- 'विभिन्न काल खण्डों में बौद्ध कला' की चीन में आयोजित की जाने वाली प्रदर्शनी के लिए कलाकृतियों की स्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।
- तीन शिक्षा संस्थाओं को लोन किटों की आपूर्ति की गई।

- लास एंजिल्स 2010, इंडोनेशिया, 2011 और मैक्सिको, 2011 से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए चुनिंदा पेंटिंग, टैक्सटाइल और कलाकृतियों के रूप में सक्रिय भागीदारी की।
- आशुतोष जन्म शती हाल के पुनरुद्धार का कार्य प्रगति पर है।
- एक नई मास्क गैलरी स्थापित की गई।
- भरहुत वीथी और गंधार वीथी में दो कियोस्क स्थापित किए गए।
- राष्ट्रमंडल संग्रहालय संघ द्वारा छत्रपति शाहूजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुम्बई में 'संग्रहालयों पर पुनर्विचार करें' के संबंध में आयोजित की गई कार्यशाला में भागीदारी की।
- राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, साल्ट लेक, कोलकाता द्वारा 'आधुनिक प्रदर्शनी प्रौद्योगिकी' के संबंध में आयोजित किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी की।
- इंडोनेशिया में वर्ष 2011 में 'इस्लाम कला' पर आयोजित की जाने वाली प्रदर्शनी के लिए 12 पुरातत्व कलाकृतियों का चयन किया गया।
- भारतीय कलाकृतियों के संग्रह प्रबंधन, डिजिटीकरण और अभिनिर्धारण की जानकारी प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय, एडनबर्ग का दौरा किया गया।
- राष्ट्रमंडल खेल, 2010 नई दिल्ली की प्रदर्शनी में प्रस्तुत करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली को 11 ग्लास फाइबर कास्ट रेप्लिका निःशुल्क प्रदान की गई।

**प्रकाशन**

इस दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :-

- 'स्वर्ण मुद्राओं' के संबंध में 10 रंग-बिरंगे पोस्ट कार्डों का एक सैट।
- भारतीय संग्रहालय न्यूज लैटर्स - नई श्रंखला खण्ड 1 और खण्ड 2.



## पुस्तकालय

- i) पुस्तकालयों के वर्गीकरण सूत्र के अनुसार आंकड़े मंत्रालय को अनुमोदनार्थ भेजे गए।
- ii) डाटाबेस तैयार करने के लिए पुस्तकों और पत्रिकाओं की डाटा शीट तैयार की गई।
- iii) भारत के पूर्वोत्तर संग्रहालय के विशेष संदर्भ में भारत में संग्रहालय पुस्तकालयों को इंटरनेट से जोड़ने के लिए डाटाबेस तैयार किया गया।
- iv) भारत के संग्रहालय पुस्तकालयों के बीच संसाधनों की साझेदारी करने और संयुक्त पुस्तक-सूची बनाने के लिए इन्हें एकत्र किया गया।
- v) भारतीय संग्रहालय बुलेटिन की संचित सूची प्रकाशित की गई।
- vi) 'अट्टाडिपा', खण्ड 4 में संग्रहालय और पर्यटन पर लेख और दिघा निक्या, स्वामी अदानन्द फेलिसिटेशन खण्ड, नई दिल्ली में यथा-उल्लिखित जाति-व्यवस्था प्रकाशित किए गए।



राष्ट्रीय सलाहकार समिति की उपसमिति की बैठक का दृश्य

## विक्टोरिया मेमोरियल हॉल

विक्टोरिया मेमोरियल एक संग्रहालय के रूप में लगभग तीस हजार ऐतिहासिक वस्तुओं का भण्डार है, जो हमारे देश के 1650 ई. से लेकर तीन शताब्दियों से भी अधिक के इतिहास को समेटे हुए है। इसके संग्रह में तैल तथा जल रंगों में दृश्य, रेखाचित्र तथा चित्रकारी, पुरावस्तु और लिथोग्राफ, स्टाम्प एवं डाक लेखन सामग्री, सिक्के तथा पदक, शस्त्र व कवच, पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियां, मूर्तियां, पोशाकें, वैयक्तिक स्मृति चिन्ह तथा पुरालेखीय दस्तावेज शामिल हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल में 18वीं-19वीं शताब्दी के यूरोपीय कलाकारों यथा जोहान जोफैनी, रेनोल्ड्स, विलियम हाज्स, जार्ज चिनरी, रॉबर्ट हॉम्ज, टॉमस हिक्की, टिली केंटल, बाल्याजर साल्विन्स, चार्ल्स डी आयली, ऐमली ईडन और सैमुअल डेविस की चित्रकलाओं का एक अद्वितीय संग्रह है। यहां डैनियल की विश्व में सर्वाधिक चित्रकलाओं का भण्डार है। मेमोरियल के संग्रह में वैसिलि विरेस्चैगिन की ही कैनवास पर तीसरी सबसे बड़ी पेंटिंग “वेल्स के राजकुमार की 1876 में जयपुर में राजकीय शोभायात्रा” है।

मेमोरियल की अन्य महत्वपूर्ण तथा रुचिकर वस्तुओं में सचित्र फारसी पाण्डुलिपियां, मुगल सम्राट औरंगजेब की हस्तलिखित कुरान, अबुल फैज फैजी द्वारा ‘नल-दमयंती’ का फारसी अनुवाद, दारा शिकोह द्वारा ‘उपनिषद’ का अनुवाद, कालीघाट चित्रकारी तथा कजर चित्रकला शामिल हैं।

आधुनिक भारतीय चित्रकारों विशेषकर बंगाल कला शैली से संबंधित चित्रकारों विशेषतः अवनिन्द्रनाथ, अतुल बोस, जैमिनी रॉय की पेंटिंग के अधिग्रहण से विक्टोरिया मेमोरियल हाल का संग्रह समृद्ध हुआ है।

### कार्यकलाप

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान विक्टोरिया मेमोरियल के महत्वपूर्ण कार्यकलाप इस प्रकार हैं :

*ऐतिहासिक वस्तुओं का भौतिक सत्यापन तथा डिजिटलीकरण*

- समीक्षाधीन अवधि के दौरान 350 स्टाम्पों, 282 नक्काशियों (7 अल्बमों से), 65 पुस्तकों का भौतिक सत्यापन किया गया।
- प्रदर्शित की गई वस्तुओं के भौतिक सत्यापन का कार्य पूरा किया गया।
- मल्टीमीडिया किओस्क तैयार करने के लिए शस्त्र एवं कवच, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, नैशनल लीडर्स गैलरी के संग्रह में से रानी से जुड़ी ऐतिहासिक वस्तुओं का संकलन करके एनसीएसएम को सौंपा गया।

2.2.4



- सॉफ्टवेयर (जतन) अधिष्ठापन का कार्य चल रहा है।
- ऐतिहासिक वस्तुओं के डिजिटलीकरण (हाई रिजॉल्यूशन) का कार्य प्रारंभ किया गया और यह चल रहा है।
- भारत तथा विदेशों के 29 अध्येताओं को सहायता प्रदान की गई।

#### कलावस्तुओं (तैल चित्र) का जीर्णोद्धार

- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के संग्रह में से सात तैल चित्रों के जीर्णोद्धार का कार्य पूरा किया गया।
- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के संग्रह में से पांच तैल चित्रों और उच्च न्यायालय, कोलकाता के दो तैल चित्रों के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया।
- त्रिपुरा राज्य संग्रहालय (पूर्वोत्तर) के एक तैल चित्र का जीर्णोद्धार किया गया।
- त्रिपुरा राज्य संग्रहालय (पूर्वोत्तर) के तीन तैल चित्रों के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया।
- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के संग्रह में से चार प्राचीन फ्रेमों का संरक्षण किया गया।
- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के संग्रह में से एक प्राचीन फ्रेम तथा उच्च न्यायालय संग्रह में से दो प्राचीन फ्रेमों का संरक्षण कार्य प्रारंभ किया गया।
- उच्च न्यायालय के दो तैल चित्रों के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया।
- त्रिपुरा राज्य संग्रहालय (पूर्वोत्तर) की 25 कलावस्तुओं और बर्दवान विश्वविद्यालय के पंद्रह तैल चित्रों की संरक्षण स्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।
- रोकथाम संरक्षण के दृष्टिकोण से प्रत्येक बुधवार को नियमित रूप से स्टोरों की साफ-सफाई का कार्य किया गया।

#### कलावस्तुओं का संरक्षण

- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के संग्रह में से 29 कागजी वस्तुओं का संरक्षण किया गया।

- रबीन्द्र भारती सोसाइटी के संग्रह से अवनिन्द्रनाथ टैगोर द्वारा तैयार की गई 130 जलरंग चित्रकारियों की दशमूलक स्थिति की रिकार्डिंग की गई। लगभग 5000 ऐतिहासिक वस्तुओं की पैकेजिंग पूरी की गई और विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में स्थानांतरित किए जाने हेतु यह तैयार है।
- 354 फोलियो वाली एक पांडुलिपि (न्यायाधीश हाइड की टिप्पणियाँ) का संरक्षण किया गया।
- 7 पुरानी दुर्लभ पुस्तकों को गैर-अम्लीकृत करके इनकी मरम्मत एवं इनका लैमिनेशन किया गया। इन पुस्तकों की पुनः जिल्दसाजी की गई।
- 6 कांस्य एवं 4 संगमरमर की मूर्तियाँ संरक्षित की गईं। विक्टोरिया मेमोरियल संग्रहालय में से 25 मूर्तियों तथा अर्धप्रतिमाओं की संरक्षण स्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।
- राज भवन कोलकाता से 3 अश्मलेख प्राप्त हुए जिनका संरक्षण करके फ्रेमिंग की गई तथा इन्हें वापस कर दिया गया।

#### विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता की सुरक्षा हेतु पर्यावरण प्रबंधन योजना : वर्षा जल संचय

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में दिनांक 26.05.10 को आयोजित विशेषज्ञ समिति की पिछली बैठक में समिति ने गौर किया कि सीजीडब्ल्यूबी की सलाह के अनुसार समोच्च नक्शा तैयार कर लिया गया था। विक्टोरिया मेमोरियल हॉल परिसर में भू-जलाशय निर्मित करने के बावत स्थल चयन हेतु सीजीडब्ल्यूबी विशेषज्ञों ने 2.12.2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का दौरा किया।

#### सेमिनार, व्याख्यान, कार्यशाला तथा विशेष कार्यक्रम

- डॉ० जी.एस. रौतेला, महानिदेशक, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता ने विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में 12.4.2010 को “सांस्कृतिक संस्थानों का विपणन” विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया। प्रोफेसर के.के. बासा, निदेशक, भारतीय संग्रहालय, कोलकाता ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की।
- सुश्री सुहासिनी सिन्हा, सहायक संरक्षक, विक्टोरिया एंड अल्बर्ट संग्रहालय, लन्दन द्वारा विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में 16.4.2010 को संगठनात्मक व्यवस्था, संग्रहण प्रबंधन

तथा विक्टोरिया एंड अल्बर्ट में प्रदर्शनियों की डिजाइनिंग विषय पर एक इन-हाउस विशेष व्याख्यान दिया।

- डॉ० सव्यसाची भट्टाचार्य, निदेशक, सीएसएमवीएस, मुम्बई के साथ विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में दिनांक 07.5.2010 को "संग्रहालय प्रबंधन तथा सामुदायिक नियोज्यता कार्यक्रम" विषय पर एक इन-हाउस इंटरएक्टिव सत्र का आयोजन किया गया।
- श्री नीलाभ सिन्हा, निदेशक, इंटैक, नई दिल्ली द्वारा 22 से 26 जून, 2010 तक विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "तैल चित्रों का जीर्णोद्धार" विषय पर एक इन-हाउस कार्यशाला आयोजित की गई।
- श्रीमती ज्योति रॉय, पुरालेखपाल, अल्काजी प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 28 जून से 2 जुलाई, 2010 तक विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "तैल चित्रों का सुदृढ़ीकरण एवं जीर्णोद्धार" विषय पर एक इन-हाउस कार्यशाला का संचालन किया गया।
- श्रीमती मालबिका घोष, सहायक पुस्तकालय तथा सूचना अधिकारी और संरक्षण प्रभारी, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता ने दिनांक 28 जून, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "कमजोर पुस्तकों तथा पुरालेख सामग्रियों का संरक्षण" विषय पर एक इन-हाउस व्याख्यान दिया।
- डॉ० शशि धवन, पूर्व वैज्ञानिक, एनआरएलसी, लखनऊ ने दिनांक 11-12 जुलाई, 2010 तक विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "तैल चित्रों का जैव-क्षय एवं इसका नियंत्रण" विषय पर एक इन-हाउस कार्यशाला का संचालन किया।
- प्रोफेसर मधुसूदन भट्टाचार्य, सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा प्रमुख, अभियांत्रिकी इंजीनियरी विभाग, जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता ने दिनांक 19 जुलाई, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "द एंजल अटॉप द मेमोरियल रीविजिटेड" विषय पर एक व्याख्यान दिया। प्रो० प्रदीप नारायण घोष, माननीय कुलपति, जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की।
- डॉ० तरुण कुमार विश्वास, निदेशक, बिरला अकादमी ऑफ आर्ट एंड कल्चर, कोलकाता ने दिनांक 30 अगस्त, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "मुगल मिनएचर्स: पोर्ट्रेट्स अंडर द इम्पिरियल मुगल्स" पर एक विशेष व्याख्यान दिया। श्री रामानन्द बंदोपाध्याय, जाने माने चित्रकार ने इसकी अध्यक्षता की।
- प्रो० के.के. जैन, परियोजना अधिकारी तथा प्रमुख, नेशनल रीसर्च लैबोरेट्रीज फॉर कंजर्वेशन ऑफ कल्चरल प्रोपर्टीज, मैसूर द्वारा "शिला वस्तुओं का संरक्षण" विषय पर एक इन-हाउस सचित्र व्याख्यान व सेमिनार का संचालन किया गया।
- प्रो० पवित्र सरकार, पूर्व कुलपति, आर.बी.यू., कोलकाता द्वारा 30 सितम्बर, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "मानव जीवन शिल्प-व-रबीन्द्रनाथ" विषय पर एक व्याख्यान दिया गया। प्रो० करुणा सिंधु दास, माननीय कुलपति, आर.बी.यू., कोलकाता ने इस व्याख्यान सत्र का उद्घाटन किया और इस अवसर पर अपना वक्तव्य रखा।
- लॉरेटो कॉलेज, कोलकाता के सहयोग से 30 सितम्बर-1 अक्टूबर, 2010 तक लॉरेटो कॉलेज तथा विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा स्वतंत्रता संग्राम" पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।
- संसाधन व्यक्तिगण : प्रो० भारती रे, उपाध्यक्षा, आईसीसीआर (मुख्य अतिथि), प्रो० सव्यसाची भट्टाचार्य, अध्यक्ष, आईसीएचआर (मुख्य), डॉ० अनिदिता मुखोपाध्याय, व्याख्याता, इतिहास विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, डॉ० स्वरूपा गुप्ता, फेलो, एमएकेआईएस, डॉ० रोसिनका चौधुरी, फेलो, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसेस, प्रो० कोकिला जोशी, पूर्व प्रमुख, इतिहास विभाग, आर. एन. झुनझुनवाला कॉलेज, मुम्बई, डॉ० रुद्रांशु मुखर्जी, संपादक, संपादकीय पृष्ठ, द टेलीग्राफ, कोलकाता, डॉ० सुजाता मुखर्जी, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता, प्रोफेसर भास्कर चक्रवर्ती, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रोफेसर रंजीत सेन, इस्लामिक इतिहास तथा संस्कृति, कोलकाता



विश्वविद्यालय, डॉ० आनन्द भट्टाचार्य, सहायक निदेशक, पश्चिम बंगाल राज्य अभिलेखागार, कोलकाता, डॉ० अर्वी मुखोपाध्याय, व्याख्याता, इतिहास विभाग, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कोलकाता और प्रो० मुशीरुल हसन, निदेशक, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

- श्री अजंन मित्रा, वास्तुविद्, शहरी डिजाइनर तथा लेखक ने 29 अक्टूबर, 2010 को “दुर्गापूजा—कोलकाता की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति” विषय पर एक मासिक विशिष्ट व्याख्यान दिया। श्री इंद्रजीत चौधुरी, सहायक संपादक, आनन्द बाजार पत्रिका, कोलकाता और संरक्षक, बंगीय साहित्य परिषद् संग्रहालय, कोलकाता ने इस व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की।
- “आधुनिक बंगाली कलाकार गगनेन्द्रनाथ टैगोर” विषय पर एमिला टेरासियानो, सहयोगी पीएच.डी. धारी छात्र जो प्रो० दोबोरा स्वालो, कोर्टऑलड इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट एंड दिव्या पटेल, संरक्षक, दक्षिण एशिया, विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूजियम, लंदन के साथ कार्यरत हैं, ने 2 दिसम्बर, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में एक विशेष वक्तव्य दिया।
- प्रो० अतुल चन्द्र भौमिक, पूर्व प्रमुख, संग्रहालय विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा 24 दिसम्बर, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में “संग्रहालय प्रकाशन” पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया। प्रो० सचिन्द्रनाथ भट्टाचार्य ने इस व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की।
- कलकत्ता चेम्बर ऑफ़ेस्ट्रा क्विंटेट द्वारा 27 से 31 दिसम्बर, 2010 तक प्रतिदिन सांय 3.00 से 4.00 बजे तक “उत्सव के अवसर पर संगीत” का आयोजन किया गया।
- अंग्रेजी उच्च अध्ययन केंद्र, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता के सहयोग से दिनांक 13 जनवरी, 2011 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में “उपयोगी वस्तुएं तथा संस्कृति, 1851–1914” विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- अन्यो के साथ-साथ इस कार्यशाला को निम्नलिखित अध्येताओं ने सम्बोधित किया : जॉन प्लूनकेट, एक्सीटर यूनिवर्सिटी, इसाबेल हॉफमेयर, विटवाट्सरेण्ड यूनिवर्सिटी,

ताप्ती गुहा—ठाकुरता, सीएसएसएस, देवलीना घोष, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, सिडनी, क्लेयर पेटिट, किंग्स कॉलेज, लंदन, जोसफीन मैकडोनाग, किंग्स कॉलेज, लंदन, मार्क टर्नर, किंग्स कॉलेज, लंदन, सुप्रिया चौधुरी, जादवपुर विश्वविद्यालय, चन्द्रेई नियोगी, जादवपुर विश्वविद्यालय, नीलांजना देब, जादवपुर विश्वविद्यालय।

- अपीजे कोलकाता साहित्य महोत्सव 2011 और अंग्रेजी उच्च अध्ययन केंद्र, जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता के सहयोग से श्री गोपालकृष्ण गांधी द्वारा दिनांक 13 जनवरी, 2011 को “राइटर्स कैम्प” शीर्षक एक विशेष व्याख्यान दिया गया। श्री एम.के. नारायणन, पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल ने इस व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की।
- एक संसाधन व्यक्ति के रूप में डॉ० वी. जयराज, सेवानिवृत्त संरक्षक, सरकारी संग्रहालय, चेन्नई के साथ 2 फरवरी, 2011 को आयोजित इन-हाउस सेमिनार-व-इंटरएक्शन।
- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के सहयोग से 3–5 फरवरी, 2011 तक आईएससी का 43वां वार्षिक आम सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल, पश्चिम बंगाल ने किया। श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति, भारत सरकार ने इस अवसर पर सभा को सम्बोधित किया।
- डॉ० जयंत चौधुरी द्वारा दिनांक 7 फरवरी, 2011 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में “लीला—द एस्थेटिक्स ऑफ ऑलिम्पिक्स” पर एक विशेष व्याख्यान दिया। श्री मनसिज मजूमदार, ख्यातिप्राप्त कला समीक्षक ने इस व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की।
- **विश्व दिवस/सप्ताह समारोह** बांग्ला नाटक डॉट कॉम, कोलकाता के सहयोग से दिनांक 22 अप्रैल, 2010 को दिनभर के लिए कला कार्यशाला (पोस्टर बनाना, पट्ट चित्रकारी), मौके पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन करके ‘पृथ्वी दिवस समारोह’ मनाया गया। इस कार्यक्रम में नगर निगम तथा गली के स्कूलों और सर्व शिक्षा अभियान स्कूलों के 100 लाभवंचित बच्चों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर बच्चों ने “आमार पृथिवी” (मेरी दुनिया) नामक एक व्यंग रचना की भी प्रस्तुति दी।

- निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन करके **अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस, 2010** मनाया गया : दिनभर के लिए मौके पर चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन जिसमें पश्चिम बंगाल भर से आए 500 स्कूली बच्चों ने हिस्सा लिया जिसका संचालन श्री निरंजन प्रधान, श्री देवव्रत चक्रवर्ती और श्री द्विजन गुप्ता द्वारा दिनांक 17.5.2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में किया गया।

संग्रहालय का दौरा करने वाले दर्शकों के लिए दिनांक 18.5.2010 को 'खजाने की खोज' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 800 दर्शकों ने भाग लिया। विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में दिनांक 18.5.2010 को "सामाजिक सामंजस्य हेतु संग्रहालय" पर पैनल परिचर्चा। प्रो० अमलेन्दु डे तथा डॉ० शेखर भौमिक इस पैनल में शामिल थे।

- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में निम्नलिखित दो कार्यक्रमों का आयोजन करके 5 जून, 2010 को **'विश्व पर्यावरण दिवस'** मनाया गया। फ्रेंड्स विक्टोरिया ऑफ विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के सहयोग से विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता और वेस्ट बंगाल फेडरेशन ऑफ यूनाइटेड नेशंस संघ ने एक विशेष वार्तालाप सत्र का आयोजन किया जिसमें श्री सीताराम शर्मा, कोलकाता में बेलारूस के मानद राजदूत ने वक्तव्य दिया जिसके उपरान्त विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के उद्यान में पौध रोपण किया गया। श्री उत्पल चैटर्जी, कोलकाता के शासनाधिकारी ने श्री एस.के. टोडी, उपाध्यक्ष, फ्रेंड्स ऑफ विक्टोरिया मेमोरियल हॉल की उपस्थिति में इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

प्रो० अरुणव मजूमदार, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजीन एंड पब्लिक हेल्थ, कोलकाता द्वारा विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "पर्यावरण प्रदूषण का नियंत्रण" विषय पर एक इन-हाउस व्याख्यान दिया गया।

डॉ० अलोक चौधुरी, पूर्व निदेशक, पर्यटन विभाग, भारत सरकार द्वारा विश्व पर्यटन दिवस, 2010 के अवसर पर 27 सितम्बर, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में "संग्रहालय एवं पर्यटन" विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया। प्रो० सी. पांडा, सचिव तथा संग्रहाध्यक्ष ने इस व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की।

ब्रिटिश काउंसिल के सहयोग से दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को बाल दिवस के अवसर पर पर्यावरण विषय पर 'मौके पर प्रश्नोत्तरी एवं फिल्म शो' का आयोजन किया गया।

- दिनांक 19-25 नवम्बर, 2010 तक **विश्व विरासत सप्ताह** मनाया गया जिसमें निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए। गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट के सहयोग से 22 नवम्बर, 2010 को प्रो० प्रदीप कुमार भट्टाचार्य द्वारा "भारतीय धरोहर मूर्तिकला में सौंदर्य बोध" विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया। श्री शंकर घोष, जाने माने मूर्तिकार ने व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की। पश्चिम बंगाल शिल्प परिषद के सहयोग से दिनांक 23 नवम्बर, 2010 को प्रातः 10.00 बजे से सांय 5.00 बजे तक "रीइन्वेन्टिंग क्राफ्ट्स फॉर द 21 सेंचुरी" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

डॉ० ओ.पी. अग्रवाल, महानिदेशक, भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद, लखनऊ ने दिनांक 24 नवम्बर, 2010 को "धरोहर संरक्षण : किसी जिम्मेदारी" विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया। प्रो० समीर रक्षित ने व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की।

श्री मनीष चक्रवर्ती, निदेशक मैसर्स-कंटीन्युटी, कंजर्वेशन एंड आर्किटेक्चरल डिजाइन प्रैक्टिस द्वारा 25 नवम्बर, 2010 को "कंजर्व एंड रिवाइव कैलकटाज बिल्ट हेरीटेज" विषय पर एक सोधारण वार्तालाप।

- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में 3 दिसम्बर, 2010 को 'अहेड' के बच्चों के साथ **"विश्व विकलांगता दिवस"** मनाया गया जिसमें निम्नलिखित कार्यक्रम हुए : वीथी दौरा, फैंसी ड्रेस, तथा कठपुतली शो।
- मेमोरियल के **106वें स्थापना दिवस** समारोह के अवसर पर बाऊल फकीर संघ के एक सदस्य द्वारा "बंगाल के बाऊल तथा फकीर" द्वारा एक विशेष वक्तव्य दिया गया। श्री गौतम घोष, प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता इस अवसर पर मौजूद थे और बाऊल से संबंधित विचारों का आदान-प्रदान किया और 3 जनवरी, 2011 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में बाऊल फकीर संघ के सदस्यों द्वारा प्रदर्शन/कला मंचन किया गया। प्रो० तपन रॉय चौधुरी द्वारा 4 जनवरी, 2011 को "19वीं शताब्दी के बंगाल में ब्रितानी उपस्थिति

एवं सामाजिक परिवर्तन : अनियमित संबंध” विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया। प्रो० सुरंजन दास तथा डॉ० रुद्रांशु मुखर्जी ने प्रो० रॉय चौधुरी से बातचीत की। श्री गौतम घोष ने राजा राम मोहन रॉय पर “इन सर्च ऑफ द राजा” (2009, 40 मिनट) नामक एक वृत्तचित्र पेश किया।

## पुस्तक विमोचन

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कोलकाता के सहयोग से महामहिम श्री बी.पी. सिंह, राज्यपाल, सिक्किम द्वारा रचित ‘बहुधा’ और ‘पोस्ट 9/11 वर्ल्ड एंड इंडियाज कल्चर : द स्टेट, द आर्ट्स एंड बियॉन्ड’ के एक बॉक्स सेट के विमोचन का आयोजन 5 जुलाई, 2010 को सांय 6.00 बजे राजभवन, कोलकाता में किया गया। इसका विमोचन महामहिम श्री एम.के. नारायणन, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल ने प्रो० सव्यसाची भट्टाचार्य, अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अध्ययन परिषद, नई दिल्ली और प्रो० सुगत बोस, इतिहास के प्रोफेसर, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और अन्य गण्यमान्य अतिथियों की उपस्थिति में किया। सभी तीन वक्ताओं ने लेखक के योगदान का उल्लेख किया। सिक्किम के राज्यपाल महामहिम, श्री बी.पी. सिंह इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे और इस अवसर पर उन्होंने अपना वक्तव्य दिया।

## प्रदर्शनी

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर 18 मई, 2010 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में संग्रहालय के संग्रह से “म्युजियम्स फॉर सोशल हार्मोनी” पर एक प्रदर्शनी लगाई गई।

‘सेंट्रल केलकटा साइंस एंड कल्चर ऑर्गनाइजेशन फॉर यूथ’ के सहयोग से 3-8 सितम्बर, 2010 तक अमरावती मैदान, सोदपुर कोलकाता में आयोजित 14वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी में “स्ट्राइविंग टुवर्ड्स द ग्लोरियस इंडिया” विषय पर विक्टोरिया मेमोरियल हॉल की उपलब्धियों एवं कार्यकलापों के संबंध में एक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी दीर्घा में वीएम प्रकाशन का एक स्टॉल भी लगाया गया।

गोएथ-इंस्टीट्यूट/मैक्समूलर भवन, कोलकाता के सहयोग से 19 नवम्बर – 12 दिसम्बर, 2010 तक “हेरिटेज हाउसेज इन चितपुर रोड नेबरहुड” विषय पर एक फोटो प्रदर्शनी लगाई गई।

गोबिन्द नगर हाई स्कूल, कैनिंग-।। ब्लॉक, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में 11-17 दिसम्बर, 2010 को आयोजित 7वें जातीय संहति उत्सव-ओ-भारत मेला, 2010 में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल ने भाग लिया।

एम.एफ. हुसैन तथा सुनीता कुमार द्वारा ‘मदर’ (दोनों की 20-20 पेंटिंग) पर एक पेंटिंग प्रदर्शनी 15 फरवरी से 6 मार्च, 2011 तक आयोजित की जाएगी।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और इटालियन एम्बैसी कल्चरल सेंटर के सहयोग से थॉमस व विलियम डैनियल द्वारा 18वीं सदी की एक्वाटिंट्स और अंटोनियो मार्टिनेली द्वारा समकालीन छायाचित्रों से संबंधित “ओरिएंटल सीनरी, येस्टरडे एंड टुडे” विषय पर एक प्रदर्शनी 1 मार्च – 30 अप्रैल, 2011 तक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली में आयोजित की जाने वाली है।

## राजभाषा कार्यक्रम

- श्री जी.डी. केसवानी, पूर्व उप-निदेशक, राजभाषा ने 21 अगस्त, 2010 तथा 20 दिसम्बर, 2010 को ‘हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूपण’ विषय पर इन-हाउस हिंदी कार्यशालाओं का संचालन किया।
- 14-20 सितम्बर, 2010 तक हिंदी सप्ताह के दौरान इन-हाउस हिंदी प्रतियोगिता तथा एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेमोरियल के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

## सन-एट-लूमियर

सन-एट-लूमियर (ध्वनि एवं प्रकाश) – “प्राइड एंड ग्लोरी : द स्टोरी ऑफ केलकटा” विषय पर बांग्ला तथा अंग्रेजी में दो सार्वजनिक शो अप्रैल से जून 2010 तथा अक्टूबर से फरवरी, 2011 को आयोजित किए गए।

## न्यूज लैटर का प्रकाशन

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के न्यूज लैटर का पहला अंक नवम्बर, 2010 में प्रकाशित किया गया। आगामी अंक का कार्य चल रहा है।

## प्रशिक्षण

- राष्ट्रमंडल संग्रहालय संघ के सीएसएमवीएस, मुम्बई में दिनांक 1–5 जून, 2010 तक आयोजित पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शिक्षा एवं संरक्षण ईकाई के दो सदस्यों ने भाग लिया।
- सरकारी संग्रहालय, चेन्नई में 01–31 जुलाई, 2010 के दौरान एक माह तक चलने वाले “संरक्षकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम” में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के परिरक्षण एकक के तीन सदस्यों ने भाग लिया।
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण प्रयोगशाला (एनआरएलसी), लखनऊ द्वारा 2 अगस्त से 13 अगस्त, 2010 तक आयोजित “सांस्कृतिक धरोहर की देखभाल तथा अनुरक्षण पर प्रबोधन कार्यशाला” नामक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में जीर्णोद्धार एकक के पांच सदस्यों ने भाग लिया।
- संरक्षण इकाई के तीन सदस्यों और प्रलेखन इकाई के एक सदस्य ने सेंटर फार डेवलपमेंट फार एडवांस कम्यूनिंग, पुणे में 5–6 अक्टूबर, 2010 को “जतन–वर्चुअल म्यूजियम बिल्डर साफ्टवेयर ट्रेनिंग” में भाग लिया।
- ब्रिटिश काउंसिल में 8–9 नवम्बर, 2010 तक “इंडियन लाइफ एंड लैंडस्केप बाय द वेस्टर्न आर्टिस्ट्स” विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में शिक्षा अधिकारी ने भाग लिया।
- केंद्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता में 15–20 नवम्बर, 2010 तक “मॉडर्न डिस्प्ले टेक्निक्स” पर

छः दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षा अधिकारी ने भाग लिया।

- ब्रिटिश काउंसिल, पूर्वी भारत और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 24 जनवरी–1 फरवरी, 2011 तक आयोजित “फ्यूचर प्रेजेंट” नामक अध्ययन दौरे में शिक्षा अधिकारी ने भाग लिया।

## मरम्मत और नवीकरण

बेसमेंट में आई दरारों की विशेष मरम्मत करवाई गई। भवन का वार्षिक रखरखाव, फर्नीचर, पॉलीशिंग तथा दरवाजों, खिड़कियों, शोकेसों आदि की फिटिंग। सेंट्रल हॉल तथा दरबार हॉल के पश्चिमी दीवार की विशेष मरम्मत जिनमें टूटे-फूटे हुए स्टोर केसिंग को हटाते हुए दरबार हॉल की चूना पत्थर से मरम्मत किया जाना शामिल है। रंग-रोगन तथा पॉलिशिंग कार्यों के साथ रॉयल गैलरी, पुस्तकालय तथा पुरालेखों की मरम्मत एवं प्लास्टरिंग।

- दर्शकों के लिए उद्यान में बेंच लगाया जाना। दर्शकों को पेयजल की सुविधा देने के लिए दक्षिणी द्वार के नजदीक पाइपलाइन बिछाना तथा पेयजल प्लेटफॉर्म का निर्माण करना। ट्रांसफार्मर कक्षों, ड्यूटी क्वार्टरों आदि की मरम्मत एवं नवीनीकरण। भूमिगत जलाशय के चारों ओर चेन लिंक चारदीवारी लगाया जाना। उद्यान के चरण-II तथा III प्लॉटों का विकास।
- निगरानी के लिए बैटरी चालित दो गाड़ियां खरीदी गईं। ड्रेगन सर्च लाइट, मेटल डिटेक्टर आदि जैसे निगरानी उपकरण खरीदे गए। सीसीटीवी प्रणाली की गहन मरम्मत की गई।



## सालारजंग संग्रहालय

2.2.5

हैदराबाद का सालारजंग संग्रहालय, विश्व के यूरोपीय, एशियाई और सुदूरपूर्व देशों की विभिन्न कलात्मक उपलब्धियों का भंडार है। इस संग्रहालय का बड़ा भाग नवाब मीर यूसुफ अली खान, जिन्हें सालारजंग – III के रूप में जाना जाता है, द्वारा संग्रहित किया गया था।

यह उनके द्वारा चालीस वर्षों से अधिक समय में संग्रहित की गई कीमती और लुप्तप्राय कलाकृतियों को सालारजंग संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। सालारजंग – III की मृत्यु के बाद, अमूल्य कलात्मक वस्तुओं और उनके पुस्तकालय के विस्तृत संग्रहालय, उनके पुश्तैनी महल दीवान ड्यौडी में रखे हुए थे, जिन्हें भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 16 दिसंबर, 1951 को जनता के दर्शन के लिए खोल दिया गया था। संग्रहालय का प्रशासन 1958 तक सालारजंग संपदा समिति के हाथों में ही था। उसके बाद, सालारजंग के वंशजों ने संग्रह को भारत सरकार को दान में दे दिया। उसके बाद, संसद के अधिनियम (1961 के अधिनियम 26) द्वारा पुस्तकालय के साथ-साथ संग्रहालय को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में घोषित कर दिया गया। संग्रहालय का प्रशासन, न्यास के स्वायत्त बोर्ड के हाथों में सौंपा दिया गया, जिसके पदेन अध्यक्ष आंध्र प्रदेश के महामहिम राज्यपाल तथा दस सदस्य हैं, जिनमें भारत सरकार, आंध्र प्रदेश सरकार, उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों और सालारजंग के परिवार के सदस्य हैं।

वर्तमान संग्रहालय भवन का निर्माण मूसी नदी के दक्षिणी सीमा छोर पर किया गया है, जो पुराने शहर के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारकों जैसे चारमीनार, मक्का मस्जिद आदि के पास है। पुस्तकालय और संग्रहालय की वस्तुओं को 1968 में दीवान ड्यौडी से नए भवन में लया गया। इस विशाल संग्रह को ध्यान में रखते हुए, सन 2000 में दो और भवनों, अर्थात् मीर तुराब अली खान भवन (पश्चिमी ब्लॉक) और मीर लायक अली खान भवन (पूर्वी ब्लॉक) का निर्माण किया गया।

संग्रहालय में, भारतीय मूल की ही नहीं, बल्कि पाश्चात्य, मध्यपूर्व और सुदूर पूर्व देशों की मूल कलात्मक और पुरावस्तुओं का शानदार संग्रह है। इसके अलावा, बच्चों का कोना, एक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसमें संदर्भ पुस्तकें, दुर्लभ और पांडुलिपियों का विशाल संग्रह हैं। इस प्रकार, यह संग्रहालय न केवल मनोरंजन स्थल के रूप में बल्कि शिक्षा के भंडार के रूप में प्रचलित हुआ। आज इस संग्रहालय के तीन ब्लॉकों में 40 दीर्घाएं,



जैसे (I) भारतीय ब्लॉक (27 दीर्घाएं), (II) पाश्चात्य ब्लॉक (7 दीर्घाएं) और (III) पूर्वी ब्लॉक (6 दीर्घाएं) हैं, जिनमें लगभग 13,404 वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। भारतीय वस्तुओं को आंध्र प्रदेश, तामिलनाडु, कर्नाटक, केरल, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, जम्मू और कश्मीर तथा कांगड़ा, बसोहली, जयपुर, उदयपुर, मेवाड़, हैदराबाद, बीजापुर, कुर्नूल तथा निर्मल जैसे स्थानों से संग्रहित किया गया है। पश्चिमी संग्रहित वस्तुएं इंग्लैंड, आयरलैंड, फ्रांस, बेल्जियम, इटली, जर्मनी, चेकोस्लोवेकिया और आस्ट्रिया देशों की हैं। पूर्वी देशों की वस्तुओं को चीन, जापान, बर्मा, कोरिया, नेपाल, थाइलैंड, इंडोनेशिया और मिस्र, सीरिया, फारस और अरब से संग्रहित किया गया है।

### पुस्तकालय

सालारजंग संग्रहालय के पुस्तकालय में सालारजंग परिवार द्वारा संग्रहित पुस्तकें और पांडुलिपियाँ हैं। कुछ संग्रहित पुस्तकें सन् 1656 से पहले की भी हैं। इस संग्रह में 62,772 पुस्तकें मुद्रित हैं जिनमें से 41,208 पुस्तकें अंग्रेजी, 13,027 उर्दू, 1108 पुस्तकें हिंदी, 1105 पुस्तकें तेलुगू, 3576 पुस्तकें फारसी, 2588 पुस्तकें अरबी और 160 पुस्तकें तुर्की भाषा की हैं। इस संग्रहालय में कला, मूर्तिकला, चित्रकला, सिरेमिक कला, शोभित करने वाली कला, संगीत शास्त्र, पर्यटन आदि विषयों की नई पुस्तकें निरंतर जोड़ी जाती हैं। संग्रहालय के कर्मचारियों के अलावा यहां अनुसंधान छात्र (भारतीय और विदेशी दोनों) नियमित रूप से आते रहते हैं।

इस संग्रहालय में 8,556 उत्कृष्ट पांडुलिपियां हैं। इनमें 2,623 अरबी, 4,815 फारसी, 1,096 उर्दू और 22 अन्य भाषाओं की पांडुलिपियां हैं। इस संग्रह में 1,450 सुलेखन पट्ट भी हैं। इस संग्रह में अधिकांशतः विभिन्न ईरानी और भारतीय मत की पुस्तकें जैसे कि बुखारा, इस्फहान, शिराज, तब्रेज, कचार, हेरार, लाहौर, कश्मीर, पंजाब, दिल्ली, जयपुर, मारवाड़, गुजरात, कंपनी शैली तथा दक्खनी उप शैली जैसे गोलकोंडा, बीजापुर, बीदर और हैदराबाद की हैं। इन पांडुलिपियों में इतिहास, गणित, संगीत, खगोल-विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन शास्त्र, भौतिक, रसायन, पशुपालन, शिकार, सैन्य विज्ञान, विधि, साहित्य, पवित्र कुरान और अन्य संबंधित विषय शामिल हैं। संग्रहालय में जनवरी, 2010 से दिसंबर, 2010 के दौरान 8,33,029 दर्शक, 2,43,139 बच्चे और 9,957 विदेशी दर्शक आए।

### कार्यक्रम

**ग्रीष्मकालीन कला शिविर:** शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधि के रूप में, संग्रहालय ने बच्चों के लिए 10 से 22 मई, 2010 तक **ग्रीष्मकालीन कला शिविर** का आयोजन किया। प्रतिभागियों के वयस्क और किशोर दो समूह बनाए गए। बच्चों को लैंडस्कैप कला, योग, चित्रकला, कपड़े पर चित्रकला, रेखा चित्र आदि कलाओं का प्रशिक्षण दिया गया। 22 मई, 2010 को समापन समारोह में श्री बी. वी. पट्टाभिराम मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

**बाल सप्ताह:** बाल सप्ताह समारोह के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय में 14 से 20 नवंबर, 2010 तक **चाचा नेहरू** की विशेष चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री जी.एस. सीताराम राजु, माननीय सदस्य, सालारजंग संग्रहालय बोर्ड द्वारा किया गया।

**नवाब मीर यूसुफ अली खान, सालारजंग—।।। की पुण्य तिथि:** संग्रहालय में 15 मई, 2010 को सालारजंग संग्रहालय के संस्थापक नवाब मीर यूसुफ अली खान, सालारजंग—।।। की पुण्य तिथि मनाई गई। संग्रहालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने दायरा में एकत्रित होकर श्रद्धांजलि दी।

**नवाब मीर यूसुफ अली खान बहादुर—सालारजंग—।।। की 121 वीं जयंती:** का आयोजन संग्रहालय में 14 से 21 जून, 2010 तक किया गया। जयंती समारोह का उद्घाटन श्री नादेन्दला मनोहर, उपाध्यक्ष, आंध्र प्रदेश विधान सभा ने किया। इस अवसर पर श्री एम.एम. अंसारी, मुख्य सूचना आयुक्त, भारत सरकार भी उद्घाटन समारोह के अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

वर्ष के दौरान तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए **उत्कृष्ट कार्यकर्ता** पुरस्कार प्रदान किए गए। उद्घाटन समारोह के दौरान संग्रहालय के कर्मचारियों के बच्चों, जिन्होंने अपने शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति में बेहतर प्रदर्शन किया, को शैक्षणिक पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

सप्ताह के दौरान, संग्रहालय में विशेष प्रदर्शनियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम और स्मारक—व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए संग्रहालय को आधे दिन के लिए खोला गया। संग्रहालय और सुरक्षा (सीआईएसएफ) कर्मचारियों के लिए खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

दिनांक 21 जून, 2010 को समापन समारोह भाषण श्री वी. रवींद्रन, भारतीय लेखपरीक्षा और लेखा सेवा, प्रधान महालेखाकार (एएंडई) द्वारा किया गया।

### प्रदर्शनियां

उक्त अवधि के दौरान संग्रहालय में विभिन्न अवसरों पर 18 प्रदर्शनियां लगाई गईं।

- डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के जन्मोत्सव पर 13 अप्रैल, 2010 को “डॉ बाबासाहेब अंबेडकर जी वस्तुओं” की एक विशेष चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। श्री वी.एलीशा, निदेशक, अनुसूचित जाति राष्ट्रीय आयुक्त, भारत सरकार (राज्य कार्यालय, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़) ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
- विश्व विरासत दिवस के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय में 17 अप्रैल, 2010 को सालारजंग संग्रहालय में संग्रहित वस्तुओं में से “हैदराबाद की विरासत—रात्रि में” प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री वेद कुमार, अध्यक्ष, बेहतर हैदराबाद फोरम द्वारा किया गया।
- हज़रत बीबी फातिमा के जन्म की पूर्वसंध्या पर सालारजंग संग्रहालय द्वारा ईरान कल्चरल हाऊस, नई दिल्ली के सहयोग से 3 जून, 2010 को ‘विलादत शहजादी ए कौनैन’ विशेष प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन महामहिम अकई रहबर, अध्यक्ष, विधि आयोग, ईरान द्वारा किया गया।
- सालारजंग संग्रहालय ने डीएवीपी के सहयोग से 14 अगस्त, 2010 को ‘भारत की स्वतंत्रता’ विषय पर विशेष चित्र प्रदर्शनी लगाई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. वी. वी. कृष्ण शास्त्री, पूर्व सदस्य, सालारजंग संग्रहालय बोर्ड द्वारा किया गया।

➤ ‘गांधी जयंती’ के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय ने डीएवीपी, भारत सरकार के सहयोग से 2 अक्टूबर, 2010 को ‘महात्मा गांधी और अहिंसा’ विषय पर चित्र प्रदर्शनी लगाई। इस अवसर पर एसबीके संगीत व नाटक सरकारी महाविद्यालय, संस्कृति विभाग, आंध्र प्रदेश सरकार के सहयोग से विशेष भजन प्रस्तुत किए गए। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में श्री पी.के. अब्दुल अजीज, उप कुलपति, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय उपस्थित थे।

➤ ‘विश्व विरासत सप्ताह समारोह’ के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय में सृष्टि फाउंडेशन के सहयोग से 20 नवंबर, 2010 को ‘विरूपाक्षा मंदिर प्रांगण, हंपी’ विषय पर विशेष चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

➤ सालारजंग संग्रहालय के स्थापना दिवस के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय द्वारा 16 दिसंबर, 2010 को ‘दीवान ड्यौढ़ी में सालारजंग संग्रहालय’ विषय पर विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री नवाब एहताराम अली खान, सदस्य, सालारजंग संग्रहालय बोर्ड ने किया और इस अवसर पर श्री सैयद जाकिर हुसैन, सदस्य, सालारजंग संग्रहालय बोर्ड सम्माननीय अतिथि के रूप में पधारे।

➤ क्रिसमस के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय में 22 दिसंबर, 2010 को शुभ क्रिसमस ‘ए रोड़ टू होली लैंड’ विषय पर विशेष प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राइट रेवरेण्ड टी. एस. कनक प्रसाद, बिशप, मेडक डायोसिस द्वारा किया गया।

➤ मोहर्रम के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय में 28 दिसंबर, 2010 को ‘करबला के शहीदों का मकबरा’ विषय पर विशेष प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री नवाब एहताराम अली खान, माननीय सदस्य, सालारजंग बोर्ड द्वारा किया गया।

### संगोष्ठियां / कार्याशालाएं

उक्त अवधि के दौरान, 19 मई, 2010 को अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय

दिवस के अवसर पर 'सामाजिक सद्भावना के लिए संग्रहालय' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

23 सितंबर, 2010 को विशेष प्रदर्शनी और "चेरियल चित्रकला" विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। छह चेरियल कलाकरों ने 85 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया। संग्रहालय ने अपने शैक्षणिक कार्यक्रम के अंतर्गत चेरियल चित्रकला को लोकप्रिय बनाने के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया था।

### व्याख्यान

संग्रहालय द्वारा अपने कार्यकलापों के अंतर्गत माह के प्रत्येक दूसरे शनिवार को हैदराबाद की ऐतिहासिक सोसाइटी के सहयोग से 9 अक्टूबर, 2010 को 'बंदा बैरागी और भारतीय राजनीति में आम आदमी का उद्भव' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री डॉ. केशवराव जाधव, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, उस्मानिया विश्वविद्यालय ने विशेष व्याख्यान दिया।

### रासायनिक संरक्षण शाखा

वस्तुओं के संरक्षण और उन्हें ठीक करने की जिम्मेवारी रसायन संरक्षण शाखा तथा इसके तकनीकी कर्मचारियों की है। उक्त अवधि के दौरान रसायन संरक्षण प्रयोगशाला ने 5688 कला वस्तुओं और गैर कला वस्तुओं (5348 कला वस्तुएं और 340 गैर कला वस्तुएं) का रासायनिक उपचार किया।

### विकासात्मक कार्य

संग्रहालय के पश्चिम और पूर्वी ब्लॉकों में अतिरिक्त तलों का निर्माण कार्य चल रहा है। उक्त अवधि के दौरान, 'जेडे कक्ष' और 'बच्चों का कोना' का निर्माण कार्य पूरा किया गया। 'बच्चों का कोना' में कला वस्तुओं की प्रदर्शनी का कार्य चल रहा है। वॉकिंग स्टिक और सिक्का दीर्घाओं का काम चल रहा है। केंद्रीय, पश्चिमी और पूर्वी ब्लॉकों में सीसीटीवी सुरक्षा प्रणाली का काम पूरा कर लिया गया है। केंद्रीय, पश्चिमी और पूर्वी ब्लॉकों में स्वचालित अग्नि सूचक प्रणाली स्थापित की गई है।



## इलाहाबाद संग्रहालय

2.2.6

इलाहाबाद संग्रहालय की स्थापना 1931 में इलाहाबाद नगरपालिका परिषद् के तत्वावधान में की गई थी और इसका औपचारिक उद्घाटन 1947 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया था। 1953-54 में संग्रहालय को कमला नेहरू मार्ग पर स्थित चन्द्रशेखर आजाद पार्क के भीतर अंतर्गत इसके नए भवन में स्थानांतरित कर दिया गया। भारत सरकार, संस्कृति विभाग द्वारा इसे सितम्बर 1985 में राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया। इलाहाबाद संग्रहालय अब भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूर्ण वित्तपोषित संस्था है।

विगत कई वर्षों में इस संग्रहालय ने देश के विभिन्न भागों से विविध प्रकार के प्रदर्श अधिगृहित किए हैं। इलाहाबाद संग्रहालय में विभिन्न स्थानों से अन्वेषित शुंग, गुप्त, उत्तर गुप्त और पूर्व मध्यकालीन युग की प्रमुख शिल्पाकृतियों का प्रभावशाली संग्रह है। इलाहाबाद संग्रहालय में 16 वीथियाँ हैं जिनमें प्रस्तर शिल्पाकृतियों का वृहद् संग्रह है। इन शिल्पाकृतियों में द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व की भरहुत एवं कौशाम्बी से प्राप्त कलाकृतियाँ, प्रथम शताब्दी की मथुरा से प्राप्त कुषाणकालीन कलाकृतियाँ, चौथी से छठी शताब्दी की गुप्तकालीन कृतियाँ और 11वीं शताब्दी के खजुराहो से प्राप्त उत्कीर्णन सम्मिलित हैं। ये अवधियाँ मौटे तौर पर भारतीय इतिहास के मौर्य, शुंग, कुषाण एवं मध्यकाल की हैं।

प्रदर्शित सुंदर वस्तुओं में प्रागैतिहासिक एवं सिंधुघाटी की कलाकृतियाँ, वस्त्र, मृण्मूर्ति, प्रस्तरमूर्तियाँ, अस्त्र-शस्त्र, कांस्य, मुहरें, लघुचित्र, बौद्ध थंका, मध्यकालीन भू-राजस्व एवं अन्य सम्मिलित हैं। इस संग्रहालय में स्वतंत्रता आंदोलन तथा नेहरू जी की व्यक्तिगत सामग्री और अभिलेख भी प्रदर्शित हैं। विशिष्ट स्तुओं में अलंकरणयुक्त एकमुख शिवलिंग जो गुप्तकला की उत्कृष्टता प्रकट करता है। भारत-यवन शैली में निर्मित यवन देवता अपोलो की प्रतिमा की तरह काले पत्थर पर बोधिसत्व की प्रतिमा एवं आभूषणों से अलंकृत जमसोत की नृत्य करती यक्षिणियाँ।

नृत्य एवं प्रणयरत दृश्यों में लोक जीवन शैली, सुरादेवोत्सव पर्व और आखेट के दृश्य हैं। यहाँ मिट्टी की गाड़ी, पशु और पक्षियों जैसे बहुत से खिलौने हैं। अहिच्छत्र से प्राप्त महाभारत की प्रलम्ब-वध की कथा को उत्कीर्ण करने वाली आकर्षक कलाकृति उल्लेखनीय है। इस संग्रहालय में कौशाम्बी की मृण्मूर्तियाँ, राजस्थानी लघुचित्रकला, सिक्के, निकोलस रोरिक के चित्र एवं नेहरू परिवार द्वारा प्रदत्त कलाकृतियाँ भी प्रदर्शित हैं। इस प्रभावशाली संग्रह में सुरादेवोत्सव



पर्व और आखेट के दृश्य नृत्य और प्रणयरत दृश्यों को प्रदर्शित किया गया है। मृन्मूर्ति संग्रह भारत के बड़े संग्रहों में से एक है।

इलाहाबाद संग्रहालय में सिक्कों का भी अच्छा संग्रह है, जिसमें कुषाण और गुप्त स्वर्ण मुद्राएं विशिष्ट हैं, जबकि पाण्डुलिपियों में, विशेष रूप 16वीं शताब्दी एवं उसके बाद की संस्कृत पाण्डुलिपियाँ भी प्रमुख हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन के नायक चन्द्रशेखर आज़ाद द्वारा ब्रिटिश शासन से संघर्ष में प्रयुक्त पिस्तौल एवं जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा की मूल पाण्डुलिपि भी संग्रहालय में प्रदर्शित है। 1948 में गांधी जी की भस्म ले जाने वाली गाड़ी संग्रहालय द्वारा संरक्षित कर प्रदर्शित की गई है। गांधी वीथि की सभी शीर्षक पट्टियों को बड़ा करके एक्रिलिक कवर में रखकर लगाया गया।

तीन वीथियों अर्थात् लघुचित्रकला, आधुनिक चित्रकला और नेहरू वीथि के आधुनिकीकरण का कार्य चल रहा है। वीथियों के आधुनिकीकरण के संबंध में 05 मई, 2010 को एक बैठक हुई थी। उपरोक्त वीथियों के आधुनिकीकरण के संबंध में कार्रवाई की जा रही है। अस्त्र-शस्त्र वीथी, प्राकृतिक इतिहास वीथी तथा पुरातत्व वीथी की वीथी-पट्टिकाओं, शीर्षक पट्टिकाओं और शो-केश पट्टिकाओं को बदला जा रहा है तथा उन्हें नया रूप दिया जा रहा है।

इलाहाबाद संग्रहालय समिति की कला-क्रय समिति की 14 अक्टूबर, 2010 को बैठक हुई थी। डीलरों के साथ हुई बातचीत के बाद समिति द्वारा सर्वसम्मति से 8.24 लाख रुपए की कलाकृतियों और पुरावस्तुओं का क्रय करने की सिफारिश की गई थी। माननीय अध्यक्ष, इलाहाबाद संग्रहालय समिति की स्वीकृति प्राप्त करने के पश्चात इन कला वस्तुओं को संग्रह में शामिल किया जाएगा।

## पुस्तकालय

पुस्तकालय में संस्कृत, अरबी, फारसी और हिंदी की बहुत सी अप्रकाशित एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। इस अवधि के दौरान विभिन्न विषयों की 48 पुस्तकों का अधिग्रहण किया गया और उन्हें अवाप्ति क्रमांक दिया गया, 700 पुस्तकों का वर्गीकरण और 700 पुस्तकों का सूचीकरण किया गया। 15 पत्र-पत्रिकाओं के अंको/प्रतियों के लिए शुल्क भेजा गया, संग्रहालय में 6 दैनिक समाचार-पत्र नियमित रूप से प्राप्त हुए, 5339 पाठक पुस्तकालय में आए तथा विद्वानों द्वारा बहुत सी पुस्तकों का अध्ययन किया गया। पुस्तकालय क्रय समिति की 21 अक्टूबर, 2009 को बैठक

हुई। समिति द्वारा इलाहाबाद संग्रहालय के पुस्तकालय के लिए 9,85,389/-रुपए की पुस्तकों का क्रय करने की सिफारिश की गई। पुस्तकों का अधिग्रहण माननीय अध्यक्ष, इलाहाबाद संग्रहालय समिति के अनुमोदन के पश्चात किया जाएगा।

## फोटोग्राफिक प्रयोगशाला

समीक्षाधीन अवधि के दौरान इस अनुभाग द्वारा ने सेमिनार, व्याख्यान, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, बाल-सप्ताह आदि जैसे संग्रहालय के सभी कार्यक्रमों की कवरेज करने के अलावा कला क्रय समिति की बैठक के जरिए क्रय की गई पुरावस्तुओं और कला वस्तुओं का प्रलेखन किया। सेमिनारों, व्याख्यानों आदि की ऑडियो रिकार्डिंग भी की गई।

## रासायनिक संरक्षण प्रयोगशाला

धूम्रीकरण के सामान्य कार्य के अलावा संग्रहाध्यक्ष के कहने पर दीमक प्रवण क्षेत्र और कीट प्रवण क्षेत्र में दीमक रोधी उपचार और कीट रोधी उपचार किया गया। इस अवधि के दौरान 522 वस्तुओं का संरक्षण कार्य किया गया, जिसमें 70 पाषाण मूर्तियाँ, 10 पेंटिंग, 300 पाण्डुलिपियाँ (2500 पृष्ठों की), 110 कांस्य एवं अन्य धातु की वस्तुएं, 25 अभिलेखीय दस्तावेज सम्मिलित हैं।

## प्रकाशन

संग्रहालय ने इस अवधि में प्रदर्शनी/संगोष्ठी एवं व्याख्यानों से संबंधित विभिन्न फोल्डरों का और लिफाफों सहित नव वर्ष के कार्डों का भी प्रकाशन किया। 'सिटी-वीथिका' पत्रिका का खंड-XI प्रकाशनाधीन है। इलाहाबाद संग्रहालय की वर्ष 2008-09 की वार्षिक रिपोर्ट और वार्षिक लेखों का भी प्रकाशन किया गया।

## कार्यकलाप

- इलाहाबाद संग्रहालय ने 12 दिसम्बर, 2010 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार अज्ञेय, नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल की जन्मशती के अवसर पर त्रिमूर्ति सम्मान संगोष्ठी का आयोजन किया।
- सत्य प्रकाश स्मृति साहित्य संस्थान के सहयोग से सत्य प्रकाश स्मृति व्याख्यान के अंतर्गत प्रो. मैनेजर पाण्डेय ने जोश मलीहाबादी पर 16 जनवरी, 2010 को व्याख्यान दिया।

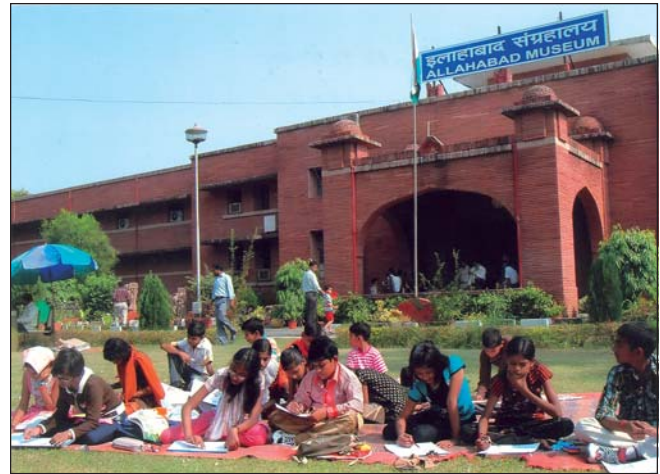
- अकबर इलाहाबादी व्याख्यानमाला के अंतर्गत प्रो. अली अहमद फातमी ने 25 जुलाई, 2010 को विशेष व्याख्यान दिया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अकील रिज़वी, पूर्व विभागाध्यक्ष, उर्दू, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने की।
- प्रो. राजन हर्षे, कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने 8 सितम्बर 2010 को वार्षिक पं. बृजमोहन व्यास स्मृति व्याख्यान दिया प्रो. हर्षे ने इण्डियाज़ फारेन पॉलिसी इन द कान्टेक्स्ट ऑफ ग्लोबलाइज़ेशन: इन आस्पेक्ट ऑफ कल्चर विषय पर व्याख्यान दिया। इस समारोह की अध्यक्षता माननीय न्यायमूर्ति, श्री एन.एल. गांगुली ने की और श्री सुनीत व्यास इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे।
- श्री भवानी शंकर शुक्ल, अध्यक्ष, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन ने 6 अक्टूबर, 2010 को वृन्दावन के कतिपय मन्दिरों के वर्षोत्सव विषय पर विशेष व्याख्यान दिया।
- संग्रहालय में 13 मार्च से 22 अप्रैल, 2010 तक पुस्तकालय प्रबन्धन एवं आभिलेखीय सामग्री का संरक्षण विषय पर एक अल्प अवधि पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर डॉ. एस. के. शर्मा, प्रभारी निदेशक, इलाहाबाद संग्रहालय ने 18 मई, 2010 को सांस्कृतिक विरासत की महत्ता पर आधारित कार्यशाला का उद्घाटन किया।
- संग्रहालय में 13 से 23 नवम्बर, 2010 तक बालोत्सव का आयोजन किया जिसके अन्तर्गत वैदिक मंत्र पाठ प्रतियोगिता,



बच्चों द्वारा क्ले मॉडलिंग

चित्रकला प्रतियोगिता, सृजनात्मक लेखन/पत्रलेखन प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, कोलाज प्रतियोगिता, मृण्मूर्तिकला प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता लोक-नृत्य प्रतियोगिता और शास्त्रीय-नृत्य प्रतियोगिता जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न आयुवर्ग के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

- बालोत्सव के अंतर्गत आयोजित किए गए कार्यक्रमों के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 28 नवम्बर, 2010 को किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. पी.वी. जगनमोहन, आयुक्त, इलाहाबाद मंडल ने की और इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आनन्द वर्द्धन शुक्ल, निदेशक, उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद थे। मुख्य अतिथि ने विजेता छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार भी वितरित किए।
- श्रीमती इंदिरा गांधी का जन्मदिन बाल-सप्ताह के भाग के रूप में 19 नवम्बर, 2010 को मनाया गया।



चित्रकला प्रतियोगिता

- श्री जयशंकर प्रसाद की कामायनी पर आधारित डॉ. उत्तमा दीक्षित, वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के चित्रों, जिनमें प्राकृतिक रंगों के सम्मिश्रण का प्रयोग किया गया था, की एकल प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 11 मार्च, 2010 को किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री चन्द्र प्रकाश, पुलिस महानिरीक्षक, इलाहाबाद परिक्षेत्र द्वारा किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, लखनऊ मंडल के सहयोग से 18 मई, 2010 को भारतीय

विरासत पर आधारित एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- डॉ. शार्दूल मिश्र, आगरा विश्वविद्यालय के चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन 8 सितम्बर 2010 को प्रो. राजन हर्षे कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा किया गया, जो 17 नवम्बर, 2010 तक चली।
- 'विश्व विरासत सप्ताह' (18–25 नवम्बर, 2010) के अवसर पर क्षेत्रीय अभिलेखागार, इलाहाबाद के सहयोग से दुर्लभ दस्तावेजों पर आधारित एक प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री सुभाष पाण्डेय, माननीय संस्कृति मंत्री, उ.प्र. सरकार द्वारा 18 नवम्बर 2010 को किया गया।

## प्रतिकृति अनुभाग

वर्ष के दौरान अनुभाग ने मूर्तियों की 200 प्रतिकृतियाँ प्लास्टर ऑफ पेरिस में तैयार कीं, 200 प्रतिकृतियों को अंतिम रूप दिया गया, 200 प्रतिकृतियों की रंगायी तथा डस्टिंग करने के उपरांत बिक्री-पटल को जवाहर नवोदय विद्यालय और जनसामान्य की मांग पर आपूर्ति करने के लिए दी गई। 10 मिट्टी/फाइबर के सांचे तैयार किए गए।

## अन्य कार्यक्रम

### राजभाषा

संग्रहालय में 14–28 सितम्बर 2010 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें भाषा संगम, इलाहाबाद के सहयोग से दिनांक 19 सितम्बर 2010 को रामायण पर आधारित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर

पर रामचरितमानस के बालकाण्ड का तमिल अनुवाद तथा तमिल ग्रंथ उदयननकदै के हिंदी अनुवाद का लोकार्पण किया गया। डॉ. मुस्ताक अली, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने 22 सितम्बर, 2010 को व्यावहारिक हिंदी की उपयोगिता विषय पर विशेष व्याख्यान दिया।

- 26 सितम्बर, 2010 को एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद के अनेक कवियों ने भाग लिया।
- 7 मार्च, 2010 को इलाहाबाद संग्रहालय का 80वां स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें इलाहाबाद के वरिष्ठ नागरिकों, विद्वानों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री गिरिधर मालवीय ने की तथा न्यायमूर्ति श्री अरुण टण्डन, इलाहाबाद उच्च न्यायलय इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर संग्रहालय भवन को विद्युत-प्रकाश की व्यवस्था की गई।
- संग्रहालय में 25 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2010 के मध्य सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति, श्री पलोक बसु ने व्याख्यान दिया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अमर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने की।

## दर्शक

समीक्षाधीन अवधि के दौरान कुल 72,769 व्यक्ति संग्रहालय देखने आए। इसमें वे दर्शक सम्मिलित नहीं हैं जो बाल-दिवस और संग्रहालय के अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने संग्रहालय में आए थे।



## राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्

2.2.7

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संगठन के रूप में कार्यरत राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् (एनसीएसएम) भारत के विज्ञान संग्रहालयों और विज्ञान केंद्रों का एक सर्वोच्च निकाय है। भारत में सर्वप्रथम विकसित विज्ञान संग्रहालय बिड़ला औद्योगिक तथा प्रौद्योगिक संग्रहालय (बीआईटीएम), कोलकाता की स्थापना 02 मई, 1959 को हुई थी। इस संग्रहालय के जनसाधारण पर पड़ने वाले प्रभाव के फलस्वरूप दो संग्रहालयों विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं प्रौद्योगिक संग्रहालय (वीआईटीएम), बेंगलूर और नेहरू विज्ञान केंद्र (एनएससी), मुंबई की स्थापना की गई। एनसीएसएम की स्थापना 04 अप्रैल, 1978 को की गई थी और सीएसआईआर के अंतर्गत कार्यरत मौजूदा विज्ञान संग्रहालय और केंद्र, एनसीएसएम के अधीन आ गए।

एनसीएसएम अब समस्त भारत के महानगरों के शहरों, राज्यों की राजधानियों तथा जिला मुख्यालयों में फैले 25 विज्ञान संग्रहालयों और केंद्रों के प्रशासन का कार्य देखता है। ये विज्ञान केंद्र खोज की मनोवृत्ति पर मनस्थिर करने, सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने तथा समाज में वैज्ञानिक मनोदशा पैदा करने के लिए अनुभव पर आधारित शिक्षा का वातावरण प्रदान करते हैं। संचार—प्रदर्शो तथा क्रियाशीलता जैसी इसकी द्विशाखी सरणी से इसका पता चलता है। जबकि भीतरी और बाहरी दोनों प्रकार के प्रदर्श प्रधानतः परस्पर क्रियात्मक हैं, प्रदर्शन और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी पूर्णतः सहभागी हैं और वे बच्चों और वयस्कों को एक साथ आमोद—प्रमोद और आनन्द लेते हुए विज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराने में मदद करते हैं। एनसीएसएम सारे देश में, खासकर, मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनी भी चलाती है तथा भारत और विदेशों में भी चल प्रदर्शनियों का आयोजन करती है।

### उद्देश्य

एनसीएसएम के प्रमुख उद्देश्य हैं :

- प्रदर्शनियों, सेमिनारों, लोकप्रिय भाषणों, विज्ञान शिविरों तथा अन्य विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा उस क्षेत्र के छात्रों और जनसाधारण के लाभ के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय और सर्वसुलभ बनाना।
- जनसाधारण में वैज्ञानिक मनोवृत्ति और मनोदशा का विकास करने और व्यापक जागरूकता पैदा करने, उसमें दत्तचित्त होने तथा उसको बनाए रखने के विचार से विज्ञान और प्रौद्योगिकी की अभिवृद्धि और उद्योग तथा जन-कल्याण में उसके उपयोग की स्पष्ट छवि प्रस्तुत करना।



- स्कूलों और कॉलेजों में दी जाने वाली विज्ञान शिक्षा की कमी को पूरा करने और छात्रों में वैज्ञानिक जिज्ञासा की प्रवृत्ति और क्रियात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूल के बाहर के विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- विज्ञान शिक्षा तथा विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञान संग्रहालय के प्रदर्शो, प्रदर्शन उपकरण और वैज्ञानिक शिक्षण सहायता की परिकल्पना, विकास और संरचना करना।
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग के विशिष्ट विषयों पर विज्ञान शिक्षकों/छात्रों/युवा ठेकेदारों/तकनीशियनों/विकलांगों/गृहिणियों तथा दूसरे लोगों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

### नए केंद्र और परियोजनाएं

एनसीएसएम के विज्ञान केंद्रों के विस्तृत फैलाव पर विचार करते हुए नब्बे के दशक के प्रारंभ से ही परिषद् जहाँ विज्ञान केंद्र नहीं थे उन क्षेत्रों में अपनी सुविज्ञता का व्यवहार करके टर्नकी आधार पर विज्ञान केंद्रों की स्थापना करती आ रही है और इन केंद्रों के उद्घाटन के बाद संबद्ध राज्य या संघशासित क्षेत्रों को हस्तांतरित करती रही है। इस प्रवृत्ति को बनाए रखते हुए परिषद् ने इस वर्ष राँची विज्ञान केंद्र झारखंड सरकार को हस्तांतरित किया।

(क) राँची विज्ञान केंद्र का उद्घाटन झारखंड के माननीय मुख्य मंत्री श्री अर्जुन मुण्डा द्वारा 29 नवम्बर, 2010 को किया गया। इस केंद्र की कल्पना, योजना तथा विकास परिषद् द्वारा किया गया था।

(ख) निम्नांकित नए विज्ञान केंद्रों की परियोजनाओं का काम शुरू किया गया है। ये पूरा होने की विभिन्न स्थितियों में हैं।

1. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, रायपुर (छत्तीसगढ़)
2. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, धारवाड़ (कर्नाटक)
3. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, कोयम्बतूर (तमिलनाडु)

4. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, पिलिकुला (कर्नाटक)
5. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, पि.सि.एम.सि, पुणे (महाराष्ट्र)
6. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, जयपुर (राजस्थान)
7. क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, देहरादून (उत्तराखण्ड)
8. उप क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, जोरहाट (असम)
9. उप क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, जोधपुर (राजस्थान)
10. उप क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, पुदुचेरी

(ग) एनसीएसएम द्वारा नए डिजिटल तारामंडलों का मितव्ययता के साथ विकास किया गया। अभी तक निम्नांकित तीन 8 मीटर गुम्बद वाले डिजिटल तारामंडल जनता के लिए खोले जा चुके हैं।

- तारामंडल, उत्तर बंगाल विज्ञान केंद्र (एनबीएससी), सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल) में 03 अप्रैल, 2010 को।
- तारामंडल, जिला विज्ञान केंद्र (डीएससी), तिरुनेलवेली (तमिलनाडु) में 22 अक्टूबर, 2010 को।
- तारामंडल, जिला विज्ञान केंद्र (डीएससी), गुलबर्गा (कर्नाटक) में 26 अक्टूबर, 2010 को।

तारामंडल, जिला विज्ञान केंद्र (डीएससी) धरमपुर (गुजरात) में उद्घाटन के लिए तैयार है। गोवा विज्ञान केंद्र (जीएससी), पणजी में एक और 8 मीटर गुम्बद डिजिटल तारामंडल लगाने का निर्माण कार्य चल रहा है। राजीव गाँधी विज्ञान केंद्र (आरजीएससी), मॉरीशस में एक 12 मीटर व्यास गुम्बद डिजिटल तारामंडल लगाने के काम में परिषद् ने पहल की है।

### नई दीर्घाएं और सुविधाएं

एनसीएसएम ने अप्रैल से दिसंबर, 2010 की अवधि में अपनी

विभिन्न इकाइयों में निम्नलिखित नई दीर्घाएं और सुविधाएं प्रारम्भ की।

- एनबीएससी, सिलिगुड़ी में 03 अप्रैल, 2010 को 'लोकप्रिय विज्ञान'।
- एनएससी, मुम्बई में 05 अप्रैल, 2010 को 'मानव और मशीन'।
- वीआईटीएम, बेंगलूर में 08 अप्रैल, 2010 को 'इलेक्ट्रोटेक्निक'।
- क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र (आरएससी), भोपाल में 20 अप्रैल, 2010 को 'मनोरंजक विज्ञान'।
- बीआईटीएम, कोलकाता में 08 मई, 2010 को 'गणित'।
- श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र (एसएससी), पटना में 19 जुलाई, 2010 को ज्युरासिक पार्क, वैज्ञानिक भित्ति चित्र, भारतीय वैज्ञानिकों की आवक्ष प्रतिमाएं 'डार्विन नाउ' प्रदर्शनी के साथ त्रिआयामी फिल्म प्रदर्शन जैसी सुविधाएं।
- क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र (आरएससी), गुवाहाटी में 07 सितम्बर, 2010 को 'बायोमशीन'।
- दीर्घा विज्ञान केंद्र में 25 सितम्बर, 2010 को 'परावर्तन' और 'मनोरंजक विज्ञान'।
- जिला विज्ञान केंद्र (डीएससी), धेनकनाल में 24 दिसम्बर, 2010 को 'लोकप्रिय विज्ञान'।
- क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र (आरएससी), भुवनेश्वर में 24 दिसंबर, 2010 को 'विज्ञान पार्क'।
- साइंस सिटी, कोलकाता और बीआईटीएम, कोलकाता में ही नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ सुब्रह्मण्यन चन्द्रशेखर का व्यक्तित्व और कृतित्व तथा आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय का व्यक्तित्व और कृतित्व पर दो नई घुमंतू प्रदर्शनियाँ शीघ्र ही शुरू की जाएंगी। वाटर-कन्सर्न फॉर आल नामक एक अन्य नई प्रदर्शनी का कार्य चल रहा है।
- 'अपने ग्रह को मापना', 'हमारे अंगरक्षक', 'नदियाँ', 'ध्रुवों की कहानी', 'स्वर्ग का संदेश', 'भौतिकी की शताब्दी', 'नैनोप्रौद्योगिकी' आदि जैसी अन्य प्रदर्शनियाँ एनसीएसएम की विभिन्न इकाइयों में घूमती रही।
- हवेली, कर्णाटक में 23 जून, 2010 को भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनी कार्यक्रम के ग्रामीण छात्र दर्शकों के लिए वीआईटीएम, बेंगलूर द्वारा वी-सैट सुविधा से युक्त एक संग्रहालय बस की 23 जून, 2010 को शुरुआत की गई।

### अंतर्राष्ट्रीय सहयोगात्मक कार्यक्रम

एनसीएसएम संग्रहालय पेशेवरों के आदान-प्रदान, अध्ययन दौरा, प्रशिक्षण, संयुक्त परियोजनाओं पर काम करने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालयों/केंद्रों की स्थापना आदि के लिए विदेशी वैज्ञानिक एजेंसियों/संग्रहालयों/केंद्रों तथा इसी तरह की संस्थाओं के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग लेती रही। इस अवधि में एनसीएसएम ने निम्नलिखित सहयोगात्मक कार्यक्रमों में भाग लिया :

- 21-25 अप्रैल, 2010 के दौरान टम्पा, फ्लोरीडा में 6ठे विज्ञान केंद्र विश्व काँग्रेस की अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम समिति (आईपीसी) की बैठक तथा वाशिंगटन डी.सी स्मिथसोनियन संस्था भवन में विशेषज्ञों से मुलाकात।
- 02-06 जून 2010 तक डोर्टमंड जर्मनी के डोयशस, संग्रहालय, डीएसएम में 'यूरोपीय सहयोगात्मक विज्ञान, उद्योग तथा प्रौद्योगिकी' पर प्रदर्शनी।
- 01 से 15 अगस्त, 2010 तक सियोल, दक्षिण कोरिया में 5वाँ अंतर्राष्ट्रीय युवा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी शिविर।

### नई घुमंतू प्रदर्शनियाँ

- राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र (एनएससी), दिल्ली में 30 सितंबर 2010 को 'भारत में आजकल विज्ञान और प्रौद्योगिकी की व्यवस्था' तथा दिल्ली में क्रीड़ात्मक गतिविधि-अभिलेखागार से विषय पर दो नई प्रदर्शनियों का उद्घाटन किया गया।

- मलेशियाई शिष्टमंडल ने एनसीएसएम के विज्ञान केंद्रों के अध्ययन और मलेशिया में एक विज्ञान केंद्र की स्थापना के विचार से 6-8 अगस्त, 2010 तक एनसीएसएम का दौरा किया।
  - हेलसिंकी, फिनलैंड में 05-16 सितंबर, 2010 के दौरान 'साइंस डेमोन्स्ट्रेशन आन वंडर मेटेरियल्स एण्ड डायनोसोर्स' विषय पर भारत-फिनिश कार्यशाला।
  - 02-06 अक्टूबर, 2010 तक होनोलूलू, हवाई, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में विज्ञान और प्रौद्योगिकी केंद्रों की संस्था (एएसटीसी) के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड की बैठक और न्यूयार्क हाल आफ साइंस, अमेरिका का दौरा।
  - 10-15 अक्टूबर, 2010 के दौरान क्वालालम्पुर, मलेशिया में विज्ञान केंद्रों के पेशावरों के लिए प्रौद्योगिकी और नव परिवर्तन के साथ गुट-निरपेक्ष तथा दूसरे विकासशील देशों के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र द्वारा आयोजित विकासशील देशों में अविच्छिन्न और उत्तरदायी वृद्धि की नवपरिवर्तनशील बैठक तथा जानकारी को प्रोत्साहित करने वाले विज्ञान केंद्रों पर एक बैठक।
  - चीन के शंघाई में 7-13 नवम्बर, 2010 तक अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद् की 22वीं बैठक और 25वीं आम बैठक।
  - आई.ओ.डब्ल्यू.ए. स्टेट विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी विभाग, विकास एवं कोशिका जैविकी के प्रोफेसर ईव सिरकिन वरतूले ने जीव-विविधता के अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष 2010 के समारोह के दौरान एनसीएसएम की विभिन्न इकाइयों का दौरा और 'प्लांट्स:टर्निंग एयर टू ऑयल' पर लोकप्रिय व्याख्यान।
- इनके अतिरिक्त एनसीएसएम ने नेपाल के काठमांडू, नेपाल में विज्ञान शिक्षण केंद्र की स्थापना और मॉरीशस में 12 मीटर व्यास गुम्बद डिजिटल तारामंडल के साथ राजीव गाँधी विज्ञान केंद्र के उन्नयन के लिए आवश्यक कार्रवाई भी की।

### उत्प्रेरक सहायता

एनसीएसएम इस वर्ष अपने नियंत्रण से बाहर के निम्नलिखित

विज्ञान केंद्रों को तकनीकी उत्प्रेरक सहायता प्रदान करता रहा :

- एनसीएसएम द्वारा अधुनातन उपस्कर के साथ नेहरू तारामंडल, दिल्ली का पूर्णतः उन्नयन किया गया। यह सुविधा 01 अक्टूबर, 2010 से प्रारम्भ की गई।
- दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के दिल्ली जल बोर्ड के लिए 14 दिसंबर, 2010 को 'जल-जीवन के लिए अमृत' विषय पर एक दीर्घा का उद्घाटन किया गया। इस दीर्घा की संकल्पना, रूपांकन तथा विकास में एनएससी, दिल्ली ने तकनीकी मदद की थी।

निम्नलिखित परियोजनाओं का काम चल रहा है :

- राष्ट्रीय भारतीय सिनेमा संग्रहालय, मुम्बई की स्थापना।
- राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एनएससीआई), इलाहाबाद में 'गंगा' पर दीर्घा हॉल का विकास।
- गुवाहाटी तारामंडल के प्रदर्शों की संरचना।
- वारंगल, आंध्रप्रदेश के विज्ञान केंद्र के प्रदर्शों की संरचना।
- कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल और भारतीय संग्रहालय के लिए बहु-माध्यम पर आधारित अन्योन्यक्रियात्मक सूचना कियोस्क।
- शिलांग विज्ञान केंद्र, सुकान्त अकादमी (त्रिपुरा), मिजोरम विज्ञान केंद्र, अरुणाचल प्रदेश विज्ञान केंद्र, त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद् के लिए त्रिआयामी रंगशाला तथा अन्य सुविधाओं का विकास करके उन केंद्रों को प्रदान करना।

तकनीकी सहायता देने के लिए निम्नलिखित नए प्रस्ताव विचाराधीन हैं :

- राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली, सालरजंग संग्रहालय हैदराबाद, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, दिल्ली और कोलकाता में जूट संग्रहालय का उन्नयन।



## प्रशिक्षण, कार्यशाला और सम्मेलन

गुणवत्तात्मक कार्यक्रमों और कार्यकलापों को करने के उद्देश्य से एनसीएसएम ने इस अवधि में निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन किया :

- केंद्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता में कलिंगपोंग विज्ञान केंद्र के पदाधिकारियों के लिए 05-30 अप्रैल, 2010 तक व्यावसायिक प्रशिक्षण।
- छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुम्बई और राष्ट्रमंडल संग्रहालय संस्था के सहयोग से 01-05 जून, 2010 तक नेहरू विज्ञान केंद्र, मुम्बई में राष्ट्रमंडल सम्मेलन।
- जिला विज्ञान केंद्र, धरमपुर में 7-11 जून, 2010 तक तारामंडल प्रदर्शन का विकास 'डिजीस्टार 3 के साथ' तारामंडल प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- नवनिर्मुक्त संग्रहालयाध्यक्षों के लिए 01-31 जुलाई, 2010 तक केंद्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता में अधिष्ठापन प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- केंद्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता में 23-27 अगस्त, 2010 तक 'तारामंडल के प्रचालन और अनुरक्षण' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- एनसीएसएम ने विज्ञान शिक्षण के होमी भाभा केंद्र, मुम्बई में 26-29 अक्टूबर, 2010 तक हुए गणितीय प्रदर्शों पर हुई कार्यशाला में भाग लिया।
- एनसीएसएम ने ब्रिटिश काउंसिल, कोलकाता द्वारा 12 नवम्बर, 2010 को 'बॉडी लेंग्वेज एट वर्क' पर आयोजित व्यावसायिक विकास कार्यशाला में भाग लिया।
- केंद्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता में 15-20 नवम्बर, 2010 तक आयोजित 'आधुनिक प्रदर्शन तकनीक' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

- सेन्ट जेवियर्स इन्स्टिट्यूशन, भुवनेश्वर में सितंबर 6 से 11, 2010 तक डी.एस.टी द्वारा प्रायोजित 'वैज्ञानिकों के लिए प्रस्तुतिकरण तथा संसूचन कुशलता' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, हैदराबाद में नवम्बर 22 से दिसंबर 3, 2010 तक डी.एस.टी द्वारा प्रायोजित 'रचनात्मकता एवं नवीनता प्रबंधन' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, हैदराबाद में दिसंबर 6 से 8, 2010 तक डी.एस.टी द्वारा प्रायोजित 'ई-प्रोक्वोरमेंट' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- डी.एस.टी. द्वारा प्रायोजित 'ग्रामीण समाज के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' पर एलबीएसएनएए, मसूरी में दिसंबर 6 से 17, 2010 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- सिक्किम विज्ञान केंद्र, गंगटोक में दिसम्बर 17 से 19 2010 तक भारतीय विज्ञान संग्रहालय एवं केंद्र के अधीक्षकों का सम्मेलन 'विज्ञान केंद्र; उचित रहना' पर आयोजित की गई।

## अनुसंधान और विकास

इस अवधि में एनसीएसएम अपने कार्यकलापों से संबंधित क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान करने के लिए तथा आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी धारणा को देखते हुए निम्नलिखित अनुसंधान एवं विकास कार्य में संलग्न रही।

- 'पतनोन्मुख परस्पर क्रियात्मक गोलियां' शीर्षक पर एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का प्रतिबिम्ब प्रणाली तकनीक के आधार पर विकास किया गया जिसमें भौतिकी के सिद्धांतों का अनुपालन करती हुई कृत्रिम गोलियों के साथ दर्शकों की परस्पर क्रियात्मकता देखी जा सकती है।
- त्रिआयामी मॉडल बनाने और अनुप्राणन के कल-पुर्जों का व्यवहार करके सौर परिवार पर एक त्रिआयामी शैक्षणिक फिल्म।
- 360° तक घूमने वाला बेलनाकार पैनोरमिक वीडियो प्रक्षेपण तंत्र।

- अनुप्राणन यंत्र और नमनीय नकाब के व्यवहार से चेहरे की विद्युत यांत्रिक अभिव्यक्ति।
- बालू कला प्रदर्श की प्रोन्नति जो सूक्ष्मनियंत्रक अंतरापृष्ठ के व्यवहार से और अधिक पैटर्न तैयार करने में सक्षम हो।
- विज्ञान प्रदर्शन प्रयोगशाला के लिए 25 किट्स का विकास हो चुका है।
- 'द्विगुण गुरुत्व' कूप नामक एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया गया।
- नैनोप्रौद्योगिकी पर हैंड्स-ऑन-एक्टिविटीज के जरिए वैज्ञानिकों और स्कूली छात्रों के बीच संबंध पैदा करके उसे मजबूत बनाने के उद्देश्य से विज्ञान नगर कोलकाता में एक नैनो-प्रयोगशाला का विकास।
- डी.एन.ए. के ढाँचागत विन्यास, सिलवटी तार आदि की तरह संरचना विकास की प्रतिरूप अथवा स्वयं आयोजन संरचना को दिखाने के लिए एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श।
- संबंधित जानकारी का पता लगाने और चाहने पर उसे दर्शकों को देने के लिए विशेष प्रकाशीय संवेदक का व्यवहार करके 'प्राचीन गणितज्ञ', नामक एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया गया।
- दशमलव पद्धति में 10 अंकों और द्विअंकी पद्धति में 2 अंकों की अद्वितीयता को दिखाने के लिए धात्विक पट्टों के रूप में यांत्रिक कूट पैदा करके द्विअंकी और दशमलव संख्या नामक एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया गया।
- दो संख्या निवेश के बीजगणितीय योग के अनुसार किसी मोटर को एक सूक्ष्म संसाधक के जरिए रुकने का आदेश देता है। ऐसे घनात्मक और ऋणात्मक को दिखाने के उद्देश्य से "नम्बर लाइन" नाम के एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया गया।
- 'टाइम फंक्शन' नामक एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया गया है जो समय का हिसाब रखने के ख्याल से दबाव संवेदी इलेक्ट्रॉनिक टोटियों (e-taps) के व्यवहार से विभिन्न आकार-प्रकार के पात्रों में रखे जल के स्तर को दिखाता और द्रव (सपुनपक) के स्तर को जानता तथा द्रव स्तम्भ बनाम समय वक्र रेखा को आलेखित करता है; जबकि विभिन्न आकार-प्रकार के पात्रों में एक समान धारापात से पानी भरा जा रहा हो।
- वास्तविक ईएमएफ कम्प्यूटर आधारित एक प्रदर्श है जहाँ दर्शक ट्रेकबॉल माउस का प्रयोग करता हुआ संघटकों को खींचकर और गिराकर मूल विद्युत सर्किट पर आभासी परीक्षण कर सकता है। प्रदर्श ईएमएफ पर आधारित 15 प्रयोग करने के विकल्प उपलब्ध कराता है।
- खगोलीय कैलेंडर के साथ 'विश्व का इतिहास' पर नेहरू तारामंडल, दिल्ली में एक परस्पर क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया गया। प्रासंगिक आंकड़े सुधार पद्धति तथा नए हार्डवेयर अन्तरापृष्ठ और सॉफ्टवेयर के जरिए दर्शक इस प्रदर्श में 'विश्व के इतिहास' से संबंधित बहुत सारी डिजिटल जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- 'चीता की रफ्तार', 'गति मानव', 'कंकाल', 'बहुरुपिया', 'पाचनक्रिया' शीर्षक वाले पाँच सॉफ्टवेयर क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र (आरएससी) गुवाहाटी की बायो-मशीन दीर्घा के लिए विकसित किए गए।
- मिजोरम विज्ञान केंद्र के लिए जीव-विविधता पर दो परस्पर-क्रियात्मक सॉफ्टवेयर और विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता के लिए 'यूरोपीय चित्रांकन' पर तीन परस्पर क्रियात्मक सॉफ्टवेयर।

### शैक्षणिक कार्यकलाप

विज्ञान प्रदर्शन व्याख्यान, लोकप्रिय व्याख्यान, खगोल-विषयक कार्यक्रम, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, अवकाश हॉबी शिविर, विज्ञान फिल्म प्रदर्शन, विज्ञान मेला, विज्ञान सेमिनार, कम्प्यूटर मेला, विज्ञान नाटक, रचनात्मक योग्यता क्रियात्मकताएं, विज्ञान कार्यशालाएं, सामुदायिक कार्यक्रम आदि के साथ विभिन्न नवपरिवर्तनशील कार्यक्रम का एनसीएसएम की विभिन्न इकाइयों द्वारा पूरे वर्ष आयोजन किया जाता रहा।

‘विज्ञान और समाज’ विषय पर नेहरू विज्ञान केंद्र, मुम्बई में 01 अक्टूबर, 2010 को राष्ट्रीय विज्ञान नाटक उत्सव का आयोजन किया गया।

‘भारत और संसार विज्ञान: क्या हम वहाँ हैं?’ विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान परिसंवाद 2010 का आयोजन 8 अक्टूबर, 2010 को विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं प्रौद्योगिक संग्रहालय (वीआईटीएम), बेंगलूर में किया गया।

### नेहरू विज्ञान केंद्र, मुम्बई का रजत जयंती समारोह

नेहरू विज्ञान केंद्र, मुम्बई ने जन साधारण में विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के काम के द्वारा देश की सेवा में अपने प्रचालन के 25 वर्ष 10 नवम्बर, 2010 को पूरे किए। इस समारोह के शुभ अवसर पर प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, परिषद सदस्यों, निदेशकों तथा केंद्र के कर्मचारियों से प्राप्त अभिवादनो, संस्मरणों, रचनाओं, संदेशों की एक स्मारिका का विमोचन किया गया।

### शैक्षणिक पाठ्यक्रम

बिड़ला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (बिट्स), पिलानी के सहयोग से तथा स्मिथसोनियन संस्थान, वाशिंगटन डी.सी. की

प्राध्यापकीय सहायता से तीसरे दल के लिए विज्ञान संचार में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पूरा किया गया। चौथे दल के लिए कार्यक्रम चल रहा है।

### प्रलेखन, प्रकाशन और पुस्तकालय

- वर्ष 2009-10 की कार्यकलाप रिपोर्ट।
- विदुषी : विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीय महिलाएं नामक एक संस्मारिका का प्रकाशन।
- प्रोपेगेशन पत्रिका (खण्ड.1 सं. 2) के द्वितीय अंक का प्रकाशन।
- राष्ट्रीय विज्ञान नाटक उत्सव और राष्ट्रीय विज्ञान परिसंवाद पर स्मारिकाएं।
- नई प्रदर्शनियों, नए विज्ञान केंद्रों, नई दीर्घाओं आदि पर पुस्तिकाएं।
- एनएससी, मुम्बई की रजत जयंती का प्रकाशन

## 2.3

संग्रहालय से संबंधित  
कार्यकलापों में क्षमता निर्माण

---



## राष्ट्रीय संग्रहालय : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय—विज्ञान संस्थान

2.3.1

संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान की स्थापना वर्ष 1989 जनवरी में एक सोसायटी के रूप में की गई थी तथा वर्ष 1989 अप्रैल में इसे सम-विश्वविद्यालय घोषित किया गया था। भारत में यह एकमात्र विश्वविद्यालय है जो विशेष रूप से संग्रहालयों से संबंधित है। इस समय यह संस्थान राष्ट्रीय संग्रहालय के परिसर में कार्य कर रहा है। इसके संगम-ज्ञापन के अनुसार, माननीय संस्कृति मंत्री सोसायटी के अध्यक्ष और संस्थान के कुलाधिपति होते हैं। महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के पदेन कुलपति होते हैं।

संस्थान के उद्देश्य हैं—कला इतिहास, संरक्षण, संग्रहालय विज्ञान आदि के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अध्ययन, प्रशिक्षण और अनुसंधान की सुविधाएं उपलब्ध कराना। अध्ययन के उपर्युक्त क्षेत्रों में मौलिक अनुसंधान एवं उसके लिए सुविधाएं प्रदान करना। सांस्कृतिक संपदा से संबंधित अन्य राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग करना ताकि उनकी सामग्री, संग्रह/तकनीकी सुविज्ञता तथा सुविधाओं का आदान-प्रदान किया जा सके। उपर्युक्त क्षेत्रों में शिक्षण के मानकों में सुधार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर आधार पर विचार-विमर्श करना। शैक्षिक मार्गदर्शन और नेतृत्व प्रदान करना। संस्थान की ऐसी कृतियों को प्रकाशित करना जिनका विशिष्टता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा हो।



उपर्युक्त उद्देश्यों के अनुसरण में, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, कला इतिहास, संग्रहालय विज्ञान तथा संरक्षण में कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) तथा वाचस्पति (पीएच.डी.) में उपाधियां प्रदान करता है; संस्थान, अंग्रेजी में 'भारत : कला एवं संस्कृति' और 'कला मूल्यांकन' तथा हिन्दी में 'भारतीय कलानिधि' नामक पांच माह का प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम (अल्पकालिक पाठ्यक्रम) संचालित करता है; राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, कार्यशालाएं तथा संगोष्ठियां आयोजित करता है और संगत विषयों पर लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों के विशेष व्याख्यानों की व्यवस्था करता है और अपनी कृतियों का प्रकाशन करता है। संस्थान में स्लाइडों का आकर्षक संग्रह तथा एक लघु पुस्तकालय है जिनका अनुसंधान अध्येता तथा शिक्षाविद लाभ उठा सकते हैं।

### अकादमिक कार्यकलाप

वर्ष 2010-11 के दौरान संस्थान ने कला स्नातकोत्तर में 44 विद्यार्थियों,

पीएच.डी. पाठ्यक्रमों में 18 विद्यार्थियों तथा अल्पकालिक पाठ्यक्रमों में 199 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया।

## कार्यक्रम

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान संस्थान ने कई कार्यकलापों का आयोजन किया जिनका ब्यौरा इस प्रकार है :

1. दिनांक 28 अप्रैल, 2010 को संस्थान ने अपना 22वां स्थापना दिवस मनाया।
2. दिनांक 30.4.2010 को “सिक्किम की बौद्ध कला” विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
3. दिनांक 28.4.2010 को विद्यार्थियों का सिक्किम शैक्षिक भ्रमण करवाया गया।
4. दिनांक 7 मई, 2010 को केन्द्रीय संस्कृति सलाहकार बोर्ड की उप-समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
5. दिनांक 7 मई, 2010 और 8.6.2010 को क्षेत्रीय एवं राज्य संग्रहालयों की स्थापना तथा सुदृढीकरण विषय पर एक बैठक का आयोजन किया गया।
6. दिनांक 13.5.2010 को राष्ट्रीय वीथी, कनाडा की “इनयुईट आर्ट” प्रदर्शनी पर स्टीयरिंग ग्रुप की बैठक का आयोजन किया गया।
7. दिनांक 18 मई, 2010 से सेमेस्टर परीक्षाएं शुरू हुई।
8. नए अकादमिक सत्र हेतु एम.ए. पाठ्यक्रमों के लिए दाखिले दिनांक 14, 15 और 16 जुलाई, 2010 को किए गए।
9. दिनांक 23.7.2010 को सीएबीसी की उप-समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
10. दिनांक 3.8.2010 को कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु “भारत की कला एवं वास्तुकला” विषय पर एक विशेष पाठ्यक्रम शुरू किया गया।
11. दिनांक 9 व 10 अगस्त, 2010 को “इंडिजिनस आर्ट, कन्टम्परेरि सिग्निफिकेशन” विषय पर इण्डो-कनाडियन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
12. दिनांक 17 अगस्त, 2010 को पी.एच.डी. दाखिलों हेतु लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया तथा इनके साक्षात्कार दिनांक 18 से 20 अगस्त, 2010 को आयोजित किए गए।
13. सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने दिनांक 27.9.2010 को “इनयुईट आर्ट” पर एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया, जिसका आयोजन दिनांक 27 एवं 28 सितम्बर, 2010 को एनएमआई में किया गया था।
14. “केरला थू द एजिज” संग्रहालय की स्थापना करने तथा संग्रहालय, कला इतिहास एवं संरक्षण विषय पर कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए दिनांक 1-10 अक्टूबर, 2010 को संकाय-सदस्यों की एक टीम ने तिरुवनंतपुरम का दौरा किया।
15. दिनांक 18-27 अक्टूबर, 2010 के दौरान एनएलआरसी, लखनऊ में संरक्षण विभाग के तीसरे सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए “भित्ति-चित्रों एवं मानव जाति-वर्णन सामग्री का संरक्षण” विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।
16. एनएमआई एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बीच अंतर-सहयोगी कार्यक्रमों को अंतिम रूप देने के लिए दिनांक 26 अक्टूबर, 2010 को कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान का दौरा किया। दिनांक 19.11.2010 को इस संबंध में एक संगम ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
17. दिनांक 5 दिसम्बर, 2010 को सीएबीसी की उप-समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
18. दिनांक 23.12.2010 से 4.1.2011 तक त्रिवेन्द्रम में पेंटिंग्स पर क्षमता-निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

19. दिनांक 7, 10, 11, 12, 13, 15 एवं 18 जनवरी, 2011 को डीआईईटी दरियागंज, नई दिल्ली के अध्यापकों/प्रशिक्षुओं के साथ संग्रहालय शिक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया।
20. दिनांक 22.01.2011 को 'स्मारकों एवं स्थलों का कैसे प्रयोग करें' विषय पर लद्दाख के 30 स्कूली अध्यापकों के साथ संवाद एवं विचार-विमर्श सत्र का आयोजन किया गया।
21. दिनांक 31.01.2011 तथा 01.02.2011 को "सिल्क रूट: कनेक्टिंग कल्चर्स बियांड बार्डर्स" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।
22. दिनांक 18 व 19 फरवरी, 2011 को राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान में आस्ट्रियाई उच्चायोग के साथ एक गोलमेज विचार-विमर्श का आयोजन किया गया।

## प्रकाशन

"संग्रहालय शिक्षा" एवं "संग्रहालय विज्ञान की अनुसंधान प्रगति" पर आयोजित किए गए सेमिनार के विवरण का प्रकाशन कार्य जारी है।

## नोएडा परियोजना

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एनसीएसएम) ने इस परियोजना के लिए योजना तथा परिव्यय तैयार किए हैं। इस परियोजना पर कुल 6200.00 लाख रु. खर्च होने का अनुमान है। एसएफसी के प्रस्तावों को अनुमोदन हेतु मंत्रालय के पास भेजा गया है।

## फैलोशिप

तीन पुराने अनुसंधान अध्येताओं के साथ यूजीसी नेट परीक्षा पास करने वाले दो पीएच.डी. विद्यार्थियों को कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति प्रदान की गई है।

## राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (एन.आर.एल.सी.)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला (एनआरएलसी) दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने प्रकार की एक प्रमुख संस्था है। इसकी स्थापना संस्कृति मंत्रालय द्वारा वर्ष 1976 में की गई थी और बाद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इसे एक वैज्ञानिक संस्था की मान्यता प्रदान की। इस प्रयोगशाला का मुख्यालय लखनऊ में स्थित है और एनआरएलसी का एक एकक – क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला मैसूर में स्थित है।

2.3.2

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला के मुख्य उद्देश्य हैं— संरक्षण की बेहतर विधियों को विकसित करने के लिए शोध करना, कला एवं पुरातात्विक वस्तुओं का तकनीकी अध्ययन करना, संग्रहालयों, अभिलेखागारों, पुरातात्विक विभागों एवं अन्य संस्थाओं को तकनीकी सहायता प्रदान करना और संरक्षण, सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय संबंध में प्रशिक्षण प्रदान करना तथा संरक्षण के क्षेत्र में सूचनाओं का प्रचार-प्रसार करना।

### अनुसंधान कार्यकलाप

रिपोर्टधीन वर्ष के दौरान एनआरएलसी ने तोंबे के सिक्कों पर तकनीकी-ऐतिहासिक अध्ययन किया ताकि उनके वर्गीकरण को बदलने के लिए उनके विभिन्न स्वरूप का पता चल सके और तोंबे तथा सीसे के लिए पर्यावरण अनुकूल क्षयरोधक विकसित किया जा सके। एक सहयोगात्मक शोध परियोजना के तहत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (विज्ञान शाखा) में स्मारकों में शैवाल जमने की प्रक्रिया के संबंध में अध्ययन करवाया गया। कागज संरक्षण हेतु मैदा से बने लेप का विकल्प खोजने, शरीफा, अमलतास तथा हल्दी के बीजों के चिपकने वाले गुण-धर्म का पता लगाने के लिए भी शोध कार्य किए गए।

सचिव (संस्कृति) की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ समिति के अनुदेश से चित्रों पर जैव-विघटनकारी समस्याओं को समझने के लिए गैर-विघटनकारी आधुनिक तथा संवेदनशील विधियों का प्रयोग करके गुरु रबीन्द्र नाथ टैगोर के चित्रों में प्रयुक्त सामग्री एवं उन्हें बनाने की विधि को समझने के प्रयोजनार्थ “टैगोर के चित्रों के संरक्षण और विश्व भारती, शांतिनिकेतन के अन्य संग्रह” नामक परियोजना शुरू की गई। चित्रों के नमूने एकत्र किए गए और उन्नत तकनीकों के प्रयोग से इनका अभिनिर्धारण किया गया। इनके नियंत्रण हेतु





कारगर बायोसाइड्स का पता लगाने के लिए आगे अध्ययन कार्य किया जा रहा है। इस प्रयोगशाला में पोर्टेबल एक्स-रे फ्लूरोसेंस स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक तकनीक प्राप्त की गई है।

### फील्ड परियोजनाएं

पारस्परिक लाभदायक तथा गैर-लाभकारी योजना के तहत एनआरएलसी ने कला तथा संस्कृति से जुड़ी कृतियों का संरक्षण किया जिसका उद्देश्य संरक्षण अभ्यासों को आगे बढ़ाना और संग्रहालयों, अभिलेखागारों, पुस्तकालयों और अन्य संगठनों को संरक्षण सेवाएं प्रदान करना है जिनमें – तिब्बती थंका, राज भवन, गंगटोक, सिक्किम की धातु सामग्रियां तथा चित्र; राजस्व बोर्ड, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नक्शे; छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, मुंबई के वास्तुकला संबंधी नक्शे; राज भवन, शिमला की पॉलीक्रोम काष्ठ वस्तुएं; राज भवन, लखनऊ में बाघों की खाल तथा ट्रॉफियां; महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा की पाण्डुलिपियां तथा पुस्तकें; करसा मठ, लद्दाख के भित्ति चित्र; रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, जोड़ासाको, कोलकाता के तैल चित्र; शिल्प संग्रहालय, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में बड़े आकार का काष्ठ रथ आदि शामिल हैं।

### संरक्षण कार्य में प्रशिक्षण

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, एनआरएलसी ने निम्नलिखित पाठ्यक्रमों तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया :-

- 'सांस्कृतिक सम्पत्ति का संरक्षण' विषय पर एक छः माह का प्रशिक्षण कार्यक्रम 1 सितम्बर, 2010 को प्रारंभ किया गया।
- संग्रहालयों, पुरातत्व विज्ञान, अभिलेखागारों तथा अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं के संरक्षकों तथा निदेशकों के लिए 'संग्रहालय वस्तुओं की देखभाल तथा अनुरक्षण' विषय पर 2-13 अगस्त, 2010 तक एक प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, दिल्ली धरोहर अनुसंधान एवं प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली और रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता के छात्रों के लिए

5 अप्रैल से 16 अप्रैल, 2010 तक संरक्षण विषय में दो सप्ताह का व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

- राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली के छात्रों हेतु 9-17 जुलाई, 2010 तक 'सांस्कृतिक सम्पत्ति संरक्षण' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- 'पुस्तकालय सामग्रियों की देखभाल एवं अनुरक्षण' विषय पर 21-27 जुलाई, 2010 तक और 'पाण्डुलिपियों और पुरातात्विक सामग्रियों का संरक्षण' विषय पर 5-12 अक्टूबर, 2010 तक कार्यशाला आयोजित की गई।
- एनएमआई, नई दिल्ली के विद्यार्थियों के लिए "भित्ति चित्र, तैल चित्र तथा एथनोलॉजीकल वस्तुओं" पर 18-27 अक्टूबर, 2011 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के इन्टर्न के लिए "पाण्डुलिपियों का संरक्षण" विषय पर 30 नवम्बर से 14 दिसम्बर, 2010 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

### पुस्तकालय और प्रलेखन

इस समय, भारत तथा विदेश के वैज्ञानिकों तथा संरक्षकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एनआरएलसी के पुस्तकालय में अनूठा संग्रह मौजूद है। इस पुस्तकालय में 11200 सूचीबद्ध दस्तावेज तथा माइक्रोफिशों का अच्छा संग्रह मौजूद है। सांस्कृतिक सम्पदाओं के संरक्षण पर लगभग 48 नई पुस्तकें खरीदी गईं और 65 तकनीकी पत्रिकाएं मंगवाई गईं। दस्तावेजों को जारी करने और वापस लेने का कार्य किया गया। संरक्षण पत्रिकाओं से संबंधित संचयी सूची का संकलन कार्य किया गया। वर्ष 2009 हेतु अधिप्रापण की एक सूची संकलित की गई।

### क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, मैसूर

दक्षिण भारतीय राज्यों और संघ शासित प्रदेशों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वर्ष 1987 में एनआरएलसी का एक क्षेत्रीय

एकक – क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, मैसूर की स्थापना की गई। इस एकक ने सितम्बर, 2003 में पांच एकड़ पर बनाए गए अपने नवनिर्मित परिसर में स्थानांतरित होने के पश्चात् उल्लेखनीय प्रगति की। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान इस प्रयोगशाला ने छः प्रयोगशाला इन्टर्न तथा तीन नियमित आरसीएल कर्मचारियों को नियोजित करके ‘भित्ति चित्रों का संरक्षण’ (लगभग 3000 वर्ग फीट) नामक एक प्रमुख फील्ड परियोजना पर संरक्षण कार्य किया। यह परियोजना जनवरी 2011 तक पूरी होने की उम्मीद है। ‘मैसूर पैलेस के तैल चित्र’ (25) नामक एक अन्य फील्ड परियोजना पर भी कार्य प्रारंभ किया गया। इसके अलावा, इस प्रयोगशाला ने राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित शोध परियोजनाओं का कार्य प्रारंभ किया जिनमें शामिल विषय हैं— ‘परम्परागत सामग्रियों का उपयोग’, ‘लेमिनेशन के रूप में सेलुलोज का विकल्प’, ‘पांडुलिपि संरक्षण में ऑक्सीजन मुक्त परिवेश का उपयोग’, ताड़ पत्र पर से बनी पांडुलिपियों के पर्यावरण अनुकूल प्रदर्शन तथा भण्डारण एवं चिपचिपापन’। इससे प्राप्त परिणाम काफी उत्साहवर्द्धक रहे और प्रयोगशाला परीक्षण के रूप में अत्यंत उपयोगी पाए गए। इन परिणामों को वास्तविक रूप से लागू करने की संभावना का अध्ययन किया जा रहा है।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान इस पुस्तकालय ने 100 संरक्षण संबंधी पुस्तकें और पांच संरक्षण पत्रिकाएं मंगाई हैं। एनआरएलसी वेबसाइट पर संरक्षण संबंधी सूचनाओं को अपलोड करने का कार्य चल रहा है। अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पत्रिकाओं में निम्नलिखित शोध पत्र प्रकाशित किए गए :-

1. अभिलेखीय तथा पुस्तकालय सामग्रियों के संरक्षण में नीम तथा नीगुण्डो पत्तों के मिश्रण से तैयार कागज सामग्री का उपयोग; प्रोसीडिंग्स, सीएचआरईएसपी : ‘सस्टेनिंग यूरोप्स

कल्चरल हेरीटेज’ विषय पर जुब्लजाना, स्लोवाकिया में 10-12 नवम्बर, 2008 तक आयोजित 8वां यूरोपीयई सम्मेलन।

2. जैव-विघटन से पांडुलिपियों के संरक्षण में परम्परागत सामग्रियों का अनुप्रयोग; भारत में सांस्कृतिक सम्पदाओं का संरक्षण; 38 (2009) 5-14.
3. संग्रहालय वस्तुओं के प्रदर्शन एवं भण्डारण हेतु पर्यावरणोनुकूल माइक्रो जलवायु नियंत्रित शोकेस – ए न्यू एप्रोच; स्टडीज इन म्यूजियोलॉजी (संग्रहालय विज्ञान विभाग, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा की एक पत्रिका) खंड 41-42, 2008 तथा 2009.

## बुनियादी सुविधाओं का स्तरान्वयन

11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 12 करोड़ रु. की लागत से प्रस्तावित एनआरएलसी प्रशिक्षण संस्थान के निर्माण का कार्य चल रहा है और केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने इस कार्य को मार्च 2011 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा है।

## क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता की स्थापना

भारत के पूर्वी तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की संरक्षण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक दीर्घकालिक मांग—एनआरएलसी की एक इकाई—क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, कोलकाता की स्थापना हेतु कार्रवाई शुरू की गई है। वर्ष 2009-10 के दौरान पुरातत्व विभाग, पश्चिम बंगाल द्वारा उनके परिसर में स्थान देने की पेशकश की गई है और अब आरसीएल, कोलकाता में पदों के सृजन की प्रक्रिया चल रही है।

## राष्ट्रीय सांस्कृति निधि

2.4

राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ) की स्थापना, मानव संसाधन विकास से संबंधित संसदीय स्थायी समिति की 10वीं रिपोर्ट में विहित सिफारिशों के आधार पर धर्मस्व निधि अधिनियम, 1890 के तहत 28 नवम्बर, 1996 को भारत सरकार की राजपत्र अधिसूचना संख्या 695 के जरिए एक न्यास के रूप में की गई थी। ऐसा अतिरिक्त संसाधन जुटाने के उद्देश्य से किया गया था। इसे औपचारिक रूप से 29 मार्च, 1997 को शुरू किया गया। राष्ट्रीय संस्कृति निधि का उद्देश्य निगमित क्षेत्र, गैर-सरकारी संगठनों, राज्य सरकारों, निजी/सार्वजनिक क्षेत्र तथा अलग-अलग व्यक्तियों से भारतीय सांस्कृतिक विरासत के मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों के प्रसार, संरक्षण और परिरक्षण हेतु भागीदारी आमंत्रित करना है।

### प्रबंधन और प्रशासन

राष्ट्रीय संस्कृति निधि का प्रबंधन और प्रशासन, परिषद और एक कार्यकारी समिति द्वारा चलाया जाता है। पर्यटन और संस्कृति मंत्री इस परिषद के अध्यक्ष होते हैं। इस परिषद में अध्यक्ष और सदस्य-सचिव सहित अधिकतम 24 सदस्य हो सकते हैं जिसमें से 19 गणमान्य सदस्य निगमित क्षेत्र, निजी प्रतिष्ठानों और गैर-लाभकारी संगठनों जैसे विभिन्न क्षेत्रों से होंगे। राष्ट्रीय संस्कृति निधि की संरचना के अनुरूप, इसके तत्वावधान में आयोजित कार्यकलापों के संबंध में यह भारतीय संसद और दानकर्ताओं के प्रति उत्तरदायी है। परियोजना कार्यान्वयन समिति, इससे संबंधित परियोजनाओं को निष्पादित करती है। इसमें दानकर्ताओं, राष्ट्रीय संस्कृति निधि, नागरिक प्राधिकारियों तथा जहां आवश्यक है, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को प्रतिनिधित्व दिया गया है। परियोजनाओं के लेखाओं को वार्षिक रूप से राष्ट्रीय संस्कृति निधि के लेखाओं में समाविष्ट किया जाता है, जिनकी लेखा परीक्षा, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा की जाती है।

### कर लाभ

राष्ट्रीय संस्कृति निधि को दी जाने वाली दान की राशि पर आयकर अधिनियम की धारा 80 जी (2) के तहत कर से शत-प्रतिशत की छूट प्राप्त है।

### अक्षय निधि

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय ने अक्षय निधि के 19.50 करोड़ रु. की पूरी राशि जारी की है और राष्ट्रीय संस्कृति निधि को अक्षय निधि के रूप में 19.50 करोड़ रु. की राशि प्रदान करने का अपना वचन पूरा किया है। एनसीएफ के पास 31 मार्च, 2010 की स्थिति के अनुसार 10.90 करोड़ रुपए की द्वितीयक अक्षय निधि है।



## कार्यकारी समिति की बैठक

एनसीएफ की कार्यकारी समिति के अध्यक्ष की अध्यक्षता में 17 मई, 2010 और 17 अगस्त, 2010 को राष्ट्रीय संस्कृति निधि की कार्यकारी समिति की 12वीं और 13वीं बैठकों का आयोजन किया गया था। इन बैठकों में किए गए कुछ महत्वपूर्ण अनुमोदन/लिए गए कुछ महत्वपूर्ण निर्णय इस प्रकार हैं :-

- (i) इन बैठकों में (i) भारतीय स्टेट बैंक, कोलकाता शाखा के हजारदुरई पैलेस, जिला मुर्शिदाबाद को अंगीकार करने और (ii) मैसर्स शिपिंग ट्रेडिंग कार्पोरेशन के राष्ट्रीय संस्कृति निधि के साथ महाबलीपुरम के संरक्षण और परिरक्षण के लिए समझौता ज्ञापन सम्पन्न करने के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया।
- (ii) विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के लिए वेणुगोपाल मंदिर, पुष्कर, राजस्थान को 3.50 लाख रु. की वित्तीय सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया गया।
- (iii) अमूर्त सांस्कृतिक विरासत से संबंधित परियोजनाओं को राष्ट्रीय संस्कृति निधि के पुनर्गठन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही हाथ में लिया जाएगा।
- (iv) राष्ट्रीय संस्कृति निधि की निधियों के संबंध में निवेश नीति तैयार करने के लिए अपर सचिव/वित्त सलाहकार की अध्यक्षता में एक उप-समिति गठित करने का निर्णय लिया गया। इस संबंध में एक बैठक पहले ही आयोजित कर ली गई है और इसमें लिए गए निर्णय को भी कार्यान्वित कर दिया गया है।

राष्ट्रीय संस्कृति निधि के तहत निम्नलिखित संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन सम्पन्न किए गए हैं :-

### (1) सम्पन्न किए गए नए समझौता ज्ञापन

- (i) प्राचीन शिव मंदिर अंबरनाथ के संरक्षण और सुरक्षण के लिए दिनांक 25 फरवरी, 2010 को नागरिक सेवा मंडल, अंबरनाथ और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ।
- (ii) निम्नलिखित चार अहोम स्मारकों के जीर्णोद्धार और रखरखाव के लिए दिनांक 29 जून, 2010 को ओएनजीसी और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ :-

(क) रंग घर

(ख) करेग घर (घरगांव)

(ग) तलातल घर (जाय सागर)

(घ) असम के शिवसागर जिले के चेराईदेव में स्थित मैदान समूह

ओएनजीसी ने इस उद्देश्यार्थ 30 लाख रु. की राशि का अंशदान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

- (iii) हजारदुरई पैलेस, जिला मुर्शिदाबाद को अंगीकार करने के लिए दिनांक 13 जुलाई, 2010 को भारतीय स्टेट बैंक, कोलकाता पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ। भारतीय स्टेट बैंक समिति को इस उद्देश्यार्थ 75 लाख रु. का अंशदान करना है। समझौता ज्ञापन के अनुसार इस कार्य के क्षेत्राधिकार में वातावरण तैयार करने, पर्यटकों को सुविधाएं प्रदान करने, स्मारकों में प्रकाश व्यवस्था और संग्रहालय वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए व्यावसायिक सलाह प्रदान करना शामिल है।

- (iv) शास्त्रीय नर्तकी, श्रीमती मृणालिनी साराभाई पर एक फिल्म के निर्माण के लिए दिनांक 13 सितम्बर, 2010 को मैसर्स दर्पण के साथ समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया। इस परियोजना की कुल लागत 33 लाख रु. है। उपर्युक्त उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय संस्कृति निधि से 15 लाख रु. का अंशदान किया जाएगा और शेष 18 लाख रु. मैसर्स दर्पण जुटाएगा अथवा अंशदान करेगा।

- (v) किशोरी अमोनकर शास्त्रीय गायक (पद्मभूषण से सम्मानित) पर एक फिल्म के निर्माण के लिए दिनांक 21 सितम्बर, 2010 को एन.सी.एफ., ओ.एन.जी.सी., विदेश मंत्रालय और सार्थ (अमोल पालेकर इसके एकमात्र स्वामी हैं) के साथ समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया है।

- (vi) श्री कुलवंत राय द्वारा प्राप्त की गई स्वातंत्रोत्तर काल के अभिलेखों/फोटो संग्रह के संरक्षण के लिए दिनांक 25 अक्टूबर, 2010 को इंडिया फोटो आर्काइव फाउंडेशन के

साथ। इस परियोजना की कुल लागत 42.90 लाख रु. है। उपर्युक्त उद्देश्य के लिए एन.सी.एफ. और आई.पी. ए.एफ. की ओर से 21.45 लाख रु. की समान राशि का अंशदान किया जाएगा।

- (vii) ओ.एन.जी.सी. और रीच फाउंडेशन के साथ दिनांक 25 नवम्बर, 2010 को देहरादून में विरासत समारोह आयोजित करने के लिए। इस परियोजना की कुल लागत 1.51 करोड़ रु. है। इसमें ओ.एन.जी.सी. दो किस्तों में 40 लाख रु. का अंशदान करेगा जबकि एन.सी.एफ. से 10 लाख रु. का टोकन अंशदान किया जाएगा। अब यह विरासत समारोह 19 दिसम्बर, 2010 से आयोजित किया जाएगा।

## (2) इस वर्ष पूरी की गई परियोजनाएं

राष्ट्रीय संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर रथ के चारों ओर के प्लास्टिक केस को रीइन्फोर्स ग्लास से प्रतिस्थापित करने के लिए एन.सी. एफ., ओ.एन.जी.सी., राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र और राष्ट्रीय संग्रहालय के बीच दिनांक 29 जून, 2010 को समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया था। इस परियोजना की कुल लागत 13.47 लाख रु. थी

और इस परियोजना को ओ.एन.जी.सी. ने पूर्णतः प्रायोजित किया था।

यह परियोजना सफलतापूर्वक पूरी की गई है। श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने दिनांक 27 सितम्बर, 2010 को इस नवीकृत संरचना का उद्घाटन किया था।

## एन.सी.एफ. सचिवालय में मुख्य प्रचालन अधिकारी की भर्ती

मुख्य प्रचालन अधिकारी और वरिष्ठ प्रबंधक के पदों के लिए प्राप्त आवेदनों की जांच करने के लिए दिनांक 01 नवम्बर, 2010 को खोज और चयन समिति की बैठक आयोजित की गई और अभ्यर्थियों की संक्षिप्त सूची तैयार की गई। इन पदों के लिए साक्षात्कार/बातचीत दिनांक 13 नवम्बर, 2010 को की गई।

संक्षिप्त सूची में शामिल किए गए अभ्यर्थियों को नियुक्ति प्रस्ताव भेज दिए गए हैं। वरिष्ठ प्रबंधक पद के लिए निकट भविष्य में साक्षात्कार लिए जाएंगे।



## अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध प्रभाग

2.5

- संस्कृति मंत्रालय का उद्देश्य नए-नए क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है और यह सांस्कृतिक करारों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के जरिए भारत और विभिन्न अन्य देशों के मध्य सांस्कृतिक संबंध विकसित करता है।
- सांस्कृतिक करार, भारत सरकार और अन्य देशों की सरकार के मध्य सम्पन्न एक एककालिक कानूनी दस्तावेज होता है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के रूप में विशिष्ट क्षेत्रीय उपायों के जरिए कार्यनीतिक अभिगम हेतु एक आधार तैयार करता है।
- इस समय 125 करार/समझौता ज्ञापन (अनुलग्नक) हैं जिनमें भारत और सऊदी अरब, जॉर्जिया, कजाकिस्तान, कनाडा, ओमान तथा यू.के. के साथ 2010 में हुए नवीनतम सांस्कृतिक करार/समझौता ज्ञापन शामिल हैं। कुछ समय पहले तक भारत का प्रमुख राष्ट्रमंडल देशों के साथ कोई सांस्कृतिक समझौता नहीं था परंतु विश्व में मृदु शक्ति के बढ़ते महत्व के साथ ही और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के क्षेत्र में औपचारिक समझबूझ की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता को समझते हुए भारत ने यू.के. तथा कनाडा के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।
- बड़े देशों में जहां हमारा कोई औपचारिक सांस्कृतिक करार नहीं है, वहां संस्थान दर संस्थान समझौता ज्ञापनों के जरिए सांस्कृतिक संबंधों हेतु वैकल्पिक दृष्टिकोण पर विचार किया गया और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने विभिन्न भारतीय सांस्कृतिक संस्थाओं और ब्रिटिश संग्रहालय, ब्रिटिश राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा ब्रिटिश विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूजियम की ओर से समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया ताकि ज्ञान का आदान-प्रदान, प्रदर्शनियों, शिक्षा एवं बोलचाल के क्षेत्रों में भारत तथा यू.के. में स्थित सांस्कृतिक संस्थाओं के बीच गहन सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। पुरापाषाण युगीन पुरातात्विक सामग्री से लेकर पुरावशेषों, जो कम से कम सौ वर्षों से अस्तित्व में हैं, जैसी श्रेणियों पर प्रतिबंध लगाने के संबंध में अमेरिका सरकार और भारत सरकार के बीच एक समझौता ज्ञापन प्रक्रियाधीन है।
- इस समय 49 देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम प्रवृत्त है। वर्ष 2010 (आज की तिथि तक) के दौरान 16 देशों अर्थात्



बंगलादेश, आईसलैंड, स्लोवेनिया, डीपीआरके (उत्तर कोरिया), तुर्कमेनिस्तान, मॉरिशस, क्रोएशिया, नॉर्वे, श्रीलंका, पोलैंड, चेक गणराज्य, लाओस पीडीआर, मलेशिया, सीरियाई अरब गणराज्य, अर्मेनिया तथा चीन के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

- सांस्कृतिक संबंधों को और आगे बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित देशों में भारतीय महोत्सवों/दिवसों के रूप में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए थे :-

| देश                         | अवधि                         |
|-----------------------------|------------------------------|
| (क) कोरियाई गणराज्य         | 7-23 सितम्बर, 2009           |
| (ख) इण्डोनेशिया तथा मलेशिया | 29 अक्टूबर से 7 नवम्बर, 2009 |
| (ग) कुवैत                   | 8-14 नवम्बर, 2009            |
| (घ) कजाखस्तान               | 16-21 नवम्बर, 2009           |

कोरियाई गणराज्य में कलाकारों ने जेजू द्वीप पर 9-15 सितम्बर, 2009 के दौरान आयोजित तृतीय डेल्टिक खेल, 2009 में भी भाग लिया और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रतिष्ठित सांस्कृतिक कार्यक्रम में 11 पदक जीते। संस्कृति मंत्रालय ने आईसीसीआर द्वारा वर्ष 2009 के दौरान आयोजित "ईयर ऑफ इंडिया इन रशिया" में कार्यक्रमों का भी योगदान किया। चीन, फ्रांस तथा रूस में आईसीसीआर द्वारा आयोजित महोत्सवों में प्रदर्शनियों का आयोजन करके योगदान किया गया।

- भारत तथा कोरियाई गणराज्य, रूस, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन के मध्य संस्कृति से संबंधित संयुक्त सांस्कृतिक आयोग/संयुक्त कार्य समूह का भी आयोजन किया जाता है।

- इसके अलावा, आईसीआर प्रभाग दोस्ताना आदान-प्रदान को बढ़ावा देने पर भारत तथा पाकिस्तान के बीच सचिव स्तरीय वार्ता का भी आयोजन करता है। पिछली सचिव स्तरीय वार्ता का आयोजन इस्लामाबाद, पाकिस्तान में 28-29 जून, 2007 के दौरान किया गया। अगली वार्ता के आयोजन हेतु विदेश मंत्रालय से मंजूरी प्रतीक्षित है।

- **फ्रेंडशिप सोसाइटियों को सहायतानुदान :** भारतीय विदेशी दोस्ताना/सांस्कृतिक सोसाइटियों, जो विदेशों में कार्य कर रही हैं, को सहायतानुदान संस्वीकृत करके भी विदेशों में भारतीय संस्कृति को प्रगाढ़ किया जाता है। संबंधित देश में हमारे मिशन/दूतावास की सिफारिश पर प्रत्येक संगठन (किसी देश में तीन संगठनों से अधिक नहीं) को अधिकतम 1,50,000 रुपये तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। किसी नए संगठन/सोसाइटी को 50,000 रुपये की राशि संस्वीकृत की जाती है।

चालू वर्ष 2010-11 हेतु विश्वभर में 49 भारतीय मिशनों को प्राधिकृत करके 3.25 करोड़ रुपये की राशि सवितरित की गई है। यह मिशनों को इस बारे में प्राधिकृत करता है कि वह अपने विवेकानुसार भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाली फ्रेंडशिप सोसाइटियों को अधिकतम 3 लाख प्रति सोसाइटी की दर से निधियां प्रदान करें। हमारा प्रस्ताव है कि अगले वर्ष हेतु इस योजना को योजनागत शीर्ष के तहत रखा जाए ताकि इस योजना के तहत अधिकाधिक मिशनों को शामिल किया जा सके।

- **विदेशों में भारतीय साहित्य :** प्रधानमंत्री जी ने कोलकाता में दिनांक 16 जनवरी, 2010 को अपने भाषण में इस अभिकल्पना का उल्लेख किया था। इसका पाठ इस प्रकार है, "हाल ही के वर्षों में विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचनाओं की अधिकता देखी गई है। अन्य भारतीय भाषाओं में समकालीन रचनाओं को विशेषतः युवा पीढ़ी में लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है क्योंकि अधिकांश रचनाकार युवा वर्ग से हैं और वे समकालीन विषय में रचनाएं करते हैं। संस्कृति मंत्रालय समकालीन साहित्य की कलात्मक एवं श्रेष्ठ रचनाओं का बड़े पैमाने पर विभिन्न भारतीय भाषाओं से विदेशी भाषाओं में अनुवाद करने के प्रयोजनार्थ एक विशेष अनुवाद परियोजना की स्थापना पर विचार कर रहा है।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित भारतीय श्रेण्य साहित्य, समकालीन श्रेष्ठ रचनाओं तथा बाल साहित्य के अनुवाद संबंधी, 'विदेशों में भारतीय साहित्य' नामक परियोजना के तहत प्रथम चरण में कुछेक चुनिंदा विदेशी भाषाओं जहां

बुनियादी सुविधाएं, मांग तथा बाजार उपलब्ध हो, के साथ-साथ यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त छः भारतीय भाषाओं (फ्रांसीसी, चीनी, अरबी, स्पेनी तथा अंग्रेजी) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

## यूनेस्को मामले

2.6

मंत्रालय, प्रत्यक्षतः संस्कृति से संबंधित तीन सम्मेलन, जिनका भारत द्वारा अनुसमर्थन किया गया है, के संबंध में सीधे कार्रवाई करता है। ये हैं— विश्व विरासत सम्मेलन (1972), अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा संबंधी सम्मेलन (2003) तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता की सुरक्षा एवं प्रोत्साहन संबंधी सम्मेलन (2005)।

(क) **विश्व विरासत सम्मेलन** : भारत ने 1977 में विश्व विरासत सम्मेलन का अनुसमर्थन किया। अब तक 186 देश सम्मेलन का या तो अनुसमर्थन कर चुके हैं या उसे स्वीकृत कर चुके हैं। यह सम्मेलन प्रकृति की सुरक्षा एवं सांस्कृतिक परिसम्पत्तियों के संरक्षण से संबद्ध है। सम्मेलन, लोगों के प्रकृति के साथ पारस्परिक संबंध के तरीकों एवं दोनों के बीच संतुलन की सुरक्षा की मौलिक आवश्यकताओं को मान्यता प्रदान करता है। सम्मेलन, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक स्थलों के प्रकार, जिसे विश्व विरासत सूची में शामिल करने पर विचार किया जा सकता है, को परिभाषित करता है। सम्मेलन के सदस्य देशों का, उनके राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार की परिसम्पत्तियों को विश्व विरासत सूची में शामिल करने पर विचार करने के लिए पहचान एवं नामांकन के लिए सहमत होना आवश्यक है और इसके साथ ही किस प्रकार इन परिसम्पत्तियों को इनके अनुरक्षण के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है, का प्रबंधन योजना सहित ब्यौरा उपलब्ध कराना आवश्यक है। सदस्य देशों से सूचीबद्ध परिसम्पत्तियों के विश्व विरासत महत्व की रक्षा करने तथा उनकी स्थिति पर नियमित प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहन की भी उम्मीद की जाती है। सदस्य देश, क्षेत्रीय योजना कार्यक्रमों में सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत संरक्षण के समन्वय करने वाले, उस स्थान पर कर्मचारी एवं सेवाओं की व्यवस्था करने वाले, वैज्ञानिक एवं तकनीकी संरक्षण अनुसंधान सम्पन्न कराने वाले एवं इस विरासत को समुदाय के दिन-प्रतिदिन के जीवन में काम आने वाले उपायो को अपनाने को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जो कि संस्कृति मंत्रालय का संबद्ध कार्यालय है, सम्मेलन से संबंधित अन्य मुद्दों के अतिरिक्त 'विश्व विरासत सूची' में शामिल करने के लिए फाइलों के प्रस्तुतीकरण का समन्वय करता है। इस समय विश्व विरासत सूची में भारत के 28 स्थल शामिल हैं, ये हैं—

- (i) आगरा का किला
- (ii) अजन्ता की गुफाएं
- (iii) सांची के बौद्ध स्मारक



- (iv) चंपानेर — पावागढ़ पुरातात्विक उद्यान
- (v) छत्रपति शिवाजी टर्मिनस
- (vi) गोवा के गिरजाघर एवं मठ
- (vii) एलिफेंटा की गुफाएं
- (viii) एलोरा की गुफाएं
- (ix) फतेहपुर सीकरी
- (x) चिर स्थायी चोल मंदिर
- (xi) हम्पी का स्मारक समूह
- (xii) महाबलीपुरम का स्मारक समूह
- (xiii) पट्टाडकल का स्मारक समूह
- (xiv) हुमायूं का मकबरा, दिल्ली
- (xv) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
- (xvi) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
- (xvii) खजुराहो का स्मारक समूह
- (xviii) महाबोधि मंदिर परिसर, बोध गया
- (xix) मानस वन्यजीव अभ्यारण्य
- (xx) भारतीय पहाड़ी रेलवे
- (xxi) नंदा देवी एवं फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान
- (xxii) कुतुब मीनार एवं इसके स्मारक, दिल्ली
- (xxiii) लाल किला परिसर
- (xxiv) भीमबेटका का चट्टान आश्रय
- (xxv) सूर्य मंदिर, कोणार्क
- (xxvi) सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान
- (xxvii) ताज महल
- (xxviii) जंतर-मंतर, जयपुर

वर्ष 2010 में, भारत ने 'शांतिनिकेतन' तथा 'पश्चिम घाटों' को विश्व विरासत सूची (उप-समूह नामांकन) में शामिल करने के लिए निवेदन किया है। वर्ष 2011 में, भारत ने तीन मदों को विश्व विरासत सूची में शामिल करने के लिए निवेदन किया है। ये हैं— वृहत हिमालय राष्ट्रीय उद्यान, कुतुब शाही मकबरा, हैदराबाद (3 स्थल) तथा राजस्थान के पहाड़ी किले (5 स्थल)। इन अनुरोधों पर यूनेस्को में विचार किया जा रहा है।

(ख) **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रोत्साहन एवं अनुरक्षण संबंधी सम्मेलन** : भारत ने 2005 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आई सी एच) का अनुरक्षण करने वाले सम्मेलन का अनुसमर्थन किया। अब तक 134 देश सम्मेलन का या तो अनुसमर्थन कर चुके हैं या उन्हें स्वीकृति दे चुके हैं।

भारत अधिवेशन की विभिन्न बैठकों में नियमित रूप से भाग लेता है। यह सम्मेलन, संबंधित समुदायों/समूहों/व्यक्तियों द्वारा आई.सी.एच. की सुरक्षा एवं आदर सुनिश्चित करता है तथा इसके साथ ही इसके महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने एवं इस प्रकार की विरासत की मदों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सहायता की व्यवस्था करता है। इस सम्मेलन के कार्यकलापों में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची तैयार करना भी शामिल है। अब तक आई.सी.एच. की 166 मदों की प्रतिनिधि सूची यूनेस्को द्वारा तैयार की जा चुकी है। इस सूची में भारत की आठ मदें हैं :—

- (i) परम्परागत वैदिक मंत्रोच्चारण
- (ii) कुटीयट्टम : संस्कृत थियेटर
- (iii) रामलीला : रामायण का परम्परागत मंचन
- (iv) रम्मन : गढ़वाल हिमालय का धार्मिक उत्सव तथा पारम्परिक थियेटर
- (v) नवरोज
- (vi) कालबेलिया : लोक गीत एवं नृत्य, राजस्थान
- (vii) मुदियेतु : परम्परागत थियेटर एवं नृत्य, केरल
- (viii) छाऊ नृत्य

जबकि भारत की 17 प्रस्तुतियां यूनेस्को में पहले ही लंबित हैं, यह मंत्रालय इस सूची में कुछ और मदों को शामिल करने के लिए कार्यवाही कर रहा है।

(ग) **सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता की सुरक्षा एवं प्रोत्साहन संबंधी सम्मेलन** : भारत ने इस सम्मेलन का दिसम्बर, 2006 में अनुसमर्थन किया। सम्मेलन को अब तक 106 देश या तो स्वीकृत कर चुके हैं या इसका अनुसमर्थन कर चुके हैं। इस समय भारत सम्मेलन की 24 सदस्यीय अन्तरसरकारी समिति का सदस्य है तथा समिति की विभिन्न बैठकों में नियमित रूप से भाग लेता है। इस सम्मेलन का उद्देश्य सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना, संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देना, अंतर-सांस्कृतिकता का पोषण करना, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता के लिए आदर को प्रोत्साहित करना तथा संस्कृति और विकास के बीच की कड़ी को मजबूत करना है। सम्मेलन के अन्य



प्रमुख उद्देश्य, सांस्कृतिक कार्यकलापों की विशिष्ट प्रकृति को मान्यता प्रदान करना, तथा इसके सम्बद्ध देशों के उनके क्षेत्राधिकार की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देने के लिए नीतियों को बनाए रखने, स्वीकार करने तथा इनके कार्यान्वयन के लिए सार्वभौम अधिकारों का अनुसमर्थन करना है।

(घ) **यूनेस्को से संबंधित अन्य कार्यकलाप :**

**विश्व कार्यक्रम की स्मृति :** यूनेस्को के विश्व कार्यक्रम स्मृति का उद्देश्य पूरे विश्व में बहुमूल्य अभिलेखागार संग्रह और पुस्तकालय संग्रह का संरक्षण तथा इनका प्रचार-प्रसार करना है। विश्व कार्यक्रम स्मृति की स्थापना 1992 में विश्व के विभिन्न भागों में विरासत के संरक्षण की अनिश्चित स्थिति के संबंध में बढ़ती जागरूकता तथा दस्तावेजी विरासत सुलभता के कारण की गई थी। विश्व कार्यक्रम स्मृति का मिशन निम्नलिखित के संबंध में है :-

- (i) विश्व की दस्तावेजी विरासत के संरक्षण को सर्वाधिक उपयुक्त तकनीकों के माध्यम से सुकर बनाना।
- (ii) दस्तावेजी विरासत की सार्वभौमिक सुलभता में सहायता करना।
- (iii) दस्तावेजी विरासत की मौजूदगी और इसके महत्व के बारे में विश्वव्यापी जागरूकता बढ़ाना।

यह तीसरे उद्देश्य का भाग है कि विश्व की स्मृति (एम.ओ.डब्ल्यू) का रजिस्टर तैयार करने की मांग की जाती है। विश्व स्मृति

रजिस्टर सार्वभौमिक रूप से मूल्यवान दस्तावेजों, पाण्डुलिपियों, वाचिक परम्पराओं, श्रुत्य-दृश्य सामग्री, पुस्तकालय और अभिलेखागार संग्रह का संक्षिप्त विवरण है। इस प्रकार की सामग्री को रजिस्टर में शामिल करने से और सूचना का आदान-प्रदान करने और सामग्री के संरक्षण, डिजिटलीकरण तथा प्रचार-प्रसार करने के लिए विशेषज्ञों के कार्यक्रम नेटवर्क पर इसका उपयोग करने से दस्तावेजी विरासत का बेहतर संरक्षण किया जाता है। इसका उद्देश्य अधुनातन प्रौद्योगिकी का उपयोग करके विरासत की व्यापक सुलभता तथा इसका प्रचार-प्रसार करना भी है। इस समय भारत की 4 मदों को विश्व स्मृति रजिस्टर में शामिल किया गया है। ये आई.ए.एस. तमिल चिकित्सा पाण्डुलिपि संग्रह, डच ईस्ट इंडिया कम्पनी के अभिलेख, पांडिचेरी में साइवा पाण्डुलिपि और ऋग्वेद पाण्डुलिपि हैं।

संस्कृति मंत्रालय ने अभी हाल ही में विश्व स्मृति रजिस्टर के लिए 2 नामांकन डोजियर प्रस्तुत किए हैं। ये हैं—  
 (i) **तारीख-ए-खानदान-ए-तिमुरिया :** खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना के संग्रह की एक पाण्डुलिपि, (इसे **तिमुर नामा** भी कहा जाता है) जिसमें तिमुरिदस — महान विजेता तिमुर तथा ईरान एवं भारत में उसके उत्तराधिकारियों — के इतिहास का वर्णन किया गया है। इस समृद्ध सचित्र पाण्डुलिपि का लेखन तथा सृजन कार्य मुगल साम्राज्य के बीस वर्षों तथा तिमुर, अकबर के वंशजों, 1577-78 ए.डी., के समय में किया गया था।  
 (ii) **विमलप्रभा :** एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता के संग्रह की एक पाण्डुलिपि, जो पाठकों को **लघुकालचक्रतंत्र** तथा कई अन्य विषयों जैसे ज्योतिष-शास्त्र/खगोल-शास्त्र के विस्तृत विचार-विमर्श के बारे में जानकारी प्रदान करती है। इन पुस्तकों में कई भारतीय दर्शन-शास्त्र अभिकल्पनाओं पर गहराई से विचार किया गया है। इन प्रस्तुतियों पर यूनेस्को में विचार किया जा रहा है।





एलोरा गुफाएं



## 2.7

### राष्ट्रीय मिशन

---

## राष्ट्रीय स्मारक और पुरावस्तु मिशन

राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन की स्थापना 2007 में की गई जिसकी समय-सीमा वर्ष 2007-2012 तक निर्धारित की गई थी।

- निर्मित धरोहर एवं स्थल और पुरावशेषों से संबंधित दो सांचे तैयार किए गए हैं।
- असुरक्षित निर्मित धरोहर एवं स्थलों की जानकारी वाली लगभग 80,000 सूचियां गौण स्रोतों से प्रलेखित की गई हैं।
- राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन (एनएमएमए) के फॉर्मेट के अनुसार विभिन्न स्रोतों से लगभग 3,50,000 पुरावशेषों का प्रलेखन किया गया है।
- 'भारतीय पुरातत्व-एक समीक्षा' के 48 खण्डों को डिजीटल स्वरूप प्रदान किया गया है।
- एनएमएमए हेतु विशेष रूप से तैयार किए जा रहे सॉफ्टवेयर में आंकड़े संकलित करने हेतु एक कम्प्यूटर केंद्र स्थापित किया गया है।
- निर्मित धरोहर तथा स्थलों से संबंधित लगभग 35,000 फोटो निगेटिव को डिजीटल स्वरूप प्रदान किया गया है।
- निर्मित धरोहर, स्थलों तथा पुरावशेषों से संबंधित प्रकाशित एवं अप्रकाशित सहायक आंकड़ों को प्रलेखित करने के लिए राष्ट्रीय मिशन ने विविध प्रलेखन केंद्रों (लगभग 60) का अभिनिर्धारण किया है।
- निर्मित धरोहर, स्थलों तथा पुरावशेषों के प्रलेखन के लिए एक प्रशिक्षण मैन्युअल तैयार किया गया है।
- वर्ष 2009 और 2010 में विश्वविद्यालयों, राज्य पुरातत्व विभागों, वास्तुविदों और राज्य परियोजना समन्वयकों की तीन राष्ट्रीय कार्यशालाएं आयोजित की गईं ताकि उनके पास उपलब्ध निर्मित धरोहरों, स्थलों तथा पुरावशेषों के प्रलेखन और इनमें शामिल निधियन तंत्र हेतु तौर-तरीकों पर विचार किया जा सके।

2.7.1



- पोर्ट ब्लेयर तथा हैदराबाद में क्रमशः सितम्बर तथा अक्टूबर 2010 में क्षेत्रीय प्रशिक्षण व समीक्षा कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं।
- एनएमएमए के कार्यकलापों को लागू करने के लिए प्रत्येक राज्य में उस राज्य विशेष के सचिव (संस्कृति) की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय क्रियान्वयन समितियां गठित की गई हैं। इनके गठन के उपरांत विभिन्न राज्यों में लगभग 20 बैठकें आयोजित की गई हैं।
- जागरूकता कार्यक्रमों के भाग के रूप में प्रयोक्ता अनुकूल प्रकाशन जैसे 'अपने सिक्कों को जानें', 'प्राचीन औजारों से अपने पूर्वजों को जानें', हरियाणा में निर्मित धरोहर संबंधी कैटेलॉग, विविध विधायी कार्यवाहों, जानकारीमूलक वीडियो क्लिप्, कैलेण्डर, डायरियां तैयार की जा रही हैं।
- हैदराबाद, पोर्टब्लेयर में निर्मित धरोहर, स्थलों तथा पुरावशेषों से संबंधित फोटो प्रदर्शनियां आयोजित की गई हैं। दिल्ली में 'जी.टी. रोड के किनारे स्थित स्थलों और स्मारकों का प्रलेखन' नामक एक विषयपरक प्रदर्शनी आयोजित की गई है। अमृतसर से कोलकाता तक ऐसी प्रदर्शनियों पर शोध कार्य किया जा रहा है। 'लद्दाख-जैसा देखा गया तथा महसूस किया गया' नामक एक फोटो प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है।



## राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

संस्कृति मंत्रालय ने वर्ष 2003 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना की थी और यह परियोजना आधारित संस्था है। इसे पाण्डुलिपि विरासत के संरक्षण और सुरक्षण के साथ-साथ विद्वानों और आम जनता के लाभ के लिए इसमें मौजूद ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने का अधिदेश दिया गया है। पिछले आठ वर्षों में इसने कार्यकलापों के अपने अधिदेश क्षेत्र में पर्याप्त उपलब्धि हासिल की है।

2.7.2

**संरक्षण और सुरक्षण :** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पूरे देश में फैले अपने 33 पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नेटवर्क के माध्यम से हजारों वर्षों की ज्ञान विरासत को संरक्षित करने का अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से यह इस क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति भी तैयार कर रहा है। वर्ष 2010-2011 में 565 कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया और 33,000 पाण्डुलिपियों (4.78 फोलियो) का संरक्षण कार्य किया गया।

**पाण्डुलिपियों तक पहुंच में वृद्धि करना :** डिजिटीकरण करने के माध्यम से राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन इस प्रकार की पाण्डुलिपियों को मूल रूप में संभाले बिना ही इन तक पहुंच को सुकर बनाने का प्रयास करता है। डिजिटीकरण के दो चरण पूरे कर लिए गए हैं। वर्ष 2010-11 में तीसरा चरण शुरू हो गया है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने इस कार्य को करने का प्रयास करने वाली सभी संस्थाओं को दिशानिर्देश प्रदान करके डिजिटीकरण के मानकों को भी अंतिम रूप दिया है। अभी तक राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने 93 लाख पृष्ठों की 71,000 पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण किया है।

**ज्ञान का प्रचार-प्रसार :** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए पाण्डुलिपि शास्त्र और पेलियोग्राफी में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित जनशक्ति तैयार कर रहा है। वर्ष 2010-2011 में 14 प्रशिक्षण कार्यक्रम (428 व्यक्ति प्रशिक्षित किए गए) आयोजित किए गए। इस वर्ष गणित, आयुर्वेद, व्याकरण, काव्य शास्त्र, कश्मीर पाण्डुलिपि, बौद्ध पाण्डुलिपि, फारसी और अरबी पाण्डुलिपि, उद्धृत पाण्डुलिपि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में आठ राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित (इन सेमिनारों की कार्यवाही को सम्पादित किया गया और विद्वानों के लाभ के लिए प्रकाशित भी किया गया) की गई।

इस बहुमूल्य ज्ञान संसाधन के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए तत्त्वबोध व्याख्यान आयोजित किए गए। पूरे देश में इस प्रकार के चौबीस व्याख्यान कराए गए।



# प्रकाशन

**कृत्रिक्षणा :** पाण्डुलिपि शास्त्र और पेलियोग्राफी के क्षेत्र में द्विमासिक पत्रिका-व-न्यूजलैटर।

**तत्त्वबोध :** तत्त्वबोध श्रृंखला के व्याख्यानों का संग्रह।

वर्ष 2010-11 में खण्ड-III प्रकाशित किया गया।

**कृतिबोध :** अप्रकाशित पाण्डुलिपियों पर समालोचना कार्य।

वर्ष 2010-11 में खण्ड-II प्रकाशित किया गया।

**संरक्षिका :** संरक्षण और सुरक्षण के संबंध में प्रकाशन।

**समीक्षिका :** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि द्वारा आयोजित सेमिनारों की कार्यवाही।

खण्ड-IV फारसी, अरबी और उर्दू। वर्ष 2010-11 में भारत की पाठ्य विरासत प्रकाशित की गई।

खण्ड-III और V प्रेस में हैं।

**प्रकाशिका :** चार फार्मेट में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन

क) अनुवाद सहित आलोचनात्मक संस्करण

ख) अनुवाद के बिना आलोचनात्मक संस्करण

ग) अनुलिपि संस्करण

घ) वलगेट संस्करण

इसके साथ-साथ 15 कार्य प्रकाशन के विभिन्न चरण में हैं।





राष्ट्रीय

बालरंग

राष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सव

नवंबर 2010

राष्ट्रीय लोकनृत्य प्रतियोगिता

# 3

## अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

---



## राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, विश्व की अग्रणी नाट्य प्रशिक्षण संस्थाओं में से एक और भारत में अपनी तरह का एकमात्र संस्थान है। इसकी स्थापना संगीत नाटक अकादमी द्वारा 1959 में एक घटक इकाई के रूप में की गई थी। वर्ष 1975 में यह एक स्वतंत्र इकाई बना और इसे संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सम्पूर्ण निधिकरण से संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 की धारा 21 के तहत एक स्वायत्त संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया था। इस विद्यालय द्वारा प्रदत्त डिप्लोमा को भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा मान्यता दी जाती है और यह स्नातकोत्तर डिग्री के समकक्ष है।

शैक्षिक सत्र 2010-11 हेतु 26 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनमें सरकार की नीति के अनुसार अ.जा./अ.ज.जा. तथा अ.पि.वर्ग श्रेणियों के विद्यार्थी शामिल थे। चयन शर्तें सावधानीपूर्वक तैयार की जाती हैं जिसमें रंगमंच के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है ताकि प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा होने के बाद विद्यार्थीगण समाज की सेवा कर सकें तथा साथ ही जीविकोपार्जन भी कर सकें। प्रशिक्षण अवधि के दौरान विद्यार्थियों को अनुमोदित दरों पर वजीफे दिए जाते हैं।

तीन वर्ष की अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त, विद्यालय ने बाल रंगमंच के क्षेत्रों में नई संभावनाओं का पता लगाया है और विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यशालाओं के माध्यम से रंगमंच प्रशिक्षण का विकेन्द्रीकरण किया। विद्यालय ने वर्ष 1999 में भारत रंग महोत्सव के नाम से अपने प्रथम राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जो अब वार्षिक समारोह बन गया है और सामान्यतः इसका आयोजन प्रति वर्ष जनवरी माह में किया जाता है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के दो प्रस्तुति स्कंध हैं— रंगमंडल और रंग टोली (थिएटर-इन-एजुकेशन कंपनी)। रंगमंडल की स्थापना स्नातकों को प्रायोगिक और व्यावसायिक आधार पर सृजनात्मक रंगमंच द्वारा प्रस्तुतियों को तैयार कर प्रदर्शित करने के लिए एक मंच उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से की गई थी। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय विशेषज्ञ कलाकारों के सहयोग से विभिन्न नाटकों का भी आयोजन कर रहा है और जनता के सामने भारत तथा विदेशों में इसका प्रदर्शन कर रहा है। दूसरे प्रस्तुति स्कंध (थिएटर-इन-एजुकेशन कम्पनी) जिसका 'संस्कार रंग टोली' के नाम से पुनः नामकरण किया गया, की स्थापना 1989 में की गई जिसका उद्देश्य 8 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के मध्य रंगमंच को प्रोत्साहित करना था। रिपोर्टाधीन अवधि के

3.1





दौरान विद्यालय की टीआईईई कम्पनी के कलाकारों द्वारा 71 मंचकलाएं आयोजित की गईं।

## कार्यकलाप

**थिएटर—इन—एजुकेशन कम्पनी** ने टीआईईईटी के सहयोग से 29 नवम्बर से 16 दिसम्बर, 2010 तक दिल्ली स्थित विभिन्न स्कूलों के लिए 'किताबों में हलचल' नामक नाटक के 17 शो किए। दिल्ली के सात विभिन्न केन्द्रों में मई तथा जून 2010 में बच्चों के साथ ग्रीष्मकालीन रंगमंच कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में 516 बच्चों ने गहरी दिलचस्पी ली। टीआईईई कम्पनी ने 2 नवम्बर से 15 नवम्बर, 2010 तक दिल्ली के स्कूली बच्चों के लिए 'अदल-बदल' नाटक के 17 शो आयोजित किए।

**संस्कार रंग टोली** ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में 7 अगस्त, 2010 को संडे क्लब भाग—। तथा ।। कार्यशाला सत्रों का आयोजन किया और यह जनवरी 2011 के प्रथम सप्ताह में समाप्त होगी। इस टोली ने 1-15 अक्टूबर, 2010 तक जश्नेपचपन बाल रंगमंच महोत्सव का भी आयोजन किया जिसमें देश के विभिन्न भागों से विभिन्न रंगमंच समूहों ने भाग लिया। हिन्दी के अलावा, इस नाटक का मंचन कई क्षेत्रीय भाषाओं जैसे मणिपुरी, असमिया, बंगाली, उड़िया तथा कन्नड़ भाषाओं में भी किया गया।

**रंगमंडल कम्पनी** ने 28 मई से 20 जून, 2010 तक ग्रीष्मकालीन रंगमंच महोत्सव का आयोजन किया। रंगमंडल कम्पनी ने मई से दिसम्बर, 2010 तक जनता के लिए विभिन्न नाटकों का मंचन किया। इनमें 'बेगम का तकिया' (18 शो), 'राम नाम सत्य है' (5 शो) शामिल हैं। सितम्बर तथा नवम्बर 2010 में रंगमंडल कम्पनी ने सप्ताहांत प्रीमियर शो का आयोजन किया जिनमें 'लिटिल बिग ट्रेजिडीज', 'बेगम का तकिया' तथा 'ब्लड वेडिंग' का मंचन किया गया। रंगमंडल कम्पनी ने नवम्बर तथा दिसम्बर 2010 के दौरान कोलकाता तथा लखनऊ में भी नाटकों का मंचन किया। कोलकाता में पश्चिमबंग नाट्य अकादमी और नन्दीकार रंगमंच महोत्सव, कोलकाता के प्रायोजन में क्रमशः 'जात ही पूछो साधु की' तथा 'ब्लड वेडिंग' और 'बेगम का तकिया' का मंचन किया गया। 'बेगम का तकिया' नाटक का मंचन स्ट्राटो के प्रायोजन में लखनऊ में भी किया गया।

## विस्तार कार्यक्रम

विगत की भांति ही स्थानीय एजेंसियों/रंगमंच समूहों के सहयोग से अधिकांशतः क्षेत्रीय भाषाओं में देश के विभिन्न भागों में उत्पादनोमुखी रंगमंच कार्यशालाएं, उत्पादनोमुखी बाल रंगमंच कार्यशालाएं और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

## पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यकलाप

त्रिपुरा संस्कृति सामान्य केन्द्र (टीएसएसके), अगरतला, त्रिपुरा के सहयोग से 2 अप्रैल से 8 अप्रैल, 2010 तक अगरतला में रंगमंच महोत्सव का आयोजन किया गया। बरनाम रंगमंच समूह के सहयोग से 5 जुलाई से 5 अगस्त, 2010 तक सोनीतपुर, असम में और खेनजोंगलांग के सहयोग से 18 जुलाई से 2 अक्टूबर, 2010 तक थानेलोंग, जिला-इम्फाल, मणिपुर में उत्पादनोमुखी बाल कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं।

## बंगलुरु अध्याय

विभिन्न क्षेत्रों की आकांक्षापूर्ति को ध्यान में रखते हुए और साथ ही इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अभिनय/निर्देशन में प्रशिक्षण स्वयं अपनी भाषा में सर्वोत्तम तरीके से दिया जा सकता है, देश के पांच क्षेत्रों अर्थात् कोलकाता, मुम्बई/गोवा, जम्मू व कश्मीर, पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा बंगलुरु में एक-एक करके कुल पांच क्षेत्रीय केन्द्र खोलने की योजना है। बंगलुरु अध्याय की स्थापना प्रारंभ में क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में की गई थी, इसे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का एक पूर्ण विकसित बंगलुरु अध्याय के रूप में स्तरोन्नयन किया जा रहा है। इसका उद्घाटन फरवरी 2009 में तत्कालीन पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने किया था।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में बंगलुरु अध्याय को एक पूर्ण विकसित क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में स्तरोन्नत करने के बावत प्रथम कदम के तौर पर 3 माह की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इस प्रकार की प्रथम कार्यशाला का 15 सितम्बर, 2010 को उद्घाटन किया गया जो 14 दिसम्बर, 2010 को समाप्त हुई। द्वितीय कार्यशाला 15 जनवरी, 2011 को आयोजित किए जाने की संभावना है जिसके लिए अपेक्षित उपाय पहले ही किए जा चुके हैं।

### प्रकाशन

नियमित प्रकाशनों के अलावा प्रकाशन यूनिट ने दो नई पुस्तकें अर्थात् “सितम की इंतहा क्या है” और आदरणीय राधे श्याम, कथावाचक की जीवनी प्रकाशित की गई जिसका सम्पादन मदुरेश द्वारा किया गया और रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान श्री नीलाभ द्वारा संपादित “रंग प्रसंग सं.-37” नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया।

### अन्य कार्यक्रम

विद्यालय की राजभाषा इकाई सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने के लिए हरसंभव प्रयास करती है और सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के बावत हरसंभव कदम उठाती है। राजभाषा विभाग के निर्देशों का अनुपालन करते हुए विद्यालय के निदेशक तथा कुलसचिव की अध्यक्षता में क्रमशः 15 अप्रैल, 2010, 24 जून, 2010, 3 सितम्बर, 2010 और 18 नवम्बर, 2010 को तिमाही

बैठकें आयोजित की गईं। इसके अलावा, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में हिन्दी को बढ़ावा देने तथा साथ ही हिन्दी का प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए 6-14 सितम्बर, 2010 तक एक उत्सव का आयोजन किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं और सफल अभ्यर्थियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र दिए गए।

विद्यालय के कर्मचारियों को उचित प्रशिक्षण दिया जाता है और उन्हें हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु कम्प्यूटरों का उपयोग करने की सलाह दी गई। इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के निर्देशों का अनुपालन करते हुए विद्यालय में 14-18 जून, 2010 तथा 11-13 अगस्त, 2010 तक यूपीकोड सॉफ्टवेयर पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। श्री पंकज झा, जो सोल्यूशंस सॉफ्टवेयर के एक विशेषज्ञ हैं, को आमंत्रित किया गया ताकि वह कर्मचारियों को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के दैनन्दिन कार्यों में यूपीकोड सॉफ्टवेयर के माध्यम से हिन्दी के अधिकतम प्रयोग हेतु सलाह/प्रोत्साहन दे सकें।

## इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

3.2

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) की स्थापना श्रीमती इंदिरा गांधी की स्मृति में एक स्वायत्त संस्था के रूप में 1987 में सभी कलाओं—प्रत्येक रूप जो अपने आप में अखंड हैं, परस्पर अंतः—निर्भरता के आयाम के भीतर हैं, प्रकृति, सामाजिक ढांचे और ब्रह्माण्ड विज्ञान के साथ अंतः—संबंधित हैं, का अध्ययन करने तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए की गई थी।

इस केंद्र के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :—

1. कलाओं— विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य कला के लिए एक मुख्य संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करना।
2. संदर्भ कार्यों, शब्दावलियों, शब्दकोश तथा कला, मानविकी और सांस्कृतिक विरासत से संबंधित अनुसंधान और प्रकाशन कार्य करना।
3. अभिनय, प्रदर्शनियों, मल्टी—मीडिया प्रोजेक्शंस, सम्मेलनों, विविध कलाओं—परम्परागत और समसामयिक के बीच सृजनात्मक तथा महत्वपूर्ण संवाद के लिए एक मंच प्रदान करना।
4. एक तरफ आधुनिक विज्ञान तथा दूसरी तरफ परम्परागत कौशलों और ज्ञान के बीच की दूरी को कम करने के दृष्टिगत कला और दर्शनशास्त्र, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के वर्तमान विचारों के बीच संवाद को बढ़ावा देना।
5. भारतीय लोकाचार के लिए अधिक उपयुक्त अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के मॉडल विकसित करना।
6. भारत तथा दुनिया के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के लिए संवेदनशीलता और जागरूकता को बढ़ावा देना।
7. राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कला और संस्कृति केंद्रों के साथ संचार नेटवर्क विकसित करना और कला, मानविकी तथा सांस्कृतिक विरासत में आधारभूत ज्ञान को विस्तारित करने के उद्देश्य से भारत और विदेशों की उच्चतर अध्ययन संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों के साथ उनको सम्बद्ध करना।



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की अवधारणामूलक योजना में रेखांकित किए उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, यह निम्नलिखित पांच अंतर-संबंधित प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है, जो ढांचागत रूप से स्वायत्त हैं परंतु कार्यक्रम तैयार करने में अंतर-संबंधित हैं :-

**कलानिधि प्रभाग** में (क) कला और मानविकी में अनुसंधान कार्य के लिए एक मुख्य संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए पुस्तकों, स्लाइडों, माइक्रोफिल्मों, फोटोग्राफों तथा श्रव्य-दृश्य सामग्री सहित मल्टीमीडिया संग्रहों का सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय (ख) सांस्कृतिक अभिलेखागार (ग) मीडिया केंद्र (घ) संरक्षण प्रयोगशाला (ङ) रिप्रोग्राफी इकाई और (च) स्लाइड यूनिट शामिल हैं। संदर्भ पुस्तकालय में दुर्लभ पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, संस्कृत, पालि, फारसी और अरबी पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्म, फोटोग्राफ और स्लाइडों के रूप में अप्रकाशित बहुत से पृष्ठों का रिप्रोग्राफ संग्रह है।

स्रोतों तक इंटरनेट पर आनलाइन कम्प्यूटर कैटलॉग के जरिए पहुँचा जा सकता है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई कला और पुरातत्व इंडेक्स, एबीआईए, भारत जो कलानिधि में है, पर अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए आईजीएनसीए में एक नोडल केंद्र भी है। यह परियोजना, कला और पुरातत्व से संबंधित शोध छात्रों और संस्थाओं के बीच पारस्परिक संवाद और सूचनाओं के आदान-प्रदान को बढ़ाती है।

**कलाकोष प्रभाग** में (क) भारतीय कलाओं को रेखांकित करने वाली तकनीकी अवधारणाओं का शब्द-संकलन/कोश (ख) भारतीय कलात्मक परम्परा तथा विशिष्ट कलाओं के लिए प्राथमिक विशिष्ट पाठों हेतु कला पर मौलिक मूलभूत पाठ की एक शृंखला (ग) भारतीय कलाओं पर महत्वपूर्ण और विश्लेषणात्मक लेखन का पुनः मुद्रण और (घ) क्षेत्र अध्ययन के अनुसंधान और प्रकाशन के दीर्घकालीन कार्यक्रम हैं :

**जनपद सम्पदा प्रभाग** में (क) विभिन्न जनजातियों की कला सहित शैल कलाओं की सामग्री का कोर संग्रह और प्रलेखन (ख) मल्टी मीडिया प्रस्तुति (ग) भारतीय संस्कृति के पर्यावरणीय, पारिस्थितिकी, कृषि, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पैरामीटरों के आपस में मिले हुए स्वरूप को समझने के लिए वैकल्पिक मॉडलों को विकसित करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहु-विषयक जीवन प्रणाली का अध्ययन करना शामिल है।

**कलादर्शन प्रभाग** संगठनात्मक उद्देश्यों से संबंधित विभिन्न विषयों और अवधारणाओं पर अंतर-विषयक सेमिनारों, प्रदर्शनियों तथा अभिनय के लिए एक मंच प्रदान करवाता है।

**सूत्रधार प्रभाग** सम्पूर्ण संगठन को प्रशासनिक और प्रबंधकीय सहायता प्रदान करता है।

दक्षिणी भारत की सांस्कृतिक विरासत और कला पर ध्यान देने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र (एसआरसी), जिसकी स्थापना 2001 में की गई है का कार्यालय बेंगलुरु में है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी में है जो कला कोश प्रभाग को भारतीय शिक्षा और संस्कृत अध्ययन के लिए सहायता तथा अकादमिक ज्ञान प्रदान करता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का पूर्वोत्तर स्थित क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी में है। इसका मुख्य कार्य पूर्वोत्तर क्षेत्र में सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समुदायों से संबंधित कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान करना है।

## कार्यक्रम

इस केंद्र ने अग्रणी फोटोग्राफर राजा दीन दयाल (1844-1905) के दुर्लभ फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। वास्तुकला, जीवनशैली, प्राचीन कलाकृतियों और व्यक्तित्वों जैसे विषयों के लगभग 220 फोटोग्राफों ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अभिलेखागार में 2857 ग्लास प्लेट नैगेटिव संग्रह की एक झलक प्रस्तुत की। एक बहु-गतिविधि कार्यक्रम 'आख्यान : मुखौटे, कठपुतलियों और पिक्चर शोमैन' का आयोजन किया गया जिसमें प्राचीन भारत की अभिनय परम्पराओं को मुख्य रूप से दर्शाया गया था। इस केंद्र ने 'रबीपरिक्रमा', रबीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्यिक कार्यों पर आधारित तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा तैयार किया गया फिल्म उत्सव का आयोजन किया जिसमें भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार तथा फिल्म प्रभाग की कुछ दुर्लभ फिल्मों को दिखाया गया। महिलाओं पर आधारित दो सहयोगात्मक कार्यक्रमों में इस केंद्र ने 'वूमन ऑन रिकार्ड - बीसवीं सदी के शुरुआती दौर के भारत में महिला संगीत का आयोजन' तथा 'चंबा रूमाल' का आयोजन किया।

## कला निधि

रिपोर्ट अवधि के दौरान संदर्भ पुस्तकालय (कलानिधि) ने 842 पुस्तकों की खरीद की तथा 912 पुस्तकें उपहार के तौर पर प्राप्त कीं। इसने के.सी. बसु चौधरी संग्रह से उपहार के तौर पर 2000 पुस्तकें प्राप्त कीं। लगभग 1300 दुर्लभ पुस्तकें और 2800 जिल्दबंद जर्नलों का परिग्रहण किया। पुस्तकालय ने 179 पत्रिकाओं के लिए अभिदान किया और इस वर्ष विभिन्न पत्रिकाओं के 2325 अंक प्राप्त किए गए। अब तक पत्रिकाओं के 17000 पुराने अंकों

के डाटा बेस को ऑनलाइन उपलब्ध करवा दिया गया है। इस अवधि के दौरान लगभग 7600 पुस्तकों को वर्गीकृत किया गया तथा 7978 पुस्तकों को सूचीबद्ध किया गया और इन्हें ऑनलाइन डाटाबेस में शामिल किया गया। 'डिजिटल पुस्तकालय' परियोजना के अंतर्गत ऑनलाइन डाटाबेस पर लगभग 22,000 डिजिटल विज्युअल्स को अपलोड किया गया।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत की डिजिटल रिप्राजिटरी के विकास हेतु सी-डेक, पुणे के साथ एक सहयोगात्मक परियोजना को शुरू किया गया है। सूचना और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित की जाने वाली इस परियोजना के तहत केंद्र द्वारा अपने अकादमिक संसाधनों को डिजिटल रूप में प्रदान किया जाएगा। पिछले वर्ष डिजिटलाइज की गई दुर्लभ पुस्तकों के लगभग 8.00 लाख पृष्ठों को आसानी से उपलब्ध करवाने के लिए इन्हें पीडीएफ फाइलों में परिवर्तित कर दिया गया है। कला निधि प्रभाग में उपलब्ध 2.5 लाख से भी अधिक पांडुलिपियों को कैटलॉग करने की प्रक्रिया जारी है। इस परियोजना को मार्च, 2011 तक पूरा कर लिया जाएगा।

पुस्तकालय द्वारा एसआरसी, बेंगलुरु में माइक्रो-फिल्म रिप्राजिटरी की भी स्थापना की जा रही है। एबीआईए परियोजना के अंतर्गत, एबीआईए डाटाबेस में 582 नए रिकार्ड तैयार किए गए। कुल 365 व्याख्या किए हुए रिकार्ड तैयार किए गए हैं। वियतनाम, रूस, इंडोनेशिया, चीन, लाओस, श्रीलंका, तिब्बत, मंगोलिया, म्यांमार, थाइलैंड, दिल्ली, राजस्थान, तमिलनाडु, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, आंध्र प्रदेश, लद्दाख और खजुराहो के ऐतिहासिक स्थलों और स्मारकों की 10,000 तस्वीरें खरीदने के एक भाग के रूप में श्री बिनाय के. बहल से 4000 तस्वीरों वाली 78 उच्च रिजोल्यूशन वाली डीवीडी, डुप्लिकेट में प्राप्त हुई। देश भर से पांडुलिपियों के बिखरे हुए संग्रह को एक स्थान पर रखने के लिए केंद्र के प्रयास के रूप में विभिन्न ओरियंटल पुस्तकालयों से पांडुलिपियों के लगभग 6000 माइक्रोफिल्म रोल्स प्राप्त किए गए।

विभिन्न साहित्यिक स्रोतों तथा सचित्र पांडुलिपियों से महाभारत पर आंकड़ों का संग्रह किया गया तथा इनका प्रयोग "महाभारत रिटन एंड पिक्टोरियल एक्सप्रेसन" शीर्षक के तहत प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए किया गया। विक्टोरिया एण्ड एलबर्ट संग्रहालय, ब्रिटिश पुस्तकालय तथा रामपुर रज़ा पुस्तकालय जैसे भारतीय स्रोतों से प्राप्त दृश्य संग्रह पर परामर्श किया जा रहा है तथा चुनिंदा तस्वीरों को इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया जाएगा।

जर्मन बुक ऑफिस तथा कला निधि ने दिनांक 20-21 अगस्त, 2010 को "जम्पस्टार्ट – ज्वाइन द डॉट्स 2010" कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में उन लोगों को एक साथ आने का मौका मिला जो बच्चों, पुस्तकों और बाल पुस्तकों के क्षेत्र में कार्य करते हैं।

## संरक्षण और सांस्कृतिक अभिलेखागार

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की संरक्षण प्रयोगशाला देश भर में पांडुलिपियों के रोधात्मक संरक्षण पर कार्यशालाओं का आयोजन करती है। इस प्रयोगशाला द्वारा सभी अभिलेखीय संग्रह, दुर्लभ पुस्तक संग्रह, पुस्तकालय में पुस्तकों और अन्य संदर्भ सामग्री का इन-हाउस संरक्षण आयोजित किया जाता है।

इस वर्ष के दौरान, "राजा दीन दयाल : द आरकाइव फ्रॉम द आईजीएनसीए कलेक्शन" पर आयोजित मुख्य प्रदर्शनी के अतिरिक्त, संरक्षण प्रयोगशाला ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की फोटोग्राफिक सामग्री के संरक्षण पर सेंटर डी रिचरची सूर ला कंजरवेशन डेस कलेक्शंस, पेरिस, सीएनआरएस लैबोरेटरी, फ्रांस के सहयोग से तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। संरक्षण प्रयोगशाला ने बहुत से आंतरिक पुस्तक संग्रहों तथा नृवंशविज्ञान सामग्री का महत्वपूर्ण पुनरुद्धार का कार्य भी किया।

## दृश्य कला विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा अक्टूबर, 2009 में दृश्य कला विभाग की स्थापना की गई थी। इसके मुख्य उद्देश्य महान व्यक्तियों और ऐतिहासिक महत्व के कार्यों का प्रलेखन करना, प्रदर्शनियां आयोजित करना, अभिलेख हेतु दृश्य कला से संबंधित स्रोतों की पहचान करना, दृश्य कलाओं – पेंटिंग, मूर्तिकला, ग्राफिक्स और फोटोग्राफी के क्षेत्रों में कार्यशालाओं, सेमिनारों और व्याख्यानो का आयोजन करना है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर के 150वें जयंती समारोह पर दिनांक 4 से 8 नवम्बर, 2010 को सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में सत्यजीत रे, तपन सिन्हा और कुमार साहनी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा रबीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्यिक कार्यों पर तैयार फिल्मों के आधार पर फिल्मोत्सव 'रबीपरिक्रमा' का आयोजन किया गया। इस फिल्मोत्सव में दिखाई गई फिल्मों में 'चारुलता, मोनिहारा और सम्पति' फिल्में शामिल हैं। फीचर फिल्मों के अतिरिक्त टैगोर और उनकी रचनाओं से संबंधित वृत्तचित्र भी प्रतिदिन प्रदर्शित किए गए।



## मीडिया निर्माण एकक

इस एकक ने भारतीय सिनेमा पर श्री बी.डी. गर्ग के जीवन-पर्यंत संग्रह को प्राप्त किया। 2 करोड़ रु. की लागत से खरीदी गई इस सामग्री में भारतीय सिनेमा से संबंधित नैगेटिव्स, फोटोग्राफ्स, पुस्तकें और अन्य साहित्य शामिल हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने कांवडियों, छठ पूजा, दिल्ली में मुहर्रम तथा सिक्किम के शिल्प पर क्षेत्र प्रलेखन का कार्य भी पूरा किया। इस एकक ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के कार्यक्रमों का व्यापक प्रलेखन किया। इस केंद्र ने लोक प्रचार के लिए अब तक 45 डीवीडी तैयार की हैं।

## सांस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा सांस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना यूएनडीपी द्वारा सहायता प्रदत्त 'स्ट्रैथनिंग ऑफ नेशनल फेसिलिटी फॉर इंटरएक्टिव मल्टीमीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सिज' शीर्षक के अंतर्गत मल्टीमीडिया प्रलेखन परियोजना के साथ वर्ष 1994 में की गई थी। विषय-विशेषज्ञों के दिशा-निर्देशन के तहत, एक टीम को इंटरएक्टिव मल्टीमीडिया-डॉक्यूमेंटेशन तथा गहराई से सांस्कृतिक संसाधनों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस विशेषज्ञता का प्रयोग यह दर्शाने में किया जा रहा है कि संस्कृति की समग्र तथा समेकित अवधारणा में सांस्कृतिक विरासत को किस प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है। वे क्षेत्र जिनमें इस परियोजना ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं वे हैं, कला विधाओं और सूचना प्रौद्योगिकी के बीच सहयोग स्थापित करना जिससे नई प्रौद्योगिकियों तथा सांस्कृतिक प्रलेखन के प्रदर्शन, विकास तथा उसका उपयोग करना संभव हुआ है। नए डिजाइन-मॉडल, विकास प्रक्रियाएं तथा पुनः प्रयोग किए जा सकने वाले सॉफ्टवेयर उपकरणों, विशेषकर उच्च गुणवत्ता वाली मल्टी मीडिया विषय-वस्तु सृजन के लिए लक्षित उपकरणों की परिकल्पना की गई है, इन्हें विकसित किया गया है तथा परियोजनाओं में इनका अनुप्रयोग किया गया है।

दिनांक 3 मई, 2010 को हंगरी के पेंटर 'एलिजाबेथ सेस ब्रूनर तथा एलिजाबेथ ब्रूनर जिन्होंने भारत को अपना घर बना लिया है के जीवन और कार्यों पर एक इंटरएक्टिव डीवीडी जारी की गई। दिनांक 26 अक्टूबर, 2010 को 'मैन एंड मास्क' शीर्षक के तहत मल्टीमीडिया, डीवीडी जारी की गई। इसमें दुनिया भर की मास्क परम्पराओं को दर्शाया गया है, इसमें समृद्ध भारतीय परम्परा विषय-वस्तु पर जोर दिया गया है तथा आदमी के दिमाग तथा मास्क के बीच संबंधों की खोज की गई है।

सीआईएल ने कक्षा VI से IX तक के बच्चों के लिए एनसीईआरटी हेतु 'इंडियन आर्ट्स' मल्टी मीडिया सीडी रोम भी तैयार की। इसे दिनांक 1 सितम्बर, 2010 को माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री कपिल सिब्बल द्वारा जारी किया गया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने दिनांक 24 सितम्बर से 3 अक्टूबर, 2010 को तंजावुर, तमिलनाडु में पेरिया कोविल (बृहदेश्वर मंदिर) की प्राण-प्रतिष्ठा के सहस्राब्दी आयोजनों में भाग लिया। यह तीर्थ-मंदिर इस केंद्र की क्षेत्र सम्पदा योजना के तहत आयोजित की जा रही दो पायलट परियोजनाओं में से एक है। इस मंदिर के अभिन्यास, वास्तुकला, प्रतिभा-विज्ञान और परम्पराओं से संबंधित जानकारी को आयोजनों के दौरान इंटरएक्टिव कम्प्यूटर कियोस्क के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। पुस्तकों और डीवीडी के रूप में मंदिर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रकाशनों में जारी की गई जानकारी को भी प्रदर्शित किया गया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के केंद्रीय पुस्तकालय से 2300 दुर्लभ पुस्तकों को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की वेबसाइट [www.ignca.nin.in](http://www.ignca.nin.in) पर अपलोड कर दिया गया है। कला और संस्कृति से संबंधित संसाधनों को बढ़ाने के लिए तथा उन्हें डिजिटल रूप में उपलब्ध करवाने हेतु कई पुरातात्विक स्थलों का वास्तविक रूप में अध्ययन करने के बाद असम तथा राजस्थान के पुरातात्विक स्थलों की तस्वीरों को वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 25,201,502 लोगों ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की वेबसाइट को देखा।

डिजिटीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पुस्तकालय से 12,274 दुर्लभ पुस्तकों, 6370 माइक्रोफिच से 1,02,579 पांडुलिपि फोलियोज तथा 44,172 स्लाइडों का डिजिटीकरण किया गया। सीआईएल को स्मारकों और एंटीक्विटीज राष्ट्रीय मिशन (एनएमएमए) द्वारा प्राप्त किए गए पंजीकरण फार्मों का डिजिटीकरण करने का कार्य सौंपा गया है। अब तक, 200, 824 फार्मों को एकत्रित तथा उन्हें डिजिटलाइज किया गया है, कुछ को 3डी इमेजिंग के साथ डिजिटलाइज किया गया है।

## कलाकोश प्रभाग

यह प्रभाग कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठपरक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय और विविध विषयगत आयामों में अनुसंधान करता है। इस प्रभाग के कार्यक्रमों को मोटेतौर पर निम्न प्रकार से चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

**कलातत्त्वकोश** : यह भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का एक संग्रह है। इस कार्यक्रम के लिए चयनित शब्द उनके व्यापकता के सर्वेक्षण तथा उनके अंतर-विषयक स्वरूप के आधार पर चुने गए हैं। किसी संकल्पना के सबसे अमूर्त रूप से कला के मूर्त क्षेत्रों तक के विकास की खोज की गई है। प्रत्येक संकल्पना की खोज कई विषयों और प्राथमिक पाठ्य-वस्तु के माध्यम से की गई है। इन शब्दों को कतिपय व्यापक तार्किक या सिमेंटिक श्रेणियों के अनुसार समूहों में बांटा गया है।

इस प्रकार से अब तक प्रकाशित किए गए प्रथम 6 खण्डों में व्याप्ति; देश काल; महाभूत; सृष्टि विस्तार; रूप/आकृति; और आभास पदों को शामिल किया गया है। कलातत्त्वकोश के सातवें खण्ड में 17 पद हैं जिन्हें आयतन शीर्षक के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। इस खण्ड के जून, 2011 तक प्रकाशन के लिए तैयार हो जाने की उम्मीद है। दो और खण्डों को भी तैयार करने के लिए कार्य जारी है जिनमें क्रमशः प्रतीक और अभिप्राय तथा कला-शिल्प से संबंधित पदों को शामिल किया जाएगा।

**कलामूलशास्त्र** : यह दूसरा लम्बे समय का जारी रहने वाला कार्यक्रम है जिसमें व्याख्या किए गए मूल पाठों का प्रकाशन कार्य तथा वास्तुकला, मूर्तिकला, पेंटिंग, संगीत, नृत्य, थियेटर जैसी भारतीय कलाओं को उनकी वैज्ञानिक तथा तकनीकी टिप्पणियों के साथ अनूदित किया जाता है। प्रारंभ में 108 मूल-पाठों की श्रृंखला प्राप्त की गई थी, जिनमें से 28 मूल-पाठों को 60 खण्डों में पहले ही प्रकाशित कर दिया गया है। इस वर्ष प्रकाशित किया गया 29वां मूल-पाठ रागलक्षणा (18वीं शताब्दी) शीर्षक के अंतर्गत कर्नाटक संगीत पर एक शोध-प्रबंध है जिसका अनुवाद प्रो० आर. सत्यनारायणन द्वारा किया गया है।

विभिन्न विषयों जैसे वैदिक, कर्मकांड तथा वास्तुकला, मूर्तिकला और संगीत से संबंधित लगभग 17 मूल-पाठों को उनके संबंधित क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विद्वानों के साथ तैयार किया जा रहा है। इनमें से प्रो० टी.एन. धर्माधिकारी द्वारा सम्पादित और अनूदित नियत पाठ बौद्धयान श्रोतसूत्र तैयारी के अंतिम चरण में है और डा० एच. जी. रानाडे द्वारा सम्पादित और अनूदित कैमिनिया ब्राह्मण भी प्रेस को सौंपे जाने हेतु तैयारी के अंतिम चरण में है।

**कलासमालोचना** : यह कार्यक्रम द्वितीयक सामग्री के विश्लेषण और व्याख्या के प्रकाशन से संबंधित है। इन्हें कला समालोचना का उत्कृष्ट समझा जाता है। इस श्रृंखला में महत्वपूर्ण लेखनों तथा उन प्रतिष्ठित विद्वानों के कार्यों के संस्करणों से संबंधित खण्डों को शामिल किया गया है जिन्होंने मौलिक संकल्पनाओं तथा चिरस्थायी

स्रोतों के सहारे विविध परम्पराओं को जोड़कर संचार स्थापित करने का कार्य किया है। विद्वता के ये महत्वपूर्ण कार्य प्रायः सुलभ नहीं होते क्योंकि या तो उनका मुद्रण नहीं हो पाता या उनका अंग्रेजी में अनुवाद कार्य नहीं हो पाता है। इस कार्यक्रम की शुरुआत पुनः संपादित पुनःमुद्रित तथा चुनिंदा लेखकों और कार्यों के अनुवाद की श्रृंखला के साथ की गई है। कलासमालोचना श्रृंखला की इस श्रेणी के अंतर्गत आनन्द के. कुमारस्वामी के लेखन के 17 खण्डों को पहले ही प्रकाशित किया जा चुका है। 'ठाकुर जयदेव सिंह के चुनिंदा निबंध' के सम्पादन का कार्य जारी है। 'सचित्र बालिसत्र भगवत पुराण' के प्रकाशन का कार्य भी जारी है। इस प्रकाशन के माध्यम से भारतीय पेंटिंग की पूर्वी स्टाइल को दर्शाया जाएगा। इस श्रृंखला के अंतर्गत तैयार की जा रही एक और प्रकाशन 'रस देश' है, जो 16वीं सदी के प्रसिद्ध संत कवि स्वामी श्री हरिदास जी की कविताओं पर आधारित है। इस प्रकाशन के माध्यम से भारतीय कलाशास्त्र के लिए विशिष्ट योगदान को प्रकाश में लाया जाएगा। इस श्रृंखला के अंतर्गत शीघ्र ही प्रकाशित किया जाने वाला एक और प्रकाशन 'कर्नाटक के दो कलामुख मंदिर' है।

इस श्रृंखला के अंतर्गत दूसरा मुख्य जोर उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के चुनिंदा पत्रों के प्रकाशन पर दिया गया है जिन्होंने अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान इसलिए दिया है क्योंकि व्यक्तिगत नोटिंग्स से उनकी विद्वता के पीछे कार्य कर रही विचार प्रक्रिया का निर्धारण करने में सहायता मिली है। अब तक प्रकाशित किए गए पत्रों में आनन्द के. कुमारस्वामी रोमेन रोलैंड, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी के पत्र शामिल हैं। अब एलिजाबेथ बर्नर, जिन्होंने भारत को अपना घर मान लिया था, के चयनित पत्रों को शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

**अध्ययन क्षेत्र** : इस कार्यक्रम के माध्यम से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र दक्षिण के पड़ोसी क्षेत्रों, दक्षिण-पूर्वी एशिया, मध्य एशिया तथा चीन के साथ सांस्कृतिक संबंध और पारस्परिक प्रभाव की खोज करता है। इस वर्ष के दौरान, डा० बच्चन कुमार द्वारा सम्पादित 'दक्षिण-पूर्वी एशिया की कला और अभिलेख विज्ञान' पर एक प्रकाशन जारी किया गया है।

## जनपद सम्पदा

जनपद-सम्पदा, सांस्कृतिक और आर्थिक तथा सामाजिक-आर्थिक दृष्टियों से समुदायों की जीवन-शैलियों, मौखिक परम्पराओं, लोक-साहित्य तथा कला पद्धतियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित कार्य करता है।

इस प्रभाग द्वारा वर्ष 2010 में आयोजित किए गए 'आख्यान' उत्सव में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सार्वजनिक व्याख्यानों, भारत के कई क्षेत्रों के मुखेटों, कठपुतलियों और पेंटिंग्स, फिल्म शो तथा प्रतिदिन किए जाने वाले अभिनय को शामिल किया गया था। इसमें निम्नलिखित व्याख्यान दिए गए : डा० कपिला वात्सायन द्वारा 'मास्क्स अनमास्कड, पपेट्स इनएनिमेटेड एंड एनिमेट, स्टोरिज विदइन स्टोरिज', डा० नीना सुबानी द्वारा 'मेकर्स ऑफ टेल : कावड ट्रेडिशन ऑफ राजस्थान', श्री दादी पदुमजी द्वारा 'थू द आईज ऑफ मॉडर्न प्रैक्टिशनर्स : ट्रेडिशनल एंड मॉडर्न फॉर्मस ऑफ इंडियन पपेटरी', प्रो० ज्योतिन्द्र जैन द्वारा; 'इंडियन पिक्चर शोमैन : ट्रेडिशन एंड ट्रांसफोरमेशन' और प्रो० जान एमिघ द्वारा 'माइंडिंग डैमन्स, मास्किंग गोड्स : द प्रहलाद नाटक ऑफ उड़ीसा'।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने अपने नृजाति वर्णन संग्रह को व्यापक रूप से बढ़ाया है। आदि दृश्य (प्राइमिवल साइट) परियोजना के अंतर्गत, जिसके लिए चट्टान कला एक महत्वपूर्ण संघटक है, व्यापक क्षेत्र डाटा का संग्रह किया गया। यह केंद्र चट्टान कला, जिसमें अभिलेख विज्ञान, मानव विज्ञान, भूविज्ञान, एथनो वनस्पति विज्ञान और रसायन विज्ञान शामिल हैं, के अध्ययन हेतु बहु-विषयक अवधारणा को अपनाता है। यह प्राचीन चित्रकलाओं की अवस्थिति का पता लगाने, उनको कॉपी करने तथा पुनः तैयार करने की अधुनातन प्रौद्योगिकी का प्रयोग करता है।

जीवन शैली अध्ययन (लोक परम्परा) के अंतर्गत, 'इकोज फ्रॉम द हर्ट' परियोजना के तहत कम प्रसिद्ध मुस्लिम महिला लेखकों (1920-25) द्वारा उर्दू में अंग्रेजी लेखन संग्रह का कार्य शुरू किया गया था। इस्लामिक विरासत कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, 'डॉक्यूमेंटेशन ऑफ अरेबिक मलयालम : लिग्विस्टिक-कल्चरल ट्रेडिंशंस ऑफ मोपला मुस्लिम्स ऑफ केरल' शुरू किया गया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने महाभारत की मौखिक-लोक और जनजातीय परम्पराओं के व्यापक प्रलेखन का कार्य शुरू किया है। इस केंद्र ने रामकथा परम्परा पर पहले ही काफी कार्य पूरा कर लिया है। कुछ अन्य जीवन पद्धतियों के अध्ययन हेतु शुरू किए गए कार्यक्रम इस प्रकार हैं : 'इमर्जिंग रिचुअल स्फेयर्स एंड चेंजिंग अरबन स्फेयर्स : मोबिलिटी, आइडेनटिटी एंड डॉयनेमिक्स ऑफ द कांवाडिया, छठ पूजा एण्ड दुर्गा पूजा इन द नेशनल केपीटल रीजन; और राम्मन, गढ़वाल का परम्परागत थियेटर।

जनपद-सम्पदा प्रभाग ने दिनांक 25 से 29 अप्रैल, 2010 को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से असम की मोबाइल थियेटर कंपनी

द्वारा आयोजित 'कोहिनूर उत्सव' का भी आयोजन किया जिसमें चार नाटकों का मंचन किया गया, जिन्हें लोगों ने काफी सराहा।

## कला-दर्शन

कला-दर्शन प्रभाग इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण और विविध कलाओं के बीच सृजनात्मक तथा समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। यह प्रभाग इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के शैक्षणिक कार्यकलापों से संबंधित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों और व्याख्यानों, लेक्चर-डेमोस, कार्यशालाओं तथा कला-प्रस्तुतियों का आयोजन करता है, जो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के वृहत अध्याय को परिपूर्ण बनाता है।

जब 20वीं सदी में ग्रामोफोन शुरू किए गए थे तब महिलाओं ने अपनी आवाज अग्रणी रूप से रिकार्ड करवाई थी। एक सेमिनार 'थिंक थू' का आयोजन किया गया जिसमें 'गानेवालिओं' की इस प्रक्रिया तथा रिकार्ड किए संगीत में उनके योगदान का विश्लेषण किया गया। 'वूमन ऑन रिकार्ड - सेलिब्रेटिंग द म्यूजिक ऑफ वूमन इन अर्ली 20 सेंचुरी इंडिया' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में इनमें से रिकार्ड किए गए कुछ गानों को भी गाया गया, जिन्हें तीन संगीत-समारोहों में आज के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उस समय की रंगमंच कर्मी श्रीमती विद्या शाह के साथ कथक नृत्यांगना श्रीमती रानी खानम द्वारा 'इन्हीं लोगों ने' विषय पर आयोजित एक लिखित प्रस्तुति में वृत्तांत, विज्युअलस तथा गायन के माध्यम से दर्शकों को इन अतुल्य महिला कलाकारों के समय और उनके सामने आई चुनौतियों के बारे में बताया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन मीडिया और वैकल्पिक संचार केंद्र (सीएमएसी) के सहयोग से किया गया था।

'चम्बा रुमाल' एक सांस्कृतिक संदर्भ है। चम्बा क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक अवसरों पर कढ़ाई किया हुआ एक चौकोर कपड़ा भेंट किए जाने की परम्परा है। चम्बा की महिलाएं सुई से किए जाने वाले कार्य में माहिर होती हैं। मशीन के डिजाइन आने तथा तैयार मुद्रित कपड़े बाजार में उपलब्ध होने से यह परम्परा कमजोर पड़ गई है। दिल्ली शिल्प परिषद् ने इस कला को पुनर्जीवित करने का कार्य शुरू किया है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने दिल्ली शिल्प परिषद् के साथ मिलकर दिनांक 30 मार्च से 18 अप्रैल, 2010 को एक रुमाल प्रदर्शनी तथा कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें लोग इस कला को सीख सकते थे।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने दिनांक 28 से 30 दिसम्बर, 2010 को 'इंडिया : सेल्फ इमेज एंड काउंटर इमेज' विषय पर एक 'क्रास-कल्चरल कनवर्शेशन' का आयोजन किया, जिसमें डॉ० कर्ण सिंह, प्रोफेसर अशीष नंदी, प्रोफेसर लोकेश चन्द्र तथा नोबल पुरस्कार विजेता श्री जे. गालतुंग ने भाग लिया।

### क्षेत्रीय केंद्र

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के तीन क्षेत्रीय केंद्र हैं – पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी; तथा दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु। गुवाहाटी स्थित क्षेत्रीय केंद्र पूर्वोत्तर से संबंधित परियोजनाएं चलाता है तो क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के कलाकोश प्रभाग की प्रकाशन श्रृंखला से संबंधित कार्यों की देख-रेख करता है। वहां के स्कालर्स संदर्भ कार्ड तैयार करते हैं जिनमें चुने हुए प्रकाशनों, विशेषकर कलातत्त्वकोश श्रृंखला के अंतर्गत आने वाले प्रकाशनों के विषयों से संबंधित पाठों तथा सामग्री की विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है। इस वर्ष कलातत्त्वकोश के खण्डों हेतु लिखे गए लेखों के विभिन्न शब्दों के 1750 कार्ड तैयार किए गए। वर्तमान में, वाराणसी केंद्र में संदर्भ, उद्धरण तथा उनके अनुवाद के साथ 58,654 टाइप किए हुए कार्ड हैं। बेंगलुरु स्थित दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र प्रलेखन कार्य, परियोजना अध्ययन तथा दक्षिणी राज्यों के प्रकाशन का कार्य करता है।

### जनता के लिए

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एक अकादमिक अनुसंधान संगठन है जो मुख्यतः कला के प्रलेखन, परिरक्षण, संरक्षण तथा उनका प्रचार करने का कार्य करता है। इस केंद्र में एक पुस्तकालय है जहां अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं की पुस्तकें बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। पुस्तकालय की संदर्भ सुविधा सभी के लिए खुली है। इस पुस्तकालय में नाममात्र शुल्क पर फोटोकापी भी प्रदान की जाती है। इस पुस्तकालय में अन्य रूपों में भी संदर्भ सामग्री उपलब्ध है अर्थात् माइक्रोफिल्म, स्लाइड, फोटोग्राफ्स तथा श्रव्य-दृश्य रिकार्डिंग। वास्तविक प्रयोक्ताओं द्वारा इन सभी जानकारीयों को प्राप्त किया जा सकता है।

आईजीएनसीए प्रकाशन – पुस्तकें और डीवीडी-सरकारी कामकाजी दिवसों पर कार्यालय समय के दौरान बिक्री काउंटर पर उपलब्ध हैं। इस केंद्र द्वारा समय-समय पर प्रदर्शनियां, व्याख्यानों, वार्ताओं और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जो आम जनता के लिए खुले हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय

कला केंद्र की वेबसाइट को [www.ignca.nin.in](http://www.ignca.nin.in) पर देखा जा सकता है और यह संस्कृति के क्षेत्र में सबसे अधिक देखी जाने वाली साइटों में से एक है।

वर्ष के दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रम इस प्रकार हैं :

#### व्याख्यान

1. दिनांक 7 सितम्बर, 2010 को प्रोफेसर पी.एस. फिलिजत द्वारा 'कलामुख टेम्पल ऑफ कर्नाटक' विषय पर।
2. दिनांक 1 नवम्बर, 2010 को डा० राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा स्वामी श्री हरिदास की कविताओं पर आधारित 'केलीमाल : केली उपासना और कला' व्याख्यान।
3. दिनांक 25 नवम्बर, 2010 को प्रोफेसर पी.पी. आप्टे द्वारा 'समरंग सूत्रधारा' व्याख्यान।
4. दिनांक 13 दिसम्बर, 2010 को इंजीनियर अरविंद फडनीस द्वारा 'हाइड्रोलिक्स एयरोनॉटिक्स एंड मैकेनिक्स' विषय पर व्याख्यान।
5. दिनांक 14 दिसम्बर, 2010 को प्रोफेसर निकोलस मिरजोएफ द्वारा 'मॉडर्निटी एंड क्लाइमेट चेंज : द एस्थेटिक्स ऑफ इमरसन' विषय पर व्याख्यान।

#### सेमिनार/व्याख्यान-डेमो/प्रदर्शन

1. 'बिहू उत्सव', दिनांक 17-18 अप्रैल, 2010.
2. अप्रैल, 2010 में 'गानेवालिनों' पर लिखित अभिनय 'इन्हीं लोगों ने'।
3. 3-4 मई, 2010 को 'एलिजाबेथ सेस एंड एलिजाबेथ ब्रूनर : टू हंगरियन लाइवज डिवोटेड टू इंडिया' विषय पर एक सेमिनार।
4. 26 जुलाई, 2010 को 'द इम्पोर्टेंस ऑफ समस्कारा' पर सेमिनार।
5. 12 अगस्त, 2010 को 'केन समथिंग बी पॉपुलर, क्लासिकल, एसिएंट एंड मास प्रॉड्यूस्ड एट द सेम टाइम? प्रॉब्लेमटाइजिंग द हिस्ट्रीओग्राफी ऑफ अर्ली इंडियन टेराकोटा' विषय पर डा० नमन आहुजा द्वारा व्याख्यान।
6. दिनांक 19 से 22 अगस्त, 2010 को 'इमेजिंग एशिया 2010 : द कल्चर एंड पॉलिटिक्स ऑफ एशियन सिनेमा' विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन।

7. दिनांक 20–21 अगस्त, 2010 को 'जम्पस्टार्ट—ज्वाइन द डॉट्स 2010' विषय पर एक सेमिनार।
8. दिनांक 8 सितम्बर, 2010 को 'टूवर्ड्स ए न्यू ऐरा ऑफ वेल्थू क्रिएशन' विषय पर एक सेमिनार।
9. दिनांक 17 से 26 सितम्बर, 2010 को 'वीणा उत्सव' का आयोजन।
10. दिनांक 24 सितम्बर, 2010 को 'एंगल ऑफ द अबॉरिजिनल्स: डॉ0 वेरियर एल्विन' नामक फिल्म का प्रदर्शन।
11. दिनांक 7 दिसम्बर, 2010 को सासकिया केरिनबवम द्वारा 'मुराई : द राइट टू परफॉर्म (मेलाक्करर समुदाय, तमिलनाडु की परम्पराएं) विषय पर व्याख्यान।
12. दिनांक 28 सितम्बर, 2010 को 'स्टडी एंड आइडेंटिफिकेशन ऑफ द आइकॉनोग्राफी ऑफ अलचाई' विषय पर डा0 निर्मला शर्मा द्वारा मल्टीमीडिया प्रस्तुति।
13. दिनांक 28 से 30 दिसम्बर, 2010 को 'इंडिया : सेल्फ-इमेज एंड काउंटर इमेज' विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन।
14. प्रदर्शन : आख्यान : दुर्योधन वध (ग्लोव कठपुलियों, केरल) ; कल्पतरु – इच्छा पूरी करने वाला पेड़ (आधुनिक कठपुतली थियेटर); अमर सिंह राठौड़ (राजस्थानी कठपुतलियाँ); सुंदर कांड : टेमिंग द वाइल्ड (डॉल्स थियेटर); चूड़ामणि – लंकादहन (स्ट्रिंग कठपुलियाँ, केरल); सेराइकेला छाहू; रम्मन; पुरुलिया छाहू; मसिसुर मृदिनी; गुलिका एंड पोर्टन थेय्यम; याक नृत्य।

### प्रदर्शनियां

1. 19 नवम्बर, 2010 से 24 फरवरी, 2011 तक "राजा दीन दयाल : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के संग्रह से स्टूडियो अभिलेखागार।"
2. 30 मार्च से 18 अप्रैल, 2010 तक "रास : चम्बा रूमाल",।
3. 29 मार्च से 13 अप्रैल, 2010 तक "म्यूजिक एंड नोस्टल्लिया"।
4. 6 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2010 तक "द स्ट्रोक्स ऑफ जीनियस"।
5. "इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में उपलब्ध ब्रिटिश लाइब्रेरी, ब्रिटिश म्यूजियम एंड विक्टोरिया तथा एल्बर्ट म्यूजियम से विज्युअल संग्रह।"

6. 30 अप्रैल से 31 मई, 2010 तक "द काल ऑफ इंडिया: पेंटिंग्स बाय एलिजाबेथ सेस एंड एलिजाबेथ ब्रूनर"।
7. "आख्यान – मास्क, पप्पेट्स एंड पिक्चर शोमैन की प्रदर्शनी।"
8. 12 से 28 अगस्त, 2010 को "इंडियन टेराकोटा" पर फोटोग्राफ्स प्रदर्शनी।
9. 20 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2010 को "काल ऑफ द टाइगर", प्रदर्शनी।
10. 20 अक्टूबर, 2010 ससे 20 जनवरी, 2011 को "दिल्ली – ए लिविंग हेरिटेज" प्रदर्शनी।

### प्रकाशन

#### पुस्तकें

1. डॉ0 आर. नागास्वामी द्वारा 'बृहदेश्वर टेम्पल : फॉर्म एंड मीनिंग'।
2. प्रो0 आर. सत्यानारायण द्वारा सम्पादित और अनूदित 'रागलक्षण'।
3. डॉ0 बच्चन कुमार द्वारा संपादित 'आर्ट एंड आर्कियोलॉजी ऑफ साउथ ईस्ट एशिया'।
4. एलिजाबेथ सेस और एलिजाबेथ ब्रूनर द्वारा पेंटिंग्स कैटलॉग 'द काल ऑफ इंडिया एक्सहिबिशन'।
5. राजा दीन दयाल के जीवन और कार्यों पर कैटलॉग 'राजा दीन दयाल प्रदर्शनी'।

#### फिल्में

1. लैंडस्केपिंग द डिवाइन – स्पेस एंड टाइम अमंग द गद्दीज।
2. अल्लाह पर डॉक्यूमेंटरी।
3. थोड़ा का प्रलेखन।
4. हिमाचल प्रदेश की लोक गाथा।

#### डीवीडी

1. एलिजाबेथ सेस और एलिजाबेथ ब्रूनर की पेंटिंग्स पर दो पिलग्रिम्स इंटरएक्टिव डीवीडी।
2. मैन एंड मास्क।
3. इंडियन आर्ट्स।





## अकादमी

### पात्रता

इस योजना के तहत कोई भी व्यक्ति सहायता हेतु पात्र है, बशर्ते कि वह –

- कला, साहित्य आदि हेतु उनका योगदान महत्वपूर्ण हो। परम्परागत विद्वान जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया हो भले ही उनकी कोई रचना प्रकाशित न हुई हो;
- उनकी व्यक्तिगत आय (पति/पत्नी की आय सहित) 4000 रु. प्रति माह से अधिक न हो; और
- उनकी आयु 58 वर्ष से कम न हो (यह शर्त आश्रितों पर लागू नहीं है)।

### सहायता राशि

इस योजना के दो घटक हैं – (1) केन्द्रीय कोटा – केन्द्रीय सहायता 4000 रु. प्रतिमाह है और (2) केन्द्रीय राज्य कोटा – केन्द्रीय सहायता राशि 3500 रु. प्रतिमाह है जबकि शेष 500 रु. का भुगतान संबंधित राज्य सरकार द्वारा सीधे लाभार्थी को किया जाता है।

### कब तक सहायता दी जाएगी

मासिक सहायता वर्ष दर वर्ष आधार पर जारी रखी जाती है बशर्ते लाभार्थियों द्वारा अपने जीवित होने के बावत प्रमाणपत्र तथा आय प्रमाणपत्र प्रस्तुत किया जाए।

लाभार्थी की मृत्यु होने की स्थिति में वित्तीय सहायता पति/पत्नी को आजीवन अथवा आश्रितों को उनके विवाह होने अथवा रोजगार प्राप्त करने अथवा 21 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक दी जाती है।

### चयन प्रक्रिया

नए मामलों की चयन विशेषज्ञ समिति के जरिए किया जाता है।

### संवितरण प्रक्रिया

इस योजना के तहत वित्तीय सहायता राशि संवितरित करने की जिम्मेदारी वर्ष 2009-10 से एलआईसी को आउटसोर्स की गई है।

**लाभार्थियों की संख्या :** 2872 (2521 केन्द्रीय कोटा और 351 केन्द्रीय-राज्य कोटा)

वर्ष 2010-11 के दौरान लाभार्थियों को संवितरित करने हेतु सेवा प्रदाता एलआईसी को फरवरी 2011 तक 11.49 करोड़ रु. की राशि दी गई है।

3.3



## साहित्य अकादमी

### 3.3.1

साहित्य अकादेमी एक राष्ट्रीय संगठन है जिसका उद्देश्य भारतीय साहित्य के विकास के लिए सक्रियता से कार्य करना और इस क्षेत्र में उच्चस्तरीय मानदंड स्थापित करना, सभी भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक कार्यकलापों को प्रोत्साहित करना और उनका समन्वयन करना और इनके माध्यम से राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता के उद्देश्य को प्रोत्साहित करना तथा पूरा करना है।

इस प्रकार साहित्य अकादेमी देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और भाषाई विकास का केंद्रीय संस्थान है और यह एकमात्र ऐसी संस्था है जो अंग्रेजी सहित 24 भारतीय भाषाओं के साहित्यिक कार्यकलापों को संचालित करती है। अपने अस्तित्व के 54 वर्षों में इसने संगोष्ठियों, व्याख्यानों, वार्ताओं, परिचर्चाओं, विचार-विमर्श, पाठन एवं प्रदर्शन के जरिए अच्छी रुचि एवं स्वस्थ पठन-पाठन की आदत को विकसित किया है; भारत के विभिन्न भाषाई एवं साहित्यिक अंचलों के बीच संवाद को जीवंत बनाए रखा है तथा यह कार्यशालाओं एवं व्यक्तिनिष्ठ समनुदेशनों के माध्यम से परस्पर अनुवाद को बढ़ाने और पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, लेखकों की सभी विधाओं की रचनात्मक कृतियों, ग्रंथ सूचियों, विश्वकोशों, शब्दकोशों, संदर्भ ग्रंथों, राइटर्स डायरेक्ट्री और साहित्यिक इतिहासों के प्रकाशन से गंभीर साहित्यिक संस्कृति विकसित करने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रही है।

साहित्य अकादेमी का दिल्ली में अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों सहित एक विशिष्ट बहुभाषी पुस्तकालय है। इसके संग्रह में साहित्य और सम्बद्ध विषयों की पुस्तकें हैं। यह पुस्तकालय आम लोगों के लिए है बशर्ते कि उन्होंने अपना नामांकन कराया हो। यहां लगभग 1,51,704 पुस्तकों का संग्रह है। अकादेमी का पुस्तकालय दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों को सेवाएं प्रदान करता है। यह पुस्तकालय समकालीन भारतीय साहित्य में अध्ययन और अनुसंधान का महत्वपूर्ण स्रोत है और इसके 10,000 से भी अधिक पंजीकृत सदस्य हैं। नई दिल्ली स्थित मुख्यालय के पुस्तकालय में 3330 पुस्तकें, क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलौर के पुस्तकालय में 532 पुस्तकें, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के पुस्तकालय में 5109 पुस्तकें और क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के पुस्तकालय में 208 पुस्तकें खरीदी गईं।

साहित्य अकादेमी ने अपने अस्तित्व में आने के बाद से अब तक 24 भारतीय भाषाओं में लगभग 6000 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। दिसम्बर, 2010 तक इसके द्वारा 422 पुस्तकें (पुनः मुद्रण सहित) प्रकाशित की जा चुकी हैं।





## कार्यक्रम

इस अकादेमी द्वारा किसी लेखक को दिया जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान भारतीय साहित्य में उसके अद्वितीय योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए उसे अपने फैलो के रूप में चयनित करके दिया जाता है। यह सम्मान 'साहित्य की अमर कृतियों' के लिए आरक्षित है तथा इनकी एक समय पर अधिकतम संख्या 21 होती है। प्रोफेसर गोपीचन्द्र नारंग, विख्यात सिद्धांतवादी, साहित्यिक समालोचक और विद्वान, डा० खुशवंत सिंह, प्रतिष्ठित भारतीय अंग्रेजी लेखक, श्री भोलाभाई पटेल, प्रतिष्ठित गुजराती लेखक तथा श्री कुंवर नारायण, प्रतिष्ठित हिन्दी कवि, डा० केदारनाथ सिंह, प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक तथा श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', प्रतिष्ठित मैथिली लेखक का चयन फैलो की सूची में शामिल होने के लिए किया गया है।

**प्रेमचन्द फैलोशिप** का नामकरण प्रेमचन्द के नाम पर किया गया है तथा इसकी शुरुआत उनकी 125वीं जयंती पर की गई थी तथा यह फैलोशिप प्रत्येक वर्ष सार्क देशों से संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रदान की जाती है। प्रेमचन्द फैलोशिप बांग्लादेश की प्रतिष्ठित उपन्यास लेखिका सुश्री सेलीना हुसैन को दिया गया है।

**डा० अनन्द कुमारस्वामी फैलोशिप** की स्थापना साहित्य अकादेमी द्वारा महान विद्वान एवं कला प्रेमी डा० आनन्द कुमारस्वामी के नाम पर की गई है तथा यह फैलोशिप प्रत्येक वर्ष एशियाई कला, संस्कृति, साहित्य एवं भाषाई अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रदान की जाती है। मरलाई एलुनन, फिलिपींस की प्रसिद्ध लेखक एवं विद्वान, का चयन डा० आनन्द कुमारस्वामी फैलोशिप के लिए किया गया था। वह दिनांक 8 सितम्बर से 14 अक्टूबर, 2010 को भारत में थी तथा उन्होंने विभिन्न स्थलों एवं विश्वविद्यालयों का दौरा किया।

**वार्षिक पुरस्कार** नई दिल्ली में दिनांक 16 फरवरी, 2010 को 24 भाषाओं के 24 लेखकों को प्रदान किए गए थे। इस कार्यक्रम के बाद दिनांक 17 फरवरी, 2010 को लेखकों की बैठक आयोजित की गई थी जिसमें पुरस्कार प्राप्त लेखकों ने अपनी सृजनात्मकता के बारे में चर्चा की।

**अनुवाद पुरस्कार** 23 भाषाओं के 23 अनुवादकों को प्रदान किए गए थे। निर्णय लेने की वर्षभर चली प्रक्रिया में 433 लेखकों, विद्वानों और आलोचकों, अनुवादकों और अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त संबंधित भाषाओं के अनेक संघों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम 20 अगस्त, 2010 को गोवा में आयोजित किया गया था।

**भाषा सम्मान** के लिए गैर मान्यता प्राप्त भाषाओं की श्रेणी में 13 लेखकों/विद्वानों को प्रदान किया गया। चार लेखकों और विद्वानों को प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य (वर्ष 2008 एवं 2009 प्रत्येक के लिए दो) में योगदान के लिए तथा नौ लेखकों और विद्वानों को 6 गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं : अवधी, बुंदेली, गढ़वाली, कच्छी, चकमा तथा राजबंशी में योगदान के लिए यह पुरस्कार दिया गया।

## कार्यकलाप

साहित्य अकादेमी ने इस अवधि के दौरान विदेशों तथा भारत के छोटे कस्बों एवं महानगरों में 267 कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस अवधि के दौरान अकादेमी द्वारा आयोजित किए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम इस प्रकार हैं :

## सेमिनार

- दिनांक 9-10 जनवरी, 2010 को गांधीधाम मैत्री मंडल, आदिपुर तथा सिंधी साहित्य अकादेमी, गांधीनगर के सहयोग से आदिपुर में 'हुंडराज दुख्याल' पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 28-29 जनवरी, 2010 को मदुरै में 'तमिल साहित्य के लिए प्रगतिशील आंदोलन का योगदान विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 30-31 जनवरी, 2010 को सोमनाथ (गुजरात) में 'गुजराती संत साहित्य : उद्भव एवं परम्परा' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 3-4 फरवरी, 2010 को स्कॉटिश चर्च कॉलेज के सहयोग से कोलकाता में 'मणिक बंदोपाध्याय के कार्य का पुनर्मूल्यांकन' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 3-5 फरवरी, 2010 को तिरुूर में 'डिस्सेंट, प्रोटेस्ट एंड लिटरेचर इन ऑनर ऑफ कमला सूरैया' विषय पर एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 4-6 फरवरी, 2010 को गुवाहाटी में फारसी विभाग के सहयोग से भारत-फारसी काव्य में वैश्विक शांति (सुलह-एल-कुल)' विषय पर एक तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 4-5 फरवरी, 2010 को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में 'तुलनात्मक भारतीय साहित्य' विषय पर एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;

- दिनांक 5-6 फरवरी, 2010 को गुरुदास कॉलेज के सहयोग से कोलकाता में 'मल्टीवर्स ऑफ फॉल्ककल्चर्स: एन ईस्टर्न परस्पेक्टिव' विषय पर दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 6-7 फरवरी, 2010 को सिरसी में 'आर.वी. भंडारी एवं बाल-साहित्य' पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 6-7 फरवरी, 2010 को बरीपाड़ा में 'पदमश्री' कृष्ण चन्द्र पाणिग्रही की जन्मशती उत्सव को मनाने के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 6-8 फरवरी, 2010 को जम्मू में 'कश्मीरी में लोक साहित्य' विषय पर एक तीन दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 9-11 फरवरी, 2010 को असमी विभाग, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से डिब्रूगढ़ में 'आधुनिक भारतीय साहित्य में समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं की भूमिका का परीक्षण' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 13 फरवरी, 2010 को बोडो लेखक अकादेमी द्वारा शिलांग में 'बोडो साहित्य में देशभक्ति एवं भारतीय राष्ट्र निर्माण में इसका योगदान' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 18-20 फरवरी, 2010 को नई दिल्ली में डा० राम मनोहर लोहिया की जन्मशती को मनाने के लिए 'डा० राम मनोहर लोहिया' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;



सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए श्री गोपीचंद नारंग

- दिनांक 27-28 फरवरी, 2010 को गुजरात सिंधी साहित्य अकादेमी, गांधीनगर एवं सिंधु सेवा समाज, अहमदाबाद के सहयोग से अहमदाबाद में 'मिथस एंड सिम्बल्स इन पोस्ट-इंडिपेंडेंस सिंधी लिटरेचर' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 27 फरवरी, 2010 को गुंटुर में न्यायपति कामेश्वरी 'रेडियो अक्काय्या' पर जन्मशती सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 28 फरवरी, 2010 को तेनाली में गोपीचंद की जन्म शताब्दी पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 28 फरवरी से 1 मार्च, 2010 को विश्व पंजाबी केंद्र, पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला के सहयोग से पटियाला में 'ट्रांजिशनल पंजाबी लिटरेचर एंड कल्चर : चैलेंजिज एंड ऑपरच्युनिटिज' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 2-3 मार्च, 2010 को गौड़ बंगा विश्वविद्यालय के सहयोग से मालदा में 'अनुवाद साहित्य : भारत एवं विदेश' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 6-7 मार्च, 2010 को बेंगलुरु में 'लंकेश 75' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 6-7 मार्च, 2010 को कला अकादेमी, गोवा के सहयोग से '21वीं सदी के प्रथम दशक में पश्चिमी भारतीय साहित्य में अभिज्ञेय प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 11-13 मार्च, 2010 को साहित्य अकादेमी के सहयोग से छेडेमा, कोहिमा में तेनिदिए विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा द्वारा पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं के विशेष संदर्भ के साथ 'जनजातीय साहित्य एवं भाषाएं' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 19-21 मार्च, 2010 को नई दिल्ली में 'उर्दू गद्य एवं काव्य में हास्य एवं हाजिर-जवाबी' विषय पर एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 5-7 अप्रैल, 2010 को पोलाछी, चेन्नई में 'भारतीय भाषाओं में नैतिक साहित्य' विषय पर एक दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;



- दिनांक 18 नवम्बर, 2010 को त्रिपुरा विश्वविद्यालय के सहयोग से अगरतला में 'रबीन्द्रनाथ टैगोर' पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 23-24 नवम्बर, 2010 को पंजाबी भाषा विकास विभाग, पंजाबी सलाहकार बोर्ड के सहयोग से भाई काहन सिंह नाभा के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर पटियाला में 'भारती कविता का छंद शास्त्र' विषय पर एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 28-29 नवम्बर, 2010 को पटना में 'दलित साहित्य' पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 19-20 मई, 2010 को उदयपुर में 'राजस्थानी नाटक' पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 31 जुलाई, 2010 को जम्मू में 'डोगरी साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 13-14 अगस्त, 2010 को पंजाबी साहित्य अकादेमी के सहयोग से लुधियाना में 'टैगोर एज एन इंडियन लीजेंड' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 17-18 सितम्बर, 2010 को दावनगिरी में 'सांस्कृतिक अध्ययन एवं कन्नड़ साहित्यिक अध्ययन' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 20-21 सितम्बर, 2010 को कगिनेले विकास प्राधिकरण, कर्नाटक सरकार के सहयोग से नई दिल्ली में 'भारत के भक्ति आंदोलन में संत कवि कनकदास का साहित्यिक योगदान' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 4-5 अक्टूबर, 2010 को बोडो साहित्य सभा के सहयोग से गुवाहाटी में 'बोडो साहित्य' पर एक दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 7-8 अक्टूबर, 2010 को गारो विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के सहयोग से अगरतला में साहित्य अकादेमी के मौखिक साहित्य पूर्वोत्तर केंद्र द्वारा 'क्रिएशन मिथस इन डिफरेंट नॉर्थ-ईस्टर्न हिल ओरल लैंग्वेजिज' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 20-21 अक्टूबर, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा बी.एन.ई.एस. कॉलेज तथा इस्कॉन के सहयोग से बंगलौर में 'कुमारव्यास कथन' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 9 नवम्बर, 2010 को मिदनापुर में 'रबीन्द्रनाथ टैगोर' पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 10-11 नवम्बर, 2010 को राम पंजवानी न्यास के सहयोग से मुम्बई में 'राम पंजवानी' पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 11-12 नवम्बर, 2010 को एस.एस. भूसनूरमठ के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर बेलगाम में 'शून्य संपदनेय परामर्शच : ए डिस्कार्स' विषय पर एक दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 24-26 नवम्बर, 2010 को गोरखपुर में 'अज्ञेय' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 25-26 नवम्बर, 2010 को रांची में 'वर्तमान में बदलते हुए भारतीय समाज में मातृभाषा की भूमिका' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 25-27 नवम्बर, 2010 को राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय, किशनगढ़ तथा अंतर-विषयक अध्ययन-अनुसंधान संस्थान, जयपुर के सहयोग से 'टैगोर के सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विचार : पुनर्विचार एवं पुनर्मूल्यांकन' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 27-29 नवम्बर, 2010 को अहमदाबाद में 'उमाशंकर जोशी' पर जन्म शताब्दी सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 4-5 दिसम्बर, 2010 को साहित्य अकादेमी, गुजरात साहित्य अकादेमी एवं यूटीएस महिला कला कॉलेज, नादियाड द्वारा 'फ्रॉम लिटरेचर टू सिनेमा : ए क्रिएटिव मैटामोरफोसिस' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 8-10 दिसम्बर, 2010 को जम्मू में 'रामनाथ शास्त्री' पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 9-11 दिसम्बर, 2010 को उदयपुर में 'ड्रीम कैचर: लिटरेचर, क्रिएटिविटी एंड एनालिसिस' विषय पर एक तीन-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया;

- दिनांक 11-12 दिसंबर, 2010 को हैदराबाद में 'तेलुगु लघु कहानियों के 100 वर्ष' विषय पर एक दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 13 दिसम्बर, 2010 को भुवनेश्वर में 'यात्री' पर जन्म शताब्दी सेमिनार का आयोजन किया गया;
- दिनांक 15-16 दिसम्बर, 2010 को मुज्जफरपुर में 'आरसी प्रसाद सिंह' पर जन्म शताब्दी सेमिनार का आयोजन किया गया।

### संगोष्ठियां

- दिनांक 27 अप्रैल, 2010 को श्रीनगर में 'वहाब खार' पर संगोष्ठी।
- दिनांक 14-15 मई, 2010 को मुम्बई में 'पोस्ट इंडिपेंडेंस सिंधी नॉन-फिक्शनल लिटरेचर' विषय पर एक दो-दिवसीय संगोष्ठी।
- दिनांक 25 जुलाई, 2010 को उड़ीसा में 'संथाली ड्रामा' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 28 जुलाई, 2010 को नई दिल्ली में 'ब्रजबोली, कबीन्द्र रबीन्द्र एवं मैथिली' पर संगोष्ठी।
- दिनांक 17 अगस्त, 2010 को नई दिल्ली में 'रिमेमब्रिंग ग्रीएरसन' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 29 अगस्त, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी सेट एलायसियस कॉलेज संस्थान के सहयोग से मंगलौर में 'नॉवल्स एंड नावेलिस्ट' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 15 सितम्बर, 2010 को इम्फाल में 'समसामयिक समाज के प्रति मणिपुरी लेखकों की प्रतिक्रिया' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 16 सितम्बर, 2010 को इम्फाल में 'मणिपुरी में महिला लेखन' विषय पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 30 सितम्बर, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा शास्वती-स्त्री शक्ति विकास केंद्र, भारती विद्यापीठ के सहयोग से पुणे में 'दुर्गा भागवत : जीवन एवं साहित्यिक कृतियां' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 3 अक्टूबर, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा सुब्रह्मण्यम कला एवं विज्ञान कॉलेज, मोहनपुर के सहयोग से पुदुचेरी में 'वनमबदी कवियों की काव्य दुनिया' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 10 नवम्बर, 2010 को खड़गपुर में 'संथाली बाल साहित्य' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 4 दिसम्बर, 2010 को बोंगाईगांव राजकीय महाविद्यालय के सहयोग से 'बोडो नॉवल' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 29 दिसम्बर, 2010 को नई दिल्ली में 'देवनागरी लेखन एवं भारतीय भाषाएं' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 13-14 मार्च, 2010 को मराठी विभाग, फर्ग्यूसन कालेज, पुणे के सहयोग से 'पोस्ट-इंडिपेंडेंस वूमन पोएट्री इन वेस्टर्न इंडियन रीजनल इंडियन लैंग्वेजिज' पर एक संगोष्ठी;
- दिनांक 19 मार्च, 2010 को पुदुघई थेनरल जर्नल एवं ज्ञानालय रिसर्च लाइब्रेरी, पुदुकोटिया के सहयोग से 'लिटल जर्नल इन तमिल एंड लिटल जर्नल्स एक्जिजिशन' पर एक संगोष्ठी;
- दिनांक 21 मार्च, 2010 को जम्मू में 'डोगरी साहित्य में सौन्दर्य संवेदना' पर एक संगोष्ठी;
- दिनांक 22 मार्च, 2010 को गुजराती जनजातीय प्रतिष्ठान, अम्बाजी, गुजरात के सहयोग से भीली आदिवासी फॉल्क सॉन्ग्स : डेमोंस्ट्रेशन एंड एप्रिसिएशन' पर एक संगोष्ठी;
- दिनांक 23 मार्च, 2010 को पांडिचेरी विश्वविद्यालय के सहयोग से पुदुचेरी में 'तमिल साहित्य में वी.ओ. चिदम्बरनर का योगदान' विषय पर एक संगोष्ठी;
- दिनांक 27 अप्रैल, 2007 को श्रीनगर में 'वहाब खार' संगोष्ठी;

- दिनांक 14–15 मई, 2010 को मुम्बई में 'पोस्ट इंडिपेंडेंस सिंधी नॉन-फिक्शनल लिटरेचर' विषय पर एक दो-दिवसीय संगोष्ठी।
- दिनांक 25 जुलाई, 2010 को उड़ीसा में 'संथाली ड्रामा' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 28 जुलाई, 2010 को नई दिल्ली में 'ब्रजबोली, कबीन्द्र रबीन्द्र एवं मैथिली' पर संगोष्ठी।
- दिनांक 17 अगस्त, 2010 को नई दिल्ली में 'रिमेमब्रिंग ग्रेएरसन' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 29 अगस्त, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी सेट एलायसियस कॉलेज संस्थान के सहयोग से मंगलौर में 'नॉवल्स एंड नावेलिस्ट' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 15 सितम्बर, 2010 को इम्फाल में 'समसामयिक समाज के प्रति मणिपुरी लेखकों की प्रतिक्रिया' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 16 सितम्बर, 2010 को इम्फाल में 'मणिपुरी में महिला लेखन' विषय पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 30 सितम्बर, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा शास्वती-स्त्री शक्ति विकास केंद्र, भारती विद्यापीठ के सहयोग से पुणे में 'दुर्गा भागवत : जीवन एवं साहित्यिक कृतियाँ' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 3 अक्टूबर, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा सुब्रह्मण्यम कला एवं विज्ञान कॉलेज, मोहनपुर के सहयोग से पुदुचेरी में 'वनमबदी कवियों की काव्य दुनिया' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 10 नवम्बर, 2010 को खड़गपुर में 'संथाली बाल साहित्य' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 4 दिसम्बर, 2010 को बोंगाईगांव राजकीय महाविद्यालय के सहयोग से 'बोडो नॉवल' पर एक संगोष्ठी।
- दिनांक 29 दिसम्बर, 2010 को नई दिल्ली में 'देवनागरी लेखन एवं भारतीय भाषाएं' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

## कार्यशालाएं

- 19 से 26 अप्रैल, 2010 को श्रीनगर में तीन-दिवसीय पंजाबी-कश्मीरी लघु कथा अनुवाद कार्यशाला;
- दिनांक 24–27 मई, 2010 को बंगलौर में 'सर्वजन के वचनों का तेलुगु एवं तमिल में अनुवाद' पर चार दिवसीय कार्यशाला;
- दिनांक 17–19 जून, 2010 को अहमदाबाद में सिंधी सेवा समाज के सहयोग से 'सिंधी में नाटक लेखन' पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला;
- दिनांक 22–26 नवम्बर, 2010 को जोधपुर में 'डोगरी-राजस्थानी-डोगरी अनुवाद' पर एक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया;

## लेखक अधिवेशन

- दिनांक 12–13 अगस्त, 2010 को बेंगलुरु में अखिल-भारतीय लेखक अधिवेशन।
- दिनांक 3–4 नवम्बर, 2010 को पटियाला में अखिल भारतीय महिला लेखक सम्मेलन।
- दिनांक 6–7 अप्रैल, 2010 को नई दिल्ली में एक लेखक अधिवेशन-सह-सेमिनार 'व्हाई डू आई राइट, हाऊ डू आई राइट' (एच.ओ.) का आयोजन किया गया।
- दिनांक 4–5 मई, 2010 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में 'पूर्वोत्तर एवं उत्तरी लेखक' अधिवेशन का आयोजन।
- दिनांक 1–3 जून, 2010 को साहित्य अकादेमी द्वारा पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के सहयोग से नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय लेखक' अधिवेशन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 28–30 अक्टूबर, 2010 को गुवाहाटी एवं नई दिल्ली में भाषा सम्मान प्रदान किए गए तथा अवार्ड प्राप्त करने वालों का अधिवेशन एवं अखिल भारतीय लेखक अधिवेशन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 29–30 अक्टूबर, 2010 को नई दिल्ली में अखिल भारतीय लेखक अधिवेशन का आयोजन किया गया।
- साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में लेखक अधिवेशन का आयोजन किया गया जिसमें बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं ने दिनांक 15 नवम्बर, 2010 को लेखक के रूप

में अपने कार्यों तथा सृजनात्मक अनुभव के बारे में भाषण दिया।

- दिनांक 28-29 नवम्बर, 2010 को एर्नाकुलम, कोच्ची में अखिल भारतीय लेखक अधिवेशन का आयोजन किया गया।

### लेखक मुलाकात

- दिनांक 21 अप्रैल, 2010 को मुंबई में प्रो० राम पंजवानी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक केंद्र, मुम्बई के सहयोग से सुश्री सुंदरी उत्तमचन्दानी, विख्यात सिंधी उपन्यासकार से मुलाकात।
- दिनांक 29 जून, 2010 को गुजराती साहित्य सभा के सहयोग से श्री राजेन्द्र शुक्ल, प्रतिष्ठित गुजराती कवि से अहमदाबाद में मुलाकात।
- मजहर-उज-जमान खान, प्रतिष्ठित उर्दू लेखक, हैदराबाद (एच.ओ.), से दिनांक 16 जुलाई, 2010 को मुलाकात।
- दिनांक 8 अक्टूबर, 2010 को प्रतिष्ठित कोंकणी लेखक बोनारवेचर डी' पिएट्रो से मुलाकात।
- श्री श्याम मनोहर, लब्धप्रतिष्ठ मराठी उपन्यासकार (आर.ओ. मुम्बई), से 15 अक्टूबर, 2010 को मुलाकात।
- श्री हरि हिमथानी, प्रतिष्ठित सिंधी लेखक, अजमेर से, 21 अक्टूबर, 2010 को मुलाकात।
- शोभा नाथ बेसरा से, बालासोर में, 11 नवम्बर, 2010 को मुलाकात।

### मैन एंड बुक्स

साहित्य अकादेमी एक ऐसा कार्यक्रम आयोजित करता है जिसमें अंतर-विषयक क्षेत्रों से लब्धप्रतिष्ठित व्यक्तियों को उन पुस्तकों के बारे में चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जिनको पढ़ना उन्हें अच्छा लगता है या जिन्होंने उन्हें एक नई अंतर्दृष्टि प्रदान की है। एम. राजेन्द्रन ऐसी ही एक व्यक्ति हैं जिन्होंने 7 अक्टूबर, 2010 को चेन्नै में इस कार्यक्रम में भाग लिया।

### मेरे झरोखे से

यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें लेखक, जीवन तथा अन्य समकालीन लेखक के कार्यों के बारे में अपने अनुभव को प्रस्तुत करता है।

- सुश्री सुधा गुरुंग ने दिनांक 11 मई, 2010 को कालिमपोंग में सानुमती राय पर अपने विचार व्यक्त किए।
- शैफी किदवई, प्रतिष्ठित उर्दू विद्वान तथा समालोचक ने दिनांक 24 जुलाई, 2010 को नई दिल्ली में प्रसिद्ध उर्दू कवि मखदूम मोहिउद्दीन के कार्यों तथा जीवन पर अपने विचार व्यक्त किए।
- जगन्नाथ मुरमु ने दिनांक 24 जुलाई, 2010 को रायरंगपुर में अपने विचार रखे।
- श्यामसुंदर बिद्राकुंडी, प्रतिष्ठित कन्नड़ लेखक ने दिनांक 29 अगस्त, 2010 को धारवाड़ में एन.के. कुलकर्णी, प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक के कार्यों एवं जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।
- चन्द्रशेखर पाटिल ने दिनांक 9 सितम्बर, 2010 को विनायक कृष्ण गोकाक के कार्यों एवं जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।
- श्यामसुंदर बिद्राकुंडी ने दिनांक 29 सितम्बर, 2010 को एन. के. कुलकर्णी के जीवन एवं कार्यों पर विचार व्यक्त किए।
- मु. मेहता, प्रसिद्ध तमिल कवि ने दिनांक 29 अक्टूबर, 2010 को चेन्नै में जाने-माने तमिल कवि एवं समालोचक, आर. बालाचन्द्रन 'बाला' के जीवन एवं कार्यों पर अपने विचार व्यक्त किए।
- तनजी हलारनेकर ने दिनांक 30 अक्टूबर, 2010 को पणजी, गोवा में कला अकादेमी के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में रवीन्द्र केलकर, जाने-माने कोंकणी लेखक, चिंतक एवं साहित्य अकादेमी फेलो के जीवन तथा कार्यों पर अपने विचार व्यक्त किए।
- श्री चुण्डा सोरेन सिपाही ने दिनांक 11 नवम्बर, 2010 को बालासोर में श्री बाबूलाल मुरमु 'आदिवासी', प्रसिद्ध संथाली लेखक, के जीवन एवं कार्यों पर अपने विचार रखे।

### कविसंधि

इस कार्यक्रम का उद्देश्य कविता प्रेमियों को स्वयं कवि/कवयित्री द्वारा ही किए जाने वाले कविता-पाठ को सुनने का अवसर प्रदान करना है।

- दिनांक 23 अप्रैल, 2010 को कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री एफ.एम. शिंदे, प्रतिष्ठित मराठी कवि (आर.ओ. मुम्बई) के साथ 'कविता की एक शाम' का आयोजन किया गया।

- प्रतिष्ठित कन्नड़ कवि डा० सिद्धलिगैया (आर.ओ. बंगलौर) के साथ कविसंधि का आयोजन दिनांक 21 मई, 2010 को किया गया।
- प्रभा गानोरकर, प्रतिष्ठित मराठी कवि एवं समालोचक के साथ कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन (आर.ओ. मुम्बई) दिनांक 8 जून, 2010 को किया गया।
- साहित्य अकादेमी ने अनन्य साहित्य कोटा, हुबली के साथ मिलकर दिनांक 28 जून, 2010 को चन्द्रशेखर पाटिल, प्रतिष्ठित कन्नड़ कवि के साथ हुबली (धारवाड़) में कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन किया।
- साहित्य अकादेमी तथा पुरी जिला लेखक सहजोग समिति ने दिनांक 6 अगस्त, 2010 को पुरी में हरिहर मिश्रा, प्रतिष्ठित उडिया कवि, के साथ कविसंधि कार्यक्रम आयोजित किया।
- साहित्य अकादेमी एवं थाणे सिंधी कवि सभा ने दिनांक 14 अगस्त, 2010 को थाणे में जाने-माने सिंधी कवि गोवर्धन शर्मा 'घायल' के साथ कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन किया।
- दिनांक 17 अगस्त, 2010 को हैदराबाद में प्रतिष्ठित तेलुगु कवि, देवीप्रिया के साथ कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 25 सितम्बर, 2010 को मंगलौर में प्रसिद्ध कोंकणी कवि श्री मेलविन रोजरिगस के साथ कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 13 अक्टूबर, 2010 को जम्मू में कवि वीरेन्द्र केसर के साथ कविसंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 27 अक्टूबर, 2010 को चेन्नई में प्रतिष्ठित मलयालम कवि अत्तूर रवि वर्मा के साथ कविसंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 11 नवम्बर, 2010 को बालासोर में संथाली कवि श्री आनंदीचरण हेमब्रूम के साथ कविसंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 2 दिसम्बर, 2010 को आयोजित किए गए कविसंधि कार्यक्रम में श्री श्याम सिंह शशि, जाने-माने हिन्दी कवि ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

### कथासंधि

- दिनांक 21 मई, 2010 को आयोजित कथासंधि कार्यक्रम में श्री आर.आर. बोराडे, प्रसिद्ध मराठी कथा-लेखक एवं

नाटककार ने अपनी लघु-कथाओं का पाठ किया (आर.ओ., मुम्बई)।

- दिनांक 19 जून, 2010 को श्री सेतुमाधवन, प्रतिष्ठित मलयालम लेखक के साथ (आर.ओ., बैंगलुरु) कथासंधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 21 जून, 2010 को श्री आर.आर. बोराडे, प्रतिष्ठित मराठी कथा-लेखक एवं नाटककार के साथ (आर.ओ., मुम्बई) कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 29 जून, 2010 को अतिन बंदोपाध्याय, प्रतिष्ठित बंगाली कथा-लेखक, के साथ कोलकाता में कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 31 जुलाई, 2010 को साहित्य अकादेमी एवं सिंधी अदाबी सभा ने पुणे में तारा मिरचन्दानी, प्रसिद्ध सिंधी कथा लेखक, के साथ कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया।
- दिनांक 13 सितम्बर, 2010 को इम्फाल में श्री ए. चित्रेश्वर शर्मा, मणिपुरी विद्वान के साथ कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 12 अक्टूबर, 2010 को जम्मू में श्री एन.डी. जमवाल के साथ कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 29 अक्टूबर, 2010 को त्रिचूर में श्री यू.के. कुमारन, प्रतिष्ठित मलयालम लघु-कथा लेखक, के साथ कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 13 दिसम्बर, 2010 को श्री सतकदी होता, प्रतिष्ठित उडिया कथा-लेखक के साथ भुवनेश्वर में कथासंधि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

### साहित्यिक मंच

- दिनांक 12 अप्रैल, 2010 को अगरतला में सुश्री मंजुरी चौधरी, प्रसिद्ध बंगाली समालोचक के साथ साहित्यिक मंच बैठक आयोजित की गई।
- दिनांक 4 जून, 2010 को मैसूर में इब्राहिम वहीद के साथ, उनके कार्यों एवं मालदीव के समसामयिक साहित्य में उनके स्थान पर एक साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 18 जून, 2010 को अहमदनगर में एक साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इलाही जमादार एवं



संतोष पदमाकर पवार ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की तथा प्रतिमा इंगोले ने अपनी लघु-कथाओं का पाठ किया।

- दिनांक 21 जून, 2010 को बिष्णु प्रसाद राभा (आरओ, कोलकाता) के साथ साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 2 जुलाई, 2010 को आयोजित साहित्यिक मंच कार्यक्रम में (आरओ, मुम्बई) प्रेमानन्द गजवी, प्रतिष्ठित मराठी नाटककार ने अपनी एक एकांकी का पाठ किया।
- दिनांक 28 जुलाई, 2010 को एक आयोजित साहित्यिक मंच कार्यक्रम (एच.ओ.) में प्रयाग शुक्ल द्वारा रबीन्द्र नाथ टैगोर की कविताओं के हिन्दी अनुवाद का पाठ किया गया।
- दिनांक 31 अगस्त, 2010 को संगमनेर में आयोजित किए गए साहित्यिक मंच कार्यक्रम में उत्तम कोलगांवकर, किरण येले (कविता पाठ) तथा वृन्दा भार्गव एवं किशोर पाठक (लघु-कथा पाठ) ने भाग लिया।
- दिनांक 28 सितम्बर, 2010 को आयोजित (आरओ, बंगलौर) साहित्यिक मंच कार्यक्रम में एंटोनी कस्सार, माल्टसे, अंग्रेजी लेखक ने भाग लिया।
- दिनांक 28 सितम्बर, 2010 को हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर (आरओ, मुम्बई) साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें आबिद सुरती, आर.के. पालीवाल, हुबनाथ पांडे, अक्षय जैन, रमेश राजहंस तथा हरजेन्द्र सिंह सेठी ने भाग लिया।
- दिनांक 6 अक्टूबर, 2010 को विद्यानगर, कांकवली में (आरओ, मुम्बई) आयोजित साहित्यिक मंच कार्यक्रम में महादेव कोडविलकर (अध्यक्ष), प्रवीण बांदेकर, अजय कंदार, दिलीप पधारपट्टे (कविता-पाठ) एवं विद्याधर करनदिकर, वैशाली पंडित (लघु-कथा वाचन) ने भाग लिया।
- दिनांक 12 अक्टूबर, 2010 को (आरओ, मुम्बई) सुश्री मर्ली एलुनन, कवयित्री एवं डा० आनन्द कुमारास्वमी फैलो के साथ साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 16 अक्टूबर, 2010 को बद्रावाह (एच.ओ.) में रास जविदानी पर साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 19 अक्टूबर, 2010 को (एच.ओ.) में तीन विशिष्ट कवियों – विष्णु नागर, लीलाधर मंदलोई एवं मिथिलेश श्रीवास्तव के साथ साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इन कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

- दिनांक 2 नवम्बर, 2010 को दिल्ली में साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री फूलचंद मानव, श्री विष्णु सक्सेना, श्री नरेश नीर एवं श्री राजेन्द्र कमार कन्नौजिया ने अपनी कविताओं का पाठ किया।
- दिनांक 27 नवम्बर, 2010 को (चेन्नई कार्यालय) आयोजित साहित्यिक मंच कार्यक्रम में श्री ईरवई राधाकृष्णन, श्री पिछिनिक्कड इलांगो, श्रीमती विजयलक्ष्मी, श्रीमती रेवती आइयाभारती (कवि) तथा श्री मुत्थुवेलू, श्री मुगलई राजापन्दीन, श्रीमती अमृतम सूर्या, श्री वेदियप्पन (लघु-कथा लेखक) ने भाग लिया।
- दिनांक 3 दिसम्बर, 2010 को नई दिल्ली में आयोजित साहित्यिक मंच कार्यक्रम में शांता आचार्य, कुंवर नारायण तथा केकी एन. दारुवाला ने अपनी कविताओं का पाठ किया।
- दिनांक 6 दिसम्बर, 2010 को कोकराझार में बोडो बाल साहित्य पर साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 10 दिसम्बर, 2010 को (आर.ओ., कोलकाता) आयोजित साहित्यिक मंच कार्यक्रम में कोलम्बियाई कवि फर्नान्डो डेनिस ने भाग लिया तथा पुस्तक जारी की गई।
- दिनांक 16 दिसम्बर, 2010 को गुवाहाटी में पांडु कॉलेज के साथ “बोडो साहित्य में टैगोर” विषय पर साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 16 दिसम्बर, 2010 को (आर.ओ., कोलकाता) भारत दौरे पर आए चीनी लेखक प्रतिनिधिमंडल के साथ साहित्यिक मंच बैठक का आयोजन किया गया।
- दिनांक 17 दिसम्बर, 2010 को अम्बरनाथ नगर परिषद द्वारा साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें शंकर सखाराम एवं मोनिका गजेन्द्रगडकर ने अपनी लघु-कथाएं प्रस्तुत की तथा अनुपमा उजगेयर, अविनाश गायकवाड़ एवं सतीश सोलनकुरकर ने अपना काव्य-पाठ किया।
- दिनांक 21 दिसम्बर, 2010 को बिजनी में अकादेमी के लेखकों के साथ “बोडो साहित्य में महिलावाद” विषय पर एक साहित्यिक मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

## कवि सम्मेलन

- दिनांक 27 अप्रैल, 2010 को आयोजित (आरओ, मुम्बई) कवि सम्मेलन में प्रसिद्ध मराठी कवियों – श्री नारायण

सुमंत, श्री अरुण सोटे, श्री महेश केलुसकर, श्री संतोष पंवार एवं श्री नारायण सुमंत (अध्यक्ष) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

- दिनांक 7 मई, 2010 को (आरओ, मुम्बई) रबीन्द्र नाथ टैगोर के 150वीं जयंती समारोह के दौरान द्विभाषी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 9 मई, 2010 को रबीन्द्रनाथ टैगोर के 150वीं जयंती समारोह (आरओ वेंगलूरु) के दौरान द्विभाषी कवि सम्मेलन आयोजित किया गया।
- दिनांक 9 मई, 2010 को (साहित्य अकादेमी, चेन्नई कार्यालय) रबीन्द्रनाथ टैगोर के 150वें जयंती समारोह के दौरान द्विभाषी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 14 जून, 2010 को (आरओ, कोलकाता) टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर एक बंगाली कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 26 जून, 2010 को (आरओ, बंगलौर) कन्नड़ कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विष्णु नायक (अध्यक्ष), ना. दामोदर सेठी, सैय्यद जैमिरुल्लाह शरीफ, एस.वी. वस्त्रादा, माधवी भंडारी, वसंतकुमार पेरला, वि. गा. नायक एवं टी.जी. भट हसांगी ने अपना काव्य-पाठ किया।
- दिनांक 10 अगस्त, 2010 को अलीगढ़ में कश्मीरी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 13-14 अगस्त, 2010 को लुधियाना में पंजाबी साहित्य अकादेमी के साथ सहयोग से साहित्य अकादेमी द्वारा 'टैगोर एक भारतीय महापुरुष' विषय पर एक कवि सम्मेलन तथा सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 12 सितम्बर, 2010 को (आरओ, बंगलौर) एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बी.टी. ललिता (अध्यक्ष), चिंतामणि कोडलेकर, नागरहल्ली चन्द्रशेखर, आर.जी. हल्ली नागराज, एच.एल. पुष्पा, टी.सी. पूर्णिमा एवं लता गुट्टी ने अपनी कविताओं का पाठ किया।
- दिनांक 4 अक्टूबर, 2010 को (चेन्नई कार्यालय) पुडुचेरी में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 23 अक्टूबर, 2010 को (चेन्नई कार्यालय) एक कवि सम्मेलन आयोजन किया गया जिसमें कविचूड़र कविथार्पितम (अध्यक्ष), थंगम मूर्ति (परिचय), जी. मुरली अप्पास, जीवी, रामा रामनाथम, साति जोती, रत्थिका, नीला, स्वाति, डी. वेत्री

सेल्वन, रासी पन्नरसेलवन, अंगारई बैरवी, कवि पेरियासामी एवं एस. पीर मोहम्मद ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की।

- दिनांक 24 अक्टूबर, 2010 को जम्मू में बहु-भाषाई कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 29 अक्टूबर, 2010 को (आरओ, बंगलौर) आयोजित किए गए कवि सम्मेलन में जी.एस. सिद्धालिंगैया, अब्दुल मजीद खान, एल.एन. मुकुंदराज, प्रतिभा नंदकुमार एवं एम.आर. कमला ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस कवि सम्मेलन में सुमतीन्द्र नादीग ने अध्यक्षता की तथा सुश्री मर्ली एलुनन, डा० आनन्द कुमारस्वामी फैलो, फिलीपींस विशिष्ट मेहमान के तौर पर उपस्थित थे।
- दिनांक 17 नवम्बर, 2010 को भुज में संस्मृति के सहयोग से कच्छी-गुजराती कवियों के सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 19-20 नवम्बर, 2010 को जलियावाला बाग, अमृतसर में रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 24 नवम्बर, 2010 को गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- दिनांक 3 दिसम्बर, 2010 को (आरओ, मुम्बई) एक बहु-भाषाई कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें रशीद मीर (गुजराती), नारायण कुलकर्णी कावाथेकर (मराठी) एवं श्रीकांत सदफ (सिंधी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।
- दिनांक 5 दिसम्बर, 2010 को कोलकाता में पंजाबी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें श्री सुरजीत पतार, सुश्री सुखविन्दर अमृत, अमरजीत सिंह ग्रेवाल, गुरभजन गिल, रावैल सिंह, डा० वनिता एवं दीपक मनमोहन सिंह ने भाग लिया।

## अस्मिता

यह कार्यक्रम हाशिए पर महसूस कर रहे लेखकों के लिए महिला, दलित एवं जनजातीय जैसी सामूहिक पहचान की खोज के लिए आयोजित किया जाता है।

- दिनांक 30 अप्रैल, 2010 को (आरओ, मुम्बई) जानी-मानी मराठी महिला कवयित्रियों – सुश्री मीरा तारलेकर, सुश्री श्रद्धा बेलसरे एवं सुश्री सुनंदा भोसेकर के साथ अस्मिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

- दिनांक 28 मई, 2010 को (आरओ, बंगलौर) कन्नड़ महिला लेखकों के साथ अस्मिता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती वेदेही, श्रीमती मित्रा वेंकटराज, श्रीमती सुकन्या मारुति, श्रीमती दमयंती नारेगल्ला एवं डा० के. शरीफा ने अपनी कृतियों का पाठ किया।
- दिनांक 30 मई, 2010 को (चेन्नई) तमिल महिला लेखकों के साथ अस्मिता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें थमारई, वैगेई सेलवी, इलामपिरैई, कृष्णनगिनि, मलती मैत्री, सुकीर्त रानी, शक्ति जोशी एवं पादववती विवेकानन्दन (अध्यक्ष) ने भाग लिया।
- दिनांक 12 जून, 2010 को मुम्बई में अस्मिता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें गुजराती महिला कवयित्रियों सुश्री संस्कृतिरानी देसाई, सुश्री नलिनी मदगांकर, सुश्री दीना पांडया एवं सुश्री उषा सेठ को आमंत्रित किया गया था।
- दिनांक 24 जुलाई, 2010 को रायरंगपुर में श्रीमती प्रतिभा मुरमु के साथ अस्मिता कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 25 जुलाई, 2010 को मयूरभंज, उड़ीसा में आयोजित किए गए अस्मिता कार्यक्रम में खेरवाल सोरेन ने भाग लिया।
- दिनांक 29 जुलाई, 2010 (आरओ, मुम्बई) को साहित्य अकादेमी एवं गुजराती साहित्य परिषद द्वारा अहमदाबाद

में अस्मिता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें ईला नायक, पारुल देसाई, जयश्री चौधरी, सुष्मिता जोशी एवं पूर्वी ओझा ने भाग लिया।

### राष्ट्रमंडल कार्यक्रम

नई दिल्ली में आयोजित किए गए (3-14 अक्टूबर, 2010) 19वें राष्ट्रमंडल खेलों के साथ-साथ कुछ कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

- दिनांक 4-13 अक्टूबर, 2010 को एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें कई भारतीय प्रकाशकों यथा ऑक्सफोर्ड प्रकाशक, हार्पर कॉलिन्स, नियोगी बुक, वीवा बुक्स, हैचेट इंडिया इत्यादि के अतिरिक्त कई राष्ट्रमंडल देशों जैसे आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, मलेशिया, मारीशस, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, बंगलादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, युगांडा के अनेक प्रकाशकों ने भाग लिया।
- दिनांक 4-13 अक्टूबर, 2010 को राष्ट्रमंडल देशों के लेखकों द्वारा एक वाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भारत एवं राष्ट्रमंडल देशों के लेखकों/विद्वानों ने भाग लिया।
- दिनांक 8-10 अक्टूबर, 2010 को राष्ट्रमंडल देशों में ऐतिहासिक लीगेसी एवं लेखन पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।



टैगोर को कवि श्रृद्धांजलि काव्यांजलि के लिए

## ललित कला अकादमी

ललित कला अकादेमी, राष्ट्रीय कला अकादेमी, नई दिल्ली की स्थापना भारत सरकार द्वारा 5 अगस्त, 1954 को एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी। संविधान में निर्धारित उद्देश्यों के अनुसरण में यह संगठन महापरिषद, कार्यकारी मंडल और अन्य समितियों के माध्यम से कार्य करता है। यह भारत में दृश्य कलाओं के क्षेत्र में भारत सरकार का शीर्षस्थ सांस्कृतिक निकाय है और यह संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूरी तरह निधिकृत है। इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों, कार्यक्रमों, शिविरों कला समारोहों, संगोष्ठियों तथा इसी प्रकार के अन्य कार्यक्रमों के आयोजन से संबंधित निर्णय लेने और कलाकारों तथा कला संगठनों को छात्रवृत्ति एवं अनुदानों के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करने की पर्याप्त स्वतंत्रता है।

ललित कला अकादेमी एक ऐसी संस्था है जो भारतीय कला के वैश्विक प्रभाव के बारे में दुनिया के जागृत होने के बहुत पहले से ही राष्ट्र की कलाओं को सेवा प्रदान करती रही है। अपने सदस्यों और कर्मचारियों के नेतृत्व से ललित कला अकादेमी उच्चतम स्तर की कला की स्थापना, परिरक्षण और प्रलेखन द्वारा कलाओं की सेवा के प्रति वचनबद्धता प्रकट करती है, जो भारत में आधुनिक और समकालीन कला की जीवंतता, विविधता और नए पैटर्न प्रदर्शित करती है। पूरे वर्ष यह अतुलनीय महत्व की प्रदर्शनियां और शैक्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। यहां एक पुस्तकालय, कला संग्रह, पुरातात्विक, संरक्षण प्रयोगशाला है और यहां बौद्धिक स्तर की पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है।

ललित कला अकादेमी का मुख्य लक्ष्य आधुनिक और समकालीन कला की गहरी समझ और उसके आनंद लेने को बढ़ावा देना है ताकि यह विविध स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय श्रोताओं तक पहुंच सके। राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी और ट्रिनेले-इंडिया ऐसे प्रयास हैं जिन्हें एक कलात्मक रुझानों की खोज के लिए आयोजित किया गया है। अकादेमी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और कार्यनीतिक भागीदारी के माध्यम से भारतीय कला और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए भिन्न-भिन्न श्रेणी के कार्यक्रम आयोजित करती है।

कलाओं के विकास के प्रति अकादेमी की निष्ठापूर्ण वचनबद्धता, नई दिल्ली में स्थित मुख्यालय और भुवनेश्वर, चेन्नै, कोलकाता, लखनऊ, शिमला और गढ़ी, नई दिल्ली में स्थित क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी कार्यक्रमों के माध्यम से स्पष्ट है। एक सांस्कृतिक निकाय होने के नाते यह संपूर्ण भारतीय उप-महाद्वीप के लिए भारत की विविध संस्कृतियों के बीच आपसी संबंध बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो सांस्कृतिक प्रसार

3.3.2





को जोड़ता है और यह रचनात्मक बुद्धिमत्ता एवं चमकदार डिजाइनों के रंग-बिरंगे धागों के लिए एक विहंगम दृश्य है, जो भारतीय जीवन की मनमोहक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति को इसकी सभी कलात्मक संवेदनाओं, विवादों, विरोधाभासों और सीमाओं के साथ अनुभव करते हुए अकादेमी अपनी गतिविधियों में सभी प्रकार के विहंगम दृश्य के साथ कार्य करती है। इसकी संकल्पना, भारत की पारंपरिक कलाओं की देखभाल और कलाकारों को अंतर्राष्ट्रीय कला परिदृश्य में समकालीन घटनाओं को आत्मसात करने में सहायता देने की है।

अकादेमी की एक प्रमुख कला संवर्धन गतिविधि ऐसे भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों, जो अकादेमी के क्षेत्रीय केंद्रों में कला के विभिन्न विषयों में कार्य करना चाहते हैं, को स्टूडियो प्रदान करना है। दिल्ली में अकादेमी द्वारा गढ़ी कलाकार स्टूडियो का प्रशासन संभाला जाता है और विभिन्न विषयों जैसे पेंटिंग, शिल्पकला, ग्राफिक और सिरामिक कार्य के कलाकार पूरे वर्ष इन स्टूडियो में कार्य करते हैं।

अकादेमी में एक महापरिषद् है जिसमें कलाकार, कला-समालोचक, वास्तुकार, फोटोग्राफर, लोक, जनजातीय और परम्परागत कलाओं के विशेषज्ञ, कला प्रशासक और विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हैं। अकादेमी के प्राधिकारियों में महापरिषद्, कार्यकारी मंडल और वित्त समिति शामिल हैं।

इस प्रकार की अन्य स्थाई समिति अथवा समितियां, जिनका गठन महापरिषद् अथवा कार्यकारी मंडल अपने एक अथवा अधिक कार्यों को निष्पादित करने के लिए करे। अकादेमी के अधिकारी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, वित्त सलाहकार और सचिव होते हैं।

## अकादेमी के कार्यक्रम

**ट्रिनेले इंडिया :** अकादेमी ने वर्ष 1968 में प्रथम ट्रिनेले इंडिया का आयोजन किया। व्यापक स्तर पर आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में 50 से भी अधिक देशों ने भागीदारी की। अब तक अकादेमी ने 11 ट्रिनेले प्रदर्शनियों का आयोजन किया है और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को 78 पुरस्कार प्रदान किए हैं।

**सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम :** भारत सरकार के सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत अकादेमी भारतीय आधुनिक तथा समकालीन कला के संबंध में बड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन करती है और भारतीय कला और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहभागियों के साथ संयुक्त रूप से सहयोग करती है।

**राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी :** राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी ललित कला अकादेमी का मुख्य वार्षिक कार्यक्रम है। कलाकारों और कला प्रेमियों को प्रोत्साहित करने, सहायता प्रदान करने तथा इनकी सार्थक भागीदारी की व्यवस्था करने के लिए अकादेमी समूचे देश के महानगरों के बाहर विभिन्न स्थानों पर इस गौरवशाली कार्यक्रम का आयोजन करती रही है। अकादेमी ने हैदराबाद, गुवाहाटी, कोच्चि, भोपाल, चण्डीगढ़ और गोवा में प्रदर्शनी का आयोजन किया है। वर्ष 1955 से अकादेमी ने 52 राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी आयोजित की हैं और 545 कलाकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए हैं तथा 87 कलाकारों को सम्मानित किया है।



श्रीमती सोनिया गाँधी द्वारा श्री ई. वलसाराज, गृह मंत्री, पुदुचेरी की प्रदर्शनी का उद्घाटन

**राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शिविर और कार्यशालाएं :** अकादेमी दृश्य कलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शिविर तथा कार्यशालाएं आयोजित करती है। भारत के विभिन्न राज्यों में आयोजित की गई ये कार्यशालाएं कलाकार समुदाय के बीच अत्यधिक लोकप्रिय रही हैं और भागीदारों के बीच कलात्मक योग्यता को प्रोत्साहित करने में भी इनसे सहायता मिली है।

**व्याख्यान, सेमिनार, पैनल चर्चा और फिल्म शो :** अकादेमी अपने कौस्तुभ प्रेक्षागृह में आयोजित किए जाने वाले विभिन्न पैनल विचार-विमर्श, गोष्ठियों तथा सम्मेलनों में कला और संस्कृति के क्षेत्र में विख्यात विद्वानों तथा व्यक्तियों को भाग लेने के लिए आमंत्रित करती है। अकादेमी विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों और अनुसंधानकर्ताओं के लिए विशेष रूप से कलाकारों के संबंध में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों का प्रदर्शन भी करती है।



**प्रकाशन :** अकादेमी ललित कला एंशिअंट, ललित कला कंटेपरेरी, समकालीन कला जैसी मुख्य पत्रिकाओं, प्रतिष्ठित कलाकारों से संबंधित मोनोग्राफ, पोर्टफोलियो, पुस्तकों और समाचार पत्रिकाओं का प्रकाशन करती है। अकादेमी बहुमूल्य बौद्धिक योगदान करने वाले विख्यात विद्वानों की सामग्री को प्रकाशित करने में भी सहायता करती है। अकादेमी आंतरिक रूप से आयोजित की जाने वाली प्रदर्शनियों की विस्तृत सूची भी प्रकाशित करती है।

**अध्येतावृत्तियां :** अकादेमी अपनी अध्येतावृत्तियां प्रदान करके उन व्यक्तियों को मान्यता देती है जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दृश्य कलाओं के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान किया है।

**अनुदान :** अकादेमी भारत के विभिन्न राज्यों में भारतीय कला को प्रोत्साहन देने तथा इससे संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने के लिए राज्य कला अकादमियों और विभिन्न प्रकार के अन्य गैर-लाभकारी कला और सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

**छात्रवृत्तियां :** अकादेमी दृश्य कला के क्षेत्र के कलाकारों को छात्रवृत्तियां प्रदान करती है। वर्ष 2009-2010 के दौरान अकादेमी ने 40 कलाकारों को छात्रवृत्तियां प्रदान की हैं।

**संग्रह प्रबंधन, संरक्षण और परिरक्षण :** अकादेमी में लगभग 5500 कलाकृतियों का संग्रह है, जिसे 56 वर्ष की अवधि में अर्जित किया गया है। अकादेमी में कला के कार्यों को परिरक्षित करने के सशक्त उपाय भी आरंभ किए गए हैं। ये कलाकृतियां आंतरिक खोज प्रदर्शनियों का नियमित हिस्सा होती हैं, जिन्हें नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है और इन्हें अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचाने के लिए देश के विभिन्न भागों में यात्रा हेतु भेजा जाता है।

**ललित कला अकादेमी वीथियाँ:** ललित कला अकादेमी वीथि एक महत्वपूर्ण स्थल है जहाँ आधुनिक और समकालीन कला का प्रदर्शन किया जाता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर प्रमुख कला प्रदर्शनियां, प्रतिष्ठित भारतीय कलाकारों के पूर्व व्यापी प्रदर्शन और सामूहिक प्रदर्शन भी नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। अकादेमी चैन्ने, लखनऊ, शिमला और भुवनेश्वर में स्थित वीथियों का भी रखरखाव करती है।

**ललित कला अकादेमी संदर्भ पुस्तकालय और अभिलेखागार:** अकादेमी के नई दिल्ली स्थित पुस्तकालय में भारतीय और पश्चिमी कला पर कला और संस्कृति की ढेर सारी नई पुस्तकें लाई गई हैं। अकादेमी के संदर्भ पुस्तकालय में 8000 से अधिक पुस्तकें हैं और यहां कला तथा कलाकारों पर लगभग 50 दृश्य-श्रव्य सामग्री का संग्रह है।

**कला स्टूडियो :** अकादेमी द्वारा भारत आने वाले और विदेश जाने वाले कलाकारों को स्टूडियो की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। अकादेमी द्वारा उन्हें पेंटिंग, ग्राफिक, शिल्पकला, प्रिंट मेकिंग और सिरामिक स्टूडियो में प्रवेश दिया जाता है।

**वेबसाइट और ई-मेल :** ललित कला अकादेमी की वेबसाइट [www.lalitkala.gov.in](http://www.lalitkala.gov.in) है और इसका ई-मेल पता [lka@lalitkala.gov.in](mailto:lka@lalitkala.gov.in) है।

**उत्तर पूर्व भारत में प्रदर्शनियों और उत्सवों के आयोजन के लिए पहल :** ललित कला अकादेमी भारत के उत्तर पूर्व राज्यों में सीधे और अपने कोलकाता स्थित क्षेत्रीय केंद्र के माध्यम से राष्ट्रीय कला उत्सव, कार्यशालाओं और सेमिनारों जैसे कार्यक्रमों का नियमित रूप से आयोजन करती है।

## कार्यक्रम

अकादेमी ने 'कला पर कलाकार' नामक एक नई श्रृंखला आरंभ की है। यह कार्यक्रम अकादेमी का नियमित कार्यक्रम है। इसमें मुख्यतः उन कलाकारों के अनुभवों और यादों से कला के मौखिक इतिहास को प्रलेखित करने की संकल्पना की गई है जिन्होंने आधुनिक और समकालीन भारतीय कला की प्रगति में अपार योगदान दिया है। इस कार्यक्रम के लिए अकादेमी द्वारा एक प्रतिष्ठित कलाकार और एक कला-आलोचक या एक कला इतिहासविद् या संग्रहालय अध्यक्ष को कलाकार के साथ बात करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। कलाकार अपने कला कार्यों पर एक स्लाइड शो प्रस्तुत करता है और उनके अंतरंग विवरण प्रदान करता है तथा कला की उस विशिष्ट कृति को बनाने की प्रक्रिया समझाता है। आलोचक कलाकार की यात्रा की गहराई से समझ प्रदान करता है, जिससे उस कलाकार और उसकी कलाकृति को समझने में आसानी होती है। इस परियोजना के पीछे उद्देश्य यह है कि अकादेमी में यह सामग्री परिरक्षित की जा सके ताकि इसका उपयोग अनुसंधानकर्ताओं के लिए किया जा सके।

अकादेमी ने 15 दिसम्बर, 2010 को कला पर अन्य कार्यक्रम आयोजित किया और व्याख्यान देने के लिए पीटर नागी को आमंत्रित किया। उनके व्याख्यान का विषय था 'कला में कैरियर और सफल कलाकार कैसे बना जाए'।

कला पर कला-आलोचक भी अकादेमी की नई पहल है। इस कार्यक्रम के तहत अकादेमी ने सुश्री गीता कपूर और श्री प्रणवरंजन रे विख्यात कला-आलोचकों को आमंत्रित किया। सुश्री गीता कपूर

ने दिनांक 19 जुलाई, 2010 को अकादेमी के कौस्तुभ प्रेक्षागृह में अपना व्याख्यान दिया। इनके व्याख्यान का शीर्षक 'होलिडिंग द ग्राउंड : नवजोत अल्ताफ' था। श्री प्रणबरंजन रे ने दिनांक 24 अगस्त, 2010 को अकादेमी के कौस्तुभ प्रेक्षागृह में अपना व्याख्यान दिया। इनके व्याख्यान का शीर्षक 'वीडियो कला' था।

अकादेमी ने दिनांक 12 जुलाई, 2010 को होटल पोलो टावर, शिलांग में 'पूर्वोत्तर में समकालीन कला पद्धति' के संबंध में एक संगोष्ठी आयोजित की। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री पत्रिसिया मुखिम, सम्पादक, शिलांग टाइम्स थी। इस संगोष्ठी में भाग लेने वाले वक्ताओं में बेंडिक्ट स्खेलांग हिन्नेवता, मौसहमी कंडाली, जबेन घोष, राज कुमार मजिंदर, रफेल वरजारी, दिलीप तमुली और फ्रेडरिक डी. हिन्नेवता शामिल थे।

अकादेमी ने श्री आशीष नंदी को आमंत्रित करके दिनांक 12 अगस्त, 2010 को साहित्य अकादेमी प्रेक्षागृह में 'कुमार स्वामी स्मारक व्याख्यान' आयोजित किया। उन्होंने 'कुमार स्वामी के लेखन और भारत का भविष्य : सांस्कृतिक कल्पना का भय' पर व्याख्यान दिया।

अकादेमी ने श्री बालन नाम्बियार विख्यात कलाकार को आमंत्रित करके दिनांक 13 अगस्त, 2010 को व्याख्यान आयोजित किया। उन्होंने कौस्तुभ प्रेक्षागृह, नई दिल्ली में 'बाह्य मूर्तिकलाएं – हाल ही में "द स्काई इज द लिमिट" शीर्षक से किए गए कार्य के विशेष संदर्भ में आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग' विषय पर व्याख्यान दिया।

अकादेमी ने दिनांक 21 से 27 दिसम्बर, 2010 तक गइटे थियेटर, शिमला में 'पूर्वोत्तर कला दीर्घा का और अकादेमी के संग्रह से चुनी गई 30 कलाकृतियों की प्रदर्शनी' का आयोजन किया। डॉ० सुधाकर शर्मा, सचिव अकादेमी ने इस कला दीर्घा और प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और पूर्वोत्तर राज्यों के 20 कलाकारों को सम्मानित किया।

अकादेमी ने कौस्तुभ प्रेक्षागृह में 43 'फिल्म/वीडियो शो' का आयोजन किया।

अकादेमी ने '7वे राष्ट्रीय कला समारोह' के दौरान तैयार की गई कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 27 अप्रैल से 1 मई, 2010 तक आल सेंट्स हाल, शिलांग में मेघालय सरकार के कला और संस्कृति निदेशालय के सहयोग से किया। मेघालय के महामहिम राज्यपाल, श्री रंजीत शेखर मुशाहरी ने इस प्रदर्शनी

का उद्घाटन किया। डॉ० सुधाकर शर्मा, सचिव, ललित कला अकादेमी ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस समारोह के सम्मानित अतिथि मेघालय सरकार के उप-मुख्यमंत्री, श्री बी. लेनांग थे। '7वे राष्ट्रीय कला समारोह' के दौरान 27 राज्यों और 2 संघ राज्य क्षेत्रों के कलाकारों द्वारा तैयार की गई लगभग 43 कलाकृतियों को इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया।

अकादेमी ने 'देवी प्रसाद की आधुनिक भारतीय कलाकार-शिल्पकार का निर्माण' विषय पर सिंहावलोकन प्रदर्शनी का आयोजन किया। श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, अकादेमी ने दिनांक 1 मई, 2010 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी की व्यवस्था श्री नमन पी. आहुजा ने की। यह प्रदर्शनी दिनांक 21 मई, 2010 तक आयोजित की गई।

अकादेमी ने दिनांक 22 से 24 जून, 2010 तक अभिलेख अध्ययन विद्यालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली के सहयोग से 'रिकार्ड प्रबंधन में मानव संसाधन विकास' पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की।

अकादेमी ने दिनांक 25 जून, 2010 को गइटे थियेटर, शिमला में ललित कला अकादेमी की प्रथम वर्षगांठ मनाने के लिए अकादेमी के स्थायी संग्रह से एक कला प्रदर्शनी का आयोजन, भाषा और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश के सहयोग से किया। श्री हरीश रावत, माननीय श्रम और रोजगार राज्य मंत्री, केंद्र सरकार ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। श्री प्रेम कुमार धूमल, माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश इसके मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।



श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा "आर्ट सेलिब्रेट्स" प्रदर्शनी का उद्घाटन

अकादेमी ने '7वे राष्ट्रीय कला समारोह', शिलांग के दौरान तैयार की गई कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 7 सितम्बर, 2010 को कला और संस्कृति निदेशालय, मिजोरम सरकार के सहयोग से बोनापाल हाल, आइजोल, मिजोरम में किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री पी.सी. जोरामसंगिलियाना, माननीय कला और संस्कृति मंत्री, मिजोरम सरकार ने किया। डॉ० सुधाकर शर्मा, सचिव, अकादेमी ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

अकादेमी ने सुश्री रूपिका चावला द्वारा संग्रहित समकालीन भारतीय कला की एक प्रदर्शनी, कला समारोह! 2010, खेलकूद और शहर का आयोजन अकादेमी की वीथि में किया। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने दिनांक 1 मई, 2010 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह प्रदर्शनी 2 से 21 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित की गई।

अकादेमी की वीथि में 78 'एकल/सामूहिक प्रदर्शनी' आयोजित की गई।

अकादेमी ने दिनांक 5 अगस्त, 2010 को अपना स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर अकादेमी ने सुश्री कुमुद दीवान के शास्त्रीय संगीत के सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया।



माननीय संसदीय कार्य राज्य मंत्री को एक प्रकाशन प्रस्तुत करते हुए

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय, ललित कला अकादेमी, साहित्य अकादेमी और संगीत नाटक अकादेमी ने दिनांक 9.5.2010 को मेघदूत थियेटर, रबीन्द्र भवन में रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं

जन्म वर्षगांठ की शुरुआत करने के लिए 'रबीन्द्र प्रणति'—समारोह का आयोजन किया। श्री प्रणब मुखर्जी, वित्त मंत्री, भारत सरकार इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर ललित कला अकादेमी ने 'टैगोर की कला का पुनः अन्वेषण' पर एक पैनल चर्चा का भी आयोजन किया। इस पैनल में संदीप सरकार, कोलकाता, पारुल देव मुखर्जी, नई दिल्ली, अंशुमान दास गुप्ता, कोलकाता और जयराम पोडूवल, वडोदरा शामिल थे।

अकादेमी ने कला और संस्कृति निदेशालय, मिजोरम सरकार के सहयोग से दिनांक 7 से 12 सितम्बर, 2010 तक टूरिस्ट लॉज, मिजोरम सरकार, आइजोल में 8वें राष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया। इस कला समारोह का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल मिजोरम सरकार, श्री एम.एम. लखेरा ने किया। इस समारोह के सम्मानित अतिथि श्री पी.सी. जोरामसंगिलियाना, माननीय कला और संस्कृति मंत्री, मिजोरम सरकार थे। इसकी अध्यक्षता डॉ० सुधाकर शर्मा, सचिव, अकादेमी ने की।

अकादेमी ने भारत भवन के सहयोग से दिनांक 25 से 31 अगस्त, 2010 तक भोपाल में 'राष्ट्रीय प्रिंटमेकिंग शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन भोपाल के विख्यात कलाकार श्री रोबिन डेविड ने किया था। इस शिविर का समापन समारोह दिनांक 31.08.2010 को आयोजित किया गया। श्री लक्ष्मीकांत शर्मा, संस्कृति मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार इसके मुख्य अतिथि थे।

अकादेमी ने भरतियार पल्कलाइकूडम, भरतियार मंचन और ललित कला केंद्र, पुडुचेरी के सहयोग से दिनांक 18 से 25 नवम्बर, 2010 तक भरतियार पल्कलाकोडम, अरियनकुप्पम, पुडुचेरी में 'राष्ट्रीय सिरामिक शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन श्री थिरु ई. वल्सराज, माननीय गृह मंत्री, पुडुचेरी संघ राज्य क्षेत्र ने किया था। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ० सुधाकर शर्मा, सचिव, अकादेमी ने की थी।

अकादेमी ने शांतिनिकेतन दृश्य कला और डिजाइन समिति, रत्नापल्ली, शांतिनिकेतन, भोलपुर के सहयोग से दिनांक 20 और 21 नवम्बर, 2010 को शांतिनिकेतन में 'कला और जीवन पर कला संवाद' कार्यक्रम आयोजित किया।

## प्रकाशन

अकादेमी ने रिपोर्ट अवधि के दौरान कला भारती खण्ड— I, कला भारती खण्ड— II, समकालीन कला सं. 36—37 और मंजीत बावा पुस्तक प्रकाशित कीं।

अकादेमी ने सुरेन्द्र नायर, वी. विश्वनाथन, के.एम. अदीमूलम और जोगेन चौधरी की रंग-बिरंगी पुनर्निमित्तियाँ भी प्रस्तुत कीं।

## प्रदर्शनियां

- क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता ने कला और संस्कृति निदेशालय, नागालैंड सरकार के सहयोग से दिनांक 21 से 28 अगस्त, 2010 तक राज्य अकादेमी हाल, कोहिमा में नागालैंड के परम्परागत निपुण मूर्तिकारों और समकालीन शिल्पियों के मध्य काष्ठ मूर्ति शिल्प के संबंध में 'क्षेत्रीय आपसी सहभागिता शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन श्री के. कुधाजहे येपुथुमी, अपर निदेशक, कला और संस्कृति, नागालैंड सरकार ने किया। श्री देव नुखू, माननीय सलाहकार, कला और संस्कृति इसके सम्मानित अतिथि थे।
- क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता ने कला और संस्कृति निदेशालय, मिजोरम सरकार के सहयोग से दिनांक 1 से 5 सितम्बर, 2010 तक वनप्पा हाल कोरिडोर, आइजोल में 'क्षेत्रीय चित्रकार शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन श्री पी.सी. जोरामसंगलियाना, माननीय कला और संस्कृति मंत्री, मिजोरम सरकार ने किया। श्री नगुरबइका, संयुक्त निदेशक, कला और संस्कृति, मिजोरम सरकार इसके संभावित अतिथि थे।
- क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता और राजकीय कला तथा शिल्प कॉलेज, अगरतला ने दिनांक 24 सितम्बर से 1 अक्टूबर, 2010 तक राजकीय कला तथा शिल्प कॉलेज परिसर में संयुक्त रूप से 'रीजनल डोकरा कार्टिंग कैम्प' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन श्री अनिल सरकार, माननीय मंत्री, उच्चतर शिक्षा, त्रिपुरा सरकार ने किया। इस कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि श्री वरुण चक्रवर्ती, विख्यात कलाकार, त्रिपुरा थे।
- क्षेत्रीय केंद्र, गढ़ी, नई दिल्ली ने दिनांक 12 से 18 अप्रैल, 2010 तक 'अंतर्राष्ट्रीय कला कारवां' (कलाकारों,

संगीतकारों, थियेटर कलाकारों इत्यादि के समूह) का आयोजन किया।

- कोरिया की कलाकार सुश्री किम ह्यून ने दिनांक 29 अप्रैल, 2010 को 'स्लाइड प्रेजेंटेशन' पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।
- क्षेत्रीय केंद्र, गढ़ी, नई दिल्ली ने दिनांक 16 और 17 सितम्बर, 2010 को 'जापानी और भारतीय बुडब्लाक मुद्रण कार्यशाला' आयोजित की। इसमें श्री वाल्टर डीसूजा ने स्लाइड शो भी प्रदर्शित किया।
- क्षेत्रीय केंद्र, गढ़ी, नई दिल्ली ने दिनांक 22 से 28 अक्टूबर, 2010 तक डलहौजी, शिमला में 'क्षेत्रीय चित्रकला शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन श्री देवेश कुमार, उपायुक्त, चम्बा ने किया था।
- क्षेत्रीय केंद्र, गढ़ी, नई दिल्ली ने दिनांक 10 से 16 नवम्बर, 2010 तक संगीत और ललित कला संस्थान, जम्मू में 'क्षेत्रीय प्रिंटमेकिंग शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन दिनांक 10 नवम्बर, 2010 को किया गया था। श्री वेद भसीन, प्रसिद्ध पत्रकार और संस्कृति कर्मी, अध्यक्ष, कश्मीर टाइम्स प्रकाशन इसके मुख्य अतिथि थे।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै ने दिनांक 28 जून से 4 जुलाई, 2010 तक अपनी वीथि में एम्बीशियस फोटोग्राफी अकादेमी के 'फोटोग्राफी कार्यक्रम' का आयोजन किया।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै ने दिनांक 6 से 11 जुलाई, 2010 तक अपनी वीथि में अपने हीरक जयंती समारोह के भाग के रूप में फोटो प्रदर्शनी आयोजित की और निर्वाचन आयोग की 'भारत में चुनाव : एक विशाल कार्य' डॉक्यूमेंटरी फिल्म की स्क्रीनिंग की।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै ने केरल ललित कला अकादेमी, त्रिचूर के सहयोग से दिनांक 12 और 13 अगस्त, 2010 को अपनी वीथि में 'स्क्रीन की गई कला फिल्मों' कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें ब्रूनो नोटेन की कैमाइल क्लोड, एलान येन्टोब की लियोनार्डो— I, टिम डून की डिवाइन माइक्लेंजिलो, आन्द्रे तारकोवस्की की आन्द्रे रुबलेव— I और II, अकीरा कुरोसावा की ड्रीम्स, नार्मन एलेन की सिजाने ऑफ दी प्रिंस फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।



- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै और अल्वास शिक्षा प्रतिष्ठान, मूडबिद्री, कर्नाटक ने अल्वा कॉलेज, विद्यागिरी, मूडबिद्री में दिनांक 2 से 7 सितम्बर, 2010 तक 'क्षेत्रीय कला समारोह : चित्रकार शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन डॉ० एम. मोहन अल्वा, अध्यक्ष, अल्वा शिक्षा न्यास ने किया था। इस समारोह की अध्यक्षता श्री जे.एम.एस. मणि, वरिष्ठ कलाकार ने की थी।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै, शांति प्रतिष्ठान और वैश्विक शिक्षा बहु-विश्वविद्यालय, पुणे ने दिनांक 29 सितम्बर, 2010 को विल्डर नेस्ट रिसोर्ट, सिन्हागाद, दोन्जे गांव में संयुक्त रूप से 'क्षेत्रीय चित्रकार शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन प्रो० वसंत सनावाणी, वरिष्ठ कलाकार ने किया। श्री मुरली लाहोती, वरिष्ठ कलाकार ने इस समारोह की अध्यक्षता की।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै, शांति प्रतिष्ठान और वैश्विक शिक्षा बहु-विश्वविद्यालय, पुणे ने संयुक्त रूप से विल्डर नेस्ट रिसोर्ट, सिन्हागाद, दोन्जेगांव में 'क्षेत्रीय चित्रकार शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का समापन समारोह दिनांक 5.10.2010 को आयोजित किया गया। डॉ० सुधाकर शर्मा, सचिव, अकादेमी ने इस अवसर पर समापन भाषण दिया।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै ने अपने परिसर में पूर्वोत्तर के कलाकारों के साथ अन्तः क्रियात्मक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में महाराष्ट्र और गोवा सहित दक्षिण क्षेत्र से दस कलाकारों और पूर्वोत्तर से भी समान संख्या में कलाकारों ने भाग लिया था। इस कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 8 नवम्बर, 2010 को श्री पी. गोपीनाथ, वरिष्ठ कलाकार ने किया था। इस कार्यशाला का समापन समारोह दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री थोता थर्नीनी, वरिष्ठ कलाकार और विख्यात कला निदेशक ने समापन भाषण दिया था।
- क्षेत्रीय केंद्र, चेन्नै ने आईएनकेओ केंद्र के सहयोग से दिनांक 3 से 13 नवम्बर, 2010 तक अपनी वीथि में 'दी लैम्प ऑफ दी ईस्ट' शीर्षक से प्रदर्शनी आयोजित की। उपर्युक्त प्रदर्शनी का आयोजन महान कलाकार और कवि श्री रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्म वर्षगांठ मनाने के लिए किया गया था।
- क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ और सहायता संस्था ने दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 2010 तक क्षेत्रीय केंद्र की वीथि में स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह की 'पेन्टिड वर्सेस - पेंटिंग और पोयट्री की प्रदर्शनी' नामक प्रदर्शनी आयोजित की। उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
- क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ ने राजस्थान राज्य ललित कला अकादेमी के सहयोग से दिनांक 16 नवम्बर, 2010 को लघु थियेटर, रविन्द्र मंच, जयपुर में डॉ० शैलेन्द्र कुशवाहा, कला साहित्यकार और डीन, ललित कला संकाय, एम. एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा की 'अदर्स ऑन आर्ट' श्रंखला के तहत 'आर्ट इन पब्लिक स्पेस' शीर्षक पर व्याख्यान आयोजित किया।
- क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ ने विख्यात सिरामिक कलाकार, सुश्री जैदा जैकब को आमंत्रित करके एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा में दिनांक 22 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2010 तक 'आर्टिस्ट इन रेजीडेंसी (सिरामिक्स)' कार्यक्रम आयोजित किया। उनकी कलाकृतियों से कला प्रेमियों को समकालीन कला जगत की नई तकनीक और प्रवृत्तियों को सीखने का अद्भुत अवसर प्रदान किया गया।
- क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ ने ललित कला संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय के सहयोग से दिनांक 30 नवम्बर, 2010 को ललित कला संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा में प्रोफेसर मनीष इलकुंचवार, विख्यात विद्वान और सौंदर्य शास्त्री की 'अदर्स ऑन आर्ट' श्रंखला के तहत 'माई एनकाउंटर विद थियेटर' पर व्याख्यान आयोजित किया।
- क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के सहयोग से इसके ललित कला संकाय में दिनांक 7 से 13 दिसम्बर, 2010 तक 'आर्ट इन रेजीडेंसी' पर कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर प्रोफेसर वीरेश्वर भट्टाचार्य, विख्यात चित्रकार को कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम से कला प्रेमियों को समकालीन कला जगत की नई तकनीक और प्रवृत्तियों को सीखने का अवसर प्रदान किया गया। आमंत्रित किए गए कलाकारों और कला विद्यार्थियों द्वारा तैयार की गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी के साथ इस कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर



आर.एन. मिश्रा, पूर्व डीन, ललित कला संकाय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने समापन भाषण दिया।

- क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ ने बनस्थली विश्वविद्यालय, बनस्थली के सहयोग से दिनांक 22 से 27 दिसम्बर, 2010 तक इसके दृश्य कला विभाग में 'आर्टिस्ट इन रेजीडेंसी' कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर आदित्य शास्त्री, कुलपति, बनस्थली विश्वविद्यालय, बनस्थली ने किया। प्रोफेसर अजित दुबे, विख्यात प्रिंटमेकर को इस अवसर पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम का समापन इसके दौरान तैयार की गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी से किया गया।
- क्षेत्रीय केंद्र, भुवनेश्वर ने दिनांक 29 सितम्बर से 5 अक्टूबर, 2010 तक भुवनेश्वर में 'रीजनल वूमैन मल्टीपल-मीडिया कैम्प' आयोजित किया। इस कैम्प का उद्घाटन श्री अबसारा बेयुरिया, पूर्व राजनायक ने किया। 05 अक्टूबर, 2010 को समापन समारोह तथा इसके साथ कैम्प में निष्पादित कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।
- क्षेत्रीय केंद्र, भुवनेश्वर ने दिनांक 30 सितम्बर से 9 अक्टूबर, 2010 तक बोधगया, बिहार में 'क्षेत्रीय शिल्पकार शिविर' आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन वरिष्ठ शिल्पकार श्री अनिल कुमार ने किया। इस शिविर के समापन समारोह के दिन शिविर में तैयार की गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

## संगीत नाटक अकादमी

संगीत नाटक अकादमी – राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी की स्थापना 31 मई, 1952 को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संकल्प द्वारा की गई थी और इसका उद्घाटन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा 28 जनवरी, 1953 को किया गया था।

संगीत नाटक अकादमी की स्थापना जिन उद्देश्यों के लिए की गई थी, उनका ब्यौरा संगम ज्ञापन में दिया गया है। अकादमी के मुख्य उद्देश्यों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है :

- i) संगीत, नृत्य और नाटक की क्षेत्रीय या राज्य अकादमियों की गतिविधियों का समन्वय,
- ii) भारतीय संगीत, नृत्य और नाटकों के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहन देना और इस प्रयोजन के लिए पुस्तकालय और संग्रहालय आदि की स्थापना करना,
- iii) संगीत, नाटक और नृत्य के विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देना तथा संगीत, नृत्य और नाटक की कलाओं के संबंध में विभिन्न क्षेत्रों के बीच तकनीकों को समृद्ध बनाना,
- iv) क्षेत्रीय भाषाओं और अलग-अलग थिएटर केंद्रों की स्थापना को प्रोत्साहन देना,
- v) अभिनेता प्रशिक्षण पर अनुदेश, मंच सज्जा के अध्ययन तथा नाटकों के प्रस्तुतीकरण सहित थिएटर की कला में प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं की स्थापना को प्रोत्साहन देना,
- vi) संदर्भ पुस्तकों जैसे चित्रमय शब्दकोश या तकनीकी शब्दावली की हस्तपुस्तिका सहित भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक पर साहित्य प्रकाशित करना,
- vii) गैर-पेशेवर नाटक कार्यकलाप, बाल थिएटर, ओपन एयर थिएटर और ग्रामीण थिएटर के विभिन्न रूपों के विकास को प्रोत्साहन देना,
- viii) देश के विभिन्न क्षेत्रों में लोक संगीत, लोक नृत्य और लोक नाटक को पुनः जीवित करना और संरक्षित करना तथा सामुदायिक संगीत, मार्शल संगीत और अन्य प्रकार के संगीत के विकास को बढ़ावा देना,

3.3.3



- ix) अखिल भारतीय आधार पर संगीत, नृत्य और नाटक उत्सवों, गोष्ठियों, सम्मेलनों को प्रायोजित करना तथा इस प्रकार के क्षेत्रीय उत्सवों को बढ़ावा देना,
- x) संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धि के लिए अलग-अलग कलाकारों को पुरस्कार और सम्मान प्रदान करना और मान्यता देना,
- xi) उपर्युक्त उल्लिखित विषयों के शिक्षण में अनुसंधान करने के उद्देश्य से संगीत, नृत्य और नाटक में शिक्षा के उचित और पर्याप्त मानकों का अनुरक्षण करने के लिए उपयुक्त कदम उठाना,
- xii) देश और साथ ही अन्य देशों के विभिन्न क्षेत्रों के संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्र में सांस्कृतिक संविदाओं को प्रोत्साहन देना।

अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए अकादमी निम्नलिखित योजनागत स्कीमों का संचालन करती है, जो देश की प्रदर्शन कला विरासत के परिरक्षण और प्रोत्साहन से संबंधित हैं :

- i) सर्वेक्षण, अनुसंधान, प्रलेखन और प्रचार-प्रसार तथा प्रकाशन,
- ii) राष्ट्रीय संग्रहालय, पुस्तकालय और पुरातत्व,
- iii) कथक केंद्र, नई दिल्ली, कुटियट्टम केंद्र, केरल, छाउ केंद्र, बारीपाड़ा/जमशेदपुर, जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी, इम्फाल, सत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और पूर्वोत्तर केंद्र, शिलांग में भारत के विशेष क्षेत्रों/रूपों के लिए राष्ट्रीय संस्थान और अकादमी के केंद्र,
- iv) प्रशिक्षण और निष्पादन सहायता नामतः परम्परागत, लोक कला और जनजातीय प्रदर्शन कला का प्रशिक्षण और परिरक्षण, युवा कलाकारों का प्रायोजन और संवर्धन, युवा थिएटर कर्मियों को सहायता, कठपुतली का संवर्धन और परिरक्षण, संगीत, नृत्य थिएटर के समकालीन तथा प्रायोगिक कार्यों के लिए सहायता और समर्थन, बाल थिएटर को समर्थन, निष्पादनकारी कलाओं के अभिज्ञात क्षेत्रों में प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम, थिएटर कलाओं में डिप्लोमा, मानवता की अमूर्त विरासत के परिरक्षण और संवर्धन को सहायता,

- v) अनुदान, जैसे स्वैच्छिक सांस्कृतिक संस्थाओं को अनुदान, अलग-अलग व्यक्तियों को परियोजना अनुदान, निष्पादन कलाओं में शैक्षिक अनुसंधान के लिए अनुदान और प्रकाशन अनुदान,
- vi) महोत्सव, कार्यशाला और राष्ट्रीय प्रदर्शनी,
- vii) पुरस्कार, सम्मान और इनाम,
- viii) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, साथ ही अंतर-राज्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, भारत-एशिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, भारत-विदेशी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और द्विवार्षिक अंतराष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव तथा
- ix) कलाकारों के लिए कल्याणकारी उपाय।

संगीत नाटक अकादमी का प्रबंधन, कार्यकारी मंडल की सहायता से महापरिषद द्वारा किया जाता है, जो अकादमी के निर्देशों का पालन करती है और इसके कार्यों का नियंत्रण करती है। अकादमी के अध्यक्ष, श्री राम निवास मिर्धा का संक्षिप्त बीमारी के बाद दिनांक 29 जनवरी, 2010 को स्वर्गवास हो गया था। श्री राम निवास मिर्धा का स्वर्गवास होने के बाद माननीय राष्ट्रपति द्वारा दिनांक 10 अगस्त, 2010 को श्रीमती लीला सैमसन, विख्यात भरतनाट्यम कलाकार और निदेशक, कला क्षेत्र प्रतिष्ठान, चेन्नई को अकादमी की अध्यक्ष नियुक्त किए जाने तक अकादमी के नियमों और विनियमों में यथा-उपबंधित के अनुसार अकादमी के उपाध्यक्ष श्री रतन थियम ने अध्यक्ष की शक्तियों का प्रयोग किया और कार्यों को निष्पादित कराया। श्रीमती दीपाली खन्ना, अपर सचिव और वित्त सलाहकार, संस्कृति मंत्रालय इस अकादमी की वित्त सलाहकार हैं। श्री जयंत कस्तुआर इस समय अकादमी के प्रधान कार्यकारी अधिकारी और सचिव हैं।

## गतिविधियां

### प्रकाशन

अकादमी के प्रकाशन कार्यक्रम में पुस्तकों और निष्पादनकारी कलाओं पर प्रकाशन और तिमाही संगीत नाटक पत्रिका का प्रकाशन शामिल है। संगीत नाटक अकादमी ने रिपोर्टधीन

अवधि के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की : i) केरल के मंदिर संगीत वाद्य यंत्र : एल.एस. राजगोपालन (सम्पादक ए. पुरुषोत्तम, ए. हरेन्द्रनाथ) और ii) एस्थेटिक्स : उपागम, अवधारणा और समस्याएं : एस. के. सक्सेना तथा तिमाही पत्रिका 'संगीत नाटक' के तीन अंक भी इस अवधि के दौरान प्रकाशित किए गए।

विद्वानों को अनुदान प्रदान करने के साथ-साथ निष्पादनकारी कलाओं पर 24 आवधिक पत्रिकाओं तथा 1 पुस्तक के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

#### प्रलेखन और प्रचार-प्रसार

जनवरी 2010 से दिसम्बर, 2010 के दौरान 414 घंटे की वीडियो रिकॉर्डिंग 40 घंटे की ऑडियो रिकॉर्डिंग, 9810 श्वेत-श्याम तस्वीरें तथा रंगीन तस्वीरें अकादमी के अभिलेखागार में शामिल की गईं। अभिलेखागार में कुल 2,36,444 फोटो (श्वेत-श्याम तथा रंगीन तस्वीरें) और 40,443 कलर स्लाइड, 7818 घंटे की वीडियो रिकॉर्डिंग, 7847 घंटे की ऑडियो रिकॉर्डिंग और 16 एमएम की अनुमानतः 1.44 लाख फीट फिल्म सामग्री है।

#### पुस्तकालय, श्रव्य-दृश्य पुस्तकालय और फोटो पुस्तकालय

अकादमी का पुस्तकालय, मुख्यतः प्रदर्शन कला के छात्रों और अनुसंधानकर्ताओं को लाभान्वित करता है और इसमें गत वर्षों की प्रदर्शन कलाओं की विशिष्ट पुस्तकों का संग्रह है जिनमें से बहुत सी दुर्लभ पुस्तकें हैं और जिनकी प्रतियां भी उपलब्ध नहीं हैं। पुस्तकालय में लगभग 150 भारतीय और विदेशी पत्रिकाएं आती हैं। अकादमी के पुस्तकालय में इस समय 24506 पुस्तकें उपलब्ध हैं जबकि 1105 पुस्तकें उपहार स्वरूप प्राप्त हुई हैं। श्रव्य-दृश्य पुस्तकालय में बहुत सी डिस्क कैसेट और ऑडियो/वीडियो सी डी हैं। श्रव्य-दृश्य पुस्तकालय के संग्रह में अब 9827 डिस्क, 761 पूर्व रिकॉर्ड कैसेट, जो अकादमी के पुरातत्व संग्रह से हैं, नृत्य, नाटक, संगीत के 92 वीडियो कैसेट, वाणिज्यिक ऑडियो कैसेट 1602, उपहार में दिए गए ऑडियो कैसेट 165 और 1089 सीडी, 18 उपहार में दी गई सीडी, 51 वीडियो कॉम्पैक्ट डिस्क, भारतीय संगीत की उपहार में दी गई 18 वीसीडी, भरतनाट्यम नृत्य की 2 डीवीडी हैं।

फोटो पुस्तकालय में लगभग 2,30,000 फोटों हैं और इनको डिजिटल रूप में बदलने का कार्य प्रगति पर है।

#### संग्रहालय

वर्ष 1953 में अकादमी की स्थापना के समय से ही अकादमी मंच कला से संबंधित कलात्मक वस्तुएं हासिल करती रही है। विदेश से उपहार स्वरूप प्राप्त वाद्य यंत्रों के अतिरिक्त अब इसमें संगीत उपकरणों, मुखौटों, कठपुतलियों, मुकुट, पोशाकों तथा मंच कला से संबंधित अन्य कलावस्तुओं सहित 2000 से ज्यादा कलात्मक वस्तुएं हैं। इस वर्ष के दौरान इसमें पश्चिम बंगाल की डेंजर पुतुल, महाराष्ट्र की कला स्यूतरई बाहुल्य, केरल की तोल्पवा कुथू शैडो कठपुतली और राजस्थान की कठपुतली सहित 40 कठपुतलियों को शामिल किया गया। संग्रहालय ने दुर्लभ वाद्य-यंत्र निर्माण के संबंध में दो कार्यशालाएं प्रथम जोधपुर में और द्वितीय कोलकाता में आयोजित की। संग्रहालय की कलावस्तुओं के डिजिटलीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया है और आगंतुक संग्रहालय तथा इसके संग्रह की जानकारी प्राप्त करने के लिए कियोस्क टच स्क्रीन सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं।

अकादमी की राष्ट्रीय संग्रहालय मंच कला परियोजना के तहत इसके पूर्वी क्षेत्र के दुर्लभ संगीत वाद्य-यंत्रों के प्रशिक्षण और संग्रह केंद्र, कोलकाता में स्ट्रिंग वाद्य-यंत्र निर्माण पर दिनांक 2 से 5 मई, 2010 तक चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य युवाओं विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को भारतीय संगीत वाद्य-यंत्रों अर्थात् सितार, सरोद, वीणा, सुरबहार और इसराज के निर्माण के क्षेत्र में प्रशिक्षित करके उन्हें विशेषज्ञ शिल्पकार बनाना है।

निपुण शिल्पकारों अर्थात् दुलाल चन्द्र कांजी और श्री सनत हल्दर के मार्गदर्शन में कोलकाता के आस-पास के विभिन्न ग्रामों अर्थात् फाल्ता, धुलासिमला, हावडा और उल्बेडिया के ग्यारह प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण से यह कार्यशाला शुरू की गई। श्री सनत हल्दर के मार्गदर्शन में प्रशिक्षुओं ने सितार, रुद्र वीणा, सुरबहार इत्यादि की नक्काशी और काष्ठ शिल्प कार्य की कला सीखी तथा श्री दुलाल चन्द्र कांजी ने सरोद निर्माण की विभिन्न तकनीकों के संबंध में प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया।

इस अवधि के दौरान संग्रहालय ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सहयोग से इसके परिसर में राष्ट्रमंडल खेल, 2010 समारोह

के भाग के रूप में अपने कठपुतली संग्रह की एक बड़ी प्रदर्शनी आयोजित की जो अत्यधिक सफल रही।

## उत्सव/समारोह

गणतंत्र दिवस परेड – 26 जनवरी, 2010 में संगीत वाद्य-यंत्रों पर विद्या दर्शन – प्रभावशाली नाट्य प्रदर्शन



झांकी

संगीत नाटक अकादमी ने नई दिल्ली में आयोजित की गई गणतंत्र दिवस परेड 2010, नई दिल्ली में प्रथम बार संगीत वाद्य-यंत्रों पर बेमिसाल तरीके से निर्धारित किया गया एक प्रभावशाली नाट्य प्रदर्शन-“विद्या दर्शन” प्रस्तुत किया। इस नाट्य प्रदर्शन जिसे रक्षा मंत्रालय ने प्रथम पुरस्कार प्रदान किया था, के तहत पूरे देश के समक्ष भारतीय संगीत वाद्य-यंत्रों की समृद्धि और महत्व को प्रदर्शित किया गया था।

नृत्य प्रतिभा, जबलपुर – 31 जनवरी – 3 फरवरी, 2010

उस्ताद अलाऊद्दीन खान संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल और जिला प्रशासन, जबलपुर के सहयोग से नई पीढ़ी के कलाकारों को समर्पित एक नाट्य उत्सव-नृत्य प्रतिभा जबलपुर में आयोजित किया गया था। इस उत्सव में मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों से चुने गए देश के मध्य क्षेत्र के नृत्यों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। विभिन्न प्रकार की शैलियों की विभिन्न श्रेणियों को प्रस्तुत करने और इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए अन्य क्षेत्रों से भी कुछ नृतक आमंत्रित किए गए थे। इस समारोह को मीडिया में प्रमुखता दी गई तथा इसकी सराहना की गई।

रंग प्रतिभा, शिमला – 23-28 फरवरी, 2010

कला, भाषा और संस्कृति अकादमी, शिमला के सहयोग से दिनांक 23 से 28 फरवरी, 2010 तक गैती थियेटर, शिमला में शिमला के युवा थियेटर निर्देशकों का समारोह – रंग प्रतिभा आयोजित किया गया। इसमें राज्य के विभिन्न भागों के थियेटर विशेषज्ञों को भी आमंत्रित किया गया था।

नृत्य संगम, बेंगलुरु – 1-4 मार्च, 2010

वर्ष 2004 में शुरू की गई नृत्य समारोह की श्रृंखला में से एक नृत्य समारोह नृत्य संगम है जिसका उद्देश्य एक ही कार्यक्रम में सुदूरवर्ती कस्बों और शहरों में भारतीय नृत्य के विविध प्रकारों के प्रति नृत्य-उत्साह पैदा करना है। इस नृत्य संगम श्रृंखला में नृत्य की मुख्य विधाओं के विख्यात कलाकारों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। यह नृत्य संगम, बेंगलूरु, संगीत अकादमी, चौदियाह स्मारक हाल, बेंगलूरु के सहयोग से आयोजित किया गया था।

रबीन्द्र प्रणति – रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती समारोह शुरू करने के लिए मनाया गया कार्यक्रम



रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती समारोह

संगीत नाटक अकादमी ने साहित्य अकादमी और ललित कला अकादमी के सहयोग से दिनांक 7 से 9 मई, 2010 तक रविन्द्र भवन, कापरनिकस मार्ग, नई दिल्ली में रबीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती समारोह शुरू करने के लिए एक कार्यक्रम – रबीन्द्र प्रणति आयोजित किया। इस कार्यक्रम में रबीन्द्रनाथ टैगोर



के साहित्य, मंच कला और दृश्य कला के क्षेत्र में किए गए कार्यों के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित किया गया। इस कार्यक्रम में टैगोर के संग्रह पर पुस्तक प्रदर्शनी, भारतीय भाषाओं में गीतांजलि का योगदान, टैगोर की कला की पुनः जानकारी प्राप्त करने के लिए पैनल विचार-विमर्श, वाचिकांजलि – टैगोर के साहित्यिक कार्य से अग्रणी कलाकारों के लिए योगदान, वैद्यांजलि – आकाशवाणी वाद्य वृंद द्वारा वाद्य-यंत्रों पर सामूहिक गान, काव्यांजलि – कवि सम्मेलन, नृत्यांजलि – अग्रणी कोरियोग्राफर द्वारा और कलकत्ता गायक मंडली द्वारा स्वरांजलि कार्यक्रम शामिल है।

श्री प्रणब मुखर्जी, केंद्रीय वित्त मंत्री, भारत सरकार दिनांक 9 मई, 2010 रविवार को मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर वित्त मंत्री ने टैगोर के कार्यों का उल्लेख किया और रबीन्द्र नाथ टैगोर के स्मरणोत्सव में विशेष सिक्का जारी किया।

*12वां अप्पन अंतर्राष्ट्रीय समारोह और संगोष्ठी, डलहौजी – 15-18 मई, 2010*

संगीत नाटक अकादमी ने एशिया प्रशांत मंच कला नेटवर्क (एपीपीएएन) के सहयोग से दिनांक 15 से 18 मई, 2010 तक डलहौजी, हिमाचल प्रदेश में – कला, संस्कृति और संवाद के माध्यम से घृणा खत्म करें विषय पर 12वां अप्पन अंतर्राष्ट्रीय समारोह और संगोष्ठी आयोजित की। इस कार्यक्रम में 15 विदेशी प्रतिनिधियों सहित कुल 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। श्री रतन थियम, उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी ने इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। एसएनए के प्रलेखन दल ने इस पूरे कार्यक्रम का प्रलेखन किया।

*अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस – 18 मई, 2010*

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर संगीत नाटक अकादमी ने राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली से 50-60 बच्चों को अकादमी की संगीत वाद्य-यंत्र और मुखौटा वीथी का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया। अकादमी ने एक कठपुतली समारोह – अमर सिंह राठौड़ भी आयोजित किया जिसे मेघदूत थियेटर-।।। में कठपुतली कार्यक्रम – राजस्थान की स्ट्रिंग कठपुतली में प्रशिक्षण की अकादमी की परियोजना के प्रशिक्षुओं ने प्रस्तुत किया था।

*उस्ताद बिसमिल्लाह खां युवा पुरस्कार, 2009 प्रस्तुतीकरण समारोह*



बिसमिल्लाह खां युवा पुरस्कार का प्रस्तुतीकरण

संगीत नाटक अकादमी का वर्ष 2009 के उस्ताद बिसमिल्लाह खां युवा पुरस्कार संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्र में 33 युवा प्रतिभाशाली कलाकारों को श्री रतन थियम, उपाध्यक्ष, एसएनए ने दिनांक 10 अगस्त, 2010 को कमानी सभागार में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया था। इस पुरस्कार समारोह के बाद दिनांक 10 से 17 अगस्त, 2010 तक कमानी सभागार, नई दिल्ली में कुछ युवा पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने संगीत, नृत्य और नाटक का एक सप्ताह का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

*संगीत नाटक अकादमी अध्येतावृत्तियां और पुरस्कार, 2009*



भारत की महामहिम राष्ट्रपति अध्येतावृत्ति पुरस्कार प्रदान करती हुई

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने दिनांक 28 सितम्बर, 2010 को अपराह्न 5.30 बजे कमानी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित विशेष सम्मान समारोह में भारत की मंच कलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान करने वाले 33 कलाकारों और विद्वानों को अकादमी पुरस्कार 2009 और देश के 6 विख्यात व्यक्तियों को संगीत नाटक अकादमी अध्येतावृत्ति प्रदान की। इस अवसर पर इस समारोह में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में डा० (श्री) देवीसिंह रामसिंह शेखावत, श्रीमती लीला सैमसन, अध्यक्ष, एसएनए, पृथ्वीराज चव्हाण, राज्य मंत्री (पीएमओ), श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय और श्री जयंत कस्तुआर, सचिव, एसएनए शामिल थे।

संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 2009 प्राप्त करने वाले कलाकारों ने दिनांक 15 से 21 अक्टूबर, 2010 तक कमानी सभागार, श्रीराम सेंटर और मेघदूत थियेटर, नई दिल्ली में मंच कलाओं के संबंध में कार्यक्रम प्रस्तुत किया। फैलो और वर्ष 2009 का पुरस्कार प्राप्त करने वालों की सूची संलग्न है।



भारत की महामहिम राष्ट्रपति अध्येतावृत्ति पुरस्कार प्रदान करती हुई  
देश पर्व – भारत की मंच कलाओं का उत्सव (राष्ट्रमंडल खेल, 2010 के अवसर पर) 4-13 अक्टूबर, 2010

संगीत नाटक अकादमी ने 19वें राष्ट्रमंडल खेल 2010 के अवसर पर दिनांक 4-13 अक्टूबर, 2010 तक 10 दिन का भारत की विभिन्न मंच कलाओं का उत्सव-देश पर्व दिल्ली में आयोजित किया जिसमें विविध परम्पराओं और समकालीन अभिव्यक्तियों को पांच स्थानों पर छः भागों में राष्ट्र भावना का उत्सव मनाने और राष्ट्रमंडल खेल भावना का हर्ष मनाने के लिए निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया :-

1. कुल वर्णिका – राष्ट्रमंडल साहित्य से संबंधित मंचीय कार्यक्रम : भारत के अग्रणी नृतकों और



देश-पर्व उत्सव

- कलाकारों ने 10 दिन तक दक्षिण अफ्रीका, नाइजीरिया, बांग्लादेश, सीरिया, लियोन, न्यूजीलैंड, सेंट ल्यूसिया, श्रीलंका और जिम्बाब्वे की कविता, नाटक, लघु कहानियों और उपन्यासों पर आधारित नवाचारी मंचन कार्यक्रम के तहत 21 मंचन कार्यक्रम।
2. देशज – राष्ट्र की विभिन्न अभिव्यक्तियां : इस भाग में सभी क्षेत्रों – उत्तर, दक्षिण पूर्व, पश्चिम, मध्य और पूर्वोत्तर भारत के लोक संगीत और नृत्य को प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम के तहत 9 दिन तक 36 समूहों ने 100 मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए।
3. नाट्य दर्शन – भारत में थियेटर की झांकी : इसमें भारत के परम्परागत और आधुनिक थियेटर के मुख्य विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया। इस भाग में भारत के महान निर्देशकों ने परम्परागत, आधुनिक भारतीय, प्राचीन तथा समकालीन नाटक प्रस्तुत किए और इसमें भारत के पुराने तथा नए थियेटर का चयन किया गया था। इस कार्यक्रम में 10 दिन तक 14 मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।
4. संगीत मार्ग – भारतीय संगीत के मार्ग : देश के भक्ति संगीत की विभिन्न विधाओं पर विशेष ध्यान

केन्द्रित करते हुए भारत के संगीत की महत्वपूर्ण क्षेत्रीय परम्पराओं को प्रदर्शित किया गया। इस भाग में देश के विभिन्न भागों से अग्रणी गायकों और संगीतकारों ने परम्परागत भक्ति, मंचीय संगीत, क्षेत्रीय और प्राचीन संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसमें 10 दिन तक 16 मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

5. नृत्य रूपा – भारत के नृत्य : इसके तहत विख्यात नृतकों और संगीत नाटक अकादमी के केंद्रों के कलाकारों ने मुख्य भारतीय नृत्य कलाओं को प्रस्तुत किया। इसमें 11 मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।
6. शुभारंभ – उपर्युक्त के अतिरिक्त प्रत्येक सुबह मेघदूत परिसर के लॉन में 10 समूहों और 10 मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिनमें तमिलनाडु के नागेश्वरम, मणिपुर के ढोल-ढोलक, राजस्थान के सिंधी सारंगी, कामड़ा और ढोलक, दिल्ली के शहनाई तथा ताशा नगाड़ा, उड़ीसा के ढोल मोहुरी तथा पश्चिम बंगाल के ढाक को शामिल किया गया था।

उपर्युक्त समारोहों में लगभग 1500 कलाकारों और तकनीकी व्यक्तियों ने भाग लिया था। इनमें अत्यधिक उत्साह के साथ व्यक्तियों ने भाग लिया और मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी इन्हें प्रमुखता दी गई। आम जनता, विद्वानों, कलाकारों, विदेशी प्रतिनिधियों तथा पर्यटकों ने भी इन समारोहों की सराहना की।

पुतुल केंद्र – कठपुतली केंद्र, नई दिल्ली

संगीत नाटक अकादमी ने अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार किया है और भारत के समूचे परम्परागत तथा समकालीन समुदाय की देखभाल करने के लिए दिल्ली में पुतुल केंद्र – कठपुतली केंद्र की स्थापना की है।

दिल्ली में राजस्थान कठपुतली कार्यशाला 18 जनवरी से 17 अप्रैल, 2010 तक

गुरु पूरण भट्ट ने संगीत नाटक अकादमी की वर्ष 2007-2008 के दौरान प्रशिक्षण के लिए सहायता परियोजना के तहत कठपुतली-राजस्थान की स्ट्रिंग कठपुतली में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम

शादीपुर डिपो में आयोजित किया जिसमें 15 युवा प्रशिक्षुओं ने भाग लिया था। श्री पूरण भट्ट और श्री दादी पद्मजी के तहत श्री निवास मलिहा स्मारक थियेटर, शिल्प संग्रहालय न्यास, 5 दीन दयाल उपाध्याय मार्ग और नई दिल्ली-1 में 18 जनवरी से 17 मार्च, 2010 तक निर्माण प्रबोधन कठपुतली-कार्यशाला आयोजित की गई। इसके बाद इसे एक माह के लिए अर्थात् 18 मार्च से 17 अप्रैल, 2010 तक बढ़ाया गया।

मेघदूत थियेटर- II और कठपुतली केंद्र में परम्परागत कठपुतली मंचन कार्यक्रम

मेघदूत थियेटर और पुतुल केंद्र में दिनांक 24 और 25 जुलाई, 2010 को श्री परशुराम गंगवाने ने चामदयचा बहुला – महाराष्ट्र के कठपुतली मंचन कार्यक्रम को प्रस्तुत किया।

पुतुल केंद्र में दिनांक 29 और 30 नवम्बर, 2010 को श्री शिंदे हनुमंत राव ने तोलू बोमलत्ता – आंध्र प्रदेश के कठपुतली मंचन कार्यक्रम को प्रस्तुत किया।

पुतुल उत्सव – 19-27 नवम्बर, 2010

संगीत नाटक अकादमी ने इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर के सहयोग से दिनांक 19 से 27 नवम्बर, 2010 तक प्रगति मैदान में पुतुल उत्सव आयोजित किया। इसमें भाग लेने के लिए 18 परम्परागत कठपुतली समूहों और 9 स्थानीय समकालीन कठपुतली समूहों को आमंत्रित किया गया था। इस समारोह के दौरान 8 समकालीन कठपुतली समूहों ने दोपहर के बाद और 16 परम्परागत कठपुतली समूहों ने शाम को प्रगति मैदान में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पुतुल केंद्र में इन कार्यक्रमों को पुनः प्रस्तुत करने के लिए 14 परम्परागत कठपुतली समूहों को आमंत्रित किया गया था।

पुतुल परम्परा – कर्नाटक – 1-5 दिसम्बर, 2010

कर्नाटक जनपद अकादमी के सहयोग से बेंगलूरु में दिनांक 1 से 5 दिसम्बर, 2010 तक कर्नाटक की कठपुतली परम्पराओं के उत्सव, प्रलेखन तथा अंतः क्रियात्मक कार्यक्रम – पुतुल परम्परा को आयोजित किया गया। इसमें 23 समूहों का प्रलेखन कार्य किया गया और राज्य के विभिन्न भागों के 16 समूहों को इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया।

संगीत नाटक अकादमी की विभिन्न समितियों की बैठकें

- \* प्रकाशन समिति की बैठक दिनांक 15 जनवरी, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई

- \* प्रलेखन और पुरातत्व सलाहकार समिति की बैठक 16 जनवरी, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* कार्यकारी मंडल की बैठक दिनांक 28 जनवरी, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* महापरिषद की बैठक दिनांक 29 जनवरी, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* महापरिषद की बैठक दिनांक 12 फरवरी, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* कार्यकारी मंडल की बैठक दिनांक 28 जून, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* महापरिषद की बैठक दिनांक 29 जून, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* एसएनए कार्यक्रम के समिति सदस्यों की बैठक राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान दिनांक 16 जुलाई, 2010 को आयोजित की गई
- \* वित्त समिति की बैठक दिनांक 27 जुलाई, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* थियेटर सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 11 अगस्त, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* कार्यकारी मंडल की बैठक दिनांक 29 सितम्बर, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* अमूर्त सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अर्थोपाय तथा सहायता के लिए दिनांक 18 नवम्बर को बैठक आयोजित की गई
- \* अनुदान समिति की बैठक दिनांक 19-20 नवम्बर, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* रामलीला के संबंध में विशेषज्ञ समिति की बैठक दिनांक 12 दिसम्बर, 2010 को आयोजित की गई
- \* प्रकाशन समिति की बैठक दिनांक 14 दिसम्बर, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* छऊ के लिए सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 14 दिसम्बर, 2010 को दिल्ली में आयोजित की गई
- \* रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती समिति की बैठक दिनांक 15 दिसम्बर, 2010 को आयोजित की गई

## कथक केंद्र, नई दिल्ली

संगीत नाटक अकादमी की एक संघटक यूनिट कथक केंद्र देश की अग्रणी नृत्य-शिक्षण संस्था है और यह कथक नृत्य का प्रशिक्षण प्रदान करती है। यह 1964 में स्थापित की गई तथा कथक नृत्य और इससे सम्बद्ध स्वर संगीत और पखावज जैसे विषयों में पाठ्यक्रम संचालित करती है। इसके प्रारंभिक पाठ्यक्रम : 7 से 16 वर्ष की आयु समूह के बच्चों के लिए नृत्य में पांच वर्षीय (अंशकालिक) आधारभूत पाठ्यक्रम और 13 से 22 वर्ष आयु समूह के बच्चों के लिए तीन वर्षीय (अंशकालिक) डिप्लोमा (उत्तीर्ण) पाठ्यक्रम हैं। इनके साथ-साथ इसके तीन वर्षीय (19-26 आयु समूह) उच्च पूर्णकालिक नृत्य पाठ्यक्रम से संबंधित डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम भी है। हिन्दुस्तानी स्वर संगीत और पखावज वादन में तीन वर्षीय विशेष पाठ्यक्रम भी है। इस केंद्र के ऐसे नृत्य शिक्षकों और विद्यार्थियों, जो डिप्लोमा (आनर्स) अथवा उत्तर-डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा कर चुके हैं और कथक नृत्य शिक्षण को कैरियर के रूप में अपनाने के इच्छुक हैं, के लिए एक वर्ष का नृत्य पुनश्चर्या पाठ्यक्रम भी संचालित किया जाता है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान कथक केंद्र ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए :

कथक महोत्सव कथक नृत्य का वार्षिक राष्ट्रीय समारोह, कथक केंद्र द्वारा दिनांक 29 मार्च से 2 अप्रैल, 2010 तक कमानी सभागार और मेघदूत थियेटर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। पूरे भारत से कथक के अनेक गुरुओं तथा कलाकारों ने इसमें भाग लिया।

अकादमिक वर्ष 2009-2010 की **वार्षिक परीक्षा** दिनांक 1 मई, 2010 से 15 मई, 2010 तक आयोजित की गई।

कथक नृत्य के विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए **नए प्रवेश** की प्रक्रिया 1 जुलाई, 2010 से 11 जुलाई, 2010 तक जारी रखी गई।

श्रीमती गीतांजली लाल, रंगमंडल प्रमुख के मार्गदर्शन में कथक केंद्र ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित 'चीन-शंघाई प्रदर्शनी में भारत उत्सव' के अवसर पर दिनांक 18 और 19 अगस्त, 2010 को चीन में 'पुनर्नवा' और 'अवरोह' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कथक केंद्र ने दिनांक 14 और 15 सितम्बर, 2010 को कमानी सभागार, नई दिल्ली में 'संग्रहालय की कोरियोग्राफिक प्रस्तुति' दी।



जिन विद्यार्थियों ने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है और डिप्लोमा (आनर्स) तथा उत्तर-डिप्लोमा पाठ्यक्रम उत्तीर्ण कर लिया है उन्हें दीक्षांत समारोह में सुश्री लीला सैमसन, अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी ने प्रमाण-पत्र/डिप्लोमा प्रमाण-पत्र प्रदान किए। यह समारोह दिनांक 29 सितम्बर, 2010 को कमानी सभागार में आयोजित किया गया। इस समारोह के बाद उच्च पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों ने कमानी सभागार में समूह नृत्य कलाओं का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

राष्ट्रमंडल खेल के संबंध में केंद्र ने अपने उत्तरी केंद्र दिल्ली में 5 से 13 अक्टूबर, 2010 तक 'देशज' और 'नृत्य रूप' कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

दिनांक 21 से 24 अक्टूबर, 2010 तक 'हवेली संगीत की परम्परा' के संबंध में कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में आगरा से श्री सत्यभान शर्मा को आमंत्रित किया गया था।

केंद्र के वार्षिक कार्यक्रम 'कथक उत्सव' को प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद के सहयोग से दिनांक 12 से 14 नवम्बर, 2010 तक मेहता सभागार, प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद में आयोजित किया गया था।

### जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी, इम्फाल

जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी, साहित्य नाटक अकादमी, नई दिल्ली की संघटक ईकाई है और यह अकादमी थांग-टा जैसे मणिपुरी नृत्य और संगीत तथा सम्बद्ध विषयों के शिक्षण के लिए अग्रणी संस्था है। वर्ष 1954 में स्थापित की गई यह अकादमी उपर्युक्त विषयों में विस्तृत पाठ्यक्रम संचालित करती है। इस संस्था के अपने स्वयं के शिक्षक और निर्माण यूनिट हैं जिनमें नृत्य-नाटकों से संबंधित संग्रह है। इस अकादमी का प्रबंधन इसके कार्यकारी मंडल में निहित है जिसे स्थानीय सलाहकार समिति (मणिपुर के राज्यपाल इसके अध्यक्ष होते हैं) जो अकादमी के मानकों को बनाए रखने तथा इसके कार्यक्रमों और स्कीमों को बनाने के लिए उत्तरदायी है, सहायता प्रदान करती है। जनवरी 2010 से दिसम्बर 2010 तक की अवधि के दौरान आयोजित किए गए कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है :

#### 56वां स्थापना दिवस समारोह

अकादमी का 56वां स्थापना दिवस समारोह दिनांक 1 अप्रैल, 2010 को अकादमी के सभागार में आयोजित किया गया।

प्रोफेसर एच. नंदकुमार शर्मा, सम-कुलपति, मणिपुर विश्वविद्यालय तथा मुख्य अतिथि के रूप में उपाध्यक्ष, जेएनएमडीए ने इस अवसर की गरिमा बढ़ाई।

#### 5 दिवसीय रास समारोह

अकादमी के मंडप में दिनांक 7 से 11 अप्रैल, 2010 तक 5 दिवसीय रास समारोह आयोजित किया गया।

#### 5 दिवसीय लाइ हाराओबा समारोह

जेएनएमडीए के इबूधोऊ चखाबा के लाइबंग में 5 दिवसीय लाइ हाराओबा समारोह दिनांक 25 से 29 मई, 2010 तक आयोजित किया गया।

जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी के विद्यार्थियों और गुरुओं के 38 सदस्यीय दल ने मोईरंग में माइबी जगोई, नुपी थोगल जगोई, नूपा नुपी थोगल जगोई, मोईरंग शाई लोक संगीत आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

#### मोईरंग शाई लोक संगीत दिनांक 21 से 23 जून, 2010 तक

गुरु आर.के. सिंहजीत सिंह ने दिनांक 19 जुलाई, 2010 को मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य के संबंध में व्याख्यान-व-प्रदर्शन कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

जेएनएमडीए में दिनांक 22 से 31 जुलाई, 2010 तक सूत्रधारी की परम्परा के संबंध में 10 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

अकादमी के विद्यार्थियों और गुरुओं ने दिनांक 13 अगस्त, 2010 को "अथौबसिंगडा कचाबा थौरम" के रूप में देशभक्ति दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर अकादमी के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन के संबंध में कमानी सभागार, नई दिल्ली में 8 सदस्यीय पुंग और ढोल चोलम कलाकारों ने दिनांक 8 अक्टूबर, 2010 को पुंग और ढोल चोलम कार्यक्रम और जेएनएमडीए के 21 सदस्यीय सांस्कृतिक दल ने दिनांक 10 अक्टूबर, 2010 को वसंत रास कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

जेएनएमडीए के उपाध्यक्ष डा० एन. तोम्बी सिंह की अध्यक्षता में 25 सदस्यीय सांस्कृतिक दल ने दिनांक 27 अक्टूबर, 2010 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में संकीर्णत सहित कुंजा रास कार्यक्रम प्रस्तुत किया।



### कुटीयट्टम केंद्र, तिरुवनंतपुरम

यह केंद्र कुटीयट्टम के 'नांगियार, कूठ, कूथू, मिझाविल और थयम्बक इत्यादि कार्यक्रम प्रत्येक माह आयोजित करता है। केरल के विभिन्न स्थानों पर दूरस्थ कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

कुटीयट्टम पोशाक और आभूषण बनाने के प्रशिक्षण के अतिरिक्त विभिन्न गुरुकुलों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए नियमित रूप से सहायता प्रदान की गई।

### सत्तरिया केंद्र गुवाहाटी

इस अवधि के दौरान सत्तरिया केंद्र गुवाहाटी ने गुवाहाटी तथा पूर्वोत्तर राज्यों के आस-पास के क्षेत्रों में सत्तरिया नृत्य से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। सत्तरिया केंद्र गुवाहाटी के बाहर भी विभिन्न कार्यक्रमों को प्रायोजित करता है। दिनांक 18 जुलाई, 2010 से गौरीपुर, असम में सत्तरिया नृत्य पर 20 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

सत्तरिया नृत्य और थियेटर तथा प्रयोग के इतिहास में प्रथम बार कवि गुरु रबीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्यिक कार्य की

अद्भुत कृति चण्डालिका पर असमी और सत्तरिया नृत्य शैली में कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। केंद्र ने दिनांक 1 अक्टूबर, 2010 को विश्व संगीत दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम और व्याख्यान निदर्शन कार्यक्रमलाप आयोजित किया। इस व्याख्यान-व-निदर्शन में सूत्रधारी नृत्य और अंकिया भाओना को शामिल किया गया।

### एसएनए पूर्वोत्तर केंद्र, शिलांग

एसएनए पूर्वोत्तर केंद्र, शिलांग ने युवा थियेटर कलाकारों के लिए मेघालय और मिजोरम में थियेटर कार्यशाला आयोजित की। केन्द्र ने पूर्वोत्तर क्षेत्र की परम्परागत/लोक मंचन कलाओं के मासिक कार्यक्रमों सहित मेघालय के त्रिपुरा कठपुतली थियेटर के कठपुतली नाटक का भी आयोजन किया। दुर्लभ परम्परागत मंचन कलाओं के समारोह जैसे ओजपाली महोत्सव और संगिनी महोत्सव भी दारंग जिला, असम और पेंडम, सिक्किम में आयोजित किए गए। लोकरंग, 2010 और अरुणाचल प्रदेश का मोनपा नृत्य भी क्रमशः भोपाल और सोहरा, मेघालय में प्रायोजित किए गए थे। नागालैंड के चेकसांग संगीत और अरुणाचल प्रदेश के अझि लामू के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए थे।

## सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

साठ के दशक के दौरान विश्व के विभिन्न भागों में शिक्षा पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखे गए। वे देश जिन्होंने वर्षों के औपनिवेशिक शासन के पश्चात् हाल ही में आजादी प्राप्त की थी, उन्होंने अपनी जड़ों को पहचानना शुरू किया और विकास के सभी क्षेत्रों में सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश करने हेतु कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता को महसूस किया। चूंकि शिक्षा मानव आत्मा के विकास का आधारभूत रूप है, देश की आजादी, अपने साथ नई उभरती सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करते हुए शिक्षा में भारतीय जीवन शैली पर आधारित विचार-धाराओं और दार्शनिक संकल्पनाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता को लेकर आई।

प्रबल रूप से यह अनुभव किया गया कि एक ऐसा संस्थान होना चाहिए जो शिक्षा में सांस्कृतिक अवयवों के विचार को पूर्ण कर सके। यह महसूस किया गया कि यह संस्थान सांस्कृतिक शिक्षा के प्रति नवीन दृष्टिकोण हेतु शैक्षणिक कार्य-प्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए एवं सांस्कृतिक आधार पर उपयोग करते हुए शिक्षा के प्रति समेकित दृष्टिकोण को प्राप्त करने का उद्देश्य लिए हो। यह अभिकल्पित किया गया कि प्रशिक्षण के लिए एक अत्यंत संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया जाए। प्रशिक्षण में शैक्षणिक स्कूली विषयों को ही नहीं अपितु इस देश में विद्यमान साहित्यिक, दृश्यात्मक तथा निष्पादित रचनात्मक अभिव्यक्तियों को शामिल किया जाए – जिसमें लोकप्रिय या परम्परागत अभिव्यक्तियों से लेकर उच्च परिष्कृत कला रूप हों जिन्हें भारत की जनसंख्या का विशाल भाग बहुलता से प्रस्तुत करता हो एवं इस ज्ञान को शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित कर दिया जाए।

वर्ष 1979 में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने हेतु सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) को एक स्वायत्त संगठन के रूप में स्थापित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा में सांस्कृतिक अवयवों को प्रदान करना था। यह केन्द्र सभी स्तरों के प्रशासकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, सेवारत अध्यापकों तथा छात्रों हेतु विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। इस केन्द्र का उद्देश्य प्रतिभागियों को सभी रचनात्मक अभिव्यक्तियों को प्रभावित करने वाले सौंदर्यपरक तथा सांस्कृतिक मानदण्डों से सुग्राही बनाना है। वर्ष 1979 में अपने प्रारंभ से ही केन्द्र ने तेजी से प्रगति की है और संस्थाओं का एक नेटवर्क तैयार किया गया है ताकि प्रादेशिक संस्कृति और मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति में उनके योगदान पर बल देते हुए शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवन प्रदान किया जा सके। केन्द्र का मुख्यालय नई दिल्ली में है और तीन क्षेत्रीय केन्द्र पश्चिम में उदयपुर, दक्षिण में हैदराबाद तथा उत्तर-पूर्व में गुवाहाटी में हैं ताकि भारतीय कला तथा संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार को शिक्षा के माध्यम से सुसाध्य बनाया जा सके।

इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य भारत की क्षेत्रीय संस्कृतियों की भूमिका तथा अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और परिरक्षण के विषय

3.4



में विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करते हुए भारतीय शिक्षा पद्धति का पुनरुत्थान करना एवं तत्पश्चात् इस ज्ञान को स्कूली शिक्षा में अंतर्निहित करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के उद्देश्य से सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र कई कार्यक्रमों का आयोजन करता है, शैक्षिक किटों को तैयार करता है तथा पुस्तकों का प्रकाशन करता है।

## प्रशिक्षण

‘सेवारत अध्यापकों हेतु अनुकूलन प्रशिक्षण कार्यक्रमों’ का उद्देश्य पूरे भारतवर्ष के स्कूली शिक्षकों को भारतीय संस्कृति के विकास के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराना है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय कला और संस्कृति के सैद्धांतिक पक्ष को केन्द्र में रखते हुए प्रख्यात कलाकारों एवं विद्वानों द्वारा व्याख्यान एवं व्याख्यान निदर्शन दिए जाते हैं; कम कीमत की सामग्री का प्रयोग करते हुए शिल्प सिखाने हेतु व्यावहारिक कक्षाओं का आयोजन किया जाता है; देश के विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं के गीत सिखाए जाते हैं; संप्रेषण वृद्धि के लिए मूक अभिनय एवं गतिविधियों का आयोजन किया जाता है तथा कक्षा की पढ़ाई में सांस्कृतिक तत्व के सम्मिश्रण के लिए सह-शिक्षा सामग्री उपलब्ध कराई जाती है और ऐतिहासिक तथा प्राकृतिक महत्व के स्थलों के भ्रमण का आयोजन किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सीसीआरटी द्वारा 12 अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 1092 शिक्षक/शिक्षिकाओं को प्रशिक्षण दिया गया।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं (जहां बी.एड एवं एम.एड के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं), एससीईआरटी एवं डाइट आदि के शिक्षक-प्रशिक्षकों हेतु अभिकल्पित ‘शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम’ में प्रतिभागियों को भारतीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों की जानकारी कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों की जानकारी तथा भावी शिक्षकों हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम में शिक्षा एवं संस्कृति के सम्मिश्रण में कार्य-प्रणालियां विकसित करने हेतु सहायता प्रदान की जाती है।

शिक्षक-प्रशिक्षकों हेतु ‘पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक तत्व’ विषय पर तथा जिला स्रोत व्यक्तियों के लिए ‘स्कूलों में सांस्कृतिक शिक्षा’ विषय पर आयोजित कार्यशालाओं द्वारा शिक्षण और संस्कृति को अंतर्निहित कराने हेतु विशेष रूप से गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार की आयोजित 1 प्रशिक्षण कार्यशाला में 21 शिक्षक-प्रशिक्षकों और जिला स्रोत व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा

जिला स्रोत व्यक्तियों द्वारा 11 विभिन्न राज्यों में 21 अल्पकालीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें देश के विभिन्न भागों के 851 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया।

सीसीआरटी द्वारा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए नाट्यकला, पुतलीकला, संगीत और प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में स्कूलों की भूमिका एवं कला रूपों के व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु कार्य अनुभव/एसयूपीडब्ल्यू के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान ऐसे कार्यकलापों से उन्हें ऐसे कार्यक्रम विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता है जिनके द्वारा पाठ्यक्रम शिक्षण में इन कला रूपों का उपयोग लाभदायक हो। सीसीआरटी द्वारा ऐसी 32 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें 1864 शिक्षकों ने भाग लिया।

सीसीआरटी द्वारा पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में पूर्व प्रशिक्षित चुनिंदा शिक्षकों को अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों को सुदृढ़ करने एवं कार्य-प्रणालियों के क्रियान्वयन पर चर्चा करने हेतु आमंत्रित किया जाता है। यह कार्यक्रम पूर्व में सीसीआरटी द्वारा प्रशिक्षित शिक्षकों से पुनर्निवेश प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 03 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 193 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

## सेमिनार

- 5 यूनाइटेड स्टेट्स इंडिया एजुकेशनल फाउंडेशन (यूएसआईएफ) के सहयोग से सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र ने जुलाई, 2010 में नई दिल्ली में 16 अमरीकी शिक्षकों के लिए ‘भारतीय स्कूल शिक्षा प्रणाली: रुझान और चुनौतियां’ शीर्षक से सेमिनार आयोजित किया।
- 5 ब्रिटिश काउंसिल के ग्लोबल फेलोशिप प्रोग्राम के तहत ब्रिटेन के तीस अध्येताओं के प्रतिनिधिमण्डल ने 19 जुलाई, 2010 को सीसीआरटी का दौरा किया और उनके लिए आयोजित विभिन्न शैक्षिक कार्यकलापों में भाग लिया।

## व्याख्यान/व्याख्यान प्रदर्शन श्रृंखला

वर्ष 2010 के दौरान श्रृंखलाबद्ध व्याख्यान/व्याख्यान प्रदर्शन आयोजित किए गए तथा प्रख्यात कलाकारों, विद्वानों तथा शिक्षाविदों ने व्याख्यान दिए।

## विस्तार एवं सामुदायिक फीड बैक कार्यक्रम

सीसीआरटी अपने विस्तार एवं सामुदायिक फीड बैक कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्र स्कूली छात्रों, शिक्षकों तथा सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं के बच्चों हेतु विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न औपचारिक एवं अनौपचारिक स्कूलों के लगभग 31401 बच्चों को इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया गया।

“कला और संस्कृति के प्रति जागरूकता” विषयक एक ग्रीष्मकालीन कार्यशाला दिनांक 7 जून से 17 जून, 2010 तक सीसीआरटी नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें 294 बच्चों ने भाग लिया।

केन्द्र ने वर्ष 2010 के दौरान विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए :

ख्वाब – गोबर्दग से शिल्पायन समूह द्वारा प्रस्तुत नाटक

माहिम जंक्शन – सोहैल कपूर द्वारा रचित और निर्देशित संगीत नाटक

बिस्मिल्लाह – अंजन कांजीलाल द्वारा निर्देशित बांग्ला नाटक

रबीन्द्र संगीत पर आधारित शर्मिस्ता मुखर्जी द्वारा निर्देशित असम के बोडो, बिहु तथा अन्य लोक तथा जनजातीय नृत्य

सौमित्रा चटर्जी और संपा दास द्वारा टैगोर की कविताओं का गायन

## सांस्कृतिक महोत्सव – 2010

केन्द्र ने 19वें राष्ट्रमण्डल खेलों के भाग के रूप में 4 से 13 अक्टूबर, 2010 तक सांस्कृतिक महोत्सव आयोजित किया।

## संसाधनों का संग्रहण

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र देश भर के विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों को प्रदान किए जाने वाले अपने ‘शैक्षिक पैकेजों’ को समृद्ध बनाने और शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों तथा अन्य शोधार्थ छात्रों को भारत की सांस्कृतिक विरासत संबंधी सामग्री उपलब्ध कराने के लिए ऑडियो रिकॉर्डिंग, स्लाइड्स, फोटोग्राफ, फिल्म तथा लिखित पाठ आदि के रूप में देश की कलाओं और शिल्पों से संबंधित सामग्री संग्रहित करता है।

## शैक्षिक किट

अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले शिक्षकों को दिए गए प्रशिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करने की दृष्टि से प्रतिभागी संस्था को अध्यापकों/अध्यापक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए दृश्य-श्रव्य सामग्री और सीसीआरटी की प्रकाशन सामग्री से युक्त एक शैक्षिक किट उपलब्ध कराई जाती है। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान विभिन्न विद्यालयों को 817 शैक्षिक किट वितरित की गई।

## प्रकाशन

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र का उद्देश्य शिक्षकों तथा छात्रों के बीच भारतीय संस्कृति की जानकारी का प्रसार एवं समझ पैदा करना है तथा इसके लिए केन्द्र, भारतीय संस्कृति पारिस्थितिकी तथा प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित विभिन्न पहलुओं से संबंधित विषयों पर कार्य पुस्तिकाएं, लघु पुस्तिकाएं, कलाओं तथा शिक्षा संबंधी मोनोग्राफ, पोस्टर, फोलियो, पैकेज आदि प्रकाशित करता है।

## सांस्कृतिक क्लब योजना

इस योजना के माध्यम से देश के दूर-दराज के स्कूलों में नृत्य, संगीत, नाट्यकला, मूर्तिकला तथा दृश्य-कलाओं के लिए सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना में स्कूल के प्रधानाचार्य के पूर्ण नियंत्रण तथा दिशानिर्देशों के अंतर्गत सीसीआरटी द्वारा प्रशिक्षित एवं जिला स्रोत व्यक्ति के रूप में नियुक्त अध्यापकों को वजीफा एवं मानदेय का भुगतान किया जाता है। इस योजना के माध्यम से कलाओं के संरक्षण तथा छात्रों में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के प्रति शैक्षणिक जागृति उत्पन्न करने के लिए प्रयास किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान देश के विभिन्न भागों में 206 सांस्कृतिक क्लबों का गठन किया गया।

## सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना

सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत वर्ष 1982 में योजना के प्रारंभ से ही सीसीआरटी 10-14 वर्ष आयु वर्ग के प्रतिभाशाली छात्रों को मंच कलाओं तथा अन्य कलाओं के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान करता आ रहा है। मान्यता प्राप्त स्कूलों के छात्रों या परम्परागत, मंच तथा अन्य कला रूपों का प्रदर्शन करने वाले घरानों के बच्चों को विभिन्न कला रूपों में, विशेषतः दुर्लभ कला रूपों में इस छात्रवृत्ति के लिए चुना जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 472 छात्रों

को चुना गया और उन्हें विभिन्न कला रूपों में छात्रवृत्तियां दी गईं।

### छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं के लिए उत्सव

युवाओं में सौंदर्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समझ पैदा करने, उन्हें सांस्कृतिक विकास में शामिल करने तथा उनमें, सौहार्द्रता एवं मिलजुल कर रहने की भावना पैदा करने की दृष्टि से छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं के लिए उत्सवों का आयोजन भी किया जाता है। “विभिन्नता में एकता” विषय पर तीन उत्सव आयोजित किए गए। जिनमें पहला दिनांक 26 जुलाई से 01 अगस्त 2010 तक सीसीआरटी, हैदराबाद में आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से 125 छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं ने भाग लिया।

### पूर्वोत्तर क्षेत्र में सीसीआरटी की पहल

प्राचीन समय से ही भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र समुदायों, आस्थाओं एवं संस्कृतियों का संगम रहा है। अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की उपयोगिता हेतु विद्यार्थियों एवं शिक्षक समुदाय में सिक्किम राज्य सहित पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति सतत् संवदेनशीलता जागृत करने हेतु सीसीआरटी द्वारा विभिन्न संस्कृति संबंधी शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

सीसीआरटी द्वारा विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों में कार्यशालाओं एवं पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अंचल की पारम्परिक हस्तकलाओं व विशिष्ट कलारूपों का उपयोग करते हुए देश भर के प्राथमिक, माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को कक्षा शिक्षण में नवीनतम शैक्षिक कार्य-प्रणालियों से परिचित कराया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सीसीआरटी द्वारा 11 कार्यशालाएं और पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्वोत्तर राज्यों में आयोजित किए गए, जिनमें 1053 शिक्षकों ने भाग लिया।

### विशेष विकलांग बच्चों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

सीसीआरटी द्वारा विशेष विकलांग बच्चों के लिए विभिन्न कार्यशालाओं एवं शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उन बच्चों को भी सीखने का अवसर मिलता है जो मुख्यधारा में आसानी से शामिल नहीं हो सके हैं। इन कार्यक्रमों के दौरान विकलांग बच्चों को कौशल प्रदान करने का उद्देश्य उन्हें जीवन का सामना उत्साह एवं विश्वास के साथ करने तथा उन्हें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से विकसित करना एवं उनमें स्कूल जाने की मानसिकता उत्पन्न करना है।



## कलाक्षेत्र फाउण्डेशन

3.5

वर्ष 1993 में संसद के एक अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में घोषित 'कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान' की कलाओं के प्रति गहरी प्रतिबद्धता है। जैसा कि इसके दर्शन कथन में कहा गया है, कलाक्षेत्र की स्थापना भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रोन्नयन तथा वास्तविक कला के मानक निर्धारित करने के लिए गई है। इसके माध्यम से, कलाओं के सहारे युवाओं के चरित्र-निर्माण तथा एक सार्वभौमिक भाषा-कला के माध्यम से एक वास्तविक अंतर्राष्ट्रीय समझ केन्द्र को सृजित करने की कल्पना की गई है। यह संस्थान, जो अब अपने हीरक जयंती वर्ष में है, की स्थापना वर्ष 1936 में अनुश्रुत, बहु-आयामी साहसी महिला श्रीमती रुक्मिणी देवी अरुन्डले द्वारा की गई थी।

कलाओं के लिए समर्पित संस्थाओं में कलाक्षेत्र का अपना एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि इसके फोकस क्षेत्रों में कला, मंचन एवं शिक्षा के क्षेत्रों के बहुत से स्तरों को शामिल किया गया है। इस प्रतिष्ठान के अंतर्गत रुक्मिणी देवी ललित कला कॉलेज, जो भरतनाट्यम, कर्नाटक संगीत एवं दृश्य कलाओं के लिए समर्पित है; दो उच्च विद्यालयों; एक बुनाई, प्राकृतिक रंगाई एवं मुद्रण केन्द्र; दो पुस्तकालय, जो कलाओं एवं सम्बद्ध विषयों पर सूचनाएं प्रदान करते हैं; तथा स्कूल एवं कॉलेज विद्यार्थियों के लिए एक छात्रावास को शामिल किया गया है। एक संस्थान के रूप में, कलाक्षेत्र न केवल कलाओं हेतु ज्ञान आधार एवं प्रशंसा को तैयार करने के लिए कार्य करता है अपितु कलाकारों एवं भावी नागरिकों के विचारों एवं बुद्धि को दिशा प्रदान करने का भी कार्य करता है।

इसके अतिरिक्त, यह संस्थान कलाओं एवं शिल्पों के अग्रणी केन्द्र के रूप में आम जनता को हमारे देश की कलात्मक विरासत को दर्शाने के लिए सतत रूप से कार्य करता है ताकि यह विरासत समय एवं स्थान की सभी बाधाओं को पार करके हमारे जीवन में पूरी तरह रच-बस जाए।

### 1. रुक्मिणी देवी ललित कला कॉलेज के माध्यम से कला एवं शिक्षा का प्रोन्नयन

पिछले वर्ष, रुक्मिणी देवी ललित कला कॉलेज ने अकादमिक उत्कृष्टता के प्रति अपनी वचनबद्धता तथा हमारी समृद्ध कलात्मक विरासत को विद्यार्थियों की नई पीढ़ी को हस्तारित करके अपनी अकादमिक उत्कृष्टता की बेहतरीन परम्परा को कायम रखा। इस क्षेत्र के मुख्य बिन्दुओं में शामिल हैं :-

- वर्ष 2010-11 के अकादमिक सत्र हेतु रुक्मिणी देवी ललित कला कॉलेज में 174 विद्यार्थियों के एक नए बैच को दाखिला दिया गया। इनमें भरतनाट्यम, कर्नाटकी संगीत एवं दृश्य कलाओं हेतु डिप्लोमा कक्षाओं में दिए गए दाखिले शामिल हैं।



- तीस नए पात्र विद्यार्थियों को 9,85,000 रु. (नौ लाख पचासी हजार रु. केवल) की सीमा तक छात्रवृत्तियां वितरित की गई।
- कलाक्षेत्र ने पूर्वोत्तर छात्रवृत्तियों के माध्यम से पूर्वोत्तर क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि को सतत् रूप से जारी रखा। इस वर्ष, प्रतिष्ठान ने 4,08,416 रु. (चार लाख आठ हजार चार सौ सोलह रु. केवल) की छात्रवृत्तियां वितरित की जिससे इस क्षेत्र में 9 विद्यार्थियों को लाभ पहुंचा।
- पूर्वोत्तर विकास बेंगलुरु कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान ने बंगलौर में एक मणिपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम, फोऊ ओईबी, सांस्कृतिक समूह, लाइहुइ (एक प्रदर्शन) तथा चेन्नई में (दो प्रदर्शनों) का आयोजन किया।
- दो-दिवसीय कार्यक्रम, स्वानुभव, का आयोजन दिनांक 2 व 3 अगस्त, 2010 को किया गया जिससे विद्यार्थियों को प्रख्यात संगीतकारों जिनमें श्री पी. उन्नीकृष्णन, श्रीमती माधवी मुद्गल एवं श्रीमती अलारमेल वल्ली शामिल हैं, के साथ संवाद करने तथा उनके प्रदर्शन को देखने का अवसर मिला।
- इस अवधि के दौरान कला केन्द्र ने कई कार्यकलापों के सकेन्द्रित बिन्दु के रूप में कार्य करना जारी रखा जिनमें श्री भवानी शंकर शर्मा द्वारा आयोजित की गई एक दस-दिवसीय जयपुर फ्रेस्को कार्यशाला, श्री ए. विजयकुमार द्वारा प्रख्यात कलाकारों की आवक्ष मूर्तियां प्रारंभ में मिट्टी में तथा उसके बाद धातु में सजाया जाना तथा पश्चिमी कला के इतिहास पर व्याख्यानों की एक श्रंखला का आयोजन किया जाना शामिल है।

### उत्सव, प्रदर्शन एवं कार्यक्रम

एक संस्थान के रूप में, कलाक्षेत्र व्यापक स्तर पर दर्शकों को कला के दर्शन करवाने के उद्देश्य से उत्सवों, प्रदर्शनों एवं कार्यक्रमों का आयोजन करने पर मुख्य जोर देता है। वर्तमान रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित किए गए उत्सवों एवं कार्यक्रमों में शामिल हैं :

- दिनांक 21-23 अगस्त, 2010 को ओणम उत्सव का आयोजन किया गया। इसकी प्रस्तुति कलाक्षेत्र के संगीत

संकाय द्वारा की गई थी। इनमें श्री के. साई शंकर, श्री के. हरिप्रसाद एवं श्री ए.एस. मुरली का गायन, श्री टी. शशिधर का बांसुरी-वादन, श्री पक्कल रामदास का वायलन वादन एवं श्री एन. अनंत नारायण का वीणा वादन शामिल है।

- दिनांक 4-8 सितम्बर, 2010 को कथक्कली उत्सव का आयोजन किया गया। इस उत्सव में कलाक्षेत्र के स्टाफ एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त प्रख्यात कथक्कली कलाकारों सदानम श्री बालाकृष्णन एवं कलामंडलम श्री गोपी द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया गया। इस उत्सव में ग्रीक माइथोलॉजी एवं शेक्सपियर की कृतियों पर किए गए प्रदर्शनों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।
- कलाक्षेत्र ने दस्तकारी हाट समिति, नई दिल्ली के साथ सहयोग से दिनांक 4-12 दिसम्बर, 2010 को बहु-प्रतीक्षित शिल्प बाजार का आयोजन किया। इस बाजार में भारतवर्ष से 105 स्टाल लगाए गए थे। कलाक्षेत्र ने शिल्प बाजार के साथ-साथ कई प्रदर्शनों की एक श्रंखला भी आयोजित की। इनमें शोभना द्वारा किया गया शास्त्रीय भरतनाट्यम, केरल के कलाकारों द्वारा कोलकाली एवं पुराकाली प्रदर्शन, कलाक्षेत्र के विद्यार्थियों द्वारा कोरियोग्राफी की गई एक खण्ड शीर्षक अक्षरा और मणिपुर के कलाकारों द्वारा महारास का प्रदर्शन शामिल है।
- कलाक्षेत्र के 58वें वार्षिक कला उत्सव का आयोजन 21-31 दिसम्बर, 2010 को किया गया। इस वर्ष के कार्यक्रम का आयोजन ज्यादा विस्तृत समय-सारणी के साथ किया गया था जिसमें सांयकालीन मनोरंजन हेतु शामियाना प्रदर्शनों के अतिरिक्त, सुबह व्याख्यान प्रदर्शन तथा दोपहर बाद युवा कलाकारों द्वारा किया गया प्रदर्शन शामिल है। इस उत्सव की नृत्य नाटिकाओं में कृष्णामारी कुरवंची, चूड़ामणि प्रदानम, महापट्टाभिषेकम एवं पंचाली सप्तम शामिल हैं। इस कार्यक्रम में सदानम श्री बालाकृष्णन एवं कलामंडलम श्री गोपी द्वारा नल चरितम का एक कथक्कली प्रदर्शन भी शामिल है। कार्यक्रम के संगीत अनुभाग में कर्नाटकी एवं हिन्दुस्तानी संगीत के बड़े नाम जैसे गायक श्रीमती बॉम्बे जयश्री रामनाथ एवं श्री संजय सुब्रमण्यम, श्री गणेश एवं श्री कुमारेश, श्री नादश्वरम विदवांस एस. कासिम तथा एस. बालू और प्रसिद्ध गुनदेचा बंधुओं की वायलन जोड़ियां शामिल थीं।

इसके अतिरिक्त, कलाक्षेत्र की अपनी स्वयं की कम्पनी ने भी विशिष्ट दर्शकों के सामने देश तथा विदेश में अपनी प्रस्तुतियां पेश की हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

- नवम्बर, 2010 में चीन में भारत उत्सव का समापन दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। छेंगदू, चीन में आयोजित इस कार्यक्रम में इस समूह ने चुनिंदा भरतनाट्यम मदों की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम का प्रबंधन चीन में भारतीय दूतावास द्वारा किया गया था। लोगों द्वारा खूब सराहे गए इस कार्यक्रम का आयोजन आई.सी.सी.आर. द्वारा किया गया था।
- अगस्त, 2010 में चेन्नई, राज भवन में कथक्कली एवं मोहिनी अट्टम की प्रस्तुतियों सहित भारत के चुनिंदा लोक एवं शास्त्रीय नृत्यों को प्रस्तुत किया गया।
- अगस्त, 2010 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास हेतु कलाक्षेत्र द्वारा भारत के चुनिंदा लोक एवं शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए गए।
- विजयवाड़ा में सिद्धार्थ कला पीठ के लाभ हेतु जटायु मोक्ष, एक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई।
- अक्टूबर, 2010 में राष्ट्रमंडल खेलों हेतु प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में संगीत नाटक अकादमी हेतु ओथेलो की कथक्कली प्रस्तुति में भाग लिया।
- अक्टूबर, 2010 में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में : आरण्यनी' नामक कार्यक्रम में रामायण के चुनिंदा वन दृश्यों को प्रस्तुत किया।
- इस्कॉन, बेंगलुरु के तत्वावधान में बेंगलुरु में रामायण श्रृंखला की नृत्य-नाटिकाओं के तीन एपिसोड प्रस्तुत किए। इसका आयोजन नवम्बर, 2010 में किया गया था।
- नवरात्रि उत्सव के एक भाग के रूप में अक्टूबर, 2010 में तंजावुर के भृगुदेश्वर मंदिर में भरतनाट्यम कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

इसके अतिरिक्त, उभरते हुए युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए, कलाक्षेत्र द्वारा मासिक प्रदर्शनों की 'दिशा' श्रृंखला का आयोजन किया जाता है जिसमें युवा प्रतिभावान कलाकारों को प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस अकादमिक वर्ष के दिसम्बर, 2010 तक प्रदर्शनों में चार भरतनाट्यम गायन समारोह शामिल हैं।

## 2. कलाक्षेत्र में सुधार एवं नवीकरण

कलाक्षेत्र के हरे-भरे 100 एकड़ के परिसर में कई प्रदर्शन स्थल शामिल हैं, जिनमें से विशिष्ट भारत कलाक्षेत्र सभागार का निर्माण कोथमबालम में देखे गए नाट्य-गृह की ढांचागत रूप-रेखा को ध्यान में रखकर किया गया है। इस केन्द्रीय प्रदर्शन स्थल के नवीकरण का कार्य वर्तमान में जारी है। इसका कार्य पूरा हो जाने के बाद इसमें प्राकृतिक रूप से ठंडक प्रदान करने वाली प्रणाली के साथ व्यापक रूप से स्तरोन्नत थियेटर भी शामिल होगा तथा इसकी परम्परागत आभा के साथ बिना कोई समझौता किए हुए और उसे बनाए रखते हुए साउंड तथा लाइटिंग की अधुनातन सुविधाएं भी प्रदान की जाएंगी।

छत पर लगी हुई टाइलों के साथ एनाटोन बोर्ड रखे जाने से 'रसिको' को बेहतर ध्वनि का अनुभव होने की आशा है। सभागार में ईष्टतम स्थलों पर छोड़े गए ठंडक प्रदान करने वाले सुराख वायु परिचालन को बढ़ाएंगे तथा इससे एक कृत्रिम ठंडक प्रदान करने वाली प्रणाली तैयार की जा सकेगी। श्रेष्ठ फ्लोरिंग डिजाइन के साथ लगाए गए कूलिंग पाइपों से सभागार में स्थापित की जा रही कूलिंग प्रणाली में और भी अधिक सुधार होने की उम्मीद है। वीथी में बैठने की पंक्तियों की पूरी तरह से मरम्मत किये जाने से दर्शकों के लिए अनुभव में और अधिक सुधार होने की संभावना है।

अतिथियों के लिए अपने बैठने के क्षेत्रों में आसानी से आने-जाने की सुविधा प्रदान करने के लिए, कोथमबालम में नए प्रवेश क्षेत्रों तथा सभा-क्षेत्रों को योजना में शामिल किया गया है।

इसके अतिरिक्त, कलाक्षेत्र ने परिसर के मौजूदा जलाशयों, जिन्हें अभी हाल ही में गाद और खरपतवार को हटाकर तैयार किया गया है, के चारों तरफ नए तैयार किए गए प्रदर्शन स्थल, पदम पुष्करणी का उद्घाटन भी किया है। हैरान कर देने वाला जलाशय स्थल, जिसमें अब नई निर्मित स्टोन-मंतापा भी शामिल

है, का उद्घाटन नवम्बर, 2010 में किया गया था, इस कार्यक्रम में प्रख्यात कर्नाटकी गायक श्री टी.एम. कृष्णा द्वारा अपनी प्रस्तुति दी गई। पदम पुष्पकरणी का प्रयोग 58वें वार्षिक कला उत्सव के दौरान किया गया था, जहां उभरते हुए कलाकारों ने इस सौंदर्यपरक स्थल में जानकार दर्शकों के सामने अपनी प्रस्तुति दी।

प्रदर्शन स्थलों के नवीकरण कार्यों के समानांतर, कलाक्षेत्र विभिन्न स्थलों को बुक करने एवं किराए पर लेने के लिए भी नीतियों एवं प्रक्रिया-विधियां तैयार कर रहा है। परिसर के सभी प्रदर्शन स्थलों के संबंध में नियमों एवं विनियमों, तथ्यात्मक शीटों, योजनाओं एवं व्यय को तैयार कर लिया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान श्रेष्ठ सुविधाएं प्रदान कर सके, कलाक्षेत्र की सुविधाओं की तुलना काफी पैमानों का प्रयोग करते हुए शहर एवं उसके बाहर प्रदान की जा रही अन्य सुविधाओं से की गई है। प्रदर्शन स्थलों के अतिरिक्त, जिनका नवीकरण किया जा चुका है, परिसर में प्रयोग की जा रही श्रव्य-दृश्य प्रौद्योगिकी का भी व्यापक स्तरोन्नयन किया गया है।

### 3. कलाक्षेत्र में अनुसंधान एवं प्रलेखन संबंधी प्रयास

अनुसंधान एवं प्रलेखन विभाग, जो हमारी बहुमूल्य विरासत एवं परम्परा का संरक्षण करता है, वर्तमान वर्ष के दौरान निम्नलिखित परियोजनाओं में शामिल रहा है :

- 'भारत की वास्तुकला परम्परा' पर सतपथी के. उमापति आचार्य; 'भारत में संस्कृत की मौखिक परम्परा' पर श्री एस. स्वामीनाथन; मामलापुरम में 'अर्जुन का प्रायश्चित' विषय पर प्रसिद्ध पैनल के समक्ष श्री बालुसामी एवं अंडाल की तिरुप्पवई एवं उनकी दार्शनिक व्याख्या पर श्री के.आर. श्रीनारायणन के व्याख्यानों सहित प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के साथ व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया।
- मंदिर वास्तुकला पर डा० चित्रा माधवन के साथ स्टाफ प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा डा० पप्पु वेणगोपाल राव के साथ तेलुगु पदम एवं जवालिस की व्याख्यान पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- कलाक्षेत्र के विद्यार्थियों हेतु तंजावुर, तिरुवरूर, कुंभकोणम, चिदंबरम, महाबलिपुरम, कांचीपुरम तथा राजकीय संग्रहालय, चेन्नई का क्षेत्र भ्रमण आयोजित किया गया।

- पूर्व की आडियो कैसेटों एवं स्पूल टेपों की दुर्लभ रिकार्डिंग्स का डिजिटलकरण।
- संगीत रिकार्डिंग्स, वस्तुओं, फोटोग्राफ्स, पुस्तकों एवं पांडुलिपियों का संग्रहण तथा अभिलेखन।
- नृत्य-नाटिकाओं की विषय-वस्तु का अंग्रेजी एवं तमिल में अनुवाद करना। यह अनुवाद कार्य रामायण श्रृंखला के 6 भागों तथा कृष्णामरी कुरावंची एवं पंचाली सप्तम के लिए किया गया है।
- डा० पी.जी. गोपालकृष्णन, एम.ए. द्वारा कथक्कली मुद्राओं के शोध-प्रबंध को पुनर्मुद्रण हेतु इलेक्ट्रॉनिक फार्मेट में परिवर्तित किया जा रहा है। इस कार्यकलाप में भाव-भंगिमाओं का प्रलेखन करने वाली 600 से भी अधिक फोटोग्राफ्स की सफाई तथा जीर्णोद्धार शामिल है।
- नृत्य-नाटिकाओं अर्थात् स्वरांकन, विषय-वस्तु एवं अर्थों पर हाथ से लिखे गए नोट्स की फोटोग्राफ्स तैयार की गई हैं तथा पुरालेखीय उद्देश्यों हेतु इन्हें इलेक्ट्रॉनिक फार्मेट में सुरक्षित रखा गया है।
- मूर्तिकला एवं शिक्षा पर दो मोनोग्राफ्स का प्रारूपण एवं अनुसंधान।
- कलाक्षेत्र के भंडारण में विविध भरतनाट्यम मदों की विषय-वस्तु का विश्लेषण।
- कलाक्षेत्र द्वारा इसकी संस्थापक, श्रीमती रुक्मिणी देवी के जीवन एवं समय पर एक संग्रहालय बनाए जाने की भी प्रक्रिया शुरू की गई है। रुक्मिणी देवी संग्रहालय में विविध कलावस्तुओं को रखा जाएगा, जो उनके बहु-आयामी व्यक्तित्व के कई पहलुओं पर प्रकाश डालेंगी।
- रुक्मिणी देवी संग्रहालय में रखी जाने वाली पत्थर एवं कांस्य की मूर्तियों का रासायनिक पुनरुद्धार एवं प्रलेखन कार्य पूरा कर लिया गया है।
- प्रदर्शनों के आडियो/विडियो प्रलेखनों का समन्वय करना।

#### 4. शिल्प शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र (सीआईआरसी) के माध्यम से परम्परागत शिल्पों का प्रोन्नयन

कलाक्षेत्र की स्थापना किए जाने के तुरंत बाद 1937 में स्थापित किया गया शिल्प शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र रुक्मिणी देवी के भारत की परम्परागत कलाओं एवं शिल्पों के पुनरुद्धार हेतु साकल्यवादी दृष्टिकोण की गवाही देता है।

बुनाई केन्द्र में, जैकवर्ड लूमस, जिनका प्रयोग नृत्य धावनिज एवं अन्य परम्परागत बुनाई जैसे जमदानी साड़ी के लिए किया जाता है, के पुनरुद्धार के अतिरिक्त कलाक्षेत्र की सिल्क साड़ियों के महीन डिजाइन तैयार करने हेतु कोरवई लूमस का प्रयोग सतत तौर पर किया जा रहा है।

इस वर्ष विक्रय से प्राप्त की गई कुल राशि 4,20,427 रु. (चार लाख बीस हजार चार सौ सताइस रु.) है।

सीआईआरसी के साथ सम्बद्ध कलमकारी इकाई ने कुल 4,67,229 रु. (चार लाख सड़सठ हजार दो सौ उनतीस रु.) की बिक्री दर्ज की। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, इस इकाई ने ब्लॉक-प्रिंटिंग एवं हैंड-प्रिंटिंग सामग्रियों को काफी प्रभावी ढंग से तैयार किया एवं उनकी बिक्री की।

#### 5. कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान द्वारा प्रबंधन किए जाने वाले स्कूल

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान दो उच्च विद्यालयों नामतः बेसंत अरुण्डले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एवं बेसंत थियोसोफिकल उच्चतर माध्यमिक स्कूल का संचालन भी कर रहा है। दोनों विद्यालयों के विद्यार्थी बाकी संस्थान के पर्यावरण एवं सामाजिक जागरूकता तथा साकल्यवादी माहौल में ही कार्य करते हैं।

बेसंत अरुण्डले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाल विद्यार्थियों के लिए अपने मान्टेसरी कार्यक्रम के माध्यम से बाल शिक्षा को एक नया प्रोत्साहन प्रदान करने का प्रयास कर रहा है। इसके साथ ही, यह विद्यालय कक्षा XI एवं XII स्तर पर नृत्य, संगीत एवं पेंटिंग पर भी काफी जोर दे रहा है। इन विषयों को कैरियर के रूप में अपनाने वाले विद्यार्थियों के लिए इससे काफी लाभ मिलने का अनुमान है। इस वर्ष से, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कक्षा X स्तर के लिए बोर्ड परीक्षाओं की बजाय सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली (सीसीई) को लागू कर दिया है। बेसंत अरुण्डले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कक्षा IX एवं X स्तर पर इसे कार्यान्वित कर दिया गया है।

बेसंत थियोसोफिकल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने भी अपने अकादमिक प्रदर्शन को सुधारने तथा अपनी सामाजिक जागरूकता में सुधार करने हेतु नई पहलों में भागीदारी के प्रति सक्रिय भूमिका निभाई है।



## 3.6

### क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

---



## पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

3.6.1

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (डब्ल्यूजैडसीसी) का मुख्यालय उदयपुर, राजस्थान में है और यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सीधे नियंत्रण में फरवरी, 1986 में स्थापित किए गए सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों में से एक है। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र एक पंजीकृत संस्था है तथा राजस्थान के महामहिम राज्यपाल इसके अध्यक्ष हैं। इस केंद्र की संचालन समिति, कार्यकारी समिति, कार्यक्रम समिति व वित्त समिति, जिसमें भारत सरकार के अधिकारी और अन्य गैर सरकारी प्रतिनिधि और जिन राज्यों में क्षेत्र स्थित हैं उन राज्यों के सदस्य शामिल होते हैं।

डब्ल्यूजैडसीसी उदयपुर राजस्थान सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1958 XXVIII के तहत एक पंजीकृत संस्था है। संगम ज्ञापन और समिति की नियमावली के अनुसार इस संस्था का संचालन कार्यक्रम समिति एवं वित्त समिति की सहायता से शासी निकाय और कार्यकारी बोर्ड द्वारा किया जाता है।

इस सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना पश्चिमी क्षेत्र राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा और केंद्र शासित प्रदेश दमन, दीव व दादर नागर हवेली में सांस्कृतिक रचनात्मक विकास, प्रदर्शनकारी कलाओं, दृश्या कलाओं, साहित्यिक कार्य, पारम्परिक लोक व जनजाति कला रूपों के सृजनात्मक विकास के लिए सुविधाएं प्रदान करने के लिए की गई थी। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों द्वारा ग्रामीण भारत में सांस्कृतिक कार्यकलापों का प्रचार-प्रसार करना, विभिन्न कला और शिल्प की समृद्ध विविधता और विशिष्टता का प्रचार करना और इसकी समृद्ध तथा विस्तृत सांस्कृतिक विरासत के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने पर बल देना है। लुप्त होते और मृतप्राय कला रूपों शिल्प के पुनरुद्धार तथा लोगों की सहभागिता पर विशेष बल देना है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा विभिन्न राज्यों, केंद्रीय अकादमियों व स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से पूरे देश के ग्रामीण स्तर, तालुका स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर और अन्तरक्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम और कार्यकलाप आयोजित किए जाते हैं।

### बागोर की हवेली संग्रहालय

हवेली संग्रहालय की स्थापना "गणगौर घाट" में की गई है जहाँ से पिछौला झील दिखाई देती है जो उदयपुर के सिटी पैलेस से मुश्किल से 100 मीटर की दूरी पर है। इस संग्रहालय की स्थापना मेवाड़ की भव्य संस्कृति को आभूषणों के डिब्बे, चौपड़ के खेल, पान के डिब्बे, मेवा तोड़ने के औजार, हाथ के पंखे, गुलाबजल के फव्वारे, तांबे के बर्तन और पुरानी संस्कृति के दैनिक जीवन के अन्य घरेलू सामानों को सांकेतिक रूप में प्रदर्शित किया गया है।





संग्रहालय में शाही महिलाओं के निजी कमरे, उनके तैयार होने के कमरे, स्नान गृह, शयन कक्ष, मंदिर और मनोरंजन कक्ष, इंद्र विमान-हाथी के रथ और पगड़ी जिसका वजन लगभग 30 किलो है प्रदर्शित किए गए हैं।

### शिल्पग्राम

केंद्र द्वारा उदयपुर के पश्चिम में “ग्रामीण कला व शिल्प परिसर” की स्थापना अरावली की पहाड़ियों के बीच उदयपुर से पश्चिम में 3 कि.मी. दूर 130 बीघा (70 एकड़) भूमि पर की गई है, जिसे शिल्पग्राम के नाम से जाना जाता है। यह एक जीवंत नृवंश विज्ञान संग्रहालय है जिसमें पश्चिम क्षेत्र के लोक एवं जनजाति लोगों की विशाल विविधता, वास्तुकला व जीवन शैली को प्रदर्शित किया गया है। उस परिसर में सदस्य राज्यों की 31 प्रतिनिधि झोपड़ियां हैं।

यहाँ मृण संग्रहालय, जनजाति संग्रहालय, गोल संग्रहालय, कोठी संग्रहालय, शिल्प कला पार्क, मुक्ताकाशी रंगमंच, दर्पण सभागार, शिल्प बाजार (हाट) है जहां भारतीय गाँव के प्राकृतिक वातावरण में रोजाना सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाता है जो यहाँ का विशेष आकर्षण है।

### समारोह

#### नारियल पूर्णिमा : दमन व सिलवासा (संघ राज्य क्षेत्र)

पारंपरिक उत्सव “नारियल पूर्णिमा” का आयोजन संघ राज्य क्षेत्र दमन में दमन प्रशासन के सहयोग से 24 से 25 अगस्त, 2010 को किया गया। इस उत्सव का आयोजन 15,000 से अधिक लोगों ने बड़े उत्साह से किया। इस उत्सव में राजस्थान के लंगा लोक गायक, गुजरात के सिद्धि धमाल, असम के बिहू नृत्य (एनईजैडसीसी), उड़ीसा के संबलपुरी नृत्य (ईजैडसीसी), पंजाब के भांगड़ा (एनजैडसीसी) कलाकारों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस आयोजन की श्रृंखला में दिनांक 26 अगस्त 2010 को सिलवासा (दादर नागर हवेली) में भी इसी प्रकार का आयोजन किया गया। इस उत्सवों के दौरान इस क्षेत्र की स्थानीय परम्परा और परिधान में स्थानीय लोगों ने उत्साह से भाग लिया।

#### गणेशोत्सव : गोवा

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय के सहयोग से 15 से 19 सितम्बर 2010 तक गोवा के विभिन्न स्थलों पर पारंपरिक गणेशोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें अनूठी शिल्प कला से सृजित गणपति प्रतिमा

की ढोल बाजों के साथ विशाल शोभा यात्रा निकाली गई व उसका समुद्र में विसर्जन किया गया। इस उत्सव में प्रतिदिन हजारों लोगों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में बड़े उत्साह से भाग लिया। एनईजैडसीसी द्वारा प्रायोजित बिहू नृत्य (असम), एनसीजैडसीसी द्वारा प्रायोजित राजस्थान का चरी नृत्य (राजस्थान), एनजैडसीसी द्वारा प्रायोजित लंगा (राजस्थान) के लोक गायक कलाकार, डब्ल्यूजैडसीसी द्वारा प्रायोजित गरबा, रास, टिप्पणी नृत्य (गुजरात), का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा इस उत्सव में गोवा के स्थानीय फुगड़ी नृत्य का भी प्रदर्शन किया गया।

#### पुष्कर मेला : पुष्कर

जिला प्रशासन, अजमेर के सहयोग से पुष्कर में 19 व 20 नवम्बर 2010 को “पुष्कर मेले” का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। इस मेले का आयोजन 16,000 से अधिक लोगों ने बड़े उत्साह के साथ किया। इस मेले में असम का बिहू (एनईजैडसीसी), उड़ीसा का शंख वादन (ईजैडसीसी), मध्यप्रदेश का बघाई नृत्य (एससीजैडसीसी), उत्तरप्रदेश का आल्हा गायन (एनसीजैडसीसी), गुजरात का हूडो रास, मिश्र, केरवानो वेश, महाराष्ट्र का लावणी तथा वाग्या मुरली का प्रदर्शन मेला ग्राउण्ड तथा रंगजी मंदिर परिसर में किया गया।

#### तारपा उत्सव, सिलवासा (संघ राज्य क्षेत्र)

संघ राज्य क्षेत्र दादर नागर हवेली के पर्यटन विभाग एवं बाल भवन बोर्ड, दादरा नगर हवेली द्वारा 26 से 28 दिसम्बर 2010 तक सिलवासा में “तारपा उत्सव” का आयोजन किया गया। इस उत्सव में डब्ल्यूजैडसीसी द्वारा प्रायोजित छत्तीसगढ़ के पंथी, मध्य प्रदेश के राई (एससीजैडसीसी), मणिपुर के मणिपुरी रास, लाय हरोबा (एनईजैडसीसी), हरियाणा के घूमर व खोड़िया तथा हिमाचल प्रदेश के कुल्लू नाटी नृत्य (एनजैडसीसी) का प्रदर्शन किया गया।

#### नाट्योत्सव-रंगमंच उत्सव, कुरचोरम, (गोवा)

रंगमंच अभियान को प्रोत्साहित करने तथा रंगमंचीय गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय के सहयोग से गोवा के कुरचोरम में 19 से 23 अक्टूबर 2010 तक पांच दिवसीय “नाट्योत्सव” का आयोजन किया गया। इस समारोह में श्री फादर मैथ्यू द्वारा निर्देशित कोंकणी नाटक “बोधकण”, प्रो. सत्यव्रत द्वारा निर्देशित हिंदी नाटक “एवं इन्द्रजीत”, श्री अखिलेश दीक्षित द्वारा निर्देशित

हिंदी नाटक “दाखिला डॉट कॉम” श्री सुरेश अनागली द्वारा निर्देशित कन्नड नाटक “मस्तिष्काभिषेकतम्” तथा श्री प्रभाकर द्वारा निर्देशित मराठी नाटक “सोनाटा” का मंचन किया गया।

### रंगशाला—मासिक रंगमंच प्रस्तुति : उदयपुर (राजस्थान)

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा गैर पेशेवर नाट्य दलों, प्रतिभावान कलाकारों, निर्देशकों आदि को अपने नाटकों का मंचन करने के लिए सुविधाएं प्रदान करके लोगों में रंगमंच को पुनर्जीवित करने और रंगमंच अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए एक अभियान की शुरुआत की गई है। हर माह नाट्य संध्या का आयोजन किया गया। हर माह नियमित रूप से रंगमंच प्रस्तुतियों की जाती हैं। अब तक “फितरती चोर”, “बहुत बड़ा सवाल”, “होली”, “पाहिजे जातिचे”, “माँ रिटायर होती है”, “सूर्य के वारिस”, “लोई का ताना”, “चेहरे”, “सीढ़ी दर सीढ़ी तुम्हारे पर तुम्हारा” तथा “झाक घर” का मंचन किया गया।

### बालोत्सव : गोवा

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, म्हापुसा के सहयोग से गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय द्वारा म्हापुसा में 8 से 12 नवम्बर, 2010 तक “बालोत्सव” का आयोजन किया गया, जिसमें 200 बच्चों और 4 विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस आयोजन में 10 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों को गोवा तथा राजस्थान के विशेषज्ञ शिल्पकारों द्वारा बंधेज कला, कठपुतली, मोती काम तथा कार्ड बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

### बालोत्सव : दमन

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा बाल भवन, दमन के सहयोग से दमन में 8 से 14 नवम्बर, 2010 तक “बालोत्सव” का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 68 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को नाटक, लोक संगीत, लोक नृत्य, शिल्प कला आदि में गहन प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों द्वारा दो नाटको, “चाइल्ड लेबर” तथा “बेटी बचाओ” का मंचन किया गया।

### शिल्पग्राम उत्सव—2010, उदयपुर

शिल्पग्राम उत्सव—वार्षिक राष्ट्रीय लोक कला और शिल्प उत्सव—का आयोजन शिल्पग्राम उदयपुर में दिनांक 21 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2010 तक किया गया। इस उत्सव का आयोजन विकास आयुक्त (हथकरघा), भारत सरकार, केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड, भारत सरकार, सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली, जम्मू व कश्मीर कला, संस्कृति और

साहित्य अकादमी, युवा सेवा एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप विभाग गुजरात सरकार तथा कला और संस्कृति विभाग, गोवा के सहयोग से किया गया था।

इस उत्सव में सम्पूर्ण देश के 561 मंचीय कलाकारों और 402 शिल्पकारों तथा 20 पाक कला निपुण व्यक्तियों ने भाग लिया। इस दस दिवसीय उत्सव में रोजाना अलग-अलग विषयों पर केन्द्रित सांस्कृतिक संध्याओं का आयोजन किया गया। इस उत्सव में विकास आयुक्त, हथकरघा, केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड, और सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों द्वारा प्रायोजित देश के विभिन्न भागों के विभिन्न कलाशिल्पों का प्रदर्शन किया गया। शिल्पग्राम उत्सव के दौरान शिल्पग्राम, उदयपुर में डब्ल्यूजैडसीसी की विभिन्न कार्यशालाओं/शिविरों के दौरान बनाई गई पेंटिंगों/मूर्तियों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस उत्सव में लगभग 2 लाख लोग आए और 4 करोड़ रुपए की कलावस्तुओं की बिक्री की गई।

उत्सव का उद्घाटन राजस्थान के महामहिम राज्यपाल एवं केंद्र के अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल द्वारा किया गया। अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अलावा भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय श्री मार्कण्डेय काटजू तथा राजस्थान सरकार के माननीय यातायात मंत्री श्री अशोक बैरवा ने शिल्पग्राम उत्सव का दौरा किया।

### सप्तरंग—लोक तरंग—2010 (राष्ट्रमण्डल खेल, 2010 : नई दिल्ली)

संस्कृति मंत्रालय के दल के रूप में सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों द्वारा संयुक्त रूप से नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमण्डल खेलों के दौरान आयोजित किए गए सप्तरंग और लोक तरंग समारोह में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने भाग लिया। इस आयोजन में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र को सीसीआरटी, द्वारका, नई दिल्ली में “सप्तरंग” के कार्यक्रम प्रस्तुत करने और कोरियोग्राफी करने का विशेष कार्य सौंपा गया था। सप्तरंग का आयोजन दो चरणों में 4 से 8 अक्टूबर तथा 9 से 13 अक्टूबर 2010 तक किया गया था। सप्तरंग की रूपरेखा के अनुसार प्रत्येक चरण में 8 दलों को प्रस्तुतियाँ देनी थीं लेकिन सप्तरंग को और अधिक रंगारंग बनाने के लिए लोकतरंग के कुछ अन्य दलों को भी इसमें शामिल किया गया। सप्तरंग में 40 से अधिक मंच कला रूपों की भागीदारी रही। सप्तरंग के कलाकारों ने सीसीआरटी के उस मुक्ताकाश मेला प्रांगण में अपनी प्रस्तुतियाँ दी जहाँ बहुत से लोग शिल्प प्रदर्शनी के साथ-साथ इस प्रदर्शन को भी देख सकते थे।



पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के 6 कला दलों अर्थात् गुजरात के रास गरबा, डांग आदिवासी नृत्य, और सिद्धि धमाल, राजस्थान के चकरी नृत्य और मांगणियार गायक तथा गोवा के समई नृत्य दल द्वारा लोक तरंग विभिन्न आयोजन स्थलों विशेष रूप से बाबा खडगसिंह मार्ग, दिल्ली हाट, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय आदि में अपनी कला का प्रदर्शन किया गया।

### बीच फेस्टीवल : दीव

केंद्र द्वारा दीव प्रशासन तथा बाल भवन दीव के सहयोग से दीव में 29 से 31 अक्टूबर 2010 तक “बीच फेस्टीवल” का आयोजन अरब सागर के तट पर मुक्तकाशी रंगमंच पर किया गया। इस उत्सव में उड़ीसा का गोटीपुआ, आसाम का बिहु नृत्य, राजस्थान का तेराताल नृत्य, गोवा का देखणी व समई नृत्य तथा गुजरात के मिश्र रास/डांडिया रास की सतरंगी प्रस्तुतियों को दीव के कला रसिकों द्वारा सराहा गया।

### दीव उत्सव, दीव (संघ राज्य क्षेत्र)

केंद्र द्वारा दीव प्रशासन व बाल भवन दीव के सहयोग से दमण में 19 से 21 दिसम्बर 2010 तक “दीव उत्सव” का आयोजन किया गया। इस उत्सव में केंद्र द्वारा पंजाब का भांगड़ा व गिद्धा, राजस्थान का मयूर, होली व चरकुला नृत्य, मध्यप्रदेश का नारता व बघाई नृत्य तथा उड़ीसा का गोटीपुआ नृत्य का प्रदर्शन किया गया।

### यात्रा—पश्चिममालाप

यह ‘तहसील/तालुका/मुख्यालयों पर आयोजित किया जाने वाला एक आधारभूत सांस्कृतिक कार्यक्रम है जिसमें पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के सदस्य राज्यों राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा के 50-60 कलाकारों का दल तहसील/तालुका मुख्यालय पर अपनी प्रस्तुतियाँ दे कर अगली तहसील की ओर कूच कर जाता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश की कला एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति लोगों व जन सामान्य में जागरूकता पैदा करना, राज्यों में सांस्कृतिक आदान प्रदान से एकात्मता को बल प्रदान करना तथा कलाकारों में सांस्कृतिक सामंजस्य स्थापित करना है।

### जालौर (राजस्थान)

इस यात्रा कार्यक्रम का आयोजन जालौर जिला प्रशासन के सहयोग से दिनांक 20 से 26 अक्टूबर, 2010 तक राजस्थान राज्य के जालौर जिले के तहसील मुख्यालयों पर किया गया

जिसमें सात तहसीलों अर्थात् जालौर, भीनमाला, रानीवाड़ा, सांचौर, बागोड़ा, सायला एवं अहोर को शामिल किया गया था। यात्रा कार्यक्रम में महाराष्ट्र का लावणी व पोवाड़ा, राजस्थान से कालबेलिया, भवाई, लंगा व मांगणियार लोक गायक, गोवा का देखणी व समई तथा गुजरात का गरबा व केरवानो वेश उल्लेखनीय है। इस आयोजन को 41000 से ज्यादा ग्रामीणों द्वारा देखा व सराहा गया।

### खेड़ा (गुजरात)

केंद्र द्वारा जिला प्रशासन के रचनात्मक सहयोग से गुजरात के खेड़ा जिले की विभिन्न तहसीलों में 4 से 13 दिसम्बर 2010 तक यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 10 तहसीलों में कार्यक्रम आयोजित किया गया इनमें नडियाद, मातार, महेमदाबाद, खेड़ा, कपड़वंज, कठाल, महुड़ा, वीरपुर, बालासिनोर व थासरा तहसीलें शामिल हैं। यात्रा कार्यक्रम में राजस्थान के लोक नृत्यों, महाराष्ट्र का लावणी नृत्य, गुजरात का केरवानो वेश की प्रस्तुति को 33000 से ज्यादा ग्रामीणों द्वारा देखा व सराहा गया।

### मार्शल आर्ट फेस्टीवल (गोवा)

केंद्र द्वारा गोवा शासन के कला एवं संस्कृति निदेशालय के संयुक्त तत्वावधान में गोवा के मडगांव स्थित रवीन्द्र भवन में 17 से 19 दिसम्बर 2010 तक “मार्शल आर्ट फेस्टीवल” का आयोजन किया गया। देश भक्ति, शौर्य, पराक्रम की भावना से ओत-प्रोत इस उत्सव में मणिपुर का थांग-ता, पश्चिम बंगाल का रायबेन्शे, पंजाब के बाजीगर, केरल का कलरीपयट्टू, गुजरात का ढाल-तलवार रास, महाराष्ट्र का लावणी रणसिंगा, पोवाड़ा, गोवा का घोड़े मोडनी, राजस्थान का गैर तथा असम का ढाल थुंगरी कला शैलियों का प्रदर्शन एक कोरियोग्राफी के जरिए किया गया।

### जनजाति कला एवं संस्कृति शिविर, सिलवासा (संघ राज्य क्षेत्र)

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा बाल भवन सिलवासा के सहयोग से सिलवासा में “जनजाति कला एवं संस्कृति शिविर” का आयोजन 26 से 26 अप्रैल 2010 तक किया गया जिसमें केंद्र द्वारा भवाई, लंगा लोक गायकों के दल के अलावा 5 विशेषज्ञों कठपुतली, बंधेज, मृणकला, पारंपरिक छपाई व लाख की चूड़ी के सर्जक को प्रायोजित किया गया।

### राजस्थानी नाटकों पर सेमीनार, उदयपुर

केंद्र द्वारा साहित्य अकादमी नई दिल्ली के सहयोग से राजस्थानी नाटकों पर एक सेमीनार का आयोजन 19 व 20 मई 2010 को उदयपुर में बागोर की हवेली में किया गया। इस अवसर पर श्री आनन्द वी. आचार्य के निर्देशन में राजस्थानी नाटक “टीडोराव” का मंचन किया गया।

### विश्व पर्यावरण दिवस, उदयपुर

केंद्र द्वारा राजस्थान सरकार के वन विभाग के सहयोग से विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर उदयपुर के रेलवे प्रशिक्षण संस्थान सभागार में विषयवस्तु पर आधारित कार्यक्रम का आयोजन 5 जून 2010 को किया गया।

### गाँव लोक रंगमंच समारोह मुंबई

नई पीढ़ी को लोक रंगमंच परंपरा से परिचित करवाने के ध्येय से केंद्र द्वारा गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय तथा लोक कला अकादमी मुंबई के सहयोग से मुंबई में “गाँव लोक रंगमंच समारोह” का आयोजन किया गया। इस समारोह में गोवा के लोक रंगमंच रूपों—जागोर, कालो तथा रणमाले का प्रदर्शन किया गया।

### विश्व पुस्तक दिवस 2010

छात्रों व विभिन्न आयु वर्ग के लोगों में पठन—पाठन की आदत को बढ़ावा देने तथा उनकी क्षमताओं में अभिवृद्धि के ध्येय से केंद्र द्वारा 4 मार्च 2010 को विश्व पुस्तक दिवस पर कला एवं संस्कृति से जुड़ी पुस्तकों के प्रसार व वितरण का एक अभियान प्रारम्भ किया गया। इसके अंतर्गत केंद्र द्वारा कला, संस्कृति व साहित्य पर प्रकाशित पुस्तकों का पुंज विभिन्न संस्थानों व गैरसरकारी संस्थाओं के पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों, कॉलेज व विद्यालयों में निःशुल्क प्रेषित की गई। इस अभियान के तहत 3670 पुस्तकों का वितरण किया गया है।

### नाट्य प्रदर्शन, उदयपुर

केंद्र द्वारा 31 जुलाई को मुंशी प्रमचंद जयन्ती के अवसर पर 31 जुलाई 2010 को उदयपुर में दर्पण सभागार में मुंबई के श्री मुजीब द्वारा निर्देशित तीन नाटकों का मंचन किया गया। इनमें “सवा सेर गेहूँ”, “मंदिर मस्जिद” तथा “कफन” कथाएं उल्लेखनीय हैं।

### टैगोर पुण्यतिथि का आयोजन : उदयपुर

केन्द्र द्वारा बोस संगीत संस्थान, उदयपुर के सहयोग से दिनांक 8 अगस्त, 2010 को दर्पण सभागार, शिल्पग्राम, उदयपुर में पंडित आर.के. बोस, उदयपुर एवं श्रीमती आसिमा घोष, कोलकाता की शानदार ‘रबीन्द्र संगीत शाम’ का आयोजन करके टैगोर पुण्यतिथि मनाई गई।

### पिंपरी चिंचवड़ उत्सव, पिंपरी चिंचवाड़, पुणे (महाराष्ट्र)

डब्ल्यूजेडसीसी द्वारा पिंपरी चिंचवाड़ सोशल क्लब के सहयोग से पुणे के समीप पिंपरी चिंचवाड़ उत्सव का आयोजन 19 व 20 सितम्बर 2010 किया गया। इस उत्सव में गुजरात का सिद्धिधमाल तथा राजस्थान के चरी व घूमर नृत्य की प्रस्तुति प्रमुख आकर्षण का केंद्र रहीं।

### विश्व पर्यटन दिवस, उदयपुर

केंद्र द्वारा विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर 27 सितम्बर 2010 को उदयपुर में दैनिक भास्कर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गुजरात से राठवा तथा राजस्थान से चकरी नृत्य व मांगणियार लोक गायकों को कला प्रदर्शन हेतु भेजा गया।

### लोकरंग, जयपुर

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर तथा जवाहर कला केंद्र जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जयपुर में 24 से 26 अक्टूबर 2010 तक लोकरंग का आयोजन किया गया जिसमें केंद्र द्वारा गुजरात का डांगी होली नृत्य, महाराष्ट्र का लावणी व पोवाड़ा, गोवा का देखाणी समई तथा असम के बिहू नृत्य दल को कला प्रदर्शन हेतु भेजा गया।

### विश्व संगीत दिवस, सोमनाथ

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर, संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली तथा सोमनाथ ट्रस्ट के सहयोग से 2 अक्टूबर 2010 को गुजरात के सोमनाथ में संगीत संध्या का आयोजन किया गया।

### भक्ति संगीत समारोह, गोवा

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर द्वारा गोवा के कला एवं

संस्कृति निदेशालय के सहयोग से गोवा में 2 अक्टूबर 2010 को विश्व अहिंसा दिवस के अवसर पर “भक्ति संगीत समारोह” का आयोजन मडगांव के रवीन्द्र भवन में किया गया।

### मत्स्य मेला, अलवर (राज.)

जिला प्रशासन, अलवर द्वारा दिनांक 15 व 16 अक्टूबर, 2010 को अलवर में मत्स्य मेले का आयोजन किया गया। डब्ल्यूजेडसीसी की ओर से राजस्थान का कच्ची घोड़ी नृत्य तथा गुजरात का सिद्धि धमाल नृत्य का प्रदर्शन किया गया।

### विश्व विरासत दिवस, उदयपुर

केंद्र द्वारा 19 नवम्बर 2010 को विश्व विरासत दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बालकों में सांस्कृतिक विरासत के प्रति चेतना जागृत करने के लिए केंद्र के बागौर की हवेली संग्रहालय में विद्यार्थियों व पर्यटकों के लिए प्रवेश निःशुल्क रखा गया। इस अवसर पर विशेष सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया।

### सृजनोदय : युवा चित्रकार शिविर, आणंद, गुजरात

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर द्वारा इष्कोवाला संतराम कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स वल्लभविद्यानगर के सहयोग से युवा चित्रकारों के लिए चित्रकार शिविर “सृजनोदय” का आयोजन 4 से 8 दिसम्बर 2010 तक किया गया। इस शिविर में 30 युवा कलाकारों व 5 विशेषज्ञों ने भाग लिया तथा चित्रकारों द्वारा 33 चित्र कृतियों का सृजन किया गया।

### प्रकाशन और प्रलेखन

केंद्र द्वारा द्विभाषी त्रैमासिक पत्रिका “कला प्रयोजन” का प्रकाशन करवाया गया जिसमें देश के कई जाने माने साहित्यकारों व विचारकों के आलेखों का नियमित प्रकाशन किया गया। पेंटिंग/मूर्तिकला प्रदर्शनी “अभिव्यक्ति” पर एक कैटलॉग का प्रकाशन किया गया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने “राजस्थान में पगड़ी बांधने की प्रथा”, जो राजस्थान की सर्वाधिक प्राचीन परम्परा है, का प्रलेखन कार्य

शुरू किया है। इसके लिए एक विस्तृत सर्वेक्षण अनुसंधान जारी है। क्रमशः 10 एवं 25 मिनट का सम्पूर्ण विडियो प्रलेखन तथा राजस्थान की विभिन्न पगड़ियों पर एक शानदार फोटोग्राफी पुस्तक तैयार की जाएगी। इस पर एक व्यापक डोजियर तैयार करने तथा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में नामांकन हेतु इसे संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से यूनेस्को को भेजे जाने का प्रस्ताव है। पूर्वोत्तर की विविध मंचन कलाओं पर ऑक्टव आकृति का एक फोटोग्राफी प्रलेखन तैयार किया गया है जिसमें उनसे संबंधित राज्यों, अवसरों एवं समुदायों तथा कब और किसके द्वारा उनका मंचन किया जाएगा, का वर्णन किया गया है। डब्ल्यूजेडसीसी की वेबसाइट को द्विभाषी (हिन्दी एवं अंग्रेजी) तथा अद्यतन बनाया गया।

### धरोहर, उदयपुर (राजस्थान)

डब्ल्यूजेडसीसी ने नाममात्र के शुल्क पर विदेशी तथा घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने तथा उन्हें क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए बागौर की हवेली-उदयपुर में शाम के समय एक नियमित सांस्कृतिक कार्यक्रम – धरोहर की शुरुआत की है।

### शिल्पदर्शन : उदयपुर

‘शिल्पदर्शन’, शिल्पग्राम, उदयपुर में आयोजित किया जा रहा एक अनवरत कार्यक्रम है जिसमें सदस्य राज्यों के मंच कलाकारों एवं शिल्पियों को क्रमवार 15 दिन की अवधि के साथ आगंतुकों के समक्ष उनकी कलाओं एवं शिल्पों का मंचन एवं प्रदर्शन करने के लिए शिल्पग्राम में आमंत्रित किया जाता है।

### उत्तराधिकार-गुरु शिष्य परंपरा

डब्ल्यूजेडसीसी ने दुर्लभ एवं लुप्त हो रहे कला रूपों, चाहे वे शास्त्रीय या लोक/जनजातीय हो, को संरक्षित करने एवं उनका प्रचार करने तथा विशेषज्ञों एवं मास्टर्स के मार्गदर्शन के अंतर्गत युवा प्रतिभाओं द्वारा कला के चुने हुए क्षेत्र में कौशलों को प्राप्त करने एवं उनका पोषण करने के लिए ‘उत्तराधिकार – गुरु-शिष्य परम्परा’ की शुरुआत की है। वर्ष के दौरान उत्तराधिकार के अंतर्गत 18 परियाजनाएं शुरू की गईं।

## उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

3.6.2

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त निकाय उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एनजेडसीसी) का उद्घाटन नवम्बर, 1985 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी ने किया था। इसके उद्देश्य हैं जम्मू व कश्मीर, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड राज्यों और संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़ की कलाओं संगीत, नाटक, ललित कला (चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक, फोटोग्राफी, सिरामिक्स जैसी दृश्य कलाओं के क्षेत्र और ललित कला के क्षेत्र से संबंधित अन्य कलाओं) और साहित्य के विस्तृत विषयों के तहत इनका संरक्षण करना, इनमें नवाचार लाना, इन्हें प्रोत्साहित करना और इनका प्रचार-प्रसार करना तथा सृजनात्मक कलाओं के लिए उत्कृष्टता का क्षेत्रीय केन्द्र विकसित करना और इसका विस्तार करना तथा इसके साथ-साथ विभिन्न कलाओं की समृद्ध विविधता और इनके अनोखेपन को विकसित करना तथा भारत की सांस्कृतिक विरासत की समग्र पहचान में इनके योगदान को प्रोत्साहित करना है।

यह केन्द्र सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत सोसायटी है। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार इसका नोडल मंत्रालय है जो इस केन्द्र के कार्यकरण को समेकित और विनियमित करता है। पंजाब के महामहिम राज्यपाल इस केन्द्र के कार्यकारी मंडल के अध्यक्ष हैं।

वर्ष 2010-11 के दौरान एनजेडसीसी ने कला और संस्कृति के सभी प्रकार के पहलुओं को शामिल करते हुए मेले तथा समारोह, पेंटिंग शिविर, थियेटर कार्यशालाएं, लोक-नृत्य से संबंधित कार्यशालाएं इत्यादि जैसे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम/कार्यकलाप इस क्षेत्र के सदस्य राज्यों के विभिन्न स्थानों और इस क्षेत्र के बाहर भारत के अन्य राज्यों में आयोजित किए हैं। एनजेडसीसी द्वारा आयोजित किए गए सांस्कृतिक कार्यकलापों में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के जीवन के सभी क्षेत्रों से लाखों व्यक्तियों ने भाग लिया और इनमें अधिकांश आम-आदमी थे।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान एनजेडसीसी के तत्वावधान में आयोजित किए गए अधिकांश सांस्कृतिक कार्यक्रम इस प्रकार हैं :-

- पटियाला और लुधियाना (पंजाब) में आयोजित किए गए 'विश्व-कप कबड्डी, पंजाब-2010' के उद्घाटन और समापन समारोह के दौरान भारत के लोक और जनजातीय नृत्यों, लोक संगीत और लोक वाद्य-यंत्रों की कोरियाग्राफिक की प्रस्तुति।

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र को पंजाब सरकार, खेलकूद और सेवा विभाग ने 3 अप्रैल और 12 अप्रैल, 2010 को 'विश्व-कप कबड्डी,



पंजाब-2010' के यादवेन्द्र पब्लिक स्कूल स्टेडियम, पटियाला में और गुरु नानक स्टेडियम, लुधियाना में क्रमशः उद्घाटन और समापन समारोह के दौरान लोक-नृत्य, लोक संगीत और लोक वाद्य-यंत्रों का विशाल प्रदर्शन आयोजित करने से संबंधित परियोजना सौंपी गई थी। उद्घाटन समारोह में भारत के सोलह राज्यों की विभिन्न मार्शल आर्ट्स और ढोल/नगाड़ों से प्रस्तुतियाँ दी गई थीं। समापन समारोह में पंजाब के लोक-नृत्यों, लोक-गीतों और लोक वाद्य-यंत्रों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था। उद्घाटन समारोह को पटियाला स्टेडियम में लगभग 50,000 व्यक्तियों ने और समापन समारोह को लुधियाना स्टेडियम में लगभग 65,000 से 70,000 व्यक्तियों ने देखा। इनमें पिचानवे प्रतिशत दर्शक ग्रामीण क्षेत्र के थे।

• **जिला मोहाली (पंजाब) के कुछ गाँवों में महिला मुद्दों पर 'कंजक' नाटक**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने रूपक कला और कल्याण समिति (पंजीकृत), मोहाली के सहयोग से बालिका भ्रूणहत्या और बालिकाओं की शिक्षा विषय पर सुश्री संगीत गुप्ता द्वारा निर्देशित नाटक 'कंजक' के कुछ शो का आयोजन दिनांक 3 से 12 मई, 2010 तक मोहाली जिला (पंजाब) के गाँवों अर्थात् संगतपुरा; मिलक; मस्तगढ़; मनकपुर शरीफ; पोपना; नाइमिया; तोगन; तीशा; धनोवन; सूनक में किया। प्रत्येक स्थान पर स्थानीय गाँव पंचायत के सदस्यों ने भी इन शो को देखा।

• **गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाने के लिए टैगोर के नृत्य नाटक पर आधारित नृत्य और संगीत प्रस्तुति 'चंडालिका' की कोरियोग्राफी पर कार्यक्रम**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने कला, नृत्य और संगीत का मंच आधार, पीएडीएम, चंडीगढ़ के सहयोग से दिनांक 10 मई, 2010 को टैगोर थियेटर, चंडीगढ़ में गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाने के लिए टैगोर के नृत्य-नाटक पर आधारित नृत्य और संगीत प्रस्तुति 'चंडालिका' की कोरियोग्राफी पर कार्यक्रम आयोजित किया। इसके मुख्य अतिथि पंजाब के महामहिम राज्यपाल और एनजेडसीसी के अध्यक्ष श्री शिवराज वी. पाटिल थे। इस कार्यक्रम में सुश्री सुचित्रा मित्रा विख्यात गुरु/शास्त्रीय नृत्यांगना ने कोरियोग्राफी की थी।

• **विरसा विहार केन्द्र, पटियाला और कलाग्राम, चंडीगढ़ में बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यशालाएं**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने विरसा विहार केन्द्र, पटियाला में दिनांक 1 से 20 जून, 2010 तक लोक नृत्यों : सामी/भांगड़ा; थियेटर; पेंटिंग और मास्क निर्माण के संबंध में 'बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यशालाएं' और कलाग्राम, चंडीगढ़ में दिनांक 3 से 27 जून, 2010 तक 'बाल नाट्य कार्यशाला' आयोजित की। इन कार्यशालाओं में लगभग 400 बच्चों ने भाग लिया। विख्यात विशेषज्ञों ने विभिन्न प्रकार की कलाओं का प्रशिक्षण भी विद्यार्थियों को दिया।

• **श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में 'कश्मीरी दास्तान और सूफीयाना संगीत'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, श्रीनगर के सहयोग से दिनांक 2 और 3 जून, 2010 को श्रीनगर में 'कश्मीरी दास्तान और सूफीयाना संगीत' का कार्यक्रम आयोजित किया।

• **धर्मशाला और डलहौजी (हिमाचल प्रदेश) में 'ग्रीष्म समारोह'**

भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) ने दिनांक 5 और 6 जून, 2010 को धर्मशाला में और 19 तथा 20 जून, 2010 को डलहौजी में 'ग्रीष्म समारोह' आयोजित किया। इस समारोह के दौरान उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने भांगड़ा (पंजाब); घूमर/खोड़िया (हरियाणा); कालबेलिया; भवाई और मांगणियार गीतों (राजस्थान) जैसे लोक-नृत्य और गायन कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

• **पाकिस्तान से भारत में वाघा बार्डर पर क्वीन्स बैटन रिले के प्रवेश के बाद उत्तरी राज्यों के लोक-नृत्य, लोक संगीत और लोक वाद्य-यंत्रों के सांस्कृतिक कार्यक्रम की कोरियोग्राफी**

19वें राष्ट्रमंडल खेल, 2010 की आयोजन समिति द्वारा उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र को दिनांक 25 जून, 2010 को पाकिस्तान से भारत के वाघा बार्डर, अमृतसर में क्वीन्स बैटन रिले के प्रवेश के अवसर पर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लोक-नृत्य, लोक-संगीत और लोक वाद्य-यंत्रों के



विशाल कार्यक्रम को आयोजित करने का कार्य सौंपा गया था। ये कार्यक्रम पंजाब; जम्मू और कश्मीर; हरियाणा; हिमाचल प्रदेश और राजस्थान राज्यों के लोक-नृत्यों पर आधारित थे। इस पूरे शो का चैनलों ने विश्वव्यापी सीधा प्रसारण किया और पूरे विश्व में इस कार्यक्रम को लाखों व्यक्तियों ने देखा था।

- **चम्बा (हिमाचल प्रदेश) में 'मिंजर मेला'**

भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) ने दिनांक 28 से 30 जुलाई, 2010 तक चम्बा में 'मिंजर मेला' का आयोजन किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इस मेले में भांगड़ा (पंजाब); घूमर/खोडिया (हरियाणा); भवाई; कालबेलिया (राजस्थान); मयूर नृत्य (उत्तर प्रदेश); पंथी (छत्तीसगढ़) और बिहू (असम) जैसे लोक-नृत्य और गीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **जोगेश्वर (हिमाचल प्रदेश) में 'श्रावणी मेला'**

संस्कृति विभाग, उत्तराखंड ने दिनांक 30 जुलाई से 1 अगस्त, 2010 तक जोगेश्वर में 'श्रावणी मेला' का आयोजन किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इस मेले में भांगड़ा और झूमर (पंजाब); सिरमौरी नत्ती (हिमाचल प्रदेश) जैसे लोक-नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **जिला पटियाला (पंजाब) के विभिन्न गाँवों में 'नवी सवेर'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने संत ईश्वर सिंह स्मारक युवा क्लब, गाँव आल्लोवाल, जिला पटियाला के सहयोग से दिनांक 2 से 10 अगस्त, 2010 तक अनेक गाँवों अर्थात् अजनोदा कला; खेडी जाटान; मतरोडा; टोहरा; कंशुआ; अजनोदा खुर्द; आल्लोवाल; डंडराला; दित्तुपुर; लाओत, जिला पटियाला (पंजाब) में नशे की लत के विरुद्ध 'नवी सवेर' अभियान के दौरान लोक-नृत्य कार्यक्रम आयोजित किए।

- **गाँव बाबेहाली, जिला गुरदासपुर (पंजाब) में 'छिन्ज मेला'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने छिन्ज मेला समिति और गाँव पंचायत, गाँव बाबेहाली, जिला गुरदासपुर (पंजाब)

के सहयोग से 29 अगस्त, 2010 को 'छिन्ज मेले' में (डा०) ममता जोशी के सूफी गायन; गुरचरण सिंह द्वारा निर्देशित नाटक : 'जागो' और भाण्ड-मिरसी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर 'खुली हवा की तलाश में' नाटक का मंचन**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने विख्यात नुक्कड़-नाटक कलाकार और प्रसिद्ध विद्वान श्री जी.एस. चानी द्वारा निर्देशित अत्यधिक लोकप्रिय नुक्कड़-नाटक 'खुली हवा की तलाश में' का दिनांक 26 अगस्त से 3 सितम्बर, 2010 तक हरियाणा और हिमाचल प्रदेश राज्यों के विभिन्न स्थानों अर्थात् रामगढ़; मोरनी; पिंजोर; कालका; पंचकुला; परवानू; नालागढ़; बरौतीवाला; बाददी में मंचन किया। इसमें पर्यावरण खराब होने से संबंधित मुद्दों "क्या है" और "कैसा है" के मध्य संबंध, पद्धतियों की जानकारी प्रदान की गई। उपभोक्तावाद और "बालिका भ्रूणहत्या" के मध्य क्या संबंध है। हमारे पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी के संबंध में हमारा दृष्टिकोण क्या है। बढ़े उद्योग और राजनीतिज्ञों के मध्य अनुचित गठजोड़ के क्या निहितार्थ हैं?

**आम आदमी** – विख्यात नाटककार द्वारा आम कलाकारों का प्रशिक्षण।



आम आदमी, एक नुक्कड़ नाटक

इसका मंचन थियेटर की विभिन्न विधाओं स्टेज, माइक्रोफोन, प्रकाश व्यवस्था और अन्य का उपयोग किए बिना नुक्कड़ नाटक शैली में गलियों में किया गया। पार्कों, सामुदायिक भवनों, विद्यालयों, कॉलेजों, प्रांगण, खुले स्थानों और प्रदूषण रहित अन्य सार्वजनिक स्थलों पर भी इसका मंचन किया गया।

- **हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश) में 'हमीर उत्सव-2010'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) के सहयोग से हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश) में दिनांक 1 से 3 सितम्बर, 2010 तक आयोजित किए गए 'हमीर उत्सव-2010' में भवाई; कालबेलिया और मंगणियार (राजस्थान) जैसे गायन और लोक-नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **फरीदकोट (पंजाब) में 'बाबा शेख फरीद आगमन पर्व'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र ने दिनांक 22 सितम्बर, 2010 को लोकप्रिय 'बाबा शेख फरीद आगमन पर्व', फरीदकोट (पंजाब) में व्यापक स्तर पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जिसमें (डा०) ममता जोशी का सूफी गायन; भांगड़ा; गिद्धा; जिन्दुआ (पंजाब); मंगणियार; भपंग वादन (राजस्थान); डांडिया/गरबा (गुजरात); संभलपुरी नृत्य (उड़ीसा); लम्बादी नृत्य (आंध्र प्रदेश); पोंगचोलम नृत्य (मणिपुर); कुद नृत्य (जम्मू और कश्मीर) जैसे लोक-नृत्य, लोक वाद्य-यंत्रों, लोक संगीत और लोक गायन पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति की कोरियोग्राफी की गई।

- **चंडीगढ़ में लोक-नृत्य/लोक वाद्य-यंत्रों/लोक गायन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यकलापों की कोरियोग्राफी की प्रस्तुति**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र ने दिनांक 25 सितम्बर, 2010 को चंडीगढ़, ज्यूडिशियल अकादमी, सेक्टर-43, चंडीगढ़ में कालबेलिया (राजस्थान); डांडिया (गुजरात); सम्भलपुरी (उड़ीसा); लम्बादी (आंध्र प्रदेश); पोंग चोलम/ढोल चोलम/मणिपुर रास (मणिपुर); कुद (जम्मू और कश्मीर);

राजस्थान के भपंग वादन और लोक वाद्य-यंत्रों; पंजाब के लोक संगीत और वाद्य-यंत्रों पर आधारित लोक नृत्य/लोक वाद्य-यंत्रों/लोक गायन की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात गायिका (डा०) ममता जोशी के लोक गायन का नृत्य आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

- **विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर लेक, सेक्टर-42, चंडीगढ़ में 'पंजाबी म्यूजिकल हंगामा'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने दिनांक 27 सितम्बर, 2010 को लेक, सेक्टर-42, चंडीगढ़ में विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर 'पंजाबी म्यूजिकल हंगामा' में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जिनमें पंजाब के लोक वाद्य-यंत्रों, लोक गायन और सूफी कव्वाली गायन कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

- **भारत की राष्ट्रपति महामहिम प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के सम्मान में पंजाब की लोक संस्कृति की कोरियोग्राफिक प्रस्तुति**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने दिनांक 5 अक्टूबर, 2010 को पंजाब राज भवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के दौरे के दौरान सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंजाब की संस्कृति को प्रदर्शित किया गया था जिसमें लोक संगीत, लोक वाद्य-यंत्रों, लोक-नृत्यों और लोक गायन पर आधारित कार्यकलाप शामिल किए गए थे।



भारत के महामहिम राष्ट्रपति के सम्मान में लोक संगीत और नृत्य की कोरियोग्राफिक प्रस्तुति

• नई दिल्ली में 'लोकतरंग' / 'सप्तरंग'

सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार ने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के सहयोग से 'राष्ट्रमंडल खेल-2010' के आयोजन के अवसर पर नई दिल्ली में दिनांक 3 से 13 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित किए गए 'लोकतरंग' / 'सप्तरंग' का आयोजन किया। एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद को इन कार्यक्रमों के आयोजन के लिए नोडल अभिकरण बनाया गया था। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इस अवसर पर भांगड़ा, गिद्धा (पंजाब); किन्नौरी नटी (हिमाचल प्रदेश); रौफ, श्रीनगर; लेह-लद्दाख (जम्मू और कश्मीर) का जाबरो तथा मास्क नृत्य जैसे लोक-नृत्य आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

• पंचकूला (हरियाणा) में नवरात्र मेले के दौरान भजन संध्या

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने श्री माता मंसा देवी मंदिर परिसर, पंचकूला में दिनांक 15 अक्टूबर, 2010 को आयोजित किए गए नवरात्र मेले में मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के वशिष्ठ बंधुओं की भजन संध्या का आयोजन किया।

• अलवर और भिवाड़ी (राजस्थान) में मत्स्य उत्सव

जिला प्रशासन, अलवर (राजस्थान) ने दिनांक 15 और 16 अक्टूबर, 2010 को अलवर और भिवाड़ी में मत्स्य उत्सव आयोजित किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इस अवसर पर रौफ नृत्य (जम्मू और कश्मीर); किन्नौरी नटी (हिमाचल प्रदेश) और गिद्धा (पंजाब) जैसे लोक-नृत्यों का विहंगम कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

• भूमति और कुनिहार (हिमाचल प्रदेश) में दशहरा समारोह

भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) ने दिनांक 18 और 19 अक्टूबर, 2010 को भूमति और कुनिहार (हिमाचल प्रदेश) में 'दशहरा समारोह' आयोजित किया जिसमें उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने घूमर; धमाल और फाग (हरियाणा); और डांडिया/गरबा (गुजरात) जैसे लोक-नृत्यों का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

• मोहाली (पंजाब) में विरासत मेला-2010

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने पंजाबी विरासा सांस्कृतिक और कल्याण समिति (पंजीकृत) के सहयोग से दिनांक 23 और 24 अक्टूबर, 2010 को मोहाली (पंजाब) के सहयोग से दिनांक 23 और 24 अक्टूबर, 2010 को मोहाली (पंजाब) में आयोजित किए गए 'विरासत मेले' में गिद्धा, भांगड़ा, झूमर, मलवाई गिद्धा (पंजाब) जैसे लोक-नृत्यों; लोक थियेटर 'नक्काल'; श्रीमती गुरमीत बावा के पंजाबी लोक गायन और श्री शरीफ ईदू के धाडी गायन जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

• बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) में 'सांस्कृतिक उत्सव'

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) की ओर से दिनांक 24 से 27 अक्टूबर, 2010 तक बिलासपुर में आयोजित किए गए 'सांस्कृतिक उत्सव' में धमाल, घूमर (हरियाणा); मंगणियार गायन (राजस्थान) जैसे लोक-नृत्य आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

• कलाग्राम, मणिमाजरा, चंडीगढ़ में 'द्वितीय चंडीगढ़ राष्ट्रीय शिल्प मेला'

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन चंडीगढ़ के सहयोग से कलाग्राम, चंडीगढ़ में (26 अक्टूबर से 4 नवम्बर, 2010 तक) 'द्वितीय चंडीगढ़ राष्ट्रीय शिल्प मेला' आयोजित किया। इस शिल्प मेले के दौरान प्रतिदिन प्रातः 10.00 बजे से रात्रि 8.00 बजे तक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें पूरे भारत से 500 से भी अधिक कलाकारों ने लोक-नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस मेले में प्रतिदिन जीवन के सभी क्षेत्रों से जुड़े हजारों व्यक्ति आए। कलाकारों ने स्थानीय गाँव पंचायतों और/अथवा युवा क्लबों के सहयोग से पूरे उत्तर क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर अनेक कार्यक्रम अर्थात् जयपुर (राजस्थान) में लोकतरंग-2010; जिला बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) के झण्डुता और मलंगन गाँवों में रिकोंग पियो पर किन्नौर महोत्सव तथा रोपड़ जिले (पंजाब) के खिजाबाद में प्रस्तुत किए।

विभिन्न राज्यों के लगभग 124 लोक-नृत्य कलाकारों ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे खिजाबाद के दर्शकों और इसके आस-पास के 11 गाँवों अर्थात् फतेहपुर

टपरियान; बिंदरख; कूबा हेडी; मियापुर; गोचर; लाबनगढ़; बरसालपुर टपरियान; थाना गोबिन्दगढ़; सलीमपुर कलां; सलीमपुर खुर्द और झण्डे माजरा के दर्शकों ने देखा। इसके दर्शकों में पंचों और सरपंचों के अतिरिक्त विद्यालयों के बच्चे और आस-पास के गाँवों के पुरुष, महिला और बुजुर्ग व्यक्ति शामिल थे।

उपर्युक्त कार्यक्रम की तरह ही पटियाला जिले के पंजोला गाँव के राजकीय उच्च विद्यालय के परिसर में दिनांक 3 नवम्बर, 2010 को लोक-नृत्य प्रस्तुत करने के लिए ग्राम पंचायत की सहायता से इस गाँव को अभिज्ञात किया गया था।

#### • लुधियाना (पंजाब) में 'मेले धियां दा'

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने पंजाब संगीत नाटक अकादमी, चंडीगढ़ के सहयोग से लुधियाना में दिनांक 28 और 29 अक्टूबर, 2010 को आयोजित किए गए 'मेला धियां दा' में घूमर/खोड़िया (हरियाणा), सिरमौरी नाति (हिमाचल प्रदेश); कालबेलिया (राजस्थान) जैसे लोक-नृत्य आधारित कार्यक्रम विख्यात पंजाबी गायिका सुश्री गुरमीत बावा और सुश्री मनप्रीत अख्तर के लोक गायन आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

#### • जयपुर (राजस्थान) में 'लोकरंग' का आयोजन

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के सहयोग से दिनांक 29 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2010 तक जयपुर (राजस्थान) में 'लोकरंग-2010' के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनमें 107 लोक-नृत्य कलाकारों ने बिहू (असम); सूमी नृत्य (नागालैंड); चेरा (मिजोरम); ढोल-ढोलक चोलम (मणिपुर); भांगडा, गिद्धा, परम्परागत धाढ़ी गायन और गतका - मार्शल आर्ट (पंजाब); सिरमौरी नाति (हिमाचल प्रदेश) जैसे लोक-नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

#### • रिकोंग पियो (हिमाचल प्रदेश) में 'किन्नौर महोत्सव'

भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) ने दिनांक 30 और 31 अक्टूबर, 2010 को रिकोंग पियो में 'किन्नौर महोत्सव' आयोजित किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इसमें धमाल, घूमर (हरियाणा) और मंगनियार गायन (राजस्थान) जैसे लोक-नृत्य प्रस्तुत किए।

#### • पंचकूला (हरियाणा) में 'रेड क्रॉस दिवाली मेला'

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने जिला रेड क्रॉस सोसायटी, पंचकूला के सहयोग से दिनांक 3 और 4 नवम्बर, 2010 को पंचकूला, हरियाणा में आयोजित किए गए 'रेड क्रॉस दिवाली मेला' में बिहू (असम); सूमी नृत्य (नागालैंड); चेरा (मिजोरम); ढोल-ढोलक चोलम (मणिपुर); मंगनियार गायन; भापंग वादन, काची छोड़ी, बेहरूपिया (राजस्थान); डांडिया रास, मेवासी (गुजरात); संभलपुरी (उड़ीसा); लम्बादी (आंध्र प्रदेश) जैसे लोक-नृत्यों, लोक वाद्य-यंत्रों और लोक गायन आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

#### • विरसा विहार केन्द्र, पटियाला (पंजाब) में 'बाल रंगमंच उत्सव'

बाल दिवस के अवसर पर उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने रंग दर्पण, पटियाला के सहयोग से इसके मुख्यालय विरसा विहार केन्द्र, पटियाला में दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को एक बाल रंगमंच उत्सव आयोजित किया। इसमें बच्चों ने तीन हिन्दी नाटकों : गास सभा में हंगामा; नीर निरूपाल; बरगद का न्याय; दो पंजाबी नाटकों : पुख दे फुपारह; कुड़ियां इक अमूल्य गहना; और एक अंग्रेजी नाटक : नेकलेस का मंचन किया।

#### • पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) में नाट्य समारोह-2010

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने नाट्य और दूरदर्शन विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के सहयोग से दिनांक 15 से 19 नवम्बर, 2010 तक कला भवन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में पांच दिवसीय नाट्य समारोह-2010 का आयोजन किया। इस अवसर पर नाटक की विभिन्न शैलियों को प्रदर्शित किया गया और विख्यात तथा व्यावसायिक दक्षता वाले निर्देशकों को आमंत्रित किया गया। इसके साथ-साथ हरबंशसिंह द्वारा निर्देशित और राकेश बेदी द्वारा अभिनीत 'मसाज'; अजीज कुरैशी द्वारा लिखित और निर्देशित 'एक और सच'; केवल धालीवाल द्वारा निर्देशित 'गड्डी चरण दी काहल बड़ी सी'; उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से नाटक और दूरदर्शन विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा निर्मित 'ना जाविन बरूहोन पार'; कुलदीप शर्मा द्वारा निर्देशित 'राष्ट्रीय भ्रष्टाचार अधिवेशन' नाटकों का मंचन किया गया।



- **रेणुका में 'रेणुका महोत्सव' और बालग (हिमाचल प्रदेश) में 'बालग मेला'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र ने भाषा, कला और संस्कृति विभाग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) के सहयोग से दिनांक 16 और 17 नवम्बर, 2010 को रेणुका में और दिनांक 19 और 20 नवम्बर, 2010 को बालग में आयोजित किए गए 'रेणुका महोत्सव' में घूमर (हरियाणा) और कालबेलिया (राजस्थान) जैसे लोक-नृत्य प्रस्तुत किए।

- **कपाल मोचन (हरियाणा) में 'कपाल मोचन मेला'**

भाई साहब एस. गुरबक्स सिंह स्मारक ट्रस्ट (पंजीकृत), पटियाला ने कपाल मोचन, जिला यमुनानगर (हरियाणा) में दिनांक 19 और 20 नवम्बर, 2010 को 'कपाल मोचन मेला' आयोजित किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इसमें घूमर (हरियाणा) और भांगड़ा (पंजाब) जैसे लोक-नृत्यों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **पंजाब नाट्यशाला, अमृतसर में '7वाँ राष्ट्रीय नाट्य समारोह अमृतसर'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने मंच-रंगमंच, अमृतसर के सहयोग से दिनांक 22 से 29 नवम्बर, 2010 तक पंजाब नाट्यशाला, अमृतसर में '7वाँ राष्ट्रीय नाट्य समारोह अमृतसर' का आयोजन किया। इसमें उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने देविन्दर दमन (पंजाब) द्वारा निर्देशित कतरा-कतरा जिन्दगी; कुलदीप शर्मा (चंडीगढ़) द्वारा निर्देशित राष्ट्रीय भ्रष्टाचार अधिवेशन; सुरेश भारद्वाज (नई दिल्ली) द्वारा निर्देशित 8 घण्टे; केवल धालीवाल (पंजाब) द्वारा निर्देशित इज्जत के नाम नाटकों का मंचन किया।

- 5 **बूंदी (राजस्थान) में बूंदी उत्सव**

जिला प्रशासन, बूंदी (राजस्थान) ने दिनांक 24 से 26 नवम्बर, 2010 तक बूंदी में 'बूंदी उत्सव' आयोजित किया। इसमें उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने भांगड़ा (पंजाब) और रोउफ (जम्मू और कश्मीर) जैसे लोक-नृत्यों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **खदूर साहिब (पंजाब) में 'विरासत समारोह'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने पंजाब संगीत नाटक अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 25 और 26 नवम्बर, 2010 को खदूर साहिब, जिला तरनतारन (पंजाब) में आयोजित किए 'विरासत समारोह' में घूमर, फाग (हरियाणा) सिरमौरी नाति, दीपक नृत्य (हिमाचल प्रदेश); रोउफ, डोगरी नृत्य (जम्मू और कश्मीर); कालबेलिया (राजस्थान); विख्यात पंजाबी गायकों सुश्री मनप्रीत अख्तर और सुश्री गुरमीत बावा के लोक गायन जैसे लोक-नृत्यों/लोक गायन के सांस्कृतिक कार्यक्रम और श्री मनप्रीत द्वारा निर्देशित 'बाबा बंतु' तथा श्री हंस सिंह द्वारा निर्देशित 'मिट्टी ना होवे मत्रायी' नाटकों के मंचन से संबंधित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **चंडीगढ़ में 'चंडीगढ़ कार्निवल'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 26 से 28 नवम्बर, 2010 तक आयोजित किए 'चंडीगढ़ कार्निवल' में चप्पेली (उत्तराखंड); धमाल (हरियाणा); मेर रास (गुजरात); चाकरी (राजस्थान); बधाई (आंध्र प्रदेश); राय बंशी (पश्चिमी बंगाल) और मंगवियार गायन (राजस्थान) जैसे लोक-नृत्य आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

कार्यक्रमों की इस श्रृंखला में विभिन्न राज्यों के 98 लोक कलाकारों ने गाँव पंचायत के सहयोग से दिनांक 30 नवम्बर, 2010 को गाँव रसोल्वा, जिला लुधियाना में और दिनांक 1 दिसम्बर, 2010 को गाँव पतरान – जिला पटियाला के एक छोटे कस्बे में कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **गणतंत्र दिवस परेड-2011 के लिए कलाग्राम के स्कूली बच्चों की टुकड़ी का 'भांगड़ा', लोक-नृत्य कला पूर्वाभ्यास**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की चंडीगढ़ और मोहाली के विभिन्न विद्यालयों के स्कूली बच्चों द्वारा 'भांगड़ा' लोक-नृत्य कला आधारित कार्यक्रम को गणतंत्र दिवस परेड, 2011 में प्रस्तुति के लिए उत्कृष्ट स्कूली बच्चे श्रेणी के अंतर्गत माननीय रक्षा मंत्री से पुरस्कार और ट्राफी प्राप्त हुई।



• **चंडीगढ़ में 'द्वितीय सार्क लोक साहित्य समारोह'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने सार्क लेखक और साहित्य प्रतिष्ठान (एफओएसडब्ल्यूएल), नई दिल्ली द्वारा 26 से 28 नवम्बर, 2010 तक आयोजित किए गए 'द्वितीय सार्क लोक साहित्य समारोह' में कल्बेलिया, मंगवियार गायन, भापंग वादन (राजस्थान); बीन जोगी (हरियाणा); वाद्य यंत्रों/आर्केस्ट्रा (पंजाब) और कुलदीप कादिर द्वारा कव्वाली जैसे लोक-नृत्य/लोक गायन/लोक वाद्य-यंत्रों आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रेस समीक्षाओं और रिपोर्टों में इनकी अत्यधिक प्रशंसा की गई।

• **जयपालगढ़, भटिण्डा (पंजाब) में 'विरासत मेला'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने ने मालवा विरासत प्रतिष्ठान, भटिण्डा द्वारा दिनांक 3 से 5 दिसम्बर, 2010 तक गाँव जयपालगढ़, जिला भटिण्डा (पंजाब) में आयोजित किए गए 'विरासत मेले' में चपेली (उत्तराखंड); धमाल (हरियाणा); मेर रास (गुजरात); चकरी (राजस्थान); और नाचर जैसे लोक-नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

• **कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में 'कुरुक्षेत्र उत्सव-गीता जयंती समारोह-2010'**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड और हरियाणा सरकार के सहयोग से दिनांक 13 से 17 दिसम्बर, 2010 तक कुरुक्षेत्र में 'कुरुक्षेत्र उत्सव-गीता जयंती समारोह-2010' आयोजित किया। इस अवसर पर उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात सूफी गायिका (डा०) ममता जोशी के सूफी गायन; पसले वाले कव्वाली की कव्वाली; राजेन्दर गंगानी और समूह के नृत्य-नाटक - 'कृष्ण लीला' और शर्मा बंधुओं की ओर से भजन संध्या जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस समारोह के भाग के रूप में हमने दिनांक 8 से 19 दिसम्बर, 2010 तक शिल्प मेले, पेंटर शिविर और रंगोली शिविर का भी आयोजन किया जिनमें लाखों लोग शामिल हुए।

S **चंडीगढ़ में दिनांक 9 से 12 दिसम्बर, 2010 तक 'शरद मेला'**

वाटिका मूक-बधिर उच्च विद्यालय, चंडीगढ़ ने दिनांक 9 से 12 दिसम्बर, 2010 तक अपने विद्यालय परिसर में

'शरद मेला' आयोजित किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इसमें गिद्धा, जिन्दुआ (पंजाब), घूमर, फाग, पनिहारी (हरियाणा) जैसे लोक-नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

• **कलाग्राम, मणिमाजरा, चंडीगढ़ में निपुण शिल्पकारों की पेंटिंग और मूर्तिकला की वर्ष भर कार्यशालाएं**

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इस वर्ष एक नई परियोजना शुरू की है जिसके तहत पूरे वर्ष कलाग्राम में एक पखवाड़े की अवधि की पेंटिंग और मूर्तिकला कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है ताकि उत्कृष्ट केन्द्र तैयार किया जा सके। पेंटिंग और मूर्तिकला की पखवाड़ा कार्यशालाएं दिनांक 1 जुलाई, 2010 से आयोजित की जा रही हैं।

प्रत्येक पखवाड़े में एक विख्यात चित्रकार विशेष रूप से राष्ट्रीय अथवा राज्य पुरस्कार विजेता कलाग्राम में शिविर लगाएगा। इस शिविर के दौरान निपुण चित्रकार अपनी शैली में तीन गुणवत्तामूलक पेंटिंग बनाएगा। कैनवास का आकार 3.1/2' x 4' (दो) और 4' x 5' (एक) होगा। इस कलाकार के कलात्मक कार्य और प्रगति को देखने के लिए विद्यालयों/कॉलेजों के विद्यार्थियों तथा उदीयमान कलाकारों को आमंत्रित किया जाएगा और इस कलाकार के साथ प्रत्येक दिन परस्पर संवाद सत्र आयोजित किया जाएगा।

इसी प्रकार प्रत्येक पखवाड़े में विख्यात मूर्ति शिल्पकार विशेष रूप से राष्ट्रीय अथवा राज्य पुरस्कार विजेता कलाग्राम में शिविर लगाएंगे और अपनी विशेष शैली में मूर्ति तैयार करेंगे। विद्यालयों/कॉलेजों के विद्यार्थी और उदीयमान मूर्ति शिल्पकारों को निपुण मूर्ति शिल्पकारों के कार्य और प्रगति को सीखने और अध्ययन करने का अवसर मिलेगा तथा उनके साथ प्रतिदिन परस्पर संवाद का आयोजन भी किया जाएगा। संबंधित पखवाड़े के कलाकारों-चित्रकारों के नाम और मूर्ति शिल्प की घोषणा पहले ही कर दी जाएगी।

दिनांक 1 जुलाई, 2010 से 31 दिसम्बर, 2010 के मध्य मूर्तिशिल्प और पेंटिंग की बारह पखवाड़ा कार्यशालाएं आयोजित की गईं। विख्यात कलाकारों द्वारा तैयार की गई पेंटिंग और मूर्तियों की प्रेस में प्रशंसा की गई और कलाकार समुदाय गर्मजोशी से इनका स्वागत कर रहा है।

## दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

3.6.3

देश भर से विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों और कलात्मक प्रदर्शन से लोगों को कार्यक्रमों के बारे में एक सजीव जानकारी प्राप्त होती है। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एसजेडसीसी), आवश्यकता के आधार पर कार्यक्रमों को स्वयं शुरू करता है और अंतिम सांस्कृतिक संगठनों तथा मंदिरों के लिए कार्यक्रम प्रायोजित करता है। सांस्कृतिक एजेंसियों को प्रोत्साहित करने के लिए एसजेडसीसी, सहयोगी कार्यक्रमों के संचालन हेतु एक सीमित रूप में वित्तीय संसाधनों का अंशदान करता है। यह केंद्र निर्धारित कार्यक्रम, सहयोगी कार्यक्रम, मुख्यालय कार्यक्रम, विशेष कार्यक्रम तथा राज्य की राजधानी कार्यक्रम और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का संचालन करता है।

जैसा कि सदस्य राज्यों के कला और संस्कृति निदेशालयों के परामर्श से सदस्य राज्यों के संस्कृति मंत्रालयों के सचिवों ने संस्तुति की है, निर्धारित कार्यक्रमों को वर्ष के आरंभ में ही निर्धारित कर दिया जाता है। संगीत, नृत्य और ललित कलाओं को लोक कथा परंपराओं पर यथोचित जोर देते हुए विशिष्टता प्रदान की जाती है। समान विचारधारा वाले संगठनों की सहक्रियाशीलता का लाभ प्राप्त करने के लिए केंद्र, ललित कला अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी और साहित्य अकादेमी तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के साथ सहयोगी कार्यक्रम संचालित करता है। संगीत और नृत्य तथा मंदिरों के बीच युगों पुराने संबंधों को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाने के लिए केंद्र, ब्रह्दीश्वर मंदिर तंजावुर में युवा कलाकारों द्वारा कार्यक्रम चलाता है और दुर्लभ लोक कलाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र, मुख्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिमाह अपने परिसर में लोक कला प्रदर्शन कार्यक्रम संचालित करता है। जाने-माने सांस्कृतिक संगठनों या व्यक्तियों से प्राप्त अभिनव प्रस्तावों पर वर्ष के दौरान आवश्यकतानुसार विशेष कार्यक्रम चलाए जाते हैं। शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण लोक कलाओं को लोकप्रिय बनाने के अभिप्राय से केंद्र ने विशेष श्रेणी के कार्यक्रमों, यथा भारतीय विद्या भवन, चेन्नै में राज्य की राजधानी कार्यक्रम, को शुरू किया है। इन कार्यक्रमों को प्रत्येक माह के प्रत्येक दूसरे और चौथे शनिवार को निर्धारित किया गया है।

### कार्यकलाप

#### पुदुचेरी में कवि भारतीदासन विजा 2010

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावुर और कला एवं संस्कृति, पुदुचेरी सरकार ने मिलकर कुम्बा कलाई अरंगम, पुदुचेरी में 29 अप्रैल, 2010 को कवि



भारतीदासन विजा का आयोजन किया। इस उत्सव की अध्यक्षता पुदुचेरी के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा की गई जिसमें माननीय कानून तथा श्रम मंत्री, पुदुचेरी भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हुए।

### कडाथनाडु महोत्सव

कडाथनाडु एक वार्षिक महोत्सव है जो प्रत्येक वर्ष विभिन्न गांवों में आयोजित किया जाता है। यह लोगों में अत्यंत लोकप्रिय हो चुका है। इस वर्ष दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर ने केरल में वडाकारा तथा नीलुम्बर में 14-22 मई, 2010 को इसका आयोजन किया। श्री मुल्लापल्ली रामाचन्द्रन, माननीय गृहमंत्री ने इस महोत्सव का उद्घाटन किया और लगभग 140 कलाकारों ने इस महोत्सव में भाग लिया। प्रतिदिन लगभग 3000 लोगों ने इस कार्यक्रम को देखा।

### ग्रीष्मकालीन उत्सव, तंजावुर

यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जिसे दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा 29.05.2010 से 04.06.2010 तक संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न भागों से आए 510 लोक कलाकारों ने भाग लिया और लगभग 100 स्थानीय कलाकारों ने भी भाग लिया। श्री एस.एस. पलानिमानिकम, माननीय केन्द्रीय वित्त मंत्री (राज्य) तथा माननीय आयकर मंत्री, तमिलनाडु ने जिला कलक्टर श्री षनमुगम, आईएस की उपस्थिति में इसका उद्घाटन किया। लगभग 10,000 लोगों ने इस कार्यक्रम को देखा।

### पुदुचेरी में नाट्य उत्सव 2010 की 22वीं वर्षगांठ

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र और कला एवं संस्कृति निदेशालय, पुदुचेरी के सहयोग से 04.06.2010 से 05.06.2010 को शिक्षक कला अकादमी द्वारा पुदुचेरी में 'नाट्य उत्सव 2010' का आयोजन किया गया। नाट्य उत्सव के दौरान नाट्य उत्सव तथा नाट्य मंचन का भी आयोजन किया गया। माननीय शिक्षा मंत्री श्री तिरु एम.ओ.एच.एफ. शाहजहां इस उत्सव में मुख्य अतिथि थे। स्थानीय विधायकों/गणमान्य व्यक्तियों ने इस महोत्सव को देखा। महोत्सव के दौरान नाटकों का मंचन किया गया और 121 कलाकारों ने इसमें भाग लिया।

### गांधी मंडबम, चेन्नई में गांधी जयंती समारोह

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने गांधी जी के जन्म दिन के उपलक्ष्य पर गांधी मंडबम, चेन्नई में 02.10.2010 को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का मंचन किया।

### मैसूर में दशहरा उत्सव

कर्नाटक सरकार ने मैसूर में 17 से 18 अक्टूबर, 2010 को "मैसूर दशहरा उत्सव" का आयोजन किया। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इसके साथ सहयोग किया और कथक, पूजाकुनीता, गोटीबुवा, प्रकाश नृत्य, बिहू नृत्य, छऊ नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लगभग 87 कलाकारों के साथ भाग लिया। विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक दलों के समागम से देश की जीवंत सांस्कृतिक धरोहर को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। समापन दिवस के कार्यक्रम में पैलेस से बन्नीमन टॉप तक एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। हजारों लोगों ने इस कार्यक्रम को देखा और आनन्द लिया।

### लोक तरंग – राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव 2010, नई दिल्ली

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और सभी सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों ने मिलकर नई दिल्ली के 7 विभिन्न स्थलों पर 04.10.2010 से 14.10.2010 तक 'लोक तरंग 2010' नामक राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव का आयोजन किया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 24 जनवरी, 2008 को हंसध्वनि ओपन एयर थिएटर, प्रगति मैदान के प्रेक्षागृह में इस समारोह का उद्घाटन किया। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर ने रंगारंग और जीवंत पारम्परिक कलाओं की प्रस्तुति दी जो इस प्रकार हैं :

- |                           |              |
|---------------------------|--------------|
| 1) थापाट्टम कोलट्टम नृत्य | तमिलनाडु     |
| 2) ढोल्लू कुनीता          | कर्नाटक      |
| 3) ओप्पना                 | केरल         |
| 4) मथुरी                  | आंध्र प्रदेश |
| 5) वीरा बथारा             | कर्नाटक      |
| 6) कथकली                  | केरल         |

- 7) करंगल और कवडी तमिलनाडु  
8) चुदमेलम केरल

### **नवरात्रि विजा, तंजावुर**

08 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2010 तक आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में नादस्वरम, भरतनाट्यम, वोकल, मोहिनीअट्टम, मैण्डोलिन, वीणा, कथक, वायलीन, बांसुरी, ओडीसी, तालवाद्य, कुचीपुडी, जलतरंगम, सैक्साफोन की प्रस्तुतियां दी गईं। सीनियर प्रिंस बाबाजी राजा बोनसाला ने इस उत्सव का उद्घाटन किया जिसमें श्री मनोहर, प्रशासनिक अधिकारी, दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर उपस्थित थे।

### **अट्टोलू ईडू (आईलैंड कार्निवाल) 2010**

यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जिसे दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

और लक्षद्वीप प्रशासन ने मिलकर आयोजित किया। यह उत्सव लक्षद्वीप द्वीपसमूह – मिनिक्कॉय, कालापानी, अमिनी, किल्टानम और कावारत्ती जैसे विभिन्न स्थानों में आयोजित किया गया। देशभर से आए लगभग 100 लोक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। श्री जे.के. दादू, आईएस, माननीय प्रशासक तथा अध्यक्ष, ने श्री बसंत कुमार, आईएस, कलेक्टर, सीडीसी तथा उपाध्यक्ष ललित कला अकादमी और डॉ० कोयम्माकोया, सचिव, ललित कला अकादमी, लक्षद्वीप की उपस्थिति में इसका उद्घाटन किया।

### **जनजातीय उत्सव 2011 (एनईसीपी), पेचीपराई, तमिलनाडु**

इस कार्यक्रम को पेचीपराई में दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र और सचिव, जनजातीय कल्याण सोसाइटी द्वारा 19-20.02.2011 को संयुक्त रूप से आयोजित किया। इस उत्सव में जनजातीय कलारूपों अर्थात् कोथारगल, थोडारगल और पानीयरगल का मंचन 62 से भी अधिक कलाकारों ने किया।

## पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत अपने मुख्यालय, सदस्य राज्यों तथा देश के अन्य क्षेत्रों में स्वयं द्वारा एवं दूसरों के साथ मिलकर शुरू किए कार्यक्रमों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। संस्कृति मंत्रालय द्वारा थियेटर कायाकल्पन स्कीम, राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, गुरु-शिष्य परम्परा, दस्तावेजीकरण, युवा प्रतिभा खोज एवं पूर्वोत्तर उत्सव के तहत प्रायोजित कार्यकलापों को पूरे जोश-खरोश के साथ आयोजित किया गया। पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (ईजेडसीसी), जिसमें असम, बिहार, झारखंड, मणिपुर, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह को शामिल किया गया है, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने के दृष्टिगत स्थापित किए गए ऐसे सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है।

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने “गुरु-शिष्य परम्परा” स्कीम के तहत श्रीजनी, शांतिनिकेतन में गुरुओं एवं शिष्यों द्वारा अंतिम मंच कार्यक्रमों का आयोजन किया। वर्तमान में निम्नलिखित कला रूपों को गुरु-शिष्य परम्परा स्कीम के अंतर्गत शामिल किया गया है :

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा वर्ष 2010-11 के दौरान आयोजित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण

3.6.4





| क्र.सं. | गुरु का नाम      | कला रूप              | राज्य        |
|---------|------------------|----------------------|--------------|
| 1.      | अर्जुन बोरबा     | कोरबा नृत्य          | झारखंड       |
| 2.      | सोमरा टिरकी      | दाता नृत्य           | झारखंड       |
| 3.      | कृष्णा तमंग      | बांसुरी वाद्य        | सिक्किम      |
| 4.      | किशोर थापा       | मादल वाद्य           | सिक्किम      |
| 5.      | राम कुमार मलिक   | धूपद धमार            | बिहार        |
| 6.      | सोना देवी        | गोदनागीत             | बिहार        |
| 7.      | कमला दास         | गाजिर पोट            | त्रिपुरा     |
| 8.      | सरन कुमार मोलसोम | मोलसोम नृत्य एवं गीत | त्रिपुरा     |
| 9.      | दीनबंधु शर्मा    | नांगेली गीत          | असम          |
| 10.     | मोनरंजन रॉय      | कठपुतली का खेल       | असम          |
| 11.     | लेटखोगीन         | गुओसेम-लिएमलेही      | मणिपुर       |
| 12.     | अखोम राशो सिंह   | कोन बनाना            | मणिपुर       |
| 13.     | दया नायक         | सिंह नृत्य           | उड़ीसा       |
| 14.     | अर्जुन साबर      | शौर्य नृत्य          | उड़ीसा       |
| 15.     | दीबाकर सोरेन     | संथाल नटुआ           | पश्चिम बंगाल |
| 16.     | तरण सिंह         | लाहनकरी              | पश्चिम बंगाल |

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने अपने सदस्य राज्यों से उनकी दो लुप्त हो रही कलाओं को नई गुरु-शिष्य परम्परा 2010-11 के लिए चुनने का अनुरोध किया था। निम्नलिखित राज्यों में निम्नानुसार अपने कला रूपों की सिफारिश की है :

| क्र.सं. | राज्य        | कला रूप                   | गुरु का नाम      |
|---------|--------------|---------------------------|------------------|
| 1.      | बिहार        | धूपद धमार                 | राम कुमार मलिक   |
| 2.      | बिहार        | गोदना गीत                 | सोना देवी        |
| 3.      | उड़ीसा       | सिंह नृत्य                | दया नायक         |
| 4.      | उड़ीसा       | शौर्य नृत्य               | अर्जुन साबर      |
| 5.      | सिक्किम      | बांसुरी वाद्य             | कृष्णा तमांग     |
| 6.      | सिक्किम      | मादल एवं तबला             | किशोर थापा       |
| 7.      | पश्चिम बंगाल | संथाली नटुआ               | दीबाकर सोरेन     |
| 8.      | पश्चिम बंगाल | लाहनकरी                   | तरण सिंह         |
| 9.      | मणिपुर       | गुओसेम-इहेमलई संगीत-वाद्य | लेटखोगीन         |
| 10.     | मणिपुर       | कोन (चटाई बनाना)          | अखोम रासो सिंह   |
| 11.     | असम          | नांगेली गीत               | दीनबंधु शर्मा    |
| 12.     | असम          | कठपुतली का खे             | मोनोरंजन रॉय     |
| 13.     | त्रिपुरा     | गाजिर पोट                 | कमला दास         |
| 14.     | त्रिपुरा     | मोलसोम नृत्य एवं गीत      | सरन कुमार मोलसोम |
| 15.     | झारखंड       | दाता नृत्य                | सोमरा टिर्की     |
| 16.     | झारखंड       | कोरबा नृत्य               | अर्जुन कोरबा     |

ईजेडसीसी ने आई एंड सीए विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से कोलकाता में विश्व नृत्य दिवस 2010 का आयोजन किया, जिसमें स्थानीय कलाकारों ने रंगारंग नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कोलकाता में शास्त्रीय संगीत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें महान उस्तादों ने अपना गायन प्रस्तुत किया। नाट्य मेला पश्चिम बंगाल का एक बड़ा सांस्कृतिक कार्यक्रम है, ईजेडसीसी पश्चिम बंगाल सरकार के साथ इस नाट्य उत्सव का एक भागीदार है। इस वर्ष इस नाट्य मेले में 110 नाट्य समूहों ने भाग लिया। युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करने तथा आम लोगों के लिए पेंटिंग्स, मूर्तियों को प्रस्तुत करने के लिए प्रत्येक वर्ष कोलकाता में चारुकला उत्सव का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस बार भी ईजेडसीसी इस उत्सव का सह-प्रायोजक था। तीस्ता-गंगा उत्सव उत्तरी बंगाल का एक बहुत ही महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उत्सव है। उत्तरी बंगाल के 6 जिलों में इस उत्सव का आयोजन किया जाता है जिसमें ईजेडसीसी ने जयदेव मेला, लालोन उत्सव को भी प्रायोजित किया जिनका आयोजन ग्रामीण क्षेत्र में किया गया था।

ऑक्टवे का आयोजन ईजेडसीसी द्वारा कोलकाता में किया गया था। ऑक्टवे में नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, असम, सिक्किम, त्रिपुरा एवं अरुणाचल प्रदेश के लोक-सांस्कृतिक समूहों ने भाग लिया।

मुख्यालय के आईकतन ऑडिटोरियम में प्रतिभा उत्सव का आयोजन किया गया, जहां 9 युवा कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी।

इस वर्ष नृत्य-नाट्य उत्सव का भी आयोजन किया गया। टैगोर के विभिन्न नृत्य-नाट्य विभिन्न नृत्य रूप तथा शैली जैसे कथक, मणिपुरी, ओडिसी, गौडिया, भरतनाट्यम इत्यादि में प्रस्तुत किये गये।

इस वर्ष सृजनी, शिल्पग्राम एवं शांतिनिकेतन में 53 लोक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन लोक सांस्कृतिक समूहों का चयन भारत के विभिन्न राज्यों से किया गया था। ईजेडसीसी दिसम्बर, 2010 से नियमित तौर पर श्रीजनी, शिल्पग्राम में शाम के समय लोक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

खेल, कला एवं संस्कृति निदेशालय, अंडमान एवं निकोबार प्रशासन ने दिनांक 29 मार्च से 10 अप्रैल, 2010 को पोर्ट ब्लेयर में ओडिसी नृत्य कार्यशाला का आयोजन किया। श्रीमती श्योमिता दासगुप्ता, कोलकाता की प्रसिद्ध ओडिसी नृत्य कलाकार ने इस कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 50 भागीदारों ने भाग लिया। ईजेडसीसी ने खेल, कला एवं संस्कृति निदेशालय, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह प्रशासन के साथ सहयोग से दिनांक 25 और 26 नवम्बर, 2010 को पोर्ट ब्लेयर में रविन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती पर रविन्द्र संगीत संध्या तथा लोक कला एवं संस्कृति पर 2 दिवसीय डॉक्यूमेंटरी फिल्म उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव में कोलकाता के प्रसिद्ध रविन्द्र संगीत कलाकारों ने भाग लिया। ईजेडसीसी एवं निदेशक खेल, कला एवं संस्कृति, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह द्वारा दिनांक 29 अक्टूबर, 2010 को पोर्ट ब्लेयर में एक लोक गीत संध्या का आयोजन किया गया।

ईजेडसीसी ने निदेशक खेल, कला एवं संस्कृति, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह द्वारा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में आयोजित किए द्वीपसमूह पर्यटन उत्सव में भाग लिया। इसका शुभारंभ दिनांक 5 जनवरी, 2011 को पोर्ट ब्लेयर में ले. जनरल (सेवानिवृत्त) भूपिन्द्र सिंह, माननीय उप-राज्यपाल अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह द्वारा किया गया। इन शानदार उत्सव के अन्य केन्द्र दिगलीपुर, माया बन्देर, हैवलाक, नेल, रंगत इत्यादि थे। जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड एवं राजस्थान के तीन लोक नृत्य समूहों ने इस उत्सव में भाग लिया। इस उत्सव का समापन दिनांक 15 जनवरी, 2011 को हुआ।

#### वर्ष 2010-11 के दौरान आयोजित की गई कार्यशालाओं की सूची

| क्र. सं. | कार्यशालाएं                              | आयोजन/भागीदार संगठन         | स्थल    | दिनांक            |
|----------|------------------------------------------|-----------------------------|---------|-------------------|
| 1.       | स्कूली बच्चों हेतु अभिनय विकास कार्यशाला | सुकचर पंचम रिपोर्टरी थियेटर | कोलकाता | 9-14 जून, 2010    |
| 2.       | ओडिसी नृत्य कार्यशाला                    | श्रीमती संगीता दास          | कोलकाता | 18-24 अगस्त, 2010 |

| क्र. सं. | कार्यशालाएं                               | आयोजन/भागीदार संगठन                                                                                     | स्थल                 | दिनांक              |
|----------|-------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------|---------------------|
| 3.       | निमारी लोक पेंटिंग कार्यशाला              | श्रीमती पूर्णिमा चतुर्वेदी                                                                              | कोलकाता              | 27-31 दिसम्बर, 2010 |
| 4.       | “रबीन्द्र रचनई नारी” पर पेंटिंग कार्यशाला | विश्व-भारती, शांतिनिकेतन राजकीय कला एवं शिल्प कला कॉलेज, भारतीय कला कॉलेज, रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय | श्रीजनी, शांतिनिकेतन | 11-13 जनवरी, 2011   |

ईजेडसीसी ने अगरतला, त्रिपुरा में आयोजित रविन्द्र थियेटर उत्सव-2010 तथा तीसरे नाट्य उत्सव में भाग लिया। ईजेडसीसी ने त्रिपुरा के लालोन फकीर उत्सव, लोक थियेटर उत्सव एवं नुक्कड़-नाटक उत्सव में भी भाग लिया।

अप्रैल, 2010 में बैशाखी उत्सव का आयोजन सिक्किम राज्य में किया गया तथा ईजेडसीसी ने भी इसमें भाग लिया। ईजेडसीसी ने दार्जिलिंग में आयोजित मेघालय मेला और मेगा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी भाग लिया, जहां काफी संख्या में जनजातीय सांस्कृतिक समूहों ने इन कार्यक्रमों का मंचन किया।

ईजेडसीसी ने जनवरी, 2011 में धेमाजी उत्सव समिति के सहयोग से धेमाजी, असम में धेमाजी उत्सव का आयोजन किया। डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से डिब्रूगढ़, असम में एक तीन दिवसीय उत्सव का आयोजन किया गया। जनवरी, 2011 में ईजेडसीसी तथा सांस्कृतिक कार्य विभाग, द्वारा असम के संगीत का मूल्यांकन विषय पर एक 10 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ईजेडसीसी द्वारा सितम्बर, 2010 में कोलकाता में पारम्परिक थियेटर उत्सव (लोकनाट्य उत्सव) का आयोजन किया गया। नाटक प्रस्तुत करने से पहले उस विशिष्ट नाटक के बारे में व्याख्यान का भी आयोजन किया गया था। इस उत्सव में असम, त्रिपुरा, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल के लोक नाट्य समूहों ने भाग लिया।

थियेटर नवीकरण स्कीम के अंतर्गत, ईजेडसीसी ने कोलकाता एवं इसके आस-पास के स्थलों पर 35 नाटक शो का आयोजन किया।

## अन्य कार्यक्रम

### उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

राष्ट्रीय शिल्प मेला-2010, इलाहाबाद में दिनांक 24 एवं 25 दिसम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय रैबेन्से नृत्य समूह ने भाग लिया।

प्रकृति-2011, नई दिल्ली में दिनांक 17 फरवरी, 2011 को सुबह 8 बजे 15 सदस्यीय संथाली नृत्य, 15 सदस्यीय बारदोशिखला नृत्य, 15 सदस्यीय शौरा नृत्य एवं 15 सदस्यीय तमांग सोलो नृत्य समूहों ने भाग लिया।

मारु उत्सव-2011, पूनम सिंह स्टेडियम जैसलमेर, राजस्थान में दिनांक 15 फरवरी, 2011 को सुबह 10 बजे 15 सदस्यीय बिहू नृत्य समूह ने भाग लिया।

### दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

कुत्तुरु उत्सव, कुत्तुरु, बेलागवी जिला में दिनांक 23 से 25 अक्टूबर, 2010 को 20 सदस्यीय गोतीपुआ नृत्य समूह ने भाग लिया।

ओरेंज सिटी क्राफ्ट मेला एवं लोक नृत्य उत्सव, नागपुर में दिनांक 7 से 11 जनवरी, 2011 को 15 सदस्यीय सम्बलपुरी नृत्य तथा 15 सदस्यीय पैका नृत्य समूह ने भाग लिया।

बिलासा महोत्सव, बिलासपुर में दिनांक 14 से 16 जनवरी, 2011 को 15 सदस्यीय बिहू नृत्य, असम के कलाकारों ने भाग लिया।

### पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

परम्परागत उत्सव – नरेली पूर्णिमा, दमन एवं सिलवासा में क्रमशः दिनांक 23 और 24 अगस्त को 15 सदस्यीय सम्बलपुरी लोक नृत्य समूह ने दमन में तथा 25 अगस्त, 2010 को सिलवासा में भाग लिया। पुष्कर मेला, पुष्कर, अजमेर (राजस्थान) – दिनांक 19 एवं 20 नवम्बर, 2010 को 10 सदस्यों द्वारा शंख वादन।

दमन उत्सव, दमन – दिनांक 17 से 19 दिसम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय पुरुलिया छऊ नृत्य, 15 सदस्यीय गोतीपुआ नृत्य।

शौर्य उत्सव, मडगांव, गोवा – दिनांक 16 से 19 दिसम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय रैबेन्शे नृत्य, 15 सदस्यीय रूकमर नाच (मयूरभंज) नृत्य।

शिल्पग्राम उत्सव-2010, उदयपुर – दिनांक 21 से 30 दिसम्बर, 2010 को जूट पायदान, चिकन कढ़ाई, जूट हस्तशिल्प, लकड़ी के बने हुए खिलौने, टेराकोटा, पल्म लीफ, पट्टचित्र, पत्थर नक्काशी, पिपली, एपलीक का प्रदर्शन।

लोकोत्सव, कला अकादमी परिसर, पणजी, गोवा – दिनांक 4 से 13 जनवरी, 2011 को आयोजित इस उत्सव में 12 सदस्यीय गोतीपुआ नृत्य समूह एवं कंथा स्टिच, पटसन उत्पादों, हाथ की पेंटिंग वाली साड़ी, बुटिक साड़ी, सूखे फूल, एकबना, टेराकोटा, पल्म लीफ, पट्टचित्र, पत्थर नक्काशी, पिपली, एपलीक का प्रदर्शन किया गया।

चित्रांकन – दिनांक 9 से 15 मार्च, 2011 को पणजी, गोवा में समसामयिक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

### उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेला, बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) – दिनांक 20 से 23 मार्च, 2010 को 15 सदस्य बिहू नृत्य एवं दिनांक 24 से 26 मार्च, 2010 को सुंदर नगर में बिहू नृत्य।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा चंडीगढ़ में भारतीय सांस्कृतिक उल्लास समारोह – दिनांक 26 मार्च से 3 अप्रैल, 2010 को 15 सदस्य सम्बलपुरी नृत्य (4 डुलडुली बाजा सहित) समूह, 15 सदस्य पैका अखाड़ा ने भाग लिया।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व चंडीगढ़ में भारतीय सांस्कृतिक उल्लास समारोह का आयोजन – दिनांक 26 मार्च से 3 अप्रैल, 2010 तक मणिपुर का पुंग/ढोल चोलम – 20 सदस्यीय एवं मणिपुर का थांग – ता – 15 सदस्य, 15 सदस्य बीजू नृत्य समूह, 15 सदस्य घाटू नृत्य समूह ने भाग लिया।

मणिजर मेला, चम्बा (हिमाचल प्रदेश) – दिनांक 27 से 29 जुलाई, 2010 को बिहू नृत्य समूह ने भाग लिया।

फरीदकोट तथा इसके सदस्य राज्यों के अन्य स्थानों पर बाबा शेख फरीद आगम पर्व – दिनांक 20 से 26 सितम्बर, 2010 को 15 सदस्यों वाले सम्बलपुरी नृत्य समूह ने भाग लिया।

द्वितीय चंडीगढ़ राष्ट्रीय शिल्प मेला – 2010, कलाग्राम, चंडीगढ़ – दिनांक 3 व 4 नवम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय गोतीपुआ नृत्य समूह, 15 सदस्यीय सम्बलपुरी नृत्य समूह ने भाग लिया तथा उड़ीसा हैंडलूम उत्पादों, कंथा, जूट, कॉपर का प्रदर्शन किया गया।

चंडीगढ़ आनन्दोत्सव – 2010, चंडीगढ़ तथा अन्य सदस्य राज्यों में – दिनांक 26 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय रैबेन्शे नृत्य समूह ने भाग लिया।

कुरुक्षेत्र उत्सव – गीता जयंती समारोह-2010, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) – दिनांक 13 से 17 दिसम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय पुरुलिया छऊ नृत्य समूह, 15 सदस्यीय गोतीपुआ नृत्य समूह ने भाग लिया।

### दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

राष्ट्रीय लाइव स्टॉक प्रदर्शनी एवं खाद्य उत्सव- 2010, तिरुवनंतपुरम, केरल (एसजेडसीसी के अंतर्गत) – दिनांक 23 से 27 जुलाई, 2010 को 16 सदस्यीय बिहू एवं कुशान (समग्र) नृत्य समूह ने भाग लिया।

वल विल ओरी कलाई विज्ञा, कोली हिल्स – दिनांक 2 व 3 अगस्त, 2010 को 15 सदस्यीय संबलपुरी नृत्य समूह ने भाग लिया।

एत्तोलू ईदू आईलैंड उत्सव-2010, लक्षद्वीप – दिनांक 18 से 23 अक्टूबर, 2010 को 15 सदस्यीय पुरुलिया छऊ नृत्य समूह ने भाग लिया।

कन्याकुमारी में कुमारी आनन्दोत्सव (के2के) का आयोजन – दिनांक 20 से 22 दिसम्बर, 2010 को 15 सदस्यीय पुरुलिया छऊ नृत्य समूह ने भाग लिया।

ममल्लापुरम उत्सव – ममल्लापुरम में भारतीय नृत्य उत्सव का आयोजन किया गया – दिनांक 9 से 11 जनवरी, 2011 को 15 सदस्यीय पुरुलिया छऊ नृत्य समूह, 15 सदस्यीय गोतीपुआ नृत्य समूह ने भाग लिया।

चेन्नई में गणतंत्र दिवस-2011 का आयोजन किया गया – दिनांक 26 जनवरी, 2011 को आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में 20 सदस्यीय पुरुलिया छऊ नृत्य समूह ने भाग लिया।

ईजेडसीसी ने उड़ीसा में उड़ीसा सरकार के कुछ सरकारी विभागों तथा विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग से या प्रायोजन से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए।

इनमें से कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के नाम इस प्रकार हैं :

| क्र.सं. | कार्यक्रम का नाम                                         | स्थान         |
|---------|----------------------------------------------------------|---------------|
| 1.      | केनमास द्वारा 8वां राष्ट्रीय थियेटर उत्सव                | पाराद्वीप     |
| 2.      | संगीत सर्किल द्वारा बसंत उत्सव                           | राउरकेला      |
| 3.      | शताब्दीर कलाकार द्वारा 13वां बहु-भाषाई नाट्य उत्सव       | भुवनेश्वर     |
| 4.      | उत्कल युवा संस्कृति संघ द्वारा भारतीय थियेटर ओलम्पियाड   | कटक           |
| 5.      | के.एन. मेमोरियल प्रतिष्ठान द्वारा राष्ट्रीय खारवेल उत्सव | भुवनेश्वर     |
| 6.      | लार्ड लिंगराज उत्सव समिति द्वारा लिंगराज उत्सव           | भुवनेश्वर     |
| 7.      | कोणार्क नृत्य मंडप द्वारा कोणार्क नृत्य एवं संगीत उत्सव  | कोणार्क, पुरी |
| 8.      | परब (जनजातीय उत्सव)                                      | कोरापुट       |
| 9.      | बीच उत्सव                                                | पुरी          |

ईजेडसीसी ने जुलाई, 2010 में पटना एवं आरा, बिहार में आयोजित किए गए शौर्य महोत्सव में भाग लिया। बटोही द्वारा शहरासा, बिहार में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। ईजेडसीसी ने इस प्रदर्शनी का प्रायोजन किया।

ईजेडसीसी ने गुरु रबीन्द्र नाथ टैगोर को उनकी 150वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए “इलुस्ट्रेशन रबीन्द्रनाथ” विषय पर एक प्रदर्शनी सेट का भी आयोजन किया। इस प्रदर्शनी सेट में 150 फोटोग्राफ को शामिल किया गया। इस प्रदर्शनी सेट का प्रदर्शन कोलकाता एवं शांतिनिकेतन में किया गया।



## उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

नागालैंड सोसायटी पंजीकरण अधिनियम XXI 1860 (नागालैंड का प्रथम संशोधन) अधिनियम, 1969 के तहत पंजीकृत, पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना जून 1986 में की गई थी, जिसका मुख्यालय दीमापुर, नागालैंड में है। उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के अंतर्गत पूर्वोत्तर के 8 राज्य अर्थात् अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा राज्य हैं।

3.6.5

उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनईजेडसीसी) ने दिनांक 6 अक्टूबर, 1987 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री, श्री राजीव गांधी द्वारा उद्घाटन किए जाने के साथ ही औपचारिक रूप से कार्य करना शुरू किया। माननीय प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने दिनांक 17 जनवरी, 2006 को पंजबाडी में उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनईजेडसीसी) के अंतर्गत शिल्पग्राम (क्राफ्ट विलेज) का उद्घाटन किया। एनईजेडसीसी की स्थापना पूर्वोत्तर क्षेत्र की समृद्ध विरासत को परिरक्षित करने तथा प्रोत्साहित करने के मुख्य उद्देश्य के साथ की गई थी।

वर्ष 2010-2011 के दौरान, एनईजेडसीसी ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (एनसीईपी) के अंतर्गत 141 कार्यक्रमों का आयोजन/प्रायोजन किया तथा इनमें भाग लिया, महिला कार्यकलापों के अंतर्गत 3 कार्यक्रम, 2 सहयोगी कार्यक्रमों, 3 उमंग उत्सवों का आयोजन किया, सीमा क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत 6 कार्यक्रम, पूर्वोत्तर के परम्परागत त्यौहारों के तहत 5 कार्यक्रम, शिल्प ग्राम कार्यकलापों के अंतर्गत 7 कार्यक्रम, परम्परा पुनर्जीवन के तहत 1 कार्यक्रम, थियेटर कार्याकल्पन के अंतर्गत 8 कार्यक्रम तथा दस्तावेजीकरण स्कीम के अंतर्गत 7 दस्तावेजीकरण परियोजनाएं आयोजित की। एनईजेडसीसी ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 9 कार्यक्रमों में भाग लिया और एनईजेडसीसी के सदस्य राज्यों में 13 गुरु-शिष्य परम्परा केंद्र खोले गए।

### कार्यक्रम

#### “लोक तरंग” – 2010

“लोक तरंग-2010”, राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव का आयोजन राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान दिल्ली के विभिन्न स्थलों पर दिनांक 3 से 14 अक्टूबर, 2010 तक किया गया। लोक तरंग के एक हिस्से के रूप में दिनांक 12 अक्टूबर,



2010 को एनईजेडसीसी द्वारा जेडसीसी, दिल्ली हाट, नई दिल्ली के सहयोग से लोक जलवा “पूर्वोत्तर भारत के लोक नृत्य” का आयोजन किया गया।

राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान दिल्ली के विभिन्न स्थलों पर दिनांक 3 से 14 अक्टूबर, 2010 को आयोजित किए गए प्रतिष्ठित लोक तरंग उत्सव-2010 में पूर्वोत्तर के कुछ उत्कृष्ट परम्परागत लोक नृत्यों अर्थात् अरुणाचल प्रदेश से गोया सिडांगे, असम से बिहू, मणिपुर से डोल चोलोम, मेघालय से लेवातना, मिजोरम से चेरा नृत्य, सिक्किम से तमन सेलो नृत्य एवं त्रिपुरा से हाजागिरी नृत्य की प्रस्तुति के साथ भाग लिया। कुल मिलाकर इस कार्यक्रम में 118 कलाकारों ने भाग लिया।

### ऑक्टोव – पूर्वोत्तर का उत्सव-2010

पूर्वोत्तर क्षेत्र के संगीत, गीतों एवं नृत्यों के सांस्कृतिक उत्साह को दर्शाने के लिए औरंगाबाद, हैदराबाद एवं बेंगलुरु शहरों में दिनांक 18 नवम्बर से 5 दिसम्बर, 2010 के दौरान ऑक्टोव-2010 का आयोजन किया गया। इस वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, एनईजेडसीसी, दीमापुर, डब्ल्यूजेडसीसी, उदयपुर, एससीजेडसीसी, नागपुर, संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी, साहित्य अकादेमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, ट्राइफेड तथा संबंधित मेजबान राज्य सरकारों द्वारा किया गया था।



ऑक्टोव – 2010

ऑक्टोव 2010, पूर्वोत्तर का उत्सव का आयोजन 18 नवम्बर से 5 दिसम्बर, 2010 को बाबा साहेब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, तेलुगु ललित कला थोरानम, हैदराबाद तथा समसा ओपन थियेटर, रबीन्द्र कलाश्रेष्ठ, कन्नड भवन, बेंगलुरु में किया गया था। ऑक्टोव 2010 उत्सव में दो दिन लोक

नृत्यों की कोरियोग्राफ़्ड प्रस्तुति, पूर्वोत्तर के परम्परागत वेश-भूषा शो, समूह गान एवं लोक फ्यूजन संगीत को प्रस्तुत किया गया। इस उत्सव में क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं कलाओं को उत्साह के साथ प्रस्तुत किया गया तथा यह उत्सव बहुत सफल रहा। सदस्य राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा के कुल 341 कलाकारों ने भाग लिया।

### राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (एनसीईपी)

#### पूर्वोत्तर बसंतोत्सव – 2010

एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 5 से 9 मार्च, 2010 को एनईजेडसीसी परिसर, दीमापुर में पांच दिवसीय पूर्वोत्तर बसंतोत्सव-2010 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस उत्सव में पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा देश के अन्य भागों से लगभग 389 कलाकारों ने भाग लिया।

बसंतोत्सव, 2010 के प्रारंभिक तथा दूसरे दिन सभी आठ पूर्वोत्तर राज्यों तथा क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों की तरफ से कोरियोग्राफ़्ड लोक नृत्य प्रस्तुत किया गया। अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा के लोक नृत्य समूहों एवं एनसीजेडसीसी के झिझिया नृत्य, इलाहाबाद, ईजेडसीसी के रैबन्सी नृत्य तथा मयूरभंज छऊ नृत्य, कोलकाता, एसीजेडसीसी, नागपुर के कसकर नृत्य तथा बदाई नृत्य के कलाकारों ने एक साथ एक ही मंच पर संगीत एवं नृत्य के साथ इस प्रकार अभिव्यक्ति की कि दर्शकगण वास्तव में मंत्रमुग्ध हो गए।

पूर्वोत्तर क्षेत्र अर्थात् अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा के 36 (छत्तीस) जोड़ों ने अपनी परम्परागत पोशाकों में सज-धज कर तथा अपने समुदाय के आभूषणों के साथ तीसरे दिन आयोजित किए गए वेश-भूषा शो में भाग लिया। चौथे एवं पांचवे दिन मिजोरम की मिजो गायक-मंडली, नागालैंड की पटकाई कोरल गायक मंडली, मणिपुर के प्रसिद्ध लोक गायक रेबेन मशंगवा एवं शिलांग के गर्ल्स बैंड तथा अफलातस ने कोरल संगीत प्रेमियों का मनोरंजन किया। कुल मिलाकर इस उत्सव में पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा देश के अन्य भागों से 389 कलाकारों ने भाग लिया।

### संस्कृति के माध्यम से जेंडर प्रतिभा की अभिव्यक्ति

एनईजेडसीसी ने दिनांक 12 अप्रैल, 2010 को शामातोर, नागालैंड में एनसीईपी के अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस उत्सव में शामातोर एवं इसके आस-पास के गांवों के सात (7) सांस्कृतिक दलों सहित कुल 300 कलाकारों ने भाग लिया।

### सत्ररिय उत्सव

एनईजेडसीसी ने दिनांक 29 अप्रैल, 2010 को एनसीईपी के अंतर्गत रबीन्द्र भवन, गुवाहाटी में इस उत्सव का आयोजन किया जिसका उद्देश्य “उभरते हुए गायकों तथा अनुभवी लोगों को एक मंच प्रदान करके राज्य की विशिष्ट सत्रीय संस्कृति को प्रोत्साहित” करना था। इस उत्सव में कुल 76 कलाकारों ने भाग लिया।

### कोनदोंग लेरनबी हरौबा उत्सव

एनईजेडसीसी ने दिनांक 23 से 25 मई, 2010 को मोरेह, जिला चंदेल, मणिपुर में एनसीईपी के अंतर्गत इस उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव में मणिपुर के दो लोक नृत्य समूहों, शुमुंग लीला थियेटर ग्रुप एवं मार्शल आर्ट समूह ने भाग लिया। कुल मिलाकर 65 कलाकारों ने इसमें भाग लिया।

### टोकरीसाजी कार्यशाला-सह-प्रलेखन

एनईजेडसीसी ने खैमनीउंगन यूनियन के सहयोग से दिनांक 14 से 20 मई, 2010 को चोकलंगन गांव, जिला तुइनसंग, नागालैंड में एनसीईपी मुख्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत एक कार्यशाला का आयोजन किया। चोकलंगन गांव म्यंमार की सीमा के साथ लगते नागालैंड की पूर्वी सीमा पर स्थित है। यह गांव दो पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है जिसमें नागालैंड की खैमनीउंगन जनजाति निवास करती है। इस सात दिवसीय टोकरीसाजी कार्यशाला में 30 स्थानीय शिल्पियों ने भाग लिया।

### विश्व संगीत दिवस – 2010

एनईजेडसीसी ने 21 जून, 2010 को नेपाली साहित्य परिषद् भवन, गंगटोक, सिक्किम में विश्व संगीत दिवस के साथ ही इस कार्यक्रम का आयोजन किया। सुश्री अंजलि लेप्चा, सुश्री विमला प्रधान गणेश धांगेल, मिगमा लेप्चा, पालजोर लाचुंग, दीपेन मुंगेर, उत्तम प्रधान, जगदीश शर्मा, राहेन रासले ने समकालीन लोक गीत प्रस्तुत किए तथा भूटिया, लेप्चा एवं नेपाली समुदाय द्वारा समूह गान प्रस्तुत किया गया।

### मोह-मोल उत्सव

एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 20 से 28 जून, 2010 को राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत जिला छागलांग में नौ दिवसीय मोह-मोल उत्सव का आयोजन किया गया। मोह-मोल मुख्यतः तांगसा का एक कृषि से संबंधित उत्सव है, जो कृषि कार्यों के अंत या फसलों के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है। इस उत्सव को परम्परागत रंग-बिरंगे कपड़ों, आभूषणों, कला एवं शिल्प, जो पूर्व में तांगसा की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करते हैं, के प्रदर्शन के साथ मनाया जाता है।

### नोकमास सम्मेलन

एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 6 और 7 अगस्त, 2010 को गारो पहाड़ी की परम्परागत नोकमाशिप पर दो दिवसीय सेमिनार-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में नोकमा-शिप से संबंधित विभिन्न विषयों जैसे गारो पहाड़ियों में नोकमाशिप का विकास, आज की स्थिति के संदर्भ में नोकमा की भूमिका, कार्यप्रणाली तथा जिम्मेदारियां तथा आधुनिक प्रशासन एवं गारो पर्वतीय स्वायत्त परिषद् और राज्य सरकार के साथ उनके संबंधों पर विशेष ध्यान दिया गया।

इस सेमिनार के दौरान प्रो० मिल्टन एस. संगमा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर-कुलपति, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, तुरा परिसर, श्री के.एम. मोमीन, सेवानिवृत्त डी.पी.आई., मेघालय, श्रीमती बी.के. संगमा, सेवानिवृत्त निदेशक, डी.ई.आर.टी., मेघालय, प्रोफेसर कैरोलिन आर. मारक, सेवानिवृत्त अध्यक्ष, गारो विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, तुरा, डॉ० फेमलिन के. मारक, डॉ० जैकलिन आर. मारक, व्याख्याता, गारो विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, तुरा इत्यादि उपाय कुशल व्यक्ति के तौर पर उपस्थित थे। इस सेमिनार में कुल 110 नोकमास, जिनमें 17 महिला नोकमास भी शामिल हैं, ने भाग लिया।

### कवि सम्मेलन

एनईजेडसीसी ने दिनांक 20 अगस्त, 2010 को सामुदायिक केंद्र, गीजिंग, पश्चिम सिक्किम में एनसीईपी के तहत भाषा मान्यता दिवस के साथ-साथ इस कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सुविख्यात कवियों एवं लेखकों को उनके भाषाई विकास में योगदान के लिए सम्मानित किया गया जिनमें श्री मित्र देव शर्मा (कवि एवं लेखक), असम, श्री बिरेन्द्र सुब्बा (कवि), दार्जिलिंग, श्रीमती शानुमति राय (कवयित्री), कलिंगपोंग शामिल

थे। इस कार्यक्रम की अन्य मुख्य विशेषताओं में स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों एवं विद्यार्थियों द्वारा आयोजित लोक नृत्य और स्कूलों के बीच आयोजित की गई कहानी एवं कविता प्रतियोगिताएं शामिल हैं। इस कार्यक्रम में भूटिया, लेप्चा तथा नेपाली समुदायों के 108 लोक नृत्य कलाकारों एवं 23 कवियों तथा कवयित्रियों ने भाग लिया।

### लोक-कलाओं एवं नुक्कड नाटकों के माध्यम से समाज को सामाजिक बुराइयों से बचाने के लिए स्त्री-पुरुष समानता

एनईजेडसीसी ने दिनांक 25 और 26 अगस्त, 2010 को जीरो, लोअर सुबनसरी जिला, अरुणाचल प्रदेश में एनसीईपी के तहत इस कार्यक्रम का आयोजन किया। इसके उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन 25 अगस्त, 2010 की शाम को गांव बुल्ला, जीरो में किया गया, जिसमें काफी संख्या में विद्यार्थियों, युवाओं, पंचायत प्रतिनिधियों, स्थानीय अधिकारियों तथा ग्रामीणों ने भाग लिया, यह सांस्कृतिक कार्यक्रम तीन घंटे तक चला जिसमें स्त्री-पुरुष समानता पर एक विशेष नाटक का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 45 कलाकारों ने भाग लिया।

### मोबाइल कला प्रदर्शनी

एनईजेडसीसी ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (एनसीईपी) के तहत राज्यों एवं क्षेत्र के कलाकारों की प्रतिभा को दर्शाने, विशेषकर विद्यार्थियों को कला से संबंधित कार्यकलापों में भाग लेने हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया, इसका आयोजन दिनांक 25 और 26 अगस्त, 2010 को जोवाई, जैतिया पर्वतीय जिला में 2 और 3 सितम्बर, 2010 को नोंगपोह, री भोई जिला तथा 8 व 9 सितम्बर, 2010 को नोंगसटोइन, पश्चिमी खासी पर्वतीय जिला में किया गया।

### नुक्कड नाटकों, भीत्रिचित्र इत्यादि द्वारा सामाजिक बुराइयों पर जागरूकता कार्यक्रम

एनईजेडसीसी ने एनसीईपी के अंतर्गत असम के 8 स्थानों/वेन्यूज पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया, इसका आयोजन 2 से 15 सितम्बर, 2010 को मोंगलोदोई में, 8 से 15 सितम्बर, 2010 को दुबरी में, 13 से 14 सितम्बर, 2010 को बारपेटा में, 3 से 15 सितम्बर, 2010 को नौगांव में, 9 से 12 सितम्बर, 2010 को तेजपुर में, 12 से 14 सितम्बर, 2010 को जोरहाट में, 24 से 26 सितम्बर, 2010 को गुवाहाटी में तथा 14 से 19 सितम्बर, 2010 को सिल्चर, असम में किया गया। इस कार्यक्रम में कुल मिलाकर 120 कलाकारों ने भाग लिया।

### राज्य-स्तरीय पेंटिंग कार्यशाला एवं प्रदर्शनी

एनईजेडसीसी द्वारा एनसीईपी के तहत दिनांक 18 एवं 19 सितम्बर, 2010 को राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तेजू, जिला लोहित, अरुणाचल प्रदेश के ऑडिटोरियम में राज्य स्तरीय पेंटिंग कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के दौरान भाग लेने वालों ने कागज, कैनवास इत्यादि पर विविध संरचना कौशलों वाली लगभग 50 पेंटिंग्स को प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम में कुल 36 कलाकारों ने भाग लिया।

### पेंटिंग प्रदर्शनी-सह-कार्यशाला

एनईजेडसीसी द्वारा एनसीईपी के तहत दिनांक 23 से 25 सितम्बर, 2010 को गंगटोक में तीन दिवसीय पेंटिंग प्रदर्शनी-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में उभरते हुए कलाकारों के लिए श्री विजय मणि थुलुंग (गोल्ड मेडलिस्ट), श्री दीवाकर लामीचने, श्री पारसमणि राय तथा श्री धीरज प्रधान विशेषज्ञों/संसाधन व्यक्तियों के तौर पर उपस्थित थे। राजधानी शहर के विभिन्न स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों ने सामुहिक रूप से इस कार्यक्रम में भाग लिया क्योंकि इस प्रदर्शनी में स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों के बीच कला एवं पेंटिंग्स के प्रयोग तथा महत्व पर जोर दिया गया था। इस कार्यशाला में कुल 52 कलाकारों ने भाग लिया।

### लोक सांस्कृतिक उत्सव

इस केंद्र द्वारा 26 सितम्बर, 2010 को धुरबा ज्योति संस्कृत पाठशाला परिसर, सामदोंग, पूर्वी सिक्किम में लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुरचुंगा – (ज्यू हार्प) के मृत कला रूपों, कॉपर/स्टील से बने हुए राय समुदाय के परम्परागत स्ट्रिंग उपकरणों, बिनायो – लिम्बु समुदाय की परम्परागत बांस की बनी हुई बीन, मलसरी – दमाई समुदाय द्वारा नौमती बाजा बजाया जाने वाला एक संगीत उपकरण, को मुख्य रूप से दर्शाया गया। नौमती को सामान्य तौर पर शादी के समय बजाया जाता है, परंतु इसे उसी धुन एवं आसरी गीत में कई अन्य अवसरों पर भी बजाया जाता है। इस कार्यक्रम में कुल 134 कलाकारों ने भाग लिया।

### बाल उत्सव “स्प्रिंग बड्स”

एनईजेडसीसी ने कला एवं संस्कृति विभाग, नागालैंड सरकार के सहयोग से दिनांक 28 अक्टूबर, 2010 को डोन बोसको सोफेन्यू गांव में इस कार्यक्रम का आयोजन किया। इस उत्सव में खेती

से संबंधित लोक गीतों, सामूहिक गानों, ट्रायो लोक धुन, युगल धुन, फ्यूजन डांस, लड़ाकू नृत्य एवं लोक नृत्यों के अतिरिक्त रेगंमा नागा की आग से खेलने की प्रक्रिया, बांसुरी वादन, माऊथ आर्गन (हवा से बजाए जाने वाले उपकरण), राइस पाउंडिंग, स्थानीय खेलों, सूत-कताई, बांस पर चढ़ने, पूर्वजों की मानव-आखेट क्रिया को दर्शाने वाले नाटक, मुर्गे की बलि एवं सांस्कृतिक झलक को भी दर्शाया गया था। कृषि उपकरणों की प्रदर्शनी इस उत्सव की एक अन्य विशेषता है।

### लोक रंजन उत्सव

इस उत्सव का आयोजन एनईजेडसीसी द्वारा एनसीईपी के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्य विभाग, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से दिनांक 16 नवम्बर, 2010 को जोगेन्द्रनगर, अम्बासा, त्रिपुरा में किया गया था।

### हार्नबिल उत्सव – 2010

हार्नबिल उत्सव एक वार्षिक कार्यक्रम है जिसका आयोजन नागालैंड सरकार द्वारा 1 से 7 दिसम्बर, 2010 को किसामा नागा विरासत गांव, कोहिमा में किया गया था। इस उत्सव का उद्देश्य नागालैंड की समृद्ध विरासत को पुनर्जीवित तथा संरक्षित करना और इसकी परम्पराओं तथा कल्यात्मक नाटकों को प्रदर्शित करना है। सात दिवसीय सांस्कृतिक कल्यात्मक नाटकों की देश एवं विदेश से आए हुए पर्यटकों सहित हजारों लोगों ने खूब प्रशंसा की।

हार्नबिल उत्सव का दूसरा दिन अर्थात् 2 दिसम्बर, 2010 पूर्वोत्तर राज्यों की विभिन्न कलाओं की प्रस्तुति हेतु राज्य सरकार द्वारा एनईजेडसीसी को आबंटित किया गया था। इस केंद्र ने 2 दिसम्बर, 2010 को विरासत परिसर किसामा में एक शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें लोक नृत्यों, परम्परागत/देशी खेलों एवं सदस्य राज्यों, अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा से लोक संलयन शामिल था। इस उत्सव में पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न भागों से 116 कलाकारों ने भाग लिया।

### पूर्वोत्तर मोबाइल कला प्रदर्शनी

एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 6 से 11 दिसम्बर, 2010 को सेरछिप एवं हनाथियल, लंगलेई जिला, मिजोरम में राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत एक छह दिवसीय पूर्वोत्तर मोबाइल कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी

में नागालैंड एवं मिजोरम के 12 कलाकारों, आइजाल, सेरछिप, लंगलेई एवं चम्पाई जिलों के 23 पेंटर्स तथा 4 स्थानीय कलाकारों ने भाग लिया।

### मोबाइल कला प्रदर्शनी

एनईजेडसीसी द्वारा राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत एवं उसके सहयोग से दिनांक 11 से 22 दिसम्बर, 2010 को असम के विभिन्न स्थलों अर्थात् गुवाहाटी, दिसपुर, सोनापुर, जगी रोड एवं मोरीगांव में 12 दिसम्बर, 2010 को रोहा एवं नागांव तथा जकलापांडा, 13 दिसम्बर, 2010 को बोकाकहाट, गोलाघाट, जोरहाट एवं शिवसागर, 14 दिसम्बर, 2010 को डिब्रूगढ़, तिनसुकिया एवं जोरहाट, 15 एवं 16 दिसम्बर, 2010 को तेजपुर, 17 एवं 18 दिसम्बर, 2010 को बिश्वनाथ चाली एवं लखीमपुर, 19 एवं 21 दिसम्बर, 2010 को मोगोलदोई, नलबाड़ी, बारपेटा, बोंगाईगांव, धुब्री तथा 22 से 25 दिसम्बर, 2010 को गोलपाड़ा एवं गुवाहाटी में मोबाइल कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों की इस श्रृंखला का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण दिनांक 11 दिसम्बर, 2010 को सुबह 11 बजे श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में किया गया।

### द्वितीय पूर्वोत्तर कृषि एक्सपो-2010

द्वितीय पूर्वोत्तर कृषि एक्सपो-2010 का आयोजन नागालैंड सरकार द्वारा फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज (फिक्की), भारत सरकार, कृषि मंत्रालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (डीओएनईआर) एवं अन्य केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर दिनांक 15 से 19 दिसम्बर, 2010 को 4 माइल, दीमापुर, नागालैंड में किया गया।

19 दिसम्बर, 2010 को एनईजेडसीसी ने सभी सदस्य राज्यों अर्थात् अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा के सांस्कृतिक दलों की सांस्कृतिक कार्यक्रमों वाली प्रस्तुति के साथ “कलर्स ऑफ द नॉर्थ ईस्ट” थीम के अंतर्गत इसमें भाग लिया। इस उत्सव में कुल मिलाकर 128 कलाकारों ने भाग लिया।

### देयोकोटा जयंती-2010

महान श्री लक्ष्मी प्रसाद देयोकोटा के 103वें जन्म दिवस के अवसर पर, एनईजेडसीसी ने देयोकोटा जयंती 2010 – राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 29 दिसम्बर, 2010 को नेपाली साहित्य परिषद् भवन, गंगटोक में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक



कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के दौरान एक कवि सम्मेलन तथा संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में डॉ० राजेन्द्र भंडारी, श्री कालू सिंह राणा पहेली, श्री माधव घिमरी, श्री प्रवीण राय जुमेली एवं श्रीमती बीना श्री खरेल ने कविता-पाठ किया तथा संगीत कार्यक्रम में विख्यात गायक श्री गणेश धुंगेल, श्री दीपेन मागेर, श्रीमती अंजलि प्रधान एवं श्रीमती बिमला प्रधान ने देयोकोटा के अवसर पर अपने गीत प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त, स्थानीय कलाकारों द्वारा रंगारंग लोक नृत्य भी प्रस्तुत किया।

## महिला कार्यक्रम

### *“असमंजस में महिलाएं” – महिला कलाकारों द्वारा कार्यशाला-सह-नृक्कड नाटकों का निर्माण*

दिनांक 14 जुलाई से 2 अगस्त, 2010 तक मणिपुर राज्य के जिला मुख्यालयों पर एनईजेडसीसी द्वारा महिला कार्यकलापों (एनसीपी) के अंतर्गत महिला कलाकारों के लिए “असमंजस में महिलाएं” शीर्षक के तहत एक 20 दिवसीय थियेटर कार्यशाला सह निर्माण का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राज्य में महिलाओं से संबंधित मुद्दों को रेखांकित किया गया। महिला थियेटर के कलाकारों ने कालीमाई मंडप में महिलाओं के आक्रोश एवं दुख को दर्शाने के लिए वाई राजेन्द्र एवं बुद्ध छोंगथेम, मणिपुर द्वारा निर्देशित नाटक “मितमगी शाथेक” या “द डांस ऑफ द स्टेच्यू” का मंचन किया।

### *का पाहसिन्टिव*

इस कार्यक्रम का आयोजन एनईजेडसीसी द्वारा महिला कार्यकलापों (एनसीपी) के अंतर्गत दिनांक 26 अगस्त, 2010 को सेंट एंथोनी स्टेडियम, शिलांग में किया गया। इस कार्यक्रम में तीन नाटकों अर्थात् परसिब्ड डोमेस्टिक रोल ऑफ मैन एंड वूमन, रेजिंग ऑफ चिल्ड्रन एंड डोमेस्टिक वायलेंस का मंचन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रख्यात महिला संगीतकारों, कवियों ने भाग लिया।

### *मिजो समाज में महिलाओं की स्थिति*

इस कार्यक्रम का आयोजन एनईजेडसीसी द्वारा महिला कार्यकलापों के अंतर्गत दिनांक 25 सितम्बर, 2010 को वनपा हाल, आइजोल में किया गया था। “मिजो खावतलंग नूनाह

हेमेईचिएट डिनमन ए था तवाक” जिसका अर्थ है “मिजो समाज में महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी है” विषय पर वाद-विवाद का भी आयोजन किया गया। इस सेमिनार में आइजोल के 9 कॉलेजों तथा आइजोल के बाहर के 5 कॉलेजों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों तथा 600 कॉलेज विद्यार्थियों ने भाग लिया।

## सीमा क्षेत्र कार्यक्रम

### *“जोबावन कुतपुई”*

एनईजेडसीसी द्वारा कला एवं संस्कृति विभाग, मिजोरम सरकार के सहयोग से दिनांक 16 सितम्बर, 2010 को उत्तरी वनलाईफई में एक दिवसीय सीमा क्षेत्र कार्यक्रम का आयोजन किया। उत्तरी वनलाईफई म्यांमार की पूर्वी सीमा पर स्थित सेरछिप जिला, मिजोरम में है। इस उत्सव के दौरान, असम के सांस्कृतिक दल ने बिहू नृत्य प्रस्तुत किया, वाईएमए की 12 शाखाओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, मिजो महिला संघ (एमएचआईपी) ने पर लाम (फूल) नृत्य, मिजो वयस्क संघ (एमयूपी) ने सकेई लू आई (चीता शिकार उत्सव) तथा वाईएमए द्वारा छेरा एवं छेरहलन की प्रस्तुति की गई। इस कार्यक्रम में कुल 330 कलाकारों ने भाग लिया।

## अरुणाचल प्रदेश

एनईजेडसीसी ने दिनांक 13 व 14 नवम्बर, 2010 को फारगे गांव, मेछुका उप-मंडल, पश्चिम सियांग जिला, अरुणाचल प्रदेश में भारत-चीन सीमा पर कला एवं संस्कृति विभाग, अरुणाचल प्रदेश के सहयोग से सीमा क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत दो दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव में कुल 226 कलाकारों ने भाग लिया।

## त्रिपुरा

एनईजेडसीसी ने दिनांक 21 से 23 नवम्बर, 2010 को भारत-बांग्लादेश सीमा पर स्थित ब्रह्मकुंडों सिमना एवं खाराबिल कलाशहर, त्रिपुरा में तीन दिवसीय उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव में कुल 375 कलाकारों ने भाग लिया।

## मेघालय

एनईजेडसीसी ने दिनांक 4 दिसम्बर, 2010 को कला एवं संस्कृति विभाग, मेघालय सरकार के सहयोग से भारत-बांग्लादेश सीमा

पर स्थित दावकी, मेघालय में सीमा क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत एक दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में नौका दौड़/रोविंग, खासी समूह गान एवं नृत्य, जैंतिया नृत्य तथा गारो नृत्यों को शामिल किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 88 कलाकारों ने भाग लिया।

## परम्परागत उत्सव

### गारो पहाड़ियों के परम्परागत उत्सव

एनईजेडसीसी ने इस उत्सव का आयोजन परम्परागत उत्सव के अंतर्गत दिनांक 12 तथा 13 नवम्बर, 2010 को गारो हिल्स, मेघालय में किया। जिला ऑडिटोरियम, तुरा में आयोजित किए गए इस प्रथम सांस्कृतिक कार्यक्रम में गारो पर्वतीय जिले से विभिन्न गांवों के 12 सांस्कृतिक समूहों ने भाग लिया। इस उत्सव का समापन 13 नवम्बर, 2010 को शानदार 100 – ड्रम्स के साथ किया गया। इस उत्सव में कुल 427 कलाकारों ने भाग लिया।

### सकेवा उत्सव

एनईजेडसीसी ने इस उत्सव का आयोजन परम्परागत उत्सव के अंतर्गत दिनांक 29 मई, 2010 को सामुदायिक केंद्र, नामची, दक्षिण सिक्किम में किया। इस उत्सव में कुल 45 कलाकारों ने भाग लिया।

### बाराहिमाईजोंग – 2010

एनईजेडसीसी ने इस उत्सव का आयोजन परम्परागत उत्सव के अंतर्गत दिनांक 10 दिसम्बर, 2010 को कदमताम, पूर्वी सिक्किम में किया। इस उत्सव में कुल 40 कलाकारों ने भाग लिया। बाराहिमाईजोंग का आयोजन मंगेर पूर्णिमा के 5वें दिन किया जाता है। मंगेर भाषा में बाराहि का अर्थ है भगवान, मिन्नत या माई का अर्थ है पूजा या प्रार्थना तथा जोंगे का अर्थ है किला। बाराहिमाईजोंग का नामकरण मंगेर द्वारा अपने पूर्वजों या कुल देवतासल की पूजा के नाम पर रखा गया है। मंगेर उस नेपाली समुदाय की एक जाति है जो हिंदू धर्म को मानती है।

## थियेटर कायाकल्प

### बाल थियेटर कार्यशाला

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली ने एनईजेडसीसी के सहयोग से सभी पूर्वोत्तर राज्यों में दिनांक 6 से 20 जून, 2010 तक बाल थियेटर कार्यशाला की एक श्रृंखला का आयोजन किया। इस

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओं में विद्यार्थियों द्वारा स्टेज पर किए गए मंचन शामिल हैं। इस कार्यशाला में प्रत्येक सदस्य राज्य के 10–15 वर्ष की आयु वर्ग के 30 कलाकारों/विद्यार्थियों ने भाग लिया। निम्नलिखित राज्यों में कार्यशालाओं की श्रृंखला आयोजित की गई :

1. 6 मई से जून, 2010 तक बाल थियेटर कार्यशाला, बदरपुर, असम।
2. 9 मई से 5 जून, 2010 को कोलासिब, मिजोरम में थियेटर कार्यशाला।
3. 9 मई से 10 जून, 2010 को त्रिपुरा में थियेटर कार्यशाला।
4. 10 मई से 10 जून, 2010 को मंगकोलेम्बा, मोकोकचुंग जिला, नागालैंड में थियेटर कार्यशाला।
5. 14 मई से 14 जून, 2010 को शिलांग, मेघालय में थियेटर कार्यशाला।
6. 15 मई से 15 जून, 2010 को जीरो, अरुणाचल प्रदेश में एक थियेटर कार्यशाला।
7. 17 मई से 17 जून, 2010 को मगन, सिक्किम में थियेटर कार्यशाला।
8. 20 मई से 20 जून, 2010 को इम्फाल, मणिपुर में थियेटर कार्यशाला।

### थियेटर कार्यशाला-सह-निर्माण

7 जुलाई से 24 जुलाई, 2010 को 18 दिवसीय थियेटर कार्यशाला-सह-निर्माण का आयोजन किया गया। इस टीम ने दिनांक 23 व 24 जुलाई, 2010 को टाउन हाल, दीमापुर में “व्हाट इफ .....?शो का मंचन किया, जिसका निर्देशन उभरते हुए नए कलाकार श्री झोखोई चाखेसंग द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में कुल 17 कलाकारों ने भाग लिया।

### थियेटर कार्यशाला एवं थियेटर शो

एनईजेडसीसी ने दिनांक 17 जुलाई से 26 जुलाई, 2010 को थियेटर नवीकरण कार्यक्रम के तहत नेपाली साहित्य परिषद, गंगटोक, सिक्किम में इस कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें भाग लेने वाले को संसाधन/विशेषज्ञ व्यक्तियों श्री आर.डी. लेप्चा, एनएसडी-कैम्प निदेशक, श्री रणजीत सिंह-थियेटर

कलाकार, श्री हेमंत गिरी—थियेटर पर्सनेलिटी, श्री थामन नौवाग और श्री रुद्र पौड्याल एवं श्री चन्द्र दुलाई—नाटक लेखक, श्री फूर्बा लेप्चा—थियेटर कलाकार, श्री कालू सिंह रणपहेली—लेखक, श्री हेमलता गुरुंग, श्री दीपक धाकल एवं श्री तनका सुबेदी—कलाकार, और श्रीमती कला सुब्बा—कोरियोग्राफर एवं कलाकार ने प्रशिक्षण प्रदान किया। इस कार्यशाला के अंतिम दिन कॉलेज ऑडिटोरियम, गंगटोक में “किरायाको मान्चे” का मंचन किया। एक सप्ताह तक चलने वाली इस कार्यशाला में कुल 30 कलाकारों ने भाग लिया।

### लोक कथाओं पर थियेटर उत्सव

इस उत्सव का आयोजन एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 19 अगस्त, 2010 को वनप्पा हाल, आइजोल, मिजोरम में थियेटर नवीकरण के अंतर्गत किया गया था। इस अवसर पर अपर रिपब्लिक, मणिपुर के थानलाई लेमछांग पॉल की एक लोक कथा “छांगवंगी लेह सांगखारा” का मंचन भी किया गया। पीपल्स आर्ट्स एंड ड्रामेटिक एसोसिएशन, मणिपुर के 21 कलाकारों ने “मावा खोरी चिनाई” का भी मंचन किया जिसमें मनुष्यों एवं जानवरों के जीवन का चित्रण किया गया है तथा इसमें मनुष्य की श्रेष्ठता को भी दर्शाया गया है। “लिआननूना लेह लंगथंगी”— मिजो रोमान्स को दर्शाने वाला एक नाटक, का मंचन मिजो ड्रामा एवं फिल्म संगठन द्वारा किया गया था। इस उत्सव में कुल 42 कलाकारों ने भाग लिया।

### नुकड़ नाटक – “एक्टर्स ऑफ द इलेवंथ हावर”

इस कार्यक्रम का आयोजन एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 4 सितम्बर, 2010 को डोन बोस्को स्क्वेयर, शिलांग में थियेटर नवीकरण के अंतर्गत किया गया था। इस नाटक का समापन खासी भाषा में किया गया था। कलाकारों ने विभिन्न अभिव्यक्तियों क्रोध, खुशी, डर, प्यार एवं उदासी के माध्यम से शो को प्रस्तुत किया।

### उमंग कार्यक्रम

#### शारीरिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों के लिए कला एवं शिल्प कार्यशाला

एनईजेडसीसी ने राज्य केंद्रीय पुस्तकालय परिसर, शिलांग, मेघालय में दिनांक 18 अगस्त से 20 अगस्त, 2010 को उमंग उत्सव के अंतर्गत इस कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कुल 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

### उमंग उत्सव

एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 12 से 14 अक्टूबर, 2010 को बहुउद्देशीय सांस्कृतिक परिसर, बेरा तलांग, आइजोल में राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत इस तीन दिवसीय उत्सव का आयोजन किया गया। गिलीड स्पेशल स्कूल, आइजोल, मोरियाह ब्लाइंड स्कूल, लुआंगमुआल, शैलाम स्पेशल स्कूल, सरछिप, एससीईआरटी, आइजोल, एमएचआईपी स्पेशल स्कूल, लुंगलेई, स्पेशल ब्लाइंड स्कूल, दुर्तलंग, इंटिग्रेटेड ब्लाइंड स्कूल, कोलासिब एवं रोईलंग व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, शिलांग, मेघालय के कुल 62 विविध – प्रतिभावान विद्यार्थियों ने इस उत्सव में भाग लिया।

### शिल्पग्राम कार्यक्रम

#### बाल प्रतिभा शो प्रतियोगिता

दिनांक 27 जुलाई, 2010 को शिल्पग्राम, गुवाहाटी में एक बाल प्रतिभा शो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के विषयों में लोक समूह नृत्य, लोक एकल नृत्य, एकांकी एवं कला (पेंटिंग) को शामिल किया गया था। प्रत्येक उच्चतर माध्यमिक स्कूल, गुवाहाटी से 38 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता के प्रत्येक विषय में भाग लिया।

#### कोरियोग्राफी ड्रामा शो

दिनांक 17 जून, 2010 को शिल्पग्राम, गुवाहाटी में एक कोरियोग्राफी डांस ड्रामा “स्वर्गरोहण” का आयोजन किया गया था। “स्वर्गरोहण” नाटक का कथानक एक ऐसे मुद्दे को न्यायोचित ठहराना जो एक बड़ी बाधा है, व्यक्तिगत जीवन में डिप्रेशन की ओजोन परत तथा मानवीयता के सार की समाप्ति के बीच समानांतर रेखा खींचने पर आधारित है। इस शो में ग्रीन म्यूजिक एवं थियेटर क्लब, नलबाड़ी जिला, असम का एक सामाजिक-सांस्कृतिक एवं थियेटर संगठन, के कुल 20 सदस्यों ने भाग लिया।

### बसंतोत्सव

एनईजेडसीसी द्वारा दिनांक 6 अप्रैल, 2010 को शिल्पग्राम, गुवाहाटी में शिल्पग्राम कार्यकलापों के अंतर्गत एक दिवसीय बसंतोत्सव का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में असम सांस्कृतिक सोसायटी, एक पारम्परिक लोक नृत्य एवं फ्यूजन संगीत समूह के साथ क्रिएटीव डांस परफोर्मेंस, नटराज गोष्ठी, गुवाहाटी, असम के कलाकारों ने भाग लिया। दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाला रॉक/फ्यूजन बैंड्स, ल्यूसिड रिसेस तथा संडे मारनिंग,

गुवाहाटी से था। इस उत्सव में कुल 32 कलाकारों ने भाग लिया।

### लोकसाहित्य एवं नृत्य थियेटर शो

दिनांक 13 अक्टूबर, 2010 को शिल्पग्राम गुवाहाटी में शिल्पग्राम कार्यकलापों के अंतर्गत एक दिवसीय लोकसाहित्य नृत्य ड्रामा का आयोजन किया गया। रिपाजिटरी फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स ऑफ मणिपुर (आरईपीएएम), इम्फाल के कलाकारों ने “केईआईआरएएके (लैंडर)” शीर्षक के अंतर्गत एक लोकसाहित्य नृत्य ड्रामा का मंचन किया। इसकी कहानी “मानव जीवन चक्र” कविता पर आधारित है जिसे श्री आर. रोमटेनकुमार सिंह, मणिपुर द्वारा लिखा गया है। इस शो में कुल 20 कलाकारों ने भाग लिया।

### गुरु शिष्य परम्परा केंद्र

इस केंद्र द्वारा सदस्य राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा में वर्ष 2010-11 के लिए 13 गुरु शिष्य केंद्र खोले गए हैं। प्रत्येक राज्य में नियुक्त किए गए गुरुओं, शिष्यों तथा संगतकारों की संख्या का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

| क्र.सं. | राज्य          | गुरुओं की संख्या | संगतकारों की संख्या | शिष्यों की संख्या |
|---------|----------------|------------------|---------------------|-------------------|
| 1       | अरुणाचल प्रदेश | 01               | 01                  | 04                |
| 2       | असम            | 02               | 02                  | 08                |
| 3       | मेघालय         | 02               | 02                  | 08                |
| 4       | मिजोरम         | 02               | 02                  | 08                |
| 5       | नागालैंड       | 03               | 03                  | 12                |
| 6       | सिक्किम        | 01               | 01                  | 04                |
| 7       | त्रिपुरा       | 02               | 02                  | 08                |
|         | <b>कुल</b>     | <b>13</b>        | <b>13</b>           | <b>52</b>         |

### परम्परा पुनरुद्धार

एनईजेडसीसी ने रेवबेन मशांगव, मणिपुर के जाने माने लोक संलयन कलाकार के जीवन एवं गीतों पर एक प्रलेखन फिल्म के कार्य को शुरू किया है। इस प्रलेखन फिल्म का निर्देशन श्री ओइनम दोरेन, मणिपुर द्वारा किया गया है तथा इस फिल्म

की अवधि 90 मिनट है। एनईजेडसीसी ने इस परियोजना का प्रायोजन परम्परा पुनरुद्धार के अंतर्गत किया गया है।

### प्रलेखन

#### माइशोंग, जयंतिया हिल्स, मेघालय में राइज तुबेर वार्षिक बेहदेईनखलम उत्सव

एनईजेडसीसी द्वारा माइशोंग, जयंतिया हिल्स, मेघालय में राइज तुबेर वार्षिक बेहदेईनखलम उत्सव का प्रलेखन किया गया। यह ‘जयंतियों’ का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है तथा इसका आयोजन जुलाई माह में बिजाई का कार्य पूरा होने के बाद किया जाता है। ‘खलम’ का अर्थ है ‘प्लेग या पेस्टिलेंस’ तथा ‘बेहदेईन’ का अर्थ है लकड़ियों की सहायता से दूर हटाना। यह जयंतियों का सबसे लोकप्रिय तथा रंगारंग त्यौहार है जिसमें ढोल एवं बांसुरियों के संगीत पर केवल पुरुषों, जिसमें युवा एवं वृद्ध दोनों शामिल हैं, द्वारा नृत्य किया जाता है। प्रलेखन स्क्रिप्ट तथा अनुसंधान कार्य सुमेर सिंह सावियन, शिलांग, मेघालय द्वारा किया गया था।

#### “छाल बुनाई परम्परा” – नागालैंड की खाइमियुनगन जनजाति का परम्परागत बुनाई शिल्प

इस केंद्र ने “छाल बुनाई परम्परा” – नागालैंड की खाइमियुनगन जनजाति की परम्परागत बुनाई शिल्प, विषय पर एक पुस्तक का

प्रकाशन किया। यह पुस्तक डॉ० अनुगंला अय्यर एवं सुश्री दीतामूला वासा द्वारा लिखी गई है।

#### नागा लोक कला “पोट्टर – ‘अर्थ स्टोरीज’

एनईजेडसीसी ने एओ समुदाय की मृद्भाण्ड बनाने की नागा

लोक कला का प्रलेखन किया। “अर्थ स्टोरीज” नामक पुस्तक डॉ० जे. अयंगर लॉगकुमेर द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में ‘मृदभाण्ड प्रक्रिया’ एवं पोट्टर्स के बारे में बताया गया है।

## सहयोगी कार्यक्रम

### दक्षिण-पूर्व एशिया एवं उत्तर-पूर्व भारत के बीच अंतर-सांस्कृतिक संवाद

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली एवं एनईजेडसीसी, दीमापुर द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया तथा उत्तर-पूर्व भारत के बीच अंतर-सांस्कृतिक संवाद और उत्सव का आयोजन किया गया। उत्सवों की इस श्रृंखला की शुरुआत 21 व 22 फरवरी, 2010 को गुवाहाटी में की गई थी तथा इनका आयोजन 23 व 24 फरवरी, 2010 को शिलांग में, 25 व 26 फरवरी, 2010 को अगरतला में, 27 व 28 फरवरी, 2010 को इम्फाल में, 1 व 2 मार्च, 2010 को एनईजेडसीसी परिसर, दीमापुर में, 1 से 13 मार्च, 2010 को श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र, गुवाहाटी में किया गया तथा इनका शानदार समापन 17 से 20 मार्च, 2010 को नई दिल्ली में किया गया। नृत्य उत्सवों की श्रृंखला के बाद एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जहां भाग लेने वालों ने आपस में विचार-विमर्श किया तथा नृत्य एवं नृत्य थियेटर के माध्यम से समसामयिक विश्व को देखने के सामूहिक नए तौर-तरीकों का विकास किया।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के भागीदार कलाकार थे — कम्बोडिया, बाली-इंडोनेशिया, योग्यकर्ता-इंडोनेशिया एवं थाईलैंड के थे। अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम तथा त्रिपुरा के 7 लोक नृत्य समूहों तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा राज्यों में से प्रत्येक के 3 सदस्यों वाले 12 लोक संलयन कलाकारों ने इसमें भाग लिया। इसमें अतिरिक्त दिनांक 17 से 20 मार्च, 2010 को एनईजेडसीसी द्वारा 7 फूड स्टालों एवं 8 क्राफ्ट स्टालों का आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र परिसर, नई दिल्ली में किया गया था।

### बाल फिल्मोत्सव

पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने भारतीय बाल फिल्म सोसायटी (सीएफएसआई) के साथ सहयोग से दिनांक 26 फरवरी से 1 मार्च, 2010 तक आईएमसी हाल, दीमापुर में राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत ‘बाल फिल्मोत्सव 2010’ का आयोजन किया। इस उत्सव के दौरान कुल 13 फिल्में दिखाई गईं। ये इस प्रकार हैं: द ब्वाय एंड क्रोकोडाइल (अंग्रेजी), यूनिट हास्पिटल (अंग्रेजी), रीनो (अंग्रेजी), टोरा (ईएसटी के साथ असमी), ओआरी (ईएसटी के साथ मणिपुरी), द गोल (ईएसटी के साथ हिन्दी), रानू (ईएसटी के साथ बंगाली), कृष-तृष एवं बाल्टी ब्वाय (हिंदी एनिमेशन), द प्रिंस एंड क्राउन ऑफ स्टोन (अंग्रेजी एनिमेशन) तथा एनिमेटेड लघु कथाएं — नोकपोलिबा (अंग्रेजी), कठपुतली (हिंदी), मनपसंद (हिंदी) तथा द फ्रेण्ड (अंग्रेजी) को भी इस उत्सव में दिखाया गया। इस उत्सव में दीमापुर स्थित विभिन्न स्कूलों के स्कूली बच्चों ने भाग लिया।



## दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर उन सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है जिन्हें क्षेत्रीय संस्कृति की जड़ों को सुदृढ़ करने तथा राष्ट्रीय सामासिक संस्कृति को विकसित और समृद्ध करने के लिए स्थापित किया गया था।

यह केन्द्र जो नागपुर में 1986 में अस्तित्व में आया, विशेष रूप से संगीत, नाटक, ललित कला और साहित्य में लोक और जनजातीय कलाओं के संरक्षण, प्रचार और प्रसार के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रयत्नशील है। इसके अतिरिक्त लुप्त हो रहे कला रूपों को पुनर्जीवित करने, कुछ दुर्लभ लोक और जनजातीय कला रूपों का अनुसंधान और प्रलेखन करना भी इस केन्द्र के उद्देश्य हैं।

इस केन्द्र के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ क्षेत्र आते हैं।

यह केन्द्र संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन कार्य करता है। केन्द्र के कार्यों का प्रबंध दो शीर्ष निकाय करती हैं। शासी निकाय और कार्यकारी मंडल के साथ दो समितियां अर्थात् कार्यक्रम समिति और वित्त समिति, जो कार्यों में उनकी मदद करती हैं। शासी निकाय और कार्यकारी मंडल के अध्यक्ष महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल, हैं। शासी निकाय के सदस्यों में केन्द्र के प्रतिभागी राज्यों के संस्कृति मंत्री, केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के संस्कृति सचिव भी शामिल हैं। केन्द्र और राज्य अकादमियों के अध्यक्ष तथा घटक राज्यों के जाने माने सांस्कृतिक कर्मी भी शीर्ष निकायों के सम्मानित सदस्य होते हैं।

### समारोह

**जजवल्यादेव लोक महोत्सव** (02.04.2010 से 04.04.2010 तक), जंजीगर

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर ने शास्त्रीय संगीत, रंगमंच, जनजातीय और लोक कलाओं के क्षेत्र में प्रायोजित समूहों तथा कलाकारों के महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए और भाग लेने वाले सदस्य राज्यों के साथ समन्वय किया तथा संस्कृति के प्रोत्साहन में शामिल गैर-सरकारी संगठनों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार के साथ समन्वय करते हुए चंपा के जंजीगर स्थान पर जजवल्यादेव लोक महोत्सव का आयोजन किया। इसके आयोजन का मुख्य उद्देश्य इस उत्सव के दौरान लोक और जनजातीय कला को प्रोत्साहित करना था।



**विश्व नृत्य दिवस** (29.04.2010 से 30.04.2010 तक), नागपुर

विश्व नृत्य दिवस का आयोजन स्पिक मैके के सहयोग से किया जिसमें भरतनाट्यम और ओडिसी नृत्य के बाद नागपुर में दोनों ही विधाओं में एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। यह प्रस्तुति प्रतिष्ठित कलाकारों के अभिनय और अकादमिक उत्कृष्टता का बेजोड़ संगम थी।

**मालवा उत्सव** (07.05.2010 से 09.05.2010 तक), इंदौर

क्षेत्रीय उत्सवों को प्रोत्साहित करते हुए इस केंद्र ने “मालवा उत्सव”, इंदौर, मध्य प्रदेश में तीन समूहों की भागीदारी के साथ ही वित्तीय सहायता भी प्रदान की। लगभग दो लाख कला प्रेमियों ने इस सांस्कृतिक प्रस्तुति का लुत्फ उठाया।

**रबीन्द्रनाथ टैगोर का 150वां जन्मोत्सव** (14.05.2010 से 15.05.2010 तक), नागपुर

हम कवि कुलगुरु रबीन्द्र नाथ टैगोर को बड़े गर्व के साथ याद करते हैं और सौभाग्य से वर्ष 2010 उनका 150वां जन्म दिवस है, इस शुभ घड़ी पर इस केंद्र ने निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन, नागपुर के साथ एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम की योजना बनाई जिसमें नागपुर, महाराष्ट्र में 150वें जन्मोत्सव के लिए शांतिनिकेतन तथा रबीन्द्र संगीत के नृत्य नाटक की प्रस्तुति के साथ ही अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

**मल्टी मीडिया कार्यशाला** पूर्वोत्तर क्षेत्र के कलाकारों द्वारा (31.05.2010 से 09.06.2010 तक), अमरावती

पूर्वोत्तर क्षेत्र के कलाकार और शिल्पी प्रोत्साहन केंद्र ने अमरावती, महाराष्ट्र में एक मल्टीमीडिया कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें विचार प्रक्रिया तथा तकनीक के विकास के लिए उनके बीच विशिष्ट विचार-विमर्श हेतु पूर्वोत्तर क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों के कलाकारों को भी शामिल किया गया।

**थियेटर और विविध कला कार्यशाला** (24.06.2010 से 04.07.2010 तक), नागपुर

इस केंद्र ने आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में रंगमंच और विविध कला रूपों को प्रोत्साहित करते हुए 10 विधाओं में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए संसाधन व्यक्ति भी प्रदान किए हैं। नागपुर के बाहरी इलाके में स्थित अविकसित क्षेत्रों में सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के एक सेतु के रूप में इस प्रयास की काफी प्रशंसा की

गई। इस कार्यशाला में वंचित वर्गों के लगभग 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

**पण्डित जितेन्द्र अभिशेखी संगीत समारोह** (26.06.2010 से 27.06.2010 तक), भोपाल

पण्डित जितेन्द्र अभिशेखी को श्रद्धांजलि के रूप में आयोजित नियमित संगीत को काफी प्रसिद्धि मिली तथा राष्ट्रीय मानव आवास और पर्यावरण केंद्र के सहयोग से भोपाल में एक सफल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भविष्य में इस उत्सव को इस केंद्र के इतिहास में एक महान संगीत उत्सव के तौर पर याद किया जाएगा। इसमें भाग लेने वाले कलाकारों ने पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपनी प्रस्तुति दी तथा पण्डित जितेन्द्र अभिशेखी संगीत समारोह को शानदार रूप से सफल बनाया।

**साधना महोत्सव** (29.06.2010), रायपुर

इस केंद्र का एक मुख्य उद्देश्य युवा उभरते हुए कलाकारों और कला प्रेमियों में शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहित करना है और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा साधना महोत्सव, संगीत महोत्सव के रूप में एक नियमित फीचर का आयोजन रायपुर में किया गया जिसमें 2 शास्त्रीय, 2 वाद्य तथा 2 नृत्य कलाकारों के साथ उनके 14 सहभागियों ने भाग लिया।

**सफर मुक्ताकाश** (प्रत्येक माह के चौथे शनिवार को)

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार ने अपने प्रयासों को बल प्रदान करने के लिए नियमित मासिक थियेटर कार्यक्रम ‘सफर मुक्ताकाश’ शुरू किया है तथा इस केंद्र ने पिछले एक वर्ष में प्रत्येक महीने रचनात्मक नाटकों का प्रदर्शन किया है।

**पावस प्रसंग** (26.07.2010 से 27.07.2010 तक), रायपुर

युवा शास्त्रीय गायन, वाद्य तथा नृत्य कलाकारों को प्रोत्साहित करते हुए पावस प्रसंग, संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा समन्वित किया गया दूसरा कार्यक्रम था। रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित किए गए इस कार्यक्रम के दौरान पांच मुख्य कलाकारों के साथ उनके 12 सहभागियों ने भी भाग लिया।

**डॉ० वसंतराव देशपाण्डे स्मृति संगीत समारोह** (30.07.2010 से 1.8.2010 तक), नागपुर

शास्त्रीय गायन, वाद्य और नृत्य विधाओं में युवा उभरते हुए तथा स्थापित कलाकारों की प्रस्तुति के साथ डॉ० वसंतराव देशपाण्डे को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक



डा. वसंतराव देशपांडे स्मृति संगीत समारोह

तथा आंध्रप्रदेश के कलाकारों ने अभिभूत करने वाले प्रभाव के साथ शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति दी। वरिष्ठ गायक पण्डित मुकुल शिवपुत्र, जीवित किवदंती ने अपनी प्रस्तुति से इस उत्सव में चार चांद लगाए। डॉ० वसंतराव देशपांडे स्मृति संगीत समारोह राष्ट्रीय संगीत और नृत्य उत्सव बन चुका है जिसका आयोजन पिछले 19 वर्ष से नियमित रूप से किया जा रहा है।

**संगीतोत्सव** (07.08.2010 से 08.08.2010 तक), देवास

देवास, मध्य प्रदेश में संगीतोत्सव के रूप में संगीतमयी श्रद्धांजलि के साथ स्वर्गीय पंडित कुमार गंधर्व को याद किया गया जिसमें गायन तथा संगीतमयी प्रस्तुति में शास्त्रीय तथा लोक कलाकारों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के दौरान मंच पर पद्मभूषण श्रीमती तीजनबाई विशेष रूप से उपस्थित थीं।

**प्रतिबिंब**, थियेटर उत्सव (08.08.2010 से 11.08.2010 तक), देवास

प्रतिबिंब मराठी थियेटर उत्सव का आयोजन राष्ट्रीय कला प्रदर्शन केंद्र, मुंबई के सहयोग से किया गया तथा एनसीपीए थियेटर में लगातार 6 नाटकों का प्रदर्शन किया गया। कला प्रेमियों ने एनसीपीए में मराठी थियेटर के प्रोत्साहन हेतु किए गए प्रयासों की प्रशंसा की।

**पारंगत महोत्सव** (29.8.2010 से 30.8.2010 तक), रायपुर

पारंगत महोत्सव का आयोजन भोपाल (मध्य प्रदेश), विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) तथा कोलकाता (पश्चिम बंगाल) शास्त्रीय गायकों और नृत्य कलाकारों की भागीदारी के साथ किया गया, इनमें से चार कलाकारों ने छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में अपनी कला का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार के सहयोग से किया गया।

**गणेश प्रशिक्षण शिविर** (03.09.2010 से 09.09.2010) तक नागपुर

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर ने आम लोगों के बीच नष्ट न होने वाले प्लास्टर ऑफ पेरिस तथा जहरीले रंगों का प्रयोग न करने संबंधी जागरूकता पैदा करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल गणेश प्रतिमाएं तैयार करने हेतु एक विशिष्ट कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में युवा तथा उम्रदराज लोगों ने काफी संख्या में भाग लिया। उन्होंने मिट्टी से गणेश की मूर्तियां तैयार कीं। इस अवधारणा को मीडिया द्वारा भी सराहा गया तथा एक भागीदार को पर्यावरण और राष्ट्र को बचाने के लिए विचारशीलता तथा सृजनात्मकता दिखाने के लिए 5000 रुपए का पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

इस केंद्र ने एक प्रसंग के रूप में गणेश पर आधारित पेंटिंग और मूर्तिकला प्रदर्शनी का भी आयोजन किया तथा इस प्रदर्शनी में विभिन्न कार्यशालाओं के दौरान तैयार की गई पेंटिंग और मूर्तियों को बिक्री के लिए रखा गया। इस प्रदर्शनी के दौरान प्राप्त हुए राजस्व का उपयोग केंद्र की कायिक निधि को बढ़ाने के लिए किया जाएगा।

**अखिल भारतीय चित्रकला कार्यशाला** (19.09.2010 से 28.09.2010 तक) तुमकुर

अखिल भारतीय चित्रकला कार्यशाला का आयोजन कर्नाटक राज्य के तुमकुर जिले में किया गया जिसमें समसामयिक तथा परम्परागत विधाओं के 25 कलाकारों ने भाग लिया। यह कार्यशाला काफी सफल रही तथा ख्यातिप्राप्त कलात्मक कार्यों के संग्रह के साथ इस केंद्र की परिसम्पत्ति में बहुमूल्य आदान को जोड़ा गया।

**महाराष्ट्र राज्य सम्मेलन** (23.09.2010 से 25.09.2010 तक)  
नागपुर

नागपुर में आयोजित किए गए महाराष्ट्र राज्य अधिवेशन के दौरान एक प्रतिष्ठित संगीतकार की भागीदारी के साथ स्पिक मैके के सहयोग से शास्त्रीय संगीत और नृत्य को प्रोत्साहित किया गया।

**24वीं अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता और प्रदर्शनी**  
(02.10.2010)

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर ने अपने अर्थपूर्ण अस्तित्व के 24 वर्ष पूरे कर लिए हैं तथा इस अवसर पर दिनांक 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2010 तक 24वीं अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस केंद्र ने तीन विधाओं में 21 पुरस्कारों की घोषणा की जिनमें 2,55,000 रुपए के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

**स्थापना दिवस उत्सव** (4.10.2010 से 8.10.2010 तक), नागपुर

दिनांक 4 से 8 अक्टूबर, 2010 तक स्थापना दिवस उत्सव के दौरान दृश्य कला प्रदर्शनी के बाद जनजातीय लोक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

**बस्तर में दशहरा उत्सव** (10 से 13 अक्टूबर, 2010)

छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में आयोजित किए प्रसिद्ध दशहरा उत्सव के दौरान गोटीपुआ परम्परागत नर्तकों ने अपनी कला प्रदर्शित की तथा महाराष्ट्र की परम्परागत गायन कला भजन तथा खंजीरी गायन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

**कित्तूर में कित्तूर महोत्सव** (23 से 25 अक्टूबर, 2010)

इस केंद्र ने दिनांक 23 से 25 अक्टूबर तक कर्नाटक के कित्तूर में तीन दिन तक चले कित्तूर महोत्सव में भाग लिया जिसमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत दो लोक कलाकार समूहों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया।

**राज्योत्सव** (29 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2010 तक), रायपुर

इस केंद्र ने संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा दिनांक 29 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2010 तक आयोजित किए गए राज्योत्सव में राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत जनजातीय और लोक कलाकार समूहों की भागीदारी के साथ भाग लिया।

**बाल दिवस समारोह :-** (14 नवम्बर, 2010)

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर ने समूह गायन को प्रोत्साहित करने के लिए समूह गायन प्रतियोगिता आयोजित करने हेतु स्वरानन्द को वित्तीय सहायता प्रदान की। दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आयोजित किए गए बाल दिवस समारोह के अवसर पर चयनित समूह की अंतिम प्रस्तुति पर माननीय मेयर, नागपुर नगरपालिका परिषद् उपस्थित थे।

**पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर शताब्दी समारोह** (दिनांक 27 – 28 नवम्बर, 2010), मुम्बई

महान संगीतकार पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर शताब्दी समारोह का आयोजन मुम्बई में किया गया तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान उस्ताद को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आयोजित किए गए इस समारोह के लिए इस केंद्र ने वित्तीय सहायता प्रदान की।

**ऑक्टोव** (2 से 5 दिसम्बर, 2010), बेंगलुरु



ऑक्टोव – 2010

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के भागीदार राज्यों में पूर्वोत्तर का सांस्कृतिक उत्सव, ऑक्टोव-2010 आयोजित करने का कार्य इस केंद्र को सौंपा है। तदनुसार इस केंद्र ने इसके आयोजन के लिए हैदराबाद तथा बेंगलुरु शहरों को चुना। हैदराबाद में यह आयोजन नवम्बर माह में तथा बंगलौर में इसका आयोजन 2 से 5 दिसम्बर, 2010 को किया गया।



लोक और आदिवासी नृत्य, परम्परागत वेशभूषा, समूह वादन और समूह गायन के लगभग 400 कलाकारों ने समसा ओपन एयर थियेटर, बेंगलुरु, कर्नाटक में शानदार शो का आयोजन किया। अध्यक्ष, कर्नाटक जनपद अकादमी ने इस उत्सव का शुभारंभ किया तथा प्रोत्साहित करने के लिए किए गए प्रयासों के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और इस केंद्र की अत्यधिक प्रशंसा की।

**सवाई गंधर्व महोत्सव** (13 – 14 दिसम्बर, 2010), नागपुर

सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र सरकार ने सवाई गंधर्व महोत्सव का आयोजन किया। इस महोत्सव का आयोजन इस केंद्र के सहयोग से किया गया तथा केंद्र द्वारा वित्तीय सहायता भी प्रदान की गई थी। यह उत्सव दो दिन अर्थात् 13 व 14 दिसम्बर, 2010 को नागपुर में आयोजित किया गया और इसमें प्रसिद्ध कलाकारों ने भाग लिया।

**निमाड़ उत्सव** (29 से 31 दिसम्बर, 2010 तक), महेश्वर

आदिवासी लोक कला परिषद् तथा तुलसी अकादमी, भोपाल द्वारा महेश्वर, मध्य प्रदेश में दिनांक 29 से 31 दिसम्बर, 2010 तक निमाड़ उत्सव का आयोजन किया गया। यह केंद्र उक्त उत्सव के लिए दो समूहों को प्रायोजित कर रहा है।

**मालेगांव की यात्रा** (3 से 5 जनवरी, 2011 तक), मालेगांव

इस केंद्र के अस्तित्व को न्यायोचित ठहराने के लिए हमने 3 से 5 जनवरी, 2011 तक तीन दिवसीय मालेगांव की यात्रा सांस्कृतिक

शो का आयोजन किया जिसमें गुजरात, छत्तीसगढ़ तथा महाराष्ट्र से एक समूह के साथ कुल तीन समूहों ने भाग लिया। यह एक प्रायोगिक परियोजना थी तथा यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष यात्रा के दौरान एक शानदार जनजातीय और लोक नृत्य उत्सव का आयोजन किया जाएगा।

**ऑरेंज सिटी क्राफ्ट मेला और लोक नृत्य उत्सव** (7 से 17 जनवरी, 2011)

बहुप्रतीक्षित वार्षिक ऑरेंज सिटी क्राफ्ट मेला और लोक नृत्य का 18वां आयोजन नागपुर में किया गया जिसमें लगभग 300 कलाकारों तथा 200 शिल्पियों ने भाग लिया। पुलिस आयुक्त, नागपुर ने इस उत्सव का शुभारंभ किया तथा माननीय संरक्षक मंत्री, नागपुर ने इस उत्सव में पधारकर केंद्र के प्रयासों की सराहना की। आमंत्रित किए गए लोगों सहित लगभग 60,000 मेहमान इस उत्सव में उपस्थित थे। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इस उत्सव के आयोजन को सकारात्मक टिप्पणियों सहित इसको व्यापक कवरेज प्रदान की। शिल्पियों ने अपनी परम्परागत कलावस्तुओं की बिक्री पर संतुष्टि व्यक्त की।

**भारत रत्न स्वर्गीय पंडित भीमसेन जोशी** (30.1.2011), नागपुर

फिल्म प्रभाग द्वारा तैयार तथा श्री गुलजार द्वारा निर्देशित एक वृत्तचित्र के प्रदर्शन के साथ भारत रत्न स्वर्गीय पंडित भीमसेन जोशी को श्रद्धांजलि दी गई। यह एक उच्च स्तरीय फिल्म थी तथा इसने संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।



ऑरेंज सिटी क्राफ्ट मेला और लोक नृत्य उत्सव



## उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

3.6.7

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद की स्थापना सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत 1986 में एक समिति के रूप में की गई थी जिसका पंजीकृत कार्यालय इलाहाबाद में है। इस केंद्र की स्थापना के मुख्य उद्देश्यों में अन्य बातों के साथ-साथ इसके संघटक राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तराखंड की लोक-कलाओं एवं लुप्त होते जा रहे कला रूपों पर विशेष ध्यान देते हुए संगीत, नृत्य, रंगमंच, दृश्य-कला, साहित्यिक कार्यकलापों तथा शिल्प परम्पराओं जैसे वृहत विषयों को शामिल करके विभिन्न कला रूपों का संरक्षण, नवाचार, प्रोत्साहन एवं प्रचार करना है। अन्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों तथा राज्य एवं केंद्रीय कला अकादमियों के सहयोग से भारतीय संस्कृति की एक विशिष्ट पहचान “अनेकता में एकता” की भावना पर पुनः बल देने के दृष्टिगत हमारी समग्र संस्कृति को दिखाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करने के प्रयास किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, लोक-कला रूपों विशेषकर लुप्त होती जा रही परम्पराओं के प्रकाशन एवं प्रलेखन का कार्य भी किया जाता है। केंद्र के पास सांस्कृतिक कार्यकलापों में सहायता प्रदान करने के लिए अपना स्वयं का समुन्नत प्रेक्षागृह एवं कला-वीथिका तथा सुसज्जित शिल्प हाट है, जो ‘इलाहाबाद हाट’ के नाम से प्रसिद्ध है। यह हाट सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है, जहां शिल्प मेलों के दौरान शिल्प, मंच कला और परम्परागत व्यंजन एक ही स्थान पर उपलब्ध होते हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि आम लोग अपनी महान सांस्कृतिक विरासत जिस पर वे गर्व कर सकते हैं, के प्रति कितने सचेत हैं।



इस संस्थान की मुख्य उपलब्धि अपनी अवसंरचना को सुदृढ़ करना है ताकि इस संस्थान की गणना एक मॉडल सांस्कृतिक केंद्र के रूप में की जा सके। ‘इलाहाबाद हाट’ पूरे वर्ष के दौरान विषय आधारित शिल्प मेले आयोजित करने लगा है। इसने राज्य सरकारों, केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों तथा निजी संस्थाओं की सहायता से ‘उत्तराखंड पर्व’, ‘आदिशिल्प पर्व’, ‘राष्ट्रीय शिल्प मेला’, ‘गांधी शिल्प बाजार’ मेलों का आयोजन किया। भारतीय जनजातीय संघ (टीआरआईएफईडी) जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली ने एनसीजेडसीसी के परिसर में एक स्थायी बिक्री केंद्र खोला है। एनसीजेडसीसी के प्रकाशनों को प्रोत्साहित करने के लिए 28 अगस्त, 2008 को परिसर में एक पुस्तक विक्रय केंद्र का उद्घाटन किया गया था। वातानुकूलित प्रेक्षागृह में वर्ष भर नाट्य उत्सवों के साथ-साथ नाटकों का मंचन भी किया जाता है। इसी प्रकार दो मंजिला कला दीर्घा दृश्य कलाओं की प्रदर्शनियों को बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त यह केंद्र शिल्पकारों और कलाकारों को पूर्ण आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

इस केंद्र का मुख्यालय इलाहाबाद के सिविल लाइन्स के केंद्रीय क्षेत्र में स्थित है तथा 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस परिसर के रमणीय वातावरण में एक सुंदर कार्यालय भवन, दो बड़े लान/उद्यान, अंतर्मंच, मुक्ताकाशी मंच, शिल्पहाट, संगोष्ठी कक्ष और पुस्तकालय हैं।

- (i) **टेराकोटा उद्यान** – एनसीजेडसीसी परिसर के सामने स्थित टेराकोटा उद्यान का उद्घाटन 30 जून, 2001 को किया गया था। एनसीजेडसीसी परिसर के सामने स्थित इस उद्यान में माहपर्यंत चले शिविर में तैयार किए गए विभिन्न अंचलों के टेराकोटा शिल्प के सभी मुख्य रूपों को स्थायी प्रदर्शनी के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
- (ii) **मध्योत्तरी कला भवन** – एनसीजेडसीसी परिसर में स्थित सुसज्जित मध्योत्तरी कला भवन की सबसे ऊपरी मंजिल पर एक कार्यशाला हाल है जिसमें समय-समय पर संगोष्ठी, व्याख्यान और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। यहां दो अलग-अलग बड़ी डॉरमैटरी हैं—एक महिला कलाकारों के लिए और एक पुरुष कलाकारों के लिए, जिनमें प्रथम तल पर होने वाले प्रदर्शनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान यहां आने वाले कलाकार ठहरते हैं। भू-तल पर पुस्तकालय है।
- (iii) **मूर्ति शिल्प उद्यान** – एनसीजेडसीसी में स्थित मूर्ति शिल्प उद्यान में उदयपुर और गढ़ी, नई दिल्ली में आयोजित “लोक तथा पारम्परिक मूर्तिकार” शिविर में तैयार की गई मूर्तियों को स्थायी रूप से प्रदर्शित किया गया है।
- (iv) **पुस्तकालय** – केंद्र के कला भवन में अपना एक समृद्ध संदर्भ पुस्तकालय भी है जिसमें मंच और दृश्य कलाओं के विविध विषयों की लगभग 2207 पुस्तकें, जर्नल एवं पत्रिकाएं हैं। केंद्र में समय-समय पर आयोजित किए गए विभिन्न कला समारोहों के दौरान विविध विषयों पर तैयार किए गए 561 वीडियो, 290 आडियो कैसेट्स और 640 सीडी/वीसीडी भी हैं।
- (v) **प्रेक्षागृह** – केंद्र के इंडोर वातानुकूलित प्रेक्षागृह में 390 लोगों के बैठने की क्षमता है और इसका उपयोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं नाटकों के मंचन के लिए किया जाता है। अव्यवसायी रंगमंच को प्रोत्साहित करने की स्कीम के अंतर्गत, केंद्र द्वारा नाट्य दलों को रियायती दर पर प्रेक्षागृह उपलब्ध कराया जाता है। केंद्र का अपना एक सात सतहों वाला मुक्ताकाशी मंच भी है, जिसका उपयोग

बड़े मेलों व वृहद स्तर पर आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए किया जाता है।

- (vi) **कला वीथिका** – महात्मा गांधी कला वीथिका के नाम से प्रसिद्ध इस वीथिका का निर्माण 1997 में किया गया था। इस वीथिका में दो प्रदर्शनी हाल हैं जहां चित्रकारों के चित्रों तथा विविध कला रूपों को प्रदर्शित किया जाता है। इस क्षेत्र के तथा इस क्षेत्र से बाहर के स्थापित और अव्यवसायी रंगमंच कर्मियों को इस कला वीथिका का प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की जाती है। केंद्र की कला दीर्घा में लगभग 838 चित्रकलाओं (जनजातीय, लोक, पारम्परिक तथा समसामयिक) का अपना संग्रह है और इसके अलावा टेराकोटा, लकड़ी तथा पत्थर से निर्मित मूर्तियां एवं समय-समय पर आयोजित विभिन्न शिविरों में प्रदर्शित फोटोग्राफ हैं।
- (vii) **इलाहाबाद हाट** – केंद्र में इलाहाबाद हाट को शिल्प तथा सांस्कृतिक उत्सव आयोजित करने का वर्षों का अनुभव है। इसे नई दिल्ली में “दिल्ली हाट” के पैटर्न के आधार पर केंद्र के पूर्व शिल्प हाट परिसर में शुरू किया गया है। इसमें 48 स्थायी दुकानें, एक बहुउद्देशीय हाल, जनसुविधा ब्लॉक, मुक्ताकाश मंच तथा रमणीय भूदृश्य है। नियमित आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान यहां दस्तकारी और संस्कृति के प्रदर्शन तथा पारंपरिक पाक कला की भी व्यवस्था है। इस प्रकार के कार्यकलापों से सांस्कृतिक मंडलियों तथा दस्तकारों को एक मंच मिलता है। जिससे भारतीय संस्कृति के प्रमुख गुण “विविधता में एकता” की धारणा का समूचे परिदृश्य में भारतीय कला एवं संस्कृति के अनुसरण, प्रोन्नयन प्रचार-प्रसार किया जा सके और इससे इलाहाबाद में स्वदेशी एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा भी मिलता है।

## कार्यकलाप

### सुरांजली-उदीयमान कलाकारों को समर्पित एक शाम

इस कार्यक्रम का आयोजन उदीयमान कलाकारों को अपने कौशल एवं प्रतिभा दिखाने हेतु अवसर प्रदान करने के लिए एनसीजेडसीसी ऑडिटोरियम में प्रत्येक शनिवार को किया जाता है। इस माह, दिनांक 3 अप्रैल, 2010 को आकाश मालवीय, राजकुमार, चिंतामणि सरोज एवं कृति प्रकाश ने अपनी पार्टी के सदस्यों के साथ लोक नृत्य, लोक गीत तथा शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति दी। दिनांक 10

अप्रैल, 2010 को राकेश यादव एवं पार्टी ने सुगम संगीत प्रस्तुत किया; मल्लिका चटर्जी एवं पार्टी ने लोकगीत प्रस्तुत किए; राजमणि सिंह एवं पार्टी सदस्यों ने विरह गीत गाए तथा अपर्णा एवं नीतू सिंह ने कथक नृत्य प्रस्तुत किया। दिनांक 17 अप्रैल, 2010 की शाम भजन, लोक-गायन, शास्त्रीय एवं लोक नृत्य के नाम थी जिसमें 34 कलाकारों ने सुरजली कार्यक्रम में भाग लिया। दिनांक 24 अप्रैल, 2010 को अशोक कुमार एवं पार्टी को लोकगीतों, हरिलाल प्रजापति एवं पार्टी को बिरह गीत, प्रभा टंडन को बांसुरी वादन, चित्रा चौरसिया एवं पार्टी को सुगम संगीत तथा मीनाक्षी तिवारी एवं उनकी पार्टी को कथक नृत्य में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए आमंत्रित किया गया था। जुलाई, 2010 के दौरान आयोजित किए गए सुरजली कार्यक्रम के दौरान दिनांक 3 जुलाई, 2010 को श्रेया श्रीवास्तव को सुगम संगीत, अरविन्द कुमार को लोक गीतों, असगर एवं पार्टी को कव्वाली गायन तथा नमिता गुप्ता को कथक नृत्य के लिए आमंत्रित किया गया था। दिनांक 10 जुलाई, 2010 को रीमसा इरशाद को सुगम संगीत, रागिनी चन्द्रा को लोकगीत, कृति श्रीवास्तव को लोक नृत्य तथा सुहान कुमार को बिरह के लिए आमंत्रित किया गया, दिनांक 17 जुलाई, 2010 को दीप्ति चतुर्वेदी को सुगम संगीत, प्रीति मिश्रा को लोकगीत, गौरव कुमार को सितार वादन, कैलाश कुमार को लोकगीत के लिए आमंत्रित किया गया, दिनांक 24 जुलाई, 2010 को विवेक विशाल को शास्त्रीय गायन, अनुराधा श्रीवास्तव को लोकगीत, सीमा पटेल को कजरी गायन एवं वर्णिका श्रीवास्तव को कथक नृत्य के लिए आमंत्रित किया गया तथा दिनांक 31 जुलाई, 2010 को अनन्य अवस्थी और ललकेश्वर प्रसाद को लोक गीत, सत्य सिंह को कथक नृत्य एवं निराला सुभाष को बिरह गीत के लिए आमंत्रित किया गया था। अक्टूबर, 2010 में 75 लोक एवं शास्त्रीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच प्रदान किया गया। नवम्बर, 2010 में 82 कलाकारों को उनकी प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया था।

### बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यशाला

एनसीजेडसीसी बच्चों में सृजनात्मकता के विकास तथा युवा प्रतिभाओं को मंचन एवं दृश्य-कला हेतु प्रोत्साहित करने के लिए पिछले कई वर्षों से बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं का वार्षिक रूप से आयोजन करता रहा है। इस वर्ष एनसीजेडसीसी परिसर, इलाहाबाद में दिनांक 20 मई से 10 जून, 2010 तक बच्चों के लिए 20 दिवसीय निर्माण उन्मुखी ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 6 से 15 वर्ष आयु समूह के कुल 224 बच्चों ने अनेक कार्यशालाओं में भाग लिया।

### अखिल भारतीय ध्रुपद समारोह

दिनांक 12 व 13 जून, 2010 को भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना, बिहार में कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार के साथ सहयोग से अखिल भारतीय ध्रुपद समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के कार्यक्रमों का क्रम इस प्रकार था:

### थियेटर उत्सव

एनसीजेडसीसी प्रत्येक वर्ष **राष्ट्रीय थियेटर उत्सव** का आयोजन करता है जिसमें देशभर के विभिन्न थियेटर समूहों को आमंत्रित किया जाता है। उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान किया जाता है, जहां वे आपस में एक-दूसरे से स्थानीय थियेटर कलाकारों से तथा कला प्रेमियों से संवाद कर सकते हैं।

दिनांक 11 व 13 जून, 2010 को जवाहर कला केंद्र, जयपुर, राजस्थान में एक **थियेटर उत्सव** का आयोजन किया गया जिसमें, 1. अनुकृति नाट्य संस्था द्वारा "मोटेराम का सत्याग्रह" नाटक का मंचन किया गया, इसका निर्देशन आर.सी. पाठक (कानपुर) द्वारा किया गया था, 2. समन्वय नाट्य संस्था (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) द्वारा "राजा निर्वशीय" नाटक का मंचन किया गया, इसका निर्देशन सुषमा शर्मा (इलाहाबाद) द्वारा किया गया था, और 3. सप्तक नाट्य संस्था द्वारा "गंधे की बारात" नाटक का मंचन किया गया, जिसका निर्देशन विश्व दीपक तिरखा द्वारा किया गया था, को आमंत्रित किया गया था।

इसी क्रम में दिनांक 18 से 20 जून, 2010 को हरियाणा कला परिषद, बहु-कला सांस्कृतिक केंद्र, कुरुक्षेत्र में सूचना, लोक-संबंध एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा के साथ सहयोग से तीन-दिवसीय **'थियेटर उत्सव'** का आयोजन किया गया। इसमें निम्नलिखित नाटक दिखाए गए :-

1. "चंदू की चाची" प्रस्तुतकर्ता-नट सम्राट नाट्य संस्था, निर्देशक-श्याम कुमार, दिल्ली
2. "कोई बात चली" प्रस्तुतकर्ता-थियेटर समूह, निर्देशक-रामजी बाली
3. "मियां की जूती मियां का सर" प्रस्तुतकर्ता- अभिनव रंगमंडल, निर्देशक-शरद शर्मा

हरियाणा कला परिषद, कुरुक्षेत्र के सहयोग से एनसीजेडसीसी के ऑडिटोरियम में दिनांक 26 से 28 जुलाई, 2010 तक तीन-दिवसीय **हरियाणा थियेटर उत्सव** का आयोजन किया गया। श्री विरेन्द्र, कुरुक्षेत्र के 18 सदस्यीय थियेटर समूह द्वारा “जिस लाहौर नहीं देख्या” नाटक का मंचन किया गया, गुड़गांव के श्री महेश वशिष्ठ (9 सदस्य) द्वारा “बिन बाती के दीप” नाटक का मंचन किया गया तथा सोनीपत के श्री प्रकाश सांगी एवं उनके 12 सदस्यों द्वारा “ध्रुव का जन्म” नाटक प्रस्तुत किया गया।

### रचनात्मकोन्मुख थियेटर कार्यशाला

एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली एवं सूचना, लोक संबंध और सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 21 से 30 जून, 2010 को हरियाणा कला परिषद, बहु-कला सांस्कृतिक केंद्र, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में 10 दिवसीय रचनात्मकोन्मुख थियेटर कार्यशाला का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के 30 प्रतिभागियों को थियेटर के विविध पहलुओं के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए थियेटर विशेषज्ञ, बंसी कौल, नई दिल्ली, आसिफ अली, चंडीगढ़ तथा श्री टीकम जोशी, दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला के अंतिम दिन अर्थात् दिनांक 30 जून, 2010 को प्रेमचन्द की कहानियों नामतः सद्गति, दूध का दाम तथा शराब की दुकान पर आधारित नाटकों का मंचन किया गया।

### सुर संध्या

एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद के शासी निकाय एवं कार्यकारी बोर्ड की बैठकों के दौरान दिनांक 24 जून, 2010 को राज भवन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक कार्यक्रम को समर्पित एक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें पद्मश्री भजन सोपौरी (दिल्ली) को संतूर वादन के लिए, हरियाणा के फाग एवं घूमर लोक नृत्यों की प्रस्तुति के लिए लोक कलाकारों – शीशपाल एवं पार्टी (रोहतक, हरियाणा) को, राजस्थान के तेरहताल नृत्य की प्रस्तुति के लिए शंकर दास एवं पार्टी (उदयपुर, राजस्थान), धेदिया नृत्य के लिए कंचन सिंह एवं पार्टी इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) तथा कजरी गायन के लिए संगीता राय एवं पार्टी (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) को आमंत्रित किया गया था।

### सुर संगम

एनसीजेडसीसी परिसर का नामकरण ‘कला संगम’ किए जाने के अवसर पर एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद में दिनांक 25 जून, 2010

को पद्मभूषण छन्नूलाल मिश्र एवं पार्टी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ने कजरी, तुमरी एवं मेघ मल्हार की प्रस्तुति दी।

### धरती धोरा री – रेगिस्तान (राजस्थान) की एक स्वरलहरी

कार्यक्रम समिति की बैठक के दौरान दिनांक 20 व 21 जुलाई, 2010 को संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश के सहयोग से भोपाल में ‘**धरती धोरा री – रेगिस्तान (राजस्थान)** की एक स्वरलहरी’ शीर्षक के तहत दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लंगा तथा मगनिहार गायकी की प्रस्तुति के लिए राजस्थान के विभिन्न स्थानों से 48-लंगा तथा मगनिहार गायकों को आमंत्रित किया गया था। जैसाकि जीबी/ईबी तथा एनसीजेडसीसी की कार्यक्रम समिति द्वारा अनुमोदन किया गया है, इस सम्पूर्ण परियोजना का प्रलेखन डीवीडी के रूप में किया गया था।

### विशेष शनि बहार

दिनांक 31 जुलाई, 2010 को कला, संस्कृति एवं युवा कार्य विभाग, बिहार एवं एनसीजेडसीसी के संयुक्त तत्वावधान में पटना, बिहार में एक विशेष संध्या का आयोजन किया गया। पटना में आयोजित किए गए ‘**विशेष शनि बहार**’ कार्यक्रम के दौरान पंडित छानूलाल मिश्रा एवं पार्टी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश द्वारा शास्त्रीय रूप में कजरी एवं सुरजली के 9 अन्य कलाकारों ने लोक शैली में कजरी प्रस्तुत की।

### लोक तरंग – भारत का लोक नृत्य

दिल्ली में आयोजित किए गए राष्ट्रमंडल खेल 2010 के दौरान भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता एवं विरासत को प्रदर्शित करने के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद के दिशानिर्देशन में दिनांक 4 से 13 अक्टूबर, 2010 को विविध स्थलों – लाल किला, बाबा खड़ग सिंह मार्ग, राष्ट्रीय संग्रहालय, कुतुब मीनार, दिल्ली हाट, केंद्रीय पार्क, कनाट प्लेस पर लोक तरंग – राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान सीसीआरटी, नई दिल्ली में सप्तरंग-। तथा ।। का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रदर्शन के लिए देशभर से लगभग 300 लोक-कलाकारों को आमंत्रित किया गया था।

### यमुनोत्री से यमुना नगर तक (चरण-1)

संस्कृति विभाग, उत्तराखंड तथा ओएनजीसी के साथ सहयोग से दिनांक 21 अक्टूबर से 30 अक्टूबर, 2010 को यमुनोत्री, बारकोट, नैनबाग विकासनगर पौवटा साहिब एवं यमुनानगर में

यमुना यात्रा (चरण- I) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम श्रृंखला में पंडित विद्याधर मिश्रा (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) को भजन-गायन; नंद लाल भारती एवं पार्टी (चकराता, देहरादून) को हारूल, टांडी लोक नृत्य; हरविन्द्र सिंह एवं पार्टी (पटियाला, पंजाब) को गटका नृत्य एवं हरविन्द्र रामा एवं पार्टी (कुरुक्षेत्र, हरियाणा) को बम्ब लहरी की प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया था।

### यमुनोत्री से प्रयाग तक (चरण- I)

संस्कृति विभाग, उत्तराखंड एवं ओएनजीसी के सहयोग से दिनांक 24 अक्टूबर से 29 अक्टूबर, 2010 को यमुनोत्री, बरकोट, पावंटा साहिब तथा यमुनानगर में 'यमुना यात्रा' (चरण- I) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्याधर मिश्रा एवं पार्टी (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) ने भजन; हरमिन्द्र सिंह एवं पार्टी (पटियाला, पंजाब) ने गटका नृत्य; हरमिन्द्र सिंह राणा एवं पार्टी (कुरुक्षेत्र, हरियाणा) ने बम लहरी एवं कोराड़ा नृत्य तथा सोनल गरबा तथा महेन्द्र दक्ष जोशी एवं पार्टी (अहमदाबाद) ने गुजरात के गरबा तथा डांडिया लोक नृत्य प्रस्तुत किए।

### मत्स्य उत्सव

जिला प्रशासन अलवर, राजस्थान तथा जिला प्रशासन भिवानी, हरियाणा के सहयोग से दिनांक 15 अक्टूबर, 2010 को अलवर, राजस्थान में और दिनांक 16 अक्टूबर, 2010 को भिवानी, हरियाणा में दो-दिवसीय **मत्स्य उत्सव** का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 8 समूहों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया।

### राष्ट्रीय शिल्प मेला – 2010, 12 दिवसीय राष्ट्रीय शिल्प मेला एवं लोक नृत्य

देश की कला, शिल्प एवं सांस्कृतिक विरासत के पारम्परिक मूल्यों का संवर्धन एवं अनुसंधान करने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय शिल्प मेले का आयोजन वार्षिक तौर पर किया जाता है। इस मेले में दस्तकारी का सामान, देश की संस्कृति और पारम्परिक पाक कला का प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष इस शिल्प मेले का आयोजन एनसीजेडसीसी परिसर में इलाहाबाद हाट में 16 से 27 दिसम्बर, 2010 तक 12 दिनों के लिए किया गया। मेले के दौरान शाम के सत्र में नियमित तौर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। एनसीजेडसीसी के संघटक राज्यों तथा अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों से लगभग 300 लोक कलाकारों को अपने क्षेत्रों के लोक एवं जनजातीय नृत्यों की विभिन्न शैलियों को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। देश भर के 140 शिल्पियों को विभिन्न क्षेत्रों की दस्तकारी एवं पाक कला दिखाने के लिए आमंत्रित किया गया था। दिनांक 22 दिसम्बर, 2010

को एक शाम काव्य-गोष्ठी के लिए समर्पित की गई जिसमें उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं दिल्ली के 13 प्रसिद्ध कवियों को काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था।

### सीमांचल यात्रा – एक श्रृंखला कार्यक्रम

हमारे महान देश की सांस्कृतिक विविधता को प्रस्तुत करने सीमांत जिलों की स्थानीय जनता के बीच एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सीमा पर दिनांक 4 से 22 दिसम्बर, 2010 को विभिन्न राज्यों के लोक कलाकारों की 19 दिवसीय सीमांचल यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा के माध्यम से भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत की एक झलक प्रस्तुत की गई तथा इससे जवानों का मनोबल बढ़ा। इससे सीमा सुरक्षा बल, थल सेना और वायु सेना के जवानों को विभिन्न राज्यों की विभिन्न नृत्य कलाओं के बारे में जानकारी मिली। दूर-दराज के सीमा क्षेत्रों के लिए विभिन्न नृत्य शैलियां प्रस्तुत करने हेतु असम, महाराष्ट्र, बुंदेलखण्ड, पंजाब, राजस्थान, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, गुजरात, हरियाणा एवं ब्रज की नृत्य-मंडलियों को आमंत्रित किया गया था।

### गांधी शिल्प बाजार – दस्तकारी मेला – 2011

गांधी शिल्प बाजार, दस-दिवसीय राष्ट्रीय शिल्प मेला, डीसी (एचसी), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया जाने वाला एक मुख्य वार्षिक कार्यक्रम है। इस वर्ष गांधी शिल्प बाजार का आयोजन दिनांक 7 से 16 जनवरी, 2010 को इलाहाबाद हाट, एनसीजेडसीसी में किया गया था। इस कार्यक्रम में देश भर की शिल्प, संस्कृति एवं पाक कला का मिश्रण था। इस शिल्प मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया जिसमें भाग लेने के लिए एनसीजेडसीसी द्वारा देश भर के 200 लोक-कलाकारों तथा 150 शिल्पियों को आमंत्रित किया गया था। इसके अतिरिक्त एक काव्य-पाठ का भी आयोजन किया गया।

### “चलो मन गंगा यमुना तीर-2011”

वार्षिक अंतर्देशीय कार्यक्रम “चलो मन गंगा यमुना तीर-2011” इस क्षेत्र के एक मुख्य कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 31 जनवरी से 10 फरवरी, 2011 को माघ मेला के अवसर पर माघ मेला सांस्कृतिक पंडाल, माघ मेला ग्राउंड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में किया गया। प्रत्येक शाम दो सत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें एनसीजेडसीसी द्वारा संघटक राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 300 लोक-कलाकारों को आमंत्रित किया गया। दिनांक 8 फरवरी, 2011 को एक काव्य-गोष्ठी का आयोजन भी किया



गया जिसमें काव्य-पाठ के लिए 13 जाने-माने कवियों को आमंत्रित किया गया था। प्रतिदिन लगभग 5000 दर्शकों ने इसका लुत्फ उठाया। इस मेला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम ने न केवल घरेलू पर्यटकों अपितु विदेशी पर्यटकों को भी आकर्षित किया।

### मलिन-बस्ती क्षेत्रों में सांस्कृतिक आउटरीच कार्यक्रम

हमारे देश की कला एवं संस्कृति को ऐसे सामान्य लोगों को दिखाने के उद्देश्य के साथ जिन्हें वित्तीय बाध्यताओं या अन्य कारणों की वजह से सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखने का अवसर नहीं मिलता, माघ मेला के एक भाग के रूप में दिनांक 7 से 11 फरवरी, 2011 को इलाहाबाद शहर के कई मलिन-बस्ती क्षेत्रों में सांस्कृतिक आउटरीच कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ऐसे कार्यक्रमों से सामान्य लोगों को अन्य राज्यों एवं धर्मों की कलाओं को जानने का अवसर मिलता है। इन कार्यक्रमों का लगभग 2000 लोगों ने लुत्फ उठाया।

### सूरजकुंड मेला-2011

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के साथ सहयोग से 1 फरवरी से 15 फरवरी, 2011 तक सूरजकुंड, हरियाणा में 25वें सूरजकुंड शिल्प मेले का आयोजन किया गया। एनसीजेडसीसी ने इस मेले के दौरान दिनांक 4 से 12 फरवरी के दौरान विभिन्न राज्यों के लोक नृत्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

### प्रलेखन एवं प्रकाशन

दुर्लभ एवं लुप्त हो रही लोक-कलाओं एवं संस्कृति के नवाचार, पुनरुद्धार, प्रोत्साहन एवं प्रचार के लिए पुस्तकों एवं मोनोग्राफों के प्रकाशन एवं प्रलेखन द्वारा इस दिशा में नियमित प्रयास किए जा रहे हैं। इस संदर्भ में, एनसीजेडसीसी ने निम्नलिखित का प्रलेखन एवं प्रकाशन किया है :

| क्र.सं. | प्रकाशन                         | लेखक                 | संक्षिप्त विषय-वस्तु                                                                                                                                                                                                                                                    |
|---------|---------------------------------|----------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1       | भरत और उनका नाट्य-शास्त्र       | ब्रज बल्लभ मिश्रा    | यह पुस्तक भरत मुनि के नाट्य शास्त्र का संक्षिप्त सारांश है जिसमें आसान एवं सुबोध तरीके से थियेटर के मूलभूत एवं महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी दी गई है।                                                                                                                   |
| 2       | उत्तर प्रदेश की जनजातियां       | डा० अमीर हसन         | इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में पाई जाने वाली मोहिया, जौनसरी, थारू, बॉक्सा, राजी एवं कुछ अन्य जनजातियों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक में इन जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, उनके लोक-नृत्यों, गीतों एवं उनकी परम्पराओं का वर्णन किया गया है। |
| 3       | राजस्थान के लोक नृत्य           | डा० शकुंतला वपना     | इस पुस्तक में क्षेत्रीय लोक-नृत्यों, व्यावसायिक नृत्यों एवं राजस्थान के घुमंतु समुदायों के विभिन्न नृत्यों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक में इन नृत्यों के साथ प्रयोग किए जाने वाले लोक-वाद्यों का विशेष वर्णन किया गया है।                                           |
| 4       | गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव       | डा० शिवानन्द नौटियाल | उत्तरांचल के गढ़वाल क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से, इस पुस्तक में गढ़वाल क्षेत्र की मिथ्याओं तथा आकुल्ट, साहित्य, ऐतिहासिक व अभिलेखीय पहलुओं, रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं तथा लोक संगीत और लोक-नृत्य को व्यापक रूप से कवर किया गया है।        |
| 5       | प्री-हिस्टोरिक इंडियन पेंटिंग्स | डा० जगदीश गुप्त      | इस पुस्तक में प्री-हिस्टोरिक केव पेंटिंग्स के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया गया है।                                                                                                                                                                                      |

| क्र.सं. | प्रकाशन                                         | लेखक                         | संक्षिप्त विषय-वस्तु                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|---------|-------------------------------------------------|------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 6       | <b>बुंदेलखण्ड की लोक चित्रकला</b>               | डा० (श्रीमती) मधु श्रीवास्तव | बुंदेलखण्ड, उत्तर प्रदेश में लोक चित्रकारी की एक समृद्ध परम्परा है। उत्सवों एवं शुभ अवसरों पर बुंदेलखण्ड के लोग अपने धार्मिक कृत्यों, रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं के अनुसार चित्रकारी करते हैं। इस पुस्तक में इस क्षेत्र के विभिन्न कला-रूपों के उद्भव, इतिहास, लोक-मान्यताओं को व्यापक रूप से शामिल किया गया है।                                                                         |
| 7       | <b>बुंदेलखण्ड की काव्यात्मक कहावतें</b>         | श्री अयोध्या प्रसाद 'कुमुद'  | बुंदेलखण्ड, उत्तर प्रदेश की नीति-कथाओं एवं कहावतों को न केवल लोक-साहित्य के रूप में प्रलेखित किया गया है बल्कि इसमें नैतिक मूल्य भी हैं, इसलिए इसे बुंदेलखण्ड के लोगों का नैतिक विज्ञान भी कहा जाता है। समय बीतने के साथ-साथ ये कहावतें कई समस्याओं को खत्म करने के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर रही हैं।                                                                                 |
| 8       | <b>ब्रज भाषा की नाट्य-कृति – लाला हरदोल</b>     | श्री राम नारायण अग्रवाल      | ब्रज, उत्तर प्रदेश की कला एवं संस्कृति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। यह लोक गाथा-गीत ऐतिहासिक व्यक्ति हरदोल की कहानी है, जिसने कई लड़ाईयां लड़ी तथा वे अन्य नायकों से भी अधिक लोकप्रिय हो गए।                                                                                                                                                     |
| 9       | <b>खजुराहो इतिहास और मूर्तिशिल्प</b>            | डा० गंगा सागर तिवारी         | भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में खजुराहो, मध्य प्रदेश का कला एवं शिल्प कार्य अतुलनीय तथा विशिष्ट दर्जे का है। खजुराहो मूर्तिकला एवं इतिहास की मौजूदा पृष्ठभूमि के संदर्भ में कला एवं शिल्प को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए इस कार्य का प्रलेखन एवं प्रकाशन किया गया है।                                                                                                                  |
| 10      | <b>विंध्य क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव</b>        | डा० अर्जुन दास केसरी         | इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं बिहार के 6 साथ लगते जिलों की एक समान पुरालेखनीय, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को व्यापक तौर पर शामिल किया गया है।                                                                                                                                                                                                                 |
| 11      | <b>बिदेसिया : प्रवसन, बदलाव और लोक-संस्कृति</b> | बदरी नारायण                  | भोजपुरी श्रमिकों के प्रवसन ने भावनात्मक नुकसान एवं पीड़ा प्रदान की है। इस दुख एवं पीड़ा ने भोजपुरी क्षेत्र में एक विशिष्ट लोक एवं सांस्कृतिक परम्परा को जन्म दिया है, जिसे इस क्षेत्र में बिदेसिया लोक-संस्कृति कहा जाता है। इस पुस्तक में बिदेसिया लोक संस्कृति का अन्वेषण करने का उद्देश्य रखा गया है तथा इसमें इस सांस्कृतिक परम्परा की विभिन्न अभिव्यक्तियों का प्रलेखन किया गया है। |
| 12      | <b>दतिया के ऐतिहासिक स्मारक</b>                 | महेश मिश्रा मधुकर            | इस पुस्तक में दतिया के लोगों को उनकी सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक स्मारकों, किलों एवं मंदिरों की जानकारी प्रदान करने की कोशिश की गई है तथा इसका प्रलेखन किया गया है।                                                                                                                                                                                                                      |

| क्र.सं. | प्रकाशन                                   | लेखक                            | संक्षिप्त विषय-वस्तु                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
|---------|-------------------------------------------|---------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 13      | इलाहाबाद के ऐतिहासिक स्मारक               | डा० प्रभाकर पाण्डे              | सांस्कृतिक विरासत के संबंध में लोगों के ज्ञान को समृद्ध बनाने के लिए इस पुस्तक में इलाहाबाद के 101-ऐतिहासिक स्मारकों, किलों एवं मंदिरों का वर्णन किया गया है तथा उनका प्रलेखन किया गया है।                                                                                                                                              |
| 14      | ‘राज भवन लखनऊ : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य’ | श्री पी.सी. पंत द्वारा सम्पादित | इस ‘कॉफी टेबल बुक’ में सांस्कृतिक एवं पुरालेखीय परिप्रेक्ष्य से उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों का वर्णन किया गया है। इसमें प्राचीन काल से ब्रिटिश राज तक के विविध ऐतिहासिक चरणों पर लेख लिखे गए हैं। इसमें राज भवन आने वाले सभी मुख्य आयुक्तों, उप-राज्यपालों एवं राज्यपालों का भी संक्षिप्त विवरण दिया गया है।                        |
| 15      | बिहार के पारम्परिक नृत्य                  | ओम प्रकाश भारती                 | लुप्त हो रहे लोक-थियेटर रूपों एवं इसकी परम्पराओं को प्रोत्साहित एवं पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से इस पुस्तक में बिहार के लोक-थियेटर के विभिन्न पहलुओं अर्थात् जाट-जाटिन, नटुआ नाच एवं साल्हेस नाच, हुड्डक नाच एवं किरतनीया तथा बिदापात इत्यादि का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में बिदेसिया एवं भिखारी ठाकुर पर भी प्रकाश डाला गया है। |
| 16      | रजा पुस्तकालय, रामपुर                     | योगदान-राय उमापति रे            | इस चित्रात्मक कॉफी टेबल बुक में इंद्रीकेट मुगल पद्धति के इंटिरियर एवं पुस्तकालय के ऐतिहासिक महत्व का वर्णन किया गया है। इसमें विश्व के विख्यात पुस्तकालयों के इतिहास के विभिन्न चरणों पर लेख शामिल किए गए हैं।                                                                                                                          |
| 17      | इलाहाबाद एवं इलाहाबाद संग्रहालय           | योगदान-राय उमापति रे            | इस चित्रात्मक कॉफी टेबल बुक में इलाहाबाद संग्रहालय, भारत का राष्ट्रीय स्तर का एक संग्रहालय, की स्थापना के संक्षिप्त इतिहास एवं परियोजना का वर्णन किया गया है। इसमें प्राग ऐतिहासिक काल से वर्तमान समय तक के विभिन्न पुराकारों के संग्रह का वर्णन किया गया है।                                                                           |
| 18      | यमुनोत्री से प्रयाग तक                    |                                 | प्रक्रियाधीन है।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |

# 4

## ज्ञान स्रोत विरासत

---







## 4.1

### संस्थाएं

## भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार

राष्ट्रीय अभिलेखागार, संस्कृति मंत्रालय का एक सम्बद्ध कार्यालय है जिसमें स्थायी महत्व के अभिलेखों का प्रशासकों और विद्वानों के उपयोग के लिए स्थायी तौर पर परिरक्षण किया जाता है। इसके पास भारत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के निजी दस्तावेज मौजूद हैं और साथ ही विदेशों से प्राप्त की गई माइक्रोफिल्म की प्रतियां भी हैं। अपने नियमित कार्यक्रम में राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को उनके अभिलेख प्रबंधन कार्यक्रमों में सहायता देता है, देश और विदेश से आए विद्वानों को अनुसंधान सुविधाएं उपलब्ध कराता है; इसके अलावा यह विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों को उनके अभिरक्षण में पाण्डुलिपियों के परिरक्षण के साथ-साथ राज्य/संघ शासित क्षेत्रों को उनके विकास कार्यक्रमों आदि के लिए वित्तीय सहायता मुहैया कराता है। यह विभिन्न सरकारी विभागों, स्वैच्छिक संगठनों और व्यक्तियों को बहुमूल्य अभिलेखों और दस्तावेजों के परिरक्षण की तकनीकी जानकारी प्रदान करने के लिए उनका मार्गदर्शन भी करता है।

अभिलेखीय अध्ययन स्कूल अपने एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अंतर्गत अभिलेखीय और अभिलेख प्रबंधन और विभिन्न लघु अवधि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में देश-विदेश के प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह लोगों में अभिलेखीय जागरूकता सृजित करने के अपने कार्यक्रमों के तहत विभिन्न विषयपरक प्रदर्शनियां भी आयोजित करता है। राष्ट्रीय अभिलेखागार का एक क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल में और तीन अभिलेख केन्द्र भुवनेश्वर, जयपुर और पुद्दुचेरी में हैं।

**भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार की महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित विशेष परियोजनाएं :**

- I. रिकार्ड कक्षों का सर्वेक्षण तथा निरीक्षण, मंत्रालयों और विभागों के निवर्तमान रिकार्डों का मूल्यांकन तथा अंतरण : संविदा-आधार पर नियुक्त किए गए 28 अभिलेखीय सहायकों को उक्त कार्य हेतु निम्नलिखित मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में प्रतिनियुक्त किया गया; विदेश मंत्रालय; पुनर्वास प्रभाग, स्वतंत्रता सेनानी प्रभाग तथा नॉर्थ ब्लॉक, गृह मंत्रालय; रेल मंत्रालय; पर्यावरण तथा वन मंत्रालय; भूमि तथा विकास कार्यालय, शहरी विकास मंत्रालय; भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, प्रतिस्पर्धा अपीलीय ट्रिब्यूनल, कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (पूर्व एमआरटीपी आयोग); जाट रेजिमेंट, बरेली, रक्षा मंत्रालय; 11वां वित्त आयोग प्रभाग, व्यय विभाग,



प्रधानमंत्री कार्यालय; भारी उद्योग तथा सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय; योजना आयोग, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय और जल संसाधन मंत्रालय, ये सभी नई दिल्ली में स्थित हैं। इस दल ने 1,90,366 फाइलों का मूल्यांकन किया और एम्स पैकेज की तर्ज पर 91,848 फाइलों की स्थानांतरण सूची तैयार की।

II. *रिकार्डों का संसाधन तथा अधिग्रहण* : इस परियोजना हेतु संविदा आधार पर नियुक्त 15 अभिलेखीय सहायकों और 2 मेंडरों ने 1,27,597 फाइलों की वास्तविक जांच की, 36,327 फाइलों को व्यवस्थित किया, 4,894 फाइलों का समामेलन किया, कार्टन बक्सों में 31,897 फाइलों को रखा, 4,726 कार्टन बक्सों/894 बंडलों/7,727 फाइलों पर नाम लिखा, 18,870 फाइलों की डॉकेटिंग/सिलाई की और 12,205 फाइलों की विषय-सूची/जांच-सूची तैयार की।

III. *सार्वजनिक रिकार्डों से संबंधित संदर्भ मीडिया तैयार करना* : संविदा आधार पर भर्ती किए गए 14 अभिलेखीय सहायकों ने कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को लिखे गए पत्र तथा कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स से प्राप्त पत्रों से संबंधित (वर्ष 1804-1858 तक) 1,14,376 ऑनलाइन प्रविष्टियां कीं।

IV. *सार्वजनिक रिकार्डों का संरक्षण तथा परिरक्षण* : संविदा आधार पर भर्ती किए गए 24 परिरक्षण सहायकों/संरक्षण परिचारकों ने 1,42,170 शीटों की मरम्मत की, सिलाई की तथा 383 खण्डों की जिल्दसाजी की।

V. *दुर्लभ व महत्वपूर्ण पुस्तकों तथा प्रकाशनों की मरम्मत एवं जिल्दसाजी* : संविदा आधार पर भर्ती किए गए 22 संरक्षण सहायकों/हेल्परों ने 1,16,084 शीटों की मरम्मत की, इनकी सिलाई की और 308 खण्डों की जिल्दसाजी की।

VI. *सार्वजनिक रिकार्डों की सुरक्षामूलक माइक्रोफिल्मिंग, पॉजिटिव निर्माण तथा डिजिटलीकरण* : भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में उपलब्ध लगभग 63 लाख पृष्ठों की निगेटिव तथा पॉजिटिव माइक्रोफिल्में तैयार करने की परियोजना के तहत इस कार्य में लगी तीन कम्पनियों ने 115 रोल की निगेटिव तथा पॉजिटिव माइक्रोफिल्में तैयार कीं।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली और क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल में उपलब्ध लगभग 13,000 निगेटिव माइक्रोफिल्मों की पॉजिटिव माइक्रोफिल्में तैयार करने की परियोजना के तहत इस कार्य में लगी कम्पनी ने 20 रोल की निगेटिव माइक्रोफिल्मों की पॉजिटिव माइक्रोफिल्में तैयार कीं।

5 लाख पृष्ठों की डिजिटल तस्वीरें और आर्काइव राइटर के प्रयोग से इन्हें माइक्रोफिल्म में एनालॉग तस्वीरों में परिवर्तित करने की परियोजना के तहत इस कार्य में लगी कम्पनी ने डिजिटल इमेज तैयार करने के लिए 1,29,862 पृष्ठों की स्कैनिंग की।

VII. *निजी कागजातों के संबंध में संदर्भ मीडिया तैयार करने की परियोजना* : निजी कागजातों के संबंध में संदर्भ मीडिया तैयार करने की परियोजना के तहत 14 अभिलेखीय सहायकों ने निम्नलिखित संग्रहों का संदर्भ मीडिया तैयार किया :-

क) **सरदार पटेल पेपर्स** :- 23,800 प्रविष्टियां मैनुअल रूप से और 22,834 प्रविष्टियां ऑनलाइन तैयार की गईं।

ख) **फूलचंद जैन पेपर्स** :- 11,662 प्रविष्टियां मैनुअल रूप से तैयार की गईं।

## प्रापण/अधिग्रहण

❖ *सार्वजनिक रिकार्ड* : संसाधन तथा प्रापण परियोजना के अंतर्गत भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार में स्थायी रूप से रखे जाने हेतु भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों से कुल 78,548 फाइलें प्राप्त हुईं। इसके अलावा, निम्नलिखित मंत्रालयों/विभागों/संगठनों की कुल 28,825 फाइलों का भी अधिग्रहण किया गया।

❖ *निजी दस्तावेज* : भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के प्राइवेट अभिलेख अनुभाग में निजी दस्तावेज पेपर्स के निम्नलिखित संग्रह अधिगृहीत किए गए :-

i. **श्री अभिषेक कुमार डे पेपर्स** :- विभिन्न मुद्दों जैसे बंगाल का विभाजन; गांधीजी का बंगाल

तथा नोवाखाली दौरा; बिरला तथा कांग्रेस पर कम्युनिस्टों की टिप्पणियां जैसे विषयों पर सुशील कुमार मुखर्जी, बेश लाल, रामाकृष्णन, रमानी मोहन चटर्जी आदि जैसे विभिन्न व्यक्तियों के साथ अंग्रेजी तथा बंगाली में पत्राचार; पाकिस्तान दिवस समारोह में शामिल होने के लिए गांधीजी को आमंत्रण; सरत चंद्र चट्टोपाध्याय (उपन्यासकार) तथा बासुमति साहित्य मंदिर प्रकाशन के बीच करार और साथ ही विभिन्न मुद्दों पर महात्मा गांधी से मार्गदर्शन प्राप्त करने के बावत कुछ व्यक्तिगत पत्र; अनुच्छेद, पैम्पलेट, प्रेस नोट और ज्ञापन आदि शामिल हैं।

- ii. **मनुबेन पेपर्स** :- इसमें मनुबेन द्वारा लिखित 19 व्यक्तिगत डायरियां हैं जिसमें पत्र, कुछ गुजराती पुस्तकों जैसे एकला चलो रे, बिहार नी कौमी आग मा, बिहार पाशी दिल्ली, कोलकाता नो चमत्कार की कुछ पाण्डुलिपियां; मनुबेन द्वारा रचित संस्कृत में श्लोक जिन्हें गांधीजी द्वारा सुधारा गया; बापूजी के प्रथम प्रवचन हिन्दी/गुजराती में; गांधीजी की एक डायरी में नोट, जवाहर लाल नेहरू, जगजीवन राम तथा जी.बी. पंत को उनके द्वारा लिखे गए पत्रों की प्रतियां; गांधीजी, जाकिर हुसैन, इंदिरा गांधी तथा अन्यो द्वारा मनुबेन को सम्बोधित 69 पत्र; 1942 हेतु एक गुजराती कैलेण्डर जिसमें गांधीजी द्वारा बनाए गए कुछ ज्यामितीय चित्र हैं जो उन्होंने कारावास में रखे गए कैदियों को ज्यामिती पढ़ाने के लिए बनाए थे; गांधीजी जिन समारोहों में उपस्थित हुए थे उनसे संबंधित एक एल्बम और मनुबेन से संबंधित कुछ प्रेस कतरन शामिल हैं।

इसके अलावा, श्री सीताराम सोनी, डॉ. हरीश पी. कौशिक, पंजाब, हरियाणा और चण्डीगढ़ उच्च न्यायालय, डॉ. अमित जैन के निजी दस्तावेज तथा विदेश से, एल/पी/जे/7 सिरीज और कैब 127 सिरीज (57 और 60) प्राप्त की गई।

**पुस्तकालय** : विभाग के पुस्तकालय में 1,369 पुस्तकें/पत्रिकाएं अधिगृहीत की गईं।

### रिकार्ड प्रबंधन

- ❖ विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/संगठनों से प्राप्त कुल 7,236 फाइलों का मूल्यांकन किया गया।
- ❖ **मंत्रालयों और विभागों के पास मौजूद लगभग पांच लाख रिकार्डों का अवर्गीकरण तथा डाउनग्रेडिंग** : न्यूक्लियर फ्यूल कॉम्प्लेक्स, ओएचएसएस 18001 संगठन, परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत सरकार, हैदराबाद, जवाहरलाल नेहरू उच्चतर वैज्ञानिक शोध केन्द्र, बेंगलुरु, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी, रायबरेली, महानिदेशक कार्यालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, नई दिल्ली, केन्द्रीय एगमार्क प्रयोगशाला, नागपुर, जनजातीय सहकारी विपणन, नई दिल्ली, चेन्नई पोर्ट ट्रस्ट, चेन्नई से प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं।
- ❖ **अभिलेखीय सलाहकार बोर्ड की बैठकें** : अभिलेखीय सलाहकार बोर्ड की 12वीं बैठक 5 अगस्त, 2010 को श्री जवाहर, सरकार सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में आयोजित की गई।
- ❖ **सार्वजनिक रिकार्ड अधिनियम, 1993 और सार्वजनिक रिकार्ड नियम, 1997 की पुनरीक्षा** : सार्वजनिक रिकार्ड अधिनियम, 1993 और सार्वजनिक रिकार्ड नियम, 1997 में संशोधन : अभिलेखीय सलाहकार बोर्ड की दिनांक 5 अगस्त, 2010 को आयोजित 12वीं बैठक में की गई सिफारिशों के अनुसार एक परामर्शदात्री समिति गठित करने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। परामर्शदात्री समिति की प्रथम बैठक 16 नवम्बर, 2010 को आयोजित की गई।
- ❖ **रिकार्ड प्रबंधन पर प्रबोधन पाठ्यक्रम** : विभागीय रिकार्ड अधिकारियों के लिए (डीआरओ) रिकार्ड प्रबंधन में प्रबोधन पाठ्यक्रम का नया कैलेण्डर 2010-2011 तैयार किया गया और 85 मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/242 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को इस अनुरोध के साथ परिचालित किया गया कि वे भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली (मुख्यालय), क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल, पुडुचेरी, जयपुर तथा भुवनेश्वर स्थित रिकार्ड केन्द्रों में आयोजित

किए जाने वाले 7 पाठ्यक्रमों हेतु अपने-अपने नामित व्यक्तियों को प्रतिनियुक्त करें।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में और जयपुर, भुवनेश्वर तथा पुडुचेरी स्थित रिकार्ड केन्द्रों में 5 पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। इन पाठ्यक्रमों में 110 डीआरओ ने भाग लिया।

### सार्वजनिक रिकार्ड अधिनियम, 1993 का क्रियान्वयन

- ❖ वर्ष 2008 हेतु महानिदेशक, अभिलेखागार की 11वीं रिपोर्ट की प्रेस प्रति तैयार की गई और उक्त रिपोर्ट के मुद्रण की प्रक्रिया प्रारंभ की गई।

### प्रकाशन

- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार ने अपने संग्रह में से पुरानी तथा ऐतिहासिक पुस्तकों को पुनर्मुद्रित करवाने से संबंधित एक प्रकाशन कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इस संबंध में दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए; एक 'एशियन एजुकेशनल सर्विसेज' के साथ और दूसरा 'नियोगी बुक्स' के साथ।
- 'आर्काइव्स इन इंडिया हिस्टोरिकल रीप्रिन्ट्स' शृंखला के तहत विलियम लॉएड तथा अलेक्जेंडर जेर्हार्ड द्वारा लिखित 'ए नैरेटिव ऑफ एजर्नी फ्रॉम कानपुर टू द बूरेन्डो पास इन द हिमालया माउन्टेन्स' (खंड I तथा II) नामक पुस्तक का एशियन एजुकेशनल सर्विसेज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया।

### अनुसंधान एवं संदर्भ

- विभाग के रिकार्ड कक्ष में 449 भारतीय और 101 विदेशी अध्येताओं को नामांकित किया गया।
- अध्येताओं द्वारा अनुसंधान कक्ष का 3,776 बार दौरा किया गया।
- अध्येताओं से रिकार्डों/दस्तावेजों/माइक्रोफिल्मों हेतु प्राप्त 33,031 मांगों पर कार्रवाई की गई।

- अनुसंधान कक्ष ने जाने-माने वक्ताओं द्वारा महत्वपूर्ण विषयों पर 'पखवाड़ा व्याख्यान शृंखला' का भी प्रारंभ किया।

### अभिलेखीय अध्ययन स्कूल

- ❖ अभिलेखीय अध्ययन स्कूल ने 'अभिलेख तथा रिकार्ड प्रबंधन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम' और साथ ही विभिन्न अल्पावधिक पाठ्यक्रमों का संचालन जारी रखा। इसका ब्यौरा इस प्रकार है :
  - अभिलेख तथा रिकार्ड प्रबंधन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम, 2009-10 (5 नवम्बर, 2009 से 31 अक्टूबर, 2010 तक) पूरा किया गया। 5 प्रायोजित अभ्यर्थियों सहित 17 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। डिप्लोमा पाठ्यक्रम का नया सत्र 2010-11, 8 नवम्बर, 2010 को प्रारंभ हुआ जिसमें 4 प्रायोजित अभ्यर्थियों के साथ लगभग 24 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

### अध्ययन बोर्ड की बैठक

प्रो0 मुशीरूल हसन, महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार की अध्यक्षता में दिनांक 7 जुलाई, 2010 को अध्ययन बोर्ड की 13वीं बैठक आयोजित की गई।

### संरक्षण

- ❖ 73,643 शीटों और 147 नक्शों की मरम्मत की गई; 171 खण्डों, 209 पुस्तकों तथा 1,159 विविध मदों की सिलाई की गई; 242 खण्ड, 286 पुस्तकों तथा 966 विविध मदों की जिल्दसाजी की गई। इसके अलावा, 5,378 शीटों को सीधा किया गया और 7,274 शीटों की गार्डिंग की गई।
- ❖ संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर तकनीकी सूचनाएं पांच संगठनों अर्थात् (i) महानिदेशक, राष्ट्रीय अभिलेखागार, श्रीलंका (ii) निदेशक, बिहार राज्य अभिलेखागार (पटना), (iii) मुख्य सचिव, झारखंड सरकार (झारखंड) (iv) निदेशक, मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल (मणिपुर) और (v) निदेशक, पंजाब राज्य अभिलेखागार (चण्डीगढ़)।



## रिप्रोग्राफी

- ❖ सिक्युरिटी माइक्रोफिल्मिंग के चालू कार्यक्रम के तहत रिकार्डों की महत्वपूर्ण श्रृंखला की माइक्रोफिल्में तैयार करना जारी रखा गया और 498 रोल जिसमें 3,29,159 एक्सपोजर थीं, तैयार किए गए। पुस्तकालय में मौजूद दुर्लभ एवं मूल्यवान पुस्तकों की सिक्युरिटी माइक्रोफिल्म भी तैयार की गई जिसमें 35,000 एक्सपोजर थी।

## अनुदान

राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के अभिलेखीय भण्डारों, सरकारी पुस्तकालयों और संग्रहालयों को वित्तीय सहायता योजना के तहत 1 अक्टूबर, 2010 को राजस्थान, आंध्र प्रदेश, असम, गोवा, नागालैंड तथा उत्तर प्रदेश स्थित सात संगठनों हेतु कुल 39,15,000 रु. की धनराशि की सिफारिश की गई। राजकीय सार्वजनिक जिला पुस्तकालय, सवाई माधोपुर, राजस्थान को द्वितीय किस्त के रूप में 80,000 रु. की राशि जारी की गई।

पांडुलिपियों/दुर्लभ पुस्तकों के परिरक्षण हेतु वित्तीय सहायता योजना के तहत 29 जून, 2010 और 2 दिसम्बर, 2010 को दो बैठकें आयोजित की गईं। वर्ष 2010-11 हेतु अनुदान समिति की पहली बैठक 29 जून, 2010 को आयोजित की गई। अनुदान समिति ने बिहार तथा मणिपुर स्थित सात संगठनों/व्यक्तियों को 4,17,957 रु. (चार लाख सत्रह हजार नौ सौ सत्तावन रु.) की राशि की सिफारिश की। अनुदान समिति की दूसरी बैठक 2 दिसम्बर, 2010 को आयोजित की गई। अनुदान समिति ने असम, गुजरात तथा केरल स्थित आठ संगठनों को 6,24,000 रु. की राशि की सिफारिश की।

## आरटीआई प्रकोष्ठ

- ❖ आम जनता तथा सरकारी प्राधिकरणों से प्राप्त 112 मामलों पर कार्रवाई की गई। 15 अपीलें को निपटाया गया।

## कार्यशालाएं

- ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में रिकार्ड प्रबंधन पर तीन दिवसीय कार्यशाला

रिकार्ड प्रबंधन के संबंध में 22 जून, 2010 से 24 जून, 2010 तक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन ललित कला अकादमी, रबीन्द्र भवन, नई दिल्ली में किया गया। अकादमी के 32 स्टाफ सदस्यों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

- 'रिकार्ड प्रबंधन तथा आरटीआई' पर अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह प्रशासन के सहयोग से 23-24 तथा 26-27 अगस्त, 2010 तक पोर्ट ब्लेयर में दो दिवसीय कार्यशाला के दो सत्र का आयोजन किया गया। अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह प्रशासन के विभिन्न विभागों के पदाधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

- रिकार्ड प्रबंधन, संरक्षण तथा माइक्रोफिल्मिंग/डिजिटीकरण पर अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह प्रशासन के सहयोग से पोर्ट ब्लेयर में 8-10 नवम्बर, 2010 तक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- कला एवं संस्कृति विभाग, मेघालय सरकार के सहयोग से शिलांग में 6.12.2010 से 10.12.2010 तक रिकार्ड प्रबंधन, संरक्षण तथा माइक्रोफिल्मिंग/डिजिटीकरण पर पांच दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। कला एवं संस्कृति विभाग, मेघालय सरकार तथा मेघालय राज्य अभिलेखागार के 26 पदाधिकारियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

## विदेश दौरा

- ❖ प्रो. मुशीरुल हसन, महानिदेशक ने सीआईटीआरए के 42वें सम्मेलन में तथा ओस्लो में दिनांक 14-18 सितंबर, 2010 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अभिलेखागार परिषद की वार्षिक महा सभा की बैठक में भाग लिया। वह दिनांक 4-8 अक्टूबर, 2010 के बीच भारतीय अभिरुचि एवं संबद्ध विषयों से संबंधित रिकार्डों की जांच और उनका चयन करने के लिए ब्रिटिश पुस्तकालय, लंदन भी गए।
- ❖ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के वरिष्ठ अधिकारियों ने दिनांक 29 नवंबर से 2 दिसंबर, 2010 को कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित एसडब्ल्यूएआरबीआईसीए की बैठक में तथा दिनांक 29 सितंबर से 1 अक्टूबर, 2010 को साना, यमन में आयोजित गल्फ अभिलेखागार और प्रलेख केंद्र की महा सचिवालय की 26वीं बैठक में भाग लिया।

## मासिक व्याख्यान माला

- ❖ व्याख्यान माला के भाग के रूप में निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए।
  - (क) डा० आर.के. पट्टी द्वारा 9 जुलाई, 2010 को “व्हाट इज आर्काइव्स”।
  - (ख) डा० ओ.पी. अग्रवाल द्वारा 15 सितम्बर, 2010 को “आर्काइव्स रिकार्ड्स एंड प्राइवेट पेपर्स”।
  - (ग) प्रो० एस. इरफान हबीब द्वारा 15 अक्टूबर, 2010 को “आर्काइव्स, साइंस एंड टेक्नोलॉजी”।
  - (घ) प्रो० जेम्स मेनर द्वारा 8 नवम्बर, 2010 को “व्हाई सोशल साइंटिस्ट्स शुड थिंक मोर लाइक हिस्टोरियन्स एंड वाइस वर्सा”।
  - (ङ.) प्रो० सब्यसाची भट्टाचार्य द्वारा 19 नवम्बर, 2010 को आयोजित “आर्काइव्स ऑफ द फ्यूचर : ए विश लिस्ट”।
  - (च) डा० नजफ हैदर द्वारा 3 दिसम्बर, 2010 को “डिसिफरिंग ए पर्सियन मैनुस्क्रिप्ट”।
  - (छ) प्रो० मार्था नासाबौम द्वारा 13 दिसम्बर, 2010 को “रबीन्द्रनाथ टैगोर्स रिलिजन ऑफ मैन इन इंडिया टुडे”।
- ❖ फिल्म डिवीजन, मुम्बई से एनएआई को प्राप्त वृत्तचित्र के स्क्रिप्ट के मसौदे को अनुमोदित कर दिया गया है।
- ❖ “द फर्स्ट त्रिपिटक” पर मुनक्का ब्रॉडकास्टिंग कोऑपरेशन, साउथ कोरिया द्वारा गिलिगट पांडुलिपियों पर तैयार किए जा रहे वृत्तचित्र के लिए अपेक्षित सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं।

## सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

- ❖ भारत तथा रूस (2010-12), भारत-आइसलैंड (2010-13), भारत-बांग्लादेश (2010-12), भारत-नॉर्वे (2010-12), भारत-श्रीलंका (2010-13) और भारत-पॉलिश 2010-2013 और भारत यू.के. (2010) के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों पर भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार सहित संस्कृति मंत्रालय द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

## हिन्दी पखवाड़ा

- ❖ हिन्दी पखवाड़ा 3-17 सितम्बर, 2010 तक मनाया गया और इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सफल पदाधिकारियों को 105 पुरस्कार आबंटित किए गए।

## प्रदर्शनियां

- श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति) ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली के परिसर में 2 जुलाई, 2010 को आयोजित “द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया” नामक प्रदर्शनी की श्रृंखला में “1857” नामक एक अभिलेखीय प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
- “द मेकिंग आफ मॉडर्न इंडिया” प्रदर्शनी श्रृंखला के अंतर्गत “मौलाना अबुल कलाम आजाद” नाम से एक प्रदर्शनी का आयोजन 13-19 अगस्त, 2010 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन कई अध्येताओं तथा मीडिया की उपस्थिति में डा० एस. वाई. कुरैशी, मुख्य चुनाव आयुक्त द्वारा किया गया। इसके अलावा, इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली में 18-26 सितम्बर, 2010 तक इसे प्रदर्शित भी किया गया और श्री एल.के. आडवाणी तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में, जो इंडिया



“मौलाना अबुल कलाम आजाद” नामक एक प्रदर्शनी

इस्लामिक कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित ईद-मिलन समारोह में उपस्थित थे, श्री पी. चिदम्बरम, माननीय गृह मंत्री द्वारा औपचारिक रूप से इसे खोला गया।

- **“इंडीपेंडेंस टू रिपब्लिक”** शीर्षक प्रदर्शनी का उद्घाटन 14 अगस्त, 2010 को भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार एनेक्सी में श्री शशि भूषण, संसद सदस्य द्वारा किया गया, ठीक उसी समय “स्वतंत्र भारत” पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित की गई। यह प्रदर्शनी 15 अक्टूबर, 2010 तक जनता के लिए खुली रखी गई। इसे प्रदर्शित किए जाने हेतु सभी रिकार्ड केन्द्रों तथा क्षेत्रीय कार्यालय में भी भेजा गया।
- नई दिल्ली में 19वें राष्ट्रमंडल खेल के अवसर पर **“कॉमन वेल्थ: अपहोलिडिंग स्पोर्टिंग ट्रेडिशन एण्ड स्पोर्टिंग स्प्रिट”** एक अभिलेखीय प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन दिनांक 30 सितंबर, 2010 को भारत के महामहिम उप राष्ट्रपति श्री हामिद मुहम्मद अंसारी ने किया। उद्घाटन समारोह में श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति), उच्चायुक्त, शिक्षाविद तथा मीडिया ने भाग लिया।



“कॉमन वेल्थ: अपहोलिडिंग स्पोर्टिंग ट्रेडिशन एण्ड स्पोर्टिंग स्प्रिट”  
एक अभिलेख प्रदर्शनी

- **“शाहनामा”** पर ईरान कल्चर हाउस के सहयोग से एक संयुक्त प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन दिनांक 29 नवंबर, 2010 को भारत में ईरान के राजदूत और अन्य विशिष्ट अतिथि की उपस्थिति में राजदूत श्री सलमान हैदर द्वारा किया गया। यह

प्रदर्शनी 10 दिसंबर, 2010 तक आम जनता के लिए खुली रखी गई।

- दिनांक 18–24 मई, 2010 को अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर “अभिलेखागार एवं जलियांवाला” पर विषयगत प्रदर्शनी आयोजित की गई। विद्वानों और छात्रों ने बड़ी संख्या में इस प्रदर्शनी में भाग लिया।
- 16 दिसंबर, 2010 को एक पुस्तक मेला का आयोजन किया गया।

## विशेषताएं

- ❖ नई दिल्ली में आयोजित 19वें राष्ट्रमंडल खेलों के अवसर पर एक अभिलेखीय प्रदर्शनी **“कॉमनवेल्थ : अपहोलिडिंग स्पोर्टिंग ट्रेडिशन एंड स्पोर्टिंग स्प्रिट”** का औपचारिक रूप से उद्घाटन 30 सितंबर, 2010 को श्री हामिद मोहम्मद अंसारी भारत के महामहिम उप-राष्ट्रपति द्वारा किया गया। इस उद्घाटन समारोह में श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति), उच्चायुक्त, शिक्षाविद तथा मीडिया ने भाग लिया।

**चित्र 1 :** भारत के महामहिम उप-राष्ट्रपति श्री हामिद मोहम्मद अंसारी, 30 सितंबर, 2010 को भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के दौरे के समय **“कॉमनवेल्थ : अपहोलिडिंग ट्रेडिशन एंड स्पोर्टिंग स्प्रिट”** शीर्षक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए। साथ में श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति) और भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के वरिष्ठ अधिकारीगण भी।

- ❖ डा0 एस.वाई. कुरैशी, मुख्य चुनाव आयुक्त ने 13–19 अगस्त, 2010 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में **“द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया”** विषयक प्रदर्शनी की श्रृंखला के तहत **“मौलाना अबुल कलाम आजाद”** शीर्षक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जिसमें अध्येतागण तथा मीडिया कर्मी उपस्थित थे।

**चित्र 2 :** डा0 एस.वाई. कुरैशी, मुख्य चुनाव आयुक्त, 13 अगस्त, 2010 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के दौरे के समय **“मौलाना अबुल कलाम आजाद”** शीर्षक से एक

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए। साथ में प्रो० मुशिरूल हसन, महानिदेशक, अभिलेखागार और भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के वरिष्ठ अधिकारीगण भी।

- ❖ श्री शशि भूषण, संसद सदस्य ने 14 अगस्त, 2010 को भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार में जहां “इंडीपेंडेंस इंडिया” नामक एक संगोष्ठी पहले से चल रही थी, “इंडीपेंडेंस टू रिपब्लिक” शीर्षक से एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

**चित्र 3 :** श्री शशि भूषण, संसद सदस्य 14 अगस्त, 2010 को भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के दौरे के समय “इंडीपेंडेंस टू रिपब्लिक” शीर्षक से प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

- ❖ श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति) ने 2 जुलाई, 2010 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में “द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया” विषयक प्रदर्शनी की श्रृंखला के तहत “1857” शीर्षक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जिसमें अध्येतागण तथा मीडिया कर्मी उपस्थित थे।

**चित्र 4 :** श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति), 2 जुलाई, 2010 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली के दौरे के समय “1857” शीर्षक से प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए। साथ में प्रो० मुशिरूल हसन, महानिदेशक, अभिलेखागार और भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के वरिष्ठ अधिकारीगण भी।

### रिकार्ड केन्द्र, भुवनेश्वर

- ❖ उपहारस्वरूप तथा सम्मानस्वरूप 55 पुस्तकें प्राप्त की गईं। पेटेंट एंड डिजाइन, कोलकाता कार्यालय की कुल 5000 फाइलों का मूल्यांकन किया गया। कोलकाता में

23-24 अप्रैल, 2010 को एक रिकार्ड प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभागीय रिकार्ड अधिकारियों के लिए रिकार्ड प्रबंधन में एक प्रबोधन पाठ्यक्रम का आयोजन 4-8 अक्टूबर, 2010 तक किया गया। भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों/संगठनों के 24 अधिकारियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। अध्येताओं द्वारा 17 दौरे किए गए और 166 फाइलों की उन्हें आपूर्ति की गई।

### रिकार्ड केन्द्र, जयपुर

- ❖ 2,725 पन्नों को हैंड लैमिनेशन किया गया, 1,966 पन्नों की टीश्यू मरम्मत की गई, 914 फाइलों की सिलाई की गई, 84 खण्डों तथा 89 विविध मदों की जिल्दसाजी की गई और 132 पन्नों का धूम्रीकरण किया गया।
- ❖ केन्द्र सरकार के विभिन्न, विभागों के 25 विभागीय रिकार्ड अधिकारियों के लिए 6-10 दिसम्बर, 2010 के दौरान रिकार्ड प्रबंधन पर प्रबोधन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया और 17 अध्येताओं को शोध सुविधा उपलब्ध कराई गई।

### रिकार्ड केन्द्र, पुदुचेरी

- ❖ सहायक नमक आयुक्त, तूतीकोरिन कार्यालय की 2,537 फाइलें तथा 272 रजिस्टर (1867-1976), सिफनेट, चेन्नई की 147 फाइलें (1963-76), पुदुचेरी के 200 राजपत्र, तमिलनाडु विधानसभा की 100 कार्यवाहियां और 80 पत्रिकाएं प्राप्त की गईं। 800 फोल्डर्स/खंडों/फाइलों की विषय-वार सूची तैयार की गई। 17 अध्येताओं को शोध सुविधाएं प्रदान की गईं।



राष्ट्रीय अभिलेखागार के अभिलेख प्रबंधन में 91वाँ ऑरिएंटेशन पाठ्यक्रम



## भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण की स्थापना वर्ष 1945 में भारत की जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं पर जैविक तथा सांस्कृतिक अंतर से संबंधित मानव विज्ञान शोध कार्य करने के प्रयोजनार्थ एक प्रमुख शोध संगठन के रूप में की गई थी। इसके व्यापक अधिदेश एवं मुख्य विशिष्टता समकालीन प्रासंगिकता एवं राष्ट्रीय महत्व का समग्र अध्ययन करने से जुड़ी रही है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के कार्यकलापों में मानव जाति संबंधी सामग्री का संग्रहण, प्रलेखन, अनुरक्षण एवं संरक्षण करना भी शामिल है। वर्षों से इस सर्वेक्षण ने अपने कोलकाता स्थित कार्यालय, देश में स्थित 7 क्षेत्रीय केंद्रों, एक उप-क्षेत्रीय केंद्र, एक स्थायी फील्ड स्टेशन, 8 अन्य फील्ड स्टेशनों और नई दिल्ली स्थित कैम्प कार्यालय द्वारा पोषणक्षम शोध के जरिए मूलभूत स्तर से सूचना सृजित की है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण द्वारा तैयार की गई मानव विज्ञान संबंधी फिल्में और उसके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें तथा साथ ही शोध पत्र, उनकी सुलभता तथा भारत के लोगों को समझने में अत्यंत क्रांतिकारी रहे हैं।

4.1.2

ग्यारहवीं योजनावधि के दौरान दो प्रमुख परियोजनाएं नामतः “भारत के लोग: सांस्कृतिक विविधता” और “भारत के लोग : जैव-सांस्कृतिक अनुकूलन” नामक योजनाएं शुरू की हैं। अन्य चालू परियोजनाओं में शामिल हैं— डीएनए पॉलीमॉर्फिज्म स्टडीज ऑफ द ऐंशिअंट ह्यूमन स्केलेट रीमेन्स एंड कंटेम्पोरेरी इंडियन पॉपुलेशन, पूर्वोत्तर भारत में बच्चों की शारीरिक वृद्धि एवं विकास—एक जन स्वास्थ्य का मुद्दा, सामुदायिक जेनेटिक्स तथा स्वास्थ्य (मानव जेनेटिक्स विस्तार कार्यक्रम), मानसिक तनाव तथा आत्महत्या : मनो-जेनेटिक अध्ययन, बायोस्फेयर में मानव और सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, कई कार्यशालाओं तथा विचार-विमर्श के पश्चात् सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन हेतु मैनुअल का अंतिम प्रारूप तैयार कर लिया गया है, जो विचाराधीन है।

### अनुसंधान परियोजनाएं :

सभी परियोजनाओं के लिए गहन फील्ड कार्य जारी रहा जिनमें शामिल हैं— ‘भारत के लोग : सांस्कृतिक विविधता— अमूर्त तथा मूर्त धरोहर (टी.के.)’, ‘वंश-विषयक रिकार्डिंग तथा पारम्परिक ज्ञान’। फील्डकार्य का प्रथम चरण कामाख्या, हरिद्वार तथा पुरी मंदिरों के संबंध में पूरा कर लिया गया है और रिपोर्ट लेखन जारी है। ‘पूर्वोत्तर भारत में बच्चों की शारीरिक वृद्धि एवं





विकास : एक जनस्वास्थ्य का मुद्दा', 'मानव एवं पर्यावरण' संबंधी बायोस्फेयर रिजर्व अध्ययन के तहत नॉकरेक बायोस्फेयर रिजर्व, सीमांत देशों के साथ जैव-सांस्कृतिक संबंध, सामुदायिक जेनेटिक्स तथा पूर्वोत्तर भारत में स्वास्थ्य : "भारत के लोग : जैव सांस्कृतिक अनुकूलन" नामक राष्ट्रीय परियोजना के तहत डारंग जिले के युद्ध का एक अध्ययन। जीआईएस तथा दूरसंवेदी के आधार पर एएबीआर के लिए निवास स्थान संगतता मानचित्र तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त, मानव बायोस्फेयर रिजर्व अध्ययन से संबंधित आंकड़ा संग्रहण तथा संबंधित सूचना हेतु विस्तृत अनुसूचियां/उपयोग किए जाने वाले उपकरण तैयार कर लिए गए हैं और इन्हें अंतिम रूप दिया गया है। थैलेसेमिया तथा हेमोग्लोबिन-ई के अध्ययन हेतु मध्य भारत : नागपुर तथा इसके प्रतिपक्ष पश्चिम बंगाल में सिकल सेल एनीमिया तथा थैलेसेमिया के संबंध में सामुदायिक जेनेटिक्स विस्तार कार्यक्रम के तहत शिविर आयोजित किए गए। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों पर 'थैलेसेमिया' पर एक व्याख्यान समेत सर्वेक्षण संस्थान ने जागरूकता, लक्षण जांच शिविर तथा श्रव्य-दृश्य प्रस्तुति आयोजित की। जैव-सांस्कृतिक अनुकूलन के तहत रक्त के नमूने तथा मैसूर के गंगादीकारा वोक्कालिगा के 1100 टाइप-।। मधुमेह ग्रस्त रोगियों तथा उनके रिश्तेदारों से संबंधित शारीरिक गतिविधि, खान-पान, मनोवैज्ञानिक आंकड़े, मानवमिति संबंधी परिमाण आदि से संबंधित आंकड़े एकत्र किए गए हैं। प्रयोगशाला तथा अन्य विश्लेषण का कार्य चल रहा है। 28 जनजातीय आबादी के लिए वाई एसएनपी जीनोटाइपिंग का कार्य प्रगति पर है। 'भारत के लोग तथा मानव उत्पत्ति' (नर्मदा घाटी खुदाई तथा प्राचीन डीएनए) नामक परियोजना के तहत मुख्यालय, कोलकाता से दो शोधकर्ता शिवालिक के दौरे पर गए हैं और उन्होंने दो महीने तक शिवालिक जीवाष्म अवशेषों की खोज की है। 'डीएनए पोलीमॉर्फिज्म ऑफ द कंटेम्पोरेरी इंडियन पॉपुलेशंस एंड फाइलोजेनी' परियोजना के तहत पश्चिमोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, देहरादून के दो शोधकर्ताओं ने भोकसा तथा जौनसारी से आंकड़े तथा रक्त के नमूने एकत्र किए हैं जबकि पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र के दो अन्य शोधकर्ता खाम्पटी लोगों में फील्ड कार्य हेतु अरुणाचल प्रदेश गए। पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र ने नागालैंड में हॉर्न बिल महोत्सव पर एक वृत्तचित्र तैयार करने में भी भागीदारी की है।

शांतिपुर, पश्चिम बंगाल के बुनकरों पर एक वृत्तचित्र तैयार करने संबंधी कार्य भी प्रारंभ किया गया है और मुख्यालय से एक शोधकर्ता ने "भारत के लोग : सांस्कृतिक विविधता, पारम्परिक ज्ञान

का अध्ययन" नामक परियोजना के तहत फील्ड कार्य करने के लिए झारखंड के रांची तथा खुन्टी जिले का दौरा किया। टोटो (पश्चिम बंगाल), सौरिया पहाड़ियां, मुण्डा (झारखण्ड), टाई अहोम (असम), कोलम (आंध्र प्रदेश) तथा बेटा कुरुब्बा (कर्नाटक) समुदायों पर 'पारम्परिक ज्ञान : नृजाति औषध' विषय पर रिपोर्ट लिखी जा रही है। "जेनेटिक बेसिस ऑफ स्पाइनल डायसराफिज्म : ए डेवलपमेंटल कन्जेनिटल एनोमली" नामक एक सहयोगमूलक परियोजना के तहत रक्त के नमूने एकत्र करके विश्लेषण का कार्य किया गया है।

सर्वेक्षण संस्थान ने नेपाल के स्वदेशी लोगों की सूची के पुनरीक्षण हेतु विदेश मंत्रालय के जरिए नेपाल से आए एक शिष्टमंडल के अनुरोध पर नेपाल के अधिकारियों के साथ एक बैठक आयोजित की।

सर्वेक्षण संस्थान ने अपने मुख्यालय, कोलकाता के चार अधिकारियों को टोही शोध अध्ययन तथा प्रलेखन कार्य के प्रयोजनार्थ प्रेसीडेंसी सुधार गृह और अलीपुर महिला सुधार गृह के 15 दिनों के दौरे हेतु प्रतिनियुक्त किया।

इस संगठन को एक नवीन अभिकल्पना प्रदान करने तथा शोध हेतु व्यापक संभावना पैदा करने के लिए राष्ट्रीय सलाहकार समिति की पहलों के अनुसरण में उप-समितियों यथा "संगठनात्मक पुनरीक्षा एवं पुनर्संरचना", "सांस्कृतिक नृविज्ञान", "सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव मूल्यांकन", "जैव-चिकित्सा नृविज्ञान", "पालियो-नृविज्ञान", "नेटवर्किंग तथा संप्रेषण" और "पूर्वोत्तर" की स्थापना की गई और बैठकें आयोजित की गईं। उप-समितियों द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों/कार्रवाई योग्य बिन्दुओं को संस्कृति मंत्रालय को प्रस्तुत किया।

## परिणाम :

एचएलए-डीपीबी1 में एक अनूठा एकल न्यूक्लियोटाइड पॉलीमॉर्फिक साइट सीजीए>टीजीए जीन का पता लगाया है और यह पश्चिम बंगाल की आबादी में व्याप्त टाइप-1 मधुमेह से बहुत हद तक जुड़ा हुआ है और इसे मानव जीन बैंक डाटाबेस में प्रस्तुत किया गया है और इसे सं. एनसीबीआई एसएस # एचएलए-डीपीबी1 209724729 दिया गया है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने हाल ही में स्वतः प्रतिरक्षा में एक अन्य अनूठा एकल न्यूक्लियोटाइड पॉलीमॉर्फिक का भी पता लगाया है (मानव जीनोम जीन बैंक डाटाबेस ए.सं. एनसीबीआई\_आरएस111221466)।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने मार्च, 2010 में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में “भारत में पारम्परिक ज्ञान : आयाम तथा प्रासंगिकता” विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के शोधकर्ताओं समेत विभिन्न विषयक पृष्ठभूमि से जुड़े कई अध्येताओं ने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर के स्वर्ण जयंती समारोह मनाने के लिए, वर्षभर चलने वाले समारोह का उद्घाटन मैसूर में किया गया और इस अवसर पर आईजीआरएमएस, भोपाल और एन्थ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन, मैसूर के सहयोग से अगस्त, 2010 में “ट्राइब्स एंड एनालॉग्स पीपुल : कंटेम्पोरेरी ईशूज” विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया। पांच सत्रों में कुल 44 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। एसआरसी, मैसूर ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर “फैसेट्स ऑफ एन्थ्रोपोलॉजिकल रीसर्च, टीचिंग एंड ट्रेनिंग : ए रेट्रोस्पेक्ट एंड प्रोस्पेक्ट” नामक एक कार्यशाला केरल (कन्नूर विश्वविद्यालय) और आंध्र प्रदेश (हैदराबाद विश्वविद्यालय) में आयोजित की।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने भारतीय मानव विज्ञान सोसाइटी तथा आईजीआरएमएस, भोपाल के सहयोग से नवम्बर, 2010 में अपने मुख्यालय, कोलकाता में “प्लूरल नेचर ऑफ एन्थ्रोपोलॉजी” विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का भी आयोजन किया। लगभग 24 सुविख्यात शिक्षाविदों ने विभिन्न विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए और मानव विज्ञान के साथ उनके संबंधों को रेखांकित किया गया।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव विज्ञान संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से दिनांक 21 से 23 फरवरी, 2010 तक कोलकाता में भारतीय राष्ट्रीय नृविज्ञान संघ और अकादमी (आईएनसीए) की मानव विज्ञान अंतर कांग्रेस का आयोजन किया। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण द्वारा ‘विकास पहलों के सामाजिक प्रभाव’ पर आयोजित किए गए पूरे सत्र में इस पर चर्चा की गई।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने अगस्त 2010 में पारम्परिक औषध विषय पर “भारत के लोग : सांस्कृतिक विविधता” नामक परियोजना के तहत पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में एक सप्ताह की एक कार्यशाला का आयोजन किया।

सर्वेक्षण संस्थान के पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता में सितम्बर में “दृश्य मानव विज्ञान पर प्रशिक्षण-व-प्रबोधन कार्यक्रम” भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के शोध एवं तकनीकी कर्मचारियों हेतु आयोजित किया गया।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने चीन में 3 से 20 अप्रैल, 2010 तक आयोजित भारत महोत्सव में भाग लिया। सर्वेक्षण ने कोन्च नागा की पारम्परिक जीवनशैली के प्रलेखन हेतु एक योजना तैयार करने के बावत डॉ० लतिका वर्दराजन द्वारा मॉन, नागालैंड में 29 से 30 मई, 2010 तक आयोजित “अमूर्त तथा मूर्त सांस्कृतिक धरोहर” विषय पर एक बैठक में भाग लेने के लिए मुख्यालय से भी दो अधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया।

सरदार सरोवर परियोजना, इंदिरा सागर परियोजना तथा ओंकारेश्वर परियोजना हेतु पर्यावरण रक्षोपायों के संबंध में सर्वेक्षण/अध्ययन/आयोजना के मूल्यांकन/योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु सर्वेक्षण संस्थान ने सहयोजित सदस्य के रूप में भाग लिया। इस संबंध में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 16 जुलाई, 2010 को एक बैठक आयोजित की गई थी। सर्वेक्षण संस्थान ने शास्त्री भवन, नई दिल्ली में 15 जुलाई, 2010 को आयोजित 21वीं आरएमएस समिति की बैठक में भाग लिया।

“फूड एंड बेवरेज एज ए मेकर ऑफ कल्चरल आईडेंटिटी : ए केस स्टडी ऑफ सम कम्युनिटीज ऑफ वेस्ट बंगाल ऑफ लोकायत, कोलकाता” शीर्षक परियोजना का पर्यवेक्षण करने हेतु मानदेय आधार पर परियोजना निदेशक के रूप में कार्य करने के लिए भी इस सर्वेक्षण संस्थान के मुख्यालय, कोलकाता से एक अधिकारी को अनुमति दी गई।

बस्तर “प्रकृति बचाओ समिति”, जगदलपुर के एक प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठन के सहयोग से जोनल मानव विज्ञान संग्रहालय में बस्तर के स्वदेशी पौधों के रोपण हेतु इस सर्वेक्षण संस्थान के जोनल मानव विज्ञान संग्रहालय, जगदलपुर ने एक विस्तृत योजना तैयार की। “वन महोत्सव” के अवसर पर कई वरिष्ठ नागरिकों, शिक्षाविदों तथा जनजातीय नेताओं ने भाग लिया।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने एशियाटिक सोसाइटी और सर्वेक्षण संस्थान के पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता; कन्नूर विश्वविद्यालय, केरल और हैदराबाद विश्वविद्यालय में अपनी लोकप्रिय प्रदर्शनी

“मानव उत्पत्ति, जीनोम तथा भारत के लोग” विषय पर एक लोकप्रिय प्रदर्शनी का आयोजन किया और आगामी वर्ष में हुबली तथा चेन्नई में भी यह प्रदर्शनी निर्धारित की गई है।

सर्वेक्षण संस्थान ने पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थलों पर विविध शोध परियोजनाओं पर कई प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया और पश्चिम बंगाल के दामोदर मेले में थैलेसेमिया पर एक नाटक का मंचन किया गया। उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर ने 8 से 17 अक्टूबर, 2010 तक दशहरा प्रदर्शनी का आयोजन किया और 12 अक्टूबर, 2010 को “चाल्की माझी” विषय पर एक कार्यशाला भी आयोजित की। सर्वेक्षण संस्थान ने बिधाननगर, कोलकाता में आयोजित किशोर विज्ञान मेले में “भारत में जैव-सांस्कृतिक विविधता” विषय पर एक प्रदर्शनी आयोजित की है। कोलाघाट उत्सव, पूर्व मेदिनिपुर, पश्चिम बंगाल में 14 से 21 नवम्बर, 2010 तक एक और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। संगीत नाटक अकादमी के आमंत्रण पर शांतिनिकेतन के निकट दान्डोरा में सांथाल जीवन तथा संस्कृति पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई है।

सर्वेक्षण संस्थान ने नवग्राम, पश्चिम बंगाल में 24 दिसम्बर, 2010 से 2 जनवरी, 2011 तक आयोजित पुस्तक मेले में “भारत के लोग: सांस्कृतिक विविधता” विषय पर एक प्रदर्शनी आयोजित की है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के कर्मचारियों द्वारा सर्वेक्षण की योजनागत परियोजना के एक भाग के रूप में थैलेसेमिया के प्रति जागरूकता हेतु “राजूर स्वप्न” नामक एक नाटक का मंचन इसी स्थान पर 31 दिसम्बर, 2010 को किया गया।

इस सर्वेक्षण संस्थान के मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर में ‘पॉपुलेशन जीनोमिक्स ऑफ एंथ्रोपोमेट्रिक वेरिएशंस इन सागर, मध्य प्रदेश’ नामक परियोजना के तहत 6 से 10 दिसम्बर, 2010 तक सागर विश्वविद्यालय के संकाय तथा अध्येताओं के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई।

वर्ष के दौरान भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, मुख्यालय, इसके क्षेत्रीय केंद्र, उप-क्षेत्रीय केंद्र और अन्य कार्यालयों ने हिंदी से संबंधित आवधिक कार्यशालाओं, हिंदी पखवाड़े/सप्ताह में भाग लिया।

लोकप्रिय मांग को ध्यान में रखते हुए भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने अपने प्रकाशन कार्यक्रम को जारी रखते हुए संस्मरणों एवं प्रासंगिक प्रकाशनों की श्रृंखला में 34 प्रकाशनों के पुनः मुद्रित संस्करण निकाले। साथ ही भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण की पत्रिकाओं के दो संस्करणों का भी प्रकाशन किया गया और बी.के. मोहंती द्वारा रचित “मॉचुअरी प्रैक्टिसेस ऑफ द एचओ-एन एंथ्रोपोलॉजिकल स्टडी” और बी.के. रवि द्वारा रचित “इम्पैक्ट ऑफ इंड्यूस्ड टेक्नोलॉजिकल चेंज ऑन एग्रेरियन सिचुएशन इन ट्राइबल विलेजेज ऑफ आंध्र प्रदेश” नामक दो पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।

“द निकोबारीज” नामक पुस्तक का हिंदी अनुवाद कार्य पूरा होने वाला है, जबकि अनेक पुस्तकों का अनुवाद किया जाना है और अगले वर्ष प्रकाशित किए जाने हेतु बहुत सी पुस्तकें प्रकाशन के विभिन्न चरणों में हैं।

## गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) की स्थापना सितंबर, 1984 में गांधी दर्शन, राजघाट एवं गांधी स्मृति 5, तीस जनवरी मार्ग को मिलाकर एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी और यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक परामर्श एवं वित्तीय सहायता के अंतर्गत कार्य कर रही है। भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और वरिष्ठ गांधीवादियों और सरकार के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों का इसका एक नामित संगठन है जो इसके कार्यक्रमों का मार्गदर्शन करता है। इस समिति का प्राथमिक उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, मिशन तथा विचारों का प्रचार-प्रसार करना है। इसके दो परिसर हैं :

**गांधी स्मृति 5**, तीस जनवरी मार्ग पर, पुराने बिरला हाउस, नई दिल्ली में स्थित है जहां दिनांक 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी शहीद हुए थे। इस स्थान पर महात्मा गांधी दिनांक 9 सितम्बर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक रहे थे। अतः इस पवित्र स्थल पर महात्मा गांधी के अंतिम 144 दिनों से जुड़ी अनेक स्मृतियों का संग्रह है। पुराने बिरला हाउस को भारत सरकार ने 1971 में अधिग्रहित किया था और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक में परिवर्तित करके दिनांक 15 अगस्त, 1973 को आम जनता के लिए खोला गया था। इसके संरक्षण में वह कमरा जहां गांधी जी रहे थे, वह प्रार्थना स्थल जिसका उपयोग प्रार्थना सभा आयोजित करने के लिए किया जाता था और वह स्थल शामिल है जहां गांधीजी हत्यारे की गोलियों से घायल होकर गिरे थे। इस भवन और इसके आस-पास के स्थल को उन्हीं दिनों की तरह संरक्षित रखा गया है। जिन वर्षों में गांधीजी यहां रहे थे उनसे सम्बंधित फोटोग्राफ, मूर्तिकला, पेंटिंग, भित्ती चित्रों, शिला लेख और स्मृति चिन्हों को यहां प्रदर्शित किया जाता है। गांधी जी के व्यक्तित्व के संक्षिप्त प्रभावों को भी सावधानीपूर्वक संरक्षित रखा गया है। उक्त स्थल जहां गांधी जी शहीद हुए थे, पर शहीदी कॉलम लिखा गया है।

गांधी स्मृति की फोटो प्रदर्शनी का नवीकरण किया गया है। दक्षिण स्कंध में श्वेत-श्याम 35 फोटोग्राफ के माध्यम से मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा गांधी में परिवर्तित होने का चित्रण किया गया है जिसमें संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। इस दक्षिण स्कंध में एक सभागार और समिति कक्ष भी है।

इसके अतिरिक्त, इस प्रदर्शनी को इस प्रकार निर्धारित किया जाता है कि दक्षिण स्कंध मोहनदास करमचंद गांधी नाम के बालक की जीवन गाथा तथा विकास और किस प्रकार उन्होंने 'सत्य के प्रयोग' के माध्यम से भारत और मानवता के उद्धार के लिए नेतृत्व किया, का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करे। इस संग्रहालय में इंटरनल गांधी नामक अद्यतन विशेषज्ञता से युक्त मल्टीमीडिया

4.1.3



प्रदर्शनी है। गांधी स्मृति में इंडोनेशिया की विश्व शांति गोंग समिति द्वारा प्रदान की गई शांति गोंग को भी गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

**गांधी दर्शन**, इसका द्वितीय परिसर राजघाट स्थित महात्मा गांधी समाधि से जुड़ा हुआ है। यह विशाल परिसर वर्ष 1969 में महात्मा गांधी शताब्दी की स्मृति में अस्तित्व में आया था। इस समारोह को मनाने के लिए इसमें एक अंतर्राष्ट्रीय गांधी दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। महात्मा के अमर संदेश “मेरा जीवन ही मेरा संदेश है” को चिरंतन रखने के लिए इस पूरे परिसर को छः बड़े पैवेलियनों में विभाजित किया गया है। हमारे संस्थापक नेताओं ने यह परिकल्पना की थी कि कालांतर में यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षा केन्द्र में विकसित होगा।

वर्ष 1994 में गांधी जी की 125वीं जयंती के दौरान यह सपना तब साकार हुआ जब इस परिसर को अंतर्राष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन और शांति अनुसंधान केन्द्र (आईसीजीएसपीआर) के रूप में परिवर्तित किया गया। यह केन्द्र भारत और विदेश के विद्वानों को अनुसंधान और मार्गदर्शन सुविधाएं, विभिन्न शांति पहल के प्रलेखन की सुविधाएं और गांधी जी तथा उनसे सम्बद्ध विषयों के बारे में एक ही स्थान पर विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान करने की व्यवस्था करता है। इस समय यह केन्द्र गांधी जी के संबंध में विस्तृत प्रदर्शनी, सम्मेलन कक्ष, मुख्य राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय बैठकों के लिए शिविर सुविधाएं, पुस्तकालय, आवासीय विद्वानों के लिए छात्रावास, बाल कर्नर, फोटो यूनिट और प्रकाशन प्रभाग जैसी सुविधाएं प्रदान करता है। यह केन्द्र एक पत्रिका और बाल समाचार-पत्र का भी प्रकाशन करता है।

## घटनाक्रम

समिति ने नोआखाली गांधी आश्रम, बांग्लादेश के सहयोग से दिनांक 3 और 4 जून, 2010 को आज के विश्व में गांधीजी के शांति और अहिंसा के संदेश के महत्व पर एक सम्मेलन आयोजित किया। श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्य, उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) इस संगोष्ठी की सम्मानित अतिथि थी। नोआखाली के अग्रणी नागरिकों के साथ उपाध्यक्ष, जीएसडीएस की विशेष बातचीत का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्य ने यह कहा कि “अहिंसा और शांति हमारे जीवन और सृजन का सम्मान करना हमारी चेतना के अनुष्ठान हैं। हमारी चेतना के अनुष्ठान को जन-आंदोलन के एक ऐसे उद्देश्य में परिवर्तित किया जाना

चाहिए जो हिंसात्मक मानव मस्तिष्क को अहिंसक बनाने और पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए हो। यह समारोह इस प्रकार का अमर संदेश देता है कि सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठकर कार्य करो”।

विभिन्न सहयोगी कार्यक्रम के अतिरिक्त समिति ने नोआखाली में विस्तृत पुस्तकालय और प्रलेखन केन्द्र स्थापित करने का भी प्रस्ताव किया है।

राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद ने दिनांक 28 और 29 अगस्त, 2010 को गांधी दर्शन में पुनरुद्धार, संकेन्द्रण और नई तालीम पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन को गांधी स्मृति और दर्शन समिति, भारतीय समाज विज्ञान और अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) और भारतीय दर्शन शास्त्र अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर) के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का उद्देश्य विचारकों और व्यावसायिकों को नई तालीम से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए सामान्य मंच पर लाना है। डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति, भारत ने इस दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। इसके समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफेसर यशपाल, विख्यात वैज्ञानिक और पूर्व-अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग थे।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने नमक सत्याग्रह के 80 वर्ष पूरे होने का समारोह मनाने के लिए दिनांक 27 अप्रैल, 2010 को “समाज कार्य के लिए स्वयंसेवक बने – दांडी मार्च की शिक्षा” पर अंतर-विद्यालय भाषण प्रतियोगिता आयोजित की। इस प्रतियोगिता में 60 विद्यालयों ने भाग लिया। सुश्री खुशबू न्यू स्टेट अकादमी, पीतमपुरा इस प्रतियोगिता में विजयी रही और दांडी मार्च रोलिंग प्राप्त की।

महात्मा गांधी के जीवन के बारे में बच्चों को जानकारी प्रदान करने के प्रयास में समिति प्रति वर्ष गांधी प्रश्नोत्तरी का आयोजन करती है। यह प्रश्नोत्तरी दिनांक 12 से 19 मई, 2010 तक रांची, झारखण्ड के 20 विद्यालयों में जन विकास और प्रशिक्षण संस्थान (पीआईडीटी) और स्वयंसेवी संस्थान के सहयोग से आयोजित की गई थी।

समिति ने दिनांक 26 अगस्त, 2010 को ‘क्या घरेलू हिंसा वैयक्तिक मामला है?’ पर एक अंतर-विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की। इस वाद-विवाद प्रतियोगिता में 62 विद्यालयों ने भाग लिया था। दो विद्यालयों अर्थात् केन्द्रीय विद्यालय (एण्ड्रूज गंज) और एयर फोर्स गोल्डन जुबली संस्थान



(सुब्रतो पार्क) ने इस वाद-विवाद प्रतियोगिता में इंडियन ओपिनियन रोलिंग ट्राफी जीती थी।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति, दिल्ली और भारत के विभिन्न भागों में पिछले पन्द्रह वर्षों से नियमित रूप से गांधी ग्रीष्म विद्यालय कार्यक्रम आयोजित करती रही है। इसका उद्देश्य ग्रीष्म अवकाश के दौरान विद्यार्थी और गैर-विद्यार्थी युवाओं को सार्थक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सामूहिक कार्यकलापों में शामिल करना है ताकि उनके कौशलों और ज्ञान में वृद्धि की जा सके और इस प्रकार महात्मा गांधी के जीवन, संदेश और दर्शन का प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्हें एक आदर्श मंच प्रदान किया जा सके।

गांधी ग्रीष्म विद्यालय का आयोजन दिनांक 28 मई से 26 जून, 2010 तक किया गया था। इसमें समाज के कमजोर वर्गों के बच्चों को सृजन-गांधी स्मृति शिक्षा केन्द्र के तहत कविता, सिलाई, कढ़ाई और बुनाई, संगीत, स्वांग, योग, नृत्य, कम्प्यूटर और सूत कातने जैसे कार्यकलापों का प्रशिक्षण दिया गया। इस वर्ष लगभग 200 विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

### हिमाचल प्रदेश में बच्चों के लिए कार्यक्रम

- केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, दोलांजी, हिमाचल प्रदेश की शिशु पंचायतों के सदस्यों के लिए दिनांक 4 और 5 जून, 2010 को प्रथम उपचार और आधारभूत स्वास्थ्य देखभाल पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधारभूत स्वास्थ्य देखभाल मुद्दों की समझबूझ और इस क्षेत्र में फैलने वाले रोगों के संबंध में जानकारी को शामिल किया गया था। इस कार्यशाला में लगभग 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया था।
- दिनांक 11 से 14 अगस्त, 2010 तक 'संचार के माध्यम से गांधीवादी मूल्यों को प्रोत्साहन' पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। सोलन के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 50 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया था।
- केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, दोलांजी, जिला सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) में दिनांक 29 अगस्त, 2010 को 'अनेकता में एकता' पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया था।
- ऊंचाघाट, सोलन, हिमाचल प्रदेश में शिशु पंचायतों के सदस्यों के लिए दिनांक 15 और 16 जुलाई, 2010 को

एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में इस बात पर विशेष ध्यान दिया कि विद्यार्थी सामुदायिक विकास में किस प्रकार सार्थक योगदान कर सकते हैं।

- सोलन संस्थान ने विश्व खाद्य दिवस मनाया। इस अवसर पर "भूख के विरुद्ध एकजुट होने" पर अंतर-विद्यालय वक्ता प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- राजस्थान समग्र सेवा संघ, जयपुर ने गांधी स्मृति और दर्शन समिति के सहयोग से दिनांक 25 दिसम्बर, 2010 को 'मोहन से महात्मा तक विषय पर कठपुतली नाटक' आयोजित किया। इस अवसर पर सुश्री मणिमाला, निदेशक, जीएसडीएस उपस्थित थी।

### युवा कार्यक्रम

समिति ने देवनागिरी विश्वविद्यालय (देवनागिरी, कर्नाटक) और बेलगाम एकीकृत ग्रामीण विकास सोसायटी के सहयोग से दिनांक 7 और 8 अप्रैल, 2010 को शांति और विवाद समाधान पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की। इस संगोष्ठी में कर्नाटक के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों तथा शिक्षा संस्थाओं के लगभग 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में विवाद समाधान, शांति और अहिंसक समाज की व्यवस्था कैसे की जाए सहित अन्य मुद्दों पर गहन रूप से विचार-विमर्श और वार्ता की गई।

मानव अधिकार दिवस समारोह के भाग के रूप में गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने गांधी दर्शन में दिनांक 10 दिसम्बर, 2010 को 'सामाजिक मुद्दों पर नुककड-नाटक' कार्यक्रम आयोजित किया। लगभग 500 प्रतिभागियों के 19 समूहों ने अपने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक सरोकार से संबंधित मुद्दों को व्यक्त किया। इस समारोह में कॉलेज और थियेटर समूहों ने भाग लिया। इनके साथ-साथ इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के गैर-सरकारी संगठनों जैसे बटरफ्लाई, कैप्स प्लान, आश्रय अधिकार अभियान, बाल ज्योति मंच, मंजिल वेल्फेयर सोसायटी, चेतना-बढ़ते कदम, कल्याणम, टी.आई. समूह त्रिलोकपुरी, सचल शिशु सदन ने भी भाग लिया। कॉलेज समूह में जानकी देवी स्मारक कॉलेज, खालसा कॉलेज, गार्गी कॉलेज, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, श्री गुरु गोविन्द सिंह वाणिज्य कॉलेज और शिवाजी कॉलेज शामिल थे। इसमें जन कला साहित्य मंच संस्था, जयपुर ने विशेष अन्तः क्रियात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

समिति ने जन कला साहित्य महात्मा संस्था, जयपुर के सहयोग से दिनांक 26 दिसम्बर, 2010 को युवा सामाजिक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया। इसमें सुश्री मणिमाला, निदेशक, जीएसडीएस विशेष रूप से पधारी। इस सम्मेलन में जयपुर के सुदूरवर्ती ग्रामों में चार गांधी अध्ययन केन्द्र शुरू करने का प्रस्ताव किया गया। इसमें यह भी प्रस्ताव किया गया कि जयपुर में 'लघु गांधी संग्रहालय' स्थापित किया जाएगा।

राजस्थान में दिनांक 26 दिसम्बर, 2010 को सुश्री मणिमाला, निदेशक, जीएसडीएस के साथ कलाकारों (कवार्स - कहानी कहने वाले बॉक्स बनाने वालों) की एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक को सृजन के सहयोग से आयोजित किया गया। उन्होंने कहानी कहने वाले बॉक्सों के माध्यम से महात्मा गांधी जी के जीवन पर प्रदर्शनी तैयार करने का प्रस्ताव किया।

## स्मारक कार्यक्रम

गांधी जयंती के कार्यक्रमों के भाग के रूप में समिति ने गांधी दर्शन, राजघाट में दिनांक 24 सितम्बर, 2010 को एक पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की। इस प्रतियोगिता में दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों के अतिरिक्त आश्रय अधिकार अभियान और खुशी जैसे गैर-सरकारी संगठनों के बच्चों ने भी भाग लिया। इस पेंटिंग प्रतियोगिता में कनिष्ठ विद्यार्थियों के लिए विषय 'पर्यावरण संरक्षण' तथा वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए 'शिक्षा का अधिकार' था। इस प्रतियोगिता में 100 से भी अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया था।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने दिनांक 1 अक्टूबर, 2010 को गांधी जयंती मेले में भाग लिया। समिति ने इस मेले में 'गांधीजी के सपनों का भारत' पर अपनी प्रदर्शनी के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। इस मेले को दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) ने महात्मा गांधी की 141वीं जयंती मनाने के लिए आयोजित किया था। इस मेले के मुख्य कार्यक्रम खादी उत्पादों की बिक्री, सांस्कृतिक और लोक कार्यक्रम, कठपुतली और मैजिक शो और निःशुल्क स्वास्थ्य जांच थे।

भारत के महामहिम उप-राष्ट्रपति डा० मोहम्मद हामिद अंसारी ने महात्मा गांधी की 141वीं जयंती के अवसर पर गांधी स्मृति में दिनांक 2 अक्टूबर, 2010 को विशेष रूप से राष्ट्र की ओर से

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का स्मरण किया। इस अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री डा० मनमोहन सिंह, वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों, संसद सदस्यों, विभिन्न राजनयिक कोर के सदस्यों और समाज के विभिन्न वर्गों के विख्यात व्यक्तियों ने भी बापू को भाव-भीनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सर्वधर्म सभा का भी आयोजन किया गया।

दिल्ली में गांधी जयंती समारोह के अतिरिक्त समिति ने विभिन्न संस्थाओं/गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से भी इस दिवस को मनाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए। एम.एस. पेंवार संचार और प्रबंधन संस्थान ने दिनांक 24 से 26 सितम्बर, 2010 तक तीन दिवसीय गांधी समारोह मनाया। इस अवसर पर अमेरिका के विख्यात गांधीवादी विद्वान श्री डोनाल्ड मैक्विनी ने '21वीं शताब्दी में गांधीवादी दर्शन' पर व्याख्यान दिया।

डिब्रूगढ़ जिले के कुछ ग्रामों में लगभग 15 शिशु पंचायतों ने गांधी जयंती मनाई। जनसंचार विभाग, गढ़वाल विश्वविद्यालय और ब्रह्मपुत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान ने दिनांक 2 अक्टूबर, 2010 को 'युवा और रचनात्मक कार्य' पर आधे दिन का विचार-विमर्श सत्र आयोजित किया। हार्नबिल विकास केन्द्र, अरुणाचल प्रदेश ने दिनांक 2 अक्टूबर, 2010 को गांधी जयंती के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालय शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा अन्य स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इस अवसर पर 'बापू और उनके दर्शन' और 'स्वच्छ और हरा-भरा अरुणाचल' पर पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर, इम्फाल ने दिनांक 2 से 24 अक्टूबर, 2010 तक गांधी समारोह-2010 आयोजित करके गांधी जयंती मनाई। चिथी कस्तूरबा गांधी केन्द्र (भुवनेश्वर) ने बालासोर जिले के ग्राम खैराडिहा में गांधी जयंती मनाई जिसमें ऐतिहासिक स्वतंत्रता संग्राम पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

## विकास संबंधी कार्यक्रम

पूर्वोत्तर क्षेत्र के साथ प्रत्यक्ष संबंध बनाने की भारत सरकार की पहल से प्रेरित होकर गांधी स्मृति और दर्शन समिति पिछले एक दशक से महिलाओं, बच्चों और युवाओं को शामिल करके मूल्य-आधारित कार्यक्रम आयोजित करती रही है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में समिति की कुछ नियमित पहलों में बच्चों के रचनात्मक कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए गांधी प्रश्नोत्तरी; गांधीवादी

मूल्यां पर कार्यशालाएं; गांधी मीडिया साक्षरता कार्यक्रम; शिशु पंचायत; समाज के लाभवंचित वर्गों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम और सम्मेलन शामिल हैं।

असम के विभिन्न विद्यालयों में दिनांक 3 से 12 जून, 2010 तक कुछ कार्यशालाएं आयोजित की गई थी। इन कार्यशालाओं में प्रवृत्ति संबंधी विकास, मूल्य और संचार जैसे कुछ विषयों पर विचार-विमर्श किया गया था। इन कार्यशालाओं में डिब्रूगढ़ के पांच विद्यालयों के लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

समिति ने यूनीसेफ के सहयोग से असम में 'शिशु मित्र — शिशु पंचायत के मित्र' की दस दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला दिनांक 20 से 30 अगस्त, 2010 तक डिब्रूगढ़ में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में बाल अधिकार, सामुदायिक थियेटर, शिशु पंचायतों के कार्यकरण और शिशु मित्र की भूमिका से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। इसमें विचारित मुद्दों के बारे में बेहतर समझबूझ पैदा करने के लिए स्वांग यंत्रों, आदर्श नाटकों और सामुदायिक थियेटर का उपयोग किया गया था। शिशु पंचायतें किस तरह कार्य कर रही हैं और इनमें कैसे सुधार किया जा सकता है, के संबंध जानकारी प्रदान करने के लिए सहभागियों के साथ क्षेत्र दौरे किए गए थे। डिब्रूगढ़ में शिशु मित्रों के कार्य का विस्तार करने के लिए अक्टूबर-दिसम्बर, 2010 के दौरान शिशु मित्रों के क्षमता निर्माण कार्यक्रम के लिए कुछ अनुवर्ती कार्यवाई संबंधी कार्यशालाएं भी आयोजित की गई थी।

असम में युवा संवाददाता नेटवर्क के प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इस कार्यक्रम को समिति ने दिनांक 30 अगस्त, 2010 को कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक न्यास (केजीएनएमटी) और यूनीसेफ के सहयोग से आयोजित किया।

समिति ने मानव सेवा संघ के सहयोग से दिनांक 25 सितम्बर, 2010 को स्वाहिद कुशल कंवर उच्च विद्यालय, पणिखायती, चन्द्रपुर, कामरूप मैट्रो जिला, असम में एक दिवसीय शिशु ग्राम सभा आयोजित की। इस कार्यक्रम में इस क्षेत्र के लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में विचारित मुख्य मुद्दों में शिशु पंचायत द्वारा शुरू किया गया सुरोवी साक्षरता कार्यक्रम, सुरोवी स्वच्छता कार्यक्रम और स्थानीय तामुलबाड़ी शिव मंदिर परिसर में सुरोवी पार्क शामिल थे। इसमें यह निर्णय लिया गया था कि सुरोवी दल सुरोवी पार्क को विकसित करने का हरसंभव

प्रसास करेगा और बच्चे भी पार्क विकास में योगदान कर सकते हैं/इसके लिए निधियां जुटा सकते हैं। दल ने जिले के अन्य क्षेत्रों तक सुरोवी साक्षरता कार्यक्रम का विस्तार करने की भी योजना बनाई।

पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग ने समिति के सहयोग से केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वी एयर कमाण्ड, नोंगलियर, अपर शिलांग में दिनांक 9 से 11 अप्रैल, 2010 तक तीन दिवसीय 'गांधी कार्यशाला' का आयोजन किया। इस कार्यशाला का विषय 'हास्य' के माध्यम से गांधीवादी मूल्यां को प्रोत्साहित करना था। इस कार्यशाला में विभिन्न विद्यालयों के 37 विद्यार्थियों ने भाग लिया और महिला सशक्तीकरण, अहिंसा, भाईचारे, सादा जीवन, धूम्रपान और तम्बाकू को ना कहें जैसे मुद्दों पर हास्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

समिति ने इग्नू के व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (आईआईवीईटी), शिलांग और ब्रह्मपुत्र अनुसंधान और विकास संस्थान (बीआईआरडी), असम के सहयोग से विभिन्न कस्तूरबा गांधी केन्द्रों और भारत के विभिन्न राज्यों में समिति के सहयोग से कार्य कर रहे अन्य संगठनों के प्रतिनिधियों के लिए पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यक्रम को दिनांक 25 से 30 जुलाई, 2010 तक शिलांग में आयोजित किया गया था। इस कार्यशाला में शामिल किए गए मुद्दों में उद्यमिता विकास, उत्पाद विपणन, प्रॉडक्ट मिक्स, लघु उद्यमों का प्रबंधन और संचार कौशलों का विकास शामिल थे।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति की निदेशक डा० सविता सिंह ने दिनांक 16 मई, 2010 को चंगनगई उचिकोन, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर में व्यावसायिक बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन किया। यह केन्द्र गांधी स्मृति और दर्शन समिति तथा कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर की संयुक्त पहल है। इस बुनाई केन्द्र की स्थापना करके इस क्षेत्र की लाभवंचित महिलाओं को बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान करने की परिकल्पना की गई है।

डा० सविता सिंह ने दिनांक 19 मई, 2010 को मणिपुर के बच्चों द्वारा प्रकाशित किए गए तिमाही बाल समाचार-पत्र नवाखोल के तीसरे संस्करण को जारी किया। इस समाचार-पत्र को समिति कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान के सहयोग से प्रकाशित करती है। इस समाचार-पत्र के माध्यम से बच्चे अपने और अपने राज्य से संबंधित मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

मणिपुर की विलुप्त हो रही कलाओं पर दिनांक 22 और 23 जुलाई, 2010 को इम्फाल में दो दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया। इस सेमिनार का मुख्य विषय लई हराओबा समारोह, खुनूंग इशि और लिकोन शन्नाबा की प्रवृत्तियों का विलुप्त होते जाना था। इस सेमिनार में मुख्य ध्यान उन प्रयासों पर दिया गया जो प्राचीन वैष्णव-पूर्व मणिपुरी संस्कृति की इन परम्परागत कलाओं को बचाने के लिए आवश्यक हैं।

संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष (2010) को मनाने के लिए समिति ने कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान (केजीआईडी), मणिपुर के सहयोग से दिनांक 12 अगस्त, 2010 को मणिपुर में 'युवा और बच्चे – कल की आशा' पर एक वर्षीय कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र संघ अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के तत्वावधान में शुरू किया गया है। राज्य के विभिन्न जिलों से युवा स्वयंसेवकों और शिशु पंचायतों के सदस्यों ने इस उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

अरुणाचल प्रदेश की महिलाओं और बालिकाओं पर किए जाने वाले अत्याचारों को प्रदर्शित करने के लिए होर्नबिल विकास केन्द्र (एचसीडी) के सहयोग से समिति पिछले कुछ वर्षों से कुछ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करती रही है। इस प्रयास के अनुक्रम में दिनांक 24 अक्टूबर, 2010 को लपिया नाटक का मंचन किया गया। अरुणाचल प्रदेश में निशी जनजाति में निशी प्रथा तथा परम्परा पर आधारित लपिया एक सामाजिक बुराई है।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने चम्पारण में एक दशक पहले शुरू किए गए विकासात्मक कार्य को जारी रखा है। गांधीवादी विरासत को उसके प्राचीन गौरव के साथ संरक्षित और सुरक्षित रखने के संबंध में अपने चार्टर में निहित उद्देश्यों के भाग के रूप में गांधी स्मृति और दर्शन समिति चम्पारण के इन दो बेसिक विद्यालयों के पुनरुद्धार के लिए और महात्मा गांधी द्वारा यथा-परिकल्पित शिक्षा की नई तालीम पद्धति को जनता तक पहुंचाने के लिए कार्य करती रही है।

ऐतिहासिक चम्पारण सत्याग्रह की स्मृति में दिनांक 18 अप्रैल, 2010 को मोतिहारी, पश्चिमी चम्पारण में एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस समारोह के भाग के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना दिवस की 125वीं वर्षगांठ मनाने के लिए भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके साथ-साथ

दिनांक 18 अप्रैल, 2010 को राष्ट्रीय व्याख्यान माला – राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के भाग के रूप में चम्पारण में एक सेमिनार आयोजित की गई। इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री जगदीश टाइटलर; डा० रजी अहमद, सचिव, गांधी संग्रहालय, पटना; अखिल भारतीय कांग्रेस समिति से डा० अंजलि राय; दिल्ली कांग्रेस समिति के अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र शुक्ला; बिहार कांग्रेस समिति के सचिव, डा० मनचन्दा प्रसाद सिंह; श्री विजय शंकर दुबे और अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

## अंतर्राष्ट्रीय सीमा के लिए कार्यक्रम

जनजातीय बाहुल्य जिले किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में दिनांक 25 से 29 अक्टूबर, 2010 तक गांधी समारोह आयोजित किया गया। इस जिले के कुछ विद्यालयों और कॉलेजों में गांधीजी के जीवन और संदेश पर अन्तः क्रियात्मक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त, स्थानीय शिशु पंचायतों के साथ इस मुद्दे पर विचार-विमर्श किया गया कि वे समुदाय से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता पैदा करने में किस प्रकार योगदान कर सकती है।

## हिन्दी भाषा को प्रोत्साहन संबंधी कार्यक्रम

समिति राजभाषा 'हिन्दी' को प्रोत्साहन देने के लिए नियमित रूप से कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित करती है। पूरे वर्ष गांधी स्मृति, राष्ट्रीय महात्म गांधी स्मारक में कर्मचारी सदस्यों और स्वयंसेवकों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

मार्च, 2010 में समिति ने "दांडी मार्च – ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह" और कस्तूरबा-नारी शक्ति की मूर्ति पर दो हिन्दी निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने सितम्बर माह में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित करके हिन्दी पखवाड़ा मनाया।

## व्याख्यान/कार्यशाला/विचार-विमर्श/सेमिनार/सम्मेलन

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने मास्टर डेल पी प्रतिष्ठान के सहयोग से दिनांक 6 अप्रैल, 2010 को गांधी स्मृति में "अपना महानतम जीवन जियो" पर व्याख्यान आयोजित किया। यह व्याख्यान मास्टर डेल.पी. ने दिया जो चमत्कारी चिकित्सक और आधुनिक मनीषी के रूप में विख्यात हैं।

गांधी स्मृति में दिनांक 21 अगस्त, 2010 को श्री बृज राजाराम याज्ञनिक ने गांधीवादी मूल्यों पर व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान एम.के.जी. महात्मा गांधी – शांति, सत्य और अहिंसा की कल्पना नामक पुस्तक पर फिल्म शो के बाद दिया गया। श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्य, उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने इस अवसर की गरिमा बढ़ाई।

श्री के.डी. मदान जो महात्मा गांधी की शहादत के जीवित चश्मदीदों में से एक हैं, ने उन घटनाओं को पुनः एकत्र किया है जो दिनांक 30 जनवरी, 1948 की शाम को बिरला हाउस (अब गांधी स्मृति) में घटित हुई थी। गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने यह कार्यक्रम दिनांक 10 नवम्बर, 2010 को गांधी शांति प्रतिष्ठान, गांधी निधि, एवीएआरडी और राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के सहयोग से आयोजित किया।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति की निदेशक, सुश्री मणिमाला ने दिनांक 25 दिसम्बर, 2010 को राजस्थान में आयोजित किए गए राज्य खादी कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन को राजस्थान खादी बोर्ड, जयपुर ने आयोजित किया और इसमें 35 व्यक्तियों ने भाग लिया था।

## विविध कार्यक्रम

इस बात पर बल देते हुए कि गांधी जी को खादी के दर्शन से अलग नहीं किया जा सकता। श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्य, उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने यह महसूस किया कि यह सत्याग्रह के दर्शन की ही शक्ति थी जिससे महात्मा गांधी जी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के लिए भारत की आत्मा में चरखा चलाने की संभावित वृद्ध क्षमता की खोज करने के लिए प्रेरित हुए। श्रीमती भट्टाचार्य अहमदाबाद, गुजरात में दिनांक 16 मई, 2010 को आयोजित समारोह में अपने विचार प्रस्तुत कर रही थी। उन्होंने ओरा विश्व मंडल, महिला सशक्तीकरण और भूसत्व की पहल, खादी कला का उद्घाटन किया।

देश के विभिन्न राज्यों से किसान स्वराज यात्रा के भाग के रूप में दिनांक 11 दिसम्बर, 2010 को गांधी दर्शन, राजघाट पर उनको प्रभावित करने वाले कृषि संकट पर विचार-विमर्श करने के लिए 200 किसानों ने सभा की। साबरमती से राजघाट तक 20 राज्यों की यात्रा के माध्यम से इस यात्रा के प्रतिनिधियों ने

अपने अनुभवों से हजारों किसानों, कृषि वैज्ञानिकों, राजनीतिज्ञों तथा संबंधित नागरिकों के साथ अपनी बैठकों के अनुभव से एक-दूसरे को अवगत कराया। बैठक के दौरान भारतीय कृषि के लिए एक ऐसे उपाय का आह्वान किया गया जो केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के समक्ष पेश की गई चुनौती के साथ किसानों के लिए जीवन-यापन और खाद्य सुरक्षा की व्यवस्था करेगा, मृदा को उपजाऊ बनाए रखेगा और खाद्य सुरक्षा तथा कृषि पद्धति की आवश्यकता को सुनिश्चित करेगा।

## पुस्तकालय और प्रलेखन

गांधी स्मृति और दर्शन समिति के पुस्तकालय में विश्व मानचित्र, विश्वकोष और शब्दावली जैसी संदर्भ पुस्तकों सहित गांधीजी के जीवन और विचारों, कला, संस्कृति, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, पुरातत्व पर लगभग 12,000 पुस्तकों का संग्रह है। इसमें बच्चों के लिए अलग से विशेष अनुभाग है। यह लगभग 50 पत्रों और पत्रिकाओं को नियमित आधार पर मंगाता है और विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं तथा विद्यार्थियों की आवश्यकता को पूरा करता है। इस वर्ष के दौरान लगभग 500 नई पुस्तकें इसमें शामिल की गईं।

प्रलेखन केन्द्र में गांधीजी, महिलाएं, बच्चों, युवा, महिलाओं के विरुद्ध अपराध, पर्यावरण, भारत-पाक संबंध, साम्प्रदायिकता, अंतर्राष्ट्रीय मामलों से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रेस क्लिपिंग रखी जाती है। इस प्रलेखन केन्द्र को सुदृढ़ करने के प्रयास में इस वर्ष कुछ और शीर्षक शामिल किए गए हैं।

## प्रकाशन

अद्यतन सोच और समकालीन वास्तविकताओं के मद्देनजर गांधीजी के सिद्धांतों और कार्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए 'गांधीजी की पुनः खोज' शीर्षक से बीस खण्ड की श्रृंखला का कार्य समिति ने प्रकाशित किया तथा यह जारी है। इसने पंडित भवानी दयाल जी सन्यासी द्वारा दक्षिणी अफ्रीका के मेरे अनुभव; अनासक्ति दर्शन; अपने कार्य में अहिंसा की द्विवार्षिक पत्रिका अंग्रेजी और हिन्दी भाषा में; वार्षिक रिपोर्ट— 2009-2010; और दी यमुना – समिति का बाल समाचार-पत्र भी प्रकाशित किया



## नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

4.1.4

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय (एनएमएमएल) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के विचारों, परम्परा और मूल्यों को प्रचारित करने की दिशा में जुटी एक अग्रणी और समर्पित संस्था है।

आधुनिक और समसामयिक इतिहास के एक उच्च अनुसंधान केन्द्र के रूप में नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान नेहरू के जीवन का चित्रण तथा उनके नेतृत्व के अंतर्गत उभरने वाले पुनरुत्थित भारत को दर्शाने वाले जवाहर लाल नेहरू के एक व्यक्तिगत संग्रहालय का अनुरक्षण करता है।

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय का अपना एक पुस्तकालय है जिसमें आधुनिक भारत के इतिहास और अंतर-विषयक विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाता है और इसमें; दुर्लभ गैर-सरकारी अनुसंधान सामग्रियां प्रदान करने वाला एक अभिलेखागार; एक रिप्रोग्राफी प्रभाग; एक मौखिक इतिहास प्रभाग; एक अनुसंधान और प्रकाशन प्रभाग तथा समसामयिक अध्ययन केन्द्र है जिसमें सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के मुद्दों और नए क्षेत्रों के अन्वेषण हेतु अध्येतावृत्ति (फेलोशिप) प्रदान की जाती है। नेहरू तारामंडल, दिल्ली में केवल एक, वर्ष 2005 में नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय का एक हिस्सा बना।

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय के स्तरोन्नयन हेतु वर्तमान में जारी आधुनिकीकरण परियोजनाओं में डिजिटलीकरण, मल्टी-मीडिया पुस्तकालय, बाल संसाधन केन्द्र, उद्यान और सम्पदा तथा सिविल कार्य शामिल हैं।

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय का यह सतत प्रयास है कि जवाहर लाल नेहरू द्वारा अपनाए गए विचारों तथा हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के मूल्यों को लोकप्रिय बनाने के अपने अधिदेश के अनुसरण के अतिरिक्त अकादमिक उत्कृष्टता के एक केन्द्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाया जाए तथा उसका अनुरक्षण किया जाए।

### नेहरू संग्रहालय

- तीन मूर्ति भवन स्थित संग्रहालय को मुख्य तौर पर जवाहर लाल नेहरू के बहु-आयामी व्यक्तित्व को समर्पित एक संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया है। सरकार में लम्बे समय तक किए गए उनके नेतृत्व के दौरान तीन मूर्ति भवन उनकी महत्वपूर्ण विकासात्मक गतिविधियों से जुड़ा रहा और इसकी पहचान वास्तविक तौर पर उनके नाम से की जाती है।
- नेहरू के जीवन और कार्यों से जुड़ी प्रत्येक घटना को संग्रहालय में दृश्य-माध्यमों से प्रदर्शित किया गया है जाता है, जो देश की एकता



को रेखांकित करते हुए हमारे लोगों और संस्कृति की विविधता को भी दर्शाते हैं।

- दृश्यों के माध्यम से संग्रहालय में जवाहर लाल नेहरू के व्यक्तित्व और कृतित्व को, विशेष रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में दर्शाया गया है।
- संग्रहालय जो दिल्ली के लोगों में बहुत लोकप्रिय है, प्रातः 9 बजे से सायं 9 बजे तक आम जनता के लिए खोल दिया गया तथा राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान शाम के समय शानदार ढंग से इसे प्रकाशमय किया गया।
- नेहरू द्वारा दिनांक 14 नवम्बर, 1960 को दिल्ली में एशिया-पेसिफिक अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) के क्षेत्रीय कार्यालय के उद्घाटन की 50वीं वर्षगांठ पर श्री चान हो चोई, क्षेत्रीय निदेशक, एशिया और पेसिफिक द्वारा लिखी गई पुस्तक “एशिया-पेसिफिक में अंतर्राष्ट्रीय सहकारी संघ के 50 वर्ष” के लोकार्पण के अवसर पर आईसीए के अधिकारीगण, डॉ० सी.पी.एस. यादव, पूर्व संसद सदस्य और अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय सहकारी यूनियन दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को संग्रहालय में एकत्रित हुए।
- श्री टिमोथी जे. रोमर, भारत में संयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूत और उनकी पत्नी श्रीमती नगुयेन थिन टैम, उप-महानिदेशक, राज्य रिकार्ड और अभिलेख विभाग तथा सुश्री नगुयेन थी लान आह, उप-निदेशक, रिकार्ड प्रबंधन और अभिलेख प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान केन्द्र, वियतनाम सरकार; दिल्ली में विद्युत कम्पनियों के वित्त प्रबंधन और लेखा प्रणाली पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले विदेशी अधिकारियों का एक प्रतिनिधि मंडल और डॉ० श्री आर. वेलू, पूर्व रेल राज्य मंत्री, भारत सरकार ने संग्रहालय का दौरा किया।
- तीन मूर्ति भवन की नई स्मारिका दुकान ने 1,08,893.00 रु. की पुस्तकें, डीवीडी और स्मारिका की बिक्री की।
- इस अवधि के दौरान देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों के लगभग 14,84,687 लोगों ने नेहरू के देहान्त के चार दशक बाद संग्रहालय के प्राचीन पूरित कक्षों तथा कॉरिडोर का दौरा किया।

## पुस्तकालय

- पुस्तकालय के संग्रह में मुख्यतः आधुनिक भारतीय इतिहास व समाज विज्ञान विषयों से संबंधित 4,233 नए प्रकाशन जोड़े गए और अब पुस्तकालय में कुल 2,55,418 प्रकाशन हैं।
- पुस्तकालय में शामिल की गई अन्य महत्वपूर्ण चीजों में पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री मोहम्मद युनूस, श्री आर.के. नारायणन तथा अन्य नेताओं से संबंधित 8,750 फोटोग्राफ्स; 50 सीडी; 242 डीवीडी; 178 माइक्रोफिल्म रोल्स और 47 फोटो एलबम हैं। इस संग्रह में अब कुल 1,85,013 फोटोग्राफ्स; 227 सीडी; 440 डीवीडी; 18,223 माइक्रोफिल्म्स रोल और 2,732 एलबम हैं।
- पुस्तकालय में 3835 पुस्तकों को वर्गीकृत और सूचीबद्ध किया गया; 21,630 फोटोग्राफ्स का डिजिटलीकरण किया गया और 499 पत्रिकाएं तथा 26 समाचार-पत्र प्राप्त हुए।

## समसामयिक अध्ययन केन्द्र

समसामयिक अध्ययन केन्द्र एनएमएमएल की वर्तमान में चल रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं की निगरानी करता है। इसकी तीन मुख्य अनुसंधान परियोजनाओं नामतः ‘आधुनिक भारतीय इतिहास और समसामयिक अध्ययन में अनुसंधान को प्रोत्साहन’, ‘भारतीय विकास में परिदृश्य’ (सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक) तथा ‘भारत और विश्व अर्थव्यवस्था और राजनीति की बदलती हुई प्रवृत्तियां’ के अंतर्गत व्यापक योगदान दिया गया है। समसामयिक अध्ययन केन्द्र में, 21 विशिष्ट अध्येता विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं में लगे हुए हैं। प्रत्येक पखवाड़े, अध्येताओं की एक बैठक का आयोजन किया जाता है जिसमें अध्येता अपने अनुसंधान से संबंधित विषयों पर प्रस्तुतिकरण देते हैं। उनके प्रस्तुतिकरण की मॉनीटरिंग के लिए प्रत्येक बैठक में दो विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। इस वर्ष के दौरान, निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किए गए थे :—

- ‘मीडिया, मेडिसिन और सोसाइटी : कन्टीन्यूटी एंड चेंजिज इन नॉर्दन इंडिया सी. 1900–2000’ डॉ० माधुरी शर्मा, दिनांक 11 अगस्त, 2010 ।
- “हिन्दू पॉलिटिकल आइडियालॉजी एंड द पॉलिटिक्स ऑफ कंवर्जन, 1932–1947” डॉ० रोहित वांचू, दिनांक 25 अगस्त, 2010 ।

- “हिन्दू कंसिएसनेस एंड नेशनलिज्म इन द पंजाब, 1906–1947” प्रो० के.एल. टुटेजा, दिनांक 8 सितम्बर, 2010.
- “कॉलोनिअल इन्ट्रूजन, स्ट्रक्चरल चेंजिज एंड एग्रेरियन मूवमेंट्स फॉर लैंड—राइट्स इन द छोटानागपुर (झारखंड): लेट एटिथ एंड नाइनटिन्थ सेन्चुरिज”, प्रो० पी.के. शुक्ला, दिनांक 22 सितम्बर, 2010.
- “मैनी लाइवज ऑफ द इंडियन फिल्म सोंग्स”, डॉ० मदन गोपाल, दिनांक 6 अक्टूबर, 2010.
- “रिफ्यूजी रिहैबिलिटेशन इन पोस्ट पार्टिशन दिल्ली (1947–54), डॉ० रितु भगत, दिनांक 10 नवम्बर, 2010.
- “सम रिफ्लेक्शंस ऑन मैथाडोलॉजिकल एंड एथिकल चैलेंजिज इन वर्किंग विद ओरल लाइफ हिस्ट्री रिकार्डिंग”, प्रो० के. मैकक्रोमिक, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, केपटाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका, दिनांक 24 नवम्बर, 2010.
- “सोशल स्ट्रेटिफिकेशन एंड पॉलिटिक्स ऑफ नेशनल रिसोर्स मैनेजमेंट इन ‘अरली मॉडर्न’ इंडिया”, डॉ० मयंक कुमार, दिनांक 24 नवम्बर, 2010.
- “ट्राइंग टू अंडरस्टैंड यंग कश्मीर”, प्रो० डेविड देवदास, दिनांक 4 दिसम्बर, 2010.
- “माई फेवरिड लेविस ट्रांस” विषय पर दिनांक 15 दिसम्बर, 2010 को प्रो० दीपनकर गुप्ता के साथ विचार-विमर्श।

### सेमिनार, व्याख्यान और अन्य कार्यक्रम

- न्यायमूर्ति ए.पी. शाह की दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्ति तथा गरीबों, कमजोर और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए सतत रूप से उनके द्वारा दर्शाई गई सहानुभूति को मान्यता प्रदान करते हुए नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय ने 15 मानवाधिकार संगठनों, जन आंदोलनों और अकादमिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के समूह के साथ मिलकर दिनांक 6 अप्रैल, 2010 को “गरीबों के अधिकारों के लिए न्यायपालिका को संवेदनशील बनाना — न्यायमूर्ति ए.पी. शाह की न्यायिक विरासत” विषय पर समूह भाषण का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने संधिगिरी शोध प्रतिष्ठान और अमेरिकी केन्द्र, नई दिल्ली के साथ मिलकर दिनांक 21–22 अप्रैल, 2010 को “वहनीय विकास निर्माण विकल्प” विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसका उद्देश्य सरकारी

संस्थाओं, गैर-सरकारी संगठनों तथा पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों, कृषि पद्धतियों और जीवन प्रणाली का विकास, प्रोत्साहन तथा उनको लोकप्रिय बनाने के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों को एक साथ एक मंच पर लाना था।

- एनएमएमएल ने दिनांक 12 मई, 2010 को तिमाही हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें श्री मीमांशक, उप-निदेशक (राजभाषा), संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली को “हिन्दी के सॉफ्टवेयर का प्रयोग और उपलब्ध सुविधा” विषय पर भाषण के लिए आमंत्रित किया गया था।
- एनएमएमएल ने दिल्ली ग्रीन्स के सहयोग से दिनांक 5–6 जून, 2010 को जलवायु पर दिल्ली युवा समारोह का आयोजन किया जिसमें जलवायु परिवर्तन के दृष्टिगत विभिन्न शहरी पर्यावरणीय मुद्दों को समझने के एक प्रयास के रूप में दिल्ली के युवाओं को एक मंच पर एकत्रित किया गया।
- एनएमएमएल ने इण्डो-ग्लोबल सोशल सर्विस सोसाइटी (आईजीएसएसएस) के सहयोग से दिनांक 13–14 जुलाई, 2010 को ‘नेशनल सिटी मेकर्स कारवाँ’ विषय पर दो दिवसीय ‘नेशनल केयर कमिटी कंसलटेशन’ का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने मीडिया अध्ययन केन्द्र (सीएमएस) के साथ मिलकर सामाजिक विकास, संचार, आरटीआई, अच्छे अभिशासन तथा निर्वाचक सुधारों के क्षेत्र में दो दशक पुरानी अग्रणी पहलों के स्मरणोत्सव में एक राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला, भारत का विश्लेषण और दूरदृष्टि, शुरु की है। इस श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाले 20 व्याख्यानों में से वर्ष 2010–12 श्रृंखला का प्रथम व्याख्यान “भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ” विषय पर था, जो डॉ० के. श्रीकांत रेड्डी, अध्यक्ष, भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिष्ठान द्वारा दिनांक 23 जुलाई, 2010 को दिया गया था। इस व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो० जयती घोष द्वारा की गई थी तथा इसमें डॉ० रेड्डी ने स्वास्थ्य क्षेत्र की विभिन्न चुनौतियों की चर्चा की और इस बात पर जोर दिया कि भारत के भविष्य के विश्लेषण और अभिकल्पना के समय स्वास्थ्य के बारे में चर्चा किया जाना महत्वपूर्ण है। सीएमएस द्वारा डॉ० रेड्डी को “रोल मॉडल अवार्ड” भी प्रदान किया गया।
- एनएमएमएल ने सेंक्चुरी एशिया के सहयोग से दिनांक 6 अगस्त, 2010 को “बंगाल टाइगर का भविष्य” और “किङ्स फॉर टाइगर टीचर्स” इनवायरनमेंटल लीडरशिप

वर्कशाप” का आयोजन किया। इसका आयोजन देश भर के जाने-माने सक्रिय वन्य जीव कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया था, जिसमें बेलिन्डा राइट, भारतीय वन्य जीव संरक्षण सोसाइटी; डॉ० वाई.वी. झाला, भारतीय वन्य जीव संस्थान और श्री बिस्वजीत मोहंती, भारतीय वन्य जीव सोसाइटी शामिल थे। इस कार्यशाला में विचार-विमर्श वन क्षेत्र का सुधार तथा समर्पित अधिकारियों पर अभी हाल ही में हुए हमलों के आलोक में परम्परावादियों तथा वन रक्षकों के संरक्षण की आवश्यकता के चारों तरफ घूमता रहा।

- एनएमएमएल ने इण्डो-ग्लोबल सोशल सर्विस सोसाइटी (आईजीएसएसआर) के सहयोग से दिनांक 9 अगस्त, 2010 को दोनों देशों के बीच शांति के लिए “भारत-पाकिस्तान शांति कारवां – अमन के बढ़ते कदम” विषय पर विचार-विमर्श और परामर्श का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने मीडिया अध्ययन केन्द्र (सीएमएस) के सहयोग से दिनांक 3 सितम्बर, 2010 को “भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण की चुनौतियाँ” शृंखला के दूसरे व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान डॉ० आशीष बोस, ऑनरेरी प्रोफेसर (सेवामुक्त), आर्थिक वृद्धि संस्थान द्वारा दिया गया था तथा इसकी अध्यक्षता डॉ० रमा वी. बारू, अध्यक्ष, सामाजिक चिकित्सा और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा की गई थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अभी हाल ही में भारत की जनसंख्या में हुई बढ़ोतरी तथा देश के सीमित संसाधनों पर इसकी वजह से होने वाले दबाव की वजह से परिवार नियोजन और जनसंख्या नियंत्रण की अत्यधिक आवश्यकता को मुख्य मुद्दा बना दिया है। उनका यह मत था कि जनसंख्या नियंत्रण के लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है यदि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता के साथ-साथ जनसंख्या स्थिरीकरण की आवश्यकता की सीमा तक जन्म दर में कमी लाई जाए।
- नीति संवाद शृंखला हेतु राष्ट्रीय मंच के अंतर्गत, एनएमएमएल ने दिनांक 19 सितम्बर, 2010 को लोगों के राष्ट्रीय सूचना के अधिकार अभियान के सहयोग से “कंसलटेशन ऑन द विशलब्लावर बिल” का आयोजन किया। इस बैठक में श्री शेखर सिंह और सुश्री अरुणा रॉय जैसे कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।
- एनएमएमएल ने इक्विटी अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली के सहयोग से दिनांक 22 अक्टूबर, 2010 को श्री एस.आर.

शंकरन, आई.ए.एस. के जन्म दिवस पर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु एक मैमोरियल बैठक का आयोजन किया। श्री एस.आर. शंकरन, सिविल सर्वेंट्स और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की सम्पूर्ण पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत थे। श्री हर्ष मन्दर, सामाजिक कार्यकर्ता ने उनकी याद में “ए लिगेसी ऑफ गुडनेस” विषय पर एक पत्र प्रस्तुत किया।

- एनएमएमएल ने मीडिया अध्ययन केन्द्र (सीएमएस) के सहयोग से “द ब्लोसमिंग ऑफ इंडिया डेमोक्रेसी एंड इट्स इम्प्लीकेशन फॉर गवर्नेंस” शृंखला के तहत तीसरा व्याख्यान आयोजित किया, यह व्याख्यान श्री वजाहत हबीबुल्लाह, पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त, (सीआईसी) द्वारा दिनांक 29 अक्टूबर, 2010 को दिया गया था। श्री एच. के. दुआ, लब्धप्रतिष्ठित पत्रकार और संसद सदस्य (राज्य सभा) ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने व्याख्यान में, श्री हबीबुल्लाह ने पंचायती राज संस्थाओं से लेकर सूचना का अधिकार (आरटीआई) तथा सार्वजनिक प्राधिकारी की भूमिका जैसे अभिशासन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। व्याख्यान के बाद सीएमएस द्वारा श्री वजाहत हबीबुल्लाह को “रोल मॉडल अवार्ड 2010” प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री एच.के. दुआ द्वारा सीएमएस मीडिया लैब मोनोग्राफ “व्हाई डू टीवी न्यूज बुलेटिन हेव टू बी आलवेज कलटर्ड?” जारी किया गया।
- एनएमएमएल ने दिनांक 30 अक्टूबर, 2010 को “भारत में मानसिक चिकित्सा अस्पताल : इतिहास से सबक” विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का आशय विशेष तौर पर मानसिक चिकित्सा अस्पतालों तथा सामान्य तौर पर मनोचिकित्सा संस्थाओं के बारे में हमारी सोच को स्पष्ट करने में सहायता प्रदान करना था। डॉ० आलोक सरीन, वरिष्ठ अध्येता, एनएमएमएल और कार्यशाला संयोजक ने इसका पूरा सिंहावलोकन प्रस्तुत किया।
- एनएमएमएल ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के सहयोग से डॉ० करण सिंह, अध्यक्ष, आईसीसीआर के विदाई भाषण का आयोजन किया तथा इसका आयोजन आईसीसीआर के 60 वर्ष के स्मरण में ‘इंडियन कल्चर इन ए ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड’ विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के दौरान किया गया था, इसके बाद लॉर्ड मेघनाद देसाई, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के ऑनरेरी अध्येता, यू.के. द्वारा ‘ग्लोबलाइजेशन एंड कास्मोपोलिटन कल्चर’ शीर्षक के तहत मौलाना आजाद मैमोरियल लेक्चर 2010 का व्याख्यान दिया गया।

- एनएमएमएल ने मीडिया अध्ययन केन्द्र (सीएमएस) के सहयोग से दिनांक 24 नवम्बर, 2010 को “लोकतंत्र और विकास की दुविधा” श्रृंखला के चौथे व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान श्री मणि शंकर अय्यर, संसद सदस्य (राज्य सभा) द्वारा दिया गया था तथा इसकी अध्यक्षता प्रो० मुशीरूल हसन, महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार ने की। श्री अय्यर को सीएमएस द्वारा ‘रोल मॉडल अवार्ड 2010’ भी प्रदान किया गया।
- एनएमएमएल ने आस्ट्रेलियाई सांस्कृतिक मंच (एसीएफ) के सहयोग से दिनांक 20 नवम्बर, 2010 को एक संगीत समारोह “मोजार्ट कोअर ऑफ इंडिया” का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने संघों के मंच और सार्वजनिक कार्य केन्द्र के सहयोग से दिनांक 6 दिसम्बर, 2010 को श्री एन.एन. वोहरा, महामहिम राज्यपाल, जम्मू और कश्मीर द्वारा “पब्लिक सिक्युरिटी इन फेडरल पॉलिटिक्स : एक्सप्लोरिंग द ग्लोबल-नेशनल-लोकल कॉन्टिनुम” के शुभारंभ का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने सीएमएस के सहयोग से दिनांक 8 दिसम्बर, 2010 को “संविधान के अंतर्गत न्यायपालिका की भूमिका और कार्यप्रणाली” विषय पर व्याख्यान श्रृंखला के पांचवें व्याख्यान का आयोजन किया, यह व्याख्यान न्यायमूर्ति राजिन्द्र सच्चर द्वारा दिया गया था। इस व्याख्यान की अध्यक्षता श्री आर. सुकुमार, सम्पादक, मिंट द्वारा की गई थी। बाद में न्यायमूर्ति राजिन्द्र सच्चर को सीएमएस द्वारा “रोल मॉडल ऑफ इंडिया अवार्ड” प्रदान किया गया।
- एनएमएमएल ने जवाहर लाल नेहरू उच्च अध्ययन संस्थान के सहयोग से अग्रणी भारतीय और विदेशी प्रतिनिधिमंडलों के साथ दिनांक 17-18 दिसम्बर, 2010 को “भारत और शीत युद्ध : ऐतिहासिक और समसामयिक परिप्रेक्ष्य” विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार में शीत युद्ध के उद्भव का विश्लेषण किया गया तथा इस बात का भी विश्लेषण किया गया कि किस प्रकार से यह वैश्विक बन गया तथा किस प्रकार से कई देशों और उनकी घरेलू तथा विदेशी नीतियों के कई पहलुओं को प्रभावित किया। इस सेमिनार का उद्देश्य शीत युद्ध की अवधि के दौरान की विभिन्न स्थितियों में भारत की भूमिका के संबंध में उभरकर आने वाले दस्तावेजों और नए अनुसंधान के आलोक में शीत युद्ध का पुनर्मूल्यांकन करना था। सेमिनार के दूसरे दिन

का आयोजन जवाहर लाल नेहरू उच्च अध्ययन केन्द्र (जेएनआईएस), जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में किया गया।

## पुस्तक विवेचना

- एनएमएमएल ने हार्पर कॉलिंस प्रकाशक, भारत के सहयोग से दिनांक 24 अप्रैल, 2010 को आदित्य आर्य और इंदिवर कामतेकर द्वारा लिखी गई पुस्तक हिस्ट्री इन द मेकिंग : द विजुअल आरकाइवज ऑफ कुलवंत रॉय का विमोचन कार्यक्रम आयोजित किया। श्री गोपाल कृष्ण गांधी, पूर्व राज्यपाल, पश्चिम बंगाल ने सुश्री गुरशरण कौर, सम्माननीय अतिथि की उपस्थिति में पुस्तक जारी की। इस अवसर पर उनकी फोटोग्राफ्स की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।
- एनएमएमएल ने हार्पर कॉलिंस प्रकाशक, भारत के सहयोग से दिनांक 21 अगस्त, 2010 को श्री सोमनाथ चटर्जी, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष द्वारा लिखी गई पुस्तक “कीपिंग द फेथ : मेमाअरस ऑफ ए पार्लियामेन्टेरियन” के विमोचन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ० मनमोहन सिंह, माननीय प्रधानमंत्री, भारत, मुख्य अतिथि थे तथा माननीया अध्यक्ष, लोकसभा, मीरा कुमार ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। ‘कीपिंग द फेथ’ न केवल भारत के सबसे सम्मानित संसद सदस्य की व्यक्तिगत कथा-वृत्तांत है अपितु इसमें संसदीय लोकतंत्र की कार्य-प्रणाली को अभिभूत करने वाली घटनाओं का भी उल्लेख है।
- एनएमएमएल ने दिनांक 25 अगस्त, 2010 को डॉ० सरल झिंग्रान, पूर्व सम्बद्ध फेलो, एनएमएमएल द्वारा लिखी गई पुस्तक ‘आधुनिक भारत में मंदरसा शिक्षा : एक अध्ययन’ पर विचार-विमर्श और विमोचन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पुस्तक को प्रो० बिपन चन्द्रा, लब्धप्रतिष्ठित इतिहासकार और अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा जारी किया गया था। इस पुस्तक पर हुए विचार-विमर्श में भाग लेने वाले लोगों में प्रो० मुशीरूल हसन, महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार; डॉ० असगर अली इंजीनियर, अध्यक्ष, समाज और धर्मनिरपेक्षता अध्ययन केन्द्र, मुम्बई और प्रो० इम्तियाज अहमद, पूर्व प्रोफेसर, राजनीतिक समाज-विज्ञान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय शामिल थे। प्रो० मृदुला मुखर्जी, निदेशक एनएमएमएल ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की।



- एनएमएमएल ने टेलर और फ्रांसिस समूह, भारत के सहयोग से 20 सितम्बर, 2010 को सुधा पाइ, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और पूर्व वरिष्ठ अध्येता, एनएमएमएल द्वारा लिखी गई पुस्तक 'डेवेलपमेंट स्टेट एंड द दलित क्वेश्चन इन मध्य प्रदेश : कांग्रेस रेस्पॉन्स' पर विचार-विमर्श और विमोचन कार्यक्रम का आयोजन किया। यह पुस्तक लोकतांत्रिक समाज में दलितों और आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में परिवर्तन करने के लिए राज्य-प्रायोजित कल्याण कार्यक्रमों के प्रभाव के संबंध में सबसे अग्रणी आनुभविक कार्य है।

### प्रदर्शनियां

- एनएमएमएल ने ललित कला अकादमी के सहयोग से दिनांक 1 मई, 2010 को ललित कला अकादमी प्रांगण में नमन पी. आहूजा, एसोसिएट प्रोफेसर, आर्ट्स और एस्थेटिक्स स्कूल, जवाहर लाल नेहरू और वर्तमान अध्येता, एनएमएमएल द्वारा "द मेकिंग ऑफ ए मॉडर्न इंडियन आर्टिस्ट-क्रॉफ्ट्समैन : देवी प्रसाद" विषय पर क्यूरेटेड एक प्रदर्शनी और पूर्व दर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया।
- "अशोका एंड द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया - फॉर एज लांग एज द सन एंड मून एक्जिस्ट : लुकिंग एट अशोका ट्रेसेज इन इंडिया" विषय पर अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज के सहयोग से लगाई गई एक फोटो प्रदर्शनी का जाने-माने शांति कार्यकर्ता और पर्यावरणविद् श्री सुंदर लाल बहुगुणा और श्रीमती विमला बहुगुणा द्वारा दिनांक 24 सितम्बर, 2010 को उद्घाटन किया गया। इस प्रदर्शनी में उप-महाद्वीप में उन विभिन्न स्थलों और प्रमाणों के प्रकारों को दर्शाया गया है जहां अशोक से संबंधित अवेष मिले हैं। इस प्रदर्शनी में भूतकाल के वर्तमान के साथ जारी संवादों को भी दर्शाया गया है जिनमें विशेष तौर पर अशोक की राजधानी सारनाथ से लिए गए 'सत्यमेव जयते' या केवल सत्य की ही जीत होती है, को नए गणतंत्र के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाना शामिल है।
- राष्ट्रमंडल खेलों के लिए 01 अक्टूबर, 2010 को उद्घाटन की गई "नेहरू-द आर्किटेक्ट ऑफ इंडिया" नामक एक मल्टी मीडिया प्रदर्शनी चलती रही।

### बीजिंग विश्व पुस्तक मेले में एनएमएमएल की भागीदारी

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निमंत्रण पर एनएमएमएल ने दिनांक 30 अगस्त - 3 सितम्बर, 2010 को चीन के अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन केन्द्र में आयोजित 17वें बीजिंग अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। भारत ने इस मेले में सम्माननीय देश के तौर पर 'एक्सप्लोरिंग द मिडल पाथ' थीम के साथ भाग लिया। इस मेले के एक भाग के रूप में, एनएमएमएल ने बीजिंग पुस्तक मेले के भारतीय पैवेलियन में नेहरू कार्नर में 'जवाहर लाल नेहरू के चयनित कार्यों' के साथ अपने प्रकाशनों का प्रदर्शन किया। भारतीय विरासत को बेहतर ढंग से समझने के लिए स्थानीय दर्शकों हेतु नेहरू, भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष पर फिल्में तथा श्याम बेनेगल के प्रसिद्ध टेलीविजन सीरियल 'भारत एक खोज' को नियमित तौर पर वहां दर्शाया गया।

चीन के 1840 प्रकाशकों के अतिरिक्त 58 से अधिक देशों और क्षेत्रों ने मेले में भाग लिया।

### राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय ने दिल्ली में अक्टूबर 2010 में आयोजित किए गए 19वें राष्ट्रमंडल खेल, 2010 के साथ-साथ "दिल्ली उत्सव" के एक भाग के रूप में रूचिकर कार्यक्रमों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की।

### तीन मूर्ति भवन में क्वीन बेटन

कई आइकॉनिक स्थलों से गुजरने के बाद, क्वीन बेटन 1 अक्टूबर की सुबह तीन मूर्ति भवन पहुंची, जहां इसका स्वागत प्रो0 मृदुला मुखर्जी, निदेशक, एनएमएमएल द्वारा किया गया। इस ऐतिहासिक घटना के दौरान एनएमएमएल स्टाफ सदस्यों, उनके परिवार के सदस्यों और स्कूली बच्चों द्वारा मानव श्रृंखला बनाई गई। प्रत्येक हाथ से गुजरने के लिए इस बेटन को निदेशक द्वारा अन्य लोगों को सौंपा, यह एक यादगार क्षण था।

### जीर्णोद्धार किए गए नेहरू तारामंडल का उद्घाटन

दिनांक 1 अक्टूबर, 2010 को नए जीर्णोद्धार किए गए नेहरू तारामंडल का उद्घाटन डॉ0 कर्ण सिंह, अध्यक्ष, कार्यकारी परिषद, एनएमएमएल द्वारा किया गया, इस अवसर पर श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय; डॉ0 जी.एस. रौटेला, महानिदेशक,

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद; प्रो० एन. पंचपकेशन, भौतिक और एस्ट्रोफिजिक्स विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय; विशिष्ट आमंत्रित सदस्य; स्कूली बच्चे तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे। परम्परागत रूप से द्वीप प्रज्ज्वलित करने के बाद, “इंडियन एस्ट्रोनॉमी-ए सेलिब्रेशन” शीर्षक के तहत एक नई प्रकाशमय स्कॉलिंग प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया गया।

## चन्द्र — एक तारकीय जीवन

उद्घाटन मौके के लिए नोबल पुरस्कार विजेता डॉ० सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर की जन्म शताब्दी की याद में एक विशेष तारामंडल शो — “चन्द्र-एक तारकीय जीवन” तैयार किया गया। इसमें एक ऐसे शिक्षाविद की छह दशक की उत्साहजनक कहानी को बताया गया है जिसने अपना जीवन बहुत से गणितीय प्रश्नों का सटीक उत्तर ढूँढने में बिता दिया, जिनकी वजह से हमारे चारों तरफ व्याप्त ब्रह्माण्ड के बारे में हमारी समझ काफी हद तक बढ़ी। 2 अक्टूबर से नेहरू तारामंडल के स्काई थियेटर में प्रतिदिन पांच शो चलाए गए थे।

## तारामंडल में ब्रह्माण्ड

दिनांक 5, 7 और 9 अक्टूबर को नेहरू तारामंडल के कार्यक्रम क्षेत्र और स्काई थियेटर में “तारामंडल में ब्रह्माण्ड” को दर्शाने वाले सजीव शो जैसे “सेलिब्रेटिंग द जंतर-मंतर ऑब्जरवेटरी”, “एस्ट्रोनॉमी इन इंडियन फेस्टिवल एंड द कैलेण्डर”, “द सन मेकिंग एंड यूजिंग ए सनडायल”, “मेकिंग एन एस्ट्रोनॉमी कैलेण्डर 2011” और “ऑब्जरविंग सनस्पॉट” आयोजित किए गए।

## दिल्ली : एक उत्सव

आकाश की तस्वीरों और वीडियो में दिल्ली के विभिन्न विरासत स्थलों से लिए चित्र भी शामिल थे, को फुल डोम डिजिटल डिस्प्ले में शामिल किया गया तथा इसे “दिल्ली-एक उत्सव” नामक सजीव शो में परिवर्तित किया गया था जो स्काई थियेटर में दिनांक 12, 14 और 16 अक्टूबर, 2010 को प्रदर्शित किया गया।

## प्रदर्शनी

### “नेहरू — स्वतंत्र भारत के शिल्पी”

“नेहरू-स्वतंत्र भारत के शिल्पी” नामक प्रदर्शनी, जिसमें प्रधानमंत्री के रूप में पंडित नेहरू की उपलब्धियों तथा उनके नेतृत्व में विविध क्षेत्रों में भारत द्वारा तेजी से किए गए विकास को

दर्शाया गया है, का उद्घाटन डॉ० कर्ण सिंह द्वारा संग्रहालय के बाल कक्ष में दिनांक 1 अक्टूबर, 2010 को किया गया था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री एम.जे. अकबर, सम्पादकीय निदेशक, इंडिया टूडे और हेडलाइंस टूडे, सम्पादक, द संडे गार्डियन और लेखक नेहरू : द मेकिंग ऑफ इंडिया, थे। डॉ० कर्ण सिंह और प्रो० मृदुला मुखर्जी, निदेशक, एनएमएमएल ने नेहरू और उनकी दूरदर्शिता पर काफी विस्तार से भाषण दिया।

इस अवसर पर प्रदर्शनी से संबंधित दो ब्राउचर्स और राष्ट्रमंडल खेलों हेतु “दिल्ली सेलिब्रेट्स” कार्यक्रमों को भी जारी किया गया।

मल्टी मीडिया प्रदर्शनी, ‘नेहरू — स्वतंत्र भारत के शिल्पी’ में तस्वीरों के इलेक्ट्रानिक स्लाइड शो और ऑडियो बूथ शामिल थे जहां विजिटर्स प्रथम प्रधानमंत्री के प्रेरणादायी भाषणों को सुन सकते हैं तथा नेहरू द्वारा जेल में बिताए गए उस समय की सामग्रियों को भी देख सकते हैं जब उन्होंने “लेटर्स फ्रॉम ए फादर टू हिज डॉटर”, “एन ऑटोबायोग्राफी”, “ग्लिम्पसिस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री” तथा “डिस्कवरी ऑफ इंडिया” का लेखन कार्य किया तथा ये कृतियां उनकी साहित्यिक उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।

प्रो० मृदुला मुखर्जी, निदेशक, एनएमएमएल ने कहा कि इस प्रदर्शनी को न केवल अकादमिक समुदाय अपितु युवा पीढ़ी के लिए आकर्षक बनाने हेतु सभी प्रयास किए गए हैं। “हमने इन आधुनिक तथ्यों को इसलिए शामिल किया है क्योंकि हम चाहते हैं कि नेहरू द्वारा प्रतिपादित वे मूलभूत मूल्य, जो 21वीं सदी में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जो उनके समय के दौरान थे, को प्रदर्शित किया जाए, उन्होंने आगे कहा कि लोकतंत्र, समानता और सभी मनुष्यों के लिए मूलभूत आजादी का अधिकार, धर्मनिरपेक्षता और शांति के प्रति उनकी वचनबद्धता आज भी उन लोगों को प्रेरित करती है जो इस दुनिया को रहने के लिए एक अच्छा स्थान बनाना चाहते हैं।

## थियेटर

**इमेजिज ऑफ टूथ : एन इनसाइट इनटू द आइडियोलॉजी ऑफ महात्मा गांधी** का मंचन दिनांक 4 अक्टूबर, 2010 को एनएमएमएल ऑडिटोरियम में दादी पदमजी के निर्देशन में इशारा कठपुतली थियेटर न्यास द्वारा किया गया, जिसमें महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा को प्रस्तुत करने के लिए अपनी विशिष्ट शैली, कठपुतलियों का प्रयोग, मास्क, वस्तुओं, कलाकारों और नृत्यों का बखूबी प्रयोग किया गया था।

**कुछ अनखुले पन्ने** एक श्रव्य दृश्य यात्रा थी, जिसका मंचन एनएमएमएल ऑडिटोरियम में कट-कथा द्वारा छड़ों, कड़ियों और छाया कठपुतलियों के माध्यम से 9, 11 और 12 अक्टूबर, 2010 को किया गया था। यह कार्यक्रम स्वतंत्रता संग्राम के विस्मृत बड़े नेताओं— मैडम बीकाजी कामा, सूर्य सेन और मतंगिनी हाजरा की याद में आयोजित किया गया। इसमें एनएमएमएल अभिलेखागार के चित्रों का भी इस्तेमाल किया गया।

**महादेव भाई**, गांधी जी के जाने-माने सचिव महादेव देसाई (1892–1942), की डायरी के माध्यम से गांधी जी और अन्य कई नेताओं के जीवन और समय से संबंधित अंग्रेजी में एकल नाटक का मंचन दिनांक 7, 8 और 10 अक्टूबर, 2010 को एनएमएमएल ऑडिटोरियम में किया गया। इस दैनिक डायरी के आधार पर गांधी जी के विचारों और सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया जो आज और भी अधिक प्रासंगिक हैं। सजीव कथा-वृत्तांत को अपनाते हुए एक ही नायक ने कई किरदार निभाए।

**मुलाकात (एन एन्काउंटर)** : अंग्रेजी, पंजाबी और हिन्दी में एक बहु-भाषी नाटक का मंचन दिनांक 5 और 6 अक्टूबर, 2010 को एनएमएमएल बाल संसाधन केन्द्र तथा मल्टी मीडिया पुस्तकालय द्वारा एनएमएमएल ऑडिटोरियम में किया गया था। स्वतंत्रता आंदोलन के कुछ नेताओं जैसे गांधी, नेहरू और बादशाह खान द्वारा की गई मुलाकातों, उनके व्यक्तिगत संघर्षों तथा स्वतंत्रता संघर्ष और विभाजन के दौरान विपरीत परिस्थितियों में उनके द्वारा लिए गए मुश्किल निर्णयों को अभिनय के माध्यम से आम आदमी की नैतिक शक्ति, साहस और उदारता को रेखांकित करते हुए घृणा और हिंसा के ज्वार के खिलाफ खड़ा होने के साहस को दर्शाया गया था।

## दौरे और पदयात्रा

**स्वतंत्रता की कहानी** जवाहर लाल नेहरू को समर्पित तीन मूर्ति भवन स्थित संग्रहालय और देश के स्वतंत्रता आंदोलन के दुर्लभ क्षणों को चित्रों, कलावस्तुओं और सूचनाप्रद प्रदर्शों के माध्यम से चित्रित करने वाली चित्रात्मक वीथियों का निर्देशित दौरा आयोजित किया गया।

**चाचा नेहरू से दोस्ती**, बच्चों के लिए प्रतिदिन एक विशेष संग्रहालय दौरे का आयोजन किया गया। जवाहर लाल नेहरू, स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रीय नेता और राजनेता जिन्हें प्यार से “चाचा” के तौर पर याद किया जाता है, की कहानियों और जीवन की तस्वीरों, दंतकथाओं और कार्यकलापों के माध्यम से बताया गया है।

**प्रकृति का सांकेतिक बुलावा**, तीन मूर्ति भवन के सुंदर उद्यानों और वन-स्थलों के माध्यम से सुबह की सैर, का आयोजन नित्य तौर पर किया गया जिसकी अगुवाई अनुभवी ‘पक्षी विशेषज्ञ’ और लेखक रणजीत लाल और पर्यावरणविद श्री शंकर मुसाफिर द्वारा की गई थी।

**‘अफसाना—ए—अशोक’** दिल्ली में अशोक की कहानी की पुनः खोज की परिक्रमा करवाता है, यह विजिटर्स को महान मौर्य शासक, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप पर एक अहिंसा के प्रचारक के रूप में शासन किया, से जुड़े हुए विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों की सैर करवाता है। तीन मूर्ति भवन से शुरू होकर इस दौरे में ईस्ट ऑफ कैलाश के अशोक के आदेश—पत्र, फिरोजशाह कोटला और बाड़ा हिन्दू राव स्थित अशोक स्तंभ को शामिल किया गया। इसका समापन अशोक के चित्रों की प्रदर्शनी से हुआ।

जवाहर लाल नेहरू द्वारा अशोक की प्रशंसा को उन्होंने अपने लेखन में दर्शाया है। उन्होंने उसे “भगवान की प्रेयसी” कहा है तथा उसे यह कहते हुए श्रद्धांजलि दी है कि शायद ही कोई शासक अशोक के समान सहनशील हो।

## अहिंसा साइकिल भ्रमण

अहिंसा साइकिल भ्रमण, गांधी—नेहरू प्रातःकालीन साइकिल भ्रमण में महात्मा गांधी और पंडित नेहरू से जुड़े हुए तीन स्मारकों का चक्कर लगाया गया, जिनमें तीन मूर्ति भवन, ग्यारह मूर्ति और गांधी स्मृति — जहाँ उनकी हत्या की गई थी।

## फिल्में

**नेहरू** दिनांक 9 अक्टूबर, 2010 को एनएमएमएल ऑडिटोरियम में श्याम बेनेगल की फिल्म ‘नेहरू’ दिखाई गई। इस फिल्म में नेहरू की दृष्टि से भारत की स्वतंत्रता और संघर्ष तथा जागरूकता को पुनर्सृजित करने के लिए नेहरू के लेखन का प्रयोग किया गया है।

**सरदार — भारत का लौह पुरुष**, भारत के पहले गृह मंत्री पर बनी केतन मेहता की फिल्म दिनांक 10 अक्टूबर, 2010 को एनएमएमएल ऑडिटोरियम में दिखाई गई। विजय तेंदुलकर द्वारा लिखित तथा केतन मेहता द्वारा निर्देशित सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन—वृत्त से संबंधित इस फिल्म में सरदार पटेल के जीवन के अंतिम पांच वर्षों पर मुख्य जोर दिया गया है।

**गांधी**, महात्मा गांधी, जिन्होंने अंग्रेजों के औपनिवेशिक साम्राज्य के खिलाफ अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व किया, की जीवनी पर बनी अकादमी पुरस्कृत रिचर्ड एटनबर्ग द्वारा निर्देशित फिल्म 'गांधी' एनएमएमएल ऑडिटोरियम में दिनांक 13 अक्टूबर, 2010 को दिखाई गई।

**भारत एक खोज**, श्याम बेनेगल द्वारा तैयार किए गए 53 एपिसोड वाला टीवी सीरियल जवाहर लाल नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' पर आधारित, के तीन एपिसोड प्रतिदिन एनएमएमएल ऑडिटोरियम में दिनांक 4-13 अक्टूबर, 2010 तक दिखाए गए। इसमें भारतीय इतिहास के 5000 वर्षों को प्रदर्शित किया गया है।

### प्रकाशन

इस अवधि के दौरान दो प्रकाशन जारी किए गए :

- 1) विकासात्मक राज्य और मध्य प्रदेश में दलित प्रश्न : कांग्रेस की प्रतिक्रिया, प्रो० सुधा पाई, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और वरिष्ठ अध्येता, एनएमएमएल।
- 2) श्री रणजीत लाल, पक्षी विशेषज्ञ और लेखक द्वारा द बर्ड्स एट तीन मूर्ति हाउस।

### एनएमएमएल अभिलेखागार

- एनएमएमएल का पांडुलिपि प्रभाग प्रतिष्ठित व्यक्तियों के निजी कागजातों तथा उन राजनीतिक और गैर-सरकारी संगठनों, संघों और सोसायटियों के रिकार्डों को अर्जित कर परिरक्षित करता है जिन्होंने आधुनिक भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये अभिलेखागार सामग्रियां, जो अनुसंधान के लिए प्राथमिक सूचना स्रोत होते हैं, शोधार्थियों के लिए उपलब्ध करवाई जाती हैं।
- अभिलेखागार संग्रह में गगनविहारी लाल मेहता (1900-1974) (अर्थशास्त्री और यू.एस.ए. में पूर्व राजदूत); डॉ० अमित जैन (जैन सम्प्रदाय पर कार्य कर रहे अनुसंधान शोधार्थी); बी. शिवा राव (स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, संसद सदस्य और ट्रेड यूनियन आंदोलन से सम्बद्ध); शेखर सिंह (6ठी किस्त) पर्यावरणविद और विश्व-भारतीय जीवन निधि से गहनता से जुड़े हुए; पी. एस. खानखोज (महान क्रांतिकारी और कृषि वैज्ञानिक)

और प्रो० चमन नाहल (अंग्रेजी साहित्य प्रोफेसर) के शोध पत्रों को अभिलेखीय सम्पत्ति में जोड़ा गया।

- पांडुलिपि प्रभाग ने ज्ञानी मेहर सिंह द्वारा लिखी गई हिन्दी पुस्तक 'नीव के पत्थर' तथा उनके पुत्र प्रो० सतीश चन्द्रा द्वारा लिखी पुस्तक 'ए मेमायर ऑफ श्री सीता राम' की पांडुलिपि तथा टाइप की हुई स्क्रिप्ट तथा श्री ए.के. दामोदरन द्वारा मलयालम भाषा में लिखी गई कविता 'प्रपंच गानम' की जिरॉक्स प्रति प्राप्त की, जिन्हें उनके मुख्य संग्रह के साथ रखा गया है।
- शोधार्थियों ने श्रेष्ठ अभिलेखागार संसाधनों का प्रयोग करना जारी रखा। 380 शोधार्थियों ने पांडुलिपि अनुभाग के अध्ययन कक्ष में अध्ययन किया। इन लोगों को परामर्श हेतु विभिन्न संग्रहों की 5408 फाइलें प्रदान की गईं। और कार्यालयी उपयोग तथा शोधार्थियों के उपयोग हेतु 42671 पृष्ठों की जिरॉक्स की गईं।

### मौखिक इतिहास

- मौखिक इतिहास प्रभाग सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार श्रृंखला के माध्यम से भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के विशेष संदर्भ के साथ आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक विकास से संबंधित दस्तावेज तैयार करता है।
- श्री एस.एम. कृष्णेत्री, पूर्व सिविल सर्वेंट; देवी प्रसाद, स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार और पेंटर; के.सी. जौहरी, वित्तीय आयुक्त और अध्यक्ष, दिल्ली औद्योगिक विकास निगम; दत्ताराम कृष्णा सुकथांकर, गोवा के स्वतंत्रता सेनानी; वाली राम जरनैल, पश्चिमोत्तर फ्रंटियर प्रोविन्स के स्वतंत्रता सेनानी; हरि राम आर्य, स्वतंत्रता सेनानी, पंजाब; विश्वनाथ प्रताप सिंह, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री; मदन मोहन नरदत, स्वतंत्रता सेनानी, रावलपिंडी; तथा मूलचन्द जैन, स्वतंत्रता सेनानी और कांग्रेसी के साथ लिए गए मौखिक इतिहास साक्षात्कारों को सम्पादित किया जा रहा है तथा उन्हें अंतिम रूप दिया जा रहा है।
- मल्टी-कैम वीडियो के सहायता से रिकार्ड किए गए मौखिक इतिहास साक्षात्कारों, पिछले वर्ष शुरू किया गया, की ट्रांसक्रिप्शन का कार्य भी जारी रखा गया। श्री एल.सी. जैन की डीवीडी के एपिसोड्स तथा

प्रो० विपन चन्द्रा की रिकार्डिंग के एक मुख्य भाग को ट्रांसक्राइब कर दिया गया है।

### रिप्रोग्राफी और परिरक्षण सेवाएं

- रिप्रोग्राफी प्रभाग ने बिजनेस स्टैण्डर्ड और हिन्दुस्तान टाइम्स अखबारों की 35 एमएम निगेटिव माइक्रोफिल्म के लगभग 32,172 फ्रेम्स तैयार किए और पुस्तकालय हेतु लगभग 2100 मीटर पॉजीटिव माइक्रोफिल्म तैयार की। इसके अतिरिक्त, इस प्रभाग ने 101 फोटोग्राफ्स, 2870 माइक्रोफोर्म प्रिंटआउट्स और 58,161 फोटोकापी भी तैयार की।
- पुरानी माइक्रोफिल्मों में जान फूंकने और उनकी उम्र बढ़ाने के लिए उनकी पुनः धुलाई की गई और डिजिटीकरण के लिए माइक्रोफिल्में दी गईं।
- परिरक्षण प्रभाग ने अभिलेखागार दस्तावेजों की 2906 पृष्ठों को लैमिनेट किया; 7928 दस्तावेजों को पूर्ण रूप से चिपकाया; 1251 पृष्ठों को रक्षित किया और 8218 पृष्ठों की धुलाई करके उनसे धब्बे हटाए तथा उन्हें सीधा किया।
- पार्सल सिलाई, पुस्तकों का रखरखाव, सूचियों की जिल्दबंदी तथा खण्डों पर स्वर्णाक्षर अंकन का कार्य भी किया गया।

### तारामंडल

नेहरू तारामंडल द्वारा आयोजित किए गए मुख्य कार्यक्रम इस प्रकार हैं :-

- ‘एस्ट्रॉनामी एंड टेम्पल आर्किटेक्चर’ और ‘आप्टिकल एस्ट्रॉनामी इन इंडिया’ विषयों पर इंटरएक्टिव सेक्शंस के साथ व्याख्यान।
- कम्युनिकेटर्स एंड एजुकेटर्स विज्ञान लोकप्रियता एसोसिएशन (एस.पी.ए.सी.ई.) के सहयोग से स्कूली अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए “आल इंडिया एस्टीमेटेड सर्वे कम्पेन” विषय पर कार्यशाला।
- संस्कृति स्कूल, दिन-रात की ‘स्काई आब्जरवेशन कार्यशाला’।

- शुक्र ग्रह के दिन में होने वाले ग्रहण को देखने के लिए जंतर मंतर वेधशाला के राम यंत्र का प्रयोग करते हुए दिन में आकाश को निहारने का कार्यक्रम।
- खगोलविदों, भौतिकविदों, अव्यवसायी खगोलविदों द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला जिन्हें बाद में यूस्ट्रीम टी.वी. और यू ट्यूब.कॉम के माध्यम से प्रसारित किया गया।
- नासा के खगोलशास्त्री, जॉन हिगिनबॉथम के साथ विद्यार्थियों की परिचर्चा।
- हिन्दी पखवाड़ा समारोह के भाग के रूप में दिनांक 7 अक्टूबर, 2010 को ‘भारतीय त्यौहारों में खगोल विज्ञान’ विषय पर हिन्दी में लाइव शो।

जवाहर लाल नेहरू के जन्म दिवस को मनाने के लिए दिनांक 16-30 नवम्बर, 2010 को बाल पखवाड़े का आयोजन किया गया।

### आधुनिकीकरण की परियोजनाएं

#### डिजिटीकरण

- भारत के आजादी के संघर्ष तथा आधुनिक और समसामयिक भारत से संबंधित दस्तावेजों के सबसे बड़े अभिलेखागार के रूप में, एनएमएमएल प्रतिष्ठित व्यक्तियों, उस अवधि के दौरान सक्रिय सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के निजी कागजातों के संग्रह का भारत का सबसे बड़ा एकल भंडार है। केवल इसकी पांडुलिपियां और ऐतिहासिक समाचार-पत्रों का संग्रह ही लाखों पृष्ठों जितना लम्बा है।
- अपने अभिलेखागार को डिजीटाइज करने की एनएमएमएल की वर्तमान, पहल के पीछे प्रभावी डाटाबेस प्रबंधन पुनःप्राप्ति प्रणाली तथा डिजीटल स्टोरेज के माध्यम से सुलभता को बढ़ाने के साथ ही संरक्षण की आवश्यकता मुख्य कारण है। डिजिटीकरण हेतु टर्नकी परियोजना तथा समेकित दस्तावेज प्रबंधन प्रणाली (आईडीएमएस) तैयार करने का कार्य मैसर्स एचसीएल इन्फोसिस्टम लिमिटेड को सौंपा गया है।
- प्रस्तावित पहलों के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :**
  - सभी दुर्लभ दस्तावेजों का **परिरक्षण** सबसे पहला उद्देश्य है। दस्तावेजों की एक बार स्केनिंग तथा



डिजिटीकरण किए जाने के बाद टेप कार्टिजिज में अपरिष्कृत तथा साफ तस्वीरों को एनएमएमएल अधिकारियों के लिए आरक्षित किया जा सकता है। सभी डिजीटाइज्ड तस्वीरों का एक बैकअप माइक्रोफिल्म्स में तैयार किया जा रहा है, जिनकी अनुमानित आयु 5 वर्ष की अवधि है।

ख) शोधार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं, शिक्षाविदों और सामान्य लोगों की **सुलभता को बढ़ाना**, यह सुलभता एनएमएमएल के भीतर तथा जो व्यक्तिगत तौर पर एनएमएमएल नहीं आ सकते उनके लिए आईडीएमएस के माध्यम से बढ़ाई जाएगी जिससे एनएमएमएल होल्डिंग्स की सुलभता बढ़ जाएगी। ज्यों ही आईडीएमएस कार्य करना शुरू कर देगा तब मेटाडाटा के साथ कम्प्रेस्ड वेब न्यू इमेजिज को देखा जा सकेगा/डाउनलोड किया जा सकेगा।

ग) **खोज करने की क्षमता बढ़ाना** ताकि सभी होल्डिंग्स विषयों, थीम्स या अन्य किसी मानदण्ड के आधार पर लिंक की जा सकें, इससे अनुसंधान हेतु बहुत से आंकड़े आसानी से उपलब्ध होंगे। किसी विषय की विषय-वस्तु या थीम्स की खोज करने वाले अनुसंधानकर्ताओं के लिए पाण्डुलिपि, फोटोग्राफ्स, आडियो, वीडियो और माइक्रोफिल्म्स जैसे सभी प्रारूपों में विषय-वस्तु शीघ्रता से एकीकृत रूप में उपलब्ध होगी।

- एनैक्सी भवन के बेसमेंट में स्थित डिजिटीकरण कक्ष ने भी दिनांक 19 अप्रैल, 2010 से कार्य करना शुरू कर दिया है तथा वर्तमान में प्रतिदिन 12,000 दस्तावेजों को डिजीटाइज किया जा रहा है। दिसम्बर, 2010 तक 7.20 लाख इमेजों को डिजीटाइज किया जा चुका है जिनमें 6.18 लाख पाण्डुलिपियां तथा ट्रांसक्रिप्ट पृष्ठ, 80,000 माइक्रोफिल्म्स और 22,000 फोटोग्राफ्स शामिल हैं।
- पुस्तकालय में 2.5 लाख पुस्तकों की सूची को अपलोडिंग हेतु खोजने वाली स्थिति में डिजीटाइज कर दिया गया है तथा इसे एनएमएमएल की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है। वेबसाइट देखने वाले लोग पुस्तक के संक्षिप्त विवरण के साथ विषय-वार, लेखक-वार तथा शीर्षक-वार पुस्तकों की सूची को देख सकते हैं।

- उन पुस्तकों तथा पत्रों जिनके साथ कॉपीराइट का मुद्दा जुड़ा हुआ नहीं है, के डिजिटीकरण के कार्य को बाद में किया जाएगा और ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाएगा।
- जनवरी, 2011 के अंत तक समेकित डाटाबेस प्रबंधन प्रणाली में 5 लाख दस्तावेजों के अपलोड की पाइलट परियोजना उपयोगकर्ताओं के स्वीकृति परीक्षण (यूएटी) के लिए तैयार हो जाने की संभावना है।
- एनएमएमएल में डिजिटीकरण प्रक्रिया का हमारी वेबसाइट <http://www.nmmml.in> पर दस्तावेजीकरण किया जा रहा है।

### मल्टी-मीडिया पुस्तकालय

सभी गैर-पाठ्य-पुस्तक सामग्रियों जिनमें आडियो, वीडियो और फोटोग्राफ्स शामिल हैं, के लिए जिम्मेदार मल्टी मीडिया पुस्तकालय भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के माध्यम से एनएमएमएल की पुरानी फिल्मों को बहाल और डिजिटीकरण कर रहा है।

ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण संसाधन का डाटाबेस तैयार करने के लिए पंडित नेहरू के भाषणों के ऑडियो स्पूलों और रिकार्डों सहित 2700 ऑडियो स्पूलों तथा 69 एलपी रिकार्डों की एक सूची तैयार की गई है। मल्टी कैम वीडियो की सहायता से मौखिक इतिहास साक्षात्कार रिकार्ड किए गए। एनएमएमएल कार्यक्रमों की रिकार्डिंग से आडियो-वीजुअल संसाधन तैयार किए गए जिसमें 100 घंटों की वीडियो रिकार्डिंग्स शामिल है। स्वतंत्रता संग्राम और समकालीन इतिहास पर बने वृत्तचित्रों के राष्ट्रीय भंडार के रूप में एनएमएमएल को विकसित करने के लिए अन्य स्रोतों से ऑडियो-वीजुअल संसाधन जुटाए जा रहे हैं। मल्टी-मीडिया सीडी/डीवीडी तैयार की जा रही हैं।

अनुसंधानकर्ताओं के लाभ के लिए रेडियो और टी.वी. समाचारों का इलेक्ट्रॉनिक समाचार अभिलेखागार स्थापित किया जा रहा है।

एनएमएमएल की दृश्यता बढ़ाने और नेहरू द्वारा संपोषित मूल्यों का प्रचार करने तथा भारत के स्वतंत्रता संग्राम को सही ठहराने के लिए नेहरू बायोस्कोप्स ने महात्मा गांधी के बारे में **ए फोर्स मोर पावरफुल, नेहरू की चित्रात्मक जीवनी भारत एक खोज और हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी के प्रख्यात कवि के बारे में नागार्जुन फिल्मों का प्रदर्शन किया।**

संग्रहालय में दो विशेष प्रदर्शनियाँ “इनर एंड आउटर वर्ल्ड्स : लुकिंग एट टेम्पल आर्किटेक्चर” और “इंडो इस्लामिक मान्युमेंट्स इन हरियाणा एंड पंजाब” लगाई गई।

### बाल संसाधन केन्द्र

परिसर, आऊटरीच तथा भागीदारी कार्यकलापों के माध्यम से नेतृत्व गुणों का विकास करने का अवसर प्रदान करने के लिए एनएमएमएल के बाल संसाधन केन्द्र (सीआरसी) ने विशेषतौर पर बच्चों और युवाओं के लिए 15 कार्यक्रम तैयार किए हैं। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- “मेकिंग फ्रेंड्स विद चाचा नेहरू” विषय पर बच्चों को प्रतिदिन संग्रहालय का भ्रमण।
- “नेचर बेकन्स” तीन मूर्ति भवन सम्पदा के श्रेष्ठ प्राकृतिक पर्यावरण, इसके पेड़ों, पक्षियों और वनस्पति के बारे में सीखने के लिए पदयात्राएं।
- अहिंसा साइकिल, तीन मूर्ति भवन से ग्यारह मूर्ति तथा गांधी स्मृति तक महात्मा गांधी और पंडित नेहरू को समर्पित, साइकिल भ्रमण।
- अफसाना-ए-अशोक, सम्राट अशोक से संबंधित शिलाओं और स्तंभों का आधे दिन का दौरा, जिसे राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान शुरू किया गया है।
- कारवां — लोकतंत्र, नागरिकता और बाल अधिकार कार्यशालाओं सहित दिल्ली और दिल्ली के बाहर के विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों, स्कूलों और कॉलेजों के सहयोग से नेहरू आऊटरीच कार्यक्रम।
- किताब खजाना नेहरू बाल पुस्तकालय — राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की भागीदारी से 4000 किताबों से शुरू किया गया।
- दोस्ती करो-राष्ट्र शिविर — आवासीय शिविरों के माध्यम से उपेक्षित समुदायों के युवाओं के लिए।
- युवा यात्रा — शहरी युवाओं को ग्रामीण भारत के बारे में सीखने के लिए गैर-सरकारी संगठनों की भागीदारी से असम और बुंदेलखण्ड में 8-10 दिन के ‘भारत एक खोज’ शिविर।

- रंग-तरंग नेहरू ग्रीष्मकालीन स्कूल, पिता और बेटी के बीच लिखे गए पत्रों, भारत एक खोज तथा दुनिया के शांति नेताओं पर तैयार किए गए एक माह के कार्यक्रम में 120 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- धनक दिन-नेहरू बाल मेला, वार्षिक प्रमुख कार्यक्रम का आयोजन 26-28 नवम्बर को किया गया जिसमें 60 पंजीकृत कार्यकलापों का आयोजन किया गया तथा इसमें 15000 दर्शक आए।
- युवा धारा-नेहरू इंटरनशिप मई-जून में 6 सप्ताह की अवधि का जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय, शैक्षिक और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के 18-25 आयु वर्ग के 25 युवाओं ने भाग लिया।
- युवा एक्सप्रेस — विविधता, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व विषयों पर रविवार की कार्यशाला के साथ दिसम्बर में युवाओं के लिए एक नई पहल की शुरुआत की गई।
- शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, गार्गी कालेज और माता सुंदरी कालेज के विद्यार्थियों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- प्रवाह, एक गैर-सरकारी संगठन, के सहयोग से ग्रामीण उत्तराखंड में 6 विभिन्न संस्थाओं के अध्यापकों के साथ एक शिविर लगाया गया।
- म्यांमार के एजुकेटर्स के साथ अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान तथा एशियन फ्रेंडशिप कार्यक्रम और दक्षिण कोरिया और पाकिस्तान के बच्चों के साथ संवाद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- फिल्म बूथ, सीआरसी और मल्टी मीडिया लाइब्रेरी के साथ ‘फिल्म मेकिंग कार्यशाला’ का आयोजन किया गया जिसमें 17 युवाओं ने भाग लिया और तैयार की गई 5 लघु फिल्मों ‘मिलेनियम डेवेलपमेंट गोल्स’ में अंतर्राष्ट्रीय लघु फिल्म उत्सव के दौरान दिनांक 18 सितम्बर को प्रदर्शित की गई।
- केलाइडोस्कोप एक-सप्ताह का कार्यक्रम 80 देशों के 300 युवा नेताओं हेतु ऑक्सफैम इंडिया के सहयोग से तैयार किया गया। एनएमएमएल ने तीन मूर्ति भवन में उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया।

- पूर्वोत्तर फोकस, पहले जारी रहीं, जिनके अंतर्गत दो भागीदार संगठनों के साथ असम के 6 जिलों में नेहरू ग्रीष्मकालीन स्कूल का आयोजन किया गया।

### एनएमएमएल अवसंरचना का आधुनिकीकरण

- परियोजना हेतु नियुक्त की गई वास्तुकारों की टीम ने अग्नि और जल रोधी तथा स्थल बढ़ाने सहित अवसंरचना के स्तरोन्नयन और सिविल कार्यों को अंतिम रूप देने के लिए सीपीडब्ल्यूडी के सहयोग से अपना कार्य जारी रखा।
- इस अवधि के दौरान राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय द्वारा शुरू किए गए तारामंडल भवन के स्तरोन्नयन और नवाचार के कार्य को पूरा किया गया। पुस्तकालय भवन के भूतल प्रकोष्ठ में कांच की एक दीवार स्थापित की गई है। चरण-1 के सिविल कार्यों – पुस्तकालय भवन और एनेक्सी के प्रथम तल के कमरों को तोड़ना-को पूरा कर लिया गया है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने बनावटी छत के साथ एसी वाहिनी और इलेक्ट्रिक वायरिंग के काम में अच्छी प्रगति की है, एनएमएमएल अध्येताओं के कमरों में पीओपी तथा फ्लोरिंग के कार्य को एक साथ शुरू किया जाएगा।
- सीपीडब्ल्यूडी द्वारा नवाचार के बाद भूतल पर प्रसाधन-कक्षों को कार्यात्मक बना दिया गया है जबकि प्रथम तल पर कार्य लगभग पूरा होने की स्थिति में है। ए.सी. वाहिनी का कार्य पूरा हो चुका है तथा पांडुलिपि प्रभाग में अग्निशमन यंत्र की नाली स्थापित की जा चुकी है।

- एक्सेस लेखा परीक्षा की सिफारिशों के आधार पर उपयुक्त स्थलों पर रैम्प्स का निर्माण किया जा रहा है। रैम्प्स की सतह पर अभी अंतिम सामग्री बिछाई जानी है।
- सीपीडब्ल्यूडी ने आश्वासन दिया है कि चरण-1 के सिविल कार्य 31 जनवरी, 2011 तक पूरे कर लिए जाएंगे।

### उद्यान और सम्पदा

इस वर्ष मुख्य रूप से तीन मूर्ति सम्पदा में प्राकृतिक संसाधनों के प्रलेखन, मूल्यांकन तथा समझ पर ध्यान दिया गया। व्यापक स्थलाकृतिक सर्वेक्षण, जल संचयन क्षमता, जल तथा मृदा की गुणवत्ता संबंधी अध्ययनों सहित अनेक अध्ययन किए गए। इन रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है उनके निष्कर्ष तथा सिफारिशें तैयार की गईं और पृष्ठांकन के लिए सलाहकार समिति को प्रस्तुत की गईं।

विख्यात पक्षी विशेषज्ञ और लेखक, श्री रणजीत लाल ने पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों पर केंद्रित वर्ष भर चले पक्षी विविधता सर्वेक्षण को पूरा कर लिया है। इनके निष्कर्षों का उल्लेख 'द बर्ड्स एट तीन मूर्ति' नामक एक क्षेत्र मार्गदर्शिका में किया गया है।

पक्षियों के विवरण सहित कम से कम तीन स्थलों पर पहचान बोर्ड लगाए गए। पक्षियों के चित्रों सहित अप्रैल 2010 से मार्च 2011 तक का एक कैलेंडर प्रकाशित किया गया।

एनडीएमसी के निदेशक (बागवानी) तथा सैवानिवृत्त वरिष्ठ वन अनुसंधान संस्था के सदस्य की अगुवाई में तीन मूर्ति सम्पदा में वृक्षों का गहन अध्ययन किया गया तथा इस पर एक रिपोर्ट तैयार की गई है।

## इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस) / (नेशनल म्यूज़ियम ऑफ़ मैनकाइंड) स्थान और काल में मानव की गाथा के प्रस्तुतिकरण हेतु समर्पित संस्कृति मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय मानव संस्कृतियों की समकालिक प्रामाणिकता तथा विकल्पों की बहुलता को प्रदर्शित करने के लिए भारत में एक नवीन संग्रहालय आंदोलन के सूत्रपात में संलग्न है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का मुख्यालय भोपाल में स्थित है जबकि एक क्षेत्रीय केंद्र मैसूर (कर्नाटक) में कार्यरत है।



आईजीआरएमएस का विकास तीन रचनात्मक उप-स्कीमों (क) आधारभूत संरचनात्मक विकास (संग्रहालय परिसर का विकास) (ख) शैक्षणिक और आउटरीच गतिविधियों, तथा (ग) ऑपरेशन साल्वेज सहित चल रही योजनागत स्कीमों के रूप में किया जा रहा है। दूसरे शब्दों में आईजीआरएमएस अपनी भौतिक आधारभूत संरचना का विकास भारतीय सांस्कृतिक जीवन की विभिन्नता और एकता की रक्षा, संरक्षण तथा नष्ट होने से बचाने हेतु शैक्षणिक व आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से करता है।

### (क) आधारभूत संरचनात्मक विकास (संग्रहालय परिसर का विकास)

भोपाल में सात मील लम्बी बड़ी झील के किनारे 200 एकड़ के असमतल भू-भाग पर फैला आईजीआरएमएस परिसर एक असाधारण भूदृश्य है। क्यूरेटोरियल विंग के सदस्य संग्रहालय में जनजातीय आवास, हिमालय ग्राम, तटीय गाँव, मरु ग्राम, विश्वबोध और कथापथ, शैलकला धरोहर, एथनो-बॉटनिकल ट्रेल, पारम्परिक तकनीक तथा पुनीत वन नामक विभिन्न मुक्ताकाश प्रदर्शनियों के उन्नयन और रख-रखाव में संलग्न रहे तथा इनडोर संग्रहालय भवन वीथि संकुल में नवीन प्रदर्शन स्थल तथा स्थायी दीर्घाओं का विकास करने में व्यस्त रहे।

समीक्षाधीन अवधि में संग्रहालय ने अपने संकलन में लगभग 86 मानवशास्त्रीय प्रदर्श, 1742 स्लाइड/फोटो प्रिंट, 630 से भी अधिक घंटों की आडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, भारतीय/विदेशी शोध पत्रिकाओं के 510 अंक तथा 365 ग्रंथालयीन पुस्तकों की अभिवृद्धि की। कर्मचारियों के मध्य हिंदी भाषा के प्रयोग को कार्य के माध्यम के रूप में लोकप्रिय बनाने के लिए राजभाषा इकाई ने इस अवधि के दौरान एक हिंदी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम, एक विशेष



कार्यक्रम हिंदी मास, 'क्षेत्रीय भाषाएं, हिंदी और सामाजिक सद्भाव' पर एक संगोष्ठी, हिंदी की पुस्तकों की एक विशेष प्रदर्शनी, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें, एक अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन तथा एक पुस्तक चतुर्थ आयाम का प्रकाशन किया।

### (ख) शिक्षा और आउटरीच गतिविधियाँ

संग्रहालय द्वारा 'करो और सीखो' संग्रहालय शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत संग्रहालय देश के विभिन्न दूरस्थ इलाकों से कलाकारों को आमंत्रित कर पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए प्रदर्शन सह प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जनवरी, 2010 के दौरान पारम्परिक कलाकार श्रीमती अरफी बेगम के 'उड़ीसा की पारम्परिक एप्लिक कला' पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम और भीलवाड़ा के कलाकार श्री मुकुल जोशी के 'राजस्थान की कोलाज चित्रकला' पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।

अप्रैल, 2010 में श्रीमती जुलेखा खान और उनके सहयोगी द्वारा 'भोपाल की जरदोजी कला' पर एक दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया और 'राजस्थान की पॉटरी' पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान के पोखरण क्षेत्र के श्री लूणाराम और उनके सहयोगी ने पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया।

पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण देने के लिए मई, 2010 में कलाकार श्री श्यामल घोष द्वारा 'पश्चिम बंगाल के सोला शिल्प' पर एक दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, उड़ीसा के श्री लोकनाथ राणा द्वारा 'उड़ीसा के पारम्परिक टेराकोटा' पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, उदयपुर, राजस्थान के श्री प्रदीप मालवीय द्वारा 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' नामक दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम और श्री प्रहलाद महाराणा द्वारा 'उड़ीसा की पारंपरिक पट्ट चित्रकला' पर दस दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

रिपोर्ट अवधि के दौरान मणिपुर की कोम जनजाति – देवरी, राभा, हजोंग और असम के मोरान समुदायों के परम्परागत प्रकार के मकान वीथि संकुल, इंडोर गैलरी काम्प्लेक्स, के नजदीक प्रदर्श के रूप में निर्मित किए गए थे। अक्टूबर, 2010 में समय प्रबंधन 'टेनिएसंग' की परम्परागत तकनीक और मणिपुर से लोहा पिघलाने 'योत्संग योत्सा' की परम्परागत तकनीक के आधार पर नए प्रदर्श, पारम्परिक प्रौद्योगिकी ओपन एयर प्रदर्शनी में शामिल किए गए थे।

पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण देने के लिए नवम्बर, 2010 में श्री रवि बिस्वास और उनके सहयोगी द्वारा 'पश्चिम बंगाल की पारंपरिक अल्पना कला' पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम और महाराष्ट्र की कलाकार श्रीमती मानकी वायडा और उनके सहयोगी द्वारा 'पारंपरिक वारली चित्रकला' पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंच कलारूपों के प्रचार-प्रसार तथा संग्रहालय की गतिविधियों को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा समय-समय पर अपने परिसर में तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर सामुदायिक जीवनशैली के विभिन्न पक्षों पर जीवंत प्रस्तुतियों के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान संग्रहालय ने निम्नलिखित अस्थायी और घुमंतू प्रदर्शनियों का आयोजन किया:

- i. फरवरी, 2010 में 'भोजपाल/भोपाल (1010-2010)—एक हजार वर्ष की सांस्कृतिक यात्रा' पर एक छायाचित्र प्रदर्शनी।
- ii. मार्च, 2010 में कबाव-संग्रहालय के स्थापना दिवस के अवसर पर 'कबाव' और 'घडेमस' नामक दो उप सहायीय जनजातीय गाँवों की पारंपरिक मृदा स्थापत्य पर आधारित एक छायाचित्र प्रदर्शनी और भूता परंपराएं: उडुपी, कर्नाटक से संग्रहालय द्वारा 'संकलित पारंपरिक भूता रूपों को दर्शाती काष्ठ मूर्तियों पर केंद्रित एक प्रदर्शनी संग्रहालय के स्थापना दिवस' के अवसर पर आयोजित की गई।
- iii. मई, 2010 में नरबदा जी: अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर 'नर्मदा नदी घाटी' संस्कृति पर प्रदर्शनियों की श्रृंखला के भाग के रूप में नर्मदा नदी घाटी के स्रोत क्षेत्र के आस-पास आदिवासी परंपरा को दर्शाती प्रदर्शनी और छवियाँ-जनजातीय/लोक: अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर संग्रहालय के एक क्यूरेटर श्री विकास भट्ट द्वारा लिए गए छायाचित्रों पर आधारित एक सामयिक छायाचित्र प्रदर्शनी।
- iv. जून, 2010 में भारत के पुनीत वन: विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वन संरक्षण के लिए विभिन्न भारतीय समुदायों के पारंपरिक मानदंडों और मूल्य प्रणाली पर केंद्रित एक छायाचित्र प्रदर्शनी और छवियाँ-2: विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध कलाकार श्री सचिदा नागदेव द्वारा छायांकित चित्रों की प्रदर्शनी। जून, 2010 में धरोहर झरोखा:



दिल्ली पब्लिक स्कूल, जबलपुर में ग्रामीण भारत के कला और शिल्प को दर्शाती एक अन्य छायाचित्र प्रदर्शनी, धरोहर झरोखा के रूप में आयोजित की गई।

- v. जुलाई, 2010 में छवियाँ-3 मानव और प्रकृति: हिमालय और तटीय क्षेत्रों के मनमोहक परिदृश्यों, सुंदर क्षितिज और समुद्र तटों तथा उदार प्रकृति के छायाचित्रों को समाहित किए एक छायाचित्र प्रदर्शनी।
- vi. अक्टूबर, 2010 में भारत के पारंपरिक ग्रामीण आवास प्रकार: विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर जनजाति, लोक और ग्रामीण भारत की सांस्कृतिक विरासत और वास्तु अभिरुचि को इंगित करती प्रदर्शनी और अनुगूंज: छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुंबई के सहयोग से मुंबई में आयोजित भारत के जनजातीय और लोक समुदायों में प्रचलित मिथकों और विश्वासों को चित्रित करती एक प्रदर्शनी।
- vii. नवम्बर, 2010 में परिचय झरोखा: संग्रहालय की गतिविधियों को दर्शाती एक विशेष प्रदर्शनी प्रगति मैदान, नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर में आयोजित की गई।
- viii. दिसम्बर, 2010 में मुख़ावरण: भोपाल के डॉ. अनूप मेहरोत्रा के निजी संकलन से विभिन्न देशों के मुखौटों को दर्शाती एक प्रदर्शनी लगाई गई।

### कलाकार शिविर/कार्यशालाएं

- i. जनवरी, 2010 में सांचीपात लेखन: सांचीपात लेखन की तकनीक और पारम्परिक पद्धतियों पर एक सप्ताह के कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कमलाबाड़ी सत्र, माजुली, असम के सहयोग से उनके सत्र परिसर में किया गया। इस प्रदर्शन कार्यशाला में 17 भगतों ने गुरु भगत श्री बुधिन पाठक, औनियाति सत्र, माजुली के मार्गदर्शन में भाग लिया।
- ii. जनवरी, 2010 में नरबदे हर-5: 'नरबदे हर-5' नामक कलाकार कार्यशाला का आयोजन अमरकंटक, मध्य प्रदेश में किया गया। इस कार्यक्रम में 'ढिंगना-महिला कलाकारों की चित्रकला कार्यशाला, 'मगरोही'-काष्ठ उत्कीर्णन और

बांस शिल्प पर कार्यशाला, 'झरती मांदी-पारंपरिक गीतों और नाटकों के प्रलेखन के लिए शिविर, देशज पारंपरिक व्यंजनों की प्रस्तुति, 'चिन्ह' भारत के सहयोग से एनीमेशन फिल्म बनाने हेतु प्रशिक्षण के लिए शिविर का आयोजन किया गया।

- iii. जनवरी, 2010 में शिल्पायन-4: शांतिनिकेतन और एक गैर सरकारी संस्था महाशक्ति सेवा केंद्र, भोपाल के सहयोग से धातु, पॉटरी, टेराकोटा, बाटिक और वनस्पति रंगों से रंगाई पर केंद्रित दस दिवसीय कलाकार शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, असम, मणिपुर और लद्दाख के लगभग 75 कलाकारों ने कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। इस कार्यशाला में शिल्प सदन, शांतिनिकेतन के विद्यार्थी और संकाय सदस्यों ने भी भाग लिया।
- iv. फरवरी, 2010 में अंतरंग राग: वर्ष 1979 में भोपाल में संग्रहालय की स्थापना के बाद से संग्रहालय के क्रमिक विकास के दौरान कलाकारों के अनुभवों की अभिव्यक्तियों पर आधारित नौ दिवसीय चित्रकला कार्यशाला 'अंतरंग राग' का आयोजन संग्रहालय परिसर में किया गया, जिसमें उड़ीसा, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, बिहार, आंध्र प्रदेश आदि के लगभग 45 कलाकारों ने भाग लिया।
- v. कृति: भारत की पारंपरिक लोक और जनजातीय कला व शिल्पों पर दस दिवसीय जनजातीय कला और शिल्प शिविर का प्रारंभ 30 दिसम्बर, 2010 को किया गया जिसमें भारत के मणिपुर, असम, त्रिपुरा, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश आदि के लगभग 40 कलाकारों ने अपने सहयोगियों के साथ भाग लिया तथा अपने पारंपरिक कला और शिल्प ज्ञान पद्धति के कौशल का प्रदर्शन किया।
- vi. संग्रहालय द्वारा 'उड़ीसा डेवलपमेंट एक्शन फोरम (ओडेफ) के सहयोग से भुवनेश्वर में 11 से 17 दिसम्बर, 2010 तक जनजातीय उपचारक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 9 राज्यों मणिपुर, उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, त्रिपुरा से लगभग 130 जनजातीय औषध विशेषज्ञों ने अपने सहयोगियों के

साथ भाग लिया तथा इस एक सप्ताह की राष्ट्रीय कार्यशाला में विभिन्न व्याधियों के बारे में लोगों को परामर्श सेवाएं दीं।

## सेमिनार/संगोष्ठियां

संग्रहालय द्वारा मानव से संबंधित विभिन्न पक्षों पर सेमिनार, संगोष्ठियों, परिसंवादों, संग्रहालय लोकरुचि व्याख्यानों आदि का आयोजन किया जाता है। ये गतिविधियाँ देश में एक नवीन संग्रहालय आंदोलन उत्पन्न करने के लिए उपयोगी हैं। वर्ष 2010-11 के दौरान संग्रहालय ने देश के विभिन्न भागों में निम्नलिखित विषयों पर सेमिनार/संगोष्ठियां आयोजित कीं :

- i. इंडियन नेशनल, कॉन्फेडरेशन एंड एकेडमी ऑफ एंथ्रोपोलोजिस्ट (इंका) के सहयोग से फरवरी, 2010 में तीन दिवसीय 'भारतीय मानवशास्त्रीय काँग्रेस-2010' का आयोजन किया गया। इसमें संपूर्ण देश के लगभग 200 मानवशास्त्रियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।
- ii. मई, 2010 में अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर 'सामाजिक सद्भाव हेतु संग्रहालय' पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. (सुश्री) टी कुमार, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा मूर्धन्य पुरातत्वविद् और संग्रहालय विज्ञानी डॉ. के.के. चक्रवर्ती, प्रो. समरेन्द्र सराफ, पूर्व निदेशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, श्री टी.एन. पंडित तथा अन्य उपस्थित थे।
- iii. मानवशास्त्र और संग्रहालय विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 25 और 26 अक्टूबर, 2010 को किया गया। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल 22 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य मानव संग्रहालय और देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के मानवशास्त्र विभागों के मध्य नेटवर्क स्थापित करना था ताकि परस्पर अवसरचक्रात्मक तथा अकादमिक सुविधाओं का उपयोग करते हुए सहयोगात्मक गतिविधियां आयोजित की जा सकें।

## प्रकाशन

इस अवधि के दौरान संग्रहालय द्वारा स्टडीस् ऑन बायोमेडिकल एंथ्रोपोलोजी, ए.के. डांडा, आर.के. मुटाटकर और विकास भट्ट

द्वारा संपादित, मल्टीपल हेरीटेज, किशोर के. बासा द्वारा संपादित और ग्लिमप्सेस ऑफ इंडियन हेरिटेज, आर.सी. मिश्रा द्वारा संपादित पुस्तकें प्रकाशित की गईं। संग्रहालय ने सामयिक प्रकाशन जैसे कि वार्षिक रिपोर्ट 2008-09, ह्यूमेनकाईन्ड-आईजीआरएमएस की वार्षिक पत्रिका और आईजीआरएमएस न्यूज: तीन त्रैमासिक न्यूजलेटर, का प्रकाशन भी किया। संग्रहालय ने समय-समय पर आयोजित किए गए अपने कार्यक्रमों और गतिविधियों पर आधारित फोल्डरों, पोस्टरों, हैंड आउट्स और बुक्लेट्स इत्यादि का भी प्रकाशन किया।

## अन्य गतिविधियां

34वाँ स्थापना दिवस समारोह: संग्रहालय ने 21 और 22 मार्च, 2010 को अपना 34वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस दो दिवसीय समारोह में प्रदर्श परिसरों से जुड़े उत्सवों, विशेष प्रदर्शनियों का उद्घाटन, नवीन दर्शक सुविधाओं का शुभारंभ, मंच कलारूपों की प्रस्तुति, प्रदर्श निर्माण की पारंपरिक प्रक्रिया, पुस्तक का विमोचन आदि कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस समारोह: अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर 18 मई, 2010 को संग्रहालय ने प्रतियोगितात्मक कार्यक्रमों जैसे धरोहर की खोज, चित्रकला प्रतियोगिता और प्रश्नोत्तरी, उड़ीसा की पट्टचित्र कला पर 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम, 'सामाजिक सद्भावना हेतु संग्रहालय' विषय पर एक संगोष्ठी, दो नवीन प्रदर्शनियाँ 'नरबदाजी' और 'छवियाँ-लोक/जनजातीय' का संयोजन, सुश्री शुभा मुद्गल द्वारा शास्त्रीय गायन और सुश्री श्वेता देवेन्द्र और क्षमा मालवीय द्वारा 'ओम नर्मदाय नमः' शीर्षक पर नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह: वर्ल्ड वाइड फंड, भारत, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मंडल और ग्रीन प्लानेट बाइसिकिल राइडर्स एसोसिएशन, भोपाल के सहयोग से 5 और 6 जून, 2010 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कई गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें साइकिल रैली, पोस्टर प्रतियोगिता, दो नवीन प्रदर्शनियों 'भारत के पुनीत वन' और 'छवियाँ-2' का संयोजन, संस्कृति और पर्यावरण विषय पर समूह चर्चा, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, श्रीमती सुजाता महापात्र द्वारा ओडिसी नृत्य, श्री महेन्द्र सिंह द्वारा संग्रहालय लोकप्रिय व्याख्यान, पुनीत वन से जुड़े समारोह और तमिलनाडु के देशज व्यंजनों की प्रस्तुतियां शामिल थीं।

इंटरनेशनल डे ऑफ द वर्ल्ड्स इंडिजिनस पीपुल: ओरॉव और अन्य जनजातीय संगठन, मध्य प्रदेश के सहयोग से 'इंटरनेशनल डे ऑफ द वर्ल्ड्स इंडिजिनस पीपुल' के अवसर पर एक बहुरंगी कार्यक्रम 'बारा अजरौत' का आयोजन 9 अगस्त, 2010 को किया गया। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के जनजातीय समुदायों ने 'पारंपरिक नृत्यों की झलकियां प्रस्तुत कीं। 'रिओरिएंटेशन ऑफ सिटी माइग्रेंट्स टू देअर कल्चरल रूट्स' विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस: 12 और 13 अगस्त, 2010 को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 12 अगस्त को एक चित्रकला प्रतियोगिता और 'हंसा कर ले किलोल' नामक नाटक और 13 अगस्त को भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति सम्मिलित थी।

पुस्तकालय दिवस के अवसर पर 12 अगस्त, 2010 को 'पुस्तकालय और सामाजिक समरसता' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया जिसमें भोपाल स्थित पुस्तकालयों के पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय विज्ञान विषय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विश्व विरासत सप्ताह के अवसर पर 19 से 25 नवम्बर, 2010 तक विविध कार्यक्रमों और गतिविधियों जैसे पश्चिम बंगाल की पारंपरिक 'अल्पना कला' पर प्रदर्शन सह प्रशिक्षण कार्यक्रम, विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी और चित्रकला प्रतियोगिता तथा दो संग्रहालय लोकप्रिय व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

संग्रहालय ने विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर 3 दिसम्बर, 2010 को विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में शारीरिक रूप से बाधित बच्चों के लिए कार्य कर रहे भोपाल के विभिन्न गैर सरकारी संगठनों जैसे आरुषि, आशा निकेतन, उमंग और एसओएस बालग्राम के बच्चों ने वीथि संकुल की दीर्घाओं का भ्रमण किया और विशेष चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया।

11 और 12 दिसम्बर, 2010 को आयोजित स्कूली बच्चों के विशेष कार्यक्रम का उद्घाटन 11 दिसम्बर को माननीय श्री रामेश्वर ठाकुर, महामहिम राज्यपाल मध्य प्रदेश सरकार ने संग्रहालय के आवृत्ति भवन के पास मुक्ताकाश मंच से किया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय और लोक शिक्षा निदेशालय, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में सिक्किम, पंजाब, मणिपुर, असम, बिहार, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्य के बच्चों ने राष्ट्रीय लोकनृत्य प्रतियोगिता में

भाग लिया। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम का दूसरा आकर्षण 'लघु भारत' नामक प्रदर्शनी थी, जिसमें भोपाल के विभिन्न स्कूलों ने मानव उद्विकास, मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध हस्तियां, व्यावसायिक और अकादमिक गतिविधियां, मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकारी आदि पर प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री बाबूलाल गौर, शहरी और प्रशासन मंत्री, मध्य प्रदेश ने की। कार्यक्रम राष्ट्रीय लोकनृत्य प्रतियोगिता और विजेताओं को पुरस्कार वितरण के साथ सम्पन्न हुआ। सिक्किम, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश को प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने पर क्रमशः 15000 रुपए, 11000 रुपए और 7000 रुपए की नकद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई। शेष प्रत्येक समूह को 5000 रुपए की सांत्वना पुरस्कार राशि प्रदान की गई। कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती अर्चना चिटनिस, स्कूल शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश द्वारा की गई। कार्यक्रम के दौरान बालरंग 2010 पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

जनजातीय बच्चों के बीच भारतीय सांस्कृतिक विरासत की विविधता और समृद्धता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से संग्रहालय ने जनजातीय स्कूली बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम प्रारंभ किया। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद, बैतूल, खरगोन, झाबुआ और खण्डवा जिले के विभिन्न जनजातीय स्कूलों के बच्चों ने संग्रहालय का भ्रमण किया। ये दौरे मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से आयोजित किए गए थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम: स्वैच्छिक संगठन आरुषि के सहयोग से संग्रहालय के कर्मचारियों के लिए 20 मार्च, 2010 को विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शारीरिक रूप से बाधित लोगों के लिए उपलब्ध और विकसित सुविधाओं की जांच और परीक्षा करना था। विकलांगों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के उपयोग हेतु विशेष प्रदर्शन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य इस तरह के आंगुतकों की आवश्यकताओं के संबंध में संग्रहालय स्टाफ के मध्य जागरूकता बढ़ाना था।

सेवारत प्रशिक्षण कार्यशाला: राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के सहयोग से काष्ठ और वस्त्र तथा अन्य मानवशास्त्रीय प्रदर्शों का संरक्षण विषय पर 19 से 23 जनवरी, 2010 तक पांच दिवसीय सेवारत प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला

में मणिपुर, मिजोरम, मेघालय तथा अन्य पूर्वोत्तर राज्यों के प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। उन्हें संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान से जुड़े विविध विषयों पर प्रबुद्ध संकाय सदस्यों ने व्याख्यान दिए बाद में विश्व धरोहर स्थल सांची का भ्रमण भी कराया गया।

अ.जा. और अ.जजा. प्रशिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने 7 से 9 दिसम्बर, 2010 तक भुवनेश्वर में विभिन्न राज्यों के जनजातीय संग्रहालयों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए नेशनल लेवल केपेसिटी बिल्डिंग ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर द डेवलपमेंट ऑफ इंटरएक्टिव एंड इन्क्लूसिव एथनोग्राफिक म्यूजियम्स नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने विकलांग व्यक्तियों के हितों के लिए समर्पित स्वैच्छिक संगठन आरुषि के सहयोग से विकलांगों के संबंध में जागरूकता बढ़ाने और दृष्टिहीनों का सामाजिक समावेश बढ़ाने के लिए एक कार रैली का आयोजन किया।

धरोहर यात्रा: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की भोपाल दीर्घा, लिविंग हेरिटेज अलियांस और यूनेस्को द्वारा 13 और 14 जनवरी, 2010 को एक विरासत यात्रा आयोजित की गई। इस यात्रा में प्रतिभागियों को शहर की वास्तुकला और ऐतिहासिक विरासतों से परिचित कराया गया।

बाल दिवस पर चित्रकला प्रतियोगिता: बाल दिवस के अवसर पर संग्रहालय के वीथि संकुल इनडोर संग्रहालय भवन में एक राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का विषय 'ऊर्जा और जल संरक्षण' रखा गया था। प्रतियोगिता का आयोजन राष्ट्रीय जल-विद्युत विकास निगम, भोपाल और केंद्रीय भू-जल मण्डल के सहयोग से किया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को महामहिम राज्यपाल, मध्य प्रदेश सरकार श्री रामेश्वर ठाकुर ने पुरस्कार वितरित किए।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने ग्रीन प्लेनेट बाइसिकल राइडर्स एसोसिएशन के सहयोग से 21 जनवरी, 2010 को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य, फिटनेस और पर्यावरण के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाना था। इस प्रतियोगिता में भोपाल के लगभग 37 स्कूलों ने भाग लिया।

प्रलेखन: माजुली के नतून कमलाबाड़ी सत्र के सहयोग से 'आल असम अंकिया भाओना समारोह' नामक कार्यक्रम का आयोजन 28 जनवरी से 6 फरवरी, 2010 तक माजुली में किया गया। इस कार्यक्रम में महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों पर आधारित प्रसंगों केलि गोपाल, कालिया दमन, भजन बहार, श्री कृष्णा बैकुंठ प्रयाण, सीता हरण, बाली वध, राम विजय इत्यादि की प्रस्तुतियां दी गईं।

### (ग) उद्धार कार्यक्रम

'उद्धार कार्यक्रम' उप-स्कीम संस्कृति के विलुप्त प्राय मूर्त और अमूर्त पक्षों का उद्धार करने पर केंद्रित है। पिछले कई वर्षों से संग्रहालय, संग्रहण तथा प्रलेखन द्वारा जीवन संवृद्धिकारक परम्पराओं के विभिन्न पक्षों के उद्धार के लिए व्यवस्थित और सतत प्रयास कर रहा है। अवधि के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम कार्यान्वित किए गए:

#### सहयोगात्मक मानवशास्त्रीय परियोजनाएं:

भीमबेटका : आईजीआरएमएस विश्व धरोहर स्थल भीमबेटका के आस-पास अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर पर एक परियोजना संचालित कर रहा है। रिपोर्ट लिखने का कार्य चल रहा है। माजुली के कमलाबाड़ी सत्र तथा गारामूर सत्र के सहयोग से 'कमलाबाड़ी सत्र और गारामूर सत्र में उपलब्ध प्राचीन पांडुलिपियों का अनुवाद नामक दो परियोजनाएं संचालित की गई हैं।

#### क्षेत्र कार्य द्वारा उद्धार :

संग्रहालय के एक अधिकारी ने असम की सत्रीय संस्कृति की जीवन शैली और विविध अनुष्ठानों से जुड़े प्रदर्शों के संकलन के संबंध में असम का दौरा किया। संग्रहालय के अधिकारियों के एक दल ने कोम, मराम, देओरी, मोरान इत्यादि समुदायों के पारंपरिक आवास प्रदर्शों के निर्माण हेतु कच्चे माल और भौतिक संस्कृति से संबंधित वस्तुओं के संकलन के लिए असम और मणिपुर के विविध दूरस्थ क्षेत्रों का दौरा कर क्षेत्र कार्य किया।

संग्रहालय के एक अधिकारी ने राजगढ़, जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश का दौरा कर संग्रहालय के सुरक्षित संकलन हेतु 13 पारंपरिक मुखौटों का संकलन किया। संग्रहालय के एक अधिकारी ने राजवंशी जनजाति की भौतिक संस्कृति के संकलन और प्रलेखन हेतु पश्चिम बंगाल के दक्षिण दिनाजपुर क्षेत्र का दौरा किया।



संग्रहालय के एक अधिकारी ने बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल में क्षेत्र कार्य कर दुबराजपुर और रामपुर हाट से लगभग 30 घरेलू और अनुष्ठानिक वस्तुएं और पश्चिम बंगाल के बाऊल गायकों से संगीत वाद्य यंत्रों का संकलन किया। संग्रहालय के एक अधिकारी ने गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र का दौरा कर 115 मानवशास्त्रीय प्रदर्शों का संकलन किया।

संग्रहालय के एक अधिकारी ने आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम जिले के 'इटिकोप्पका' गांव में क्षेत्र कार्य कर भौतिक संस्कृति की लगभग 75 वस्तुओं का संकलन किया। संग्रहालय के सिने वीडियो अनुभाग के एक दल ने पारंपरिक रासलीला के दृश्य श्रव्य

प्रलेखन के लिए ब्रह्मपुत्र नदी, असम के सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली का दौरा किया। माजुली सत्रीय परंपरा के लिए विख्यात है। क्षेत्र कार्य के दौरान दल ने कमलाबाड़ी के तात्या गांव में दखिनपात सत्र, समागुरी सत्र, भोपपुर सत्र, बिहिमपुर सत्र द्वारा प्रस्तुत रासलीला का प्रलेखन किया।

*मानवशास्त्रीय परियोजनाएं:*

माजुली, असम के कमलाबाड़ी सत्र तथा गारामूर सत्र के सहयोग से माजुली के कमलाबाड़ी सत्र और गारामूर सत्र में उपलब्ध प्राचीन पांडुलिपियों के अनुवाद पर दो परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं।



लोक नृत्य



## एशियाटिक सोसायटी

4.1.6

महान अध्येता एवं कलकत्ता उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश, सर विलियम जॉन्स द्वारा 1784 में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की गई थी। 1984 में भारत सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में एशियाटिक सोसाइटी को मान्यता प्रदान की।

सांविधिक उपबंधों का अनुसरण करते हुए, एशियाटिक सोसाइटी प्रतिमाह पांच बैठकों का आयोजन करती है। ये एशियाटिक सोसाइटी के सदस्यों, पुस्तकालय समिति, प्रकाशन समिति, बिलियोथेका इंडिका समिति तथा परिषद की मासिक बैठकें हैं जिनमें से प्रत्येक में विद्वान किसी विनिर्दिष्ट विषय पर पेपर पढ़ते हैं तथा जिनमें तीन सांविधिक समितियों तथा गैर-सांविधिक अकादमिक समिति के संकल्प, विचार-विमर्श एवं निर्णय के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं।

### कार्यकलाप

- प्रकाशन अनुभाग को नए भवन के द्वितीय तल से खाली किए स्थान पर नवनिर्मित भवन को स्थानांतरित करने के प्रयोजनार्थ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया (जो भूतल पर स्थित है) द्वारा 1200 वर्ग फुट की जगह वापस दी गई। स्थानांतरित प्रकाशन अनुभाग का औपचारिक रूप से उद्घाटन प्रो० विश्वनाथ बैनर्जी द्वारा 15.1.2010 को किया गया।
- संस्कृति मंत्रालय तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति से नए भवन के ऊपर दो और तल निर्मित करने के लिए कार्य सलाहकार समिति द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। इसका निर्माण केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा किया जाएगा।
- कार्यालय स्थल के लिए पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा सॉल्ट लेक सिटी में उपलब्ध कराई गई 5.6 कट्ठा जमीन पर निर्माण कार्य पहले ही प्रारंभ हो चुका है जिनमें एक डिजिटल पुस्तकालय और अतिथि-गृह शामिल है और वर्ष 2012 के प्रारंभ तक पूरा हो जाने की संभावना है।
- एशियाटिक सोसाइटी के इतिहास से संबंधित एक वृत्तचित्र श्री गौतम घोष, प्रसिद्ध फिल्म निर्माता द्वारा पहले ही बना ली गई है



एशियाटिक सोसाइटी के संग्रहालय में 27 लिपियों और 18 भाषाओं में लिखित 49,585 पाण्डुलिपियों का विपुल भण्डार है। एशियाटिक सोसाइटी के संग्रहालय अनुभाग में पाण्डुलिपियों में संग्रह विपुल एवं समृद्ध है और इनमें अधिकांश भारतीय पाण्डुलिपियां और यहां तक कि कई एशियाई पाण्डुलिपियां भी शामिल हैं। अब तक संग्रह की गई पाण्डुलिपियों की संख्या लगभग 49,585 है, जो कि 27 लिपियों तथा 18 भाषाओं (लगभग) में लिखी गई हैं। वर्ष 2009-10 के बीच संग्रहालय में कुल संग्रह की वास्तविक जांच की गई जिनमें 43 ताम्र पत्र, 80 बेशकीमती तैलचित्र, बंगाल स्कूल की 37 चित्रकारी, प्रताप चन्द्र चन्देर द्वारा दान की गई 12 चित्रकारियां, 18 अर्धप्रतिमाएं, 23 अन्य कलाकृतियां जिनमें 1 अशोक आदेश पत्र, 548 लिथोग्राफिक कृतियां, 311 पुरालेख दस्तावेज, 108 तस्वीरें, 2 तिब्बती थांग, बुद्ध पर कुण्डलित चित्रकारियां, 206 मानचित्र, 1063 दुर्लभ पुस्तकें, 175 अंग्रेजी में लिखी गई पाण्डुलिपियां और 1032 आर.के. देव रचित पुस्तक संग्रह शामिल हैं। यह संग्रह अच्छी तरह से संरक्षित है।

पाण्डुलिपियों तथा दुर्लभ पुस्तकों को डिजिटल स्वरूप प्रदान करने हेतु एक नया फेस अप स्कैनर लगाया गया है। इस स्कैनर मशीन में 58 एमएसएस, 8 लिथोग्राफ, 3 मानचित्र, 7 दुर्लभ पुस्तकें स्कैन करके इन्हें डिजिटल स्वरूप प्रदान किया गया है और बाहरी हार्ड डिस्क में स्टोर किया गया है। स्कैन की गई फोलियो की कुल संख्या 5348 है और एक्सपोजरों की कुल संख्या 5378 है। 15 संस्थाओं को स्कैन किए गए प्रिंटआउट दिए गए और 21 संस्थाओं को सीडी की आपूर्ति की गई और इनमें व्यक्ति भी शामिल थे। माइक्रो फिल्म निगेटिव के कुल 4 रोल तैयार किए गए हैं।

### पाण्डुलिपियों की ग्रंथसूची तैयार करना

लगभग 406 संस्कृत, फारसी-अरबी तथा तिब्बती पाण्डुलिपियों की ग्रंथ सूची तैयार की गई, 789 पाण्डुलिपियों (संस्कृत, तिब्बती) की ग्रंथ सूची तैयार की गई, 443 टॉप शीटें तैयार की गई और 84,614 फोलिएशन किए गए। सोसाइटी ने अभिलेखीय रिकार्डों का प्रलेखन किया है, जिनमें से अंग्रेजी रिकार्ड की 73 फाइलों के साथ 2434 पत्रों और 53 अन्य विभिन्न दस्तावेजों का प्रलेखन किया गया है।

पाण्डुलिपियों के संरक्षण संबंधी प्राथमिक कार्य जैसे इन्हें शालू नेपाली कागज से लपेटकर रखने आदि जैसे कार्य संग्रहालय खण्ड के बेशकीमती दस्तावेजों के रख-रखाव हेतु जारी हैं। तैल चित्रों के जीर्णोद्धार का कार्य जारी है। अब तक लगभग 6 तैल चित्रों का जीर्णोद्धार किया जा चुका है।

जरूरतमंद संस्थाओं तथा व्यक्तियों को स्कैन किए गए दस्तावेजों की आपूर्ति करके संग्रहालय खण्ड ने अप्रैल 2010 से दिसम्बर 2010 तक 75,533/-रुपए की राशि अर्जित की है।

### पुस्तकालय

एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में इस समय 1,24,000 से भी अधिक पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं के 1,06,00 खण्ड, 1,565 ऑनलाइन पत्रिकाएं जिनमें से अधिकांश दुर्लभ हैं, उपलब्ध हैं। पत्रिकाओं के पुराने खण्डों का विपुल संग्रह मैटकाफ हॉल, 12, स्ट्रैंड रोड, कोलकाता में संरक्षित है। पाठकगण माइक्रो-फिल्मों तथा माइक्रोफिश सुविधाओं का उपयोग करते हैं। यह पुस्तकालय सोमवार से शुक्रवार प्रातः 9.45 बजे से सायं 7.00 बजे तक खुला रहता है। शनिवार के दिन यह प्रातः 10.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक खुलता है। इस पुस्तकालय ने पश्च-परिवर्तन हेतु एक परियोजना प्रारंभ की है। कुछ वर्ष पहले ही पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के सत्यापन का कार्य किया गया है।

### प्रकाशन

प्रकाशन अनुभाग ने अप्रैल 2010 से दिसम्बर 2010 तक पांच पुस्तकें, जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी के दो अंक तथा मासिक बुलेटिन के छः अंक, विभिन्न विषयों पर छः पुस्तिकाएं, दो अन्य प्रकाशन और वार्षिक आम बैठक की कार्यवाही के तीन संस्करण प्रकाशित किए हैं। दिसम्बर 2010 के पश्चात दो और पुस्तकें तथा मासिक बुलेटिन का एक और अंक व एक अन्य पुस्तक भी प्रकाशित की गई है।

### शैक्षिक कार्यकलाप

- अप्रैल 2010 तथा दिसम्बर 2010 की अवधि के दौरान पांच राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किए गए।
- निहार बरूआ के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर 23 तथा 24 सितम्बर, 2010 को दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में देश के विभिन्न भागों से आए लोक गीतकारों ने भाग लिया।
- आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रे के अर्धशतवर्षीय जयंती समारोह के अवसर पर 2 तथा 3 दिसम्बर, 2010 को एक दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिकों ने इस सेमिनार में भाग लिया और अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

- एशियाटिक सोसाइटी ने इस अवधि के दौरान 14 व्याख्यानों का आयोजन किया। इसमें शामिल कुछ प्रमुख वक्ताओं में प्रो० शंकर चटर्जी, प्रो० सब्यसाची भट्टाचार्य, प्रो० बरुण डे, प्रो० अजर्मी दख्त सफावी तथा प्रो० माइकेल व्हिटफिल्ड शामिल थे।
- एशियाटिक सोसाइटी ने किंवदंतियों एवं लोक साहित्य में तिलस्मी यथार्थ, विज्ञान का इतिहास और पूर्वोत्तर भारत से संबंधित निबंधों पर लगातार तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया।

### रेप्रोग्राफी अनुभाग

अप्रैल 2010 से दिसम्बर 2010 तक की अवधि के दौरान रेप्रोग्राफी अनुभाग ने 1684 फोलियो तथा 32 पाण्डुलिपियों से संबंधित 3627 एक्सपोजर कार्य और परियोजना कार्य के तहत 7 पुस्तकों से 2876 पृष्ठों का एक्सपोजर कार्य किया है। रेप्रोग्राफी अनुभाग ने चार माइक्रोफिल्म रोल की प्रोसेसिंग की। इस अनुभाग ने कार्यालय प्रयोजन हेतु 1,50,356 जेराँक्स प्रतियां और अध्येताओं तथा आम पाठकों के लिए 19,134 जेराँक्स प्रतियां तैयार कीं। डिजिटल कैमरा के जरिए 225 दस्तावेजों की स्कैनिंग की गई जिनमें 425 एक्सपोजर शामिल हैं। माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश स्कैन प्रतियां तैयार की गईं— 119 प्रतियां कार्यालय प्रयोजनार्थ तथा 432 प्रतियां पाठक सेवा हेतु। रेप्रोग्राफी अनुभाग ने 505 तस्वीरें ली थीं जिनमें से 105 फिल्में पाठकों को दी गईं।

अप्रैल 2010 से दिसम्बर 2010 तक रेप्रोग्राफी अनुभाग ने पाठक सेवा के रूप में 24,164.00 रुपए की राशि अर्जित की।

### संरक्षण अनुभाग

अप्रैल 2010— दिसम्बर 2010 की अवधि के दौरान सोसाइटी के

संरक्षण प्रयोगशाला द्वारा ताल के पत्ते तथा कागज पर भुरभुरी एवं कमजोर पाण्डुलिपियों, भुरभुरी एवं कमजोर मुद्रित पुस्तकों के निम्नलिखित संरक्षण एवं जीर्णोद्धार संबंधी कार्य किए गए। संरक्षण : 'पिंग' नामक कीटनाशक का छिड़काव करके पुस्तकालय तथा संग्रहालय के भण्डार क्षेत्र में 19 बार संरक्षण कार्य किए गए, विभिन्न प्रकार के उपचार हेतु 4264 खंडों की वास्तविक जांच की गई, किताबी कीड़ों से ग्रसित 3,791 खण्डों का धूम्रीकरण किया गया, 1,406 फफूंद ग्रस्त खण्डों का उपचार किया गया।

लगभग 25,857 पृष्ठों का पृष्ठांकन किया गया, 3,576 शीटों (धब्बेदार) को लैमिनेट रहित किया गया, 23,751 शीटों को डीएक्टीफाई किया गया, 23,750 शीटों का मिलान किया गया, कीटों द्वारा नष्ट किए गए तथा चिपकी हुई 2,657 शीटों को सावधानीपूर्वक अलग-अलग किया गया, 1,327 शीटों में सुधार किया गया। 164 तुड़े-मुड़े तथा भंगुर मानचित्रों को सही किया गया, 353 प्लेटों का जीर्णोद्धार किया गया, कीटों द्वारा नष्ट किए गए, भंगुर एवं फटी कागज की 1415 पाण्डुलिपियों को अलग-अलग करके ठीक किया गया, 329 फोलियो (संघनित तथा ठोस ब्लॉक) ताल के पत्ते की पाण्डुलिपियों को अलग-अलग करके सुधारा गया। 17,096 से भी अधिक कमजोर शीटों को टिशू पेपर, एमसी पेस्ट तथा सेलुलोज एसिटेड फॉयल से लैमिनेट किया गया, 17,313 शीटों को ठीक करने तथा लैमिनेशन के पश्चात् रिबबद्ध किया गया, 243 पुस्तकों को विभागीय स्तर पर जिल्दबंद किया गया, 400 जिल्दबंद खण्डों (बाहर के जिल्दसाजों द्वारा जिल्दसाजी की गई) की जांच की गई।

प्रयोगशाला के संरक्षण अधिकारी तथा कर्मचारियों ने अध्येताओं तथा अतिथियों के लिए दुर्लभ पुस्तकों, कागज तथा ताड़ पत्रों की पाण्डुलिपियों से संबंधित संरक्षण एवं जीर्णोद्धार कार्य किया।



## मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान

मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान (कोलकाता), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है। यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन, समय तथा कार्यों पर अनुसंधान एवं 19वीं शताब्दी के मध्य से अब तक एशिया में हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विकास के अध्ययन का एक केंद्र है।

वर्ष 2010 संस्थान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण बदलाव वाला वर्ष रहा है। इसी वर्ष साल्ट लेक के नए परिसर में बड़े पैमाने पर कार्य शुरू हुआ तथा संस्थान के अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता वाले विरासत भवन में नए कार्यकलापों का एक कार्यक्रम शुरू किया गया। मौलाना आजाद संग्रहालय में स्मरणीय तथ्यों, फोटोग्राफ्स एवं डॉक्यूमेंटरी फिल्मों के संग्रह का परिरक्षण किया जाता है। संग्रहालय के लिए श्री विजय सिंह नाहर के संग्रह से कई दुर्लभ पुस्तकों एवं पत्रों को प्राप्त किया गया है। फिल्म प्रभाग, भारत सरकार से डीवीडी के रूप में संग्रहालय के लिए डॉक्यूमेंटरी फिल्में भी प्राप्त की गई हैं। एमएकेआईएस के साल्ट लेक परिसर के खुल जाने से संग्रहालय के और अधिक विकास और प्रलेखन केंद्र सहित संबद्ध कार्यकलापों के विकास के अवसर प्राप्त हुए हैं।

साल्ट लेक पर एमएकेआईएस के नए परिसर 'आजाद भवन' का उद्घाटन दिनांक 16 जनवरी, 2010 को माननीय प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह जी द्वारा किया गया। इस समारोह का आयोजन साइंस सिटी, कोलकाता में किया गया जिसमें श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, श्री जवाहर सरकार, प्रो० जयंत कुमार राय, अध्यक्ष, कार्यकारी परिषद, एमएकेआईएस, प्रो० एच.एस. वासुदेवन, निदेशक, एमएकेआईएस, प्रो० सुरंजन दास तथा अन्य विशिष्ट व्यक्ति एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

वर्ष 2010-11 के दौरान संस्थान के अध्येताओं द्वारा शुरू की गई कुछ परियोजनाओं को पूरा किया गया तथा उन्हें प्रारंभिक समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया गया। मौलाना अबुल कलाम आजाद के कार्यों का उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद कार्य शुरू करने जैसी परियोजनाओं से संस्थान की मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन एवं समय पर अनुसंधान की वचनबद्धता स्पष्ट होती है। इस संस्थान ने दिनांक 11 नवम्बर, 2010 को मौलाना आजाद संग्रहालय में मौलाना अबुल कलाम आजाद का 122वां जन्म दिवस मनाया। आजाद मेमोरियल व्याख्यान प्रो० जोया हसन, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, जवाहर लाल

4.1.7



नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया। मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता ने पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता एवं रबीन्द्र नाथ टैगोर केंद्र, आईसीसीआर कोलकाता के साथ सहयोग से टोम एल्टर तथा पिअरेट ट्रूप, नई दिल्ली के माध्यम से एक उर्दू एकांकी – **“मौलाना आजाद”** का मंचन किया गया। इस मंचन का अत्यधिक स्वागत किया गया तथा संस्थान ने उर्दू माध्यम वाले हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए इसके मंचन को देखने का प्रबंध किया।

## कार्यक्रम

संस्थान के कार्यकलापों का फोकस संस्थान एवं मध्य एशियाई पड़ोसियों के बीच विकास संबंधों पर था। संस्थान ने 1 से 30 जून, 2010 के दौरान आजाद भवन, एमएकेआईएस में **“स्टडींग यूरेशिया : इश्यूज, ट्रेंड्स एंड डिबेट्स”** विषय पर एक ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम का आयोजन किया। संस्थान द्वारा एक माह का यह अध्ययन पाठ्यक्रम उन युवा शोधार्थियों के लिए आयोजित किया गया था जो अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों में रुचि रखते हैं।

एमएकेआईएस ने अनुसंधान एवं अध्ययन के इस विशिष्ट क्षेत्र में निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों/सम्मेलनों/संगोष्ठियों का आयोजन किया :

- दिनांक 22-24 फरवरी, 2010 को **“कम्युनिटिज, इंस्टीट्यूशन एंड ‘ट्रांजिशन’ इन पोस्ट 1991 यूरेशिया”** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 24 फरवरी, 2010 को **“माइग्रेशन एंड डेमोग्राफी इन एशिया”** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 24 फरवरी, 2010 को **“बुद्धिज्म इन एशिया”** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संस्थान द्वारा भारत के बाहर दक्षिण एशियाई देशों के नियमित अध्ययन को नेपाल, म्यांमार एवं चीन में फील्डवर्क कार्यक्रमों के माध्यम से बढ़ावा दिया गया। इस संस्थान ने दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण-पश्चिम एशिया तथा भारत एवं उसके पड़ोसी देशों पर सेमिनारों/सम्मेलनों/संगोष्ठियों का आयोजन किया, उनके आयोजन में सहायता प्रदान की तथा उनके आयोजन के लिए प्रेरित किया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान किए गए आयोजन इस प्रकार हैं :

- इस संस्थान ने दिनांक 6-7 जनवरी, 2011 को भारतीय विश्व मामले परिषद (आईसीडब्ल्यूए), नई दिल्ली के सहयोग से सप्रू हाउस, नई दिल्ली में **“रिथिंकिंग इंटरनेशनल इंटरवेंशन इन अफगानिस्तान”** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन के बाद दिनांक 7 जनवरी, 2011 को भारतीय अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (आईआईसी), नई दिल्ली में **“ग्लिमपसिस ऑफ कन्टेम्पोरेरी अफगानिस्तान”** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।
- भारतीय अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (आईआईसी), नई दिल्ली में **“इलेक्शंस इन म्यांमार : इश्यूज एंड इम्प्लीकेशंस”** विषय पर एक पैनल विचार-विमर्श का आयोजन किया गया, यह आयोजन एमएकेआईएस द्वारा दिनांक 10 दिसम्बर, 2010 को आईआईसी, नई दिल्ली के साथ मिलकर किया गया था।
- इस संस्थान के सदस्यों ने दिनांक 28 से 31 अक्टूबर, 2010 के दौरान यूनान सामाजिक विज्ञान अकादमी, यूनान, पीआरसी में आयोजित **छठे के2के फोरम** में भाग लिया। संस्थान ने 19वीं एवं 20वीं शताब्दियों के दौरान भारत एवं चीन के कलाकारों के बीच बढ़ी आपसी समझ के संबंधों की फोटोग्राफिक प्रदर्शनी का आयोजन किया, यह परियोजना श्री अमित्व भट्टाचार्य द्वारा एमएकेआईएस में शुरू की गई है तथा इसके साथ ही संस्थान ने 21 से 27 अक्टूबर, 2010 के दौरान कुनमिंग, पीआरसी में श्री दिलीप बैनर्जी की ‘स्टीलवेल रोड एक्सपीडिशन’ फोटो प्रदर्शनी का भी आयोजन किया।
- संस्थान ने दिनांक 27-28 मार्च, 2010 के दौरान **“इंडिया एंड हर नेबरहुड्स”** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। संस्थान ने 28-29 मार्च, 2010 के दौरान **“इंडिया एंड साऊथ – ईस्ट एशिया : प्रोमिजिंग फ्यूचर?”** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय अन्य सम्मेलन का आयोजन किया।
- संस्थान द्वारा श्री अमिताव भट्टाचार्य, परियोजना फेलो, एमएकेआईएस द्वारा **“आर्टिस्ट अंडरस्टैंडिंग ऑफ “अदर्स” – इंडियन एंड चाइनिज एक्सपीरियंस”** शीर्षक के तहत एक प्रदर्शनी का आयोजन जामिनी रॉय गैलरी, रबीन्द्र नाथ टैगोर केंद्र, आईसीसीआर, कोलकाता में



किया गया। “यूनान एंड वेस्ट बंगाल को—ऑपरेशन: इम्मीडिएट पॉसिबिलिटीज एंड फ्यूचर पोटेंशिएल्स” विषय पर एमएकेएआईएस द्वारा दिनांक 28 से 31 जनवरी, 2010 तक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- दिनांक 23 से 30 जून, 2010 के दौरान आरटीसी, कोलकाता में “ए जर्नी थ्रू द स्टीलवेल रोड” विषय पर एक—दिवसीय सेमिनार एवं सप्ताह भर चलने वाली फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया।

दिनांक 29—30 सितम्बर, 2010 के दौरान “एशिया एवं हिंदी साहित्य” शीर्षक के तहत हिंदी भाषा पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया।

इस संस्थान ने जाने—माने निर्देशक श्री रंजीत पालित द्वारा “द स्वोर्ड ऑफ द चूजन वन। हाऊ फॉलक फादर्ड रॉक एंड ब्लूज इन द नॉर्थ ईस्ट” शीर्षक के तहत पूर्वोत्तर के संगीत पर एक फिल्म — डॉक्यूमेंटरी तैयार की।

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ गहन संवाद कार्यक्रम शुरू किया गया। पूर्वोत्तर, दिल्ली तथा केरल में शोध निकायों एवं विश्वविद्यालयों के सहयोग से और अधिक परियोजनाओं एवं सेमिनारों का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर एवं एशियाई इतिहास तथा समसामयिक संस्कृति के महत्वपूर्ण विषयों पर समाज विज्ञान एवं मानविकी केंद्र (कलकत्ता विश्वविद्यालय) एवं जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता के विभिन्न संकायों के साथ मिलकर सेमिनारों का आयोजन किया गया।

यह संस्थान कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ मिलकर चीनी भाषा अध्ययन कार्यक्रम तथा उर्दू भाषा में पूर्णकालिक लघु

अवधि के पाठ्यक्रमों का आयोजन करता है। इस संस्थान में अमेरिकी भाषा में भी कक्षाएं उपलब्ध हैं जबकि तुर्की एवं रूसी भाषा पढ़ाने के लिए नियमित संबंधों एवं भाषा विशेषज्ञता को बनाए रखा जाता है।

### प्रकाशन

वर्ष 2010 के दौरान संस्थान ने अपने कुछ और प्रकाशन निकाले:

- “रिकंस्ट्रक्टिंग अफगानिस्तान” डॉ० अर्पिता बसु रॉय एवं डॉ० विनोद के. मिश्रा द्वारा सम्पादित; शिप्रा, नई दिल्ली, 2010
- “राइटिंग हिस्ट्री इन यूरोशिया : द सोवियत स्टेट एंड आफ्टर” टूवर्ड्स फ्रीडम 2010 द्वारा
- “ग्लोबलाइजेशन इन साइबेरिया एंड रसियन फार ईस्ट” टूवर्ड्स फ्रीडम 2010 द्वारा
- “यूरोशियन परस्पेक्टिव : इन सर्च ऑफ अल्टरनेटिवज” डॉ० अनिता सेनगुप्ता तथा डॉ० सुचानन्द चटर्जी द्वारा, शिप्रा, 2010
- “शैडोज ऑफ सब्सटेंस : इण्डो रसियन ट्रेड एंड मिलिट्री टेक्निकल कोऑपरेशन सिन्स 1991” प्रो० एच.एस. वासुदेवन द्वारा, मनोहर, 2010
- “द स्टेपी इन हिस्ट्री : एस्से ऑन ए यूरोशियन फ्रिंज” डॉ० सुचानन्द चटर्जी द्वारा, मनोहर, 2010
- “मैती कैलेण्डर : राइट्स एंड रिचुअल्स इन मणिपुर” डॉ० सनसाम अमल सिंह द्वारा, अंशाह, नई दिल्ली, 2010



## केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान

4.1.8

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह-लद्दाख, जिसे पहले बौद्ध दर्शनशास्त्र विद्यालय के नाम से जाना जाता था, एक अनुसंधान संस्थान है, जिसकी स्थापना स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू की ओर से परम पावन कुशोक बाकुला रिन्पोचे के सक्रिय सहयोग से वर्ष 1959 में की गई थी। वर्ष 1962 में संस्कृति विभाग, भारत सरकार ने संस्थान को वित्तपोषित करना आरंभ किया। बाद में इस संस्थान का उन्नयन कर स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि संस्थान के स्तर का करके सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) से सम्बद्ध कर दिया गया। इस संस्थान का प्रबंधन एक प्रबंध मंडल के माध्यम से किया जाता है जिसके अध्यक्ष भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव हैं।

इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य बौद्ध चिंतन एवं साहित्य का ज्ञान प्रदान कर विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना है। इस संस्थान का उद्देश्य विद्यार्थियों में बौद्ध विचारों तथा साहित्य के प्रति कुशाग्रता विकसित करके और उन्हें आधुनिक विषयों, संग्रहों, अनुवाद, दुर्लभ पांडुलिपियों का प्रकाशन और बौद्ध अध्ययनों से संबंधित शोध कार्य से परिचय करवाके इस लक्ष्य को प्राप्त करना है। संस्थान भोटी भाषा के माध्यम से पढ़ाए जाने वाले बौद्ध दर्शन पर बल देता है। तथापि, विद्यार्थियों के ज्ञान के दायरे में वृद्धि करने के लिए सामान्य विषय भी पढ़ाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, सोवा रिग्पा (भोट चिकित्सा), तिब्बती पट्टचित्र, मूर्तिकला और काष्ठ उत्कीर्णन में रुचि रखने वाले छात्रों को 6 वर्षीय पाठ्यक्रम प्रदान किया जाता है जिससे इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को परिरक्षित किया जा सके। इस समय संस्थान के पुराने परिसर में कक्षा VI से VIII तक 307 विद्यार्थी तथा नए परिसर में पूर्व मध्यमा से आचार्य (एम.ए. के समकक्ष) तक 342 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। 649 विद्यार्थियों की कुल क्षमता में से 575 विद्यार्थियों को 525 रु. से 650 रु. तक वजीफे दिए जा रहे हैं। संस्थान द्वारा बौद्ध धर्म के क्षेत्र में डाक्टरेट की उपाधि के लिए कार्य कर रहे चार शोध विद्यार्थियों को अध्येतावृत्तियां भी प्रदान की जाती हैं। इस समय चार शोध अध्येता पी.एच.डी. कर रहे हैं।

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान के दो शाखा विद्यालय जांस्कर और केलांग में स्थित हैं। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के आदेश पर इस स्कूल को 1 नवम्बर, 1989 को **डूजिंग फोटांग स्कूल**, जांस्कर को केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह के एक शाखा विद्यालय के रूप में अधिगृहीत किया गया। इस समय कक्षा I से X तक कुल 243 विद्यार्थी यहां अध्ययनरत हैं और एक हेडमास्टर हैं जिन्हें सात टीजीटी सहयोग दे रहे हैं तथा पांच प्राथमिक



शिक्षकों की भर्ती की गई है। इस स्कूल का परिसर 3 एकड़ में फैला है जहां कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, स्टाफ क्वार्टर तथा 100 विद्यार्थियों के लिए छात्रावास की उचित व्यवस्था है। विद्यार्थियों को 525 रु. से लेकर 575 रु. तक वजीफे दिए जा रहे हैं।

प्रबंधन बोर्ड की अनुशंसा पर भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय ने **बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग**, 5 मार्च, 2010 को दायित्व ग्रहण किया। इस समय विद्यालय में कक्षा I से X तक 90 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। यहां एक हेडमास्टर, छः टीजीटी, एक भोटी शिक्षक, एक बौद्ध दर्शन शिक्षक, एक यूडीसी तथा तीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संविदा आधार पर कार्यरत हैं। विद्यालय के पास कक्षाओं हेतु स्वयं के भवन हैं और दूरदराज से आनेवाले विद्यार्थियों के लिए एक बोर्डिंग हाउस भी है। प्रत्येक विद्यार्थी को 525 रु. से लेकर 575 रु. तक वजीफे दिए जा रहे हैं।

अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए यह संस्थान विभिन्न मठों में 50 गोनपा/नन्नेरी स्कूलों का संचालन कर रहा है जो उस क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय हैं। ये स्कूल अलग-अलग मठों के सहयोग से संचालित किए जा रहे हैं जो विद्यार्थियों के लिए कक्षा-कक्षाओं, छात्रावास सुविधाओं, फर्नीचर, लेखन-सामग्री प्रदान करते हैं। इस स्कूल में मठ शिक्षा या धार्मिक शिक्षण के अलावा आधुनिक प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने हेतु दो शिक्षकों की भर्ती की है। संस्थान के शिक्षक मठों द्वारा दी जा रही मठ शिक्षा के अलावा आधुनिक प्रारंभिक शिक्षा भी प्रदान कर रहे हैं। इस समय इन गोनपा/नन्नेरी स्कूलों में कक्षा I से V तक 1108 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जिन्हें 600 रु. प्रतिमाह का वजीफा दिया जाता है।

इस संस्थान द्वारा कक्षा VI से VIII तक परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं जबकि पूर्व मध्यमा से आचार्य तक की परीक्षाएं संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित किया गया। विद्यार्थियों के समग्र परीक्षा परिणाम 87 प्रतिशत रहे।

### पुस्तकालय और संग्रहालय

पुस्तकालय इस संस्थान का एक महत्वपूर्ण अंग है जहां से विद्यार्थीगण, शिक्षकगण तथा संस्थान के अन्य सदस्य सूचना एवं ज्ञान हासिल करते हैं। बड़ी संख्या में घरेलू तथा विदेशी सैलानी पुस्तकालय का दौरा करते हैं। इस पुस्तकालय के तीन खण्ड हैं— सामान्य खण्ड, संग्रह खण्ड तथा संदर्भ खण्ड। इस समय पुस्तकालय के संग्रह में भोटी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, पाली तथा उर्दू भाषाओं में धर्म, इतिहास, दर्शन शास्त्र, साहित्य आदि से जुड़ी लगभग 28,000 पुस्तकें

उपलब्ध हैं। इसके अलावा, प्रत्येक वर्ष कई पत्र-पत्रिकाएं तथा समाचार-पत्र पुस्तकालय में मंगाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने एक पुरातत्व संग्रहालय भी तैयार करवाया है जहां पुरावशेषों तथा अन्य कलाकृतियों का विशाल संग्रह है।

### प्रकाशन

संस्थान ने अब तक 58 दुर्लभ एवं मूल्यवान पुस्तकों का प्रकाशन किया है जिन्हें 'न लाभ न हानि' आधार पर बेचा जा रहा है। वर्ष के दौरान, संस्थान ने दो पुस्तकों अर्थात् "प्रतीत्य समुत्पदा" और "हिमालयी बौद्ध संस्कृति का विश्वकोश" के द्वितीय खण्ड का प्रकाशन किया। संस्थान के प्रबंधन बोर्ड ने प्रो0 रमेश चंद तिवारी के पर्यवेक्षण में विश्वकोश संकलन की परियोजना को अनुमोदित किया है।

### पाण्डुलिपि स्रोत और संरक्षण केन्द्र

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह को लद्दाख क्षेत्र के लिए पाण्डुलिपि स्रोत केन्द्र और पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र के रूप में अभिनिर्धारित किया है। तदनुसार, यह संस्थान विद्वानों को संविदा आधार पर काम पर लगाकर सौंपे हुए कार्य को पूरा कर रहा है। इस संस्थान द्वारा लद्दाख क्षेत्र में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों के प्रलेखन का प्रयास किया जा रहा है। पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए एक प्रयोगशाला भी स्थापित की गई है। जागरूकता अभियान के भाग के रूप में निवारणात्मक एवं संरक्षात्मक संरक्षण के लिए लद्दाख के भिन्न-भिन्न बौद्ध विहारों में अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

### कार्यक्रम

संस्थान ने 27 से 29 नवम्बर, 2010 तक "लद्दाख में बौद्ध धर्म: वर्तमान स्थिति एवं इसकी दिशा" विषय पर तीन दिवसीय स्थानीय सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार का उद्घाटन लब्ध-प्रतिष्ठ बौद्ध अध्येता तथा अखिल लद्दाख गोनपा संघ के अध्यक्ष परम पूज्य चोस्जे तोग्डन रिंपोचे ने किया। इस अवसर पर तीस अध्येताओं ने महत्वपूर्ण शोध पत्र प्रस्तुत किए।

संस्थान में वर्ष 2004 से कुशोक बाकुला रिंपोचे के नाम पर व्याख्यान माला आरंभ की गई। सातवीं व्याख्यान माला के व्याख्यान जाने-माने बौद्ध विद्वान परम पूज्य जिशेष नवांग जंगनेस द्वारा दिनांक 25 सितम्बर, 2010 को दिए गए। अनेक विद्वानों,

वरिष्ठ विद्यार्थियों और इसमें अभिरुचि रखने वाले व्यक्तियों ने व्याख्यान माला में भाग लिया।

### सेवाकालीन प्रशिक्षण

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान संस्थान ने लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद, लेह के सहयोग से भोटी भाषा के

जम्मू और कश्मीर सरकार और लेह स्थित प्राइवेट स्कूलों के शिक्षकों हेतु 21 दिवसीय भोटी प्रबोधन पाठ्यक्रम आयोजित किया। विभिन्न स्कूलों के 110 शिक्षकों ने इन पाठ्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अलावा, संस्थान के गोनपा/नन्नेरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए गणित तथा अंग्रेजी में एक माह के लिए प्रबोधन पाठ्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

## केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत 1977 से एक स्वायत्त संगठन के रूप में कार्यरत केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सीयूटीएस) की स्थापना भारत सरकार द्वारा 1967 में की गई थी। इस विश्वविद्यालय को तिब्बती संस्कृति के संरक्षण के लिए एक अग्रणी केंद्रीय संगठन स्थापित करने के संबंध में भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू तथा परम पावन दलाई लामा जी के बीच परस्पर सहमत दृष्टिकोण के फलस्वरूप संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय की अंगभूत शाखा के रूप में की गई थी। आगे चल कर, सन् 1988 में इसे मानद विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया और यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के वित्तपोषण से कार्यरत है।

सीयूटीएस का उद्देश्य तिब्बती संस्कृति का संरक्षण करना और मूल रूप में लुप्त, लेकिन तिब्बती भाषा में संरक्षित प्राचीन भारतीय विज्ञान तथा साहित्य का संरक्षण करना है। सीयूटीएस पूर्वकाल में तिब्बत में उच्च शिक्षा का अवसर पाने वाले भारत के सीमावर्ती प्रदेशों के छात्रों के लिए वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करता है। यह विश्वविद्यालय अध्यापन से लाभ प्राप्त करने और तिब्बती अध्ययन में डिग्रियाँ प्रदान करने के प्रावधान से शिक्षा क्षेत्र को लाभ पहुंचाता है।

इस शासनादेश के अनुरूप, यह विश्वविद्यालय पिछले 43 वर्षों से आधुनिक विश्वविद्यालयों के समयबद्ध पाठ्यक्रमों, लिखित परीक्षाओं, तथा उपाधि प्रदान करने आदि से युक्त ढाँचे की सीमा में तिब्बत की पारम्परिक पद्धति को प्राथमिकता देकर, तिब्बती अध्ययन की शिक्षा प्रदान करता आ रहा है। इस विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा, पूर्वस्नातक तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओं की अपनी नीति है। 'आचार्य' स्तर पर मौखिक परीक्षा/शास्त्रार्थ भी परीक्षा प्रणाली का हिस्सा होते हैं। शास्त्रार्थ या वाद-विवाद की परम्परा को शिक्षा का एक अविभाज्य और व्यवहार्य अंग माना जाता है।

वित्त वर्ष 2010-2011 के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने गैर-योजना और योजनागत के तहत क्रमशः 690.00 लाख रुपए और 595.00 लाख रुपए के अनुदानों की स्वीकृति दी है।

विश्वविद्यालय का शांतिरक्षित पुस्तकालय पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत है जिसमें काष्ठोत्कीर्णित दुर्लभ पाण्डुलिपियों के बहुत बड़े संग्रह के साथ ही इंटरनेट और इन्फ्लिबनेट सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय में व्यापक तिब्बती

4.1.9





संग्रह विद्यमान है, जिसमें कंग्युर तथा तंग्युर के सभी प्रमुख संस्करण, चीनी और पाली त्रिपिटक, तथा कई तिब्बती विद्वानों के समग्र ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं।

वर्ष 2010-11 के दौरान 3410 पुस्तकें खरीदी गईं और 42 अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाएं मंगवाई गईं। पुस्तकालय के आडिओ-वीडिओ माइक्रोफार्म/रेप्रोग्राफी अनुभाग के कर्मचारियों ने अपने कार्य समय का लगभग 60 प्रतिशत समय पाठकों का ध्यान रखने तथा उन्हें सेवाएं प्रदान करने में व्यतीत किया। पुस्तकालय के कम्प्यूटर अनुभाग ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए “कम्प्यूटर शिक्षा में अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम” पर तीन पाठ्यक्रम आयोजित किए।

## शैक्षणिक

### अनुसंधान

अनुसंधान अनुभाग इस विश्वविद्यालय की रीढ़ है तथा इस अनुभाग ने तंत्र, दर्शनशास्त्र, न्याय, साहित्य, व्याकरण, तत्व मीमांशा, तथा ज्ञानकोशात्मक शब्दकोश आदि क्षेत्रों में प्रकाशित पांडित्यपूर्ण रचनाओं का योगदान किया है। इस अनुभाग के चार विभाग हैं अर्थात्

- पुनरुद्धार
- अनुवाद
- दुर्लभ बौद्ध पाठ अनुसंधान
- शब्दकोश

वर्ष के दौरान पुनरुद्धार विभाग के विद्वानों ने निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया।

- आचार्य नागार्जुन के ‘पिण्डिक्रम’ तथा ‘पंचक्रम’ प्रस्तावना, विषय सूची तथा अन्य संबंधित कार्यों सहित समीक्षात्मक रूप से सम्पादित तिब्बती संस्करण।
- आचार्य धर्मकीर्ति का ‘न्याय-बिन्दु’ प्रो. जी.सी. पाण्डेय द्वारा हिंदी में अनूदित। संस्कृत तथा तिब्बती पाठों के आलोचनात्मक संस्करण पर कार्य।

- मध्यव्युत्पत्ति: भारतीय विद्वानों तथा तिब्बती अनुवादकों द्वारा संकलित 9वीं सदी की बौद्ध पारिभाषिक शब्दावली: प्रस्तावना तथा विषय सूचियों सहित आलोचनात्मक रूप से सम्पादित।

- तीन बौद्ध सम्प्रदायों का ‘धर्मचक्रप्रवर्तनसूत्र’ तथा थेरवाद परम्परा के तीन सुत: अनूदित तथा आलोचनात्मक रूप से सम्पादित।

अनुवाद विभाग के विद्वानों ने

- जे गुन-थन तेन्पई द्रोन्मे के जल और वृक्ष ग्रंथ – श्रेष्ठ लोकोक्ति संग्रह का तीन भाषाओं अर्थात् तिब्बती, हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय के एक द्वारपाल द्वारा संपादित आचार्य वागीश्वरकीर्ति की सर्वोत्कृति ‘एल्यूडिंग डैथ’ जिसे मानव जीवन के प्रेरणादायी अर्थों में दीर्घायु और कायाकल्प के लिए जाना जाता है, पर कार्य किया।
- आचार्य चंद्रकीर्ति के ‘मध्यमाकवतार’ भाष्य के 6ठे अध्याय का हिंदी अनुवाद और कम्प्यूटर पर उसकी टाइप सेटिंग का कार्य पूरा किया।
- आचार्य असंग के ‘महायान-संग्रह’ की संपूर्ण संहिता का अनुवाद पूरा हो चुका है, तथा समग्र संहिता पुनरुद्धार होने के साथ-साथ इसके शुरु के दो अध्यायों का सम्पादन किया।
- आचार्य हरिभट्ट की ‘जातकमाला’ की प्रथम 21 जातक माला का हिंदी अनुवाद किया।

दुर्लभ बौद्ध पाठ अनुसंधान विभाग के विद्वानों ने

- दीपंकर श्रीभद्र की मूल दुर्लभ संस्कृत ‘गुह्यसमाजमण्डल-विधि’ संहिता का समालोचनात्मक संस्करण तथा उसका तिब्बती अनुवाद का संपादन कर प्रकाशित किया।
- दुर्लभ संहिताओं के स्रोत, भाग-4 प्रकाशित किया।
- तीन दुर्लभ बौद्ध पाठों पर कार्य किया जो विश्वविद्यालय की अपनी पत्रिका ‘धीः’ में खण्डशः प्रकाशित की जा रही हैं।

- (4) 'धीः' पत्रिका के दो अंक (49, 50) प्रकाशित किए गए।
- (5) 'सम्पुटतंत्र' नामक प्रमुख संहिता के समालोचनात्मक संस्करण का कार्य चल रहा है।

शब्दकोश विभाग के विद्वानों ने :

- (1) 'तिब्बती-संस्कृत आयुर्विज्ञान-कोश' संबंधी कार्य किए, जो इस समय अपने अंतिम चरण में है।
- (2) 'तिब्बती-संस्कृत ज्योतिष कोश' : लगभग 300 नए उद्धरण उनके संस्कृत समानार्थी पाठ सहित "अमरकोश और "ज्योतिष रत्नमाला" का कार्य पूरा किया और "शिव-स्वरोदय" तथा कालचक्र अवतार" और तिब्बती उद्धरण के पाठ "बायदुर-यासेर" के संकलन और चयन का कार्य किया। तिब्बती संस्कृत ज्योतिष कोश के संस्कृत के प्रथम प्रूफ का कार्य पूरा हो गया है।
- (3) 'तिब्बती-संस्कृत विद्यार्थी शब्दकोश' के तिब्बती 'च' वर्ग के लगभग 120, 'ल' वर्ग के 293 तथा 'स' वर्ग के लगभग 100 मुख्य-प्रविष्टि शब्द उनके संस्कृत समानार्थी के साथ तथा तिब्बती वर्ण रोमन अक्षरों में (अंग्रेजी उच्चारण के साथ अंग्रेजी लिपि) पूरे किए।
- (4) तिब्बती में 'विनय सूत्र' की दो बार प्रूफ रीडिंग की तथा लगभग दो हजार तीन सौ तिब्बती शब्दों को उनके संस्कृत समानार्थी शब्दों के साथ संकलित किया।
- (5) 'तिब्बती-संस्कृत शब्दकोश' का न से अ तक सम्पादन तथा धर्मसंग्रह कोश के अतीश फॉण्ट को यूनिकोड फार्मेट में परिवर्तित किया तथा डाटाबेस शब्दकोश के लिए धर्मसंग्रह कोश का संपादन किया।
- (6) 'तिब्बती संस्कृत शब्दकोश' के 16वें खण्ड तथा धर्मसंग्रह कोश की पी.डी.एफ. फाइल बनाई।
- (7) वर्ण क्रम में छंटनी करने और शब्दकोश निर्माण के लिए 'तिब्बती-संस्कृत आयुर्विज्ञान कोश' के 3000 मुख्य प्रविष्टि कार्ड बनाए।

कुल मिलाकर इस वर्ष दस पुस्तकें प्रकाशित या पुनर्मुद्रित की गईं। ये पुस्तकें संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी और तिब्बती की हैं।

### अध्यापन

युवाओं को व्यापक स्तर पर शिक्षित करने के लिए केवल स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा देना ही पर्याप्त नहीं है। अतः विश्वविद्यालय-पूर्व स्तर पर चार वर्ष का पाठ्यक्रम आवश्यक समझा गया। 9वीं कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक 9 वर्ष की अवधि का समन्वित पाठ्यक्रम निम्नलिखित रूप में तैयार किया गया है।

|              |                                                 |
|--------------|-------------------------------------------------|
| पूर्व मध्यमा | दो वर्ष<br>(माध्यमिक विद्यालय के समकक्ष)        |
| उत्तर मध्यमा | दो वर्ष<br>(उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के समकक्ष) |
| शास्त्री     | तीन वर्ष<br>(बी.ए. के समकक्ष)                   |
| आचार्य       | दो वर्ष<br>(एम.ए. के समकक्ष)                    |
| एम.फिल.      | डेढ़ वर्ष                                       |
| पी.एच.डी.    | ढाई वर्ष                                        |

अध्ययन के इन पाठ्यक्रमों में छात्रों को तीन भाषाओं तिब्बती (अनिवार्य), संस्कृत (अनिवार्य) और हिंदी या अंग्रेजी (वैकल्पिक) का अध्ययन करना होता है। इसके अलावा छात्रों को निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय को चुनने की स्वतंत्रता होती है :

- एशियाई इतिहास, पुरातत्व-विज्ञान तथा संस्कृति
- तिब्बती इतिहास
- राजनीतिशास्त्र

vi. अर्थशास्त्र

v. पाली

vi. ऐच्छिक संस्कृत

इस विश्वविद्यालय में बौद्ध परम्परा की पांच 'महाविद्याओं' पर आधारित पांच विद्या-संकाय हैं।

(i) शब्दविद्या-संकाय जिसमें संस्कृत, तिब्बती, हिंदी, अंग्रेजी आदि जैसे भाषा विभाग शामिल हैं।

(ii) हेतु एवं अध्यात्मविद्या संकाय जिसमें मूलशास्त्र, सम्प्रदायशास्त्र तथा उनकी विभिन्न शाखाएं शामिल हैं।

(iii) आधुनिक विद्या संकाय : आधुनिक विद्या संकाय किसी पारम्परिक विद्या-शाखा का नाम नहीं है बल्कि आधुनिक विश्वविद्यालय व्यवस्था के तहत पाठ्यक्रम में कुछ वैकल्पिक विषय रखे गए हैं अतः विषयों के निर्बाध शिक्षण के लिए संकाय स्थापित किया गया है। इसमें छः विषय शामिल हैं : एशियाई इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, तिब्बती इतिहास, पाली तथा बौद्धेतर एशियाई तथा पाश्चात्य दर्शनशास्त्र।

(iv) भोट चिकित्सा विद्या संकाय : जैसा कि उद्देश्यों में दिया गया है कि विश्वविद्यालय का कार्य तिब्बती भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शन और कला को बचाने के साथ-साथ तिब्बती सांस्कृतिक विरासत को बचाना है। इन उद्देश्यों के अनुसरण में भोट चिकित्सा और भोट ज्योतिष संकाय के अंतर्गत सोवा-रिग्पा (तिब्बती चिकित्सा विभाग) की स्थापना वर्ष 1993 में की गई थी। हाल ही में सोवा-रिग्पा (तिब्बती चिकित्सा पद्धति) को भारत सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की गई है और इसे भारत में अपनाई जा रही चिकित्सा पद्धतियों की सूची में शामिल किया गया है।

(v) शिल्प-विद्या संकाय

### कार्यक्रम

केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान विभिन्न सेमिनारों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों का आयोजन किया। :

1. विश्वविद्यालय ने अमरीका तथा आस्ट्रेलिया से विश्वविद्यालय में आए 40 छात्रों के लिए बौद्ध दर्शन तथा तिब्बती भाषा

का लगभग चार सप्ताह की अवधि का गहन पाठ्यक्रम चलाया।

2. विश्वविद्यालय के प्रकाशनों तथा थंका की प्रदर्शनी लगाई गई।

3. विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए कम्प्यूटर शिक्षा का अभिमुखी पाठ्यक्रम चलाया गया।

4. 'बौद्ध पाण्डुलिपियों का संपादन' विषय पर तीन दिन का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

5. हैमशायर कॉलेज के प्रो. ह्यूज क्राउस द्वारा विश्वविद्यालय के छात्रों तथा शोधकर्ताओं के लिए 'ग्रह-विज्ञान ज्योतिष तथा विश्वविज्ञान' पर लगभग 21 दिन का एक लघु पाठ्यक्रम चलाया गया।

6. यू.एस.ए. के स्मिथ कॉलेज के प्रो. पीटर ग्रेगरी द्वारा 'चीनी दर्शन सम्प्रदायों के संवर्धन में सूत्रों का महत्व' तथा 'अवतंसक सूत्र में बुद्धत्व की प्रतिभा' विषयों पर व्याख्यान दिए।

7. दक्षिण कोरिया के वांगवोंग डिजिटल विश्वविद्यालय के कोरियाई छात्रों के एक समूह के लिए 'आटोनोमी एण्ड ग्लोबल सोसायटी' विषय पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण दिया गया।

8. विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में 14 छात्रों को शामिल करते हुए "गेन एक्सपीरिएंस व्हाइल लर्निंग" नामक एक स्कीम दो माह के लिए चलाई गई।

9. 'हिंदी राजभाषा' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

10. विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए 'इंपोर्टेंस ऑफ संस्कृत एण्ड हाउ टू स्टडी' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

11. फ्रांस से आए छात्र-समूह के लिए 'बौद्ध धर्म का विषय-प्रवेश' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

12. 'तिब्बती संस्कृति में संस्कृत भाषा का महत्व' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

13. 'ईश्वर के अस्तित्व संबंधी युक्तिवादों का खण्डन कैसे करें' विषय पर प्रो. चार्ल्स की वार्ता आयोजित की गई।

14. प्रो. चार्ल्स गुडमैन ने 'एटम एलीमेंट्स एण्ड हिस्ट्री ऑफ कैमिस्ट्री' विषय पर व्याख्यान दिया।

15. डॉ. एडवर्ड डब्ल्यु. बास्टियन ने 'क्रिएटिंग इंटर स्पिरिच्युअल विज्डम' विषय पर व्याख्यान दिया।
16. 'रेस्पॉसिबिलिटी ऑफ स्पिरिच्युअल टीचर' और 'बुद्धिस्ट फेथ एण्ड बिलीफ' विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए।
17. बुद्ध जयंती समारोह का आयोजन किया गया।
18. नए प्रविष्ट छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन अध्ययन शिविर का आयोजन किया गया।
19. सोवा-रिंग्पा (तिब्बती चिकित्सा) विभाग ने वनस्पतियों, खनिजों, औषधियों और सोवा-रिंग्पा से संबंधित साहित्य को प्रदर्शित किया।
20. संबंधित अध्यापकों ने अपने विषय से संबंधित विषयों पर बाहर के विद्वानों को आमंत्रित कर उनके 100 से भी अधिक व्याख्यान आयोजित किए। इसके अलावा तिब्बती, संस्कृत, हिंदी तथा कम्प्यूटर विज्ञान पर कई अल्प अवधि पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया। बुद्धविद्या, तिब्बत विद्या, तथा हिमालयी विद्या अध्ययन तथा अनुसंधान के लिए भारत तथा विदेशों से अनेक अनुसंधानकर्ता तथा अध्येता विश्वविद्यालय में आए।

### प्रकाशन

वर्ष के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

1. न्यायबिंदु एवं धर्मोत्तर टीका (संस्कृत, तिब्बती, तथा हिंदी)—लेखक प्रो. जी.सी. पाण्डेय।
2. आर्य शालिस्तम्भ सूत्र एवं आचार्य कमलशील विरचित बृहत् टीका—(तिब्बती तथा हिंदी)—सम्पादक तथा अनुवादक प्रो. गेशे येशी थबख्ये।
3. बौद्ध धर्म एवं विज्ञान : (अंग्रेजी में)—सम्पादक प्रो. पी.के. राय।
4. आचार्य नागार्जुन का पिण्डिक्रम तथा पंचक्रम (तिब्बती में)—सम्पादक वेन. ग्यलछेन नमडोल।
5. दुर्लभ ग्रंथों की आधार सामग्री (भाग-4) : डॉ. ठाकुरसेन नेगी।
6. गुह्य समाज मण्डल विधि : (तिब्बती एवं संस्कृत)—सम्पादक डॉ. बनारसी लाल।
7. धी: पत्रिका, खण्ड 49
8. धी: पत्रिका, खण्ड 50



## नव नालंदा महाविहार

4.1.10

नव नालंदा महाविहार (एनएनएम) की स्थापना प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की तर्ज पर पाली और बौद्ध अध्ययन में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के रूप में बिहार सरकार द्वारा वर्ष 1951 में की गई थी। आदरणीय भिक्षु जगदीश कश्यप इसके संस्थापक निदेशक थे।

पाली और बौद्धदर्शन के उच्च शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने इसका अधिग्रहण कर पूर्ण रूप से वित्तपोषित स्वायत्त संस्थान के रूप में सन् 1994 में इसे अपने नियंत्रणाधीन ले लिया था। वर्ष 2006 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने इसे सम विश्वविद्यालय घोषित किया।

नव नालंदा महाविहार, नालंदा स्नातकोत्तर स्तर पर उच्चस्तरीय पाली और बौद्ध अध्ययन पर आधारित नवीन शिक्षण और अनुसंधान कार्य के लिए कृतसंकल्प है। दर्शन और साहित्य का ज्ञान प्रदान कर छात्रों के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करने और सम्बद्ध विषयों में शोधकार्य के लिए प्रेरित करने और अनुवाद, दुर्लभ पांडुलिपियों के प्रकाशन तथा बौद्ध अध्ययन से जुड़ी अन्य अनुसंधानात्मक कृतियों से परिचित कराने के लिए कृतसंकल्प है। भारतीय समाज में योगदान के मद्दे नजर परंपरागत बौद्ध विहार शिक्षा के अन्तर्गत भिक्षु-भिक्षुणी और गृहस्थ विद्वानों को तुलनात्मक अध्ययन और विभिन्न शोधपरक शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करना भी है।

निदेशक महाविहार के कार्यकारी प्रधान होते हैं, जिन्हें सहायता करने के लिये रजिस्ट्रार, वित्त अधिकारी, डीन (शैक्षिक/छात्र कल्याण) और परीक्षा नियंत्रक होते हैं। महामहिम राज्यपाल, बिहार कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष होते हैं।

### शैक्षणिक गतिविधियाँ

सम विश्वविद्यालय होने के बाद नव नालंदा महाविहार में कई स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरंभ हुए हैं। इस समय महाविहार में 10 विभाग हैं यथा (i) पाली विभाग, (ii) प्राचीन इतिहास संस्कृति और पुरातत्व विभाग, (iii) दर्शनशास्त्र विभाग, (iv) तिब्बती अध्ययन विभाग, (v) अंग्रेजी विभाग, (vi) हिंदी विभाग, (vii) संस्कृत विभाग, (viii) चीनी एवं जापानी विभाग, (ix) बौद्ध अध्ययन विभाग और (x) बौद्ध धर्म एवं भाषा विभाग। इन विभागों के अंतर्गत सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, आनर्स (पाली), एम. ए. और पीएच. डी. कोर्स कराए





जाते हैं। महाविहार नवम्बर, 2007 से अपना स्वयं का पाठ्यक्रम चला रहा है और उपर्युक्त सभी संकायों में छात्रों की कुल संख्या 433 हैं, जिनमें से 103 छात्र दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्व एशियाई देशों के हैं।

### पुस्तकालय

पुस्तकालय ऐसा भवन होता है जिसमें विविध प्रकार की पाठ्य सामग्रियों का संग्रह होता है और समुचित सेवा द्वारा ये सामग्रियां या सूचनाएं पाठकों को उपलब्ध कराई जाती हैं। पुस्तकालय किसी भी संस्थान की रीढ़ होता है। प्राचीन काल में पुस्तकालय पुस्तकों और पांडुलिपियों का संग्रह होता था और इनकी सुरक्षा और भावी पीढ़ी के लिए संरक्षा ही मुख्य उद्देश्य हुआ करते थे। आधुनिक पुस्तकालय एक सूचना केंद्र है जिसमें विभिन्न प्रकार के परंपरागत और सूचना-प्राद्योगिकी युक्त दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का संग्रहण, व्यवस्थापन, प्रदर्शन कर इन्हें मांग के अनुसार समय पर उपलब्ध कराया जाता है। इस समय महाविहार पुस्तकालय में कुछ दुर्लभ पांडुलिपियों के अलावा 57,300 पुस्तकों का संग्रह है जिनमें से 3375 पुस्तकों का संग्रहण रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान हुआ है। इस पुस्तकालय की उल्लेखनीय विशिष्टता यह है कि डा. नलिनाक्ष दत्त, डा. नथमल टाटिया, प्रो. सी. एस. उपासक और प्रो. मागध जैसे उद्भूत बौद्ध विद्वानों से उनकी व्यक्तिगत पुस्तकालय हमें दानस्वरूप प्राप्त हुई है।

### गतिविधियाँ

- प्रो. चार्ल्स विलियम्स, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध महाविद्यालय, थाईलैंड ने दिनांक 18 जनवरी, 2010 को **“कुमारजीव और अभिधम्म”** विषय पर विशेष व्याख्यान दिया।
- संस्कृति पर्यटन और बौद्ध परिपथ के उन्नयन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, पर्यटन विभाग, बिहार सरकार और नव नालंदा महाविहार के संयुक्त तत्वावधान में 6-7 फरवरी, 2010 को 2 दिनों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन **“एक्सपेरियेंस बुद्धिज्म: इन द लैंड ऑफ ओरिजिन”** विषय पर हुआ। **“कंट्रीब्यूशन ऑफ बुद्धिज्म टू द वर्ल्ड कल्चर”** और **“एनोज्ड बुद्धिज्म”** पर कुल 14 शोध पत्र पढ़े गए।

- प्रो. सत्यप्रकाश शर्मा, संस्कृत विभागाध्यक्ष, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ने 28-29 अप्रैल, 2010 को 2 विशेष व्याख्यान दिए जिनके शीर्षक थे – **“संस्कृत के मौलिक ग्रंथों के अनुवाद की समस्या और संस्कृत साहित्य का स्तर और प्रवृत्ति”**
- **“मैपिंग ऑफ नालंदा”** परियोजना के अंतर्गत महाविहार के बौद्ध अध्ययन विभाग की एक टीम 20, 21 और 27 मई, 2010 को गुरपा, बुद्धवन, चेचर और प्रागबोधि क्षेत्रों का दौरा किया।
- श्री संजय माथुर ने 22 मई, 2010 को **“नालंदा के जी. आई. एस. मैपिंग”** विषय पर व्याख्यान दिया।
- बुद्ध पुर्णिमा के अवसर पर डा. उमा शंकर व्यास, भूतपूर्व निदेशक, नव नालंदा महाविहार ने 27 मई, 2010 को **“इक्कीसवीं सदी में बुद्ध की शिक्षा की प्रासंगिकता”** विषय पर विद्वतापूर्ण व्याख्यान दिया।
- यू. एस. ए. की सुश्री मोनिका हार्वे ने दिनांक 7 से 30 जुलाई 2010 तक अंग्रेजी विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों को पढ़ाया।
- प्रो. आर. एस. शर्मा, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, बी. एच. यू. वाराणसी ने **“लिंग्विस्टिक एण्ड कॉमुनिकेशन स्किल”** विषय पर 9 अगस्त 2010 को एक व्याख्यान दिया।
- **“बुद्धिस्ट मेडिटेशन : टेक्स्ट, ट्रेडिशन एण्ड प्रैक्टिस”** विषय पर छठा अर्द्धवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 3-5 सितम्बर, 2010 तक आयोजित किया गया जिसमें महामहिम राज्यपाल, बिहार मुख्य अतिथि थे।
- प्रो. सत्यकान्त, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 2010 को **“हिंदी की वर्तमान स्थिति – दशा और दिशा”** विषय पर व्याख्यान दिया।
- प्रो. राजीव रंजन सिंह, संस्कृत विभाग संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने दिनांक 16 सितम्बर, 2010

को "साहित्य और उसका केंद्रीय तत्व" विषय पर व्याख्यान दिया।

- हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर दिनांक 17 सितम्बर 2010 को एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- महाविहार के साप्ताहिक सेमिनार में निदेशक डा. रवीन्द्र पंथ ने 25 सितम्बर, 2010 को "महानिदान सूत्र की महत्ता" विषय पर एक विद्वतापूर्ण व्याख्यान दिया जिसमें महाविहार के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्राध्यापकों ने हिस्सा लिया।

बौद्ध अध्ययन विभाग की ओर से "एन्गेज्ड बुद्धिज्म" विषय पर दिनांक 27 सितम्बर, 2010 को एक कार्यशाला का आयोजन, महाविहार के नवनिर्मित सांस्कृतिक ग्राम में किया गया जिसमें श्री नागीया डोर्जी, सदस्य सचिव, महाबोधि मंदिर प्रबंधन समिति, बोधगया मुख्य अतिथि थे और श्री आर. एस. तिवारी भूतपूर्व सचिव, पर्यटन मंत्रालय, बिहार सरकार एवं श्री एस. पी. तरुण भूतपूर्व राज्य शिक्षा मंत्री, बिहार सरकार, विशिष्ट अतिथि थे।

- पवारण दिवस के शुभ अवसर पर भिक्खु संघ ने 22-23 अक्टूबर, 2010 को पट्टान सूत का अखंड पाठ किया और महाविहार के भिक्खु संघ को "भोजन दान" के पहले 23 अक्टूबर, 2010 को आकाशदीप का विमोचन किया गया।
- बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जनक पाण्डेय ने दिनांक 19 नवम्बर, 2010 को "कंसेचुअलाइजिंग कल्चर : कंटिन्युटी एंड चेंज" विषय पर व्याख्यान दिया।

- महाविहार का 59वां स्थापना दिवस दिनांक 20 नवम्बर, 2010 को मनाया गया जिसमें श्री आर. एन. प्रसाद, लोकायुक्त, बिहार सरकार, मुख्य अतिथि थे और श्री सुरेश कुमार गोयल, महानिदेशक, आई. सी. सी. आर., नई दिल्ली, विशिष्ट अतिथि थे। श्वेन्-त्सांग स्मारक भवन के प्रांगण में सायंकाल नालंदा महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें शास्त्रीय और सुगम संगीत के लब्धप्रतिष्ठित कलाकारों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- धम्म सेनापति के रूप में जाने जाने वाले भगवान् बुद्ध के प्रमुख शिष्य थेर सारिपुत्त के 2497वें परिनिर्वाण के अवसर पर राजगीर के गिरियक पर्वत पर सारिपुत्त विश्व शांति यात्रा का आयोजन दिनांक 23 नवम्बर, 2010 को किया गया।

- भगवान् बुद्ध के दूसरे प्रमुख शिष्य थेर महामोग्गलान के 2494वें परिनिर्वाण के अवसर पर जुआफरडीह नालंदा के पंक स्तूप तक की पद यात्रा "इद्धि समत्थो महामोग्गलान पथ पदक्खिणा" के तत्वावधान में दिनांक 20 सितम्बर, 2010 को की गई।

- प्रो. रेको औरा, अंग्रेजी विभाग, शीग चिकित्सा विश्वविद्यालय, जापान ने दिनांक 23 सितम्बर 2010 को "इंडिया एंड जापान : इंटरैक्शन ऑफ बुद्धिस्ट कल्चर" विषय पर विद्वतापूर्ण व्याख्यान दिया।



अन्तर्राष्ट्रीय बुद्धिस्ट समारोह





बाजाघर का उद्घाटन

## 4.2

### पुस्तकालय

---

## राष्ट्रीय पुस्तकालय

राष्ट्रीय पुस्तकालय ने 1836 में कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी के रूप में अपना कार्य शुरू किया। अनेक सचिवालय पुस्तकालयों को मिलाकर 1891 में स्थापित इंपीरियल पुस्तकालय सीमित पहुँच के कारण अप्रयुक्त पड़ा हुआ था। गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी के संग्रहों को इंपीरियल लाइब्रेरी के संग्रहों के साथ मिला दिया। इंपीरियल लाइब्रेरी के नाम से नए पुस्तकालय को दिनांक 30 जनवरी, 1903 को मेटकाफ हाल, कोलकाता में औपचारिक रूप से आम जनता के लिए खोल दिया गया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, भारत सरकार ने इंपीरियल लाइब्रेरी (नाम परिवर्तन) अधिनियम, 1948 को अधिनियमित करके इंपीरियल लाइब्रेरी का नाम बदलकर राष्ट्रीय पुस्तकालय कर दिया और इसके संग्रहों को एसप्लानेड से हटाकर वर्तमान बेलवडे एस्टेट में रख दिया गया।

वर्तमान में राष्ट्रीय पुस्तकालय को भारत के संविधान की संघ सूची की सातवीं अनुसूची के अनुच्छेद-62 के अंतर्गत एक राष्ट्रीय महत्व के संस्थान का दर्जा प्राप्त है। यह देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय है जो अपने पाठकों को निःशुल्क सदस्यता प्रदान करता है। इस पुस्तकालय में पठन कक्ष के अतिरिक्त एक परिदाय अनुभाग (लेंडिंग सेक्शन) है। अधिकांश प्रभाग और अनुभाग भाषा भवन में हैं जो 2004 में खोला गया नया भवन (40,000 वर्गमीटर में फैला हुआ) है। पुराने बेलवडे भवन की इस समय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा मरम्मत की जा रही है। एसप्लानेड में केवल समाचार-पत्रों के लिए पठन कक्ष है।

यह पुस्तकालय शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं (एफेमेरा) को छोड़कर सभी महत्वपूर्ण सामग्री का अधिप्रापण और संरक्षण करता है; मुद्रित सामग्री और भारत से संबंधित फोटोग्राफिक अभिलेखों का संग्रहण करता है। राष्ट्रीय महत्व की पाण्डुलिपियों, विदेशी सामग्री का अधिप्रापण और संरक्षण करता है; सामान्य और विशेष दोनों प्रकार की वर्तमान और पहले के समय की सामग्री के लिए ग्रंथ सूची और प्रलेखन सेवाएं प्रदान करता है; ग्रंथ सूची संबंधी स्रोतों की पूर्ण और सही-सही सूचना उपलब्ध करवाने तथा अंतर्राष्ट्रीय ग्रंथ सूची संबंधी गतिविधियों में भाग लेने वाले संदर्भ के केंद्र के रूप में कार्य करता है; फोटोकापी और रिप्रोग्राफिक सेवाएं प्रदान करता है और अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक आदान-प्रदान तथा पुस्तक उधार के लिए एक केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह पुस्तकालय, शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए देश में एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र भी है। यह नियमित रूप से प्रदर्शनियों का आयोजन करता है, सूची पत्रों को प्रकाशित करता है तथा प्रशिक्षण कार्यशालाओं एवं सेमिनारों का आयोजन करता है।

4.2.1





राष्ट्रीय पुस्तकालय, लगभग सभी भारतीय भाषाओं में पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएं प्राप्त करता है। इन्हें पुस्तक और समाचार पत्र सुपुर्दगी (पब्लिक लाइब्रेरी) अधिनियम 1954 के अंतर्गत प्राप्त किया जाता है। यह पुस्तकालय जागरूकता अभियान के जरिए विशेष अभियान चलाता है, विशेषकर उन पुस्तक मेलों में जो प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेता गिल्ड, कोलकाता और नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित किए जाते हैं।

यह विदेशों में अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में प्रकाशित इलेक्ट्रानिक जर्नलों एवं डाटाबेसों सहित पुस्तकों और जर्नलों को भी खरीदता है। पुस्तकों के चयन और आर्डर देने के संबंध में पुस्तकालय को सलाह देने के लिए सलाहकार बोर्ड की सिफारिशों के अनुसार दिनांक 14 जुलाई, 2010 को एक विशेष सुविज्ञ समिति का गठन किया गया। इस समिति ने सुझावों, संवीक्षा तथा विशेषज्ञों के द्वारा अनुमोदन की चरणवार प्रक्रिया चलाई ताकि पहले की उन प्रक्रियाओं को बदला जा सके जो विक्रेता आधारित बन गई थीं।

पुस्तकालय में एक उपहार अनुभाग है जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्य देखता है। राष्ट्रीय पुस्तकालय, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 95 देशों में फैले 227 पुस्तकालयों के साथ प्रकाशनों का आदान-प्रदान करता है।

पुस्तकालय ने दिनांक 7 अगस्त, 2010 को सलाहकार बोर्ड की बैठक में संशोधित उपहार एवं आदान-प्रदान नीति को अंगीकार किया। इससे उपहारों की प्राप्ति में वृद्धि हुई। शोध प्रयोगशाला केंद्र, शिकागो विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया माइक्रोफार्म संग्रह से 46 माइक्रोफिल्म रीलों को एक बड़ा उपहार दिनांक 13 दिसंबर, 2010 को प्राप्त हुआ। इन रीलों में जाने-माने विद्वान सुकुमार सेन द्वारा संगृहीत मध्यकालीन बंगाली कविता में 900 पाण्डुलिपियाँ हैं। पुस्तकालय ने नवंबर, 2010 में बंगला लिपि में चार पाण्डुलिपि पुस्तकें और श्रीरामपुर के राजा किशोरी लाल गोस्वामी के संग्रह से हस्तनिर्मित कागज प्राप्त किया। प्रोफेसर कल्याणी बंधोपाध्याय ने जाने-माने राजनीति विज्ञानी स्व. प्रोफेसर जयंतानुज बंधोपाध्याय की पुस्तक संग्रहों का उपहार दिया है।

इस पुस्तकालय को मानव विज्ञानी और महात्मा के सहयोगी निर्मल बोस के कुछ निजी दस्तावेज और महान विद्वान सुकुमार सेन के पुस्तकालय को उपहार के रूप में देने का प्रस्ताव भी प्राप्त हुआ है। यह पुस्तकालय भारतीय और विदेशी सरकारी दस्तावेज के संग्रहालय के रूप में कार्य करता है और इन दस्तावेजों में संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न एजेंसियों के प्रकाशन भी शामिल हैं।

## सारांश

|     |                                                                      |                 |
|-----|----------------------------------------------------------------------|-----------------|
| (क) | विदेशी प्रकाशनों पर खर्च की गई राशि                                  | 1,64,65,164 रु. |
| (ख) | विदेशी जर्नलों के अभिदान पर खर्च की गई राशि (आन-लाइन जर्नलों सहित)   | 4,94,46,964 रु. |
| (ग) | खरीदी गई नई पुस्तकों की संख्या                                       | 3,129           |
| (घ) | उपहार एवं आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त प्रकाशन की संख्या | 1,648           |
| (ङ) | डी .बी. अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त प्रकाशनों की संख्या               | 25,643          |
| (च) | प्राप्त विदेशी सरकारी दस्तावेजों की संख्या                           | 2,504           |
| (छ) | प्राप्त पत्र-पत्रिकाओं की संख्या                                     | 11,330          |

सभी नई खरीदी गई पुस्तकों का एक्सेसन एवं संसाधन करके पाठकों को उपलब्ध कराया गया है। खरीदे गए दस्तावेजों को पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों से इतर सामग्री को एक्सेशनिंग/रिकार्डिंग करके रखा जाता है और तत्पश्चात इन सामग्रियों को संसाधित एवं उनका भण्डारण किया जाता है ताकि उन्हें खोजा जा सके और पाठकों को सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें। लगभग 27,447 पुस्तकों का एक्सेशनिंग किया गया और 24,514 पुस्तकों को संसाधित किया गया। लगभग 777 माइक्रोफिल्मों एवं माइक्रोफिश को संसाधित किया गया।

पुस्तकालय के पास भाषा भवन में मुख्य पठन कक्ष है, पुराने अनेक्सी भवन में एक पठन कक्ष है और समाचार पत्रों के लिए एस्प्लानेड में एक पठन कक्ष है। इसके अलावा, ऐसे पठन कक्ष हैं जो दुर्लभ पुस्तकों और पाण्डुलिपियों, नक्शों एवं मुद्रण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भारतीय और विदेशी सरकारी दस्तावेज, बाल-पुस्तकों, माइक्रोफार्म और आशुतोष संग्रह-सर आशुतोष मुखर्जी का उत्तरदान, जिसके लगभग 84,000 खण्ड हैं, के लिए हैं।

शोध छात्रों एवं विदेशी आगंतुकों सहित पाठकों की सेवा के लिए तीन मुख्य पठन कक्ष वर्ष में 362 दिन खुले रहते हैं। मुख्य पठन

कक्ष और संदर्भ प्रभाग, पब्लिक काउण्टरों को बिना ब्रेक के दोपहर भोजन के समय भी खुले रहते हैं।

संदर्भ, ग्रंथ-सूची, रिप्रोग्राफिक और डिजिटल सेवाएं परिचालन, उधार (लेंडिंग) और प्रदर्शन के लिए नेमी सेवाओं के अतिरिक्त प्रदान की जाती हैं। वर्ष के दौरान आई सी टी सेवाओं में सुधार होने से इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं में वृद्धि हुई है। पुस्तकालय ने सामग्री का डिजिटलीकरण किया है जो 3.2 मिलियन पृष्ठों की है।

पुस्तकालय सुविधाएं, शोध छात्रों के लिए उधार सीमा में वृद्धि करते हुए बाल्कनी सीट आबंटित करके बढ़ा दी गई हैं। बाल-पुस्तकालय में कथा वाचन कार्यक्रम शुरू करने की योजना है। इसमें बच्चों की फिल्में दिखाने के लिए होम थियेटर की भी व्यवस्था है। आपातकाल तथा विकलांगों के लिए स्ट्रेचर और व्हीलचेयर दिनांक 13 जुलाई, 2010 को खरीदी गई थीं। विकलांगों के लिए विशेष टायलेट का निर्माण किया गया और उसे अक्टूबर, 2010 में शुरू कर दिया गया है। इसका उपयोग करने वालों के लिए सीढ़ियों के पास चिह्न बना दिया गया है।

#### सारांश

|                                                      |          |
|------------------------------------------------------|----------|
| (क) पठन कक्ष के लिए जारी की गई सदस्यता की संख्या     | 9,205    |
| (ख) सेवा प्रदत्त पाठकों की संख्या                    | 76,215   |
| (ग) पाठकों, विद्वानों को जारी खंडों की संख्या        | 1,79,341 |
| (घ) पाठकों, विद्वानों को उधार दिए गए खंडों की संख्या | 9,580    |
| (ङ) उपलब्ध कराए गए फोटोग्राफों की संख्या             | 1,70,580 |

#### संरक्षा और रिप्रोग्राफी

पुस्तकालय के तीन यूनिट – रिप्रोग्राफी, प्रयोगशाला और परिरक्षण (बाइंडरी के साथ), पुस्तकों और दस्तावेजों के भौतिक संरक्षण से संबंधित हैं।

रिपोर्ट अवधि के दौरान रिप्रोग्राफी प्रभाग ने माइक्रोफिल्म निगेटिव के 61,350 पृष्ठ (164 रोल) और माइक्रोफिल्म पाजिटिव के

68,932 (66 रोल) तैयार किया। लगभग 2,375 माइक्रोफिल्म निगेटिव, 2163 माइक्रोफिल्म प्रिंट का एक्सपोजर और 24 ब्रोमाइड विस्तार पाठकों की सेवा के भाग के तौर पर उपलब्ध कराए गए।

पुस्तकालय ने 1156 पुस्तकों को धूमित किया, पीआईपी कीटनाशक से 1,05,000 पुस्तकों को असंक्रमित किया, 663 पुस्तकों को डिलैमिनेट किया, 34,953 शीटों को डिएसिडीफाई किया, टिशू से 3,318 शीटों की मरम्मत की, साल्वेंट लैमिनेशन से 38,790 पन्नों की मरम्मत की। 3,011 कागज-ताड़-पत्र पाण्डुलिपियों की मरम्मत की, 309 पन्नों को संपुटित किया, दो नक्शों को मढ़कर लगाया और गैर रासायनिक पद्धति से 300 पुस्तकों का उपचार किया।

पुस्तकालय प्रभाग ने नवंबर में श्रीरामपुर के राजा किशोरी लाल गोस्वामी के संग्रह से प्राप्त चार पाण्डुलिपि पुस्तकों का सफलतापूर्वक पुनरुद्धार किया। पुस्तकालय ने 31 मार्च, 1906 से 12 अप्रैल, 1942 तक के राष्ट्रीय शिक्षा परिषद, बंगाल की विवरण पुस्तक का भी पुनरुद्धार किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविंद घोष, सतीश चन्द्र मुखर्जी और राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन के अन्य नेताओं के हस्ताक्षर वाले दो खण्डों का पुनरुद्धार किया गया और उन्हें 23 जुलाई, 2010 को सौंप दिया गया। माइक्रोफिल्म कापी को रख लिया गया है। पुस्तकालय ने आनन्द बाजार पत्रिका की रामकृष्ण परमहंस की शताब्दी स्मरणोत्सव वाले संस्करण की जीर्ण-शीर्ण प्रति का पुनरुद्धार किया। इस संस्करण को नवंबर, 2010 की शुरुआत में रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, कोलकाता को सौंप दिया गया।

परिरक्षण प्रभाग ने 2,488 पुस्तकों की मरम्मत की, 1,475 खुले अंकों की जिल्दसाजी और 2,346 पुस्तकों की जिल्दसाजी की।

#### आधुनिकीकरण

##### आईसीटी प्रणाली में सुधार तथा स्तरोन्नयन

समीक्षाधीन अवधि के दौरान पुस्तकालय में आईसीटी अवसंरचना में उल्लेखनीय सुधार हुआ। हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, नेटवर्क, डीबीएमएस और इंटरनेट आधारित लाइनें ली गईं और डॉयनेमिक वेबसाइट को शुरू करके सक्रिय किया गया। सभी मुख्य हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर संघटकों की प्राप्ति की गई उनकी डिलीवरी की गई तथा उन्हें संस्थापित किया गया एवं लैन (एलएएन) का भी विस्तार किया गया। सर्वर- स्टोरेज प्रणाली को भी चालू कर दिया गया है।

अप्रैल, 2010 में राष्ट्रीय पुस्तकालय की वेबसाइट (www.nationallibrary.gov.in) को डायनेमिक वेबसाइट में इंटरनेट (वेब-ओपीएसी) के माध्यम से ऑनलाइन सार्वजनिक सुलभ सूची में बदल दिया गया है। एनआईसी द्वारा अपने सर्वर में राष्ट्रीय पुस्तकालय डाटाबेस को शामिल किए जाने की सहमति के बाद ही यह संभव हो पाया है। वेब-ओपीएसी में अब लगभग 800,000 जीवनवृत्त रिकार्ड है। इनके अतिरिक्त, वेबसाइट के स्टैटिक पार्ट को पूरी तरह से सम्पादित तथा ठीक किया गया है।

इस वर्ष से राष्ट्रीय पुस्तकालय द्वारा उपयोगकर्ताओं एवं स्टाफ सदस्यों को इंटरनेट कनेक्शन प्रदान करने के लिए बीएसएनएल से 10 एमबीपीएस इंटरनेट लीज्ड लाइन (आईएलएल) की खरीददारी की जा रही है। लैन से जुड़े हुए सभी डेस्कटॉप पर अक्टूबर, 2010 से इंटरनेट का प्रयोग किया जा सकता है।

#### ऑन-लाइन जर्नल्स

अप्रैल, 2010 से पुस्तकालय में ऑनलाइन जर्नल्स (या ई-जर्नल्स) को शुरू किया गया है। ज्यादातर जर्नल्स को सीधे प्रकाशकों से ही प्राप्त किया गया है तथा कुछ मामलों में विशिष्ट वेन्डरों से इन्हें खरीदा गया है। प्रयोक्ताओं के लिए ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, सेज, टेलर एंड फ्रांसिस, स्प्रिंगर, प्रोजेक्ट म्यूज, अमेरिकन केमिकल सोसायटी, हीन ऑनलाइन, जेस्टर इत्यादि जैसे अग्रणी पैकेजों को खरीदा गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान लगभग 5000 ऑनलाइन जर्नल्स लिये गये हैं।

#### कार्ड कैटलॉग का शीघ्र परिवर्तन

कार्ड कैटलॉग का शीघ्र अंतरण (आरसीसीसी) परियोजना की संकल्पना सलाहकार बोर्ड द्वारा अपनी प्रथम बैठक में की गई थी। जनवरी, 2010 में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई इस घोषणा के बाद कि राष्ट्रीय पुस्तकालय के कैटलॉग को इंटरनेट के माध्यम से सुलभ बनाया जाएगा, इस परियोजना को शुरू किया गया। जून, 2010 के अंतिम सप्ताह में अंतिम मंजूरी मिलने के बाद इस परियोजना के माध्यम से कार्ड वाली भारतीय भाषाओं की सभी अन्य पुस्तकों के सभी अंग्रेजी मोनोग्राफ्स को परिवर्तित कर दिया गया। चार लाख से भी अधिक रिकार्डों को परिवर्तित किया जा चुका है तथा इस परियोजना के तहत अब गैर-पुस्तकीय सामग्री की तरफ ध्यान दिया जा रहा है। उपभोक्ताओं के लिए पुस्तकालय की वेबसाइट पर अब कुल 800,000 प्रविष्टियां उपलब्ध हैं।

#### रिट्रो-कंवर्जन परियोजना

रिट्रो-कंवर्जन परियोजना के अंतर्गत, चार एजेंसियां एमएमआरसी21 फार्मेट में ग्रंथ-सूची रिकार्ड तैयार किए जा रहे हैं। इन रिकार्डों का वैधीकरण राष्ट्रीय पुस्तकालय की वैधीकरण सेल द्वारा किया जाता है। पूरे किए रिकार्डों को सर्वर में अपलोड किया जाता है। उपभोक्ताओं के लिए ये रिकार्ड पुस्तकालय परिसर में इंटरनेट (एलएएन) के माध्यम से उपलब्ध करवाए गए हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान दो लाख से भी अधिक रिकार्डों का वैधीकरण किया गया है तथा उन्हें अपलोड किया गया है। कार्य के वर्तमान चरण में, वैधीकरण के बाद 1,51,000 डाटा आइटम को सर्वर पर अपलोड किया गया है। भारतीय सरकारी दस्तावेजों, विदेशी सरकारी दस्तावेजों तथा पुराने बाल पुस्तकालय में कार्य प्रगति पर है।

#### पुरानी, दुर्लभ एवं जीर्णशीर्ण पुस्तकों का डिजिटलीकरण

इस कार्यक्रम के अगले चरण में विलम्ब हुआ क्योंकि पिछली निविदा प्रक्रिया में कोई भी बोलीदाता उपयुक्त नहीं पाया गया। कार्य को अगले वर्ष के शुरू में प्रारम्भ किए जाने की उम्मीद है।

#### समाचार-पत्रों की माइक्रोफिल्मिंग

दुर्लभ, पुराने एवं जीर्णशीर्ण समाचार-पत्रों की माइक्रोफिल्मिंग कार्य के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय द्वारा डीपीएस माइक्रोग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड को ठेका दिया गया है। इस फर्म ने पुस्तकालय से भाषा भवन में रिप्रोग्राफी और माइक्रोफिल्म पुस्तकालय के लिए नियत कक्षाओं में कार्य-स्थल प्रदान करने का अनुरोध किया है। सीपीडब्ल्यूडी स्थान का प्रबंध करने का कार्य कर रहा है।

#### अन्य परियोजनाएं

##### आधुनिक पांडुलिपियों का कैटलॉग

नवम्बर, 2010 के प्रथम सप्ताह में पुस्तकालय में आधुनिक पांडुलिपियों के दो वॉल्यूम कैटलॉग के कार्य को पूरा कर लिया गया था। इसमें जदूनाथ सरकार संग्रह (419 फोलियोज) के सभी आइटम रबीन्द्रनाथ टैगोर, सरोजनी नायडू, जिवानांदा दास, बिभूतिभूषण बंदोपाध्याय, सतीश चन्द्र मुखोपाध्याय, सुभाष चन्द्र बोस, बिष्णु दे एवं अन्य की पांडुलिपियां शामिल थीं। प्रत्येक आइटम की संख्या, तारीख एवं डायमेंशंस को दर्ज किया गया है तथा अल्पकालिक आइटम की शुरुआती लाइनें दी गई हैं। इससे पहले दुर्लभ पुस्तक प्रभाग की सभी पुस्तकें प्राप्त की गई हैं।

### प्राप्त न की गई तथा असंसाधित पुस्तकों का बैकलॉग

पुस्तकालय ने दिनांक 29 जून, 2010 को राष्ट्रीय पुस्तकालय के भाषा प्रभागों के बैकलॉग प्रकाशनों की प्राप्ति तथा संसाधन हेतु 10,42,369 रुपए के व्यय की संस्वीकृति तथा प्रशासनिक अनुमोदन का पुनः वैधीकरण प्राप्त किया। कन्नड, मलयालम, मराठी एवं उडिया भाषाओं में 7000 से भी अधिक पुस्तकें प्राप्त की गई तथा 5000 पुस्तकों को पहले ही संसाधित किया जा चुका है।

### स्टॉक सत्यापन

पुस्तकालय को अगस्त, 2010 में स्टॉक सत्यापन हेतु 30,00,000 (केवल तीस लाख रुपए) के व्यय एवं प्रशासनिक अनुमोदन की प्राप्ति हुई। एक विशेषज्ञ समिति ने तकनीकी विशिष्टताओं को अंतिम रूप दिया है।

### प्रशिक्षण, मानव संसाधन विकास और आउटरीच

प्रशिक्षण और मानव संसाधन विकास प्रभाग नाम से एक नया प्रभाग मई, 2010 के प्रथम सप्ताह में पुस्तकालय में जोड़ा गया। यह प्रभाग, प्रधान पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी (I) की अध्यक्षता में एक समिति द्वारा चलाया जाता है! इस समिति की पहली बैठक 21 मई, 2010 को आयोजित की गई थी और इस बैठक में नीति का मसौदा तैयार किया गया था। नीति में यह निर्धारित किया गया है कि यह प्रभाग प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करेगा, उसे प्रायोजित करेगा और उसकी मॉनिटरिंग करेगा तथा प्रशिक्षण के अवसरों के बारे में स्टाफ के सदस्यों में सूचना परिचालित करेगा और पुस्तकालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों अथवा स्टाफ के सदस्यों के नामांकन के बारे में सभी डाटा एकत्र करेगा तथा स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए अन्य संस्थाओं और/अथवा पुस्तकालय के अन्य प्रभागों के साथ सहयोग स्थापित करेगा एवं स्टाफ के विकास की आवश्यकताओं का अभिनिर्धारण करेगा। वर्ष 2011-12 से शुरू करके यह प्रभाग, प्रशिक्षार्थी और स्रोत व्यक्तियों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर स्टाफ के विकास की कार्य योजना तैयार करेगा।

अब तक प्रभाग ने

- (क) विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों यथा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में (पुराना कैंपस) में दिनांक 23 से 25 जून, 2010 तक सचिवालय प्रबंधन संस्थान द्वारा आयोजित

“टीम निर्माण और प्रबंधन” पर प्रशिक्षण सत्र तथा प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान, पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता द्वारा दिनांक 1 जुलाई, 2010 को आयोजित “डिजिटल इनवायरनमेंट आफ लाइब्रेरीज इन डिजिटल इनवायरनमेंट” पर कार्यक्रम, में व्यावसायिक और प्रशासनिक प्रभागों के सदस्यों को भेजा है।

- (ख) दिनांक 14 मई, 2010 को सूचना का अधिकार अधिनियम कार्यालय सत्र का आयोजन किया है।
- (ग) दिनांक 6 अगस्त, 2010 को ई-जर्नल के प्रयोग में पाठकों और स्टाफ के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया है जहाँ पर केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस और बलानी इन्फोटेक के प्रतिनिधियों ने कक्षाएँ लीं।
- (घ) गेटे – संस्थान, मैक्समूलर भवन, कोलकाता के सहयोग से डॉ. कलाउस यू वर्नर, मुख्य पुस्तकाध्यक्ष, फ्री यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बर्लिन द्वारा 3 सितंबर, 2010 को “पुस्तकालयों का भविष्य” विषय पर एक भाषण का आयोजन किया है।

इस प्रभाग ने दिनांक 13-15 जनवरी, 2010 तक केंद्रीय पुस्तकालय, आईआईटी खडगपुर द्वारा आयोजित “यूज एंड मैनेजमेंट आफ ई-रिसोर्स” पर कार्यशाला में और दिनांक 17-20 मई, 2010 तक सीआईएसएसआर, “जादवपुर” विश्वविद्यालय, कोलकाता द्वारा आयोजित “ओपन रिसोर्स साफ्टवेयर अप्लीकेशन इन लाइब्रेरी मैनेजमेंट” तथा “फॉस इन लाइब्रेरी मैनेजमेंट यूजिंग कोहा एमएआरसी 21” पर राज्य स्तरीय सम्मेलन सह-कार्यशाला में भाग लेने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों को भी भेजा है।

### पूर्वोत्तर कार्यक्रम

बी.एस.सी.आई. त्रिपुरा से दो कार्यरत पुस्तकालयों के लिए 11-15 जनवरी, 2010 तक राष्ट्रीय पुस्तकालय के प्रयोगशाला प्रभाग द्वारा “पुस्तकालय सामग्री का संरक्षण” विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर में पुस्तकालयों के अवसंरचना विकास कार्यक्रम के अंतर्गत, राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता द्वारा श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से गुवाहाटी में दिनांक 13-15 मार्च, 2010 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता में दिनांक 17 से 30 मार्च, 2010 को पूर्वोत्तर के पुस्तकालय व्यवसायियों के लिए एक दस-दिवसीय पुस्तकालय प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुस्तकालय के अधिकारियों को पुस्तकालय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इस पुस्तकालय ने दिनांक 25–27 अगस्त, 2010 को निदेशालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार के सहयोग से 'अरुणाचल प्रदेश में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं का महत्व' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में अरुणाचल प्रदेश के पुस्तकालय व्यवसायियों को सार्वजनिक पुस्तकालयों के महत्व, प्रभावी एवं अच्छी सेवाएं प्रदान करने में सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में कम्प्यूटर के प्रयोग के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

दिनांक 9–11 सितम्बर, 2010 को मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय, इम्फाल, मणिपुर के सहयोग से 'राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण में लेखकों, पुरालेखपालों एवं पुस्तकालय अध्यक्षों की भूमिका' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में चार बिजनेस सत्रों एवं 30 तकनीकी पेपरों को शामिल किया गया।

दिनांक 21–25 सितम्बर, 2010 को निदेशालय कला एवं संस्कृति, नागालैंड सरकार के सहयोग से कोहिमा, नागालैंड में 'सार्वजनिक पुस्तकालयों, पढ़ने की आदत, पुस्तकालय सामग्रियों तथा सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नागालैंड के विभिन्न भागों से भाग लेने वाले लोगों को पुस्तकालयों में कम्प्यूटर अनुप्रयोग के विभिन्न पहलुओं, पुस्तकालय सामग्रियों के संरक्षण तथा पढ़ने की आदत के निर्माण में पुस्तकालय अध्यक्षों की भूमिका के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

दिनांक 8–12 नवम्बर, 2010 को श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से 'पुस्तकालय सामग्रियों के संरक्षण' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुस्तकालय के अधिकारियों द्वारा परिरक्षण तकनीकों के विभिन्न पहलुओं के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

दिनांक 27–29 दिसम्बर, 2010 को पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययन केंद्र, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से 'पूर्वोत्तर में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाएं' विषय पर एक कार्यशाला सह सेमिनार का आयोजन किया गया।

## हिंदी प्रकोष्ठ

हिंदी प्रकोष्ठ ने 7–8 जुलाई तथा 29–30 दिसम्बर, 2010 को दो कार्यशालाओं का आयोजन किया जिनमें प्रोफेसर अरुण होता,

कलकत्ता विश्वविद्यालय, श्री सतीश के. पाण्डेय, प्रशिक्षण अधिकारी, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता तथा संसाधन व्यक्तियों के तौर पर प्रतिष्ठित अध्यापकों ने भाग लिया और 1 से 15 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें श्री प्रियंकर पालीवाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, केंद्रीय ग्लास एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान ने मुख्य अतिथि के तौर पर भाग लिया।

## प्रकाशन

इम्फाल, मणिपुर में सेमिनार के आयोजन के बाद दो प्रकाशन प्रकाशित किए गए:

- (क) श्री खेमदोन सिंह और आर. रामचन्द्रन (संपा.), पुस्तकालयों में कंप्यूटरों का अनुप्रयोग (इम्फाल और कोलकाता: मणिपुर विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय पुस्तकालय, 2010)
- (ख) श्री खेमदोन सिंह और आर. रामचन्द्रन (संपा.), राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण में पुस्तकाध्यक्षों पुरालेखपालों की भूमिका (इम्फाल और कोलकाता: मणिपुर विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय पुस्तकालय)

उपरोक्त पूर्वोत्तर कार्यक्रमों के अंतर्गत किए गए प्रकाशनों के अतिरिक्त प्रसिद्ध बंगाली लेखक श्री श्रीशेन्दु मुखोपाध्याय द्वारा जनवरी-जून 2010 अवधि के लिए पुस्तकालय न्यूजलेटर का प्रकाशन अगस्त में करवाया गया था तथा इसे जारी किया गया। इस न्यूजलेटर को दिनांक 8 अगस्त, 2010 को वेबसाइट पर डाल दिया गया है।

सलाहकार बोर्ड की बैठक के सुझाव पर दिनांक 2 जुलाई, 2010 को एक विशेष प्रकाशन समिति गठित की गई। इसने यह निर्णय लिया कि रबीन्द्रनाथ टैगोर के 150वें जन्म दिवस के अवसर पर टैगोर के साहित्य संग्रह की एक ग्रंथ-सूची प्रकाशित की जाएगी।

आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय की प्रदर्शनी का कैटालॉग प्रकाशित किया जाने वाला है। इस कैटालॉग में राय एवं उन पर पुस्तकालय संग्रह की सूची है तथा इसे वैज्ञानिक एवं उपन्यासकार डॉ० बिमन नाथ द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

## प्रदर्शनियां

रिपोर्ट अवधि के दौरान दो मुख्य प्रदर्शनियों का आयोजन किया



गया। प्रथम प्रदर्शनी का आयोजन आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रे के 150वें जन्मोत्सव पर आयोजित की गई थी। इसका आयोजन एक्सप्रेसन बंगाल के सहयोग से किया गया था तथा इसका उद्घाटन जाने-माने लेखक एवं अर्थशास्त्री श्री शौरीन भट्टाचार्य द्वारा किया गया था। पुस्तकालय में डॉ० पी.सी. राय द्वारा एवं उन पर प्रदर्शनियों एवं पुस्तक संग्रह का कैटालॉग तैयार किया जा रहा है।

दिनांक 9 से 16 अगस्त, 2010 को 'टेगौर के साहित्य में मृत्यु' विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का शुभारंभ जाने-माने उपन्यासकार श्री श्रीशेन्दु मुखोपाध्याय द्वारा किया गया था।

जनवरी माह के लिए दो प्रदर्शनियों की योजना बनाई गई है:

- (क) दिनांक 14 जनवरी, 2011 को "द बुक एन कमोडिटी एंड अफेक्ट" शीर्षक से एक प्रदर्शनी "कमोडिटी एंड कल्चर इन द कोलोनीयल वर्ल्ड" पर कार्यशाला के समानांतर आयोजित की गई। यह कार्यशाला, राष्ट्रीय पुस्तकालय और विक्टोरिया मेमोरियल की भागीदारी से जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की गई थी और किंग्स कॉलेज, लंदन, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, विटवाटरस्रेण्ड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सिडनी के साथ लिवरहुल्मे ट्रस्ट वित्तपोषित परियोजना का एक अंग थी।
- (ख) अन्य भारतीय भाषाओं में रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमाओं और पुस्तकों की प्रदर्शनी दिनांक 20-21 जनवरी, 2011 को "इंपैक्ट आफ रवीन्द्रनाथ टैगोर आन अदर इंडियन लिटरेचर" पर आयोजित सेमिनार के साथ-साथ लगाई गई।

## कार्यक्रम और दौरा

राष्ट्रीय पुस्तकालय ने केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय के साथ दिनांक 12 अगस्त, 2010 को **पुस्तकालय दिवस** मनाया। डॉ. विजयपाद मुखोपाध्याय, पूर्व पुस्तकाध्यक्ष, केंद्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता का इस अवसर पर अभिनंदन किया गया। उन्होंने "डॉ. रंगनाथन: एज ए मैन" पर व्याख्यान दिया और डॉ. पी.के. पाणिग्रही, प्रोफेसर, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता ने "द रेलिक्वेंस आफ डॉ. एस.आर. रंगनाथन इन द प्रेजेन्ट लाइब्रेरी कंटेक्सट" पर

व्याख्यान दिया। राष्ट्रीय पुस्तकालय और केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता के स्टाफ के सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

पुस्तकालय के स्टाफ सदस्यों ने साल भर कार्यक्रम आयोजित कर टेगौर के 150 वें जन्मोत्सव को मनाया। रवीन्द्रनाथ टैगोर का पूर्व 150वां जन्म दिवस 9 मई, 2010 को मनाया गया। भाषा भवन के मुख्य प्रवेश द्वार पर कवि की मूर्ति और लाबी में रखी गई प्रतिमा का माल्यार्पण किया गया। कोलकाता के और पुस्तकालय के प्रसिद्ध इतिहासकार पी.टी. नायर, अर्धेन्दु मुखोपाध्याय, वरिष्ठ रीडर और महानिदेशक ने इस अवसर पर व्याख्यान दिए। प्रदर्शनी के अलावा, एक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें कविता पाठ और संगीत शामिल था।

केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने दिनांक 23 अप्रैल, 2010 को विश्व पुस्तक दिवस मनाया। अन्य वक्ताओं में ख्याति प्राप्त बंगाली उपन्यासकार अबुल बशर और राम कुमार मुखोपाध्याय थे।

अंद्रीस माल्क, निदेशक, परिरक्षण, संरक्षण और डिजिटलीकरण, स्टास्वीब्लोतेक, झू बर्लिन, डॉ. राइमर, वोल्कर, निदेशक, गेटे संस्थान, मैक्समूलर भवन, कोलकाता, मरिलेन डौम, निदेशक पुस्तकालय एवं सूचना सेवा, दक्षिण एशिया, गेटे संस्थान, मैक्समूलर भवन, दिल्ली और रेणु सेठ, मुख्य पुस्तकाध्यक्ष, गेटे संस्थान, मैक्समूलर भवन, दिल्ली के एक प्रतिनिधि मंडल ने दिनांक 30 अप्रैल, 2010 को राष्ट्रीय पुस्तकालय का दौरा किया। इस दल ने प्रयोगशाला, जिल्दसाजी अनुभाग, रिप्रोग्राफी प्रभाग, संरक्षण और माइक्रोफिल्मिंग प्रभाग, दुर्लभ पुस्तक प्रभाग और अन्य संबद्ध प्रभागों का दौरा किया और उसे इन क्षेत्रों में वर्तमान परियोजनाओं से अवगत कराया गया। हेर माल्क ने पुस्तकालय के अधिकारियों को कुछ ऐसी मशीनें खरीदने की सलाह दी जिनसे हाथ से की जाने वाली प्रक्रियाओं को खत्म किया जा सकता है। महानिदेशक ने यह पाया कि पुस्तकों और कार्मिकों के आदान प्रदान, जर्मनी के एकीकरण के बाद मंद होता प्रतीत हो रहा है और इसे सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

## नियुक्तियाँ

- नए महानिदेशक प्रोफेसर स्वपन चक्रवर्ती ने दिनांक 17 अप्रैल, 2010 को पूर्व-निदेशक श्री के.के. बनर्जी से कार्यभार ग्रहण किया।

- प्रोफेसर गौतम भद्र ने दिनांक 1 दिसंबर, 2010 को संस्कृति मंत्रालय की हाल की स्कीम के अंतर्गत टैगोर राष्ट्रीय अध्येत्ता के रूप में पुस्तकालय में कार्यभार ग्रहण किया।

## सम्पदा

### बेलवेडर भवन

राष्ट्रीय पुस्तकालय की विरासत भवन समिति की बैठक दिनांक 7 अगस्त, 2010 को आयोजित की गई। इस समिति के कार्यकाल को 14 मार्च, 2011 तक बढ़ा दिया गया है। उप-समितियों की

कई बैठकें हुईं तथा प्रारूप परियोजना रिपोर्ट पूर्ण समिति में जनवरी या फरवरी में प्रस्तुत किए जाने की आशा है। एएसआई, बेलवेडर भवन की मरम्मत का कार्य कर रहा है।

### मैदान

पेड़ों, झाड़ियों एवं अन्य पौधों की गिनती का कार्य शुरू कर दिया गया है। 700 बड़े पेड़ों की गिनती का कार्य पूरा कर लिया गया है तथा अप्रैल-जून 2010 की तिमाही रिपोर्ट में दर्शाया गया है। अब तक 336 पेड़ों पर वानस्पतिक नाम, सामान्य नाम एवं फूल आने के समय की जानकारी वाली पट्टियां लगाई जा चुकी हैं।

## राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान

राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान (आरआरआरएलएफ) संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन है। इसकी स्थापना मई, 1972 में महान राजा, जिन्होंने नवजागरण और आधुनिकता की घोषणा की तथा देश में शिक्षा के प्रसार के लिए अत्यधिक कार्य किया, की द्विशतवार्षिक वर्षगांठ के शुभ अवसर पर की गई थी। इस प्रतिष्ठान का मुख्य उद्देश्य, पुस्तकालय सेवा के क्षेत्र में कार्यरत राज्य पुस्तकालय प्राधिकारियों, संघ क्षेत्रों और स्वैच्छिक संगठनों के सक्रिय सहयोग से उपयुक्त पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करके तथा विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने की आदत को लोकप्रिय बनाकर देश में सार्वजनिक पुस्तकालय आंदोलन का संवर्धन और सहायता करना है।

प्रतिष्ठान अपने सीमित संसाधनों के साथ, दो प्रकार की स्कीमों – मैचिंग और गैर-मैचिंग के कार्यान्वयन के साथ पुस्तकालय अभियान को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है।

### मैचिंग स्कीम

इस स्कीम के तहत प्रतिष्ठान सीडी सहित पुस्तकों के पर्याप्त भंडार को तैयार करने; भंडारण सामग्री की खरीद करने; वाचनालय फर्नीचर खरीदने में सहायता प्रदान करता है; तथा सेमिनारों, कार्यशालाओं, पुस्तक प्रदर्शनियों और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करने में भी सहायता प्रदान करता है। यह प्रतिष्ठान सार्वजनिक पुस्तकालयों को आवास की सुविधा बढ़ाने, चलित पुस्तकालय सेवाओं का विकास करने तथा पुस्तकालयों को शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए टीवी-सह-वीसीआर सेट और कैसेट; पुस्तकालय अनुप्रयोग के लिए कम्प्यूटर प्राप्त करने में भी सहायता प्रदान करता है।

### गैर-मैचिंग स्कीम

इस स्कीम के अंतर्गत यह प्रतिष्ठान केन्द्रीय चयन के माध्यम से पुस्तकें प्रदान करने के लिए राज्य, केन्द्र और जिला पुस्तकालयों को सहायताप्रदान करता है। यह प्रतिष्ठान सार्वजनिक पुस्तकालय के क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों; केन्द्रीय प्रायोजित पुस्तकालयों; बाल-पुस्तकालयों और सामान्य सार्वजनिक पुस्तकालयों के बाल अनुभाग / वरिष्ठ नागरिक अनुभाग / महिला अनुभाग / नव-साक्षर अनुभाग तथा कैरियर मार्गदर्शन अनुभागों की सहायता भी करता है। यह प्रतिष्ठान जयंती-वर्षों के आयोजन में सार्वजनिक पुस्तकालयों की सहायता करता है; सार्वजनिक पुस्तकालय विकास / पुस्तकालय आन्दोलन

4.2.2



एवं पुस्तकालय विज्ञान के विश्वविद्यालय विभागों में कार्यरत व्यावसायिक संगठनों, स्थानीय निकायों एवं गैर-सरकारी संगठनों द्वारा सम्मेलनों एवं सेमिनारों के आयोजन में सहायता प्रदान करता है; सरकारी तथा गैर-सरकारी एजेंसियों के माध्यम से पुस्तकालय सांख्यिकीय के संग्रह और संकलन के लिए सहायता प्रदान करता है तथा बाल कार्नर और विकलांग कार्नर की स्थापना में सहायता प्रदान करता है।

मैचिंग स्कीमें, राज्य सरकारों और संघ क्षेत्रों तथा प्रतिष्ठान के मैचिंग शेयर द्वारा दिए गए अंशदान से कार्यान्वित की जा रही हैं। मैचिंग शेयर विकसित राज्यों के लिए पहले जैसा अर्थात् 50:50 ही है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों को छोड़कर विकासशील और पिछड़े राज्यों के लिये मैचिंग शेयर 40:60 है, जिसमें 40 प्रतिशत राज्य का अंशदान है तथा शेष 60 प्रतिशत प्रतिष्ठान द्वारा मैचिंग शेयर है। पूर्वोत्तर राज्यों के लिए यह अनुपात 10:90 है जिसमें 10 प्रतिशत राज्य का अंशदान है एवं 90 प्रतिशत मैचिंग शेयर है। आकार, जनसंख्या, साक्षरता दर, विद्यमान बुनियादी सुविधाएं और पिछले उपयोग के आधार पर अंशदान 1 लाख रु. से 150 लाख रु. के बीच हो सकता है, जबकि गैर-मैचिंग स्कीमें पूर्णतया प्रतिष्ठान के अपने संसाधनों द्वारा संचालित होती हैं।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, संस्कृति मंत्रालय ने टैगोर स्मरणोत्सव अनुदान स्कीम के लिए पूर्वी क्षेत्र हेतु इस प्रतिष्ठान को एक नोडल एजेंसी के रूप में चुना।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान प्रतिष्ठान द्वारा चालू वित्तीय वर्ष 20010-11 की समाप्ति तक, मैचिंग और गैर-मैचिंग, दोनों स्कीमों के अन्तर्गत पूरे देश में फैले 13,000 पुस्तकालयों के लिए 4500 लाख रु. (लगभग) की सहायता प्रदान किए जाने की संभावना है।

वित्तपोषण निकाय होने के अलावा, प्रतिष्ठान, पूरे देश में स्थित सार्वजनिक पुस्तकालयों के समन्वय, मानीटरिंग और विकास के लिए भारत सरकार की एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है। यह प्रतिष्ठान, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान व सम्बद्ध विषयों पर पुस्तकों और जर्नलों के लिए विशेष पुस्तकालय भी चलाता है तथा इसके स्टॉक को बढ़ाने के लिए 1.50 लाख रु. की पुस्तकें और 3.0 लाख रु. के जर्नल खरीदता है।

इस प्रतिष्ठान द्वारा सहायता तथा प्रोत्साहन प्राप्त सार्वजनिक पुस्तकालय जाति, धर्म, लिंग, भाषा, आर्थिक स्थिति तथा शिक्षा की स्थिति पर ध्यान दिए बिना लोगों की सेवा करते हैं। इस प्रकार से इसकी सभी स्कीमों से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित

जनजाति से संबंधित सदस्यों को लाभ प्राप्त होता है। यह प्रतिष्ठान ग्रामीण दूर-दराज एवं जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों पर विशेष ध्यान देता है। इस प्रतिष्ठान की नीतियों एवं कार्यक्रमों का उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्गों से संबंधित लोगों सहित समुदाय के कमजोर वर्गों पर विशेष ध्यान देते हुए सामान्य लोगों को सेवाएं प्रदान करता है।

पुस्तकालयों के महिला संरक्षकों की संख्या विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग है। यह उस स्थान के साक्षरता प्रतिशत तथा सामाजिक रीति-रिवाजों पर निर्भर करती है। प्रतिष्ठान के प्रभावों पर अभी हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण से यह पता चला है कि कुल सदस्यों में से महिला संरक्षकों की संख्या लगभग 30 प्रतिशत है। तथापि, महिलाओं की संख्या को बढ़ाने के दृष्टिगत, प्रतिष्ठान ने उन पुस्तकालयों को सहायता प्रदान करने की एक नई स्कीम शुरू की है जो महिला अनुभाग खोलना चाहते हैं।

## घटनाक्रम

हिन्दी के राजभाषा के रूप में प्रयोग को बढ़ावा देने और इसके प्रति चेतना और जागरूकता पैदा करने के लिये प्रतिष्ठान ने दिनांक 16 सितम्बर, 2010 को हिन्दी दिवस मनाया। श्री रीता भट्टाचार्य, पूर्व-मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, कोलकाता और सचिव, केलटोलिक (बैंक) तथा श्री राम नारायण सरोज, उप-निदेशक (राजभाषा), हिन्दी शिक्षण स्कीम (ईजे), कोलकाता इस अवसर पर क्रमशः मुख्य अतिथि और विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने क्रमशः “राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियमावली” एवं “राजभाषा हिन्दी के साथ काम करने में आ रही समस्याएं तथा उनका समाधान” विषयों पर व्याख्यान दिए। श्री के.के. बनर्जी, निदेशक राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान ने इस समारोह की अध्यक्षता की थी। इस कार्यक्रम को अत्यधिक आकर्षक बनाने और दिन-प्रतिदिन के कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये कर्मचारियों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु हिन्दी पैराग्राफ पठन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता और वाद-विवाद प्रतियोगिता जैसे विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं।

आरआरआरएलएफ ने पुस्तकालय में राजभाषा को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए दिनांक 16 सितम्बर, 2010 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रतिष्ठान के तीन अधिकारियों को ‘प्रोत्साहन स्कीम’ के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान किया गया है।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निदेश पर, प्रतिष्ठान ने विश्व भारती, शांतिनिकेतन के विभिन्न भवनों की दुर्लभ पुस्तकों तथा पांडुलिपियों को डिजिटाइज करने की एक परियोजना शुरू की है। इस संबंध में सीडैक-पुणे के साथ एक संगम ज्ञापन पर पहले ही हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। प्रतिष्ठान द्वारा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निदेश पर 'मुद्रण परियोजना में कैटलाग' शीर्षक के तहत शुरू की गई परियोजना प्रगति पर है।

दिनांक 21 मई, 2010 को भारत अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में 13वें संयोजक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके बाद दिनांक 22 मई, 2010 को '21वीं सदी में पुस्तकों का भविष्य' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का भी आयोजन किया गया। दिनांक 11-13 जनवरी, 2011 के दौरान साइंस सिटी, कोलकाता में डिजिटल लाइब्रेरी प्रबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीडीएलएम 2011) का भी आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का शुभारंभ प्रोफेसर तपन राय चौधरी, पूर्व प्रोफेसर एवं निदेशक, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा मिनी ऑडिटोरियम, साइंस सिटी, कोलकाता में किया गया। सार्वजनिक पुस्तकालय, शैक्षिक पुस्तकालयों एवं विशेष पुस्तकालयों

के राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों ने काफी संख्या में इसमें भाग लिया। इसके विदाई सत्र की अध्यक्षता श्री जवाहर सरकार, सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा की गई।

प्रतिष्ठान के अन्य प्रोत्साहन कार्यक्रमों के भाग के रूप में प्रतिष्ठान ने भारतीय पुस्तकालय संघ, असम पुस्तकालय संघ, प्रोफेसर कौल पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान इनडावमेंट, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल सार्वजनिक पुस्तकालय संघ, कोलकाता, इयासलिक, डेलनेट, कालनेट, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, मिजोरम विश्वविद्यालय एवं तमिलनाडु पुस्तकालय संघ जैसे विभिन्न व्यावसायिक संगठनों को सेमिनार आयोजित करने में वित्तीय सहायता भी प्रदान की।

भारत सरकार द्वारा पदमश्री डा० एस.आर. रंगनाथन, पुस्तकालय विज्ञान के जन्मदाता, की जन्मशती पर दिनांक 12 अगस्त को पुस्तकालय दिवस के रूप में घोषित किया गया है तथा आंध्र प्रदेश, गुजरात, पश्चिम बंगाल एवं तमिलनाडु राज्य सरकारों ने प्रतिष्ठान से वित्तीय सहायता प्राप्त करके इस दिवस का आयोजन किया।



हिन्दी कार्यशाला



## दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

4.2.3

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना 1951 में यूनेस्को के वित्तीय और तकनीकी सहयोग से तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रारम्भिक परियोजना के रूप में की गई थी। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का उद्घाटन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा 27 अक्टूबर, 1951 को किया गया था। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य कर रही है। पुरानी दिल्ली में छोटे से पुस्तकालय के रूप में स्थापित दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी देश में एक प्रमुख पब्लिक लाइब्रेरी सिस्टम के रूप में विकसित हो गई है तथा संपूर्ण महानगर को सेवा प्रदान कर रही है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बिना किसी लिंग, धर्म, जाति व वर्ग भेदभाव के वयस्क एवं बाल पाठकों को समान रूप से निःशुल्क सेवा प्रदान करने के अतिरिक्त पाठकों की मनोरंजनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तथा उनकी छुपी हुई प्रतिभा को उभारने के लिए समाज शिक्षा के रूप में एक मंच प्रदान करती है।

इस लाइब्रेरी के अंतर्गत राजधानी दिल्ली में केंद्रीय पुस्तकालय, एक क्षेत्रीय पुस्तकालय, 3 शाखाएं, 25 उपशाखाएं, 3 समुदाय पुस्तकालय, 11 पुनर्वास कालोनी पुस्तकालय, एक ब्रेल पुस्तकालय, 60 चल पुस्तकालय सेवा केंद्र तथा 23 निक्षेप केंद्र हैं।

यह लाइब्रेरी ज्ञान के प्रसार तथा सांस्कृतिक केंद्र के रूप में अपनी सेवाओं का विस्तार कर रही है। यह अनुभव किया जा रहा है कि पुस्तकालय केवल पुस्तक परिचालन केंद्र के रूप में ही स्थापित न होकर जीवंत संस्था के रूप में विकसित हो जो पाठकों में बौद्धिक चेष्टा एवं सामाजिक सौहार्द उत्पन्न करे। पुस्तकों के अलावा यह लाइब्रेरी पाठकों को ऑडियो-विडियो कैसेट तथा डी.वी.डी. भी निःशुल्क परिचालित कर रही है।

पुस्तकालय के सभी सेवा केंद्रों में वाचनालयों की सुविधा उपलब्ध है। परिचालन के अतिरिक्त पाठकों को संदर्भ व फोटो प्रति की सेवाएं भी प्रदान की जा रही हैं।

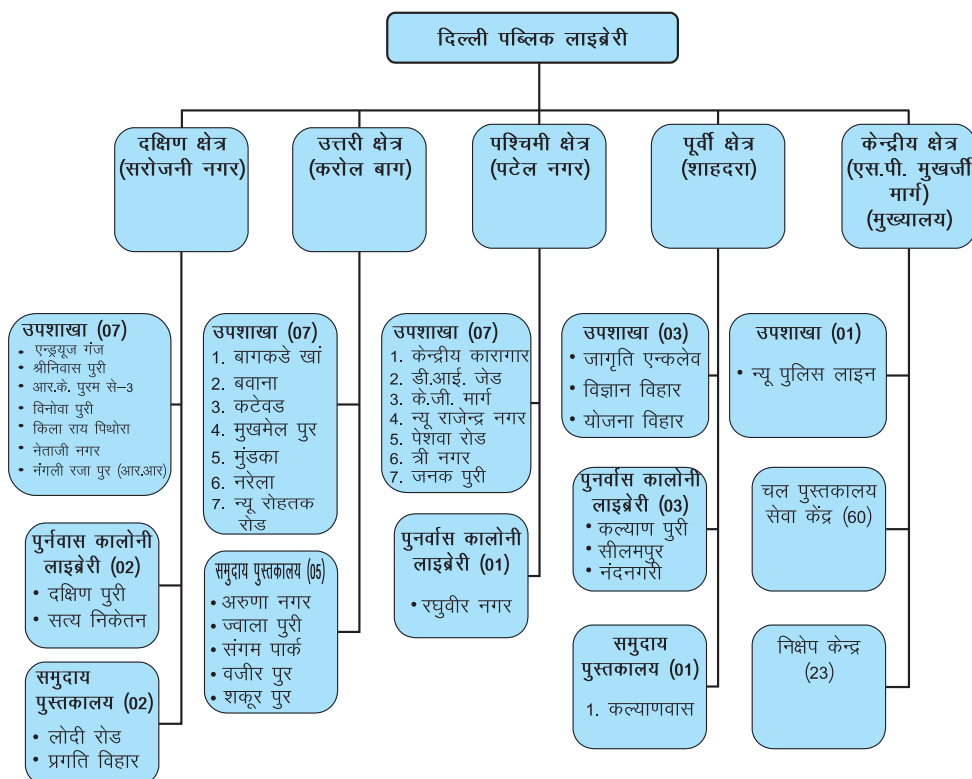
### मुख्य विशेषताएं

|                                                 |           |
|-------------------------------------------------|-----------|
| ❖ कुल पुस्तक संग्रह                             | 15,97,151 |
| ❖ दिसंबर, 2010 तक कुल सदस्यता                   | 71,431    |
| ❖ सभी शाखाओं द्वारा परिचालित पुस्तकों की संख्या | 11,77,407 |
| ❖ प्रतिदिन परिचालित पुस्तकों की औसत संख्या      | 3,403     |



|                                                                                               |          |                                                     |          |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------|----------|-----------------------------------------------------|----------|
| ❖ वर्ष के दौरान पुस्तक प्रदान अधिनियम के अंतर्गत सभी भारतीय भाषाओं में प्राप्त की गई पुस्तकें | 2,30,172 | ❖ पुस्तकालय में उपलब्ध ग्रामोफोन रिकार्ड/ओडियो      | 9,431    |
| ❖ वाचनालयों में पढ़ने वाले पाठकों की संख्या                                                   | 2,99,280 | ❖ परिचालित सी.डी./डी.वी.डी. की संख्या               | 10,054   |
| ❖ संदर्भ अनुभाग में पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या                                                | 23,736   | ❖ इंटरनेट सेवा का प्रयोग करने वाले पाठकों की संख्या | 1,37,751 |
|                                                                                               |          | ❖ दि.प.ला. की वेबसाइट पर विजिट करने वालों की संख्या | 35,041   |

### संगठनात्मक चार्ट



दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने पुस्तकालय के कार्यकलाप के तीव्र आटोमेशन हेतु कोहा ओपन सोर्स इंटीग्रेटिड लाइब्रेरी मैनेजमेंट साफ्टवेयर (आई.एल.एम.एस.) को अपनाया। क्रियान्वयन के प्रथम चरण में केंद्रीय पुस्तकालय में एक सर्वर लगाया गया। इसी के साथ पुस्तकालय के पुस्तक प्रदान अधिनियम प्रभाग तथा पुस्तक क्रय प्रक्रिया विभाग के समस्त कार्यों का कंप्यूटरीकरण हो गया है। कोहा ओपन सोर्स साफ्टवेयर उपयोग करने से पुस्तक प्रदान अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त अंग्रेजी व

अन्य भारतीय भाषाओं की नवीनतम पुस्तकें/प्रकाशन तथा वर्तमान में प्राप्त पुस्तकें पाठकों के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध हो गए हैं। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के 71,431 पाठकों सहित समूचे विश्व के प्रयोक्ता लाइब्रेरी की वेबसाइट <http://www.dpl.gov.in> या [www.delhipubliclibrary.in](http://www.delhipubliclibrary.in) पर उपलब्ध नवीनतम पुस्तकों का कैटलॉग(ओपेक) का उपयोग कर सकते हैं। लाइब्रेरी की वेबसाइट से मार्क – 21 फॉर्मेट में ग्रंथसूची संबंधी डाटा निःशुल्क डाउनलोड भी किया जा सकता है।

## मुख्य विशेषताएं

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी और उसकी शाखाएं सातों दिन (राजपत्रित अवकाश को छोड़कर) पाठकों के लिए पुस्तकालय पाठकों की सेवा में खुली रहती है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी अपने केंद्रीय पुस्तकालय (एस.पी.मुखर्जी मार्ग), सरोजनी नगर, तथा पटेल नगर शाखा पुस्तकालय में पाठकों को हाई स्पीड इंटरनेट सेवा निःशुल्क प्रदान कर रही है। इसके लिए सरोजनी नगर तथा केंद्रीय पुस्तकालय में प्रत्येक में 20 तथा पटेल नगर पुस्तकालय में 15 कंप्यूटरों पर इंटरनेट की व्यवस्था की गई है। अब इंटरनेट सेवा का विस्तार 6 पुस्तकालयों—करोलबाग, विनोबापुरी, जनकपुरी, नरेला, आर. के. पुरम, सेक्टर-8 तथा शाहदरा स्थित में भी किया जा रहा है।

लाइब्रेरी में अपने केंद्रीय पुस्तकालय, सरोजनी नगर, तथा पटेल नगर शाखा पुस्तकालय में पाठकों को सी.डी./डी.वी.डी. की सेवा निःशुल्क प्रदान कर रही है। अब इस सेवा का विस्तार 4 पुस्तकालयों—जनकपुरी, विनोबापुरी, करोलबाग, तथा नरेला में भी किया जा रहा है। सी.डी./डी.वी.डी. के संग्रह में अंग्रेजी/हिंदी फिल्मों की सी.डी., मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद सी.डी. तथा बच्चों की सी.डी./डी.वी.डी. शामिल हैं।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने सरोजनी नगर, पटेल नगर तथा केंद्रीय पुस्तकालय स्थित अपनी तीनों शाखाओं में नया सुसज्जित बाल अनुभाग तैयार किया है जिसमें बाल पाठकों के लिए नई पुस्तकें, नई सी.डी./डी.वी.डी. संग्रह, नए-नए गेम्स के साथ-साथ नए फर्नीचर की भी व्यवस्था की गई।

## कार्यक्रम

यूनेस्को के संयुक्त सहयोग से आयोजित कहानी सुनाना (स्टोरी टेलिंग) सत्र दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा यूनेस्को के सहयोग से सरोजनी नगर शाखा में स्कूल के बच्चों के लिए कहानी सुनाना (स्टोरी टेलिंग) सत्र का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में प्राथमिक

विद्यालय, दिल्ली नगर निगम, एंड्रयूजगंज तथा द्वितीय सत्र में केंद्रीय विद्यालय, आर.के.पुरम, सेक्टर-8 के बच्चों ने भाग लिया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान केंद्रीय पुस्तकालय में 01 से 19 अक्टूबर, 2010 तक "दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के बीते युग की गाथा" प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के दौरान उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन खान डागर द्वारा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के ग्रामोफोन रिकार्ड के संग्रह "बाजाघर" का उद्घाटन भी किया गया। प्रदर्शनी का विवरण नीचे दिया गया है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी फोटोग्राफ्स के माध्यम से — इस प्रदर्शनी में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा लाइब्रेरी के 27 अक्टूबर, 1951 को किए गए उद्घाटन के छायाचित्रों के साथ-साथ दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा साल-दर-साल पाठकों को उपलब्ध कराई गई सेवाओं को भी प्रदर्शित किया गया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा नरेला क्षेत्र के आसपास के स्कूलों के बच्चों में शैक्षिक तथा सांस्कृतिक प्रतिभा को उभारने के लिए नरेला उपशाखा में 05 दिसंबर, 2010 को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 500 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता जूनियर एवं सीनियर दो समूहों में आयोजित की गई। इस अवसर पर विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार तथा उनके स्कूलों को ट्रॉफी प्रदान की गई। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा बच्चों के उत्साह को और अधिक बढ़ाने हेतु चुनिंदा चित्रों को नव वर्ष के बधाई संदेशों में भी प्रस्तुत किया गया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार के अंतर्गत आने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/बोर्ड/स्वायत्त निकायों में प्रथम पुरस्कार जीता। श्री एम. हामिद अंसारी, माननीय उपराष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा 14 सितंबर, 2010 को हिंदी दिवस पर आयोजित समारोह में डा. अंजना चट्टोपाध्याय, महानिदेशक, दि.प.ला. को प्रथम पुरस्कार स्वरूप इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।



“दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी रिवरईड” प्रदर्शनी का उद्घाटन

## रामपुर रजा पुस्तकालय

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात रामपुर रजा पुस्तकालय की स्थापना 1774 में रामपुर रियासत के नवाब फैजुल्लाह खान द्वारा की गई थी। भारत सरकार ने 1975 में इस पुस्तकालय का अधिग्रहण कर लिया। यह संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है और रामपुर रजा पुस्तकालय बोर्ड द्वारा अभिशासित होता है जिसके अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल हैं। इसके समृद्ध संग्रह में 17,000 पांडुलिपियां जिनमें 150 सुसज्जित हैं, 205 ताड़पत्र की पांडुलिपियां, 4413 लघु चित्रकारी, 3000 इस्लामी सुलेखन के नमूने तथा 60,000 दुर्लभ मुद्रित पुस्तकें शामिल हैं। पुस्तकालय के संग्रह में अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी, उर्दू, तुर्की और पश्तो आदि जैसी अभिलेखीय भाषाओं और लिपियों का प्रतिनिधित्व है। इसमें इतिहास, दर्शन, खगोल विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, गणित, चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, धर्म, सूफी धर्म, साहित्य, कला और वास्तुकला जैसे अनेक विषय शामिल हैं। लघु चित्रकारी, तुर्की-मंगोल, मुगल, फारसी, राजपूत पहाड़ी, अवध, दक्कन और भारत-यूरोप शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनके नमूने अभी तक प्रकाशित नहीं किए गए हैं। रामपुर रजा पुस्तकालय ने विभिन्न भाषाओं में 131 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। अध्येताओं के लिए इसने अपना वेबसाइट भी शुरू किया है। [www.razalibrary.gov.in](http://www.razalibrary.gov.in) पर यह देखा जा सकता है।

पुस्तकालय विरासत महल अर्थात् हमीद मंजिल में स्थित है। यह 100 वर्ष से भी अधिक पुराना है तथा इसकी भारत-यूरोप शैली का प्रभावशाली वास्तु-शिल्पीय नमूना उत्तर भारत में अद्वितीय है, जिसे 17वीं व 18वीं शताब्दी के समृद्ध आकर्षक इटली के संगमरमरों से सजाया गया है। इसकी दीवारें, अंदर की छतें और कारनिस पर प्लास्टर ऑफ पेरिस की सहायता से स्वर्ण मढ़ित है।

पुस्तकालय ने 1995 में एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित की थी, जो पांडुलिपियों, इस्लामिक खुशनवीसी कला के नमूनों और क्षत-विक्षत मुद्रित पुस्तकों के वैज्ञानिक संरक्षण और परिरक्षण का कार्य करती आ रही है।

**अधिग्रहण और प्राप्ति, तकनीकी कार्य, जिल्दसाजी, रंगीन फोटो, प्रलेखन, कम्प्यूटरीकरण और डिजिटलीकरण**

पुस्तकालय के संग्रह को खरीदारी, आदान-प्रदान तथा भेंट स्वरूप प्राप्त हुई पुस्तकों से समृद्ध बनाया जाता है। पुस्तकालय ने 843 पुस्तकें, 1461 आवधिक पत्रिकाएं और 6678 समाचार पत्रों का अधिग्रहण करके प्राप्त किया।

4.2.4



इस अवधि के दौरान 475 से अधिक पुस्तकें वर्गीकृत की गईं और 475 सूचीपत्र कार्ड तैयार किए गए। पुस्तकों पर लेबल लगाने और इन पर जमी धूल हटाने का कार्य नियमित रूप से किया जाता है। शेल्फ में लगी लगभग 850 पुस्तकों की सफाई की गई तथा पुस्तकों पर पुराने लेबलों के स्थान पर नए लेबल लगाए गए। पुस्तकालय अपना सूचीपत्र कार्ड भी अद्यतन रखता है और इस अवधि के दौरान लगभग 475 कार्डों की जांच की गई। 1345 पुस्तकों की नई जिल्दसाजी और मरम्मत की गई। इसके अतिरिक्त रजिस्ट्रों, नोट बुकों, फोटो एलबमों की भी जिल्दसाजी की गई। संस्कृति और पुस्तकालय से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाओं से संबंधित समाचार पत्रों की 1375 कतरने भी एकत्र की गई। लगभग 1764 रंगीन फोटोग्राफ, 3 सीडी और 5 डीवीडी तैयार किए गए हैं। इस अवधि के दौरान, लगभग 425 उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी और हिंदी पुस्तकों का कम्प्यूटरीकरण किया गया। इस अवधि के दौरान राजा पुस्तकालय की पाण्डुलिपियों की 1,90,000 छवियों का डिजिटलीकरण किया गया।

### अध्येताओं को सेवाएं तथा पुस्तकालय अनुसंधान अध्येतावृत्तियां

पुस्तकालय अपने प्रयोक्ताओं की जरूरतों के प्रति पूरी तरह संवेदनशील है। इस अवधि के दौरान 58 शोध छात्रों ने 137 पाण्डुलिपियों का अनुशीलन किया, 1217 पाठकों को 4006 मुद्रित पुस्तकें जारी की गईं तथा 11714 सामान्य पाठक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए वाचनालय में आए तथा बड़ी संख्या में लोगों ने दरबार हाल के पुस्तकालय संग्रहालय का दौरा किया।

पुस्तकालय भुगतान के आधार पर विद्वानों को मुद्रित पुस्तकों की जेरोक्स प्रतियां और पाण्डुलिपियों के फोटोग्राफ भी उपलब्ध कराता है। इस अवधि के दौरान विद्वानों को मुद्रित पुस्तकों की 62353 जेरोक्स प्रतियां प्रदान की गईं। इसके साथ-साथ पुस्तकालय के 1845 प्रकाशन विद्वानों को या तो बेचे गए या उपहार स्वरूप दिए गए। इस बिक्री से 48,829 रुपये की राशि प्राप्त हुई। इस अवधि के दौरान चार वरिष्ठ और दो कनिष्ठ अध्येतावृत्तियां प्रदान की गईं।

### प्रकाशन

इस अवधि के दौरान पुस्तकालय ने निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की हैं :

1. राजभाषा पत्रिका, प्रो० अब्दुस सलाम द्वारा संपादित, पृष्ठ 114 (हिंदी) 2010

2. दीवान-ए-फारसी हातिम देहलवी : प्रो० मुख्तार उद्दीन अहमद द्वारा संकलित तथा प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा संकलित शाह जहरुद्दीन हातिम देहलवी के संग्रह, पृष्ठ 342 (फारसी) 2010
3. प्रो० मोहम्मद वली-उल-हक द्वारा संकलित तथा प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा प्रकाशित गुल अफसानी-ए-खयाल, पृष्ठ 800 (फारसी) 2010
4. प्रो० अख्तर-उल-वासे द्वारा रचित तथा प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा प्रकाशित सर सैय्यद अहमद खान, पृष्ठ 248 (अरबी)
5. मक्तूबत-ओ-अल-शेख अल-शाह वलीउल्लाह अल दिहलावी वा औलादेही वा मो' असेरिहे (प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा उर्दू अनुवाद सहित अरबी पत्रों का संग्रह, पृष्ठ 344 (अरबी) 2010
6. प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा संपादित रामपुर राजा पुस्तकालय पत्रिका। शोध पत्रों का संग्रह सेमिनार में पढ़ा गया।
7. प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा सम्पादित रामपुर राजा पुस्तकालय पत्रिका (हिंदी), पृष्ठ 176, 2010
8. प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा सम्पादित रामपुर राजा पुस्तकालय जर्नल सं. 22-23 (उर्दू), पृष्ठ 180/104, शोध संग्रह 2010 (उर्दू) को सेमिनार में पढ़ा गया।
9. प्रो० शाह अब्दुस सलाम द्वारा अनूदित एवं सम्पादित तारीख फराह बख्श खण्ड 2, पृष्ठ 160 (उर्दू) 2010
10. दीवान शेरूल हदीरा (अरबी) – प्रो० मुख्तार उद्दीन अहमद द्वारा संपादित एवं टीकाकृत और शाह अब्दुस सलाम द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 80, 2010

### संरक्षण प्रयोगशाला

संरक्षण प्रयोगशाला में कागज पर बनाई गई अनेक कलाकृतियों अर्थात् पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, लघु चित्रकारी का संरक्षण किया गया है। किसी वस्तु का संरक्षण उपचार करने से पहले उसका फोटोग्राफी दस्तावेज तैयार किया जाता है ताकि प्राप्त की गई कलाकृति की स्थिति के साक्ष्य को रखा जा सके तथा इससे संरक्षक को उपचार करने तथा भावी संदर्भ के लिए भी सहायता मिलती है। इस प्रकार की वस्तु की सावधानीपूर्वक जांच की



जाती है तथा आवश्यकता के अनुसार उसे दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के लिए उसका उपचार किया जाता है। दुर्लभ और बहुमूल्य संग्रह के संबंध में पुस्तकालय विशेष कार्य अधिकारी प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम से सतत् मार्गदर्शन और आवश्यक निर्देश प्राप्त कर रहा है। दुर्लभ एवं अनमोल संरक्षण हेतु यह प्रयोगशाला प्रो० शाह अब्दुस सलाम, विशेष कार्य अधिकारी से मार्गदर्शन एवं अपेक्षित निर्देश प्राप्त कर रही है। उपर्युक्त उल्लिखित अवधि के दौरान किए गए महत्वपूर्ण संरक्षण कार्य इस प्रकार हैं :-

### पाण्डुलिपियां

फारसी पाण्डुलिपि # मजमुआ रक्कात  
आकार—23.1 सेमी. X 15.9 सेमी., अवधि—18वीं शताब्दी ए.डी.,  
कुल पृष्ठ—156

फारसी पाण्डुलिपि # रावेह अल अनफास, खण्ड—IV  
आकार — 23.0 सेमी. X 13.0 सेमी., अवधि— 18वीं शताब्दी ए.  
डी., कुल पृष्ठ—130

अरबी पाण्डुलिपि # अल शिफा फी तारीफ — । — हकुकिल मुस्तफा  
आकार — 20.5 सेमी. X 12.2 सेमी., अवधि— 1871 ए.डी., कुल  
पृष्ठ—812

### संस्कृत पाण्डुलिपि

आकार — 15.2 सेमी. X 23.2 सेमी., अवधि— 18वीं शताब्दी  
ए.डी., कुल पृष्ठ—820

### मुद्रित पुस्तकें

अरबी मुद्रित पुस्तकें — मनाकिब—ए—हैदरी  
आकार — 28.0 सेमी. X 19.0 सेमी., अवधि— 1819 ए.डी., कुल  
पृष्ठ—234

मुद्रित पुस्तक — रामपुर राजपत्र  
आकार — 34.5 सेमी. X 26.5 सेमी., अवधि— 1890 ए.डी., कुल  
पृष्ठ—752

मुद्रित पुस्तक # त्वारिख—ए—उज्जैनिया, खण्ड—।।  
आकार — 22.0 सेमी. X 28.0 सेमी., अवधि— 14 सितम्बर, 1891,  
कुल पृष्ठ—244

### धूम्रीकरण

इस अवधि के दौरान रज़ा पुस्तकालय संग्रह की 92 पाण्डुलिपियों तथा पुस्तकों को उचित रसायन से धूम्रीकृत किया गया।

### स्वतंत्रता दिवस

रामपुर रज़ा पुस्तकालय ने स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी प्रो० शाह अब्दुस सलाम ने हामिद मंजिल के मुख्य द्वार पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के वर्दीधारी जवानों ने हथियारों सहित राष्ट्र ध्वज को सलामी दी।

### गांधी जयंती

हामिद मंजिल के वाचनालय में दिनांक 2 अक्टूबर, 2010 को महात्मा गांधी जयंती मनाई गई। प्रो० शाह अब्दुस सलाम ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में भारतीय स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय एकीकरण के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के महान त्याग का विशेष उल्लेख किया।

### दुर्लभ पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी

पुस्तकालय ने रमजान के महीने में दिनांक 28 अगस्त से 14 सितम्बर, 2010 तक कुरान मजीद की दुर्लभ पाण्डुलिपियों और मुद्रित प्रतियों की विशेष प्रदर्शनी आयोजित की। हजारों आगंतुकों, विख्यात और विलक्षण विद्वानों, साहित्यकारों, आम जनता जिन्होंने इस प्रदर्शनी का दौरा किया, वे 7वीं से 19वीं शताब्दी में सुसज्जित कुरान से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। मौलाना महबूब अली मुफ्ती — शहर रामपुर ने 28 अगस्त, 2010 को इस विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

पुस्तकालय ने सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने का वातावरण सृजित करने के लिए दिनांक 16 सितम्बर से 4 अक्टूबर, 2010 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया। पुस्तकालय के विख्यात व्यक्तियों तथा कर्मचारियों ने इस आयोजन में भाग लिया। इस पखवाड़े का उद्घाटन 16 सितम्बर, 2010 को मुख्य अतिथि प्रो० ए.के. सिन्हा, विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति, एम.जे.पी. रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान पुस्तकालय ने भाषा प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में पुस्तकालय के कर्मचारीगण तथा सीआईएसएफ के जवानों ने भाग लिया। पखवाड़े के दिनांक 4 अक्टूबर, 2010 को आयोजित समापन समारोह में भाषण प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार दिया गया। श्री अरुण कुमार सक्सेना, वरिष्ठ तकनीकी रेस्टोरर, रामपुर रज़ा पुस्तकालय ने इस भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

### पांच दिवसीय संरक्षण कार्यशाला

रामपुर रज़ा पुस्तकालय की संरक्षण प्रयोगशाला ने दिनांक 24-28 अक्टूबर, 2010 तक रंग महल, रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर में “पांडुलिपियों और पुस्तकालय सामग्री की देखभाल और संरक्षण” पर पांच दिवसीय संरक्षण कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य पांडुलिपियों में विकृति और इनके संबंधित प्रभाव, अनुवीक्षण और पर्यावरण दशा, कलाकृतियों को उपयुक्त रूप से रखने, स्टोर करने, आपदा प्रबंधन के घटकों और पांडुलिपियों, पेटिंग तथा अन्य पुस्तकालय सामग्री के संरक्षण के लिए किए जाने वाले अपेक्षित निवारक संरक्षण उपायों के बारे में सहभागियों में समझबूझ पैदा करना तथा इनके संबंध में सहभागियों को जागरूक करना था।

इस कार्यशाला में विभिन्न ऐसे जिलों, जहां पांडुलिपियों का छोटा या बड़ा संग्रह हो, के मदरसों, निजी और सरकारी संस्थाओं के 29 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और इससे लाभान्वित हुए। इस कार्यशाला में बड़ी संख्या में महिला प्रतिभागियों ने भी भाग लिया।

विभिन्न संरक्षण संस्थानों जैसे राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, लखनऊ, सांस्कृतिक सम्पत्ति संरक्षण प्रयोगशाला, लखनऊ तथा लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के संरक्षण विशेषज्ञों ने एल.सी.डी. प्रोजेक्टर के माध्यम से पांडुलिपियों और पुस्तकालय सामग्री की देखभाल और संरक्षण की विभिन्न तकनीकों पर व्याख्यान दिए तथा प्रयोगात्मक निदर्शन दिखाए।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर आई.के. भटनागर, पूर्व डीन, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली ने एक समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करके इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्री शरीफ-उर-रहमान खान, पूर्व निदेशक, नेहरू युवा केन्द्र, रामपुर इस कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि थे। प्रोफेसर अब्दुस सलाम, विशेष कार्य अधिकारी ने स्वागत भाषण दिया और पांडुलिपियों तथा इनके संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

अंतिम दिन समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। प्रो० शाह अब्दुस सलाम, विशेष कार्य अधिकारी,

रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर ने इस समारोह को सम्बोधित किया और कार्यशाला के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

इस कार्यशाला के लिए समग्र निदेश प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम, विशेष कार्य अधिकारी, रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर ने दिए और श्री अरुण कुमार सक्सेना, वरिष्ठ तकनीकी रिस्टोरर ने इस कार्यशाला का समन्वय किया।

### नवाब फैजुल्लाह खान तथा नवाब रज़ा अली खान पुरस्कार समारोह

रज़ा पुस्तकालय ने 20 नवम्बर, 2010 को नवाब फैजुल्लाह खान और नवाब रज़ा अली खान पुरस्कार समारोह का आयोजन किया। महामहिम श्री बी.एल. जोशी, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल और रामपुर रज़ा पुस्तकालय बोर्ड के अध्यक्ष इस समारोह में मुख्य अतिथि थे। दुर्भाग्यवश महामहिम के कार्यक्रम में परिवर्तन हो गया और अंतिम क्षण में रामपुर के जिला मजिस्ट्रेट तथा रामपुर रज़ा पुस्तकालय बोर्ड के सदस्य श्री टी.एन. सिंह, आईएएस ने प्रो० सैय्यद हसन अबीदी, नई दिल्ली को 1,11,000 रुपए का नवाब फैजुल्लाह खान पुरस्कार और लखनऊ के मौलाना सैय्यद मो० राबे हसानी को 51,000 रुपए का नवाब रज़ा अली खान पुरस्कार प्रदान किया।

### दिल्ली पुस्तक मेला

रामपुर रज़ा पुस्तकालय ने नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में 25 दिसम्बर, 2010 से 2 जनवरी, 2011 तक राष्ट्रीय उर्दू भाषा प्रोन्नयन परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित 16वें दिल्ली पुस्तक मेले में भाग लिया। रज़ा पुस्तकालय, रामपुर को समग्र प्रदर्शन के लिए अव्वल घोषित किया गया और पुस्तक मेले में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु **स्वर्ण पुरस्कार** से नवाजा गया। महामहिम श्री मोहम्मद हामिद अंसारी, भारत के उप-राष्ट्रपति ने पुस्तक मेले के दौरान रामपुर रज़ा पुस्तकालय स्टॉल का दौरा किया और इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

## केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने 1955 के बाद से राष्ट्रीय पुस्तकालय परिसर में एक अलग कार्यालय के रूप में कार्य करना आरंभ कर दिया है। योजना आयोग द्वारा नई दिल्ली में केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना को द्वितीय पंचवर्षीय योजना के भाग के रूप में मंजूरी दी गई है। पुस्तक परिदान अधिनियम, 1954 के लागू होने के बाद, भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची का संकलन, भारत सरकार का दायित्व बन गया। कार्य को शीघ्र शुरू करने के लिए, केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय के राष्ट्रीय ग्रंथसूची एकक की स्थापना की गई और उसे पुस्तक परिदान अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकों के साथ राष्ट्रीय पुस्तकालय में कार्य करने की अनुमति दी गई। राष्ट्रीय पुस्तकालय का पुस्तकाध्यक्ष इस आईएनबी एकक के अध्यक्ष के रूप में कार्य करता है। यह आज देश की राष्ट्रीय ग्रंथसूची एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है। इसे निम्नलिखित स्कीमों के कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया है :-

- भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची का रोमन लिपि में संकलन, प्रकाशन और विक्रय मासिक तथा वार्षिक संचयन दोनों आधार पर होगा। आई.एन.बी. अंग्रेजी सहित 14 भारतीय भाषाओं में मौजूदा भारतीय प्रकाशनों का प्रमाणिक रिकार्ड है जो पुस्तक परिदान अधिनियम, 1954 के उपबंध के अनुसार केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता में प्राप्ति पर आधारित है।
- आई.एन.बी. की भाषा ग्रंथसूचियों का संकलन एवं प्रकाशन।
- इन्डैक्स इंडियाना का संकलन, प्रकाशन और बिक्री जो इस समय छह मुख्य भाषाओं में छपने वाले लेखों की चयन सूची है।

### भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची

तिमाही भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची का प्रथम अंक 1958 में प्रकाशित हुआ। आई.एन.बी. का तिमाही से मासिक संकलन में परिवर्तन 1964 में किया गया था। तत्पश्चात् कुछ समय के लिए मासिक अंक निकलते रहे और फिर बंद हो गए। वर्ष 1999 में आई.एन.बी. के संकलन का कम्प्यूटरीकरण होने से इसके मासिक अंकों के नियमित प्रकाशन में अद्भुत सुधार हुआ है। आई.एन.बी. के मासिक अंक सभी मानदण्डों से वर्तमान प्रकाशन बन गया है। दिसम्बर, 2009 तक के सभी अंक समय पर प्रकाशित हो चुके हैं और इनकी बिक्री की जा रही है। पुस्तकालय सॉफ्टवेयर स्टरोन्नयन के कारण, इस अवधि के दौरान आईएनबी 2010 के मासिक अंक के प्रकाशन में विलम्ब हुआ।

4.2.5



आई.एन.बी. के जनवरी से दिसम्बर के मासिक अंकों का प्रकाशन पूरा हो जाने के बाद उन्हें एक साथ वार्षिक अंकों में संचित किया जाता है। अब सभी मासिक तथा वार्षिक अंक बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। आईएनबी के वर्ष 2007, 2008 तथा 2009 तक के सभी वार्षिक खण्ड प्रेस में भेज दिए गए हैं और हार्डकॉपी प्रतीक्षित है। 2007, 2008 और 2009 के वार्षिक अंक प्रकाशन के लिये तैयार हैं। आई.एन.बी. का 1958–2010 तक का ग्रंथसूची डाटाबेस सी.आर.एल. में उपलब्ध है। आई.एन.बी. आंकड़ों को इंटरनेट पर अपलोड करने का प्रयास किया जा रहा है।

### पुस्तकालय सॉफ्टवेयर स्तरोन्नयन

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने अपने मौजूदा पुस्तकालय सॉफ्टवेयर लिबसिस 4.0 का वेब आधारित एलएस प्रीमिया में स्तरोन्नत किया है। ग्रंथसूची आंकड़े मार्क 21 फॉर्मेट में सृजित किए जाते हैं। भाषा संबंधी आंकड़े यूनिकोड में मौजूदा भाषा लिपि में प्रविष्ट किए जाते हैं। मौजूदा सभी आईएनबी रिकार्ड मार्क 21 में परिवर्तित किए जाते हैं। रोमन लिपि तथा अलग-अलग भाषा लिपि में आईएनबी सृजित करने में काफी अनुकूलन प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ा।

### इंडेक्स इंडियाना

इंडेक्स इंडियाना परियोजना वर्ष 1975 में प्रारंभ की गई थी जो 6 क्षेत्रीय भाषाओं बंगाली, गुजराती, हिंदी, मलयालम, मराठी और तमिल भाषा में छपने वाली पत्रिकाओं के लिए लेखों का चयन करने की सूची है। संकलित अंकों का प्रकाशन हो गया है और बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। वर्ष 2004–2009 के अंक प्रेस में हैं। इंडेक्स इंडियाना का संकलन तथा निर्माण कम्प्यूटर एप्लीकेशंस के जरिए किया जा रहा है।

### वर्ष 1958 से आईएनबी रिकार्ड का रेट्रो-कनवर्जन

1958 के आई.एन.बी. की सभी ग्रंथसूचियों के रिकार्ड इलैक्ट्रॉनिक फार्मेट में उपलब्ध हैं और आई.एन.बी. नेटवर्क पर देखे जा सकते हैं। वर्तमान में आई.एन.बी. डाटाबेस पर 6.7 लाख से अधिक रिकार्ड उपलब्ध हैं।

### भाषा ग्रंथसूचियां

**असमिया :** 2001 से 2007 तक की सात वर्ष की अवधि की असमी ग्रंथसूची सामग्री का संचयित खंड मुद्रणाधीन है।

**बांग्ला :** 'जतिय ग्रंथ पांची' 2008–2009 अंक भाषा पुस्तिका बंगाली प्रेस में देने के लिए तैयार है।

**हिन्दी :** राष्ट्रीय ग्रंथ सूची का 2004–2005 खण्ड मुद्रणाधीन है। 2006–2007 का खण्ड तैयार किया जा रहा है।

**तमिल :** 2001–2009 हेतु आईएनबी की तमिल भाषा पुस्तिका तैयार की जा रही है।

**उर्दू :** 2006–2010 कौमी किताबियत (उर्दू ग्रंथसूची) तैयार की जा रही है।

### सेमिनार तथा सम्मेलन

कर्मचारी विभिन्न व्यावसायिक सम्मेलनों तथा बैठकों में नियमित रूप से भाग लेते रहे हैं। व्यावसायिक कर्मचारियों को विशेष पुस्तकालयों तथा सूचना केन्द्रों के भारतीय संघ आई.ए.एस.एल. आई.सी. तथा भारतीय पुस्तकालय संघ आई.एल.ए. के वार्षिक सेमिनार में भाग लेने के लिए आधिकारिक प्रतिनिधि नामित किया जा रहा है।

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, पुस्तकालय विज्ञान के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को तत्काल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एक माह की अवधि का प्रशिक्षुता-प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करता है। इस वर्ष जुलाई, 2010 से फरवरी, 2011 तक शुरू किए गए उपर्युक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों जैसे कि उड़ीसा के उत्कल विश्वविद्यालय तथा पश्चिम बंगाल के कलकत्ता विश्वविद्यालय, कल्याणी विश्वविद्यालय, जाधवपुर विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के नागपुर विश्वविद्यालय, मराठवाडा विश्वविद्यालय, बिहार के भागलपुर विश्वविद्यालय के कुल 35 विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची एकक एक ऐसा क्षेत्र है जहां पुस्तकालय सूचना विज्ञान क्षेत्र के छात्र तथा अध्येता नियमित रूप से दौरा करते हैं। आधा दर्जन विश्वविद्यालय अपने छात्रों को उनके अध्ययन कार्यक्रम के एक भाग के रूप में केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता भेजते हैं। यह पुस्तकालय ग्रंथसूची सेवाओं के माध्यम से देश, विदेश के अध्येताओं की सहायता करता रहा है।

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने 6–10 अक्टूबर, 2010 तक आयोजित फ्रैंकफर्ट अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। इसने राष्ट्रीय

पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेला, मैसूर में भी भाग लिया। वर्तमान वर्ष के दौरान 5 लाख रु. से भी अधिक की सीआरएल पुस्तकें बेची गईं। केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने 28 जनवरी से 6 फरवरी, 2011 तक कोट्टायम, केरल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भी भाग लिया।

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय भारतीय पुस्तक परिदान अधिनियम के तहत राष्ट्रीय पुस्तकालय में प्राप्त किए गए भारतीय प्रकाशनों के ग्रंथसूची रिकार्ड को सुलभ कराने की व्यवस्था करता है। सीआरएल के प्रकाशन, अनुरोध किए जाने पर पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता से प्राप्त किए जा सकते हैं।



कंटेम्पोरेरि फोटोग्राफी का उद्घाटन



## खुदाबख्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी

4.2.6

खुदाबख्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना बिहार के छपरा जिला निवासी मौलवी मोहम्मद बख्श की पुस्तकों के निजी संग्रह से की गई। बाद में उनके सुपुत्र खुदाबख्श ने इस संग्रह को समृद्ध बनाया और इसे सार्वजनिक पुस्तकालय में परिवर्तित किया और बंगाल सरकार को इसका न्यासी नियुक्त किया गया। दिसम्बर, 1969 में संसद के एक अधिनियम के जरिए इस लाइब्रेरी को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया तथा जुलाई, 1970 में यह लाइब्रेरी भारत सरकार द्वारा गठित बोर्ड के अधीन स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य कर रही है, जिसके पदेन अध्यक्ष बिहार के राज्यपाल होते हैं। वर्तमान में यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।

खुदाबख्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी में लगभग 21,000 से अधिक पाण्डुलिपियां, 2,75,000 मुद्रित पुस्तकें और लगभग 2000 मूल चित्रों का समृद्ध संग्रह है। जनवरी-दिसम्बर, 2010 के दौरान लाइब्रेरी ने 5,369 पुस्तकें, 10 पाण्डुलिपियां और 507 पुस्तकें उपहार एवं आदान-प्रदान द्वारा प्राप्त की। लाइब्रेरी ने इस अवधि के दौरान 865 पत्रिकाओं और 291 समाचार-पत्रों के लिए अभिदान किया। उपर्युक्त अवधि के दौरान लाइब्रेरी ने लगभग 47 ऑडियो एवं 26 वीडियो कैसेट्स भी तैयार किए।

जनवरी-दिसम्बर, 2010 के दौरान पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची खण्ड 43 एवं फारसी पाण्डुलिपियों की हैन्डलिस्ट का खण्ड V तथा उर्दू पाण्डुलिपि की हैन्डलिस्ट का खण्ड-। प्रकाशित किया गया और वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त लाइब्रेरी की पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूचियां, लाइब्रेरी की गतिविधियों का विवरण एवं लाइब्रेरी प्रकाशनों की सूची भी इंटरनेट पर उपलब्ध कराई गई। लाइब्रेरी ने अपने मुद्रित पुस्तक संग्रह सूची का इलेक्ट्रॉनिक रूप में रेट्रो-कन्वर्जन करने का भी निर्णय लिया है तथा अब तक 4,29,307 पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का रेट्रोस्पेक्टिव सूचीकरण पूरा हो चुका है। यह कम्प्यूटरीकृत सूची पुस्तकालय में पाठकों के लिए उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, समीक्षाधीन अवधि के दौरान 50,000 अंग्रेजी पुस्तकों का कम्प्यूटरीकृत कैटलाग वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिया गया है। यह कार्य अभी भी जारी है। पाण्डुलिपियों के डिजिटाइजेशन का कार्य जो सितम्बर, 2005 में आरंभ किया गया था 10,00,000 पृष्ठों के डिजिटाइजेशन की प्रायोगिक परियोजना के साथ गत वर्ष पूर्ण कर लिया गया है। डिजिटलीकृत छवियों की जांच इसकी परिशुद्धता के लिए की जा रही है और डिजिटाइज्ड फॉर्मेट में 783 पाण्डुलिपियां, जिनमें 2 लाख फोलियोज को शामिल किया गया है, पाठकों के लिए उपलब्ध है। शेष कार्य को अगली तिमाही तक पूरा कर लिए जाने की संभावना है।

### प्रलेखन एवं सेवाएं

पाण्डुलिपियों एवं दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण के लिए आधुनिक तकनीक का



प्रयोग करने हेतु कुछ वर्ष पूर्व एक आधुनिक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित की गई थी जो पाण्डुलिपियों के फ्यूमीगेशन, डी-एसीडिफिकेशन, लेमिनेशन एवं जिल्द-बन्दी का कार्य करती है। पुस्तकालय कर्मचारियों को संरक्षण, परिरक्षण एवं अग्निशमन के क्षेत्रों में आवश्यक प्रशिक्षण दिलाया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 302 मुद्रित पुस्तकों और पाण्डुलिपियों के संरक्षण के बाद उनका जिल्दबन्दी का कार्य किया गया। लगभग 2,165 पाण्डुलिपियां/पुस्तकें फ्यूमीगेट की गईं एवं पाण्डुलिपियों/पुस्तकों के 32,458 पृष्ठों की मरम्मत एवं परिरक्षणात्मक उपचार का कार्य किया गया।

### घटनाक्रम

श्री शाहिद महदी, उपाध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली ने दिनांक 2 अगस्त, 2010 को 'विद्वद् हायर एजुकेशन इन इंडिया?' विषय पर इस वर्ष का वार्षिक व्याख्यान दिया। वर्ष के दौरान, डा० केनथ रॉबिन्स (न्यासी बोर्ड, स्मीथोसोनियन संस्थान, यूएसए), प्रो० शरीफ हुसैन कासमी (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो० रत्नेश्वर मिश्र (एल.एन. मिथिलिया विश्वविद्यालय) तथा डा० एजाज अली अरशद (पटना विश्वविद्यालय) जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा 9 एक्सटेंशन व्याख्यान तथा तीन लोकप्रिय व्याख्यान दिए गए। स्थापना दिवस उत्सव के एक भाग के रूप में दिनांक 4 अगस्त, 2010 को एक राष्ट्रीय मुशायरे का आयोजन किया गया।

इस अवधि के दौरान, "संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के बीच संवाद को बढ़ावा" तथा "भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में इमाम बंधुओं का योगदान" विषयों पर दो सेमिनारों तथा "कैलिग्राफिक स्पेशिमेन ऑफ़ एमिनेन्ट इरानियन कैलिग्राफिस्ट", "मनुस्क्रिप्ट ऑन मेडिकल साइंस" तथा "वेरियस कॉपिज ऑफ़ शाहनामा मनुस्क्रिप्ट" विषयों पर तीन प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया।

महामहिम श्री टिमोथी जे. रोमर, भारत में अमेरिका के राजदूत ने पुस्तकालय का दौरा किया तथा दिनांक 4 अगस्त, 2010 को पुस्तकालय की वेबसाइट पर "एलबम ऑफ़ साइंटिफिक इन्स्ट्रूमेंट (पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित) की शुरुआत की। उन्होंने पटना के प्रतिष्ठित लोगों से बातचीत भी की। श्रीमती फातिमा हसन, पाकिस्तान की जानी-मानी विद्वान एवं कवयित्री ने दिनांक 23 दिसम्बर, 2010 को पुस्तकालय का दौरा किया तथा पुस्तकालय में शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं के साथ बातचीत की।

### शोधात्मक गतिविधियां

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, लाइब्रेरी ने लाइब्रेरी में संरक्षित दुर्लभ सामग्रियों पर कार्य करने के लिए एक राष्ट्रीय, दो अतिथि, तीन वरिष्ठ और सात कनिष्ठ शोधवृत्तियां भी प्रदान कीं। इस अवधि में दो वरिष्ठ और पांच कनिष्ठ शोधकर्ताओं ने इस योजना का लाभ उठाया।

### प्रकाशन

इस स्कीम के अंतर्गत लाइब्रेरी की दुर्लभ पाण्डुलिपियों तथा मुद्रित पुस्तकों के महत्वपूर्ण संस्करण तैयार कराने, उनका अनुवाद करने एवं प्रकाशित करने का कार्य किया जाता है। लाइब्रेरी विभिन्न विषयों पर अनुसंधान मोनोग्राफ भी निकालती है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान एक दुर्लभ मुद्रित पुस्तक के महत्वपूर्ण संस्करण एवं दो उर्दू पुस्तकों तथा एक फारसी पुस्तक के प्रकाशन का कार्य किया गया। इसके अतिरिक्त, दो उर्दू पुस्तकों के महत्वपूर्ण संस्करण तथा छः अनुसंधान मोनोग्राफ्स का भी प्रकाशन किया गया।

लाइब्रेरी अपनी दुर्लभ सामग्रियों के बारे में शोधकर्ताओं को जानकारी प्रदान करने के लिए तिमाही पत्रिका प्रकाशित करती है। इस पत्रिका में उर्दू, फारसी, अरबी, हिंदी और अंग्रेजी के लेख प्रकाशित किए जाते हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, इस पत्रिका के सात अंक (संख्या 153-159) प्रकाशित किए गए। पाण्डुलिपियों के विवरणात्मक कैटलाग का खण्ड 43 (नैतिकता एवं प्रार्थना पर), के साथ फारसी पाण्डुलिपियों की हैंडलिस्ट का खण्ड v तथा उर्दू हैंडलिस्ट (खण्ड i) को तैयार किया गया तथा उनका प्रकाशन किया गया।

### पुरस्कार

खुदाबख्श लाइब्रेरी द्वारा निर्धारित विशेष क्षेत्रों एवं भारत की मिली-जुली संस्कृति पर जीवन पर्यंत कार्य करने वाले विद्वानों को पुरस्कृत करने के लिए एक पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई है। यह पुरस्कार साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार के स्वरूप का है तथा 1,00,000 रुपए एवं प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

## केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार

4.2.7

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार (सी.एस.एल.), संस्कृति मंत्रालय भारतीय और विदेशी सरकारी दस्तावेज जो इसके मुख्य संग्रह का एक भाग है, को सुरक्षित रखने के संदर्भ में विशाल सरकारी पुस्तकालयों में से एक है। सी.एस.एल. के संसाधन, स्वतंत्रता पूर्व के भारत के अनेक सरकारी पुस्तकालयों तथा अनेक अन्य पुरानी संस्थाओं जिनमें इम्पीरियल सचिवालय पुस्तकालय, कलकत्ता जो 1891 में अस्तित्व में आया शामिल है, का समामेल है। यह, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, एक सचिवालय पुस्तकालय का कार्य करता है। शोधकर्ता, शिक्षाविद् तथा अन्य गैर-सरकारी व्यक्ति भी इस पुस्तकालय के सदस्य बन सकते हैं। आज की तिथि तक, सी. एस. एल. परिसर में संग्रह की मात्रा लगभग 6.64 लाख है जिनमें पुस्तकें तथा सरकारी प्रकाशन शामिल हैं।

**केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निम्नलिखित संघटक हैं :-**

**मुख्य पुस्तकालय :** केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, 'जी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001

**शाखा- I :** हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा विंग (तुलसी सदन पुस्तकालय) बहावलपुर हाऊस, भगवान दास रोड़, नई दिल्ली-110001

**शाखा- II :** स्नातक पाठ्य-पुस्तक पुस्तकालय, आर. के. पुरम शाखा, पश्चिम ब्लॉक-7, सैक्टर- I, आर. के. पुरम, नई दिल्ली- 110066



**I. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, 'जी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली :** केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय (मुख्य यूनिट) के ऊपर विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों तथा अन्य व्यक्तियों/संगठनों को सूचना उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी है। सी.एस.एल. द्वारा विकसित संग्रह, मुख्यतः भारतीय इतिहास, क्षेत्रवार अध्ययन, महिला अध्ययन तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ग्रंथसूची के क्षेत्र में है। इसमें सरकारी नीतियों सहित आयोजना एवं विकास अध्ययनों पर बल दिया गया है। पुस्तकालय भारत के आधिकारिक प्रकाशनों के एक भण्डार के रूप में भी जाना जाता है। इसके अलावा, पुस्तकालय में विदेशी आधिकारिक दस्तावेज यथा- संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, आई.एम.एफ. आदि जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रकाशन भी हैं। इस पुस्तकालय ने दुर्लभ पुस्तकों के लिए अलग से एक खण्ड तैयार किया है जहां 6000 पुस्तकें हैं जिनमें से सर्वाधिक पुरानी वर्ष 1972 में प्रकाशित पुस्तक है।

**II. हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा स्कंध : तुलसी सदन :** तुलसी सदन पुस्तकालय — बहावलपुर हाऊस, नई दिल्ली में स्थित है। तुलसी सदन पुस्तकालय की स्थापना 1972 में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित प्रसिद्ध रामचरितमानस के चौथे शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में की गई थी। इस पुस्तकालय में 14 क्षेत्रीय भाषाओं में 2 लाख पुस्तकों का संग्रह है। इसके कोर संग्रह में भारतीय भाषाओं में लिखे गए अनेक गौरवग्रंथ शामिल हैं। इस अवधि के दौरान इस पुस्तकालय ने हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की 1538 पुस्तकें (लगभग 3,55,000 रु.) अधिगृहीत की हैं। पुस्तकालय विभिन्न विषयों के 76 पत्र-पत्रिकाओं, अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भाषाओं के 38 समाचार-पत्रों का ग्राहक बना। इस अवधि के दौरान तुलसी सदन पुस्तकालय ने अपने प्रयोक्ता सदस्यों को 2432 पुस्तकें जारी कीं/वापस कीं। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान 20000 प्रयोक्ताओं ने पुस्तकालय का दौरा किया और पठन-कक्ष का उपयोग किया। इस अवधि के दौरान पुस्तकालय ने 32 नये सदस्यों को नामांकित किया।

**III. स्नातक पाठ्य पुस्तक पुस्तकालय, आर. के. पुरम शाखा :** आर. के. पुरम स्थित शाखा पुस्तकालय मुख्य रूप से इसके आस-पास के क्षेत्रों में स्थित विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत सरकारी कर्मचारियों के लिए अभिहित है। वर्ष 2003-04 से आर. के. पुरम पुस्तकालय केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के दिल्ली में स्नातक पाठ्यक्रमों में अध्ययन कर रहे बच्चों के लिए पाठ्य-पुस्तक पुस्तकालय के रूप में भी कार्य कर रहा है। पुस्तकालय के वर्तमान पाठ्य पुस्तक संग्रह में 14000 खण्ड हैं। इस पुस्तकालय का रीडिंग हॉल पूर्णतया वातानुकूलित है। इस पुस्तकालय का कुल पुस्तक संग्रह लगभग 35000 है। इस पुस्तकालय ने इस अवधि के दौरान लगभग 12000 पुस्तकें जारी की हैं और 23500 उपयोगकर्ताओं ने पुस्तकालय का दौरा किया। पुस्तकालय 38 पत्र-पत्रिकाओं तथा 28 समाचार-पत्रों का ग्राहक बना। इस अवधि के दौरान पुस्तकालय से 56 नए सदस्य जुड़े हैं। इस वित्त वर्ष के अंत तक इस पुस्तकालय में एक पृथक बाल खण्ड प्रचालित किए जाने की संभावना है। बाल पुस्तकों के आदेश दे दिए गए हैं। इस भवन को हाल ही में सीपीडब्ल्यूडी ने नवीकृत किया है।

**2. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की सदस्यता :** राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में रह रहे सरकारी कर्मचारी पुस्तकालय के सदस्य बनने के पात्र हैं। सरकारी कर्मचारियों के अलावा अन्य प्रयोक्ता भी भुगतान के आधार पर पुस्तकालय के सदस्य बन सकते हैं। पुस्तकालय ने अपनी सभी शाखाओं यथा केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, तुलसी सदन पुस्तकालय और आर.के. पुरम शाखा पुस्तकालय के लिए विकेन्द्रीकृत सदस्यता अपनायी है।

सरकारी कर्मचारियों को सदस्यता दो वर्ष की अवधि के लिए दी जाती है। आज की तिथि के अनुसार, सदस्यों की पंजीकृत संख्या 4672 है, जिनमें से 699 (सीएसएल 611, टीएसएल 32 तथा आर. के. पुरम शाखा पुस्तकालय = 699) सदस्यों ने इस अवधि के दौरान अर्थात् अप्रैल से दिसम्बर, 2010 तक अपनी सदस्यता का पंजीकरण या नवीकरण कराया है।

**पुस्तकालय खुलने का समय :** पुस्तकालय खुलने का समय सोमवार से शुक्रवार प्रातः 8.00 बजे से सायं 8.00 बजे तक और शनिवार प्रातः 9.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक है। रविवार तथा राजपत्रित अवकाश के दिन पुस्तकालय बंद रहता है।

**3. संग्रह विकास :** इस अवधि (अप्रैल से दिसम्बर, 2010 तक) के दौरान, सी. एस. एल. मुख्य यूनिट के लिए 1425 पुस्तकें (हिन्दी और अंग्रेजी) खरीदी गई हैं तथा तुलसी सदन पुस्तकालय में हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अभी तक 1625 पुस्तकें खरीदी गई हैं। भारतीय शासकीय दस्तावेज अनुभाग में 2592 सरकारी प्रकाशन शामिल किए गए जिनमें भारत के राजपत्र की अधिसूचना शामिल हैं। विदेशी शासकीय दस्तावेज अनुभाग ने अपनी क्षेत्रीय भंडारण व्यवस्था के तहत 311 विश्व बैंक प्रकाशन प्राप्त किए हैं। इसके अलावा, इस प्रभाग ने विभिन्न सरकारी एजेंसियों से 500 मुद्रित दस्तावेज प्राप्त किए हैं।

**4. समाचार-पत्र तथा पत्रिका अंशदान :** पुस्तकालय विभिन्न विषयों की 274 पत्रिकाएं, भारतीय और विदेशी मूल के 78 समाचार-पत्र मंगाता है तथा 250 पत्रिकाएं निःशुल्क प्राप्त करता है। सी.एस.एल. ने संस्कृति मंत्रालय के विभिन्न अधिकारियों तथा अन्य पुस्तकालयों को 4140 समाचार-पत्र/आवधिक पत्रिकाएं जारी एवं परिचालित की हैं। मांग के आधार पर अधिकारियों को आवधिक पत्रिकाएं एवं समाचार-पत्र दिए गए। कर्मचारियों को प्रश्नों के उत्तर (लगभग 5500) दिए गए।

**5. माइक्रोफिल्म का प्रापण :** सी.एस.एल. भारतीय प्रकाशनों की माइक्रोफिल्मों प्रकल्प की मुख्य एजेंसी है। सी.एस.एल. में माइक्रोफिल्म भण्डार कक्ष को इस कार्यक्रम के तहत 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्यिक कृतियों की माइक्रोफिल्मिंग लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, यूएसए के सहयोग से की गई अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसरण में विकसित किया गया है। पुस्तकालय में 37,000 दस्तावेजों का संग्रह है जो 3096 माइक्रोफिल्मों के रोल अंग्रेजी तथा 15 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। मूल कृतियों जो देश के अलग-अलग पुस्तकालयों में उपलब्ध थीं, की माइक्रोफिल्म तैयार की गई। भारतीय प्रकाशनों के चयन हेतु नेशनल बिब्लियोग्राफी ऑफ इंडियन लिटरेचर (1901-1953) को

आधार दस्तावेज माना गया। ब्रिटिश काल अर्थात् ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन में उपलब्ध V श्रृंखला के खण्ड 25 के संबंधित शासकीय दस्तावेज की माइक्रोफिल्म भी अधिगृहीत की गई।

#### 6. पाठक सेवाएँ :

- सीएसएल मुख्यतः आम पाठकों सहित पंजीकृत पुस्तकालय सदस्यों, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोध अध्येताओं को संदर्भ एवं संदर्भीय सेवा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है। वर्ष के दौरान सीएसएल के सभी एककों में लगभग 45000 पुस्तकें जारी/वापस ली गईं और 80,000 पुस्तकों एवं प्रकाशनों का प्रयोग परामर्श कार्य में किया गया।
- इस पुस्तकालय के संसाधनों का उपयोग दिल्ली स्थित अन्य पुस्तकालयों द्वारा किया गया। अंतर-पुस्तकालय ऋण सेवा के जरिए कुल 389 पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं।
- इस अवधि के दौरान पुस्तकालय के रिप्रोग्राफी एकक द्वारा 92,000 पृष्ठों से अधिक की फोटो प्रतियां उपलब्ध कराई गईं। सीएसएल ने अप्रैल से दिसम्बर, 2010 की अवधि के लिए डीडीओ, संस्कृति के पास फोटोकॉपी प्रभार के रूप में 47,935 रु. की राशि जमा कराई।
- विशेष अनुरोध के आधार पर विभिन्न अन्य विभागों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को 740 पुस्तकें जारी की गईं।

**7. सूचना प्रौद्योगिकी आधारित कार्यकलाप :** केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार सूचनाओं के भण्डान एवं पुनः प्राप्ति हेतु नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है।

निम्नलिखित सूचना प्रौद्योगिकी आधारित परियोजनाएं पूरी की गई हैं :

- i. सीएसएल, टीएसएल तथा आर.के.पी. पुस्तकालयों में उपलब्ध संग्रह के ब्योरे संबंधी ग्रंथसूची डाटाबेस ओपीएसी अर्थात् ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग में उपलब्ध हैं।
- ii. "समिति आयोग रिपोर्टें" से संबंधित आंकड़ा लेन सर्वर पर उपलब्ध है जिसकी साइट <http://10.21.84.138:8080/dspace> है। इस डिजिटल दस्तावेज हेतु सर्ज इंजन डी-स्पेस तथा आईसिस सामग्री प्रबंधन प्रणाली के आधार पर तैयार किया गया है।
- iii. सीएसएल वेबसाइट अर्थात् [www.csl.nic.in](http://www.csl.nic.in) को लगातार अद्यतन किया जाता है और वेब पृष्ठ को पुनः तैयार किया गया है।

iv. सीएसएल में चार डाटाबेस प्रबंधन प्रणालियां अर्थात् लिबसिस, आईसिस, ग्रीनस्टोन तथा डीस्पेस अपनाई जाती हैं।

#### 8. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा आयोजित कार्यक्रम

1. "दिल्ली पर पुस्तकें" विषय पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई और इस अवसर पर इस विषय से संबंधित एक ग्रंथसूची भी जारी की गई।
2. गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन सचिव (संस्कृति), प्रो० मुचकुन्द दुबे, पूर्व विदेश सचिव द्वारा किया गया जिन्होंने इस अवसर पर एक व्याख्यान दिया। सीएसएल ने रबीन्द्रनाथ टैगोर पर एक ग्रंथसूची और 'गुरुदेव को श्रद्धांजलि' शीर्षक संकलन जारी किया।
3. युगों से मुद्रण के विकास पर श्री एन.एस. करनावर, सीएसएल के एक स्टाफ सदस्य ने एक व्याख्यान दिया। 40 से अधिक पुस्तकालयाध्यक्षों ने इस व्याख्यान में भाग लिया।

#### 9. प्रकाशन

1. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में नव अधिगृहीत पुस्तकों के विवरण संबंधी एक तिमाही 'बुक न्यूज' प्रकाशित की गई है।
2. पुस्तक समीक्षा संबंधी समाचार-पत्र कतरनों को संस्कृति मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों में परिचालित किया गया है।

#### 10. अन्य कार्य

- i. सीएसएल डेलनेट का एक सदस्य है और यह दिल्ली स्थित पुस्तकालयों के संसाधन आदान-प्रदान कार्यकलापों में हिस्सा लेता है।
- ii. सीएसएल परिसर में आधुनिकीकरण तथा बुनियादी सुविधाओं में सुधार संबंधी कार्य किए गए। सम्मेलन हॉल को हाल ही में विस्तारित एवं नवीकृत किया गया है।
- iii. वर्ष के दौरान आर.के. पुरम शाखा पुस्तकालय का आधुनिकीकरण एवं नवीकरण किया गया है।
- iv. पुस्तकालय के स्टॉक से पुराने एवं अप्रयुक्त प्रकाशनों को हटाए जाने के लिए इनका अभিনিर्धारण किया गया है। पुराने तथा अप्रयुक्त प्रकाशनों संबंधी आकड़ा तैयार करने की एक परियोजना दिल्ली पुस्तकालय संघ द्वारा पूरी कर ली गई है।





# 5

## અન્ય

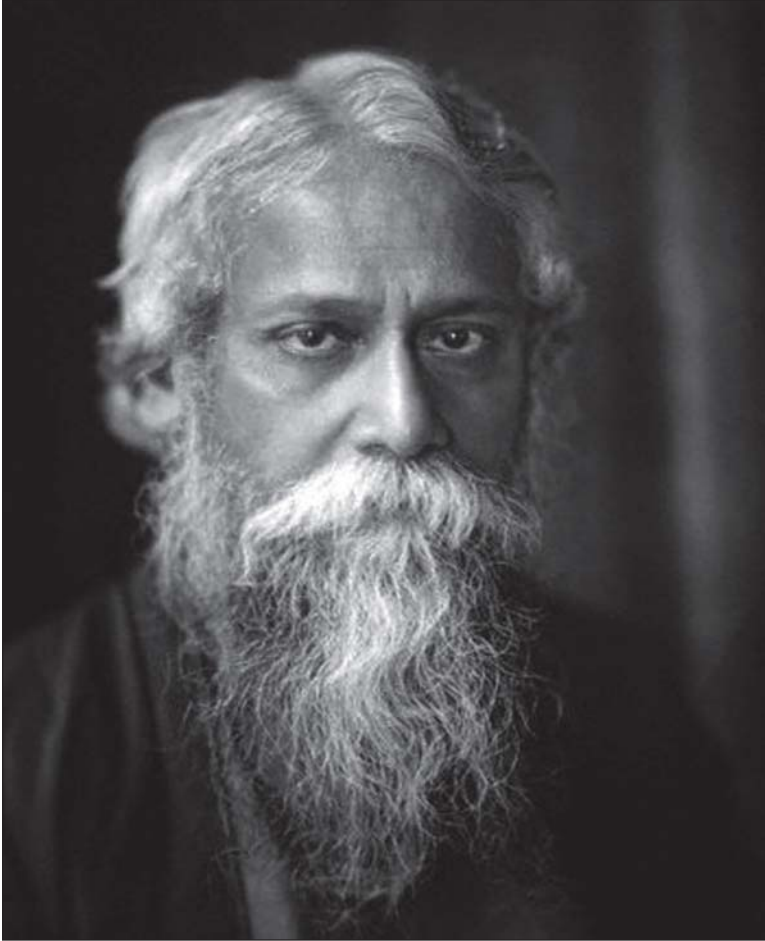
---

## शताब्दियां और वर्षगांठ

### गुरु रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ का स्मरणोत्सव

गुरु रबीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ शानदार ढंग से मनाने के लिए माननीय प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में 27.4.2010 को विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों की राष्ट्रीय समिति गठित की गई है। यह राष्ट्रीय समिति स्मरणोत्सव कार्यक्रमों की नीतियों पर विचार करेगी और उनके मार्गदर्शी सिद्धांत निर्धारित करेगी। राष्ट्रीय समिति ने 20.5.2010 को अपनी पहली बैठक की।

5.1



गुरुदेव रबीन्द्र नाथ टैगोर



स्मरणोत्सव के कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा तैयार करने और भारत तथा विदेशों में केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, राज्य सरकारों, स्वायत्त निकायों/संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों तथा व्यक्तियों को संबद्ध तथा शामिल करते हुए राष्ट्रीय समिति के निर्णयों को लागू करने के लिए 27.4.2010 को माननीय वित्त मंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति (एनआईसी) गठित की गई है। एनआईसी ने 5 मई, और 14 जुलाई, 2010 को दो बैठकें की।

माननीय प्रधानमंत्री ने 9 मई, 2010 को राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली में विशेष रूप से लगाई गई टैगोर के चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसी दिन ललित कला अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी और साहित्य अकादेमी ने मिलकर संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली के परिसर में टैगोर की कृतियों पर आधारित 'रबीन्द्र प्रणति' नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें माननीय वित्त मंत्री ने 150 रु. का विशेष स्मारक सिक्का जारी किया।



माननीय वित्त मंत्री ने 150 रु. का विशेष स्मारक सिक्का जारी किया

माननीय वित्त मंत्री द्वारा 9 मई, 2010 को 150 रु. के स्मारक सिक्के का विमोचन (बाएं से दाएं खड़े हुए : श्री एन सी गोयल, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, श्री रतन थियम, पूर्व कुलपति, संगीत नाटक अकादेमी, श्री प्रणब मुखर्जी, माननीय वित्त मंत्री, श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति और स्वर्गीय श्री एस.एस. नूर, भूतपूर्व उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी)

राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति द्वारा लिए गए निर्णयों के अनुसरण में अनुवर्ती कार्रवाई हेतु विभिन्न उपसमितियां गठित की गई हैं।

अन्य बातों के साथ-साथ ये कार्यक्रम (i) टैगोर की कृतियों के परिरक्षण और डिजिटलीकरण (ii) टैगोर पर फिल्मों का निर्माण तथा व्यापक प्रसार हेतु अभिलेखीय दृश्य-श्रव्य सामग्री का जीर्णोद्धार (iii) टैगोर से संबद्ध विरासत भवनों का परिरक्षण/नवीनीकरण (iv) टैगोर अध्येतावृत्तियों की शुरुआत (v) राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार (vi) टैगोर की बहुरूपी अद्भुत प्रतिभा दर्शाने वाले विषयों पर सेमिनार और कार्यशालाएं (vii) टैगोर के चित्रों की प्रदर्शनियां (viii) विभिन्न भाषाओं और माध्यमों में टैगोर की कृतियों पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम (ix) भारतीय भाषाओं और संयुक्त राष्ट्र भाषाओं में टैगोर की कृतियों का अनुवाद (x) टैगोर के शताब्दी समारोह के दौरान नव टैगोर सांस्कृतिक परिसरों का निर्माण तथा रबीन्द्र भवन की व्यवस्था का उन्नयन (xi) स्मारक सिक्के और डाक टिकटें जारी करना तथा (xii) टैगोर की विरासत आदि को सम्मानित करने और उसे अमर बनाने के लिए शैक्षिक केंद्रों तथा पीठों की स्थापना से संबंधित हैं।

राष्ट्रीय स्मरणोत्सव के तहत निम्नलिखित प्रस्ताव अनुमोदित किए गए हैं :-

- (i) विश्व भारती द्वारा 5 करोड़ रु. की लागत से 7 खंडों में टैगोर के चित्रों का संकलन 'रबीन्द्र चित्रावली' का प्रकाशन।
- (ii) जाधवपुर विश्वविद्यालय द्वारा 2.82 करोड़ रु. की लागत से बांग्ला और अंग्रेजी में टैगोर की कृतियों का ऑनलाइन इलेक्ट्रॉनिक 'वेरियोरम' संस्करण।
- (iii) टैगोर पर फिल्मों का निर्माण और आकर्षक दृश्य-श्रव्य संकलन। इस कार्य के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम को 5 करोड़ रु. की राशि दी गई है।
- (iv) यूरोप, उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया तथा यू.एस. में विश्व भारती के सहयोग से टैगोर के मूल चित्रों की विदेशों में प्रदर्शनियां।
- (v) देश के विभिन्न भागों में टैगोर से संबद्ध कार्यक्रमों की सहायता हेतु 24 सितम्बर, 2010 को टैगोर सांस्कृतिक समारोह अनुदान स्कीम शुरू की गई है। इसका कार्यान्वयन 8 क्षेत्रीय टैगोर स्मरणोत्सव समितियों द्वारा किया जाएगा जिनके मुख्यालय दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चैन्ने, इलाहाबाद, पटियाला, दीमापुर में हैं।

- (vi) मंत्रालय के 17 सांस्कृतिक संस्थानों में प्रतिष्ठित विद्वानों की सहायतार्थ 1 नवंबर, 2010 को टैगोर राष्ट्रीय अध्येता स्कीम शुरू की गई है। अद्यतन स्थिति के अनुसार, यह अध्येतावृत्ति देश की अत्यन्त गौरवपूर्ण अध्येतावृत्ति है।
- (vii) टैगोर के स्मरणोत्सव कार्यक्रमों के लिए ललित कला अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी और साहित्य अकादेमी को 3.55 करोड़ रु. की संवर्धित बजट सहायता।
- (viii) प्रतिष्ठित कला पत्रिका 'मार्ग' द्वारा 7 लाख रु. की लागत से टैगोर पर विशेष अंक।

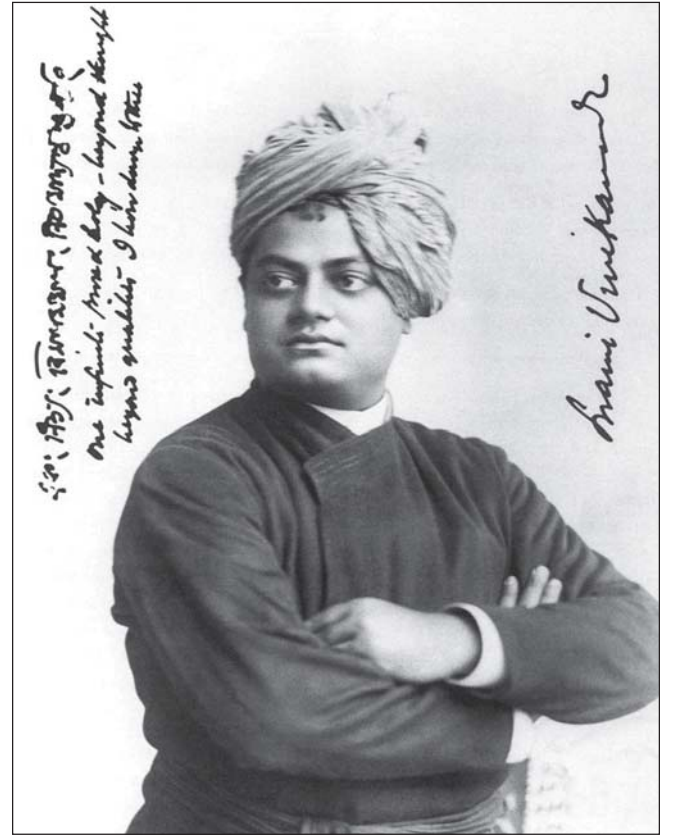
संस्कृति मंत्रालय के पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, राष्ट्रीय पुस्तकालय और राष्ट्रीय अभिलेखागार जैसे अनेक अन्य स्वायत्त संगठनों, संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों ने इस अवधि के दौरान विभिन्न स्मरणोत्सव कार्यक्रम आयोजित किए हैं। 2012 तक स्मरणोत्सव अवधि के दौरान इसी प्रकार के कार्यक्रम जारी रहेंगे। 7 मई, 2011 को नई दिल्ली में औपचारिक उद्घाटन समारोह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसमें माननीय प्रधानमंत्री उपस्थित रहेंगे।

जहां तक टैगोर द्वारा स्थापित विश्व भारती का संबंध है, संस्कृति मंत्रालय द्वारा शांति निकेतन को विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित करने संबंधी नामांकन दायर करने, इसके विरासत भवनों का संरक्षण, इसकी अभिलेखीय और पुस्तकालय संपत्तियों के डिजिटलीकरण, चित्रों और भित्ति चित्रों के संरक्षण, संग्रहालय तथा सभागार आदि के उन्नयन से संबंधित गत कुछ वर्षों के दौरान अनेक महत्वपूर्ण पहलों का वित्त पोषण किया गया है और स्मरणोत्सव अवधि के दौरान उनका संवर्धन किया गया है।

बांग्लादेश की माननीय प्रधानमंत्री शेख हसीना की जनवरी, 2010 में भारत यात्रा के बाद जारी विज्ञप्ति में यथा उल्लिखित बांग्लादेश के साथ संयुक्त आयोजन विशेष महत्व के है। इस संबंध में सचिव संस्कृति श्री जवाहर सरकार की अध्यक्षता में 12 सदस्यीय भारतीय शिष्टमंडल ने 19 से 22 दिसंबर, 2010 तक ढाका का दौरा किया। अन्य बातों के साथ जिन समारोह पर विचार-विमर्श किया गया उनमें (i) दोनों देशों के अतिमहत्वपूर्ण व्यक्तियों और कलाकारों की भागीदारी से 7 और 8 मई, 2011 को क्रमशः भारत और ढाका में उद्घाटन समारोह (ii) सेमिनार और व्याख्यान जिसके बाद विश्वस्तरीय प्रकाशन निकाले जाएंगे (iii) रंगमंच/नृत्य/रबीन्द्र

संगीत उत्सव और कार्यशालाएं (iv) टैगोर के जीवन और कृतियों पर फिल्म निर्माण और फिल्म महोत्सवों का आयोजन (v) चुनिंदा विश्वविद्यालय में टैगोर पीठों की स्थापना (vi) टैगोर के चित्रों की प्रदर्शनी और (vii) कोलकाता, जोड़ासांको, कुष्टिया, शिलायदाह, शाहजादपुर और ढाका को शामिल करते हुए 'रवि तीर्थ' या टैगोर सक्रिट की शुरुआत शामिल है।

### स्वामी विवेकानंद की 150वीं वर्षगांठ का स्मरणोत्सव



स्वामी विवेकानंद

माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 5 फरवरी, 2010 को राष्ट्रीय समिति गठित की गई है जो वर्षगांठ 2013-14 तक के तैयारी के कार्यकलापों सहित नीतियों, योजनाओं तथा कार्यक्रमों पर विचार करेगी और स्वामी विवेकानंद की 150वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव का मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण करेगी। राष्ट्रीय समिति की पहली बैठक 20 मई, 2010 को आयोजित की गई। सदस्यों ने उपयुक्त रूप से युवाओं को शामिल करने वाले कार्यक्रमों सहित स्मारक कार्यक्रम आयोजित करने, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशनों के माध्यम से स्वामी जी की कृतियां प्रकाशित करने,



स्कूलों/कॉलेजों/विश्वविद्यालयों में स्वामी जी के आदर्शों का प्रसार करने, परस्पर संवाद को बढ़ावा देने वाले अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान, सेमिनार, आकर्षक वाक्यों और लोगो आदि के जरिए समर्थन अभियान आयोजित करने से संबंधित क्षेत्रों और विषयों का सुझाव दिया।

राष्ट्रीय समिति के निर्णयों के कार्यान्वयन के लिए माननीय वित्त मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी की अध्यक्षता में 23 जुलाई, 2010 को राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति गठित की गई।

उपर्युक्त समिति ने 3 सितंबर, 2010 को अपनी पहली बैठक की। समिति ने बेलूर स्थित रामकृष्ण मिशन और अन्य गैर-सरकारी संगठनों, राज्य सरकारों, आईसीसीआर से प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों पर विचार किया और 2 प्रस्ताव अनुमोदित किए।

एक प्रस्ताव रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन, बेलूर के विवेकानंद मूल्य शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित हैं। इस प्रस्ताव में 2010 से 2014 की अवधि तक 100.00 करोड़ रु. की कुल लागत से पूरे देश में प्रिंट और इक्लेट्रॉनिक माध्यम के जरिए स्वामी विवेकानंद के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करने से संबंधित कार्यक्रम, युवा और सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विशेष सामाजिक कार्यक्रमलाप समाहित हैं। इस कार्यक्रम का माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 12 जनवरी, 2011 को नई दिल्ली में औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया।



माननीय प्रधानमंत्री द्वारा विवेकानंद मूल्य शिक्षा कार्यक्रम का उद्घाटन

अन्य प्रस्ताव श्री राजीव मेहरोत्रा द्वारा 70.00 लाख रु. की लागत से स्वामी विवेकानंद पर एक रूपक वृत्त चित्र के निर्माण के संबंध में पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट, नई दिल्ली से था।

अन्य प्रस्तावों पर कार्यान्वयन हेतु अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है।

## माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दांडी में की गई घोषणाओं का कार्यान्वयन

माननीय प्रधान मंत्री द्वारा की गई घोषणाओं में से एक घोषणा के कार्यान्वयन के लिए महात्मा गांधी और ऐतिहासिक दांडी मार्च में उनके साथ चलने वाले 78 अन्य अनुयायियों की प्रतिमाओं का डिजाइन तैयार करने और उनका निर्माण करने संबंधी कार्यविधियां तय करने के लिए 7 जून, 2005 को दांडी स्मारक समिति गठित की गई। इस समिति को पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री गोपालकृष्ण गांधी की अध्यक्षता में 21 जुलाई, 2009 को पुनर्गठित किया गया। यह निर्णय किया गया कि यह प्रतिमा 'भव्य प्रतिमा' या अनेक प्रतिमाओं के बजाय एक राष्ट्रीय स्मारक होगा। 26 मार्च, 2010 को इस समिति का फिर से पुनर्गठन किया गया और इसे उच्चस्तरीय समिति का दर्जा दिया गया।



5 अप्रैल 1930 को महात्मा गाँधी नमक उठाते हुए  
डाँडी समुद्र किनारे पर

समिति ने निम्नलिखित की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की हैं (i) 'दीवा-दांडी' या 'जीवंत राष्ट्रीय स्मारक' के लिए मूल डिजाइन को अंतिम रूप देना (गुजराती भाषा में *दीवा* का अर्थ है प्रकाश का भंडार) (ii) राष्ट्रीय स्मारक के लिए इस्तेमाल किए जाने वाली सामग्रियों की पहचान करना (iii) आईआईटी मुंबई को डिजाइन समन्वयक एजेंसी के रूप में चुनना (iv) यह सुनिश्चित करना कि उक्त स्मारक पूर्णतः 'हरित' स्मारक होगा और इसके लिए लागू पर्यावरण नियमों का अनुपालन किया जाएगा।

सैफी विला, जहां गांधी जी ने 5 अप्रैल, 1930 को नमक मार्च पूरा किया था, में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इस अवधि के दौरान 73.00 लाख रु. की लागत से जीर्णोद्धार कार्य किया गया है।

### गांधी विरासत स्थल पोर्टल की स्थापना

अप्रैल, 2006 में सरकार ने गांधी विरासत स्थल (जीएचएस) पैनल गठित किया था। 26 नवंबर, 2008 को प्रस्तुत रिपोर्ट में अन्य बातों के साथ-साथ साबरमती आश्रम परिरक्षण एवं स्मारक न्यास द्वारा गांधी विरासत स्थल पोर्टल को 1 सितम्बर 2010 तक तैयार करने की सिफारिश की थी।

गांधी विरासत स्थल पैनल की एक सिफारिश 'गांधी विरासत स्थल-एक वृहत् सूची' का प्रकाशन भी थी। यह कार्य प्रकाशन प्रभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा किया गया। संस्कृति मंत्रालय ने सितंबर, 2010 में प्रकाशन विभाग को 21.55 लाख रु. जारी किए हैं।

### सरदार वल्लभ भाई पटेल स्मारक



सरदार वल्लभ भाई पटेल

स्मारक के उन्नयन हेतु सरदार पटेल स्मारक सोसायटी शाहीबाग, अहमदाबाद को 17 करोड़ रु. तथा सरदार पटेल न्यास करमसाद को 3.00 करोड़ की राशि प्रदान की गई है। इस उन्नयन कार्य में नए बहुउद्देश्यीय हॉल, अनुसंधान केंद्र, पुस्तकालय तथा विश्राम गृह का सृजन, स्थायी प्रदर्शनी पुस्तकालय हेतु बेसमेंट का उन्नयन, ऊपरी ढांचे का संरक्षण और उन्नयन तथा फर्शों का नवीकरण और उन्नयन शामिल है।

### स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान में विश्वविद्यालयों में पीठों की स्थापना

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ के समारोह के भाग के रूप में 5-5 करोड़ रु. की अक्षय निधि के साथ स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में विभिन्न विश्वविद्यालयों में 12 पीठों का अनुमोदन किया गया। इन पीठों का अनिवार्य दायित्व भारत के स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक दायरे में अनुसंधान से संबंधित है। स्वतंत्रता संग्राम और महापुरुषों जिनके नाम से पीठों की स्थापना की गई है और उनके साथियों से संबद्ध स्मरणीय वस्तुओं और पुस्तकों के संकलन को प्राथमिकता दी जानी है।

इस संदर्भ में मंत्रालय ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने शहीद भगत सिंह पीठ, इग्नू में बहादुरशाह जफर, जनरल शाह नवाज, आईएनए, शहीद करतार सिंह सराभा पीठों, दिल्ली विश्वविद्यालय में अरुणा आसफअली और तात्या टोपे, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में सैफुद्दीन किचलू, ए.एम.ख्वाजा, एम.ए. अंसारी और रफी अहमद किदवई पीठों के संबंध में 2-2 करोड़ रु. की अक्षय निधि जारी की है।

### श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरु-ता-गद्दी का त्रैशताब्दी स्मरणोत्सव

सरकार ने वर्ष 2008 में नांदेड महाराष्ट्र में गुरु ग्रंथ साहिब की गुरु-ता-गद्दी की त्रैशताब्दी का स्मरणोत्सव मनाया था।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरु-ता-गद्दी की त्रैशताब्दी

## नांदेड़ में गुरुद्वारा सचखण्ड श्री हज़ूर साहिब में त्रैशताब्दी समारोह

आनंदपुर साहिब और तलवंडी साबू, पंजाब के विकास के लिए स्मरणोत्सव मनाने के दौरान शुरू किए गए विकास कार्य को पूरा करने के लिए पंजाब राज्य सरकार को अब तक चार किस्तों में 146.38 करोड़ रु. जारी किए गए हैं।

## जलियांवाला बाग स्मारक न्यास

पुनः सुदृढ़ीकरण परियोजना के भाग के रूप में दर्शक सुविधा केंद्र, फ्रंट प्लाजा, एम्पिथियेटर के निर्माण, मुक्ताकाश वीथि के निर्माण तथा दीवारों पर गोलियों के निशान के संरक्षण हेतु मोटे शीशे की दीवारों की संस्थापना सहित विकास कार्यकलाप शुरू किए गए।

## जलियांवाला बाग स्मारक

यह कार्य आईटीडीसी के माध्यम से करवाया गया। इन विकास कार्यकलापों के अलावा लाइट एंड साउंड शो स्थापित किया गया और 13 अप्रैल, 2010 को इसका उद्घाटन किया गया।

## 5.2

### मंत्रालय से अनुदान

---

## सारणी-I

### वार्षिक योजना वर्ष 2010-11 तथा वर्ष 2010-12\* के लिए आबंटन

(लाख रुपए)

| क्र. सं. | क्षेत्र                            | वार्षिक योजना 2010-11 | कुल आबंटन का प्रतिशत | आबंटन का पूंजीगत | वार्षिक योजना 2011-12 | कुल आबंटन का प्रतिशत | आबंटन का पूंजीगत |
|----------|------------------------------------|-----------------------|----------------------|------------------|-----------------------|----------------------|------------------|
| 1        | 2                                  | 3                     | 4                    | 5                | 6                     | 7                    | 8                |
| 1        | निदेशक और प्रशासन                  | 100.00                | 0.14                 |                  |                       |                      |                  |
| 2        | संवर्धन और प्रसार                  | 1704.00               | 23.13                |                  |                       |                      |                  |
| 3        | पुरातत्व                           | 15000.00              | 20.41                | 2400.00          |                       |                      |                  |
| 4        | अभिलेखागार और अभिलेखीय पुस्तकालय   | 3730.00               | 5.07                 | 645.00           |                       |                      |                  |
| 5        | संग्रहालय                          | 12849.00              | 17.48                | 850.00           |                       |                      |                  |
| 6        | मानव विज्ञान एवं नृजाति विज्ञान    | 2650.00               | 3.61                 | 400.00           |                       |                      |                  |
| 7        | सार्वजनिक पुस्तकालय                | 6855.00               | 9.33                 | 5.00             |                       |                      |                  |
| 8        | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र | 3000.00               | 4.08                 |                  |                       |                      |                  |
| 9        | बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन संस्थान   | 2606.00               | 3.55                 |                  |                       |                      |                  |
| 10       | स्मारक एवं अन्य                    | 9706.00               | 13.21                |                  |                       |                      |                  |
|          | <b>कुल</b>                         | <b>73500.00</b>       | <b>100.00</b>        | <b>4300.00</b>   | <b>0.00</b>           | <b>0.00</b>          | <b>0.00</b>      |

टिप्पणी : पूर्वोत्तर के कार्यकलापों के लिए आबंटन संबंधित क्षेत्रों में शामिल किए गए हैं।

\* आबंटन अभी किया जाना है।



## सारणी-II

### 9वीं और 10वीं योजना का आबंटन एवं व्यय तथा 11वीं योजना का आबंटन

(लाख रुपए)

| क्र. सं. | क्षेत्र                                               | 9वी योजना आबंटन | 9वी योजना व्यय  | 10वी योजना आबंटन | 10वी योजना व्यय  | 11वी योजना आबंटन |
|----------|-------------------------------------------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|
| 1        | 2                                                     | 3               | 4               | 5                | 6                | 7                |
| 1        | निदेशन और प्रशासन                                     | 350.00          | 161.87          | 439.44           | 273.03           | 500.00           |
| 2        | संवर्धन और प्रसार                                     | 22740.00        | 21355.29        | 36243.00         | 45478.11         | 80294.00         |
| 3        | पुरातत्व                                              | 18249.00        | 14389.64        | 28483.00         | 30410.73         | 65000.00         |
| 4        | अभिलेखागार और अभिलेखीय पुस्तकालय                      | 4335.00         | 2413.07         | 7411.00          | 6032.49          | 10300.00         |
| 5        | संग्रहालय                                             | 23775.00        | 14849.80        | 30413.00         | 31420.70         | 61000.00         |
| 6        | मानव विज्ञान एवं नृजाति विज्ञान                       | 4700.00         | 3167.11         | 4002.00          | 4205.58          | 6800.00          |
| 7        | सार्वजनिक पुस्तकालय                                   | 11296.00        | 5404.59         | 13105.00         | 12176.25         | 36450.00         |
| 8        | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र                    | 401.00          | 1167.00         | 9000.00          | 412.00           | 14000.00         |
| 9        | बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन संस्था                       | 1950.00         | 2057.89         | 4569.00          | 4511.06          | 7696.00          |
| 10       | स्मारक एवं अन्य व्यय                                  | 3845.00         | 2252.16         | 4934.56          | 6173.49          | 16300.00         |
| 11       | भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के समारोह          | 400.00          | 175.68          | -                | -                | -                |
| 12       | सिक्किम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए प्रावधान*      | -               | 508.00          | 15400.00         | 21.00            | 35240.00         |
| 13       | भवन परियोजनाएं                                        |                 |                 | 18000.00         | 11515.53         | 18831.00         |
|          | <b>कुल</b>                                            | <b>92041.00</b> | <b>67902.10</b> | <b>172000.00</b> | <b>152629.00</b> | <b>352411.00</b> |
|          | *व्यय में प्रत्येक क्षेत्र में शामिल है               |                 |                 |                  |                  |                  |
|          | पिछली पंचवर्षीय योजना की तुलना में प्रतिशत में वृद्धि |                 |                 | 86.87            |                  | 104.89           |

**सारणी-III**  
**कला और संस्कृति संबंधी वर्षवार**  
**बजट अनुमान और व्यय**  
**(केंद्रीय क्षेत्र)**

[illegible]

अनुलग्नक-III

वर्ष 2010-11 तथा 2011-12 के दौरान संस्कृति मंत्रालय  
का स्कीम/संगठन-वार वित्तीय आबंटन  
(योजनागत/योजनेतर)

(करोड़ रुपए)

| क्र. सं. | मद                                                            | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|---------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 1        | भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली                          | योजनागत         | 121.00             | 139.78                 |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 260.00             | 260.00                 | 287.00              |
| 2        | राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली                                | योजनागत         | 10.00              | 10.00                  |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 7.75               | 7.75                   | 8.45                |
| 3        | भारतीय संग्रहालय, कोलकाता                                     | योजनागत         | 12.00              | 7.89                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 5.95               | 5.95                   | 6.75                |
| 4        | सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद                                  | योजनागत         | 10.00              | 10.00                  |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 8.45               | 8.45                   | 9.12                |
| 5        | विक्टोरिया मैमोरियल हॉल, कोलकाता                              | योजनागत         | 11.00              | 6.01                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 3.30               | 3.30                   | 3.70                |
| 6        | राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली                     | योजनागत         | 7.00               | 13.00                  |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 3.85               | 3.85                   | 4.25                |
| 7        | नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली               | योजनागत         | 5.26               | 8.60                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 9.30               | 9.30                   | 9.90                |
| 8        | इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद                                  | योजनागत         | 2.50               | 2.04                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 1.98               | 1.75                   | 2.15                |
| 9        | राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता                    | योजनागत         | 21.00              | 21.00                  |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 24.25              | 24.25                  | 27.60               |
| 10       | राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ | योजनागत         | 2.20               | 2.20                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 3.14               | 3.14                   | 3.45                |
| 11       | भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता                        | योजनागत         | 10.50              | 8.50                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 16.25              | 16.25                  | 17.85               |
| 12       | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल                  | योजनागत         | 9.50               | 7.10                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 2.90               | 2.90                   | 3.10                |
| 13       | राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली                               | योजनागत         | 5.00               | 5.00                   |                     |
|          |                                                               | योजनेतर         | 14.50              | 14.50                  | 15.90               |

(करोड़ रुपए)

| क्र. सं. | मद                                                         | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 14       | खुदा बख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना                   | योजनागत         | 1.50               | 0.05                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 2.02               | 1.91                   | 2.25                |
| 15       | टी.एम.एस.एस.एम. लाइब्रेरी, तंजावुर                         | योजनागत         | 1.10               | 0.87                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 0.00               | 0.00                   | 0.00                |
| 16       | रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर                               | योजनागत         | 4.05               | 1.24                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 1.18               | 1.18                   | 1.25                |
| 17       | विज्ञान शहर                                                | योजनागत         | 12.00              | 12.00                  |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 18       | एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता                                  | योजनागत         | 8.00               | 7.00                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 7.70               | 7.70                   | 8.45                |
| 19       | केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह                        | योजनागत         | 8.50               | 7.30                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 4.20               | 4.93                   | 5.00                |
| 20       | केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी           | योजनागत         | 5.80               | 5.80                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 6.90               | 6.90                   | 7.60                |
| 21       | तिब्बती कार्य एवं अभिलेखीय पुस्तकालय, धर्मशाला             | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 1.20               | 1.20                   | 1.25                |
| 22       | नामग्याल तिब्बती विज्ञान अनुसंधान संस्थान, गंगटोक          | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 0.42               | 0.42                   | 0.62                |
| 23       | बौद्ध एवं तिब्बती संस्थानों के विकास के लिए वित्तीय सहायता | योजनागत         | 3.50               | 2.50                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 24       | राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता                               | योजनागत         | 15.00              | 15.00                  |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 21.50              | 21.50                  | 23.60               |
| 25       | केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता                        | योजनागत         | 0.60               | 0.60                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 2.02               | 2.02                   | 2.15                |
| 26       | राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, मुम्बई                          | योजनागत         | 0.20               | 0.20                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 0.30               | 0.30                   | 0.30                |
| 27       | केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, नई दिल्ली                     | योजनागत         | 2.40               | 1.90                   |                     |
|          |                                                            | योजनेतर         | 1.95               | 1.95                   | 1.55                |

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद                                                                                   | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|--------------------------------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 28       | दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली                                                      | योजनागत         | 5.00               | 5.67                   |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 10.70              | 10.70                  | 11.70               |
| 29       | कोन्नेमारा पब्लिक लाइब्रेरी, चेन्नई                                                  | योजनागत         | 0.60               | 0.60                   |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 0.35               | 0.35                   | 0.35                |
| 30       | राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता                                       | योजनागत         | 30.00              | 35.00                  |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 2.90               | 2.90                   | 3.44                |
| 31       | साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली                                                           | योजनागत         | 10.50              | 11.76                  |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 6.30               | 6.28                   | 7.00                |
| 32       | संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली                                                        | योजनागत         | 11.50              | 19.00                  |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 7.10               | 7.10                   | 7.80                |
| 33       | ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली                                                          | योजनागत         | 7.00               | 9.14                   |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 6.15               | 6.15                   | 6.76                |
| 34       | राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली                                                  | योजनागत         | 13.00              | 15.15                  |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 6.80               | 6.80                   | 7.70                |
| 35       | सांस्कृतिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली                                 | योजनागत         | 10.00              | 13.00                  |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 3.13               | 3.13                   | 3.45                |
| 36       | स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवन अनुदान                                           | योजनागत         | 5.00               | 3.90                   |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 37       | विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं के लिए व्यावसायिक समूहों तथा व्यक्तियों को वित्तीय सहायता | योजनागत         | 25.00              | 25.00                  |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 1.55               | 1.55                   | 1.55                |
| 38       | भारत महोत्सव                                                                         | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 4.10               | 1.55                   | 3.75                |
| 39       | शंकर अंतर्राष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता                                                  | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 0.03               | 0.03                   | 0.03                |
| 40       | सांस्कृतिक संगठनों का विकास                                                          | योजनागत         | 3.00               | 6.60                   |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 41       | राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक संगठनों को सहायता                                      | योजनागत         | 5.00               | 5.00                   |                     |
|          |                                                                                      | योजनेतर         | 3.00               | 3.00                   | 3.10                |



(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद                                                                                                                                                                | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 42       | साहित्यिक कार्यकलापों में कार्यरत संस्थान एवं व्यक्ति                                                                                                             | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 0.10               | 0.10                   | 0.10                |
| 43       | जनजातीय लोक कलाओं के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता                                                                                                                | योजनागत         | 0.25               | 0.25                   |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 44       | क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र                                                                                                                                       | योजनागत         | 14.00              | 12.95                  |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 45       | मंच, साहित्य एवं प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति प्रदान करना                                                    | योजनागत         | 7.00               | 7.00                   |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 2.13               | 2.13                   | 2.35                |
| 46       | लेखन, कला और इसी प्रकार के जीवन से संबंधित अन्य क्षेत्रों में ऐसे विख्यात व्यक्तियों जो विषम परिस्थितियों में हो सकते हैं, को वित्तीय सहायता प्रदान करने की स्कीम | योजनागत         | 4.50               | 9.40                   |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 2.20               | 2.20                   | 2.35                |
| 47       | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली                                                                                                                           | योजनागत         | 10.00              | 8.43                   |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 4.20               | 3.89                   | 4.52                |
| 48       | नव नालंदा महाविहार एवं ह्वेन – सांग स्मारक                                                                                                                        | योजनागत         | 3.20               | 2.20                   |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 1.58               | 1.58                   | 1.80                |
| 49       | राष्ट्रीय स्मारकों (सरकार वल्लभभाई पटेल स्मारक का विकास और राजेन्द्र प्रसाद स्मारक का विकास तथा इसे सुव्यवस्थित रखना) का विकास और अनुरक्षण                        | योजनागत         | 15.00              | 15.00                  |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 1.70               | 1.70                   | 1.50                |
| 50       | स्वैच्छिक संगठनों को शताब्दियां/जयंती समारोह मनाने के लिये वित्तीय सहायता (1) रबीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती (2) स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयंती            | योजनागत         | 30.00              | 26.45                  |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 1.80               | 1.80                   | 1.80                |
| 51       | खालसा विरासत परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता                                                                                                                     | योजनागत         | 8.00               | 5.00                   |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 0.00               | 0.00                   | 0.00                |
| 52       | अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यकलाप और भारत मैत्री सोसायटी को अनुदान                                                                                              | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                                                                                                   | योजनेतर         | 0.70               | 3.25                   | 1.00                |

(करोड़ रुपए)

| क्र. सं. | मद                                                                      | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|-------------------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 53       | पुस्तक एवं कला वस्तुओं की प्रस्तुति                                     | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 0.03               | 0.03                   | 0.03                |
| 54       | सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत शिष्टमंडल                   | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 0.80               | 0.80                   | 0.90                |
| 55       | बच्चों के लिए बहुउद्देशीय सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना                 | योजनागत         | 3.00               | 1.75                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 56       | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली                           | योजनागत         | 25.00              | 22.68                  |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 57       | संस्कृति मंत्रालय सचिवालय                                               | योजनागत         | 1.00               | 1.40                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 15.00              | 15.00                  | 17.00               |
| 58       | कलाक्षेत्र, चेन्नई                                                      | योजनागत         | 3.00               | 2.66                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 4.10               | 4.10                   | 4.50                |
| 59       | मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान                             | योजनागत         | 6.50               | 5.50                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 1.05               | 1.05                   | 1.08                |
| 60       | राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान | योजनागत         | 4.00               | 4.00                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 0.25               | 0.19                   | 0.27                |
| 61       | क्षेत्रीय एवं स्थानीय संग्रहालयों का संवर्धन एवं सुदृढ़ीकरण             | योजनागत         | 14.50              | 14.50                  |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 62       | गांधी शांति पुरस्कार                                                    | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 1.55               | 1.55                   | 1.55                |
| 63       | भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण की 2550वीं वर्षगांठ                        | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         | 0.45               | 0.45                   | 0.30                |
| 64       | राष्ट्रीय संस्कृति निधि                                                 | योजनागत         | 0.01               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 65       | हिमालयी कला एवं संस्कृति के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता               | योजनागत         | 0.75               | 0.75                   |                     |
|          |                                                                         | योजनेतर         |                    |                        |                     |

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद                                                                                  | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|-------------------------------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 66       | संस्कृति मंत्रालय की ज्ञान संस्थाओं में विद्वानों को नियुक्त करने की लचीली व्यवस्था | योजनागत         | 1.50               | 1.50                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 67       | राष्ट्रीय मंच कला केन्द्र की स्थापना                                                | योजनागत         | 1.00               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 68       | राष्ट्रीय पाण्डुलिपि परिरक्षण मिशन                                                  | योजनागत         | 7.50               | 7.00                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 69       | श्रुत्य-दृश्य सामग्रियों के लिये राष्ट्रीय अभिलेखागार                               | योजनागत         | 1.00               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 70       | एशियाटिक सोसायटी, मुम्बई                                                            | योजनागत         | 1.00               | 1.00                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 71       | अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण केन्द्र रोम को अंशदान                                        | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         | 0.12               | 0.12                   | 0.12                |
| 72       | विश्व विरासत निधि को अंशदान                                                         | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         | 0.08               | 0.08                   | 0.08                |
| 73       | यूनेस्को को अंशदान                                                                  | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         | 0.18               | 0.18                   | 0.18                |
| 74       | अंतर्राष्ट्रीय कला परिषद और संस्कृति अभिकरण परिसंघ (आईएफएसीसीए) को अंशदान           | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         | 0.05               | 0.05                   | 0.05                |
| 75       | वृंदावन अनुसंधान संस्थान                                                            | योजनागत         | 0.43               | 0.43                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         | 0.17               | 0.17                   | 0.20                |
| 76       | पूर्वोत्तर क्षेत्र में कार्यकलाप कार्यक्रम                                          | योजनागत         | 73.50              | 73.50                  |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 77       | तिब्बत हाउस, नई दिल्ली                                                              | योजनागत         | 0.50               | 0.50                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 78       | तवांग मठ, अरुणाचल प्रदेश                                                            | योजनागत         | 0.01               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 79       | श्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म शताब्दी समारोह                                     | योजनागत         | 2.00               | 2.00                   |                     |
|          |                                                                                     | योजनेतर         | 0.05               | 0.05                   | 0.01                |

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद                                                                                                                          | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 80       | गैर-सरकारी सदस्यों को टीए/डीए सुविधाएं                                                                                      | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         | 0.03               | 0.03                   | 0.03                |
| 81       | संस्कृति मंत्रालय के सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के लिए भवन परियोजना                                                         | योजनागत         | 43.00              | 43.00                  |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 82       | गुरु-ता-गद्दी का त्रिशताब्दी समारोह                                                                                         | योजनागत         |                    |                        |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         | 0.01               | 83.21                  | 0.01                |
| 83       | प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 1857 की 150वीं वर्षगांठ मनाना                                                                     | योजनागत         | 10.00              | 9.00                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         | 1.00               | 1.00                   | 0.40                |
| 84       | राष्ट्रीय गांधी विरासत स्थल मिशन                                                                                            | योजनागत         | 5.00               | 4.00                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 85       | अमूर्त विरासत एवं सांस्कृतिक विविधता के क्षेत्र में सुरक्षा एवं अन्य रक्षात्मक उपायों की स्कीम (यूनेस्को सम्मेलन से उद्भूत) | योजनागत         | 0.50               | 0.50                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         | 0.00               | 0.00                   | 0.00                |
| 86       | बौद्धिक संपत्ति अधिकार के क्षेत्र में जागरूकता पैदा करना और सृजनशील कलाकारों के लिए राष्ट्रीय आईपीआर प्रकोष्ठ स्थापित करना  | योजनागत         | 0.00               | 0.00                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 87       | भारतीय संस्कृति एवं विरासत के बारे में संवर्धन एवं जागरूकता के प्रसार की स्कीम                                              | योजनागत         | 0.01               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 88       | सांस्कृतिक विरासत स्वैच्छिक स्कीम                                                                                           | योजनागत         | 0.01               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 89       | सांस्कृतिक उद्योगों के लिए पायलट स्कीम                                                                                      | योजनागत         | 0.50               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 90       | विदेश में भारतीय साहित्य                                                                                                    | योजनागत         | 1.00               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 91       | सांस्कृतिक संसाधन प्रबंधन केन्द्र                                                                                           | योजनागत         | 0.01               | 0.01                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 92       | महानगरों में संग्रहालयों के आधुनिकीकरण की स्कीम                                                                             | योजनागत         | 6.00               | 6.00                   |                     |
|          |                                                                                                                             | योजनेतर         |                    |                        |                     |

(करोड़ रुपए)

| क्र. सं. | मद                                                        | योजनागत योजनेतर | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12* |
|----------|-----------------------------------------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|---------------------|
| 93       | राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन की स्थापना, आगे चलकर आयोग का गठन | योजनागत         | 10.10              | 0.20                   |                     |
|          |                                                           | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 94       | जलियांवाला बाग स्मारक का विकास                            | योजनागत         | 0.50               | 0.50                   |                     |
|          |                                                           | योजनेतर         | 0.50               | 0.50                   | 0.50                |
| 95       | केन्द्रीय हिमालयी अध्ययन संस्थान                          | योजनागत         | 0.01               | 0.01                   |                     |
|          |                                                           | योजनेतर         |                    |                        |                     |
| 96       | प्रख्यात कलाकारों को यात्रा अनुदान                        | योजनागत         | 0.00               | 0.00                   |                     |
|          |                                                           | योजनेतर         | 0.05               | 0.05                   | 0.50                |
| 97       | राष्ट्रीय कलाकार कल्याण निधि स्कीम                        | योजनागत         | 5.00               | 0.44                   |                     |
|          |                                                           | योजनेतर         |                    |                        |                     |
|          | <b>योग</b>                                                | <b>योजनागत</b>  | <b>735.00</b>      | <b>735.00</b>          |                     |
|          |                                                           | <b>योजनेतर</b>  | <b>503.00</b>      | <b>503.00</b>          | <b>553.00</b>       |

\* बजट अनुमान 2011-12 (योजनागत) के अंतर्गत आबंटन अभी किए जाने हैं।



## मंच कलाएं

इस मंत्रालय का मंच कला प्रभाग देश में सांस्कृतिक कार्यकलापों को बढ़ावा देने के कार्य से जुड़े संगठनों/व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए निम्नलिखित योजनाएं संचालित कर रहा है :-

1. विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं से जुड़े व्यावसायिक समूहों तथा व्यक्तियों के लिए वित्तीय सहायता योजना।
2. स्टूडियो थिएटर सहित भवन अनुदान योजना।

योजनाओं का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:-

1. विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं से जुड़े व्यावसायिक समूहों तथा व्यक्तियों के लिए वित्तीय सहायता योजना

मंच कला के क्षेत्र में मंत्रालय द्वारा संचालित यह एक फ्लैगशिप योजना है। इस योजना के तहत थिएटर समूहों, संगीत वृन्दों, बाल थिएटर, एकल कलाकारों तथा सभी प्रकार के मंच कला कार्यकलापों हेतु वित्तीय सहायता दी जाती है।

इस योजना के प्रमुख घटक इस प्रकार हैं :-

- (i) वेतन अनुदान
- (ii) निर्माण अनुदान

वेतन अनुदान के तहत 1.4.2008 से सहायता दर को दोगुना कर दिया गया है; और अब गुरुओं को भुगतान की जाने वाली राशि 10,000 रु. प्रतिमाह और कलाकारों के लिए यह 6000 रु. प्रतिमाह है। इस योजना को 1.4.2009 से पुनः संशोधित किया गया है और निम्नलिखित पहलुओं के संबंध में वेतन/निर्माण अनुदान में संशोधन किया गया :-

- (i) वेतन अनुदान के प्रयोजनार्थ समूह के एक भाग के तौर पर समर्थित कलाकारों की अधिकतम संख्या 20 से 25 कर दी गई है।
- (ii) निर्माण अनुदान हेतु अधिकतम राशि को 1,00,000 रु. से बढ़ाकर 5,00,000 रु. प्रति परियोजना कर दिया गया है।



किसी एक वर्ष में वित्तीय सहायता जारी किया जाना आवेदन प्राप्त होने तथा उन पर विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर निर्भर होता है। चालू मामलों में वित्तीय सहायता का आगे जारी किया जाना इस योजना के प्रावधानों के अनुसार अपेक्षित दस्तावेजों के प्राप्त होने पर निर्भर होता है। वर्ष 2010-11 के दौरान इस योजना के तहत 30 करोड़ रु. की राशि संस्वीकृत की गई है।

## 2. स्टूडियो थिएटरों सहित भवन अनुदान योजना

सांस्कृतिक संगठनों को भवन अनुदान देने की तत्कालीन योजना में संशोधन किया गया है और 7/1/11 से इसे "स्टूडियो थिएटरों सहित भवन अनुदान योजना" के नाम से पुनः प्रारंभ किया गया है। इस योजना का उद्देश्य कलाकारों के लिए समुचित रूप से सुसज्जित प्रशिक्षण, अभ्यास तथा प्रदर्शन हेतु स्थान सृजित करने के प्रयास के बावत स्वैच्छिक सांस्कृतिक

संगठनों तथा सरकारी सहायता प्राप्त सांस्कृतिक संगठनों एवं सरकारी सहायता प्रदत्त सांस्कृतिक संगठनों को सहायता प्रदान करता है। स्टूडियो थिएटर एक नया घटक है जिसकी शुरुआत की गई है जिसके तहत 60 प्रतिशत सरकारी सहायता (महानगरों में 50 लाख रु. तक तथा अन्य स्थानों पर 25 लाख रु. तक) से थिएटर तथा अन्य मंच कलाओं हेतु लघु व नवाचारी स्थान बनाए जा सकते हैं। यह अनुदान तीन किस्तों 40 प्रतिशत, 30 प्रतिशत तथा 30 प्रतिशत में देय है।

किसी वर्ष विशेष में वित्तीय सहायता राशि जारी किया जाना आवेदन प्राप्त होने तथा उन पर विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर निर्भर होगा। चालू मामलों में, वित्तीय सहायता का आगे जारी किया जाना इस योजना के प्रावधानों के अनुसार अपेक्षित दस्तावेजों के प्राप्त होने पर निर्भर होता है। वर्ष 2010-11 के दौरान, तत्कालीन योजना के तहत चल रहे मामलों में जारी किए जाने के लिए 1.20 करोड़ रु. की राशि संस्वीकृत की गई है।



माननीय संस्कृति मंत्री द्वारा शुभप्रसन्न पुस्तक का लोकार्पण

## छात्रवृत्ति तथा अध्येतावृत्ति

छात्रवृत्ति तथा अध्येतावृत्ति प्रभाग देश में सांस्कृतिक कार्यकलापों को बढ़ावा देने के कार्य से जुड़े व्यक्तियों/संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए निम्नलिखित योजनाओं का संचालन करता है :

1. विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुड़े युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियां
2. संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति
3. गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा सांस्कृतिक विषयों पर आयोजित सेमिनारों, उत्सवों एवं प्रदर्शनियों हेतु वित्तीय सहायता योजना (सांस्कृतिक समारोह अनुदान योजना)
4. तैगोर स्मरणोत्सव अनुदान योजना (टीसीजीएस)
5. रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक संस्थान, कोलकाता हेतु वित्तीय सहायता
6. सांस्कृतिक शोध हेतु तैगोर राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति (टीएनएफसीआर)

छात्रवृत्ति तथा अध्येतावृत्ति प्रभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है :

1. **विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुड़े युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति प्रदान करने की योजना**

भारतीय शास्त्रीय नृत्य, भारतीय शास्त्रीय संगीत, नाट्य कला, दृश्य कला, लोक कला, परम्परागत एवं स्वदेशी कला आदि क्षेत्रों में उच्च प्रशिक्षण हेतु होनहार युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। इस योजना के तहत दो वर्ष तक की अवधि के लिए प्रत्येक वर्ष 400 छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। छात्रवृत्ति की राशि 5000 रु. प्रति माह होती है।

18-25 वर्ष की आयु वर्ग के कलाकार इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। चूंकि यह छात्रवृत्ति उच्च प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दी जाती है, अतः आवेदक को अपने गुरु/संस्थान से कम से कम पांच वर्षों का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।



## 2. संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने की योजना

मंच कला, साहित्य कला, प्लास्टिक कला, भारत-विद्या, पुरालेख शास्त्र, संस्कृति समाज शास्त्र, सांस्कृतिक अर्थशास्त्र, स्मारकों का संरचनात्मक एवं इंजीनियरी पहलू, मुद्राशास्त्र, संरक्षण के वैज्ञानिक एवं तकनीकी पहलू, कला एवं धरोहर के प्रबंधनमूलक पहलू और कला एवं सृजनात्मकता से जुड़े विषयों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग संबंधी अध्ययन के क्षेत्रों से जुड़े उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है।

अनुसंधानोन्मुखी परियोजनाओं को प्रारंभ करने हेतु अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है। यद्यपि शैक्षिक शोध एवं कार्यनिष्पादन से संबंधित शोध कार्यों को प्रोत्साहन दिया जाता है, आवेदकों से अपेक्षित होता है कि वे इस परियोजना को प्रारंभ करने के प्रयोजनार्थ अपनी क्षमता का सबूत दें। इन अध्येतावृत्तियों का आशय प्रशिक्षण देने, सेमिनार, कार्यशालाएं संचालित करने, अथवा आत्मकथा/कथा साहित्य आदि लिखने के लिए कतई नहीं है। वर्तमान वर्ष 2010-11 से इस योजना में निम्नलिखित संशोधन किए गए हैं :

- (i) किसी एक वर्ष में प्रदान की जाने वाली अध्येतावृत्तियों की संख्या 250 से बढ़ाकर 400 कर दी गई है। अतः वरिष्ठ तथा कनिष्ठ श्रेणियों में प्रदान की जाने वाली अध्येतावृत्तियों की संख्या प्रत्येक श्रेणी में 125 से बढ़ाकर 200 कर दी गई है।
- (ii) कनिष्ठ अध्येतावृत्ति की राशि 7,500 रु. प्रति माह से बढ़ाकर 10,000 रु. प्रति माह और वरिष्ठ अध्येतावृत्ति की राशि 15,000 रु. प्रति माह से बढ़ाकर 20,000 रु. कर दी गई है।
- (iii) मंच कला, साहित्य तथा प्लास्टिक कला के मामले में “स्नातक” संबंधी पात्रता शर्त को हटा दिया गया है परंतु संस्कृति से जुड़े नए क्षेत्रों हेतु यह यथावत है।
- (iv) वरिष्ठ अध्येतावृत्ति के मामले में ‘विशेषज्ञ समिति’ द्वारा “साक्षात्कार” लिए जाने संबंधी शर्त को हटा

दिया गया है जबकि यह कनिष्ठ अध्येतावृत्ति के लिए यथावत है।

## 3. गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा सांस्कृतिक विषयों पर आयोजित सेमिनारों, उत्सवों एवं प्रदर्शनियों हेतु वित्तीय सहायता योजना (सांस्कृतिक समारोह अनुदान योजना)

संस्कृति मंत्रालय ने ‘सेमिनार अनुदान योजना’ का एक वृहत एवं संशोधित रूप तैयार किया है जो अब “सांस्कृतिक समारोह अनुदान योजना” कहलाता है। इस योजना की विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

- (i) इसके तहत शोध परियोजनाओं, सेमिनारों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों आदि सहित उत्सव एवं प्रदर्शनियां शामिल हैं।
- (ii) किसी परियोजना विशेष के मामले में यह सहायता कुल परियोजना लागत के 75 प्रतिशत तक सीमित है परंतु अब सरकार का अंशदान पांच लाख रु. तक हो सकता है।
- (iii) अब से, इस सहायता हेतु गैर-सरकारी संगठनों, सोसाइटियों, न्यासों आदि के साथ-साथ विश्वविद्यालय विभाग तथा विश्वविद्यालय केन्द्र भी आवेदन कर सकेंगे।
- (iv) विगत में नए आवेदनों के लिए ‘सेमिनार अनुदान योजना’ वर्ष में केवल एक ही बार खुली होती थी जबकि नई “सांस्कृतिक समारोह अनुदान योजना” नए आवेदकों के लिए वर्ष भर खुली रहेगी।

## 4. टैगोर स्मरणोत्सव अनुदान योजना

इस मंत्रालय ने गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाने और टैगोर समारोह मनाने वाली गैर-सरकारी पहलों को तथा जिन उसूलों पर वे चले उन्हें सहयोग देने के लिए “टैगोर स्मरणोत्सव अनुदान योजना” नामक एक नई योजना प्रारंभ की है। इस योजना की विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

- (i) इस योजना के तहत रविन्द्रनाथ टैगोर के जीवन एवं कार्यों पर आधारित शोध परियोजनाओं, सेमिनारों,



सम्मेलन, संगोष्ठियों आदि के साथ-साथ उत्सव एवं प्रदर्शनियां भी शामिल हैं।

- (ii) किसी परियोजना विशेष के मामले में यह सहायता कुल परियोजना लागत के 75 प्रतिशत तक सीमित है परंतु अब सरकार का अंशदान पांच लाख रु. तक हो सकता है।
- (iii) गैर-सरकारी संगठनों, सोसाइटियों, न्यासों आदि के साथ-साथ विश्वविद्यालय विभाग तथा विश्वविद्यालय केन्द्र भी आवेदन करने के लिए पात्र हैं।
- (iv) यह योजना वर्ष भर मई, 2012 तक आवेदन करने हेतु खुली रहेगी।

#### 5. रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक संस्थान, कोलकाता को वित्तीय सहायता (राष्ट्रीय महत्व का एक सांस्कृतिक संगठन)

रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक संस्थान जो रामकृष्ण मिशन का एक शाखा केन्द्र है, का संचालन, प्रबंधन समिति द्वारा किया जाता है जिसमें प्रतिष्ठित विद्वान और समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़े विशिष्ट व्यक्ति शामिल हैं।

मानवजाति की एकता के आदर्श को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित यह संस्थान वर्षों से विश्व की समृद्ध संस्कृतियों के प्रति और अंतर-सांस्कृतिक मूल्यांकन, समझबूझ तथा एक-दूसरे के दृष्टिकोण को स्वीकारने – जो विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय समझबूझ और घरेलू स्तर पर राष्ट्रीय एकता के लिए एक सौहार्दपूर्ण दृष्टिकोण है, के प्रति प्रयत्नशील रहा है। इस प्रकार, यह संस्थान जो कुछ भी करता है उसका ध्येय दूसरों के दृष्टिकोण को सम्मान देना और इन्हें आत्मसात एवं स्वीकार करना है ताकि अपने को समृद्ध बनाया जा सके।

संस्थान के कार्यकलापों को समर्थन देने तथा इनका अनुरक्षण करने के लिए भारत सरकार तथा पश्चिम बंगाल सरकार इस संस्थान को वर्ष 1962 से ही अनुदान संस्वीकृत करती रही है।

#### 6. सांस्कृतिक शोध के लिए टैगोर राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति योजना

वर्ष 2009-10 से “स्कीम फॉर विजिटिंग फेलोज इन आर्ट, कल्चर एंड हेरीटेज” नामक एक योजना शुरू की है। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर इस योजना का “सांस्कृतिक शोध हेतु टैगोर राष्ट्रीय फेलोशिप” के रूप में पुनः नामकरण किया गया है। यह योजना विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों का बलवर्द्धन एवं इनमें नवजीवन संचार करने के प्रयोजनार्थ शुरू की गई है, जहां पांडुलिपियों, दस्तावेजों, पुरालेखों, पुरावशेषों, चित्रकारियों आदि के रूप में विशाल “खजाना” मौजूद है। इसका आशय हमारे सांस्कृतिक संसाधनों में गहन शोध को बढ़ावा देना है ताकि इन शोध परिणामों से राष्ट्र लाभान्वित हो सके। उदाहरण के तौर पर, संग्रहालयों में उनके संपूर्ण संग्रह का एक छोटा हिस्सा ही प्रदर्शनी के लिए रखा जा सकता है और इस योजना के तहत शोध अध्येताओं को उन वस्तुओं का विश्लेषण करने हेतु प्रोत्साहन मिलेगा जो प्रायः सार्वजनिक रूप से दर्शन हेतु उपलब्ध नहीं होती हैं।

- (i) प्रथम वर्ष में इस योजना के तहत मंत्रालय के नियंत्रणाधीन अथवा इसके द्वारा समर्थित 17 संगठनों को शामिल किया गया और परवर्ती वर्षों में और अधिक संगठनों को शामिल किया जा सकता है।
- (ii) यह योजना भारतीय तथा विदेशी शिक्षाविदों तथा शोधकर्ताओं, दोनों के लिए खुली है।
- (iii) ऐसे अध्येता तथा शोधकर्ता जिनकी मजबूत शैक्षिक या व्यावसायिक साख है और जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों के ज्ञान में उल्लेखनीय योगदान किया हो अथवा ऐसे व्यक्ति जिन्होंने कला या संस्कृति के किसी भी क्षेत्र में महत्वपूर्ण सृजनात्मक कार्य किया हो, इसके लिए पात्र हैं।
- (iv) अध्येतागण जिनके दिमाग में अच्छी परियोजना हो, वे संबंधित संस्थान प्रमुख से सम्पर्क करके परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते हैं। साथ ही, जो संस्थान अच्छी शोध परियोजना प्रारंभ करना चाहते हैं वे इस परियोजना को शुरू करने के लिए उपयुक्त अध्येता की तलाश में हो सकते हैं।



- (v) सामान्यतः अध्येतावृत्ति दो वर्ष के लिए दी जाएगी। इस योजना के तहत चुने गए अध्येताओं से अपेक्षा होगी कि वे संबंधित संस्थान में उपस्थित हों, क्योंकि इस योजना का उद्देश्य सांस्कृतिक संस्थाओं को शैक्षिक विशेषज्ञता प्रदान करना, उनके कार्यकलापों को शैक्षिक प्रबोधन प्रदान करना और अन्य संस्थाओं से दौरे पर आने वाले शिक्षाविदों के साथ तालमेल बिठाना है।
- (vi) अध्येताओं को उस संस्थान द्वारा हर संभव बुनियादी सहायता उपलब्ध कराई जाएगी जिससे वे संबद्ध हो और उनके लिए अध्ययन एवं शोध सामग्री हेतु राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थाओं के लाभ सुलभ होंगे।
- (vii) शैक्षिक संस्थाओं तथा शोध संस्थाओं में उपलब्ध सर्वोत्तम प्रतिभाओं को आकर्षित करने और साथ ही डोमेन ज्ञान सम्पन्न शोधकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए यह योजना सर्वोत्तम शर्तें, परिलाभ तथा सुविधाएं प्रदान करती है।
- (viii) ऐसे प्रोफेसर जो दो वर्ष के लिए पुनर्ग्रहणाधिकार पर हैं, उन्हें वेतन, भत्ते, एचआरए की प्रतिपूर्ति की जाएगी और वे सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा उन्हें दी जाने वाली सभी प्रकार की सहायता के अलावा परियोजना सहायता के रूप में प्रति वर्ष 3.5 लाख रु. (दो वर्ष के लिए) की राशि प्राप्त करने के हकदार होंगे।
- (ix) अध्येतावृत्ति के लिए चुने गए सेवानिवृत्त शिक्षाविद या शोधकर्ता, जिनकी विश्वसनीयता जांची-परखी हो, वे वित्तीय सहायता तथा संभार सहायता के अतिरिक्त 80,000 रु. प्रति माह का मानदेय प्राप्त करने के हकदार होंगे।
- (x) बाह्य स्थान के अध्येतागण “व्यवस्थापन भत्ता” प्राप्त करने के भी हकदार होंगे।
- (xi) राष्ट्रीय चयन समिति जिसमें जाने-माने विशेषज्ञ शामिल होंगे, प्रस्तावों का मूल्यांकन करके बैचों में अध्येतावृत्ति की मंजूरी प्रदान करेगी।
- (xii) वर्तमान में अध्येतावृत्तियों की कुल संख्या प्रति वर्ष 15 तक सीमित होगी और आने वाले वर्षों में इनकी संख्या बढ़ सकती है।

## 5.3

### विविध

## पूर्वोत्तर क्षेत्र में कार्यकलाप

5.3.1

### 1. राजा राम मोहन राय पुस्तकालय एवं प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

इस प्रतिष्ठान से वित्तीय सहायता प्राप्त करके अरुणाचल प्रदेश में राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय का विस्तार कार्य जारी है तथा इसके अतिरिक्त प्रतिष्ठान की विभिन्न मैचिंग एवं गैर-मैचिंग स्कीमों के कार्यान्वयन के अलावा प्रतिष्ठान से वित्तीय सहायता प्राप्त करके बीरचन्द्र राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, अगरतला, त्रिपुरा का आधुनिकीकरण कार्य भी किया जा रहा है।

### 2. गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर के साथ विशेष नजदीकी संबंध स्थापित करने हेतु भारत सरकार द्वारा शुरू की गई विशेष पहलों से प्रेरित होकर, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति इस क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के लिए पिछले एक दशक से व्यापक स्तर पर महिलाओं, बच्चों एवं युवाओं को शामिल करते हुए मूल्य-आधारित कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। पूर्वोत्तर राज्यों में समिति की कुछ नियमित पहलों में शामिल हैं – क्विज; गांधीवादी मूल्यों पर कार्यशालाएं; गांधी मेला साहित्यिक कार्यक्रम; बच्चों द्वारा सृजनात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए *शिशु पंचायतें*; समाज के शोषित वर्गों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं सेमिनार।

3-12 जून, 2010 के दौरान असम के विभिन्न स्कूलों में इस प्रकार की कई कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में विचार-विमर्श किए गए विषयों में दृष्टिकोण विकास, मूल्य एवं संचार शामिल थे। इन कार्यशालाओं में डिब्रूगढ़ के पांच स्कूलों के लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

समिति द्वारा यूनीसेफ, असम के सहयोग से 'शिशु मित्र – शिशु का दोस्त पंचायत' विषय पर एक दस-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन 20-30 अगस्त, 2010 को डिब्रूगढ़ में किया गया था।

इस कार्यशाला में बाल अधिकारों, सामुदायिक रंग-मंच, शिशु पंचायतों की कार्यप्रणाली तथा शिशु मित्रों की भूमिका से जुड़े हुए मुद्दों को बेहतर ढंग



से समझने के लिए अनुकरण अभ्यास के उपकरणों, भूमिका निभाना एवं सामुदायिक रंग-मंच का उपयोग किया गया था। यह देखने के लिए कि शिशु पंचायतें किस प्रकार कार्य कर रही थी तथा इनमें किस प्रकार से सुधार किया जा सकता है, प्रतिभागियों के साथ क्षेत्रीय दौरों का आयोजन किया गया। अक्टूबर-दिसम्बर, 2010 के दौरान डिब्रूगढ़ में शिशु मित्रों के कार्य के दायरे को बढ़ाने के लिए एवं शिशु मित्रों के क्षमता निर्माण कार्यक्रम हेतु कई अनुवर्ती कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया।

असम में युवा रिपोर्टर्स नेटवर्क प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 30 अगस्त, 2010 को जीएसडीएस द्वारा कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक न्यास (केजीएनएमटी) एवं यूनीसेफ के सहयोग से किया गया।

समिति ने मानव सेवा संघ के सहयोग से दिनांक 25 सितम्बर, 2010 को स्वाहिद कुशल कॉन्वेर हाई स्कूल, पाणिखैती, चन्द्रपुर, कामरूप मैट्रो डिस्ट्रिक्ट, असम में एक-दिवसीय शिशु ग्राम सभा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें विचार-विमर्श किए गए मुख्य मुद्दों में शिशु पंचायत द्वारा शुरू किया गया सुरोवी साक्षरता कार्यक्रम तथा स्थानीय तमुलबाड़ी शिव मंदिर परिसर में सुरोवी स्वच्छता कार्यक्रम एवं सुरोवी पार्क शामिल थे।

यह संकल्प लिया गया कि :

- क) तमुलबाड़ी शिव मंदिर परिसर में सुरोवी पार्क के विकास हेतु सुरोवी टीम द्वारा हर संभव प्रयास किया जाएगा। ग्राम सभा का यह मानना था कि पार्क के विकास हेतु बच्चे भी योगदान दे सकते हैं/निधियां प्राप्त कर सकते हैं।
- ख) सुरोवी साक्षरता कार्यक्रम को जिले के अन्य क्षेत्रों में भी विस्तारित किया जाएगा।

### नांगलेयर, मेघालय में कॉमिक्स कार्यशाला

दिनांक 9-11 अप्रैल, 2010 को पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग द्वारा समिति के सहयोग से केन्द्रीय विद्यालय, ईस्टर्न एयर कमांड, नांगलेयर, अपर शिलांग में एक तीन-दिवसीय 'गांधी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का थीम 'कॉमिक्स' के

माध्यम से गांधी के मूल्यों का संवर्धन करना था। विभिन्न स्कूलों के 37 विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया तथा महिला सशक्तिकरण, अहिंसा, गैर-भेदभाव, सादा जीवन, धूम्रपान एवं तम्बाकू का सेवन न करने जैसे मुद्दों पर कॉमिक्स बनाई।

समिति ने विभिन्न कस्तूरबा गांधी केन्द्रों एवं भारत के विभिन्न राज्यों में समिति के सहयोग से कार्य कर रहे अन्य संगठनों के प्रतिनिधियों हेतु इग्नू व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (आईआईवीईटी), शिलांग एवं ब्रह्मपुत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान (बीआईआरडी) के सहयोग से असम में 'कौशल विकास' पर एक, पांच-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन 25-30 जुलाई, 2010 को शिलांग में किया गया था। इस कार्यशाला में शामिल किए कुछ मुद्दे हैं—उद्यमिता विकास, उत्पादों का विपणन, उत्पाद मिश्रण, छोटे उपक्रमों का प्रबंधन एवं संचार कौशलों का विकास।

### छानगंगेई उछेक्कोन में बुनाई केन्द्र का उद्घाटन

निदेशक, जीएसडीएस, डा० सविता सिंह ने दिनांक 16 मई, 2010 को छानगंगेई उछेक्कोन, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर में एक व्यावसायिक बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन किया। यह केन्द्र गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति तथा कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर की एक संयुक्त पहल है। इस बुनाई केन्द्र में क्षेत्र की वंचित महिलाओं को काफी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान करने की अभिकल्पना की गई है।

मणिपुर के बच्चों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली तिमाही बाल पत्रिका 'नवाखोल' के तीसरे संस्करण को दिनांक 19 मई, 2010 को डा० सविता सिंह द्वारा जारी किया गया। इस समाचार-पत्र का प्रकाशन समिति द्वारा कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान के सहयोग से किया जाता है। इस पत्र के माध्यम से, बच्चों को उनसे संबंधित तथा उनके राज्य से संबंधित मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

दिनांक 22-23 जुलाई, 2010 को इम्फाल में मणिपुर के लुप्त हो रहे कलारूपों पर दो-दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार का मुख्य विषय लाई हराओबा उत्सव, खुनुंग ऐशई एवं लिकोन शाननाबा की लुप्त हो रही प्रवृत्तियां थी। इस सेमिनार में प्रागै-वैष्णवी मणिपुरी संस्कृति के इन परम्परागत रूपों को बचाने हेतु विशेष प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष (2010) मनाए जाने के अनुसरण में समिति ने कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान (केजीआईडी), मणिपुर के सहयोग से दिनांक 12 अगस्त, 2010 को मणिपुर में साल-भर चलने वाले कार्यक्रम 'युवा एवं बच्चे – कल की आशा' का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम की शुरुआत यूएन अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के तत्वावधान में की गई थी। इस शुभारंभ कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न जिलों की शिशु पंचायतों के सदस्यों एवं युवा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

### अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश की महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ किए गए अत्याचारों को दर्शाने के लिए, समिति ने *हार्नबिल विकास केन्द्र* (एचसीडी) के सहयोग से पिछले कुछ वर्षों से कई जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इसी प्रयास को जारी रखते हुए दिनांक 24 अक्टूबर, 2010 को एक नाटक 'लापिया' का मंचन किया गया। 'लापिया' अरुणाचल प्रदेश में न्यीसी रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं पर आधारित एवं न्यीसी जनजाति में व्याप्त एक बुराई है।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने एक दशक पहले चम्पारण में शुरू किए अपने विकास कार्यों को जारी रखा। गांधी विरासत के संरक्षण एवं इसे अपना प्राचीन गौरव प्रदान करने के संबंध में अपने चार्टर में प्रतिष्ठापित उद्देश्यों के एक भाग के रूप में, जीएसडीएस चम्पारण में कुछ बेसिक स्कूलों के पुनरुद्धार का कार्य कर रही है तथा समिति द्वारा महात्मा गांधी द्वारा आम लोगों के लिए अभिकल्पित की गई नई तालीम शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के प्रयास भी किए गए हैं।

### 3. भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

सांस्कृतिक विविधता एवं राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देने के लिए स्कूली बच्चों की पूर्वोत्तर से कोलकाता तक विरासत भ्रमण की एक नई स्कीम को शुरू किया गया।

- (i) पूर्वोत्तर से स्कूली बच्चों के विरासत भ्रमण स्कीम के अंतर्गत मिजोरम के तीन विद्यार्थी समूहों ने कोलकाता का दौरा किया।

### 4. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

ललित कला अकादमी ने प्रत्यक्ष तौर पर या अपने क्षेत्रीय केन्द्र,

कोलकाता के माध्यम से नियमित तौर पर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में राष्ट्रीय कला उत्सव, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों एवं सेमिनारों का आयोजन किया।

### 5. मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता

संस्थान ने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर आयोजित किए गए अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय-सेमिनारों/सम्मेलनों/संगोष्ठियों हेतु सहायता प्रदान की है। वर्ष 2010-11 के दौरान, संस्थान ने अपने पूर्वोत्तर कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों/सम्मेलनों/संगोष्ठियों का आयोजन तथा समर्थन किया:-

- मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान (एमएकेआईएस), कोलकाता द्वारा 7-8 सितम्बर, 2010 के दौरान राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश में "अरुणाचल प्रदेश : आधुनिकता एवं परम्परा के मुद्दे" विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।
- मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान ने सियू-का-फा इंटरनेशनल, मारघेरिता, असम के सहयोग से दिनांक 1-2 मई, 2010 को इंडिया क्लब, मारघेरिता में "पटकाई सीमा के लोग : समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था में परिवर्तन" विषय पर एक, दो-दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया।
- एमएकेआईएस द्वारा बांग्ला विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिल्वर के सहयोग से दिनांक 29-31 मार्च, 2010 को असम विश्वविद्यालय, सिल्वर में "टैगोर के 150 वर्ष : साहित्य, संस्कृति एवं समाज" विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया।
- दिनांक 7-10 जनवरी, 2010 के दौरान शिक्षा विभाग, असम विश्वविद्यालय द्वारा एमएकेआईएस के सहयोग से असम विश्वविद्यालय, सिल्वर में "स्वराज, संस्कृति एवं शिक्षा" विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।
- दिनांक 29-30 जनवरी, 2010 के दौरान एमएकेआईएस के सहयोग से राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश में "बौद्ध धर्म एवं पूर्वोत्तर भारत की



बौद्ध जनजातियाँ” विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

दिनांक 18-19 नवम्बर, 2009 को एमएकेएआईएस द्वारा एस.के. हजारीका कॉलेज, गुवाहाटी, असम में “द एपाटेनिज: देयर प्लेस एज ए ट्राईब ऑफ अरुणाचल प्रदेश” विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

## 6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल

यह संग्रहालय भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को लोकप्रिय बनाने, उसको प्रोत्साहित करने एवं उसके संरक्षण हेतु कार्यकलापों पर विशेष जोर देता है। इस संदर्भ में, संग्रहालय ने भारत के पूर्वोत्तर राज्यों, अपने भोपाल स्थित मुख्यालय तथा मैसूर स्थित दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र और भारत के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके अपने कार्यकलापों को सुदृढ़ किया है।

### 1. मुक्ताकाश प्रदर्शनियां :

- 1.1 पूर्वोत्तर भारत के परम्परागत निवासों को प्रदर्शनों के रूप में शामिल करना : रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान मणिपुर की कोम जनजाति, असम के देओरी, राभा, हाजोंग एवं मोरन समुदायों के परम्परागत घरों के प्रकारों का निर्माण वीथी संकुल के सामने प्रदर्शन के रूप में किया गया।
- 1.2 परम्परागत प्रौद्योगिकी मुक्ताकाश प्रदर्शनी में शामिल किए गए नए प्रदर्शन : परम्परागत खुले आकाश की प्रदर्शनी में मणिपुर की परम्परागत समय प्रबंधन की तकनीक ‘तानेईशांग’ एवं लोहा पिघलाने की तकनीक ‘योतशुंग योतसा’ पर आधारित नए प्रदर्शनों को शामिल किया गया है। मणिपुर के लगभग 14 कलाकारों ने संग्रहालय का दौरा किया तथा नमक तैयार करने की प्रौद्योगिकी सहित इन प्रदर्शनों के माध्यम से अपनी परम्परागत तकनीकों का प्रदर्शन किया।

### 2. मंच कला प्रस्तुतियां :

- 2.1 दिनांक 14 व 15 अप्रैल, 2010 को दो-दिवसीय रंगारंग कार्यक्रम ‘बिहू-उत्सव’ का आयोजन किया गया। इस उत्सव के माध्यम से असम के विभिन्न समुदायों द्वारा नए साल की शुरुआत के उत्सवों से संबंधित शानदार संस्कृति को प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में असम के हाजोंग,

मोरन, राभा एवं देओरी समुदायों द्वारा अपने परम्परागत तौर-तरीकों एवं विशिष्ट शैली में लेवातना, बिहू, झखामरा एवं अन्य नृत्य रूपों को प्रस्तुत किया गया।

- 2.2 दिनांक 18 अप्रैल, 2010 को विश्व विरासत दिवस के अवसर पर युवा एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप केन्द्र, मणिपुर के कलाकारों द्वारा मेईतई भाषा में “उछेक लेंगमेइदोंग” नृत्य-नाटक प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त, मणिपुर के कोम समुदाय के लोगों ने अपने परम्परागत नृत्यों की एक झलक भी प्रस्तुत की।

- 2.3 दिनांक 2 दिसम्बर, 2010 को परम्परागत मुखौटा नृत्यों का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लद्दाख एवं झारखंड के अतिरिक्त सिक्किम के नृत्य समूहों द्वारा मुखौटा नृत्य प्रस्तुत किया गया।

## 7. सीसीआरटी, नई दिल्ली

प्राचीनकाल से ही पूर्वोत्तर भारत कई समुदायों, आस्थाओं एवं संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है। हमारी विरासत के संरक्षण हेतु अध्यापकों एवं विद्यार्थियों का उपयोग करते हुए सिक्किम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र की समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के बारे में व्यापक जागरूकता पैदा करने के लिए सीसीआरटी ने कई संस्कृति संबंधी शैक्षिक कार्यकलापों एवं कार्यक्रमों को शुरू किया है। सीसीआरटी ने पूर्वोत्तर राज्यों में कई कार्यशालाओं एवं पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। देश के सभी भागों के प्राथमिक, मिडिल, माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों को इस क्षेत्र के विशिष्ट कला रूपों एवं परम्परागत शिल्पों का प्रयोग करते हुए कक्षा-कक्षा शिक्षण में नवाचारी तौर-तरीकों को अपनाने के बारे में जानकारी प्रदान की गई। सीसीआरटी ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में 11 कार्यशालाओं एवं पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जिनमें 1053 स्कूल अध्यापकों ने भाग लिया।

## 8. केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता पूर्वोत्तर में सरकार के विकास कार्यक्रम में सक्रिय रूप से शामिल रहा है। इस वर्ष इसके द्वारा दिनांक 28 एवं 29 अक्टूबर, 2010 को मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल में “पुस्तकालय सेवाओं को पहुंच न रखने वाले लोगों तक पहुंचाना” विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। असम विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से 10-11 फरवरी, 2010 को एक दूसरे राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सार्वजनिक

पुस्तकालय निदेशालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश में पुस्तकालय पेशेवरों हेतु एक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा।

## 9. राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता

- (क) राष्ट्रीय पुस्तकालय के प्रयोगशाला प्रभाग द्वारा बी.एस.सी. आई., त्रिपुरा के दो कार्यरत पुस्तकाध्यक्षों के लिए दिनांक 11-15 जनवरी, 2010 को "पुस्तकालय सामग्रियों का संरक्षण" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- (ख) पूर्वोत्तर में पुस्तकालयों के अवसंरचना विकास कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता द्वारा श्रीमंत शंकरादेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका आयोजन 13-15 मार्च, 2010 को गुवाहाटी में किया गया था।
- (ग) इस पुस्तकालय द्वारा राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता में दिनांक 17 मार्च से 30 मार्च, 2010 तक पूर्वोत्तर के पुस्तकालय पेशेवरों हेतु एक, दस-दिवसीय पुस्तकालय प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुस्तकालय के अधिकारियों ने पुस्तकालय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया।
- (घ) पुस्तकालय द्वारा दिनांक 25-27 अगस्त, 2010 को सार्वजनिक पुस्तकालय निदेशालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार के सहयोग से 'अरुणाचल प्रदेश में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं का महत्व' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सार्वजनिक पुस्तकालयों के महत्व को समझने, प्रभावी तथा उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने में उनकी भूमिका तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रतिदिन के कार्यकलापों में कम्प्यूटर का प्रयोग करने के संबंध में अरुणाचल प्रदेश के पुस्तकालय पेशेवरों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- (ङ) दिनांक 9-11 सितम्बर, 2010 को मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय के सहयोग से इम्फाल, मणिपुर में 'राष्ट्रीय विरासत के परिरक्षण में पुस्तकाध्यक्षों, पुरालेखपालों एवं लेखकों की भूमिका' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में चार बिजनेस सत्र तथा 30 तकनीकी पेपरों को शामिल किया गया था।

- (च) दिनांक 21-25 सितम्बर, 2010 के दौरान कला एवं संस्कृति निदेशालय, नागालैंड सरकार के सहयोग से कोहिमा, नागालैंड में "सार्वजनिक पुस्तकालयों, पढ़ने की आदत, पुस्तकालय सामग्रियों के संरक्षण एवं सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नागालैंड के विभिन्न भागों से आए प्रतिभागियों को पुस्तकालयों, पुस्तकालय सामग्रियों के संरक्षण में कम्प्यूटर अनुप्रयोग के विविध पहलुओं तथा पठन आदतों के विकास में पुस्तकाध्यक्षों की भूमिका के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- (छ) दिनांक 8-12 नवम्बर, 2010 को श्रीमंत शंकरादेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से "पुस्तकालय सामग्रियों का संरक्षण" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुस्तकालय अधिकारियों द्वारा परिरक्षण तकनीकों के विविध पहलुओं पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- (ज) दिनांक 27-29 दिसम्बर, 2010 को पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययन केन्द्र, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सहयोग से 'पूर्वोत्तर में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाएं' विषय पर एक कार्यशाला-सह-सेमिनार का आयोजन किया गया।

## 10. पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता

दिनांक 1 से 15 मई, 2009 के दौरान एनईजेडसीसी परिसर, दीमापुर में द्वितीय राष्ट्रीय स्तर के पत्थर मूर्ति-कला कैम्प का आयोजन किया गया।

दिनांक 2 से 6 मार्च, 2010 को दीमापुर में पूर्वोत्तर वसंतोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें 15 सदस्यीय रेबेन्से नृत्य समूह एवं सॉफ्ट टॉय एवं टेराकोटा कलाकारों ने भाग लिया।

दिनांक 21 व 22 फरवरी, 2010 को ईटानगर में अरुणाचल प्रदेश उत्सव का आयोजन किया गया जिसमें 16 सदस्यीय गोटीपुआ नृत्य समूह ने भाग लिया।

दिनांक 17 व 18 जनवरी, 2011 को 15 शिल्पग्राम, गुवाहाटी, असम में शिल्प उत्सव 2011 का आयोजन किया गया।

## 11. उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

हमारे देश की राष्ट्रीय अखंडता एवं संप्रभुता को सुदृढ़ करने तथा पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विशिष्टताओं पर ध्यान केंद्रित करने

के साथ ही शांति एवं प्रेम के संदेश को फैलाने के उद्देश्य से, एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन एवं पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर और राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के संस्कृति विभागों के साथ सहयोग से 11 से 13 जनवरी, 2011 को भोपाल, मध्य प्रदेश एवं 15 से 17 तथा 19 जनवरी, 2011 को जयपुर तथा अलवर, राजस्थान में **ऑक्टोव-2011 पूर्वोत्तर के लोक एवं जनजातीय नृत्यों का आयोजन किया।** इन कार्यक्रमों के दौरान, असम के डोलकर छोलोना, भोरतल एवं बिहू नृत्य; अरुणाचल प्रदेश के ऐरप एवं जुजु-जाजा नृत्य; मिजोरम के सरलमकाई सोलाकिया एवं छेराव नृत्य; मणिपुर के थांग-ता, छेनाल जगोई, लाई हराओबा, पुंग-छोलोम एवं डोल-छोलोम नृत्य; नागालैंड के अकोक-खी, मुग्यन्ता नृत्य तथा पटकाई एलुमनी कोयर-गायन समूह; सिक्किम के घन्तु, सिंघी छाम, याक छाम नृत्य; त्रिपुरा के होजागिरी, संगराई मोग, हई-हक, शाड-रेप एवं शाड-मसतिए नृत्य समूहों को अपना कौशल दिखाने के लिए आमंत्रित किया गया था। इन नृत्यों के अतिरिक्त, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से 'एक शाम काव्य-गोष्ठी के नाम' का आयोजन किया गया जिसमें अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मणिपुर, त्रिपुरा, असम के कवियों तथा नई दिल्ली के प्रख्यात हिन्दी कवि ने भाग लिया तथा अपनी कविताओं का पाठ किया। रंगमंच कार्यकलापों के अंतर्गत राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के साथ सहयोग से आम जनता के लिए मणिपुर एवं असम के नाटकों का मंचन किया गया। ट्राइफेड, नई दिल्ली की सहायता से पूर्वोत्तर की दस्तकारियों एवं कलावस्तुओं को रविन्द्र भवन, भोपाल एवं रविन्द्र मंच परिसर, जयपुर में प्रदर्शित किया गया।

## 12. दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

**ऑक्टोव :-** 25 से 28 नवम्बर, 2010 को हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने हैदराबाद में दिनांक 25 नवम्बर से 28 नवम्बर, 2010 को ऑक्टोव का आयोजन करने के लिए विशेष पूर्वोत्तर निधियों का आबंटन किया है, जिसमें 400 लोक एवं जनजातीय नृत्य कलाकारों, परम्परागत आभूषणों, इंस्ट्रूमेंटल गायन एवं कोयर-गायन का आंध्र प्रदेश के ललित कला थोरेनम में एक शानदान शो प्रस्तुत किया गया। महाराष्ट्र के महामहिम राज्यपाल तथा आंध्र प्रदेश के महामहिम राज्यपाल

द्वारा इस उत्सव का शुभारंभ किया गया तथा उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं इस केन्द्र के प्रयासों की सराहना भी की।

## 13. पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार; उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर; डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के साथ मिलकर दिनांक 18 से 21 नवम्बर, 2010 को औरंगाबाद, महाराष्ट्र में ऑक्टोव-पूर्वोत्तर राज्यों का सांस्कृतिक एवं शिल्प स्पेक्ट्रम का आयोजन किया। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली; संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली; ललित कला अकादमी, नई दिल्ली; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली एवं ट्राइफेड, नई दिल्ली ने अपने योगदान के साथ इस विशाल कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

## 14. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

रिपोर्टरधिन अवधि के दौरान, सत्रिय केन्द्र गुवाहाटी ने गुवाहाटी एवं पूर्वोत्तर राज्यों के अन्य आस-पास के क्षेत्रों में सत्रिय नृत्य पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। सत्रिय केन्द्र ने गुवाहाटी के बाहर भी विभिन्न कार्यक्रमों को प्रायोजित किया। दिनांक 18 जुलाई से गौरीपुर, असम में सत्रिय नृत्य पर 20 दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

सत्रिय नृत्य एवं रंगमंच के इतिहास में पहली बार चन्दालिका, असमी भाषा में कवि गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर के साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति तथा सत्रिय नृत्य शैली में नए प्रयोग किए गए।

इस केन्द्र ने दिनांक 1 अक्टूबर, 2010 को विश्व संगीत दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम एवं व्याख्यान प्रदर्शन का आयोजन किया। इस व्याख्यान-सह-प्रदर्शन में सूत्रधारी नृत्य एवं अंकिया भवोना को भी शामिल किया गया था।

## 15. एसएनए उत्तर-पूर्व केन्द्र, शिलांग

एसएनए उत्तर-पूर्व केन्द्र, शिलांग ने युवा रंगमंच कर्मियों के लिए मेघालय एवं मिजोरम में रंगमंच कार्यशाला का आयोजन किया। पूर्वोत्तर क्षेत्र की परम्परागत/लोक मंचन कलाओं के मासिक

प्रस्तुतीकरण के अतिरिक्त, इस केन्द्र ने मेघालय के त्रिपुरा कठपुतली थियेटर के माध्यम से एक कठपुतली नाटक—तेतनाई का भी आयोजन किया। दुर्लभ परम्परागत मंचन कलाओं के उत्सव जैसे ओजापाली महोत्सव एवं संगिनी महोत्सव का आयोजन दरंग जिला, असम एवं पेंदम, सिक्किम में किया गया। लोक तरंग—2010 एवं अरुणाचल प्रदेश के मोपा नृत्यों का प्रायोजन क्रमशः भोपाल एवं शोरा, मेघालय से किया गया। नागालैंड के छाकेसंग संगीत एवं अरुणाचल प्रदेश के आझी लामू संगीत में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

### इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्यकलापों का मुख्य क्षेत्र पूर्वोत्तर भारत है। इस वर्ष छः अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गईं। ये इस प्रकार हैं : 1. 'असम और मणिपुर में ब्रह्मपुत्र और बैरक घाटी के विशेष संदर्भ में पूर्वोत्तर भारत की इस्लामिक

विरासत'; 2. 'पूर्वोत्तर भारत में वैष्णव पुनर्जागरण की समीक्षा'; 3. 'सौन्दर्य शास्त्रीय और नीति शास्त्रीय विश्व में महिलाओं की स्थिति : पूर्वोत्तर भारत के समुदायों के परम्परागत विश्व-दर्शन और सांस्थानिक कार्यों का अन्वेषण'; 4. 'सिक्किम की शिल्प परम्परा'; 5. 'पूर्वोत्तर के महिला भाटों का प्रलेखन और युवा पीढ़ी के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम'; 6. आधुनिकता उपभोग संस्कृति : औपनिवेशिक असम में राष्ट्रवाद/उप-राष्ट्रवाद की बोंगीत और संरचना'।

राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के सहयोग से नवम्बर, 2010 में 'अरुणाचल प्रदेश की आलेखित और विलुप्त हो रही भाषाओं की स्थिति' पर तीन दिवसीय कार्यशाला—व-सम्मेलन आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर की भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से बच्चों के लिए पुस्तकें तैयार करने के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। इसे अंसवेशा, गुवाहाटी के सहयोग से आयोजित किया गया।



रबीन्द्रनाथ टैगोर प्रदर्शनी में माननीय प्रधानमंत्री

## सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005

सरकार के स्वच्छ और त्वरित कार्यकरण में पारदर्शिता रखने के लिए सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 अधिनियमित किया गया था। इस अधिनियम को लागू करने के लिए इस मंत्रालय ने 17 केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी और 8 अपीलीय प्राधिकारियों की नियुक्ति की है। इनका कार्य मंत्रालय के सुचारु संचालन की निगरानी करना है। केंद्रीय लोक सूचना अधिकारियों और अपीलीय प्राधिकारियों की सूची अनुलग्नक में दी गई है।

5.3.2

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 को लागू करने के लिए सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंध संस्थान, लोक सूचना अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यशालाओं/सेमिनारों का आयोजन करता है ताकि वे सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के सभी प्रावधानों को कार्यान्वित करने में मंत्रालयों की मदद कर सकें।

2010-11 के दौरान संस्कृति मंत्रालय को सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत 288 आवेदन तथा 3 अपील प्राप्त हुए थे और अतिरिक्त प्रभारों सहित 3,991 रुपए की राशि आर.टी.आई शुल्क के रूप में प्राप्त हुई थी।





## सतर्कता

5.3.3

इस मंत्रालय की सतर्कता व्यवस्था पूर्णतः सचिव के पर्यवेक्षण में है जिनका सहयोग संयुक्त सचिव स्तर के मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक उप-सचिव तथा एक अवर सचिव और अन्य सहयोगी कर्मचारीगण करते हैं।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, प्रशासन को दुरुस्त करने के लिये मंत्रालय के कर्मचारियों के बीच, मुख्यालय स्तर पर तथा सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालय स्तर पर, निष्ठा एवं व्यावसायिक अनुशासन बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास किए गए।

संस्कृति मंत्रालय और इसके सभी सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों ने 25 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2010 तक सतर्कता जागरूकता अवधि के रूप में मनाया। सचिव द्वारा सभी प्रकार के कार्यों में पारदर्शिता लाने तथा भ्रष्टाचार को दूर करने के प्रयोजनार्थ कार्य करने की शपथ दिलाई गई। सचिव के संदेश की प्रतियां भी परिचालित की गईं। कार्यालय परिसर में तथा इसके आसपास बैनर लगाए गए। सतर्कता तंत्र की कारगरता में सुधार लाने हेतु एक नई ई-मेल आई.डी. बनाई गई तथा इसे मंत्रालय की वेबसाइट पर दर्शाया गया। मंत्रालय के कुछ संगठनों में 'सतर्कता' एवं इसके महत्व – विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। निम्नलिखित विषयों पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई :

- i) केवल विनियम भ्रष्टाचार दूर नहीं कर सकते।
- ii) सतर्कता दिशानिर्देश कितने कारगर हैं – कौन-कौन से परिवर्तन अपेक्षित हैं?

- iii) कार्यालय में निष्ठा एवं पारदर्शिता कैसे बनाए रखें?

1 नवम्बर, 2010 को निम्नलिखित विषयों पर वाद-विवाद आयोजित किए गए :

- iv) राष्ट्रमंडल खेलों की सफलता से विदेशों में हमारे देश की छवि अच्छी हुई है।
- v) लम्बी अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं के कारण प्रायः दागी अधिकारी छूट जाते हैं/अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं में अत्यधिक पेंच/जटिलताएं।
- vi) भ्रष्टाचार सूची में भारत की रैंकिंग से इसकी छवि धूमिल हुई है।



प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिए गए और प्रत्येक प्रतियोगिता हेतु चार सांत्वना पुरस्कार संवितरित किए गए।

सीवीसी तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त सभी शिकायतों पर तत्काल

कार्रवाई की गई और मंत्रालय के अधीन संबंधित संगठनों से रिपोर्ट मांगी गई। 5 कोर्ट मामलों के अतिरिक्त, 20 अन्य शिकायतों पर कार्रवाई विभिन्न चरणों में है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सीवीसी की सहमति से सतर्कता संबंधी चार शिकायतों का निपटारा किया गया।

## हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

5.3.4

संस्कृति मंत्रालय ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2010-11 के दौरान सरकारी कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखा। मंत्रालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित कार्य संयुक्त सचिव के प्रशासनिक नियंत्रण में है। संस्कृति मंत्रालय में राजभाषा अधिनियम, 1963 और इसके अंतर्गत बनाए गए राजभाषा नियम, 1976 आदि के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा प्रभाग है, जिसमें एक निदेशक, एक उप-निदेशक, एक सहायक निदेशक, एक वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं तीन कनिष्ठ हिंदी अनुवादकों तथा अनुसचिवीय कर्मचारियों के पद स्वीकृत हैं। यह प्रभाग संस्कृति मंत्रालय के अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालयों एवं स्वायत्त संगठनों में संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए भी उत्तरदायी है।

मंत्रालय के सभी कम्प्यूटरों पर द्विभाषी रूप में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है। मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का पर्याप्त साहित्य और शब्दकोश/शब्दावलियाँ उपलब्ध कराई गई हैं। पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवधि के दौरान हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्टें नियमित रूप से राजभाषा विभाग को भेजी गईं। संस्कृति मंत्रालय के सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/स्वायत्त संगठनों से प्राप्त हुई तिमाही प्रगति रिपोर्टों की नियमित समीक्षा की गई। मंत्रालय के हिंदी अनुवाद एकक ने मंत्रिमंडल नोट, विभिन्न देशों के साथ हुए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम/करार, परिणाम बजट, वार्षिक योजना, संसदीय स्थायी समितियों से संबंधित सामग्री, संसद प्रश्न, मानक फार्म/मसौदे, पत्र आदि जैसे दस्तावेजों के अनुवाद के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के विविध अनुवाद कार्य भी हिन्दी अनुवाद एकक द्वारा पूरी क्षमता और निष्ठा से समय पर सम्पन्न किए।

मंत्रालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। इन उपायों का संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है :-

### 1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का कार्यान्वयन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज



हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जा रहे हैं। 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ हिंदी में पत्राचार करना सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय में अभिनिर्धारित किए गए जांच-बिंदुओं के आधार पर राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कार्य-योजना बनाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम और अन्य आदेशों/निदेशों को इस मंत्रालय के सभी अनुभागों तथा इसके अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालयों/स्वायत्त संगठनों को सूचनार्थ अग्रेषित किया गया और इनका अनुपालन करने के लिए निदेश जारी किए गए।

## 2. राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मंत्रालय में संयुक्त सचिव की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है, जिसकी बैठकें प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं। इन बैठकों में संस्कृति मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालय और स्वायत्त संगठनों में संघ की राजभाषा नीति संबंधी सांविधिक प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के संबंध में विस्तार से विचार-विमर्श करने के बाद निर्णय लिए जाते हैं। यह समिति राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की आवधिक समीक्षा करती है और राजभाषा नीति के कारगर कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त सुझाव देती है तथा उपायों की सिफारिश करती है। मंत्रालय के अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालयों/स्वायत्त संगठनों को भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित करने के निदेश दिए गए।

## 3. हिन्दी सलाहकार समिति

सरकार की राजभाषा नीति के कारगर कार्यान्वयन के बारे में सलाह देने के लिए माननीय मंत्री जी की अध्यक्षता में गठित की जाने वाली मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया जा रहा है।

## 4. हिन्दी में मूल टिप्पण/प्रारूपण प्रोत्साहन योजना

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी में मूल टिप्पण/प्रारूपण के लिए शुरू की गई प्रोत्साहन योजना को जारी रखा गया है। इस योजना के अंतर्गत एक-एक हजार रुपये के दो प्रथम पुरस्कार, 600-600 रुपये के तीन द्वितीय पुरस्कार और 300-300 रुपये के पांच तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

## 5. हिन्दी में डिक्टेशन के लिए नकद पुरस्कार योजना

मंत्रालय में हिंदी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों के लिए प्रोत्साहन एक योजना चलाई जाती है। इस योजना के तहत एक-एक हजार रुपये के दो नकद पुरस्कारों (एक हिंदी भाषी के लिए और एक हिंदीतर भाषी के लिए) का प्रावधान है।

## 6. हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा

मंत्रालय के सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए सचिव (संस्कृति) ने दिनांक 15 सितम्बर, 2010 को अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच परिचालित करने के लिए एक अपील जारी की। मंत्रालय में 15 सितम्बर, 2010 से 29 सितम्बर, 2010 हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध लेखन, हिंदी टंकण, हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद, हिंदी टिप्पण/प्रारूपण, हिंदी सामान्य ज्ञान और हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और इनमें 120 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिए किए।

## 7. हिन्दी कार्यशाला

वर्ष के दौरान मंत्रालय के अधिकारियों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मंत्रालय में तीन हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिनमें 43 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान 'कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कैसे करें' विषय पर भी एक कार्यशाला आयोजित की गई थी।

## 8. प्रकाशन

वर्ष के दौरान मंत्रालय के राजभाषा प्रभाग ने हिंदी पत्रिका "संस्कृति" का 17वां अंक प्रकाशित किया। इस पत्रिका में कला और संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते जाते हैं। पत्रिका के प्रत्येक अंक की 3,000 प्रतियां प्रकाशित की जाती हैं जिन्हें लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों, जाने माने लेखकों, सभी विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों को निःशुल्क प्रेषित किया जाता है। 'संस्कृति दर्पण' नामक आठ पृष्ठों की एक बहुरंगी द्विभाषी मासिक विवरणिका भी नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है, जिसमें मंत्रालय के दिल्ली स्थित कार्यालयों/संस्थाओं द्वारा प्रतिमाह आयोजित किए जाने वाले कार्यकलापों/कार्यक्रमों के बारे में सूचना दी जाती है। इसके प्रत्येक अंक की 800

प्रतियां प्रकाशित की जाती हैं जिन्हें प्रधानमंत्री कार्यालय, केंद्रीय मंत्रियों, भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों और मंत्रालय के दिल्ली स्थित सभी कार्यालयों/संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, पुस्तकालयों इत्यादि को भेजा जाता है। पत्रिका और विवरणिका को मंत्रालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया गया है।

## 9. हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित निरीक्षण

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का जायज़ा लेने के लिए वर्ष के दौरान मंत्रालय के अधिकारियों ने 11 कार्यालयों का निरीक्षण किया। इसके अतिरिक्त संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप-समिति ने मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन 6 कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया।



हिन्दी पखवाड़ा



## मनोरंजन एवं खेल क्लब के कार्यक्रमलाप

- इस क्लब ने केन्द्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक तथा खेल बोर्ड, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित किए गए अंतर-मंत्रालयी फुटबाल टूर्नामेंट में भाग लिया।
- इस क्लब ने केन्द्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक तथा खेल बोर्ड, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित अंतर-मंत्रालयी क्रिकेट टूर्नामेंट (वैटरन) में भी भाग लिया।
- वार्षिक खेलकूद दिवस का आयोजन दिनांक 6 फरवरी, 2011 को किया गया। इस आयोजन में लगभग 300 सदस्यों एवं उनके परिवारों ने भाग लिया। 5-7, 8-13 तथा 14-18 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए 5 स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। महिलाओं के लिए, चार स्पर्धाओं का आयोजन किया गया, जिनमें से सबसे अधिक लोकप्रिय म्यूजिकल चेयर, लेमन रेस एवं थ्रेड एंड नीडल रेस थी। पुरुषों के लिए, एक टीम स्पर्धा तथा दो व्यक्तिगत स्पर्धाओं का आयोजन किया गया।

5.3.5



वार्षिक खेल दिवस

## विकलांग व्यक्तियों के लिए वर्ष 2010–11 के दौरान कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में हासिल की गई प्रगति

### 5.3.6

#### नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

1. नेत्रहीन व्यक्तियों के लाभ हेतु नेहरू के पत्रों की 200 प्रतियों (ए फादर टू हिज डॉटर) का मुद्रण ब्रैल लिपि में किया गया है।
2. संग्रहालय, तारामंडल, पुस्तकालय तथा सौध भवनों को रैम्पों के माध्यम से शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए सुलभ बनाया गया है।
3. तारामंडल एवं पुस्तकालय भवन में शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के अनुकूल प्रसाधन-कक्षों का निर्माण किया गया है।
4. पुस्तकालय में शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों हेतु अकादमिक कार्यकलापों के लिए एक साइबर-कक्ष का संचालन शुरू किया गया है।
5. शारीरिक रूप से अक्षम, डॉ० अनिता घई को वर्ष 2009–11 के लिए अध्येतावृत्ति प्रदान की गई है।
6. शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए संसाधन व्यक्तियों द्वारा धनक दिन – नेहरू बाल मेला के दौरान तथा वर्ष भर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

#### उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

1. उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने समय-समय पर वाटिका बधिर एवं मूक उच्च विद्यालय, चंडीगढ़ के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया है। उपर्युक्त बधिर एवं मूक विद्यालय द्वारा दिनांक 9 से 12 दिसम्बर, 2010 को आयोजित किए गए 'विंटर फेयर' में लोक नृत्यों जैसे गिद्धा, भांगड़ा, जिंदुआ (पंजाब); घूमर, फाग, पनिहारी (हरियाणा) को विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया।
2. उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने कलाग्राम, चंडीगढ़ में दिनांक 26 अक्टूबर से 4 नवम्बर, 2010 को आयोजित किए गए 'द्वितीय चंडीगढ़ राष्ट्रीय क्राफ्ट मेले' में बधिर एवं मूक बच्चों द्वारा तैयार की गई दस्तकारियों की प्रदर्शनी-सह-बिक्री का भी आयोजन किया।

### खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी

1. इस पुस्तकालय ने अंधेपन के शिकार व्यक्तियों के लिए एक अलग ब्रैल अनुभाग की स्थापना की है। इसका काफी प्रचार किया गया है। हालांकि, इस अनुभाग का ज्यादा उपयोग नहीं किया जा रहा है।
2. पुस्तकालय में व्हील चेयर पर आने वाले पाठकों के लिए एक रैम्प का निर्माण भी किया जा रहा है।

### राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद

- दिनांक 7 अप्रैल, 2010 और 23 अप्रैल, 2010 को राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए “जीवन कौशल विकास कार्यक्रम”।
- बिरला औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकीय संग्रहालय, कोलकाता द्वारा दृष्टि बाधित व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गई प्रदर्शनी “ए वर्ल्ड इन डार्कनेस” तैयार की गई तथा इसका विकास किया गया। इसे दिनांक 2 मई, 2010 को खोला गया था।
- दिनांक 18 मई, 2010 को उत्तर बंगाल विज्ञान केन्द्र, सिलीगुड़ी द्वारा विविध प्रकार से अक्षम बच्चों के लिए एक विशेष डिजिटल तारामंडल शो “वंडर्स ऑफ द यूनिवर्स”, प्रदर्शन हंटिंग प्रतियोगिता, ओपन हाउस क्विज एवं गाइडिड वीथी भ्रमण का आयोजन किया गया।
- शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों में संग्रहालय के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए दिनांक 18 मई, 2010 को राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली में “सामाजिक सौहार्द हेतु संग्रहालय” शीर्षक के अंतर्गत एक विशेष संवाद कार्यक्रम।
- दिनांक 01 जुलाई, 2010 को विज्ञान शहर, कोलकाता में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “सुपर कूल शो”, “माइम शो” तथा कला प्रतियोगिता पर दिन-भर चलने वाले कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के लिए विज्ञान शहर की सभी सुविधाओं के लिए गाइडिड भ्रमण का भी आयोजन किया गया।
- दिनांक 16 जुलाई, 2010 को कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र में मानसिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “लीफ जू” विषय पर एक कार्यशाला।
- विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकीय संग्रहालय, बंगलौर में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “जादू के पीछे विज्ञान” शीर्षक के तहत दिनांक 07 जुलाई, 2010; 07 अगस्त, 2010; 23 अक्टूबर, 2010; 15 दिसम्बर, 2010; 17 दिसम्बर, 2010; 04 जनवरी, 2011; 06 जनवरी, 2011; 12 जनवरी, 2011; 05 फरवरी, 2011 एवं 15 फरवरी, 2011 को विज्ञान शो का आयोजन किया गया।
- दिनांक 12 अगस्त, 2010 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, कालीकट में विविध प्रकार से अक्षम विद्यार्थियों के लिए एक विशेष तारामंडल कार्यक्रम “टच द स्काई” का आयोजन किया गया।
- दिनांक 28 एवं 29 अगस्त, 2010 को नेहरू विज्ञान केन्द्र, मुम्बई में ऑटिस्टिक बच्चों के लिए “साइंस इज फन” विषय पर कार्यशाला आ आयोजन किया गया।
- दिनांक 11 सितम्बर, 2010 को क्षेत्रीय विज्ञान शहर, लखनऊ में विविध प्रकार के अक्षम बच्चों के लिए “स्मृति खेल प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया।
- दिनांक 18 सितम्बर, 2010 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, तिरुपति में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “अरोमा कंटेस्ट” का आयोजन किया गया।
- दिनांक 30 अक्टूबर, 2010 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, तिरुपति में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “एक्सप्लोर नेचर कंटेस्ट” का आयोजन किया गया।
- दिनांक 10 नवम्बर, 2010 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, कालीकट में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, तिरुपति में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए विशेष पोस्टर बनाना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

- दिनांक 14 नवम्बर, 2010 को जिला विज्ञान केन्द्र, पुरुलिया में विविध प्रकार से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “सिट एंड ड्रा” एवं “फैंसी ड्रेस” प्रतियोगिताओं, क्ले मॉडलिंग, पहली सुलझाना एवं मैचिंग गेम, नाटक इत्यादि का आयोजन।
- दिनांक 26 नवम्बर, 2010 को अमर सेवा संगम, आईकुड़ी के सहयोग से जिला विज्ञान केन्द्र, तिरुनेलवेली में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए एक विज्ञान शो ‘लिविड एयर’ का आयोजन किया गया।
- दिनांक 30 नवम्बर, 2010 को रुचिका समाज सेवा संगठन के सहयोग से क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, भुवनेश्वर में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- दिनांक 5–12 दिसम्बर, 2010 के दौरान विज्ञान केन्द्र, पुरुलिया में विविध प्रकार से अक्षम विद्यार्थियों के लिए सूँघो तथा बताओ प्रतियोगिता, पेड़ पहचान प्रतियोगिता तथा “लिविड नाइट्रोजन” और “साइंस मैजिक एंड मिरेकल” पर विज्ञान शो का आयोजन किया गया।
- दिनांक 14 दिसम्बर, 2010 को राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली की नई वीथी के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए “वाटर – द एलिक्सर ऑफ लाइव” विषय पर नई वीथी के गाइडिड भ्रमण का आयोजन किया गया।

- दिनांक 20 फरवरी, 2011 को रेड क्रॉस सोसायटी, तिरुनेलवेली के सहयोग से जिला विज्ञान केन्द्र, तिरुनेलवेली में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए अंधविश्वास–विरोधी शो का आयोजन किया गया।
- रमन विज्ञान केन्द्र, नागपुर में बधिरता से ग्रसित विद्यार्थियों के लिए विशेष वीथी प्रदर्शन एवं विज्ञान प्रदर्शन व्याख्यान का आयोजन किया गया।

वर्ष 2010–2011 (दिनांक 26 फरवरी, 2011 तक) के दौरान 20,146 विविध प्रकार से विकलांग आगंतुकों ने एनसीएसएम के विज्ञान केन्द्रों का दौरा किया। उन्हें एनसीएसएम के तहत विज्ञान केन्द्रों में विज्ञान केन्द्रों की सभी सुविधाओं अर्थात् वीथियों, प्रदर्शनों, फिल्म शो, तारामंडल शो इत्यादि का दौरा करने में सभी प्रकार की आवश्यक सहायता प्रदान की गई।

### पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र “उड़ान” का भी आयोजन कर रहा है – नई दिल्ली के विकलांग कलाकारों की विभिन्न विशेष स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए अहमदाबाद एवं गांधीनगर में विशेष सांस्कृतिक प्रस्तुति – दिनांक 24 मार्च, 2011 को जय शंकर सुंदरी हाल, अहमदाबाद एवं दिनांक 25 मार्च, 2011 को टाउनहाल, गांधीनगर, गुजरात में। इस विशेष कार्यक्रम “उड़ान” का उद्देश्य विकलांग बच्चों को उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना है।

# संस्कृति मंत्रालय नागरिक घोषणा-पत्र



सत्यमेव जयते

5.3.7

## संस्कृति मंत्रालय का नागरिक/लाभार्थी घोषणा-पत्र (वर्ष 2010-2011)

पता : शास्त्री भवन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड  
नई दिल्ली-110115

वेबसाइट आई डी : [www.indiaculture.gov.in](http://www.indiaculture.gov.in)

जारी करने की तारीख : फरवरी, 2011

आगामी समीक्षा की तारीख : फरवरी, 2012



## परिकल्पना

एक ऐसा भारत जहाँ सांस्कृतिक विविधता और विरासत, समावेशी राष्ट्रीय विकास के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं ।

## मिशन

ऐसे सतत समाधानों को कार्यान्वित करना जिनके माध्यम से भारत की विविध मूर्त एवं अमूर्त संस्कृति तथा प्राचीन विरासत, सार्वभौमिक रूप से गम्य होगी, जो निरंतर चलती रहने वाली प्रक्रिया है।

## मुख्य सेवाएं/संव्यवहार

| क्र.सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                                                           | मूल्यांकन % | उत्तरदायी अधिकारी (पदनाम)        | ई-मेल                | मोबाइल (फोन नं.) | प्रक्रिया                                                                                                | अभिक्षित दस्तावेज                     | शुल्क  |       |      |
|---------|--------------------------------------------------------------------------------------------|-------------|----------------------------------|----------------------|------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------|--------|-------|------|
|         |                                                                                            |             |                                  |                      |                  |                                                                                                          |                                       | श्रेणी | तरीका | राशि |
| 1.      | स्टूडियो थियेटर सहित भवन अनुदान की स्कीम                                                   | 9           | श्री दीपांकर दत्ता<br>(अवर सचिव) | dipankar.d@nic.in    | (23382351)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार |        |       |      |
| 2.      | विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं के संबंध में व्यावसायिक समूहों तथा व्यक्तियों को वित्तीय सहायता | 9           | श्री दीपांकर दत्ता<br>(अवर सचिव) | dipankar.d@nic.in    | (23382351)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार |        |       |      |
| 3.      | टैगोर स्मरणोत्सव अनुदान स्कीम                                                              | 9           | श्री बी पी भूकर<br>(अवर सचिव)    | bpbhuker@yahoo.co.in | (23074359)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार |        |       |      |
| 4.      | सांस्कृतिक समारोह अनुदान स्कीम (सी.एफ.जी.एस)                                               | 9           | श्री बी पी भूकर<br>(अवर सचिव)    | bpbhuker@yahoo.co.in | (23074359)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार |        |       |      |
| 5.      | विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को शिक्षावृत्तियां                          | 9           | श्री बी पी भूकर<br>(अवर सचिव)    | bpbhuker@yahoo.co.in | (23074359)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार |        |       |      |

मुख्य सेवाएं/संव्यवहार

| क्र.सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                                                                                                                       | मूल्यांकन % | उत्तरदायी अधिकारी (पदनाम)   | ई-मेल                | मोबाइल (फोन नं.) | प्रक्रिया                                                                                                                                                                  | अपेक्षित दस्तावेज                                                                                                                                                                                           | शुल्क  |      |
|---------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------|-----------------------------|----------------------|------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|------|
|         |                                                                                                                                                        |             |                             |                      |                  |                                                                                                                                                                            |                                                                                                                                                                                                             | श्रेणी | राशि |
| 6       | संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को वरिष्ठ/कनिष्ठ अध्ययतावृतियां                                                                              | 9           | श्री बी पी भूकर (अवर सचिव)  | bpbhuker@yahoo.co.in | (23074359)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।                                                                   | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार                                                                                                                                                                       |        |      |
| 7.      | सांस्कृतिक अनुसंधान के लिए हैगोर राष्ट्रीय अध्ययतावृत्ति                                                                                               | 9           | श्री बी पी भूकर (अवर सचिव)  | bpbhuker@yahoo.co.in | (23074359)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।                                                                   | वेबसाइट पर उपलब्ध जांच सूची के अनुसार                                                                                                                                                                       |        |      |
| 8.      | साहित्य और कला तथा जीवन के ऐसे ही क्षेत्रों में लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों और उनके आश्रितों, जो अभावग्रस्त परिस्थितियों में रह रहे हैं, को वित्तीय सहायता | 8           | श्री वी टी जोसेफ (अवर सचिव) | vjoseph181@gmail.com | (23389379)       | आवेदन पूरे वर्ष स्वीकार किए जाते हैं।<br><br>आवेदनों की जांच, जीवन बीमा निगम के माध्यम से कारवाई जाती है।<br><br>आवेदनों को विशेषज्ञ समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। | मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध निर्धारित प्रारूप में आवेदन।<br><br>मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध निर्धारित प्रारूप में जीवन-प्रमाण-पत्र/आय प्रमाण-पत्र।<br><br>कला के क्षेत्र में योगदान संबंधी प्रमाण-पत्र। |        |      |

| क्र.सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                                            | मूल्यांकन % | उत्तरदायी अधिकारी (पदनाम) | ई-मेल                   | मोबाइल (फोन नं.) | प्रक्रिया                                                                                                                                                                                                              | अपेक्षित दस्तावेज                                       | शुल्क  |       |      |
|---------|-----------------------------------------------------------------------------|-------------|---------------------------|-------------------------|------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------|--------|-------|------|
|         |                                                                             |             |                           |                         |                  |                                                                                                                                                                                                                        |                                                         | श्रेणी | तरीका | राशि |
| 9.      | क्षेत्रीय और स्थानीय संग्रहालयों की स्थापना, संवर्धन और सुदृढ़ीकरण की स्कीम | 8           | श्री अमरेश सिंह (निदेशक)  | singh.amarash@gmail.com | (23382402)       | समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन और संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।<br>आवेदनों की जांच की जाती है तथा संगठनों को अपूर्ण आवेदनों के संबंध में कमी संबंधी ज्ञापन जारी किए जाते हैं। | दस्तावेजों के ब्यौरे मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। |        |       |      |
|         |                                                                             |             |                           |                         |                  | पूर्ण आवेदन, विशेषज्ञ समिति के विचारार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं जिनकी बैठक सामान्यता तथा प्रत्येक तिमाही में एक बार होती है।                                                                                            |                                                         |        |       |      |
|         |                                                                             |             |                           |                         |                  | एक करोड़ अथवा इससे अधिक लागत वाली परियोजना का प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले संगठनों को विशेषज्ञ समिति के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए बुलाया जाता है।                                                             |                                                         |        |       |      |
|         |                                                                             |             |                           |                         |                  | विशेषज्ञ समिति द्वारा अनुमोदित प्रस्तावों के संबंध में समिति की बैठक की तारीख से दो महीने के भीतर मंजूरी जारी की जाती है।                                                                                              |                                                         |        |       |      |

मुख्य सेवाएं/संव्यवहार

| क्र.सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                  | मूल्यांकन % | उत्तरदायी अधिकारी (पदनाम)    | ई-मेल                    | मोबाइल (फोन नं.) | प्रक्रिया                                                                                                                                                                                                                                                                     | अपेक्षित दस्तावेज                                                                                                                                                                                                                                          | शुल्क  |      |
|---------|---------------------------------------------------|-------------|------------------------------|--------------------------|------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|------|
|         |                                                   |             |                              |                          |                  |                                                                                                                                                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                                                            | श्रेणी | राशि |
| 10.     | हिमालय की सांस्कृतिक विरासत का परिरक्षण एवं विकास | 7           | श्री कंवर समीर लाठर (उपसचिव) | kansamlat@indiatimes.com | (23022041)       | पात्र-संगठनों/व्यक्तियों से समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।<br><br>आवेदन, राज्य सरकार द्वारा संस्तुत और अंगीकृत किए जाने अपेक्षित हैं।<br><br>आवेदनों को विशेषज्ञ सलाहकार समिति के समक्ष उनकी संस्तुति के लिए प्रस्तुत किया जाता है। | उप-नियम तथा संगम ज्ञापन।<br>संबंधित संगठन का पंजीकरण प्रमाण-पत्र।<br><br>पिछले तीन वर्षों के लेखाओं के संपरीक्षित विवरण/वार्षिक रिपोर्टों की प्रतियां।<br><br>कार्यकलापों/परियोजनाओं के संबंध में प्रैस समीक्षा तथा कतरन।<br><br>वर्तमान परियोजना का आलेख। |        |      |



## मुख्य सेवाएं/संव्यवहार

| क्र.सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                                                               | मूल्यांकन % | उत्तरदायी अधिकारी (पदनाम)        | ई-मेल                    | मोबाइल (फोन नं.) | प्रक्रिया                                                                                                                                                                                                                                                                    | अपेक्षित दस्तावेज                                                                                                                                                                                                                           | शुल्क  |       |      |
|---------|------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------|----------------------------------|--------------------------|------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|-------|------|
|         |                                                                                                |             |                                  |                          |                  |                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                             | श्रेणी | तरीका | राशि |
| 11.     | बौद्ध/तिब्बती संस्कृति और कला का संरक्षण एवं विकास                                             | 7           | श्री कंवर समीर लाठर<br>(उप सचिव) | Kansamlat@indiatimes.com | (23022041)       | पात्र-संगठनों/व्यक्तियों से समाचार-पत्रों आदि में विज्ञापन के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।<br><br>आवेदन, राज्य सरकार द्वारा संस्तुत और अयोधित किए जाने अपेक्षित हैं।<br><br>आवेदनों को विशेषज्ञ सलाहकार समिति के समक्ष उनकी संस्तुति के लिए प्रस्तुत किया जाता है। | संगम-ज्ञापन की प्रति।<br><br>पिछले तीन वर्षों के संपरीक्षित लेखाओं/वार्षिक रिपोर्टों की प्रतियां<br><br>संबंधित संगठन के पंजीकरण प्रमाण-पत्र की प्रति।<br><br>सिविल कार्य के लिए राज्य लोक निर्माण विभाग से प्राप्त प्राक्कलन, यदि लागू हो। |        |       |      |
| 12.     | केंद्रीय सचिवालय गंगागार (सीएसएल), सभी स्टैक धारकों को पुस्तकालय एवं सूचना सेवा प्रदान करता है | 7           | डॉ. पी आर गोस्वामी (निदेशक)      | prgoswami@hotmail.com    | (23384846)       | पुस्तकें तथा पत्रिकाएं उधार देना और परिचालित करना।                                                                                                                                                                                                                           | पंजीकृत सदस्यों /वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध।                                                                                                                                                                                               |        |       |      |

## सेवा मानक

| क्र. सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                                                           | मूल्यांकन | सफलता दिग्मूचक                                                                    | सेवा मानक | इकाई       | मूल्यांकन | डाटा स्रोत          |
|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|-----------------------------------------------------------------------------------|-----------|------------|-----------|---------------------|
| 1.       | स्टूडियो थियेटर सहित भवन अनुदान की स्कीम                                                   | 9.0       | विशेषज्ञ समिति की बैठक की तारीख से अनुदान/पहली किस्त जारी करना।                   | 60        | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |
| 2.       | विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं के संबंध में व्यावसायिक समूहों तथा व्यक्तियों को वित्तीय सहायता | 9.0       | विशेषज्ञ समिति की बैठक की तारीख से अनुदान/पहली किस्त जारी करना।                   | 60        | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |
| 3.       | टैगोर स्मरणोत्सव अनुदान स्कीम                                                              | 9.0       | विशेषज्ञ समिति की बैठक की तारीख से पहली किस्त जारी करना।                          | 60        | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |
| 4.       | सांस्कृतिक समारोह अनुदान स्कीम (सी.एफ.जी.एस)                                               | 9.0       | विशेषज्ञ समिति की बैठक की तारीख से पहली किस्त जारी करना।                          | 60        | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |
| 5.       | विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को शिक्षावृत्तियां                          | 9.0       | आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तारीख से शिक्षावृत्ति प्रदान करना।                    | 150       | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |
| 6.       | संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को वरिष्ठ/कनिष्ठ अध्येतावृत्तियां                | 9.0       | आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तारीख से अध्येतावृत्ति प्रदान करना।                   | 150       | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |
| 7.       | सांस्कृतिक अनुसंधान के लिए टैगोर राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति                                   | 9.0       | संबंधित संस्थान द्वारा, राष्ट्रीय चयन समिति की बैठक की तारीख से पत्र प्रदान करना। | 60        | कार्य दिवस | 9.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड |

## सेवा मानक

| क्र. सं. | सेवाएं/संव्यवहार                                                                                                                                       | मूल्यांकन | सफलता दर/मूचक                                                    | सेवा मानक | इकाई       | मूल्यांकन | डाटा स्रोत                            |
|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|------------------------------------------------------------------|-----------|------------|-----------|---------------------------------------|
| 8.       | साहित्य और कला तथा जीवन के ऐसे ही क्षेत्रों में लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों और उनके आश्रितों, जो अभावग्रस्त परिस्थितियों में रह रहे हैं, को वित्तीय सहायता | 8.0       | विशेषज्ञ समिति की बैठक की तारीख से वित्तीय सहायता जारी करना।     | 12        | महीना      | 8.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड                   |
| 9.       | क्षेत्रीय और स्थानीय संग्रहालयों की स्थापना, संवर्धन और सुदृढीकरण की स्कीम                                                                             | 8.0       | विशेषज्ञ समिति की बैठक की तारीख से पहली किस्त जारी करना।         | 60        | कार्य दिवस | 8.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड                   |
| 10.      | हिमालय की सांस्कृतिक विरासत का परिरक्षण एवं विकास                                                                                                      | 7.0       | आवेदन प्राप्त होने की बैठक की तारीख से वित्तीय सहायता जारी करना। | 75        | कार्य दिवस | 7.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड                   |
| 11.      | बौद्ध/तिब्बती संस्कृति और कला का संरक्षण एवं विकास                                                                                                     | 7.0       | आवेदन प्राप्त होने की बैठक की तारीख से वित्तीय सहायता जारी करना। | 75        | कार्य दिवस | 7.0       | मंत्रालय के रिकॉर्ड                   |
| 12.      | केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार (सीएसएल), सभी स्टैक धारकों को पुस्तकालय एवं सूचना सेवा प्रदान करता है                                                       | 7.0       | सभी पूछताछ/मांग 5 दिन के भीतर पूरी की जाती हैं।                  | 5         | कार्य दिवस | 7.0       | केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार के रिकॉर्ड |

## शिकायत निवारक तंत्र

दर्ज करने हेतु वेबसाइट यूआरएल <http://pgportal.gov.in/>

| क्र. सं. | जन शिकायत अधिकारी का नाम | सहायता फोन नं. | ई-मेल            | मोबाइल नं. |
|----------|--------------------------|----------------|------------------|------------|
| 1        | डॉ. (सुश्री) टी. कुमार   | 011-23381198   | jstgkr@gmail.com | 9899811334 |

## स्टेकहोल्डरों/लाभार्थियों की सूची

| क्र. सं. | स्टेकहोल्डर/लाभार्थी                                                                      |
|----------|-------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1        | संस्कृति मंत्रालय के अधीन संगठन                                                           |
| 2        | संस्कृति मंत्रालय के कार्यकलापों से संबंधित अन्य मंत्रालय                                 |
| 3        | राज्य सरकार/विभाग                                                                         |
| 4        | अन्य देशों के दूतावास/मिशन                                                                |
| 5        | निजी सांस्कृतिक एजेंसियां, व्यक्तिगत शोधकर्ता, सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान, मीडिया कलाकार |
| 6        | देश के नागरिक                                                                             |



## उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन

| क्र. सं. | उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन                           | दूरभाष   | ई-मेल                           | मोबाइल नं. | पता                                              |
|----------|--------------------------------------------------------------|----------|---------------------------------|------------|--------------------------------------------------|
| 1        | भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली                         | 23013574 | dga.asi@gmail.com               |            | जनपथ, नई दिल्ली-110011                           |
| 2        | भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली                       | 23383436 | archives@nic.in                 |            | जनपथ, नई दिल्ली-110001                           |
| 3        | राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली                    | 23386111 | ngma.delhi@gmail.com            |            | जयपुर हाऊस, इंडिया गेट, नई दिल्ली-110003         |
| 4        | राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली                               | 23019272 | nmindia11@hotmail.com           |            | जनपथ, नई दिल्ली-110011                           |
| 5        | राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ | 2335359  | kharbade@yahoo.com              |            | सैक्टर ई/3, अलीगंज, लखनऊ-226024                  |
| 6        | केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता                           | 24791721 | crinb@cal3.vsnl.net.in          |            | बेलवेडेर, कोलकाता-700027                         |
| 7        | राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता                                 | 24792968 | nldirector@rediffmail.com       |            | बेलवेडेर, कोलकाता-700027                         |
| 8        | भारतीय मानव-विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता                       | 22861733 | director@ansi.gov.in            |            | 27, जवाहरलाल नेहरू रोड, कोलकाता-700016           |
| 9        | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल                 | 2661458  | directorigrms@gmail.com         |            | पोस्ट बैग नं. 2, श्यामला हिल्स, भोपाल-462013     |
| 10       | राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता                   | 23579347 | ncsmin@vsnl.com                 |            | ब्लॉक-जी एन, सैक्टर-V, विधान नगर, कोलकाता-700091 |
| 11       | नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली               | 23014475 | directornehrumemorial@gmail.com |            | तीन मूर्ति हाऊस, नई दिल्ली-110011                |

## उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन

| क्र. सं. | उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन               | दूरभाष   | ई-मेल                           | मोबाइल नं. | पता                                                               |
|----------|--------------------------------------------------|----------|---------------------------------|------------|-------------------------------------------------------------------|
| 12       | संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली                     | 23387246 | sangeetnatak@bol.net.in         |            | रबीन्द्र भवन, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001                  |
| 13       | साहित्य अकादमी, नई दिल्ली                        | 23386626 | sahityaakademisales@vsnl.net.in |            | रबीन्द्र भवन, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001                  |
| 14       | ललित कला अकादमी, नई दिल्ली                       | 23387621 | lalitkala1954@yahoo.in          |            | रबीन्द्र भवन, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001                  |
| 15       | राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली              | 23382821 | nationalschoolofdrama@gmail.com |            | भावलपुर हाऊस, 1, भगवान दास रोड, नई दिल्ली-110001                  |
| 16       | सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केंद्र, नई दिल्ली  | 25088638 | dir.ccr@nic.in                  |            | 15-ए, सैक्टर-7, पप्पनकला, द्वारका, नई दिल्ली-110075               |
| 17       | गांधी स्मृति और दर्शन समिति, नई दिल्ली           | 23012843 | gandhismriti@india.com          |            | 5 तीस जनवरी, मार्ग, नई दिल्ली-110011                              |
| 18       | इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद                     | 2608231  | allahabadmuseum@rediffmail.com  |            | चन्द्र शेखर आजाद पार्क, इलाहाबाद-211002                           |
| 19       | दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली                  | 23979297 | dda@dpl.gov.in                  |            | एस.पी. मुखर्जी मार्ग, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने, दिल्ली |
| 20       | राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता   | 23373463 | rrrf-wb@nic.in                  |            | ब्लॉक-डीडी-34, सैक्टर-1. साल्ट लेक शहर, कोलकाता-700064            |
| 21       | केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लाडालूह           | 264548   | cibslah@sancharnet.in           |            | चोसलामसर, लेह-194101, लाडालूह                                     |
| 22       | केंद्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी, | 2585148  | snandkishore97@yahoo.in         |            | सारनाथ, वाराणसी-221007                                            |
| 23       | विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता                 | 22231890 | victomem@cal2.vsnl.net.in       |            | 1, क्वीन वे, कोलकाता-700071                                       |

## उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन

| क्र. सं. | उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन                                              | दूरभाष   | ई-मेल                          | मोबाइल नं. | पता                                                                                |
|----------|---------------------------------------------------------------------------------|----------|--------------------------------|------------|------------------------------------------------------------------------------------|
| 24       | भारतीय संग्रहालय, कोलकाता                                                       | 22861699 | directorindianmuseum@gmail.com |            | 27, जवाहरलाल नेहरू रोड, कोलकाता-700016                                             |
| 25       | एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता                                                       | 22497729 | theasiaticsociety@gmail.com    |            | 1, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता-700016                                                   |
| 26       | सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद                                                    | 24576443 | salarjung@hotmail.com          |            | हैदराबाद-500002                                                                    |
| 27       | खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना                                        | 2301507  | pat_kbopl@dataone.in           |            | अशोक राजपथ, पटना-800004                                                            |
| 28       | रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर                                                   | 2325045  | raza-library@nic.in            |            | हामिद मंजिल, किला, रामपुर-244901                                                   |
| 29       | कला क्षेत्र प्रतिष्ठान, चेन्नई                                                  | 24524057 | director@kalkshetra.in         |            | तिरुवनमईपुरम, चेन्नई-600041                                                        |
| 30       | राष्ट्रीय कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली | 23012106 | nmiidia11@hotmail.com          |            | राष्ट्रीय संग्रहालय, जनपथ, नई दिल्ली-110011                                        |
| 31       | नव नालंदा महाविहार, नालंदा                                                      | 281672   | nnmdirector@sify.com           |            | नालंदा विश्वविद्यालय, नालंदा-800311                                                |
| 32       | मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता                            | 24862049 | makaiaas_cal@vsnl.net.in       |            | 5, अशरफ मिस्त्री लेन, लव लोक स्ट्रीट, बालीगंज मिंट्री कैप के सामने, कोलकाता-700019 |
| 33       | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली                                    | 23383895 | msignca@yahoo.com              |            | 1, सेंट्रल विस्टा मैस, जनपथ, नई दिल्ली-110001                                      |
| 34       | राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एन.सी.एफ), नई दिल्ली                                   | 23358835 | ncfmanager_2007@yahoo.co.in    |            | द्वितीय तल, बी-विंग (मिडल), जनपथ भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001                       |

## उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन

| क्र. सं. | उत्तरदायी केंद्र तथा अधीनस्थ संगठन             | दूरभाष   | ई-मेल                      | मोबाइल नं. | पता                                                                                              |
|----------|------------------------------------------------|----------|----------------------------|------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 35       | उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला       | 2202918  | nzcindia@yahoo.com         |            | विराषा विहार केंद्र, समीप-भाषा भवन, शेरों वालां गारे के भीतर, पोस्ट बॉक्स नं. 80, पटियाला-147001 |
| 36       | उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद | 2421855  | nczcc@rediffmail.com       |            | 14, सीएसपी सिंह मार्ग, इलाहाबाद-211001                                                           |
| 37       | उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर | 243573   | nezccdimapur@yahoo.co.in   |            | पोस्ट बॉक्स नं. 98, दीमापुर-797112                                                               |
| 38       | दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावुर      | 240072   | szcctamilnadu@gmail.com    |            | दक्षिणी, मेडिकल कॉलेज रोड, तंजावुर-603004                                                        |
| 39       | दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर  | 2565107  | director@szccnagpur.nic.in |            | 56/1, सिविल लाइन्स, एमएलए हॉस्टल के सामने, नागपुर-440001                                         |
| 40       | पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता      | 23353093 | ezcc01@yahoo.com           |            | भारतीयम कल्चरल मल्टीप्लेक्स आईबी, 201, सैक्टर-3, सक्त लेक शहर, कोलकाता-700106                    |
| 41       | पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर       | 2422567  | wzcccom@rediffmail.com     |            | बागौर की हवेली, गंगौर घाट, उदयपुर-313001                                                         |

## सेवा पाने वालों से सांकेतिक आशाएं

| क्र. सं. | सेवा पाने वालों से सांकेतिक आशाएं                                                     |
|----------|---------------------------------------------------------------------------------------|
| 1        | सभी आवश्यक संलग्नकों सहित, यथावश्यक विधिवत सत्यापित, पूर्ण रूप से भरा हुआ आवेदन पत्र। |



## विभागीय लेखांकन संगठन

लेखांकन व्यवस्था :-

संस्कृति मंत्रालय के सचिव मुख्य लेखांकन प्राधिकारी हैं। वह वित्त सलाहकार और विभाग के मुख्य लेखा नियंत्रक के सहयोग से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। मुख्य लेखा नियंत्रक मंत्रालय के लेखांकन संगठन का प्रमुख होता है।

प्रधान लेखा कार्यालय भुगतान एवं लेखा कार्यालय के जरिए इस मंत्रालय से संबंधित लेखा संबंधी मामलों के लिए उत्तरदायी है, जो भुगतान संबंधी कार्य, बजट का अनुवीक्षण तथा सभी लेनदेन संबंधी लेखा-जोखा का संकलन करता है। लेखा संबंधी कार्यों में हुण्डियों/वाउचरों की पूर्व लेखा परीक्षा, भुगतान जारी करना, बजट उपलब्धता से संबंधित व्यय नियंत्रण, मंत्रालय के कम्प्यूटरीकृत मासिक लेखे, समायोजन लेखे तैयार करना, केन्द्रीय लेनदेन का ब्यौरा, केन्द्रीय वित्तीय लेखे, अन्य संबंधित कार्य जैसे राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को सहायता अनुदान, भुगतान एवं लेखा कार्यालय द्वारा चेक बुक प्राप्त करना/आपूर्ति करना, व्यय की प्रगति की देखरेख करने हेतु सचिवों को योजनावार व्यय की व्याख्या, प्राप्ति बजट तैयार करना, सीजीए के साथ सम्पर्क स्थापित करना आदि शामिल हैं।

संस्कृति मंत्रालय की ओर से भुगतान जारी करने तथा व्यय के अनुवीक्षण संबंधी कार्य उनके नई दिल्ली, हैदराबाद तथा कोलकाता स्थित भुगतान एवं लेखा कार्यालय द्वारा किया जाता है। भुगतान एवं लेखा कार्यालय अपने मासिक लेखे नई दिल्ली स्थित प्रधान लेखा कार्यालयों को प्रस्तुत करते हैं।

कैनरा बैंक संस्कृति मंत्रालय हेतु प्राधिकृत बैंक है।

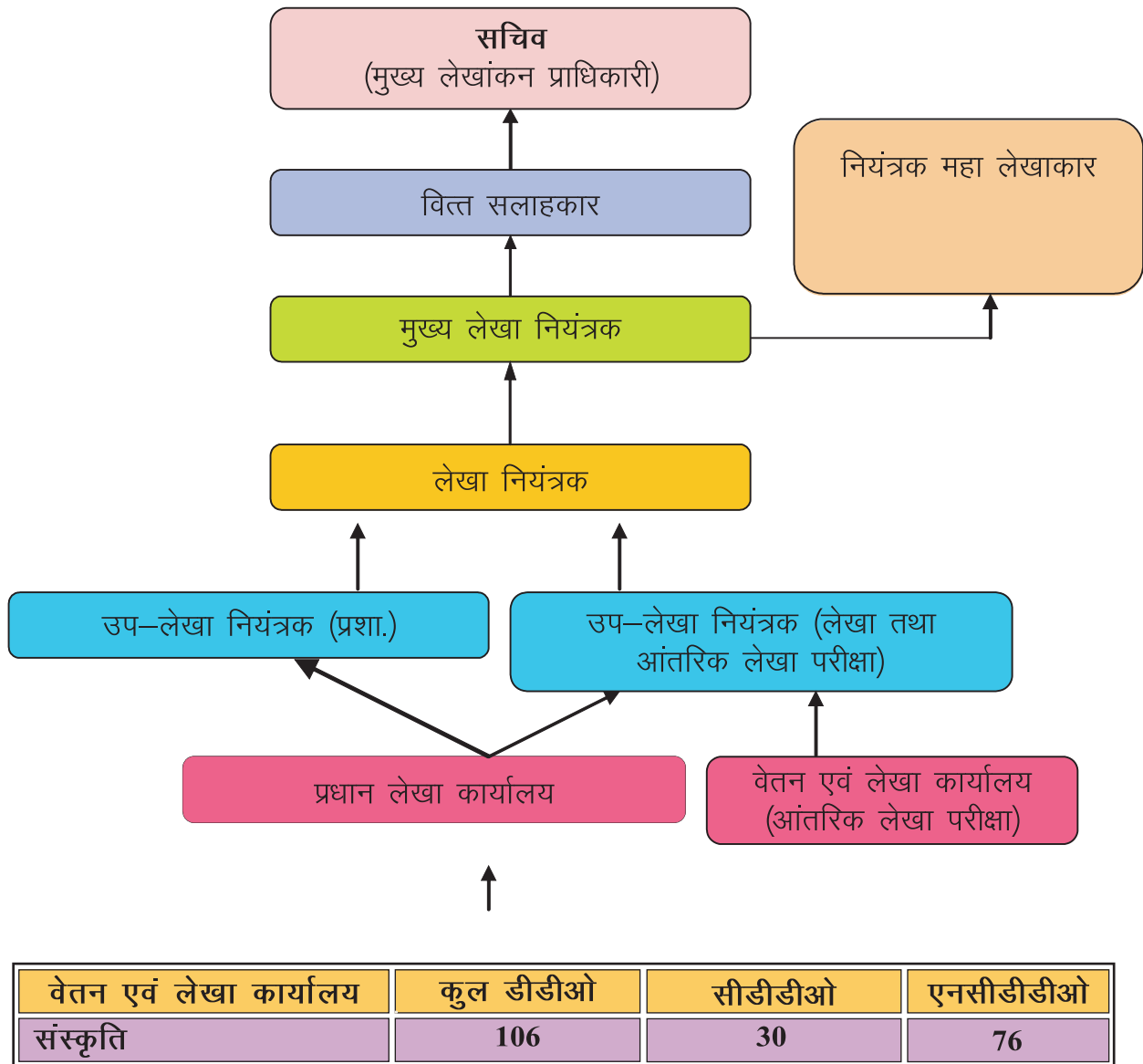
### कम्प्यूटरीकरण

#### कॉम्पैक्ट

मुख्य लेखा नियंत्रक कार्यालय की पहल से लेखांकन प्रणाली के कम्प्यूटरीकरण से संबंधित एक महत्वपूर्ण कदम 'कॉम्पैक्ट पैकेज' को लागू करना जो वेतन एवं लेखा कार्यालय के अधिकांश कार्यों को संभालता है। कॉम्पैक्ट विकसित करने का मुख्य उद्देश्य एक ही आंकड़ों को बार-बार हाथ से लिखने के झंझट से मुक्ति पाने के अलावा, वेतन एवं लेखा कार्यालय के



### लेखांकन संगठन की संरचना इस प्रकार है



विभिन्न कार्यों को सटीकता एवं तेजी से निपटाना रहा है। इस पैकेज के जरिए कम्प्यूटर की सहायता ली जा रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एक बार लेखा संबंधी आंकड़े प्रविष्ट करने के बाद अन्य प्रयोजनों जैसे मासिक लेखाओं का संकलन अथवा एमआईएस रिपोर्ट तैयार करने आदि के लिए आंकड़ों को पुनः डाले बिना ही विभिन्न स्थानों को इनका संसाधन किया जा सके।

यह प्रणाली न केवल लेखांकन प्रक्रिया को समृद्ध बनाती है तथा बेहतर प्रबंधन सूचना प्रदान करती है, अपितु लेखांकन सूचनाओं के विश्लेषण में सुधार करने में भी मदद करती है। कई ऐसे कार्य हैं, विशेषतः जो समायोजन से जुड़े होते हैं, इनमें हाथ से किए जाने वाले कई कार्य शामिल होते हैं। यह पैकेज इस प्रणाली के जरिए समग्र सटीकता एवं एक्सचेकर नियंत्रण में सुधार करने के अलावा ऐसे कार्यों में भी मदद करता है। यह पैकेज कम्प्यूटरीकृत

वैधीकरण के जरिए आंतरिक नियंत्रण एवं लेखा परीक्षा हेतु भी व्यवस्था करता है और इस प्रकार लेखाओं की गुणवत्ता में सुधार करने के बावत यह अत्यंत मददगार होगा।

कॉम्पैक्ट के सभी मॉड्यूल जैसे पूर्व-जांच, संकलन, जीपीएफ तथा पेंशन आदि का उपयोग वेतन एवं लेखा कार्यालय द्वारा किया जा रहा है।

इसके अलावा, कम्प्यूटरीकरण प्रक्रिया में बढ़ोतरी करने हेतु मुख्य लेखा नियंत्रक के कार्यालय में कई अन्य उपाय किए जा रहे हैं जिसके लिए अधिकारियों को नियमित रूप से प्रशिक्षण हेतु सरकारी लेखा तथा वित्त संस्थान (आईएनजीएफ) में भेजा जा रहा है।

## ई-लेखा

वेतन एवं लेखा कार्यालय अपनी वेबसाइट [www.cga.nic.in/elekhahome.asp](http://www.cga.nic.in/elekhahome.asp) पर दैनिक आधार पर ई-लेखा में कॉम्पैक्ट आंकड़ों को अपलोड कर रहा है जिससे प्रधान लेखाधिकारी और सीजीए एमआईएस रिपोर्टों को मॉनीटर कर सकें और वेतन एवं लेखा कार्यालय के कार्यकरण में पारदर्शिता लाने में सक्षम हो सकें। प्रधान लेखाधिकारी प्रत्येक माह ई-लेखा के जरिए सीजीए को मासिक लेखा भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

ई-लेखा की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :

- मंत्रालय के व्यय की स्थिति के बारे में दैनिक आधार पर पता लगाया जा सकता है।
- इससे योजनावार व्यय का अनुवीक्षण काफी कारगर ढंग से किया जा सकता है। प्रधानमंत्री की फ्लैगशिप योजनाओं का अनुवीक्षण भी न केवल इस मंत्रालय द्वारा बल्कि प्रधानमंत्री कार्यालय, वित्त मंत्रालय तथा योजना आयोग द्वारा भी ई-लेखा के जरिए किया जा रहा है।
- वेतन एवं लेखा कार्यालय में लम्बित बिलों की स्थिति के बारे में पता लगाया जा सकता है।

## केन्द्रीय योजनागत स्कीम अनुवीक्षण प्रणाली

केन्द्रीय योजनागत स्कीम अनुवीक्षण प्रणाली की शुरुआत भारत सरकार से अलग-अलग राज्यों तथा अन्य क्रियान्वयन संस्थाओं

तक निधियों के संवितरण अथवा उन संस्थाओं से जिलों व उप-जिलों तथा व्यय बिन्दुओं तक धनराशि के प्रवाह के बारे में भरोसेमंद आंकड़ा प्राप्त करने के उद्देश्यार्थ की गई है। तदनुसार, इस संगठन द्वारा इस मंत्रालय की सभी योजनागत स्कीमों का मानचित्रण इस प्रयोजनार्थ विकसित एक विशिष्ट सॉफ्टवेयर अर्थात् केन्द्रीय योजनागत स्कीम अनुवीक्षण प्रणाली के जरिए किया गया है। इस विभाग के सभी संबंधित अधिकारियों को इस संबंध में प्रशिक्षण दिया गया है। इस सॉफ्टवेयर के जरिए कोई भी विभिन्न संगठनों/निकायों को जारी किए गए सहायतानुदान की स्थिति का पता लगा सकता है। विभाग द्वारा भी यह काफी उपयोगी पाया गया है।

## नई पेंशन योजना

1.1.2004 को अथवा उसके बाद भर्ती हुए सभी कर्मचारियों के लिए एक नई पेंशन योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत, ऐसे कर्मचारियों के वेतन (ग्रेड पे सहित) + महंगाई भत्ते की 10 प्रतिशत राशि तथा सरकार की ओर से इतनी ही राशि एनएसडीएल सेन्ट्रल रिकार्ड कीपिंग एजेंसी में उसके ट्रस्टी बैंक (बैंक ऑफ इंडिया) के माध्यम से जमा कराई जाएगी। यह योजना इस मंत्रालय में 1.1.2004 से लागू हो गई है।

## आंतरिक लेखा परीक्षा

आंतरिक लेखा परीक्षा संगठन, पारम्परिक लेखा परीक्षा संचालित करने के अलावा, अलग-अलग स्कीमों का आकलन, अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन भी करता है। अनुपालना/विनियामक लेखा परीक्षा संबंधी सीमित दायरे से ऊपर उठते हुए अब आंतरिक लेखा परीक्षा निम्नलिखित पर ध्यान केन्द्रित करती है :-

- सामान्य तौर पर आंतरिक नियंत्रणों की पर्याप्तता एवं कारगरता का आकलन और वित्तीय प्रणालियों की सशक्तता और विशेषतः वित्तीय एवं लेखांकन रिपोर्टों की विश्वसनीयता;
- जोखिम वाले कारकों का अभिनिर्धारण एवं अनुवीक्षण (आउटकम बजट में निहित कारकों सहित);
- रोकड़ का मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सेवा आपूर्ति तंत्र लागत कारगरता, दक्षता एवं कारगरता का गहन मूल्यांकन; और

- एक कारगर अनुवीक्षण प्रणाली की व्यवस्था करना।

वर्ष 2009-10 के दौरान आंतरिक लेखा परीक्षा स्कंध में अत्यंत सीमित कर्मचारियों ने 13 यूनिटों की लेखा परीक्षा की।

31.3.2009 तक बकाया पैरों, वर्ष 2009-10 के दौरान उठाए गए पैरों, वर्ष 2009-10 के दौरान निपटारा किए गए पैरों और 31.3.2010 तक बकाया पैरों का ब्यौरा सारणी में दिया गया है:

|    |                                                 |      |
|----|-------------------------------------------------|------|
| 1. | 31.3.2009 तक बकाया पैरों की संख्या              | 1055 |
| 2. | वर्ष 2009-10 के दौरान उठाए गए पैरों की संख्या   | 130  |
| 3. | कुल                                             | 1185 |
| 4. | वर्ष 2009-10 के दौरान निपटाए गए पैरों की संख्या | 97   |
| 5. | 31.3.2010 तक बकाया पैरों की संख्या              | 1088 |

### उपयोगिता प्रमाणपत्र

उपयोग प्रमाणपत्रों की स्थिति का कारगर अनुवीक्षण तथा आकलन करने और विभिन्न संगठनों को मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सहायतानुदान से संबंधित सम्पूर्ण सूचनाएं प्राप्त करने के लिए मुख्य लेखा नियंत्रक कार्यालय द्वारा एक वेब आधारित सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है।

इस सॉफ्टवेयर में आंकड़ा प्रविष्टि हेतु हेतु चार स्तर हैं। प्रथम स्तर पर मंत्रालय द्वारा संस्वीकृति ब्यौरा प्रविष्टि के लिए है। दूसरा स्तर सहायतानुदान जारी करने वाले आहरण एवं संवितरण अधिकारी द्वारा बिलों का विवरण प्रविष्टि करने के लिए है। तीसरा

तथा चौथा स्तर वेतन एवं लेखा कार्यालय के लिए है जो भुगतान हेतु बिलों की जांच करके अंततः इन्हें स्वीकार करेगा।

यह प्रोग्राम विविध एमआईएस रिपोर्टें सृजित करता है जो मंत्रालय द्वारा निर्णय लिए जाने में अत्यंत उपयोगी हैं। इसके अलावा, विजिटर्स के लिए जो इस प्रकार की रिपोर्टें देखने में रुचि लेते हों, मंत्रालय की मुख्य वेबसाइट पर इस सॉफ्टवेयर से एक लिंक उपलब्ध है। इन रिपोर्टों का एक संक्षिप्त सार नीचे दिया गया है :-

### रिपोर्टें

1. वर्ष-वार सार
2. ब्यूरो-वार सार
3. ब्यूरो प्रभाग-वार सार
4. ब्यूरो प्रभाग अनुभाग वर्ष-वार सार
5. ब्यूरो प्रभाग अनुभाग वर्ष-वार
6. लाभग्राही तथा स्कीम-वार उपयोग प्रमाणपत्र स्थिति सार
7. अनुदार-वार सार का वर्ष तथा स्वरूप
8. वर्ष माह तथा राज्य-वार जारी अनुदान का सार
9. वर्ष राज्य तथा जिला-वार जारी अनुदान का सार
10. वर्ष तथा लाभग्राही-वार जारी अनुदान का सार
11. वर्ष तथा स्कीम-वार जारी अनुदान का सार
12. वर्ष स्कीम लाभग्राही तथा राज्य-वार जारी अनुदान का सार

## वर्ग-I अधिकारियों की सूची


 5.3.9

| क्र. सं. | नाम                           | पदनाम                                                    | अवधि       |            |
|----------|-------------------------------|----------------------------------------------------------|------------|------------|
|          |                               |                                                          | कब से      | कब तक      |
| 1        | श्री जवाहर सरकार              | सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 2        | श्री राकेश गर्ग               | अपर सचिव                                                 | 23.02.2011 | 31.03.2011 |
| 3        | श्री विजय एस. मदान            | संयुक्त सचिव                                             | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 4        | डा. (सुश्री) टुक टुक कुमार    | संयुक्त सचिव                                             | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 5        | श्री निहाल चन्द गोयल          | संयुक्त सचिव                                             | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 6        | श्री संजीव मित्तल             | संयुक्त सचिव                                             | 07.03.2011 | 31.03.2011 |
| 7        | श्री पी. आर. गोस्वामी         | निदेशक, सी एस एल                                         | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 8        | डा. (सुश्री) जी. अनुपमा कुमार | मंत्री (आवास, शहरी गरीबी उपशमन और संस्कृति) के निजी सचिव | 20.01.2010 | 31.03.2011 |
| 9        | श्री बी.बी.समद्दार            | निदेशक                                                   | 03.08.2010 | 31.03.2011 |
| 10       | सुश्री रूपा श्रीनिवासन        | निदेशक                                                   | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 11       | श्री उमेश कुमार               | निदेशक                                                   | 01.04.2010 | 03.08.2010 |
| 12       | सुश्री अनीता सिन्हा           | निदेशक                                                   | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 13       | श्री प्रवीण एल. अग्रवाल       | निदेशक                                                   | 01.04.2010 | 07.02.2011 |
| 14       | श्री अमरेश सिंह               | निदेशक                                                   | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 15       | डॉ (श्रीमती) मीनाक्षी जौली    | उप सचिव                                                  | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 16       | सुश्री रूबीना अली             | उप सचिव                                                  | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 17       | श्रीमती मीना बालिमाने शर्मा   | उप सचिव                                                  | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 18       | श्री एल.के. चावला             | उप सचिव                                                  | 01.04.2010 | 17.08.2010 |
| 19       | श्री कंवर सिंह लाठर           | उप सचिव                                                  | 06.09.2010 | 31.03.2011 |
| 20       | श्री चन्द्र प्रकाश            | उप सचिव                                                  | 01.02.2011 | 31.03.2011 |
| 21       | श्री भारतेश कुमार मिश्र       | संयुक्त निदेशक (राजभाषा)                                 | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 22       | श्री ओ. पी. धवन               | वरिष्ठ प्रधान निजी सचिव                                  | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 23       | श्री बी. एम. मालप्पा          | एल आई ओ (सी एस एल)                                       | 01.04.2010 | 31.03.2011 |



| क्र. सं. | नाम                         | पदनाम                                                        | अवधि       |            |
|----------|-----------------------------|--------------------------------------------------------------|------------|------------|
|          |                             |                                                              | कब से      | कब तक      |
| 24       | श्री के. महालिंगम           | एल आई ओ (सी एस एल)                                           | 01.04.2010 | 30.06.2010 |
| 25       | श्री विक्रमाजीत पाण्डेय     | उप निदेशक (राजभाषा)                                          | 01.09.2010 | 31.03.2011 |
| 26       | श्री मीमांसक                | उप निदेशक (राजभाषा)                                          | 01.04.2010 | 23.06.2010 |
| 27       | श्रीमती प्रियंका कुलश्रेष्ठ | उप निदेशक (पी एंड बी)                                        | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 28       | श्री संजय पाण्डेय           | मंत्री (आवास, शहरी गरीबी उपशमन और संस्कृति) के अपर निजी सचिव | 21.01.2010 | 31.03.2011 |
| 29       | श्री वी.डी.शर्मा            | मंत्री (आवास, शहरी गरीबी उपशमन और संस्कृति) के अपर निजी सचिव | 20.01.2010 | 31.03.2011 |
| 30       | श्री चन्द्र प्रकाश          | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 31       | श्री अशोक आचार्य            | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 32       | श्री के. पी. के. नंबीसन     | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 06.07.2010 |
| 33       | श्रीमती वर्षा सिन्हा        | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 17.09.2010 |
| 34       | श्री गुलाम मुस्तफा          | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 35       | श्री ए. मुरुगैयन            | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 14.06.2010 |
| 36       | श्री बी. पी. भुकर           | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 37       | श्री एस के शर्मा            | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 38       | श्रीमती मैत्रेयी राय        | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 39       | श्री टी. डी. सेहरा          | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 28.02.2011 |
| 40       | श्रीमती वनिता सूद           | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 41       | श्री दीपांकर दत्ता          | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 42       | श्री वी. टी. जोसेफ          | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 43       | श्री एन. पी. जोशी           | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 44       | श्री बी. एल. मीणा           | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 45       | श्रीमती आभा मिश्रा          | अवर सचिव                                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 46       | श्री एन.आर. मिंज            | अवर सचिव                                                     | 13.10.2010 | 31.03.2011 |
| 47       | श्री यशवीर सिंह             | अवर सचिव                                                     | 01.06.2010 | 31.03.2011 |
| 48       | श्री एस.डी. मीणा            | अवर सचिव                                                     | 09.09.2010 | 31.03.2011 |
| 49       | श्री सुरेन्द्र पटेल         | अवर सचिव                                                     | 07.06.2010 | 31.03.2011 |
| 50       | श्रीमती मीना कुमारी शर्मा   | अवर सचिव                                                     | 15.09.2010 | 31.03.2011 |
| 51       | श्री बसंत कुमार             | सहायक निदेशक (पी एंड बी)                                     | 01.04.2010 | 24.12.2010 |
| 52       | श्री बी. एस. लाकडा          | सहायक निदेशक (पी एंड बी)                                     | 01.04.2010 | 31.03.2011 |
| 53       | श्री राजेन्द्र पाठक         | सहायक निदेशक (पी एंड बी)                                     | 01.09.2010 | 31.03.2011 |
| 54       | श्री अवध बिहारी लाल निगम    | सहायक निदेशक (राजभाषा)                                       | 01.04.2010 | 31.12.2010 |

## लंबित लेखा परीक्षा पैरा

राष्ट्रीय पुस्तकालय का लक्ष्य भारत में तैयार और मुद्रित सभी प्रकार की महत्वपूर्ण सामग्रियों तथा देश हेतु अपेक्षित विदेशी सामग्रियों का भी अर्जन और संरक्षण कर भारत की सांस्कृतिक परंपरा को संरक्षित करना है। पुस्तकालय वर्तमान एवं पूर्वव्यापी सामग्री का ग्रंथसूचीपरक और दस्तावेजी सेवाएँ भी उपलब्ध कराता है और ज्ञान के विविध क्षेत्रों के अनुसंधान में भी सहायता करता है। यह भारत में और भारत से संबंधित प्रकाशित होने वाली सभी तरह की पठन-सामग्री के लिए स्थाई संग्रह के रूप में भी कार्य करता है। यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कार्य करता है। पुस्तकालय की 2003-04 से 2007-08 की अवधि हेतु निष्पादन लेखापरीक्षा की गई।



निष्पादन लेखापरीक्षा से प्रकट हुआ कि कमजोर आंतरिक नियंत्रण, कार्य प्रतिमानक के अभाव और स्वचलन की कमी के कारण पुस्तकालय लोगों को दक्ष अद्यतन प्रभावी सेवा पाठकगण सेवाएं प्रदान करने में समयगत गति को बनाए रखने के लिए समर्थ नहीं है। राष्ट्रीय पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध कराये गये पाठकगण सेवाओं की गुणवत्ता आधुनिक पाठकों की अपेक्षा को पूरा नहीं करती है। दक्ष प्रत्यक्ष जाँच करने के लिए कोई केंद्रीय डिजिटल पुस्तक सूची विद्यमान नहीं है।

पुस्तकालय का परिरक्षण और संरक्षण प्रणाली बहुमूल्य पुस्तकों को संरक्षित और सुरक्षित करने के लिए पुरानी और अपर्याप्त है। पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों का प्रेलेखीकरण और परिग्रहण उचित रूप से नहीं किया गया है जिससे उन पुस्तकों के गायब और चोरी होने की संभावना है। पुस्तकों की आवधिक प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया गया है और इसीलिए पुस्तकालय के अधिकार में पुस्तकों/दस्तावेजों की वास्तविक संख्या ज्ञान नहीं है। पर्यवेक्षण और मानीटरिंग के अभाव में किताबों का अंकुरूपीकरण अधूरा रहता था। पुस्तकालय में अनुमानित 25 लाख पुस्तकों में से, पुस्तकालय ने पिछले नौ वर्षों में केवल 9141 किताबों का अंकुरूपीकरण किया गया है।

पुस्तकालय आपातकालीन परिस्थितियां जैसे आग आदि से निपटने में पूरी तरह सुसज्जित एवं तैयार नहीं है। अग्निशामक उपकरण, पुस्तकालय के विभिन्न स्थानों पर लटके हुए हैं किन्तु पांच वर्षों

से भी अधिक समय से इन्हें रिफिल या सर्विसिंग नहीं किया गया है। पुस्तकालय में सुरक्षा प्रबंध पर्याप्त नहीं है।

यद्यपि यह पुस्तक और समाचार-पत्र (लोक पुस्तकालयद्व सुपुर्दगी अधिनियम, 1954 के अंतर्गत भारत में प्रकाशन के प्रत्येक प्रकाशक से एक प्रति निःशुल्क प्राप्त करने के लिए कानूनी रूप से हकदार है, तथापि अधिकांशतः प्रकाशक कानून के इस उपबंध का पालन नहीं करते। यद्यपि पुस्तकालय ऐसी बूकों से अवगत था, तथापि सरकार ने अधिनियम की धारा 5 के अंतर्गत उपयुक्त दांडिक कार्रवाई नहीं की है। इस तरह पुस्तकालय का संग्रह सेवा, जहां तक भारत में तैयार सभी महत्वपूर्ण मुद्रित सामग्री के संग्रह से संबंधित है, गम्भीर रूप से विफल है। इसके अतिरिक्त, विदेशी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की खरीद से संबंधित प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी है। पुस्तकालय में प्रतिलिपि तैयार नहीं की गई पुस्तकों की प्रक्रिया करने के भारी विलम्बों ने पाठकों को सहयोगी पुस्तकों को समय में उपलब्धता को प्रभावित किया है।

अनुलग्नक

## केंद्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारियों तथा अपीलीय प्राधिकारियों की सूची

| क्र. सं. | केन्द्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारी का नाम | पदनाम                   | दूरभाष सं. | विषय/अनुभाग                                                                | प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम और पदनाम तथा दूरभाष सं.                                              |
|----------|------------------------------------------|-------------------------|------------|----------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1.       | श्री बी.एल. मीणा                         | अवर सचिव व नोडल अधिकारी | 23384261   | समन्वय<br>भा.पु.स. मामले,<br>वेब-साइट उन्नयन                               | श्री चन्द्र प्रकाश, उप सचिव<br>दूरभाष: 2381208<br>श्री अमरेश सिंह, निदेशक<br>दूरभाष: 23384202       |
| 2.       | सुश्री मैत्रेयी राय                      | अवर सचिव                | 23388569   | आईसीआर प्रभाग                                                              | सुश्री मीना बी शर्मा, उप सचिव<br>दूरभाष: 23383212                                                   |
| 3.       | श्री एस.डी. मीणा                         | अवर सचिव                | 23384154   | आंतरिक वित्त प्रभाग                                                        | सुश्री रुबीना अली, उप सचिव,<br>दूरभाष: 23389845                                                     |
| 4.       | सुश्री वनिता सूद                         | अवर सचिव                | 23386454   | स्थापना, संसद,<br>सतर्कता अनुभाग<br>सचिव (संस्कृति) का<br>कार्यालय         | सुश्री महालक्ष्मी रामकृष्णन,<br>उप सचिव,<br>दूरभाष: 23383185                                        |
| 5.       | श्री गुलाम मुस्तफा                       | अवर सचिव                | 23022337   | शताब्दी एवं स्मारक<br>(विशेष प्रकोष्ठ)                                     | श्री के.एस. लाटर,<br>उप सचिव<br>दूरभाष: 23022041                                                    |
| 6.       | श्री एस.के. शर्मा                        | अवर सचिव                | 23387875   | यूनेस्को और<br>क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र                                 | सुश्री रुपा श्रीनिवासन,<br>निदेशक, दूरभाष: 23381822                                                 |
| 7.       | श्री अशोक आचार्य                         | अवर सचिव                | 23070790   | शताब्दी प्रकोष्ठ/विशेष<br>प्रकोष्ठ (शेष कार्य)<br>रोकड अनुभाग              | श्री के.एस. लाटर,<br>उप सचिव<br>दूरभाष: 23022041                                                    |
| 8        | श्री बी.पी. भूकर                         | अवर सचिव                | 23074359   | छात्रवृत्ति और<br>अध्येतावृत्ति                                            | सुश्री अनीता सिन्हा<br>निदेशक<br>दूरभाष: 2338 1431                                                  |
| 9        | सुश्री मीना कुमारी शर्मा                 | अवर सचिव                | 2338 2539  | अभिलेखागार एवं<br>मानव विज्ञान<br><br>एशियाटिक सोसाइटी<br>पूर्वोत्तर राज्य | श्री के.एस. लाटर,<br>उप सचिव<br>दूरभाष: 23022041<br>सुश्री अनीता सिन्हा, निदेशक<br>दूरभाष: 23381431 |
| 10.      | श्री दीपांकर दत्ता                       | अवर सचिव                | 23382351   | मंच कला                                                                    | सुश्री अनीता सिन्हा, निदेशक,<br>दूरभाष: 23381431                                                    |

| क्र. सं. | केन्द्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारी का नाम | पदनाम                   | दूरभाष सं.           | विषय/अनुभाग                                              | प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम और पदनाम तथा दूरभाष सं.                                         |
|----------|------------------------------------------|-------------------------|----------------------|----------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 11.      | श्री सुरेन्द्र पटेल                      | अवर सचिव                |                      | राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, संग्रहालय-II सामान्य प्रशासन | श्री अमरेश सिंह, निदेशक<br>दूरभाष: 23384202<br>श्री चन्द्र प्रकाश, उप सचिव<br>दूरभाष: 23381208 |
| 12.      | श्री वी.टी. जोसफ                         | अवर सचिव                | 23389379             | अकादेमी आईजीएनसीए                                        | सुश्री रुपा श्रीनिवासन, निदेशक<br>दूरभाष: 23381822                                             |
| 13.      | श्री एन. पी. जोशी                        | अवर सचिव                | 23382312             | संग्रहालय-I राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ)             | श्री अमरेश सिंह, निदेशक,<br>दूरभाष: 23382402                                                   |
| 14.      | श्री वाई.वी. सिंह                        | अवर सचिव                | 23070790             | बौद्ध और तिब्बती संस्थान जीपीपी                          | श्री के.एस. लाटर, उप सचिव<br>दूरभाष: 23022041                                                  |
| 15.      | श्री बी.एम. मलप्पा                       | पुस्तकालय सूचना अधिकारी | 23384846<br>23389684 | केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय                               | श्री पी.आर. गोस्वामी, निदेशक<br>दूरभाष: 23384846, 9383                                         |
| 16.      | श्री बी.आर. मिन्ज                        | अवर सचिव                | 23382158             | पुस्तकाल अनुभाग                                          | श्री पी.आर. गोस्वामी, निदेशक<br>दूरभाष: 23384846, 9383                                         |
| 17.      | सुश्री प्रियंका कुलश्रेष्ठ               | उप निदेशक               | 23074276             | योजना एवं बजट                                            | सुश्री रूबीना अली, उप सचिव<br>दूरभाष: 23389845                                                 |

**प्रकाशन:**  
संस्कृति मंत्रालय  
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

**अभिकल्पना एवं मुद्रण**  
बंगाल ऑफसेट वर्क्स, नई दिल्ली  
फोन : 23524200, 23610455



